

रॉबर्ट वानॉय, फाउंडेशन बाइबिल भविष्यवाणी, व्याख्यान 1ए

1 परिचय

1ए. पाठ्यक्रम विवरण

मैं उनमें से प्रत्येक हैंडआउट शीट के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ, और मुझे लगता है कि शुरुआत करने का स्थान उस एकल पृष्ठ से है जिस पर "पाठ्यक्रम विवरण" लिखा है। उस पृष्ठ के शीर्ष पर एक पैराग्राफ है जो पाठ्यक्रम की मूल सामग्री का वर्णन करता है। "बाइबिल की भविष्यवाणी की नींव का दोहरा उद्देश्य है। एक, छात्र को प्राचीन इज़राइल में भविष्यवाणी की घटना से परिचित कराना।" हम जिस पर गौर करेंगे वह उस शीर्षक के अंतर्गत उस भविष्यसूचक घटना की विशेषताएं होंगी। लेकिन दूसरा, "छात्र को पुराने नियम की भविष्यवाणी पुस्तकों की सामग्री से परिचित कराना।" आइए देखें, चार प्रमुख, बारह छोटे पैगम्बर: उनका संदेश क्या था? वह कौन सा ऐतिहासिक संदर्भ था जिसमें उन्होंने वह संदेश दिया?

2ए. भविष्यवाणी की घटना

तो पहला उद्देश्य, यानी भविष्यवाणी की घटना, कक्षा में चर्चा से पूरा किया जाएगा, जैसे प्रश्नों पर: क्या इज़राइल के सभी भविष्यवक्ताओं को उनके भविष्यवाणी कार्य के लिए एक विशेष बुलावा मिला था? इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति को कैसे समझाया जाए? क्या यह एक ऐसी घटना है जो महज़ इन प्राचीन इज़राइली लोगों की प्रतिभा की उपज थी? क्या उन्होंने इसे आस-पास के कुछ अन्य राष्ट्रों से उधार लिया था जिन पर यह भी आरोप लगाया गया था कि अस्तित्व में किसी प्रकार की भविष्यवाणी की घटना थी? हम इसी प्रकार के प्रश्न पूछेंगे। मैं इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति के बारे में बताऊंगा। क्या अन्य प्राचीन लोगों के बीच इज़राइल के भविष्यवक्तावाद की समानताएं हैं? यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है। निःसंदेह बहुत से लोग आते हैं और कहते हैं, "हाँ, हैं।" प्राचीन इस्राएली सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर कैसे कर सकते थे? जब आप भविष्यवाणी की किताबें पढ़ते हैं, तो यह यिर्मयाह में विशेष रूप से स्पष्ट हो जाता है, आप यिर्मयाह को यह कहते हुए पाएंगे कि "यहोवा यों कहता है।" और फिर यहाँ हनन्याह एक और भविष्यवक्ता

आता है और वह दावा करता है, "यहोवा यों कहता है।" फिर भी, वे दो विरोधाभासी संदेश देते हैं। अपने आप को एक इस्राएली के स्थान पर रखकर देखो। आप किसकी बात सुनेंगे? आप परमेश्वर के पैगम्बरों के मुख से अपने लोगों के लिए आने वाले प्रभु के वचन का पालन करने के लिए जिम्मेदार हैं। जब दो अलग-अलग भविष्यवक्ता दो पूर्णतः विरोधाभासी संदेशों के साथ ईश्वर के भविष्यवक्ता होने का दावा करते हैं तो आप क्या करते हैं? तो एक इस्राएली सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर कैसे कर सकता है?

3ए. क्या पैगम्बर सांस्कृतिक कार्यकर्ता थे?

क्या भविष्यवक्ता सांस्कृतिक कार्यकर्ता थे? एक संपूर्ण विचारधारा है जो कहती है कि भविष्यवक्ता काफी हद तक मंदिर के कर्मियों के रूप में कार्यरत पुजारियों की तरह थे, और वे मंदिर की अभयारण्य सेवा के आधिकारिक पदाधिकारी थे। खैर, क्या यह समझने का सबसे अच्छा तरीका है कि भविष्यवक्ता कौन था? क्या भविष्यवक्ता लेखक थे? इन भविष्यसूचक पुस्तकों में हमारे पास क्या है? क्या यह पैगम्बर के हाथ से आया है या यह पैगम्बरीय उद्घोषणाओं की मौखिक परंपराओं का बहुत बाद का रिकॉर्ड है?

4ए. क्या बाइबिल की भविष्यवाणी का कोई क्षमाप्रार्थी मूल्य है?

क्या बाइबिल की भविष्यवाणी का कोई क्षमाप्रार्थी मूल्य है? क्या आप भविष्यवाणी और उसके बाद की पूर्ति से यह तर्क दे सकते हैं कि क्योंकि मनुष्यों के इस समूह ने ऐसी उल्लेखनीय चीजों के बारे में बहुत पहले ही बात कर ली थी जो ऐतिहासिक रूप से बहुत बाद में घटित हुईं, यह वास्तव में वास्तविक रहस्योद्घाटन का प्रमाण है? अर्थात्, ये लोग परमेश्वर की ओर से वह बात बोल रहे थे जो कोई भी मनुष्य संभवतः कभी नहीं बोल सकता था और इसलिए, बाइबिल सत्य है। क्या आप ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की सत्यता के लिए भविष्यवाणी और पूर्ति के आधार पर क्षमाप्रार्थी तर्क दे सकते हैं? लोग इसे दो अलग-अलग तरीकों से देखते हैं; कुछ लोग "हाँ" कहते हैं, कुछ लोग "नहीं" कहते हैं। वे सभी चीजें भविष्यवक्ता की घटना के बारे में हैं, और हम उन मुद्दों पर कक्षा में काफी समय बिताएंगे क्योंकि यह बाइबिल की भविष्यवाणी के लिए मूलभूत है।

5ए. भविष्यसूचक लेखन में व्याख्यात्मक सिद्धांत महत्वपूर्ण हैं

पुराने नियम में भविष्यवाणी की घटनाओं की इन सामान्य विशेषताओं से परे, व्याख्यात्मक सिद्धांतों पर ध्यान दिया जाएगा जो पुराने नियम के भविष्यवाणी लेखन की उचित व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण हैं। भविष्यसूचक कार्य की व्याख्या में कुछ ऐसे मुद्दे शामिल हैं जो आपको पुराने नियम के साहित्य की कुछ अन्य शैलियों जैसे ऐतिहासिक आख्यानों या ज्ञान साहित्य में नहीं मिलते हैं; प्रत्येक की अपनी अनूठी विशेषताएं हैं। इसलिए हम कुछ ऐसे व्याख्यात्मक सिद्धांतों को देखेंगे जो भविष्यसूचक लेखों की व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण हैं। चर्चाओं में भविष्यसूचक समय परिप्रेक्ष्य, भविष्यसूचक कथनों की सशर्तता, साथ ही दोहरे अर्थ, दोहरे संदर्भ और भविष्यवक्ता के एक ही समय में दो अलग-अलग घटनाओं को ध्यान में रखते हुए एक ही शब्द बोलने का विचार शामिल होगा। जहां तक पूर्ति का सवाल है समय में लंबी दूरी से अलग हो जाता है।

6ए. असाइनमेंट पढ़ना

अब, फिर से, यह अभी भी भविष्यवक्ता की इस घटना का हिस्सा है, लेकिन सामग्री के उस दूसरे उद्देश्य तक पहुंचने के लिए, छात्र सी. हेसल बुलॉक के *पुराने नियम और भविष्यवाणी साहित्य के परिचय* के साथ-साथ प्रत्येक प्रमुख और छोटी भविष्यवाणी पुस्तकों को पढ़ेगा। जहां वह प्रत्येक पुस्तक लेता है और पुस्तक की सामग्री, व्याख्यात्मक समस्याओं, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसके सामान्य संदेश आदि पर चर्चा करता है। इसलिए, जहां तक कक्षा में सामग्री की बात है, मैं उस पर बहुत कुछ नहीं करने जा रहा हूँ। बड़े पैमाने पर आप भविष्यसूचक किताबें और बुलॉक का *परिचय पढ़ने जा रहे हैं*। कक्षा में मैं चार छोटे भविष्यवक्ताओं, ओबद्याह, जोएल, जोनाह और अमोस से निपटने जा रहा हूँ, और जब मैं पाठ्यक्रम के अंत में आना शुरू करूँगा तो मैं ओबद्याह, जोएल, जोनाह और अमोस को पढ़ाऊँगा। तो, यह सामान्य विवरण है कि हम क्या करेंगे।

2. पाठ्यक्रम उद्देश्य

1ए. भविष्यसूचक घटना

आइए उद्देश्यों पर गौर करें और फिर उस पृष्ठ के पीछे, जब हम तरीकों पर पहुंचेंगे, तो मैं असाइनमेंट के बारे में बात करूँगा। जहाँ तक पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की बात है, इनमें

से कुछ वही दोहराव है जो मैंने अभी पिछले पैराग्राफ में कहा है। सबसे पहले, प्राचीन इज़राइल में भविष्यवक्ता की घटना की जांच करना, जिसमें भविष्यवक्ताओं की पुकार, भविष्यवक्ताओं की प्रेरणा, सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के संबंध, प्रतीकात्मक कार्य, इज़राइल में भविष्यवाणी और बाहर की भविष्यवाणी की तुलना, और बाइबिल की भविष्यवाणी के क्षमाप्रार्थी मूल्य जैसी चीजें शामिल हैं। हम बस उससे गुजरेंगे।

2ए. प्रत्येक भविष्यवाणी पुस्तक की सामान्य सामग्री

दूसरा, प्रत्येक पुस्तक की सामान्य सामग्री, उसके उद्देश्य और ऐतिहासिक सेटिंग सहित इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के लेखन से परिचित होना। तो यह सामग्री का हिस्सा है।

3ए. भविष्यवाणी लेखन के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत

तीसरा, सिद्धांत और अनुप्रयोग दोनों में, भविष्यवाणी लेखन के सापेक्ष हेर्मेनेयुटिक्स के कुछ सिद्धांतों को सीखना। मैं उस पर लगभग एक सत्र तक व्याख्यान दूँगा, लेकिन जब हम चार छोटे भविष्यवक्ताओं के बारे में जानेंगे तो हम उन सिद्धांतों को लागू करेंगे और हम देखेंगे कि उनमें से कुछ पाठ के लिए किस प्रकार प्रासंगिक हैं।

4ए. आलोचनात्मक सिद्धांत विशेष। यशायाह और डैनियल

1बी. यशायाह: तिथि और लेखकत्व

चौथा, यशायाह और डैनियल पर विशेष ध्यान देते हुए भविष्यसूचक पुस्तकों के लेखकत्व और चरित्र से संबंधित महत्वपूर्ण सिद्धांतों से परिचित होना। क्या यशायाह का संदेश आहाज और हिजकिय्याह के समय में रहने वाले यशायाह भविष्यवक्ता नामक व्यक्ति से आया है, या यह सामग्री बहुत बाद के समय से आई है? यह प्रश्न यशायाह 40 से लेकर पुस्तक के अंत तक बहुत तीव्रता से उठता है, इसलिए यदि आप मुख्यधारा के बाइबिल विद्वानों की औसत टिप्पणियों को देखें, तो आपको यशायाह भविष्यवक्ता पर एक टिप्पणी मिलेगी जो अध्याय 1-39 है। फिर आपको अध्याय 40 से लेकर अंत तक ड्यूटेरो-यशायाह या दूसरा यशायाह कहा जाने वाला दूसरा खंड मिलेगा, जिसके बारे में लगातार कहा जाता है कि यह भविष्यवक्ता यशायाह के अलावा किसी और का है। वे ऐसा क्यों कहते हैं?

यशायाह की पुस्तक का दूसरा भाग मानता है कि बेबीलोन की कैद पहले ही हो चुकी है, जो ऐतिहासिक यशायाह के 150 साल बाद हुई थी। निस्संदेह, यह यशायाह के समय में नहीं हुआ था, यशायाह कह रहा था कि यह होगा; फिर भी अध्याय 40-66 में ऐसा प्रतीत होता है कि यह घटित हो चुका है और अब परमेश्वर इस्राएल को बन्धुवाई से वापस लाने जा रहा है। विशेष रूप से, वे फ़ारसी साइरस के शासन के तहत कैद से वापस आने वाले हैं, जिसका नाम से उल्लेख किया गया था। वह यशायाह भविष्यवक्ता के समय के सदियों बाद जीवित रहे। तो सवाल यह है कि फ़ारसी साम्राज्य और शासक साइरस के उदय के बारे में कोई पहले से ही इतनी स्पष्टता और सटीकता से कैसे बोल सकता था, और कि साइरस के तहत इज़राइल कैद से वापस आएगा? मुख्यधारा के बाइबिल अध्ययनों में निष्कर्ष यह है कि यह असंभव है। यह बहुत बाद में किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा गया होगा जो साइरस के समय में रह रहा था, और इसलिए वह जानता होगा कि साइरस अस्तित्व में था। इसलिए, मैं यशायाह के साथ उस पूरे प्रश्न को देखने जा रहा हूँ क्योंकि यह यशायाह और डैनियल के साथ है कि यह प्रश्न सबसे अधिक बार उठाया जाता है, और पुस्तक के लेखकत्व को चुनौती दी जाती है।

2बी. डैनियल: दिनांक और लेखकत्व

डैनियल में आपके पास बहुत ही समान मुद्दे हैं। पुस्तक के पहले भाग में आपके पास दर्शन हैं, लेकिन पुस्तक के बाद के भाग में आपके पास ये भविष्यवाणियाँ हैं, जो न केवल अंत समय का विस्तृत विवरण हैं, जहां ईसा-विरोधी पैदा होते हैं, बल्कि उस अवधि का भी जब यहूदी लोगों को एक शासक द्वारा सताया गया था जो सिकंदर महान के राज्य के विभाजन से आया था। इज़राइल के लिए, यह वह समय था जब सीरिया में सेल्यूसिड्स और मिस्र में टॉलेमीज़ ने पवित्र भूमि पर लड़ाई लड़ी, इस बात पर संघर्ष किया कि उस क्षेत्र को कौन नियंत्रित करेगा। उनके बीच उत्तर और दक्षिण के लिए युद्ध होते रहते हैं। इसके बीच में सेल्यूसिड राजवंश के एंटीओकस एपिफेन्स के अलावा किसी और का वर्णन नहीं है, यहूदी लोगों पर उसके उत्पीड़न और मंदिर के अपमान का वर्णन है - इतिहास जो स्पष्ट रूप से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ था, कैसे हो सकता है डैनियल, 500 ईसा पूर्व से पहले

लिखते हुए, पहले से ही इतने विस्तार से जानते थे कि 300 साल बाद क्या होने वाला है? तो मुख्यधारा के बाइबिल अध्ययनों का सामान्य निष्कर्ष यह है कि, डैनियल ने इसे नहीं लिखा है; बल्कि यह कोई ऐसा व्यक्ति था जो लगभग 160 या 164 ईसा पूर्व, एंटिओकस एपिफेन्स के समय में रहता था। हम इनमें से कुछ तर्कों पर गौर करेंगे।

5ए. भविष्यवाणी लेखों की प्रासंगिकता

पांचवां, हम यह पता लगाएंगे कि भविष्यसूचक लेखों का संदेश इक्कीसवीं सदी के चर्च के लिए कैसे प्रासंगिक है। आप उस पर एक असाइनमेंट करेंगे और बुलॉक के बाहर कुछ पढ़ेंगे। यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, यह पवित्रशास्त्र का हिस्सा है, क्योंकि पॉल ने कहा है, "सभी पवित्रशास्त्र ईश्वर की प्रेरणा से दिया गया है और सिद्धांत, फटकार, सुधार, धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है;" इसमें स्पष्ट रूप से पुराने नियम की भविष्यसूचक पुस्तकें शामिल हैं, लेकिन आप आज के लिए इन पुस्तकों का अर्थ कैसे खोजते हैं?

3. तरीके

1ए. रीडिंग

तो ये पाठ्यक्रम के सामान्य उद्देश्य हैं। यदि आप उस पृष्ठ के पीछे की तरफ पलटते हैं, "पहले उद्देश्यों को हासिल करने के लिए नियोजित तरीके:" मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि आप *पुराने नियम और भविष्यवाणी पुस्तकों के लिए बुलॉक का परिचय पढ़ेंगे। फिर आज के लिए इसके अर्थ के संबंध में, मैं चाहता हूँ कि आप सभी एलिजाबेथ अक्टेमेयर द्वारा प्रीचिंग फ्रॉम द ओल्ड टेस्टामेंट* नामक खंड से एक अध्याय पढ़ें। उस खंड का अध्याय सात पृष्ठ 109-135 पर "भविष्यवक्ताओं की ओर से उपदेश" है। इसके अलावा, मैं चाहता हूँ कि आप निम्नलिखित दो पुस्तकों में से एक पढ़ें: या तो एलिजाबेथ अक्टेमेयर की *प्रीचिंग फ्रॉम द माइनर प्रोफेट्स* या डोनाल्ड लेगेट की *लविंग गॉड एंड डिस्टर्बिंग मेन: प्रीचिंग फ्रॉम द प्रोफेट्स*। प्रत्येक का उद्देश्य इस बात पर चर्चा करना है कि भविष्यसूचक पुस्तकों से उपदेश में आज के लिए अर्थ कैसे खोजा जाए। असाइनमेंट पेज पर पहुंचने के बाद मैं एक

मिनट में वापस आऊंगा कि मैं आपसे क्या करवाना चाहता हूं। मैं यह भी चाहता हूं कि आप अंग्रेजी बाइबिल की प्रत्येक भविष्यवाणी पुस्तक को पढ़ें।

2ए. व्याख्यान और पत्र

व्याख्यान भविष्यवक्ता की घटनाओं के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए, और फिर, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, ओबद्याह, जोएल, जोनाह और अमोस की पुस्तकों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, पाठन को पूरक करेगा। मैं कक्षा में चर्चा को प्रोत्साहित करना चाहता हूं, मैं किसी भी बिंदु पर प्रश्नों या टिप्पणियों या किसी भी चीज़ से आपके व्यवधान का स्वागत करता हूं। होशे की पुस्तक पर एक व्याख्यात्मक पेपर होगा; जब हम असाइनमेंट पर आएं तो मैं इसके बारे में और अधिक बताऊंगा; अमोस, अमोस 9:11-13 के एक अंश का व्याख्यात्मक विश्लेषण होगा, जो भविष्यसूचक लेखन की व्याख्या के लिए एक व्याख्या स्थापित करने के सापेक्ष एक बहुत ही महत्वपूर्ण मार्ग बन जाता है क्योंकि अमोस 9:11-13 का वह पाठ पुस्तक में उठाया गया है। अधिनियम अध्याय 15। इसे एक निश्चित तरीके से उद्धृत और व्याख्या किया गया है, लेकिन वास्तव में इसका उपयोग कैसे किया जा रहा है और क्या निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, इसके बारे में कई मुद्दे हैं। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप उस अनुच्छेद पर थोड़ा काम करें और आपके उस अनुच्छेद पर पहले ही काम कर लेने के बाद मैं उस अनुच्छेद पर कक्षा में कुछ चर्चा करूंगा। दरअसल, वह पाठ्यक्रम की आखिरी कक्षा होगी। आपको अक्टेमेयर और लेगेट की पढ़ाई की एक संक्षिप्त चर्चा भी लिखनी होगी। जहां तक परीक्षण की बात है, बुलॉक से निर्धारित रीडिंग पर प्रत्येक सप्ताह एक प्रश्नोत्तरी की संभावना है। एक मध्यावधि और एक अंतिम सत्र है, और होशे पर यह पेपर है जो आपके ग्रेड में भी एक कारक होगा।

3ए. कार्य

यदि आप इस असाइनमेंट पेज पर जाते हैं, और पेज चार पर जाते हैं तो नीचे आप देखते हैं कि वहां ग्रेडिंग पर स्कीमा है। एक-चौथाई बुलॉक पर प्रश्नोत्तरी है, अमोस एक्सजेगिस और एक्टेमियर रिपोर्ट को एक प्रश्नोत्तरी के बराबर माना जाता है, इसलिए कुल मिलाकर जो कुछ भी एकत्र किया गया है वह आपके ग्रेड का एक चौथाई है। होसे का पेपर

आपके ग्रेड का एक चौथाई है, मिड-टर्म और फाइनल भी आपके ग्रेड का एक चौथाई है। तो ग्रेड में चार कारक हैं। अब, आइए उस असाइनमेंट शीट के पहले पृष्ठ पर वापस जाएँ। मैं फिर से विभिन्न पाठों को सूचीबद्ध करता हूँ: बुलॉक, एक्टेमेयर का अध्याय सात, फिर या तो एक्टेमियर या लेगेट, शीर्ष पर। ये वो चीज़ें हैं जो आप पढ़ेंगे।

4ए. होशे टर्म पेपर निर्देश

टर्म पेपर. होशे की पुस्तक का अध्ययन किया जाना है, जिसके परिणामों को 15-20 पृष्ठों के एक पेपर में संक्षेपित किया जाना है। अब मैं तुम्हें सावधान कर दूँ; मुझे 25 पेज नहीं चाहिए, इसे 20 पेज या उससे कम रखना चाहिए, और यह एक चुनौती है, क्योंकि यहां जो कुछ है, मैं इस पेपर में खुद को अनुशासित करना चाहता हूँ। लेकिन 15-20 पेज, डबल-स्पेस में टाइप किए गए, सामान्य आकार के फ्रॉन्ट के साथ, फुटनोट और ग्रंथ सूची आदि के लिए सही फॉर्म का उपयोग करते हुए। मैं इस बात को लेकर चिंतित नहीं हूँ कि इसका स्वरूप क्या है, लेकिन आपको शिकागो विश्वविद्यालय, एमएलए, या जो भी हो, उसका अनुसरण करने के लिए स्वरूप में सुसंगत रहना चाहिए। पेपर में निम्नलिखित मामलों की चर्चा शामिल है, और इसमें तीन विषय हैं। पहली चीज़ जो मैं चाहता हूँ कि आप होशे की पत्नी गोमेर की नैतिक समस्या की चर्चा शामिल करें। प्रभु ने होशे से कहा कि वह बाहर जाए और एक वेश्या से विवाह करे। इसने बहुत से लोगों को परेशान किया है। प्रभु ऐसा कैसे कर सकते थे? अच्छा, क्या यह कोई समस्या है? यहाँ क्या चल रहा है? मुझे लगता है कि यदि आप इस पर शोध करना शुरू करेंगे तो आप यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि इस प्रश्न पर वहाँ कितना साहित्य उपलब्ध है, और लोगों ने इस समस्या से निपटने और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के तरीकों की विशाल विविधता को भी देखा है। मैंने दो लेख सूचीबद्ध किए हैं जो पुस्तकालय में फोटोकॉपी के रूप में आरक्षित हैं। मुझे लगता है कि वे शायद इस प्रश्न को समझने में मददगार होंगे। पहला एच. एबर्स नाम के एक व्यक्ति द्वारा " द मैट्रिमोनियल लाइफ ऑफ होसेया " है, जो दक्षिण अफ्रीका में एक पुराने नियम के अध्ययन समूह के निबंधों की एक मात्रा में प्रकाशित हुआ है। इसमें शामिल प्रश्नों का एक अच्छा सर्वेक्षण है। फिर एचएच राउली की, " द मैरिज ऑफ होसे", *मेन ऑफ गॉड: स्टडीज इन*

ओल्ड टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड प्रोफेसी नामक खंड में। यदि आप उन दो लेखों को देखें, तो आप मुद्दे में पड़ जाएंगे और वहां से आप जहां चाहें वहां जा सकते हैं। जहां तक आपके लिखित पेपर में चर्चा की बात है तो मेरी दिलचस्पी आपके अपने निष्कर्ष में है और आप उस निष्कर्ष पर क्यों पहुंचे हैं। आपको इस बारे में कुछ जागरूकता दिखानी होगी कि ऐसा करने में सभी मुद्दे क्या हैं, लेकिन मैं वास्तव में चाहता हूं कि आप उस पर कुछ पढ़ें और सोचें, और फिर उसे पढ़ने के बाद अपना निष्कर्ष कागज पर रखें। तो यह इसका पहला भाग है।

दूसरा, मैं चाहता हूं कि आप होशे को कई बार पढ़ें; यह इतनी लंबी किताब नहीं है; जिस तरह से इसे व्यवस्थित किया गया है यह थोड़ा जटिल है, लेकिन इसे पढ़ें, और फिर कुछ कविता, अनुभाग, या विषय या थीम का चयन करें, या आप किसी महत्वपूर्ण शब्द का शब्द अध्ययन भी कर सकते हैं। यह सब आप पर निर्भर है, लेकिन होशे की पत्नी के विषय के अलावा कोई कविता, खंड या विषय चुनें (मैं नहीं चाहता कि आप उस प्रश्न पर वापस जाएं)। दूसरे खंड में कुछ और लें, कुछ ऐसा जो आपको दिलचस्प लगे। हिब्रू अनुवाद व्याख्या से प्राप्त अंतर्दृष्टि का उपयोग करते हुए, इस पर टिप्पणी करें। दूसरे शब्दों में, मैं चाहता हूं कि आप कुछ सबूत दिखाएं कि आप होशे की किताब में कुछ व्याख्यात्मक मुद्दे पर काम कर रहे हैं और उस पर काम करने की प्रक्रिया में हिब्रू बाइबिल का उपयोग कर रहे हैं। तो यह दूसरा खंड है।

फिर तीसरा खंड आज के लिए भविष्यवक्ता का अर्थ है। होशे की पुस्तक जिस समय लिखी गई थी, उसके महत्व पर कुछ टिप्पणियाँ करें, और फिर ऐतिहासिक अंतर को पाटें; हम होशे की तुलना में बिल्कुल अलग समय, संस्कृति, स्थान और मुक्ति के इतिहास में रहते हैं। इक्कीसवीं सदी में परमेश्वर के लोगों के लिए इसके महत्व पर टिप्पणी करें। तो पेपर के तीन खंड हैं, मैं कहूंगा कि तीन मिनी-पेपर मैं चाहता हूं कि आप उन पर काम करें जिन्हें आप एक पेपर के रूप में बदल दें, लेकिन उन तीन खंडों के साथ।

5ए. बुलोच रीडिंग असाइनमेंट और तिथियाँ

अब, इस पर कोई प्रश्न? मैं चाहता हूं कि आप सबूत दिखाएं कि आपने कुछ शोध किया है, लेकिन मैं इसमें कोई विशेष लंबाई नहीं डालूंगा। इस बिंदु पर मुझे पेज तीन पर

जाने दीजिए। आपने देखा कि यह असाइनमेंट शेड्यूल कैसे काम करता है। तिथियां नियत तिथियां हैं, इसलिए आज नौवीं है, अगला मंगलवार 16 जनवरी है और मैं चाहता हूं कि आप बुलॉक से ओबद्याह, जोएल, जोनाह और अमोस के बारे में उनकी चर्चा पढ़ें। यदि आप इसे केवल पढ़ने से अधिक चाहें तो मैं इसकी सराहना करूंगा; मैं चाहता हूं कि आप कुछ नोट्स लें और उनमें से कुछ को आत्मसात करें, उस पर काम करें। बुलॉक पर संभावित प्रश्नोत्तरी के लिए तैयार रहें, अगले सप्ताह आपके पास होशे और मीका हैं; वह केवल 40 पृष्ठ है। मैंने 30 जनवरी के लिए बुलॉक से एक रीडिंग असाइनमेंट दिया है, वह है उस होसे पेपर पर काम करना शुरू करना, और आप उस होसे पेपर पर पूरे समय तक काम कर सकते हैं। अगले सप्ताह यशायाह और सफन्याह, फिर उसके अगले सप्ताह होशे पेपर अनुसंधान पर वापस, और फिर आप मध्यावधि में आते हैं। फिर आप हबक्कूक से यिर्मयाह और नहूम तक, और फिर डैनियल से बुलॉक तक वापस बुलॉक पर आ गए हैं। लेकिन, 6 मार्च को होशे का पेपर आने वाला है। दूसरे शब्दों में, आपके पास इस पर काम करने के लिए दो खुली असाइनमेंट तिथियां हैं, साथ ही आप रास्ते में जो भी अन्य कार्य करेंगे। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप मंगलवार, 6 मार्च तक इसे जमा कर दें।

अब वहां एक तारांकन चिह्न है, जिस पर पृष्ठ चार के मध्य में आप देखेंगे कि एक सप्ताह का विस्तार बिना दंड के दिया जाएगा। लेकिन एक सप्ताह की देरी के बाद, मैं प्रति सप्ताह 5/10 ग्रेड प्वाइंट काट लूंगा। मैं इस पेपर को पाठ्यक्रम के अंत तक नहीं छोड़ रहा हूँ; मैं चाहता हूँ कि आप इसे पाठ्यक्रम के 2/3 भाग में पूरा कर लें, ताकि अंत में इसका ढेर न लगे। 13 मार्च को आप बुलॉक में वापस आ जायेंगे; 20 मार्च अमोस व्याख्या। मैं आपको कुछ प्रश्नों के साथ एक वर्कशीट दूंगा, मैं चाहता हूँ कि आप उस असाइनमेंट के लिए लिखित रूप में उत्तर दें। मैं इसे कुछ और हफ्तों में आपको दे दूंगा। फिर मैं उस अमोस 9 परिच्छेद पर चर्चा करूँगा जैसा कि मैंने मंगलवार, 27 मार्च के लिए उल्लेख किया था, जो कि हमारा अंतिम व्याख्यान समय है। मंगलवार, 3 अप्रैल को अंतिम परीक्षा है, मैं चाहता हूँ कि आप एक्टेमीयर अध्याय सात या लेगेट की पुस्तक से दो निर्दिष्ट पाठों को पढ़ने से सीखी गई पांच सबसे महत्वपूर्ण चीजों का दो पेज का लिखित सारांश प्रस्तुत करें। दूसरे शब्दों में, यह

भविष्यवक्ताओं के उपदेश पर सामग्री है, और मैं चाहता हूँ कि आप वहाँ सूचीबद्ध उस पाठ को फिर से करें, और फिर उस पाठ से सीखी गई पांच सबसे महत्वपूर्ण चीजें तैयार करें।

फिर 3 अप्रैल को अंतिम परीक्षा है। असाइनमेंट पर कोई प्रश्न?

6ए. अतिरिक्त श्रेय

जहां तक अतिरिक्त क्रेडिट का सवाल है, यदि आप कुछ अतिरिक्त क्रेडिट कार्य करना चाहते हैं, तो आप निरंतरता और असंततता, टेस्टामेंट्स के बीच संबंधों पर परिप्रेक्ष्य नामक पुस्तक में अध्याय एक, दो, छह और सात को पढ़कर ऐसा कर सकते हैं। जॉन फीनबर्ग, 1988 में क्रॉसवे बुक्स द्वारा प्रकाशित। यह उन लोगों के निबंधों का संग्रह है जो दो अलग-अलग दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हैं; कुछ लोग टेस्टामेंट्स के बीच और वास्तव में इज़राइल और चर्च के बीच एक बहुत मजबूत निरंतरता देखते हैं, और अन्य लोग टेस्टामेंट्स और इज़राइल और चर्च के बीच अधिक दूर की निरंतरता देखते हैं। जब आप पुराने नियम की "राज्य भविष्यवाणियों" के बारे में बात करते हैं, तो उनमें से कई इज़राइल के भविष्य के बारे में बात करते हैं। यह किस बारे में बात कर रहा है? क्या यह किसी मायने में राष्ट्रीय या जातीय इज़राइल का भविष्य है, या क्या आप उनका आध्यात्मिकरण करते हैं और कहते हैं कि यह वास्तव में चर्च के बारे में बात कर रहा है, और चर्च सफल हुआ है, आप कह सकते हैं, इज़राइल भगवान के लोगों के रूप में; इज़राइल का कोई भविष्य नहीं है, और उन भविष्यवाणियों को चर्च के संदर्भ के रूप में समझा जाना चाहिए। बहुत व्यापक रूप से, यही वह जगह है जहां निरंतरता वाले लोगों और असंततता वाले लोगों के बीच अंतर का बिंदु निहित है। यह किताब कुछ समय के लिए प्रिंट से बाहर थी, लेकिन मुझे लगता है कि पिछले साल यह फिर से प्रिंट में आ गई। इसलिए यदि आप इसे खरीदना चाहते हैं तो खरीद सकते हैं, लेकिन यदि आप इसे खरीदना नहीं चाहते हैं तो उन चार अध्यायों: एक, दो, छह और सात की फोटोकॉपी लाइब्रेरी में आरक्षित हैं। जैसा कि शीर्षक से पता चलता है, इस पुस्तक के लेख टेस्टामेंट के बीच निरंतरता और असंतोष के महत्वपूर्ण मुद्दे को उठाते हैं जो विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जब कोई पुराने टेस्टामेंट की भविष्यवाणी पुस्तकों की राज्य की भविष्यवाणियों की व्याख्या करने का प्रयास करता है। क्या ये भविष्यवाणियाँ न्यू

टेस्टामेंट सी संकट के बारे में आलंकारिक भाषा में बोलती हैं? या, क्या उनके पास किसी ऐसे भविष्य का संदर्भ है जिसमें किसी तरह इज़राइल राष्ट्र का पुनर्गठन शामिल है? जब आप ओबद्याह जाएंगे तो हम इस पर गौर करेंगे, यह पहली किताब है जिसके बारे में आप पढ़ने जा रहे हैं, क्योंकि ओबद्याह के अंत में यह भविष्य के बारे में बात करती है। क्या यह इज़राइल के भविष्य के बारे में बात कर रहा है, या यह चर्च के बारे में बात कर रहा है? यह मुद्दा लगभग हर भविष्यवाणी की किताब में पाया जाता है।

7ए. ओबद्याह, जोएल, जोनाह और अमोस पर टिप्पणियाँ

यदि आप पृष्ठ तीन पर वापस जाएँ, तो आप देखेंगे कि आपका पहला पाठ ओबद्याह, जोएल, जोनाह और अमोस है। और आपने देखा कि पृष्ठ संख्याएँ बुलॉक की पुस्तक के अंत की ओर हैं। ओबद्याह का पृष्ठ 254, जोएल 324 है, और फिर योना की शुरुआत में वापसी। मैंने ओबद्याह, जोएल, जोनाह और अमोस को इसलिए नियुक्त किया है क्योंकि मुझे लगता है कि ये पुस्तकें इसी क्रम में लिखी गई थीं। मुझे लगता है कि ओबद्याह पुराने नियम के सबसे पुराने भविष्यवक्ताओं में से एक था, लेकिन यह ओबद्याह के लेखकत्व और तारीख और जोएल की तारीख के प्रश्नों में शामिल हो जाता है, जिसे कुछ लोग बाद की तारीखें देते हैं। जब हम इस पर चर्चा करेंगे तो हम इस पर गौर करेंगे। मुझे लगता है कि उन्हें पहले डेट करना सबसे अच्छा है। यह ऐसा मुद्दा नहीं है जो आवश्यक रूप से रूढ़िवादी व्याख्याकारों और अधिक उदार व्याख्याकारों के बीच है; यह उस तरह का कोई मुद्दा नहीं है। यह एक ऐसा मुद्दा है जहां असहमति की काफी गुंजाइश है, और यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है; इसीलिए चर्चा है। लेकिन मैं ओबद्याह को जल्दी और जोएल को जल्दी रखने के दृष्टिकोण को पसंद करता हूँ, जिस पर मैं बाद में चर्चा करूँगा। तो आप बुलॉक के अनुभागों को उस क्रम में पढ़ेंगे जो मुझे लगता है कि भविष्यवाणी पुस्तकों की उपस्थिति का कालानुक्रमिक क्रम है।

8ए. अतिरिक्त श्रेय: इज़राइल और चर्च पेपर

पृष्ठ 5 पर लौटते हुए: क्या ये भविष्यवाणियाँ न्यू टेस्टामेंट चर्च के बारे में आलंकारिक भाषा में बात करती हैं या क्या उनमें किसी प्रकार के पुनर्गठित राष्ट्र इज़राइल से जुड़े भविष्य का संदर्भ है? क्या बाइबल इसराइल के लिए कोई भविष्य देखती है, या क्या इसराइल को

चर्च द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है? इसके लिए एक शब्द है, "अति-सेशनिज़्म" जो कहता है कि चर्च ने सीधे तौर पर इज़राइल का स्थान ले लिया है, इज़राइल का कोई भविष्य नहीं है। आपको उपरोक्त अध्यायों को पढ़ना चाहिए, फिर उन मुद्दों पर विचार करना चाहिए जो वे उठाते हैं और इन मुद्दों पर अपने निष्कर्षों का वर्णन करते हुए 8-10 पेज का पेपर लिखना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको मुद्दे के दोनों पक्षों की अभिव्यक्ति से सहमत होना होगा जैसा कि आपके द्वारा पढ़े गए निबंधों में दर्शाया गया है। अन्य विकल्प भी हो सकते हैं। बेशक, यह एक बहुत बड़ा विषय है और बहुत जटिल भी है। यह संभव है कि आपको इस पर काम करने के लिए जितने कम समय में काम करना होगा, आप किसी ठोस निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाएंगे। मैं जानता हूँ कि आपमें से अधिकांश शायद अपने स्वयं के धार्मिक चिंतन के प्रारंभिक चरण में हैं और इस तरह के मुद्दों पर कम समय के बजाय लंबे समय तक काम करने की जरूरत है; और मैं कह सकता हूँ, यह कोई साधारण प्रश्न नहीं है।

9ए. अतिरिक्त क्रेडिट: मिलेनियल पोजीशन पेपर के लिए दिशा-निर्देश

निःसंदेह, आप युगांतशास्त्रीय स्थिति में आ जाते हैं, एक-सहस्राब्दी स्कूल आम तौर पर मानता है कि इज़राइल के लिए कोई भविष्य नहीं है; वह सहस्राब्दी काल अब है; कोई सहस्राब्दी नहीं है; ये सभी भविष्यवाणियाँ आध्यात्मिक अर्थ में पूरी होती हैं। पूर्व-सहस्राब्दी, या यहाँ तक कि सह-सहस्राब्दी के बाद का दृष्टिकोण, इन भविष्यवाणियों को किसी न किसी तरह से इज़राइल के भविष्य से संबंधित के रूप में देखेगा। वे युगांतशास्त्रीय स्थितियाँ लंबे समय से मौजूद हैं और उन पर लगातार बहस होती रहती है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि यह परियोजना आपको कम से कम इन सवालों में अपना रास्ता खोजने की दिशा में कुछ अस्थायी कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करेगी और फिर आपको कुछ ऐसे बकाया मुद्दों की पहचान करने में सक्षम बनाएगी जो अभी तक आपके दिमाग में अनसुलझे हैं। दूसरे शब्दों में, बहस से खुद को परिचित करना, इसके माध्यम से काम करने की कोशिश करना, शुरुआत में यह देखना कि आप किस अस्थायी निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं, इसका लक्ष्य है। ये अनसुलझे मुद्दे आपके पेपर की चर्चा का भी हिस्सा हो सकते हैं। नियत तिथि 27 मार्च है।

जो कि अंतिम परीक्षा से पहले की आखिरी कक्षा है; ध्यान दें कि यह कहता है "कोई विस्तार नहीं है।" यदि आप पेपर करते हैं, तो ए आपके अंतिम ग्रेड को .75, ग्रेड का $\frac{3}{4}$ बढ़ा देगा। और ग्रेड पॉइंट स्केल में, आप जानते हैं, एक "ए" 4 है, एक "बी" 3 है, "सी" 2 है; इसलिए यदि आपके पास पाठ्यक्रम के अन्य सभी घटकों के लिए औसत 3 है, जब आपको यह मिलता है, यदि आपको इस पर "ए" मिलता है तो आपके पास 3 के बजाय 3.75 है।
अतिरिक्त क्रेडिट पर कोई प्रश्न?

4. अन्य संसाधन

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे ये अन्य हैंडआउट्स उपयोग के लिए हैं। एक कक्षा व्याख्यान की रूपरेखा है जिसका मैं हमारी कक्षा के व्याख्यानों में पालन करूँगा; उस कक्षा व्याख्यान रूपरेखा के लिए एक ग्रंथ सूची कुंजी है, और फिर उद्धरणों का वह सेट है जो कक्षा व्याख्यान रूपरेखा की कुंजी भी है लेकिन इसमें ग्रंथ सूची में कुछ प्रविष्टियों से निकाले गए वास्तविक पैराग्राफ शामिल हैं। फिर पावरपॉइंट स्लाइड्स का एक सेट है; मेरे पास इस पाठ्यक्रम के लिए बहुत सारी स्लाइडें नहीं हैं, लेकिन कुछ हैं।

1ए. ग्रंथ सूची टिप्पणियाँ

मैं ग्रंथ सूची पर टिप्पणी कर सकता हूँ, आप पहले शीर्षक पर ध्यान दें: "भविष्यवाणी पुस्तकों पर सामान्य संदर्भ खंड।" यहां मैंने कुछ अन्य पुस्तकें सूचीबद्ध की हैं जो बुलॉक के समान हैं जो भविष्यवाणी सामग्री का सर्वेक्षण करती हैं। बुलॉक वहां सूचीबद्ध पहला है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में भविष्यवक्ताओं के दो सर्वेक्षण सामने आए हैं जो वास्तव में काफी अच्छे हैं, वे काफी अलग हैं, लेकिन वे दोनों काफी अच्छे हैं। रॉबर्ट चिशोल्म, *हैंडबुक ऑन द प्रोफेट्स*, बेकर 2002; चिशोल्म डलास सेमिनरी में है। और अंतिम प्रविष्टि, ओ. पामर रॉबर्टसन, *द क्राइस्ट ऑफ द प्रोफेट्स*, प्रेस्बिटेरियन रिफॉर्म, 2004। यदि आप भविष्यवाणी पुस्तकों के दो अन्य प्रकार के सर्वेक्षणों को देखना चाहते हैं, तो वे दोनों काफी भिन्न हैं। रॉबर्टसन अधिक धार्मिक है, लेकिन दोनों अच्छे हैं।

जे. बार्टन पायने की *बाइबिल भविष्यवाणी का विश्वकोश* शास्त्रगत भविष्यवाणियों और उनकी पूर्ति के लिए एक संपूर्ण मार्गदर्शिका है। यह कुछ वर्ष पहले 1973 में लिखा गया

था, लेकिन मुझे लगता है कि यह अभी भी उपलब्ध है। यह एक बहुत ही दिलचस्प खंड है क्योंकि पायने जो करता है वह संपूर्ण पवित्रशास्त्र का अध्ययन करता है और पवित्रशास्त्र के प्रत्येक कथन को अलग करता है जिसे वह एक भविष्यसूचक कथन मानता है, जो भविष्य में किसी चीज़ का संदर्भ देता है। फिर वह उनमें से हर एक की व्याख्या करता है, और जहां तक पूर्ति की बात है तो उसके पास समय की श्रेणियां हैं: पुराने नियम में पूर्ति, अंतर-वसीयत अवधि में पूर्ति, नए नियम अवधि में पूर्ति, चर्च के युग में कभी-कभी पूर्ति, पूर्ति सहस्राब्दी काल की, और शाश्वत अवस्था में पूर्णता। वह इन सभी चीजों के लिए नंबर देता है और उनका चार्ट तैयार करता है। तो इस विश्वकोश में आपको जो मिलता है वह एक संदर्भ स्रोत है; यदि आप किसी कविता या भविष्यवाणी के साथ काम कर रहे हैं तो आप इसे देख सकते हैं, कम से कम पायने की इसकी व्याख्या देख सकते हैं और जहां वह सोचते हैं कि आपको पूर्ति मिलेगी; आपको हमेशा उससे सहमत होने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन यह कम से कम आपको उनमें से कुछ के बारे में बताने के लिए एक संदर्भ के रूप में उपयोगी है। उस पुस्तक का पहला भाग भविष्यसूचक घटना का एक लंबा परिचय है, और यह कुछ-कुछ वैसा ही है जैसा आप इस पाठ्यक्रम के परिचय में कर रहे हैं; इज़राइल में पैगम्बरवाद की कुछ घटनाओं पर चर्चा।

रॉबर्ट गॉर्डन द्वारा संपादित दूसरा संग्रह, *इज़राइल के पैगंबर*, बहुत अकादमिक निबंधों का एक संग्रह है, ज्यादातर मुख्यधारा के बाइबिल विद्वानों द्वारा, 1995 में प्रकाशित। फिर हाल ही में गॉर्डन मैककॉनविले ने लिखा, *द प्रोफेट्स: एक्सप्लोरिंग द ओल्ड टेस्टामेंट*, खंड चार, इंटरवर्सिटी, 2002. यह काफी हद तक बुलॉक, चिशोल्म, रॉबर्टसन, भविष्यवाणी पुस्तकों का एक सर्वेक्षण जैसा है। गॉर्डन मैककॉनविले को निश्चित रूप से एक इंजीलवादी माना जाएगा, लेकिन वह एक मध्यमार्गी रूढ़िवादी या इंजीलवादी की तुलना में ड्यूटेरो-यशायाह, डैनियल की देर से तारीख, इस तरह की कुछ चीजों के लिए अधिक खुला है। वहाँ कुछ अच्छी चीजें हैं, लेकिन मैं आपको इसका उपयोग करने में सावधानी बरतूंगा; फिर भी, मैं इस पर ध्यान दूंगा।

होप जॉनसन द्वारा लिखित
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा
प्रारंभिक संपादन केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, फाउंडेशन बाइबिल भविष्यवाणी, व्याख्यान 1बी

1. प्राचीन इज़राइल में पैगम्बरवाद: कुछ सामान्य टिप्पणियाँ

आइए आपकी रूपरेखा में रोमन अंक I से शुरुआत करें। "प्राचीन इज़राइल में भविष्यवाणी: कुछ सामान्य टिप्पणियाँ।"

A. इज़राइल में पैगम्बरवाद एक अनोखी घटना है

ए. उसके अंतर्गत है "इजरायल में पैगम्बरवाद एक अनोखी घटना है।" मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि प्राचीन इज़राइल का भविष्यवाणी आंदोलन न केवल इज़राइल के इतिहास में, बल्कि पूरे मानव इतिहास में एक अनोखी घटना है, भले ही इज़राइल में भविष्यवाणी आंदोलन के समानताएं खोजने के प्रयास अक्सर किए जाते हैं। यहां आपके पास 400 वर्षों से भविष्यवक्ताओं के आने और लोगों के इस छोटे से समूह, इज़राइल, जो कनान देश में स्थित है, को ईश्वर का वचन सुनाने की एक धारा है। ओबद्याह से शुरुआत, जो मुझे लगता है कि संभवतः 835 ईसा पूर्व के आसपास की है, यह भविष्यवक्ताओं में सबसे प्रारंभिक है। मलाची लगभग 435 वर्ष का है, इसलिए आप देखते हैं कि यह 400 वर्षों तक फैला हुआ है। इस देश के इतिहास के बारे में सोचें जो 400 वर्षों से थोड़ा अधिक पुराना है, इसलिए हम समय की एक विशाल अवधि के बारे में बात कर रहे हैं। समय की उस लंबी अवधि के दौरान, एक के बाद एक, भगवान ने इन व्यक्तियों को ऊपर उठाया और उन्हें अपनी ओर से एक शब्द दिया, अपने लोगों को संदेश दिया।

1. विभिन्न देशों की अनोखी योग्यता

कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है कि विभिन्न लोगों या राष्ट्रों के पास बौद्धिक विचार, प्रयास, या कलात्मक, रचनात्मक क्षमता या जो कुछ भी अन्य लोगों द्वारा पहचाना जाता है और उच्च सम्मान में रखा जाता है, उसके कुछ क्षेत्र में एक विशेष क्षमता, एक विशेष योग्यता, या विशेषज्ञता या दक्षता होती है। प्राचीन ग्रीस के बारे में सोचें: उनके पास अपने मूर्तिकार थे। आप देखते हैं कि उनके काम के परिणाम दुनिया के कुछ महान संग्रहालयों में हैं, और आप उनकी क्षमता पर आश्चर्यचकित हो सकते हैं। उनके पास महान दार्शनिक भी

थे जो महान विचार रखते थे, इसलिए ग्रीस के पास सुकरात, प्लेटो और अरस्तू जैसे दार्शनिकों को पैदा करने का एक विशेष उपहार था। आप रोम के बारे में सोचें, उनके पास सैन्य कमांडर और न्यायविद थे; रोमन कानूनी प्रणाली का निश्चित रूप से बहुत प्रभाव था। आप इंग्लैंड को उपनिवेशवादी मानते हैं; उन्होंने अपने प्रशासकों को पूरी दुनिया में भेजा और ब्रिटिश साम्राज्य का निर्माण किया। आप अर्थशास्त्रियों, व्यवसाय प्रबंधन सिद्धांतों और उच्च तकनीक प्रकार के अनुसंधान और विकास वाले संयुक्त राज्य अमेरिका के बारे में सोचते हैं। जर्मनी में संगीतकार बाख, ब्राह्म और बीथोवेन के साथ-साथ कई प्रमुख दार्शनिक और धर्मशास्त्री भी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जर्मनी के पास उस प्रकार के लोगों को पैदा करने की एक विशेष प्रवृत्ति या प्रतिभा या मानसिकता रही है। तो आप लोगों को देख सकते हैं और देख सकते हैं कि कुछ राष्ट्रों के पास कुछ प्रयासों में विशेष योग्यताएँ हैं।

2. इजराइल के प्रतिभावान पैगंबर पैदा करने वाले

लेकिन आप देखते हैं कि कुछ लोग ऐसा कुछ देखते हैं और कहते हैं, उसी तरह जैसे जर्मनी ने इन महान संगीतकारों को तैयार किया, इजराइल ने भविष्यवक्ताओं को तैयार करने में प्रतिभा दिखाई। फिर आप जो पैगम्बरवाद की घटना देखते हैं उसे उसी स्तर पर रखा जाता है जैसे मानवीय क्षमता और प्रतिभा के ये उत्पाद जो अन्य लोगों के बीच पाए जाते हैं। मुझे लगता है कि इस तरह के दृष्टिकोण में वह मुख्य अंतर नज़र नहीं आता जो इजराइल के पैगम्बरों और अन्य लोगों और अन्य समयों और स्थानों की प्रतिभा के कार्यों के बीच मौजूद है। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि पैगम्बरवाद, इसकी परिभाषा के अनुसार, एक ऐसी घटना है जो मुख्य रूप से पूरे मानव इतिहास में मानव आत्मा की किसी भी अन्य उपलब्धि से विशिष्ट और अलग है।

3. दिव्य रहस्योद्घाटन

मुझे ऐसा लगता है कि दैवीय रहस्योद्घाटन के चरित्र के आधार पर, प्राचीन इजराइल में भविष्यवाणी को एक अनोखी घटना के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, भगवान कहते हैं, और हम शायद आज सुबह इनमें से कई पाठों को देखेंगे,

"मैं अपने शब्द तुम्हारे मुँह में डालूँगा।" वह यिर्मयाह से ऐसा कहता है। यह यिर्मयाह नहीं था जो इतना बोल रहा था। यह परमेश्वर था जो यिर्मयाह के माध्यम से बोल रहा था।

4. ईश्वर द्वारा प्रदत्त पैगम्बर

यहां तक कि रोनाल्ड क्लेमेंट्स जैसे व्यक्ति, जिन्होंने 1996 में *ओल्ड टेस्टामेंट प्रोफेसी* नामक पुस्तक लिखी थी और वह इंजीलवादी नहीं हैं, यह बयान देते हैं, "प्राचीन काल से कहीं और ऐसा साहित्यिक संग्रह संरक्षित नहीं किया गया है; पुराने नियम के पैमाने पर भविष्यसूचक साहित्य, प्राचीन इज़राइल का एक अद्वितीय उत्पाद बना हुआ है। दूसरे शब्दों में, वहाँ केवल कुछ अलग-थलग व्यक्ति नहीं थे जो रहते थे और बोलते थे, जिन्होंने दावा किया था कि वे भगवान के लिए बोल रहे थे; यह आंदोलन 400 वर्षों की अवधि तक फैला रहा।

अब यह बड़ी अनोखी बात है। मुझे लगता है कि जब आप बाइबल को देखेंगे, तो आप देखेंगे कि भविष्यवक्ताओं को ईश्वर द्वारा भविष्यवाणी के कार्य से संपन्न व्यक्तियों के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है। उन्हें ईश्वर ने भविष्यवाणी करने का कार्य प्रदान किया था ताकि ईश्वर का वचन इस्त्राएल को दिया जा सके, और इस्त्राएल के माध्यम से शेष विश्व को दिया जा सके। बाइबल स्पष्ट रूप से भविष्यवक्ताओं के शब्दों को भविष्यवक्ताओं के स्वयं के शब्दों के बजाय ईश्वर के शब्दों के रूप में प्रस्तुत करती है। इस कारण से मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि भविष्यवाणी संदेश जैसा कि पवित्रशास्त्र में प्रस्तुत किया गया है, मानव रचनात्मकता या मानव प्रतिभा के उत्पाद के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। ऐसा नहीं हो रहा है। बल्कि यह ईश्वरीय प्रकटीकरण का उत्पाद है। यह एक बहुत ही विशेष, प्रत्यक्ष अर्थ में दिव्य प्रकटीकरण है। अब मुझे नहीं लगता कि उस भेद के महत्व पर अधिक जोर दिया जा सकता है। आरंभ में ही आपको यह स्पष्ट होना होगा कि भविष्यवक्ताओं के साथ क्या हो रहा है। अब हम इस चर्चा पर वापस लौटेंगे कि मानव तत्व परमात्मा के साथ कैसे काम करता है, क्योंकि मनुष्य के रूप में इन लोगों की भी इन चीजों के निर्माण में भूमिका थी। आप उसे कैसे खोलेंगे? आप एक ओर मानव प्रवक्ता और दूसरी

ओर दिव्य रहस्योद्घाटन के उस संयोजन का वर्णन कैसे करते हैं? हम अंततः उस तक पहुंचेंगे। तो वह है ए. "इज़राइल में भविष्यवाणी एक अनोखी घटना है।"

बी. पैगंबर ईश्वर के सेवक थे जो भविष्यवाणी के कार्य से जुड़े थे

अब आइए बी पर चलते हैं। "पैगंबर ईश्वर के सेवक थे जो भविष्यवाणी के कार्य से जुड़े थे।" उसके अंतर्गत मेरे पास तीन उप-बिंदु हैं। पहला "पैगंबर ईश्वर के सेवक थे।" ईजे यंग ने भविष्यवक्ताओं पर *माई सर्वेट्स द प्रोफेट्स* नामक पुस्तक लिखी। उन्होंने इसे एक शीर्षक के रूप में इस्तेमाल करने का कारण यह है कि यह एक लेबल है जिसे आप पुराने नियम के कई संदर्भों में भविष्यवक्ताओं से जुड़ा हुआ पाएंगे, वे भगवान के सेवक हैं। मैं इनमें से कुछ सन्दर्भों को आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। 2 राजा 9:7 में एक भविष्यवक्ता येहू से कहता है, "मैं प्रभु की प्रजा इस्राएल पर राजा होने के लिए तेरा अभिषेक करता हूँ। तुम्हें अपने स्वामी अहाब के घराने को नष्ट करना है। (ध्यान दीजिए), मैं अपने सेवक भविष्यवक्ताओं और ईज़ेबेल द्वारा बहाए गए प्रभु के सभी सेवकों के खून का बदला लूंगा। 2 राजा 17:13 में, प्रभु ने अपने सभी भविष्यवक्ताओं और द्रष्टाओं के माध्यम से इस्राएल और यहूदा को चेतावनी दी, "अपनी बुरी चाल से फिरो, और उस सम्पूर्ण व्यवस्था के अनुसार मेरी आज्ञाओं और विधियों का पालन करो, जिसका पालन करने की आज्ञा मैं ने तुम्हारे पूर्वजों को दी और जो मैं ने तुम्हारे पूर्वजों को दी थी।" तू मेरे दास भविष्यवक्ताओं के द्वारा।" यिर्मयाह 7:25: "जब से तुम्हारे पुरखा मिस्र छोड़ कर चले गए तब से अब तक, (और वह पुराने नियम के काल का अन्त है), मैं ने प्रतिदिन, बारंबार, अपने दास भविष्यवक्ताओं को तुम्हारे पास भेजा, परन्तु उन्होंने न सुनी। मुझे या ध्यान दो. वे हठीले थे, और अपने पुरखाओं से भी अधिक बुराई करते थे।" यिर्मयाह 25:4: "और यद्यपि यहोवा ने अपने सब दास भविष्यवक्ताओं को तुम्हारे पास बारम्बार भेजा, तौभी तुम ने न तो सुना और न ध्यान दिया।" मैं भविष्यवक्ताओं को ईश्वर के सेवकों के रूप में वर्णित करते हुए, इस प्रकार के कई अन्य संदर्भों के साथ आगे बढ़ सकता हूँ। परमेश्वर स्वयं उन्हें "मेरे सेवक" कहते हैं।

1. कुछ भविष्यवक्ताओं को भविष्यवाणी कार्य के लिए एक विशेष बुलावा मिला

अब 1. बी के अंतर्गत है "कुछ भविष्यवक्ताओं को भविष्यवाणी कार्य के लिए एक विशेष बुलावा मिला।"

एक। यशायाह की पुकार

मैं उनमें से चार का उल्लेख करना चाहता हूँ जहाँ इसका वर्णन किया गया है, और पहला और शायद सबसे प्रभावशाली यशायाह 6:1-13 है। आपने उस अध्याय की पहली पंक्ति में पढ़ा, "जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह की मृत्यु हुई, मैंने प्रभु को सिंहासन पर विराजमान देखा, ऊँचे और महान, और उसके वस्त्र की श्रृंखला से मंदिर भर गया।" फिर इन साराफों का यह कहते हुए वर्णन है, "पवित्र, पवित्र, पवित्र, प्रभु सर्वशक्तिमान है।" यशायाह को प्रभु का यह दर्शन उसी समय हुआ जब उसे प्रभु के सामने अपनी पापपूर्ण स्थिति का दर्शन हुआ; इसलिए वह श्लोक तीन में कहता है, "हाय मुझ पर, मैं अशुद्ध होंठ वाला मनुष्य हूँ, इसलिए नष्ट हो गया हूँ; मैं अशुद्ध होठों वाले लोगों के बीच रहता हूँ; मेरी आँखों ने राजा को देखा है; सर्वशक्तिमान प्रभु।" यशायाह के लिए यह एक दूरदर्शी अनुभव है। वह यह देखता है, वह स्वयं को और अपनी पापपूर्ण स्थिति को देखता है, और कहता है, "हाय मुझ पर।" तब उन साराफों में से एक ने वेदी पर से यह कोयला ले लिया, और उसे अपने मुंह से लगाकर कहा, "तेरा अधर्म दूर हो गया; आपके पाप का प्रायश्चित्त हो गया है। और मैं ने यहोवा की यह वाणी सुनी, 'मैं किसे भेजूं, हमारी ओर से कौन जाएगा?' मैंने कहा, 'मैं यहाँ हूँ, मुझे भेजो।'" तो प्रभु यशायाह को आदेश देते हैं, यशायाह जवाब देता है, और प्रभु श्लोक नौ में कहते हैं, "जाओ और इन लोगों को बताओ।" उनके पास जो संदेश है वह बहुत सुखद नहीं है, उनका संदेश काफी हद तक आने वाले फैसले और सजा का संदेश है। लेकिन यह बहरे कानों पर पड़ने वाला है। और मूलतः यशायाह के मंत्रालय के साथ यही हुआ। हालाँकि निर्णय आएगा, उस अध्याय के अंत में, आपको आशा का एक संक्षिप्त नोट मिलेगा; एक अवशेष प्रभु के प्रति वफादार रहेगा। लेकिन स्पष्ट रूप से यहाँ यशायाह का आह्वान और आदेश है कि वह भविष्यवक्ता बने, ऐसा व्यक्ति बने जो ऐसे लोगों को परमेश्वर का संदेश सुनाए जो सुनने और मानने को तैयार नहीं थे।

बी। यिर्मयाह की पुकार

दूसरे, यिर्मयाह, यदि आप यिर्मयाह के पहले अध्याय, श्लोक चार और उसके बाद को देखें, तो आप पढ़ते हैं: "प्रभु का यह वचन मेरे पास आया, 'गर्भ में रचने से पहिले ही मैं ने तुझे जान लिया, और तेरे जन्म से पहिले ही मैं ने तुझे जान लिया, मैं ने तुम्हें जुदा कर दिया। मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए भविष्यवक्ता नियुक्त किया।' 'आह, प्रभु, प्रभु,' मैंने कहा, 'मुझे नहीं पता कि कैसे बोलना है, मैं केवल एक बच्चा हूँ।' परन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, यह न कह कि मैं बालक हूँ, मैं जिस किसी के पास तुझे भेजूं उसके पास जाना, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ वही कहना, उन से मत डरना, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, और तुझे बचाऊंगा।' प्रभु की घोषणा है. तब प्रभु ने अपना हाथ बढ़ाया, मेरे मुँह को छुआ, और मुझसे कहा (और जहां तक भविष्यवाणी की घटना का संबंध है यह एक महत्वपूर्ण पाठ बन जाता है)। 'अब मैंने अपने शब्द तुम्हारे मुँह में डाल दिये हैं। देख, आज मैं तुझे राष्ट्रों में नियुक्त करता हूँ, और राष्ट्रों और राज्यों पर नियुक्त करता हूँ कि उजाड़ें, ढाएं, फिर बनाएं और रोपें।'" यहां प्रभु का वचन यिर्मयाह के पास आता है; वह भविष्यवाणी कार्य से जुड़ी ज़िम्मेदारी और कठिनाई से बचने की कोशिश करता है, यह कहकर कि वह बहुत कमज़ोर, बहुत छोटा और काम करने में असमर्थ महसूस करता है। परन्तु प्रभु कहते हैं, "ऐसा मत कहो। जिन सभों के पास मैं तुम्हें भेजता हूँ उन सभों के पास जाना, और जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा दूँ वही मानना, और मैं अपने वचन तुम्हारे मुँह में डालूंगा।

सी। ईजेकील की पुकार

हमारे पास ईजेकील के लिए एक आह्वान भी है जिसका वर्णन पुस्तक के पहले तीन अध्यायों में किया गया है। मैं यह सब पढ़ने में समय नहीं लगाऊंगा, लेकिन यदि आपने इसे पढ़ा है, तो पहले अध्याय में याद रखें, यहजेकेल भगवान की इस सिंहासन गाड़ी को देखता है, जो कि चार प्राणियों द्वारा खींची गई इस पहिये वाली गाड़ी है और उस सिंहासन पर है रथ, इसके ऊपर, आपने पहले अध्याय के छंद 26 में पढ़ा, "उनके सिरों के ऊपर नीलमणि के सिंहासन जैसा दिखता था, और सिंहासन के ऊपर एक आदमी की तरह एक आकृति थी। मैंने देखा कि उसकी कमर से ऊपर तक वह चमकती हुई धातु की तरह लग रहा था,

मानो आग से भरा हुआ हो। और वहां से नीचे वह आग की तरह दिख रहा था और तेज रोशनी ने उसे घेर लिया था जैसे कि एक इंद्रधनुष और एक उज्ज्वल दिन पर बादल और उसके चारों ओर बादल थे। यह क्या था? यह प्रभु की महिमा की समानता का प्रकटन था, इसलिए उसे ईश्वर का यह दर्शन प्राप्त हुआ, बिल्कुल यशायाह की तरह। “जब मैं ने उसे देखा, तो मुँह के बल गिर पड़ा, और मैं ने किसी के बोलने का शब्द सुना, उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, अपने पांवों पर खड़ा हो, मैं तुझ से बोलूंगा।” और सन्देश क्या है? पद तीन, “हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे इस्राएलियों के पास भेज रहा हूँ, अर्थात् उस बलवायी जाति के पास जो मेरे विरुद्ध बलवा करती रही है।” श्लोक चार, “जिन लोगों के पास मैं तुम्हें भेज रहा हूँ वे हठीले और जिद्दी हैं। उनसे कहो, परमेश्वर प्रभु यही कहता है,” और चाहे वे सुनें या न सुनें, और कई बार वे सुनने में असफल होंगे, लेकिन यह आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है। चाहे वे सुनें या न सुनें क्योंकि वे एक विद्रोही घराने हैं, उन्हें पता चल जाएगा कि उनके बीच एक भविष्यवक्ता आया है “मैं तुम्हारे माध्यम से उन लोगों को अपना वचन देने जा रहा हूँ, और हे मनुष्य के पुत्र, तुम ऐसा मत करो।” उनसे या उनके शब्दों से डरो।” श्लोक सात, “तुम्हें मेरी बातें उनसे कहनी होंगी (क्या?)।” (किसके शब्द?) “मेरे शब्द, चाहे वे सुनें या न सुनें, क्योंकि वे विद्रोही हैं, परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, जो मैं तुझ से कहता हूँ उसे सुन, उस विद्रोही घराने के समान विद्रोह न कर। अपना मुँह खोलो, (और यहाँ उल्लेखनीय बात है,) और जो मैं तुम्हें देता हूँ उसे खाओ।” और वह उसे क्या दे रहा है? वह उसे एक स्क्रॉल देता है. उसके दोनों ओर विलाप और शोक के शब्द लिखे हुए थे। “उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जो तेरे आगे है उसे खा; इस स्क्रॉल को खाओ. (अब याद रखें कि यह एक दूरदर्शी स्थिति है।) तो जाओ और इस्राएल के घराने से बात करो।” इसलिये मैंने अपना मुँह खोला और उसने मुझे खाने के लिये वह पुस्तक दी। अब उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जो पुस्तक मैं तुझे देता हूँ उसे खा, उस से अपना पेट भर। इसलिये मैं ने उसे खाया, और उसका स्वाद मेरे मुँह में मधु के समान मीठा हुआ।” मुझे लगता है कि इस स्क्रॉल के साथ जो वहां हो रहा है वह यह है कि प्रतीकात्मक रूप से वह स्क्रॉल यह संदेश है कि ईजेकील को इसे खाकर अपना खुद का बनाना है। जैसे ही वह ऐसा करता है, भले ही यह

निर्णय का संदेश है, वह संदेश कहता है, "मेरे मुंह में शहद जैसा मीठा स्वाद आया।" यह परमेश्वर का वचन था.

डी। अमोस की कॉल

वे बहुत स्पष्ट आह्वान वाले तीन भविष्यवक्ता हैं; यशायाह, यिर्मयाह और यहजकेल। अमोस में कुछ ऐसा ही है, और यहां कई मुद्दे हैं और हम वापस आएं और बाद में किसी अन्य संदर्भ में उन पर चर्चा करेंगे। लेकिन आमोस 7:15 में ध्यान दें, आमोस उत्तरी राज्य में चला गया है। अमोस यहूदा से बाहर आता है, और वह यारोबाम द्वितीय के समय में, उत्तरी साम्राज्य में बेतेल तक जाता है और उत्तरी साम्राज्य के राजा यारोबाम के खिलाफ भविष्यवाणी करता है। पद 12 में, बेतेल का एक याजक अमस्याह, आमोस से कहता है, "हे दशी, बाहर निकल, यहूदा देश को लौट जा।" मैं तुम्हें यहाँ नहीं चाहता। फिर वह कहता है, "वहां अपनी रोटी कमाओ, और वहीं अपनी भविष्यवाणी करो। बेतेल में फिर भविष्यवाणी न करना, क्योंकि यह राज्य के मन्दिर में राजा का पवित्रस्थान है।" अमोस उत्तरी साम्राज्य के उस पुजारी अमज़िया को जवाब देते हुए कहता है, "मैं न तो भविष्यवक्ता था और न ही भविष्यवक्ता का बेटा, बल्कि मैं एक चरवाहा था, और गूलर के अंजीर के पेड़ों की देखभाल करता था। परन्तु यहोवा ने मुझे भेड़-बकरियोंको चराने से ले लिया, और मुझ से कहा, 'जाओ, मेरी प्रजा इस्राएल के पास भविष्यवाणी करो।'" अब यहोवा का वचन यहां है। तो अमोस जो कह रहा है वह यह था, "मैं मूल रूप से एक भविष्यवक्ता नहीं था, लेकिन प्रभु ने मुझे बुलाया और मुझसे कहा कि जाओ और यह संदेश दो, और मैं यही कर रहा हूँ।" ठीक है, तो ये भविष्यवक्ताओं के चार उदाहरण हैं जिन्हें भविष्यवाणी कार्य के लिए विशेष बुलावा मिला।

2. कुछ भविष्यवक्ताओं के लिए, कोई विशेष आह्वान दर्ज नहीं किया गया है

संख्या 2. कुछ भविष्यवक्ताओं के लिए, कोई विशेष आह्वान दर्ज नहीं किया गया है, लेकिन सभी भविष्यवक्ता इस जागरूकता को प्रदर्शित करते हैं कि वे भविष्यसूचक कार्य से संपन्न हैं। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि यह निष्कर्ष निकालने के लिए पर्याप्त बाइबिल जानकारी है कि प्रत्येक भविष्यवक्ता को भविष्यवाणी कार्य के लिए किसी प्रकार का विशेष

आह्वान प्राप्त हुआ था, जैसे यशायाह, यिर्मयाह, ईजेकील और आमोस को मिला था। हो सकता है उनके पास हो, लेकिन इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। जब आप कॉल के उस पूरे प्रश्न के बारे में सोचते हैं, तो मुझे लगता है कि कुछ अन्य चीजें भी हैं जिनके बारे में जागरूक होना चाहिए; मैं सोचता हूँ कि ऐसे व्यक्तियों के कुछ उदाहरण हैं जिन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से भविष्यसूचक कार्य किया, जिन्हें स्पष्ट रूप से कॉल प्राप्त नहीं हुई।

एक। बिलाम

मुझे लगता है कि इसका एक प्राथमिक उदाहरण संख्या 22-25 में बुतपरस्त भविष्यवक्ता बालाम है, जिसे मोआब के राजा बालाक ने इसराइल को शाप देने के लिए काम पर रखा था। बालाम ने ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। प्रभु ने अपने मुँह में अन्य शब्द डाले, और इस्राएल को श्राप देने के बजाय, उसने इस्राएल को आशीर्वाद दिया, और कहा कि ये सभी बड़ी चीजें इस्राएल के साथ होने वाली हैं, मोआब के राजा की निराशा के लिए जिसने कुछ और की आशा की थी। अब बालाम एक विधर्मी भविष्यवक्ता था, लेकिन मुझे लगता है कि आप उसी समय कह सकते हैं कि वह एक सच्चा भविष्यवक्ता था। परमेश्वर ने उसके वचन उसके मुँह में डाल दिये। बालाम की वाणी में कुछ उल्लेखनीय भविष्यवाणियाँ हैं। अतः वह सच्चा भविष्यवक्ता था; उन्होंने एक भविष्यसूचक कार्य किया। मुझे नहीं लगता कि आप यह कह सकते हैं कि उसे यशायाह, यिर्मयाह और यहजेकेल की तरह किसी भी मायने में कॉल आया था।

बी। डेविड ने अन्य कार्य भी किये

ऐसे अन्य व्यक्ति भी हैं जो स्पष्ट रूप से भविष्यवक्ता हैं, लेकिन जो धर्मतंत्र में कुछ अन्य कार्य भी करते हैं; डेविड के बारे में सोचो. दाऊद को राजा बनने के लिए अभिषिक्त किया गया था, और उस कार्य के लिए उसे तैयार करने के लिए पवित्र आत्मा उस पर आया था। लेकिन उन्हें भविष्यवक्ता के रूप में भी जाना जाता है। बेशक, ऐसे कई भजन हैं जो डेविड द्वारा लिखे गए हैं, और धर्मग्रंथ का कोई भी भाग निश्चित रूप से एक भविष्यवक्ता का काम है - उस मानव व्यक्ति के माध्यम से भगवान का वचन। 2 शमूएल 23:2 में, दाऊद पवित्र आत्मा के उस पर आने की बात भी करता है। 2 शमूएल 23:2 में, जिसे अक्सर दाऊद

के अंतिम शब्द कहा जाता है, वह कहता है, “प्रभु की आत्मा ने मेरे माध्यम से बात की। उनकी बात मेरी जुबान पर थी।” यह बिल्कुल वैसा ही लगता है जैसा आपने यशायाह के साथ किया था “मैंने अपने शब्द तुम्हारे मुंह में डाल दिए हैं।” प्रभु ने अपने वचन दाऊद के मुँह में डाले, परन्तु दाऊद इस अर्थ में “भविष्यवक्ता” नहीं था कि उसे इस प्रकार की भविष्यवाणी के ढंग से बुलावा मिला, और वह एक राजा था। यहजेकेल एक याजक था। अब, यहजेकेल को भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलावा आया था, लेकिन यदि आप यहजेकेल 1:3 को देखें, तो वह एक पुजारी था, और उसने भविष्यवक्ता और पुजारी दोनों का दोहरा कार्य किया।

सी। भविष्यवक्ताओं को पता था कि ईश्वर ने उन्हें भविष्यवाणी का कार्य प्रदान किया है

मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि जब भविष्यवक्ता ईश्वर के लिए बोलते हैं, तो वे ऐसा इस तरह से करते हैं जिससे यह संकेत मिलता है कि वे जानते हैं कि ईश्वर ने उन्हें भविष्यसूचक कार्य प्रदान किया है। दूसरे शब्दों में, वे जानते हैं कि वे कब अपना शब्द या भगवान का शब्द बोल रहे हैं। वे इसके प्रति सचेत हैं। यह सच है कि क्या उन्हें उस भविष्यवाणी कार्य को करने के लिए किसी प्रकार का विशेष आह्वान प्राप्त होता है, या क्या प्रभु बस उन पर आते हैं। वे जानते हैं कि वे उस भविष्यसूचक कार्य और स्वयं भगवान द्वारा संपन्न हैं। इसलिए, कुछ भविष्यवक्ताओं के लिए कोई विशेष आह्वान दर्ज नहीं किया गया है, लेकिन सभी भविष्यवक्ता जागरूकता प्रदर्शित करते हैं कि वे भविष्यवाणी कार्य से संपन्न हैं।

3. भविष्यवाणी समारोह की बंदोबस्ती एक ऐसी शक्ति थी जिसका कोई भी पैगंबर विरोध नहीं कर सकता था

तीसरा, निम्नलिखित बिंदु पर बस एक संक्षिप्त टिप्पणी: “भविष्यवाणी समारोह की बंदोबस्ती एक ऐसी शक्ति थी जिसका कोई भी पैगंबर विरोध नहीं कर सकता था।”

एक। अमोस

आमोस अध्याय तीन में एक दिलचस्प अंश है, जिसकी शुरुआत श्लोक चार से होती है, “क्या शेर के पास कोई शिकार नहीं होने पर वह झाड़ियों में दहाड़ता है?” यह कारण और प्रभाव संबंधों की एक श्रृंखला है: यदि आप शेर को दहाड़ते हुए सुनते हैं तो संभवतः

इसका कारण होगा। “जब उसने कुछ नहीं पकड़ा तो क्या वह अपनी मांद में गुर्राता है? क्या कोई पक्षी ज़मीन पर ऐसे जाल में गिरता है जहाँ कोई फंदा नहीं लगाया गया हो? जब पकड़ने के लिए कुछ न हो तो क्या ज़मीन में जाल उग आता है? जब नगर में तुरही बजती है तो क्या लोग कांपते नहीं? जब नगर पर विपत्ति आती है, तो क्या यहोवा ने उसे उत्पन्न नहीं किया है? निःसन्देह प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपनी योजनाएँ प्रकट किए बिना कुछ नहीं करता।” यह वाक्यांश फिर से है “मेरे सेवक भविष्यद्वक्ता हैं।” लेकिन फिर श्लोक आठ पर ध्यान दें: “शेर गरजा है, कौन नहीं डरेगा?” जब शेर दहाड़ता है तो डर पैदा होता है। “प्रभु प्रभु ने कहा है, भविष्यवाणी के अलावा कौन कर सकता है? प्रभु बोलते हैं, भविष्यवाणी के अलावा कौन कर सकता है?” वह एक ऐसी शक्ति थी जिसका कोई मनुष्य विरोध नहीं कर सकता था। मुझे लगता है कि अमोस यहां जो कह रहा है, वह बिल्कुल वैसा ही है जैसे एक आदमी को भयभीत होना चाहिए जब एक शेर उसके करीब दहाड़ना शुरू कर दे और वह डरने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता, इसलिए एक आदमी को तब भविष्यवाणी करनी चाहिए जब भगवान उससे कहे। आप इससे पीछे नहीं हट सकते।

बी। यिर्मयाह

यिर्मयाह का कहना है कि उसने इससे पीछे हटने की कोशिश की। यह यिर्मयाह 20 पद नौ में है। यिर्मयाह कहता है, “यदि मैं कहूँ कि मैं उसका उल्लेख न करूँगा या उसके नाम से आगे कुछ नहीं बोलूँगा, तो उसका वचन मेरे हृदय में मेरी हड्डियों में धधकती हुई आग के समान है। मैं इसे पकड़कर रखने से थक गया हूँ, वास्तव में मैं ऐसा नहीं कर सकता।” उसे बोलना ही होगा. अतः भविष्यसूचक कार्य द्वारा बंदोबस्ती एक ऐसी शक्ति थी जिसका मनुष्य विरोध नहीं कर सकता था। बिलाम उसका विरोध नहीं कर सका; उसने वही किया जो वह नहीं करना चाहता था। उसने इस्राएल को श्राप देने के बजाय आशीर्वाद दिया। सी. पैगंबर का कार्य ईश्वर के वचन की उद्घोषणा करना है

ठीक है, चलो सी पर चलते हैं। “पैगंबर का कार्य ईश्वर के वचन की उद्घोषणा है।” इस पर पहले ही जोर दिया जा चुका है और जब हम इस पर चर्चा कर रहे हैं तो मैं कुछ समय तक ऐसा करना जारी रखूँगा। सच्चा भविष्यवक्ता अपने शब्द स्वयं नहीं लाता; वह

अपने विचार, अपने विचार नहीं लाता है। जब वह बोलता है, तो वह परमेश्वर के शब्द और परमेश्वर के विचार लाता है। यदि आप यह पूछना चाहते हैं कि सच्चे पैगम्बरों और झूठे पैगम्बरों के बीच क्या अंतर है, तो सच्चे और झूठे पैगम्बरों के बीच मूलभूत अंतर यह है कि सच्चे पैगम्बर, ईश्वर के शब्दों का प्रचार करते हैं और झूठे पैगम्बर, अपने स्वयं के शब्दों का प्रचार करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 18

मैं आपको केवल तीन पाठों की ओर इंगित करना चाहता हूँ: उनमें से एक पर हम पहले ही विचार कर चुके हैं; लेकिन यदि आप व्यवस्थाविवरण 18 पर वापस जाते हैं, तो आपके पास मूसा द्वारा वर्णन है कि मूसा के चले जाने के बाद इज़राइल को रहस्योद्घाटन कैसे प्राप्त होगा। मूसा ईश्वर की ओर से अपने लोगों के लिए मध्यस्थ रहा है, वह ईश्वर का प्रवक्ता रहा है, और पुस्तक के अंत में वह मरने वाला है। व्यवस्थाविवरण 18 में भविष्यवाणी आंदोलन के उदय का वर्णन है। प्रभु कहते हैं, "मैं तुम्हारे समान एक भविष्यवक्ता खड़ा करूंगा, और तुम उसकी सुनोगे।" व्यवस्थाविवरण 18:18 में, प्रभु कहते हैं, "मैं उन में से तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे समान एक भविष्यवक्ता उत्पन्न करूंगा।" फिर अगले कुछ शब्दों पर ध्यान दें, "मैं अपने शब्द उसके मुँह में डालूँगा। वह उन्हें वह सब कुछ बताएगा जो मैं उसे आदेश दूँगा," और फिर यह कहा जाता है कि लोग सुनने के लिए जवाबदेह थे, क्योंकि जब वह भविष्यवक्ता बोलता है, तो वे भगवान के शब्द होते हैं।

यिर्मयाह 1:9

यह वही बात है जो हम पहले ही यिर्मयाह 1:9 में पढ़ते हैं, जहां प्रभु ने यिर्मयाह से कहा, "मैं अपने वचन तेरे मुँह में डालूँगा।" तो आप देखते हैं कि भविष्यवक्ता परमेश्वर के वचन बोलते हैं।

यिर्मयाह 23:16

इसके बाद यिर्मयाह 23:16 को देखें: "सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, 'भविष्यवक्ता तुझ से क्या भविष्यवाणी करते हैं, उसे मत सुनो (ये झूठे भविष्यवक्ता हैं)। वे तुम्हें झूठी आशाओं से भर देंगे, वे प्रभु के मुख से नहीं, परन्तु अपने मन से दर्शन की बातें

कहते हैं।” आप देखते हैं कि झूठे भविष्यवक्ता अपने-अपने विचार देते हैं। ये उनके अपने मन के दर्शन हैं, प्रभु के मुँह से नहीं। तो सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच बुनियादी अंतर क्या है? सच्चा भविष्यवक्ता प्रभु का वचन बोलता है; झूठा भविष्यवक्ता अपने ही शब्द और अपने ही विचार बोलता है।

1. भविष्यवक्ताओं ने जिन भावों से अपने उपदेशों का परिचय दिया, वे संकेत देते हैं कि संदेश ईश्वर का है, उनका अपना नहीं

अब, सी के अंतर्गत 1: "भविष्यवक्ताओं ने जिन अभिव्यक्तियों के साथ अपने उपदेश प्रस्तुत किए, वे संकेत देते हैं कि संदेश ईश्वर का है, उनका अपना नहीं।" मैंने पहले ईजे यंग की पुस्तक, *माई सर्वेट्स द प्रोफेट्स का उल्लेख किया था*। उस पुस्तक के पृष्ठ 171-175 पर, आप संदर्भों की एक सूची और उसके बाद आने वाले छोटे वाक्यांश देख सकते हैं। वह जो करता है वह यशायाह से अभिव्यक्ति लेता है। उदाहरण के लिए: यशायाह के 16:13 में, "यह प्रभु है; प्रभु ने कहा है।" 18:4 में: "यहोवा ने मुझ से यों कहा है।" अध्याय 21 का श्लोक 10: "जो मैं ने प्रभु से सुना है।" 21:17: "क्योंकि प्रभु ने कहा है।" 22:14: "प्रभु ने स्वयं को मेरे कानों में प्रकट किया है;" 22:25: "सेनाओं का यहोवा यों कहता है।" 28:22: "यह मैंने प्रभु से सुना है।" यह चलता ही जाता है। विभिन्न अभिव्यक्तियों की विविधता देखें, और यंग की पुस्तक में यशायाह की पुस्तक से ली गई उन अभिव्यक्तियों के चार पृष्ठ हैं। भविष्यवक्ता स्पष्ट करते हैं, कि जब वे बोल रहे थे, तो वे सचेत थे कि वे जो कह रहे थे वह परमेश्वर का वचन था। इसलिए वे अपने उपदेशों का परिचय देने के लिए जिन भावों का उपयोग करते हैं वे हमें बार-बार स्पष्ट रूप से बताते हैं कि यह भगवान का शब्द है। यह उनका अपना शब्द नहीं है।

2. पैगंबर को ईश्वर के वचन की घोषणा अवश्य करनी चाहिए चाहे वह उसके लिए सुखद हो या नहीं । सी के तहत नंबर 2। "पैगंबर को ईश्वर के वचन की घोषणा करनी चाहिए चाहे वह उसके लिए सुखद हो या नहीं।" बहुत बार पैगम्बरों को जो

सन्देश घोषित करना पड़ता था वह सुखद सन्देश नहीं होता था। यह न्याय, शोक, विनाश और पश्चाताप के आह्वान का संदेश था।

एक। सैमुअल अभिषेक शाऊल

मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ: 1 शमूएल 15 पर वापस जाएँ। वहाँ घटनाओं का एक लंबा क्रम है, 1 शमूएल के अध्याय 8 में चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हुए जहाँ लोग शमूएल के पास आते हैं और कहते हैं, "हमें एक राजा दे दो।" शमूएल उस अनुरोध पर बहुत अप्रसन्न हुआ क्योंकि वह कहता है, "याद रखो कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारा राजा है। तुम राजा क्यों माँग रहे हो?" "ठीक है," वे कहते हैं, "हम राष्ट्रों की तरह बनना चाहते हैं।" परन्तु शमूएल कहता है, "तुम यहोवा को, जो तुम्हारा राजा है, अस्वीकार कर रहे हो।" तब यहोवा ने शमूएल से कहा कि वह लोगों को वह दे जो वे चाहते हैं। तो हम घटनाओं के उस पूरे क्रम से गुजरते हैं और भगवान उन्हें एक राजा प्रदान करते हैं। वह राजा की भूमिका को इस प्रकार परिभाषित करता है जो वाचा के अनुरूप हो। फिर वह भगवान के प्रति निष्ठा के नवीनीकरण के संदर्भ में राजत्व का उद्घाटन करता है। शाऊल राजा बन जाता है, लेकिन बहुत जल्दी अपनी भूमिका से विमुख हो जाता है और दो बार अध्याय 13 और अध्याय 15 में शमूएल के शब्दों का पालन नहीं करता है। इसलिए प्रभु फिर शमूएल से कहता है, "जाओ और शाऊल से कहो, 'जैसा कि तुमने मुझे अस्वीकार कर दिया है, इसलिए मैंने तुम्हें अस्वीकार कर दिया है। अब आप राजा नहीं बनेंगे।'" 1 शमूएल 15:10 या 11 को देखें, "यहोवा का वचन शमूएल के पास पहुँचा।" शमूएल यहाँ भविष्यवक्ता है, और प्रभु कहते हैं, "मुझे दुख है कि मैंने शाऊल को राजा बनाया है क्योंकि वह मुझसे दूर हो गया है और उसने मेरे निर्देशों का पालन नहीं किया है।" इस पर सैमुअल की क्या प्रतिक्रिया है? हमने पढ़ा कि सैमुअल परेशान था। वह सारी रात प्रभु को पुकारता रहा। शमूएल के लिए यह कोई सुखद कार्य नहीं था कि वह जाकर शाऊल का सामना करे और उसे बताए कि प्रभु ने उसे अस्वीकार कर दिया है। यह उस तरह की चीज़ नहीं है जिसे करने में आपको आनंद आता है। शमूएल को ऐसा करने में आनंद नहीं आया, लेकिन प्रभु ने उसे शाऊल का सामना करने और

उसे यह घोषणा करने के लिए भेजा कि प्रभु ने उसे राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है। यदि आप 16:1 पर जाएँ, तो ध्यान दें कि प्रभु वहाँ क्या कहते हैं; “यहोवा ने शमूएल से कहा, तू कब तक शाऊल के लिये विलाप करता रहेगा? चूँकि मैं ने उसे इस्राएल पर राजा होने के लिये तुच्छ जाना है, इसलिये अपने सींग में तेल भर ले, मैं तुझे तेरे मार्ग पर भेजता हूँ, मैं तुझे बेतलेहेम के यिशै के पास भेजता हूँ। उसके पुत्रों में से एक को राजा बनना है।” इसलिए भविष्यवक्ता इस बात की परवाह किए बिना कि यह उनके लिए सुखद है या नहीं, परमेश्वर के संदेश की घोषणा करते हैं। सैमुअल के लिए यह कोई सुखद कार्य नहीं था, लेकिन वह जाता है और वह इसे करता है। मैं इस पर बाद में अगले भाग के अंतर्गत एक अन्य संबंध में वापस आऊंगा।

बी। बिलाम

बालाम के बारे में सोचो. हम उसके बारे में संख्या 22-25 में पहले ही बात कर चुके हैं। जो संदेश वह घोषित कर रहा था वह वह संदेश नहीं था जिसे वह घोषित करना चाहता था, लेकिन उसे इसका प्रचार करना पड़ा। यह प्रभु का वचन था. योना के बारे में सोचो. वह नीनवे जाकर नीनवेवासियों के लिए पश्चाताप का प्रचार नहीं करना चाहता था। उसने इसे टालने की कोशिश की, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका, और उसे जाकर उस संदेश का प्रचार करना पड़ा। पुस्तक के अंत में भी, उन्हें नीनवे के लोगों का संदेश और प्रतिक्रिया पसंद नहीं आई। यहजेकल को वह पुस्तक खानी पड़ी जिस पर परमेश्वर का न्याय अंकित था। उन्हें जाकर इसकी घोषणा करनी पड़ी, भले ही यह ऐसा कुछ न हो जो वे करना चाहते थे। इसलिए भविष्यवक्ता को ईश्वर के संदेश की घोषणा करनी चाहिए, भले ही यह उसके लिए सुखद हो या नहीं।

3. पैगंबर के अपने शब्द और

उनके द्वारा बोले गए ईश्वर के शब्द के बीच एक अंतर है; और भविष्यवक्ता इस भेद से अवगत थे फिर तीसरा: “भविष्यवक्ता के अपने शब्द और उसके द्वारा कहे गए परमेश्वर के शब्द के बीच एक अंतर है; और भविष्यवक्ता उस भेद से अवगत थे।” दूसरे शब्दों में, भविष्यवक्ता को अपने दिल और दिमाग और विवेक में पता होगा कि वह कब

परमेश्वर का वचन बोल रहा था, और कब वह अपने शब्द बोल रहा था। अगली बार मैं आपको इसके कुछ उदाहरण देने जा रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण अंतर है। मैं कुछ उदाहरण देखने जा रहा हूँ। लेकिन चलो अभी के लिए ब्रेक लें।

प्रतिलेखित: होप जॉनसन,
संपादित टेड हिल्डेब्रांड्ट द्वारा। पुनः वर्णित

डॉ. रॉबर्ट वैनॉय, भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 2

भविष्यवाणी संबंधी जागरूकता और पैगंबरों का इतिहास

सी. 3. पैगंबर के अपने शब्द और भगवान के शब्द के बीच एक अंतर है जो उन्होंने कहा था

मैंने सी. 3 पर एक टिप्पणी की। "भविष्यवक्ता के अपने शब्द और उनके द्वारा कहे गए ईश्वर के शब्द के बीच अंतर है।" जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, भविष्यवक्ता को अपने विचारों या विचारों या अंतर्दृष्टि की घोषणा नहीं करनी थी, उसे ईश्वर के वचन की घोषणा करनी थी। मैं यहां जो कह रहा हूं वह यह है कि भविष्यवक्ता अपने शब्दों और भगवान के शब्दों के बीच अंतर कर सकता है। मुझे लगता है कि जब हम इस भविष्यवाणी समारोह से गुजर रहे हैं तो उस अंतर के बारे में स्पष्ट होना बहुत महत्वपूर्ण है। यह कहना मान्य नहीं है कि भविष्यवक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए और वे विचार ईश्वर के शब्द के रूप में कार्य करते थे। यह बिल्कुल अलग निर्माण है। मुझे लगता है कि यह तब स्पष्ट हो जाता है जब हम कुछ अंशों को देखते हैं जहां पैगंबर के अपने विचारों और ईश्वर द्वारा उन्हें दिए गए संदेश के बीच अंतर किया जाता है। पैगम्बर उस भेद से अवगत थे।

तो, यह सच है कि दिव्य शब्द मानव उपकरण के माध्यम से, पैगंबर के माध्यम से दिया जाता है, और भगवान अपने शब्द की उद्घोषणा में पैगंबर की अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं, पृष्ठभूमि, स्वभाव, सोचने के तरीके, उन सभी प्रकार की विविधताओं को अपनाते हैं। जबकि यह सच है, दैवीय प्रेरणा की प्रकृति के एक जैविक प्रकार के दृष्टिकोण के हिस्से के रूप में जो संदेश के दैवीय चरित्र को कम या कम नहीं करता है। भगवान ने इन व्यक्तियों को उनके व्यक्तित्व, उपहार और सोचने के तरीकों आदि के साथ इतना तैयार किया है कि वह इसे अपने शब्द की घोषणा में लेता है, लेकिन यह भगवान का शब्द ही रहता है।

एक। उदाहरण: 2 सैम 7 - डेविड और नाथन

अब मैं आपको इसके कुछ उदाहरण देता हूँ जिससे मुझे लगता है कि यह अंतर स्पष्ट हो जाएगा। पहला 2 शमूएल 7 में है जिसमें डेविड और नाथन भविष्यवक्ता के बीच

कुछ बातचीत है। 2 शमूएल 7:1 में, आप पढ़ते हैं, "जब राजा अपने महल में बस गया और यहोवा ने उसे उसके चारों ओर के सभी शत्रुओं से विश्राम दिया, तब उसने नाथन भविष्यवक्ता से कहा, 'मैं यहाँ एक महल में रह रहा हूँ।' " देवदार, जबकि परमेश्वर का सन्दूक तम्बू में रहता है।' नाथन ने राजा को उत्तर दिया, 'तुम्हारे मन में जो कुछ भी है, आगे बढ़ो और करो, क्योंकि प्रभु तुम्हारे साथ है।'" अपने आप को नाथन के स्थान पर रखो। डेविड आपके पास आता है और कहता है कि मैं जहाज़ के लिए एक मंदिर बनाना चाहता हूँ। आप आपत्ति क्यों करेंगे? यह प्रभु का सम्मान करने की एक नेक इच्छा है। लेकिन मुझे लगता है कि यहां खतरा भगवान की इच्छा को हमारे अच्छे विचारों या नेक इच्छाओं से जोड़ने में है।

और आप आगे क्या पढ़ेंगे? "उस रात, यहोवा का सन्देश नाथन के पास पहुँचा, 'जाओ और मेरे सेवक दाऊद से कहो, यहोवा यही कहता है।'" अब आपके पास नाथन के विचार नहीं हैं, लेकिन आपके पास प्रभु का वचन है। "क्या आप ही हैं जो मेरे रहने के लिए घर बनवाएंगे?" मैं यह सब पढ़ने में समय नहीं लगाऊंगा क्योंकि मैं जो बिंदु कहना चाहता हूँ वह पहले ही पढ़ चुका हूँ। इसके बाद नाथन द्वारा प्रभु का संदेश दिया गया है, जो संक्षेप में कहता है, "डेविड तुम मेरे लिए घर मत बनाओ," यानी एक मंदिर; "मैं तुम्हारे लिए एक घर बनाने जा रहा हूँ" और "घर" में वंशवाद की भावना है। लेकिन जब आप इस मार्ग से गुजरते हैं तो शब्दों का एक प्रकार से खेल होता है। और यहोवा कहता है, "मेरा वचन है, मैं तेरे लिये घर बनाऊंगा। मैं तुम्हारे लिए एक राजवंश का निर्माण करूंगा. यह सदैव कायम रहेगा. तेरा पुत्र सुलैमान यहोवा का भवन बनाएगा, परन्तु तू नहीं। क्योंकि यह तुम्हारे लिये मेरी इच्छा नहीं है।"

इसलिए नाथन को डेविड के पास वापस जाना पड़ा और अपने शब्दों को सुधारना पड़ा और उन्हें दिव्य शब्द से बदलना पड़ा। फिर यह कहने के बजाय, "आगे बढ़ो और यह करो, प्रभु तुम्हारे साथ है," उसे कहना पड़ा, "नहीं, ऐसा मत करो। यह सुलैमान को करना है। यह करना आपके बस की बात नहीं है।" यहां पैगंबर के शब्द और भगवान के शब्द के बीच अंतर बिल्कुल स्पष्ट है। नाथन इस भेद के प्रति पूरी तरह से जागरूक था। इसलिए

नाथन के जीवन में इस बारे में कोई वास्तविक भ्रम नहीं है कि परमेश्वर का वचन क्या है और यह उसके अपने दृष्टिकोण से कैसे भिन्न है।

यदि आप अपना उद्धरण पृष्ठ 1 देखें, तो पहला पैराग्राफ सबसे ऊपर है। यह *कानून और भविष्यवक्ताओं* की पुस्तक से एक लेख है और 2 शमूएल 7:1-5 पर लेख है। “वह सब करो जो तुम्हारे दिल में है, नाथन यही कहता है, वह राजा को पूरी आज्ञा दी देता है। यहां भविष्यवक्ता का तात्पर्य यह है कि डेविड को जहाज के बारे में जो कुछ भी वह सोचता है, प्रतिबिंबित करता है, प्रस्तावित करता है उसे क्रियान्वित करना चाहिए। नाथन ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि यहोवा राजा के साथ है!” आप देखिए वह कहता है, “आगे बढ़ो और यह करो। प्रभु आपके साथ है!” “यह वास्तव में उनके पूरे जीवन में स्पष्ट है। नाथन के अनुसार यह मैदान उनकी योजना और उनके द्वारा दी गई सलाह को क्रियान्वित करने के लिए पर्याप्त है। वास्तव में, “यहोवा तुम्हारे साथ है, यह बिल्कुल सत्य है।” लेकिन नाथन परिणामों के बारे में गलती करता है। वह जल्द ही पता लगा लेगा... इसका मतलब यह नहीं है कि राजा के इरादों को खारिज कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि 1 राजा 8:18 में (और यह दिलचस्प है) सुलैमान कहता है कि प्रभु ने उसके पिता डेविड से कहा: कि तुम्हारा इरादा निर्माण करने का था मकान मेरे नाम, तुमने अच्छा किया जो तुम्हारी ऐसी मंशा थी। लेकिन यह मेरी इच्छा नहीं है, लेकिन पैगम्बर को पहले ईश्वर के रहस्योद्घाटन की प्रतीक्षा करनी चाहिए थी। उनका नेक इरादा हमेशा परमेश्वर के वचन के समान नहीं था। नाथन भी इस्राएल के परमेश्वर के लिए एक मन्दिर चाहता था, यह अपने आप में गलत नहीं था। यहां गलती यह हुई कि उन्होंने एक इंसान के रूप में बात की, न कि एक पैगम्बर के रूप में, जबकि एक पैगम्बर के रूप में उनकी राय विशेष रूप से मांगी गई थी।” इसलिए मुझे लगता है कि यहां एक ऐसा मामला है जहां आप नाथन के शब्द और भगवान के शब्द के बीच स्पष्ट अंतर देखते हैं।

बी। उदाहरण: 1 सैम. 16- शमूएल द्वारा दाऊद का अभिषेक

मैंने कहा कि मैं 1 शमूएल 16 पर वापस आना चाहता हूँ। 16:1 में प्रभु ने शमूएल से

कहा, "तू कब तक शाऊल के लिये विलाप करेगा?" शाऊल का सामना करने के लिए उसके पास अपना निजी संदेश है। परन्तु फिर प्रभु कहते हैं, "मैं तुम्हें यिशै के पास भेज रहा हूँ और मैं चाहता हूँ कि तुम उसके पुत्र का अभिषेक करो।" और शमूएल, 1 शमूएल 16 में बेतलेहेम में यिशै के घर जाता है और फिर आप श्लोक 6 में देखते हैं, "जब वे पहुंचे, तो शमूएल ने एलीआब को देखा और सोचा (यहां शमूएल के विचार, उसका विचार है), "निश्चित रूप से प्रभु का अभिषिक्त यहां पहले खड़ा है भगवान।" यह उनकी राय है। लेकिन श्लोक 7 में हम पढ़ते हैं कि, "यहोवा ने शमूएल से कहा, 'उसके रूप या उसकी ऊंचाई पर विचार मत करना क्योंकि मैंने उसे अस्वीकार कर दिया है। परमेश्वर उन चीजों को नहीं देखता जिन्हें मनुष्य देखता है। मनुष्य तो बाहरी रूप को देखता है, परन्तु यहोवा हृदय को देखता है।" फिर वह कहता है, एलीआब वह नहीं है। मैंने एलीआब को अस्वीकार कर दिया है। वह अपने अन्य सभी पुत्रों को बुलाता है और फिर भी वे प्रभु की पसंद नहीं हैं। आप श्लोक 12 पर आते हैं जहाँ वे डेविड को अंदर लाते हैं और आप श्लोक 12 के उत्तरार्ध में पढ़ते हैं, "तब प्रभु ने कहा, 'उठो और उसका अभिषेक करो। वह एक ही है।" तो आप उस अंश में देख सकते हैं, सैमुअल के कुछ विचार, कुछ भावनाएँ थीं, लेकिन वह गलत था। वह नहीं जानता कि प्रभु किस उचित व्यक्ति को चुन रहा है जिसका शमूएल को अभिषेक करना है। तो आप फिर से शमूएल और परमेश्वर के वचन के बीच अंतर देखते हैं।

सी। उदाहरण: योना

मैंने एक अन्य उदाहरण के रूप में योना का भी उल्लेख किया। यदि योना नीनवे में अपना संदेश लेकर आया होता, तो वह उस पर रखे गए परमेश्वर के वचन से बिल्कुल अलग शब्द होता। क्योंकि उसके विचार प्रभु के वचन से मेल नहीं खाते थे, उसने कार्य को टालने की कोशिश की, लेकिन प्रभु ने उसे वापस बुलाया और उसने प्रभु का वचन बोला।

डी। यिर्मयाह 27-28 - यिर्मयाह और हनन्याह संघर्ष

आइए यिर्मयाह में एक और दृष्टांत पर चलते हैं। यह यिर्मयाह 27:28 में है। यह हनन्याह नाम के झूठे भविष्यवक्ता और सच्चे भविष्यवक्ता यिर्मयाह के बीच का विवाद है।

अध्याय 27 में यिर्मयाह प्रभु का एक वचन देता है, एक भविष्यसूचक वचन। मूलतः वह शब्द यह है कि यहूदा को बेबीलोन के शासक नबूकदनेस्सर की सेवा करनी है। यदि आप 27:12 में देखें तो यिर्मयाह कहता है, “मैंने यहूदा के राजा सिदकिय्याह को भी यही सन्देश दिया। मैं ने कहा, बाबुल के राजा के जूए के नीचे अपनी गर्दन झुकाओ; उसकी और उसकी प्रजा की सेवा करो, और तुम जीवित रहोगे। तुम और तुम्हारी प्रजा उस तलवार, भूख और महामारी से क्यों मरोगे जिसके द्वारा यहोवा ने उन जातियों को डराया है जो बाबुल के राजा की सेवा न करेंगी?” यहूदा समेत इन जातियों के लिए परमेश्वर की इच्छा है कि वे बाबुल के राजा की सेवा करें।

ठीक है, फिर वह पद 14 में कहता है, “उन भविष्यद्वक्ताओं की बातें मत सुनो जो तुम से कहते हैं, 'तू बाबुल के राजा के आधीन न होगा,' क्योंकि वे तुझ से झूठ भविष्यद्वक्ताणी करते हैं। यहोवा की यह वाणी है, 'उन्हें मैं ने नहीं भेजा है।' वे मेरे नाम पर झूठ की भविष्यवाणी कर रहे हैं। इसलिए, मैं तुम्हें निकाल दूँगा और तुम और वे भविष्यद्वक्ता जो तुमसे भविष्यवाणी करते हैं, दोनों नष्ट हो जाएँगे।' तब मैंने याजकों और इन सभी लोगों से कहा, 'यहोवा यही कहता है:' - और यहां प्रभु का संदेश है - "उन भविष्यद्वक्ताओं की बात मत सुनो जो कहते हैं, 'अब बहुत जल्द प्रभु के घर से लेख आएंगे बेबीलोन से वापस लाया गया।' वे आपसे झूठ की भविष्यवाणी कर रहे हैं। उनकी मत सुनो। बाबुल के राजा की सेवा करो, और तुम जीवित रहोगे। यह शहर खंडहर क्यों बने? यदि वे भविष्यद्वक्ता हैं, और उनके पास यहोवा का वचन है, तो सर्वशक्तिमान यहोवा से बिनती करें, कि यहोवा के भवन में, यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में जो सामान बचा है, उसे बेबीलोन न ले जाया जाए। क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा यही कहता है।” वह यिर्मयाह का संदेश है. यह प्रभु का वचन है.

आप अध्याय 28 में आते हैं और आप एक झूठे भविष्यद्वक्ता के बारे में पढ़ते हैं जो आता है और कहता है कि उन्हें यिर्मयाह जो कहता है उसे नहीं सुनना चाहिए। “उसी वर्ष के पांचवें महीने में, अर्थात् यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य के चौथे वर्ष में, अज्जूर के पुत्र हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने, जो गिबोन का या, यहोवा के भवन में मेरे साम्हने मुझ से कहा।

याजकों और सब लोगों ने कहा, सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है, मैं बेबीलोन के राजा का जूआ तोड़ डालूंगा। दो वर्ष के अन्दर मैं यहोवा के भवन की वे सारी वस्तुएँ इस स्थान में फिर ले आऊंगा, जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यहां से हटाकर बाबुल को ले गया था। मैं यहूदा के राजा यहोयाकीम के पुत्र यहोयाकीन को भी इस स्थान पर लौटा लाऊंगा।" यदि आप उस श्लोक 2 और 3 की तुलना कार्यवाही अध्याय के श्लोक 16 से करते हैं तो आप देखेंगे कि यह बिल्कुल विपरीत है। जैसा कि 27:16 में यिर्मयाह कहता है, "उन भविष्यवक्ताओं की बात मत सुनो जो कहते हैं, 'अब बहुत जल्द यहोवा के भवन की वस्तुएं बेबीलोन से वापस लायी जाएंगी।' वे झूठ की भविष्यवाणी कर रहे हैं।" हनन्याह का कहना है कि उसे लगता है कि परमेश्वर उन सभी वस्तुओं को वापस लाएगा, "यहूदा के राजा यहोयाकीन और यहूदा से बाबुल गए अन्य सभी बंधुओं को," यहोवा की यही वाणी है, 'क्योंकि मैं बाबुल के राजा का जूआ तोड़ डालूंगा।' खैर हनन्याह का वह संदेश यिर्मयाह के संदेश का विरोधाभासी था।

अध्याय 28 श्लोक 5 से 11 में, यिर्मयाह के पास वास्तव में कोई प्रतिक्रिया नहीं है। देखिये पद 5-11 में वह क्या कहता है। "तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने याजकों और यहोवा के भवन में खड़े हुए सब लोगों के सामने भविष्यद्वक्ता हनन्याह को उत्तर दिया। उन्होंने कहा, 'आमीन! प्रभु ऐसा करें!' दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि इस बिंदु पर, वह जो कह रहा है वह है "हनन्याह, मुझे आशा है कि आप सही हैं। मैं आशा करता हूं कि हम नबूकदनेस्सर से छुड़ाए जाएंगे और यहोवा के मन्दिर की वस्तुएं वापस लौटा दी जाएंगी। वह कहते हैं, "प्रभु अपने भवन की वस्तुओं और सभी बंधुओं को बेबीलोन से इस स्थान पर वापस लाकर आपके द्वारा की गई भविष्यवाणी को पूरा करें।" इसलिए मुझे आशा है कि आप सही हैं। "फिर भी, सुनो कि मुझे तुम्हारे और सब लोगों के सामने क्या कहना है: प्राचीन काल से ही तुम्हारे और मेरे पहले के भविष्यवक्ताओं ने अनेक देशों और बड़े राज्यों के विरुद्ध युद्ध, विपत्ति और महामारी की भविष्यवाणी की है। लेकिन जो भविष्यवक्ता शांति की भविष्यवाणी करता है, उसे वास्तव में प्रभु द्वारा भेजा गया व्यक्ति माना जाएगा" - कैसे? - "केवल तभी जब उसकी भविष्यवाणी सच हो।" दूसरे शब्दों में, आप जो कह रहे हैं वह न्याय के उन

संदेशों के विपरीत है जो भविष्यवक्ता घोषित करते रहे हैं। तो वह कहते हैं, ठीक है, मुझे आशा है कि आप सही हैं, लेकिन हमें देखना होगा कि क्या होता है और केवल अगर यह सच होता है तो हम इसे प्रभु के संदेश के रूप में पहचान सकते हैं। “तब भविष्यवक्ता हनन्याह ने यिर्मयाह भविष्यवक्ता की गर्दन से जूआ उतारकर तोड़ दिया।” यिर्मयाह स्वयं जूआ पहनकर बेबीलोन की बन्धुवाई के जूए का प्रतीक बन रहा था। “और उस ने [हनन्याह] ने सब लोगों के साम्हने कहा, ‘यहोवा यों कहता है: इसी प्रकार मैं दो वर्ष के भीतर बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर का जूआ सब जातियों की गर्दन पर से तोड़ डालूंगा।’ वहाँ संदेशों की पलैश है. फिर आप क्या पढ़ते हैं? इस समय भविष्यवक्ता यिर्मयाह अपने मार्ग पर चला गया। तो वह कहता है मुझे आशा है कि आप सही हैं। मुझे नहीं लगता कि आप हैं. हमें इंतजार करना होगा और देखना होगा. वह मूलतः यही कहता है।

लेकिन फिर श्लोक 12 से 16 में क्या होता है? यहीं पर भेद पाया जाता है।

“भविष्यवक्ता हनन्याह के कुछ ही समय बाद” - श्लोक 12 - “भविष्यवक्ता यिर्मयाह की गर्दन से जूआ तोड़ दिया था” - कुछ हुआ - “यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास आया” और प्रभु का वचन क्या है ? – यहोवा कहता है, “जाओ और हनन्याह से कहो, ‘यहोवा यों कहता है: तू ने लकड़ी का जूआ तोड़ दिया है, परन्तु उसके स्थान पर तुझे लोहे का जूआ मिलेगा।’ इस्राएल का परमेश्वर, सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, मैं उन सब जातियोंकी गर्दनोंपर लोहे का जूआ डालूंगा, कि वे बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर के आधीन रहें, और वे उसकी अधीनता करेंगे, और मैं उसको अधिकार भी दे दूंगा। जंगली जानवर।” तब भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने हनन्याह भविष्यवक्ता से कहा, “सुनो, हनन्याह! यहोवा ने तुझे नहीं भेजा, तौभी तू ने इस जाति को झूठ पर भरोसा रखने को उभारा है। इसलिये यहोवा यों कहता है, मैं तुम को पृथ्वी पर से उठा लेने पर हूँ। इसी वर्ष तुम मरने वाले हो,” - क्यों? – “क्योंकि तुमने प्रभु के विरुद्ध विद्रोह का प्रचार किया है।” उसी वर्ष के सातवें महीने में हनन्याह भविष्यवक्ता की मृत्यु हो गई।” अब यह सातवाँ महीना था, लेकिन श्लोक एक में उल्लेख है कि यह उस वर्ष का पाँचवाँ महीना था जब उसने यह संदेश दिया था। दूसरे शब्दों में, दो महीने बाद वह मर गया। लेकिन आप देखिए, यहाँ एक झूठा भविष्यवक्ता है। यिर्मयाह को यहोवा का वचन

मिला, और झूठा भविष्यवक्ता आकर उलटा सन्देश देता है। यिर्मयाह की प्रतिक्रिया है, मुझे नहीं लगता कि आप सही हैं। मुझे आशा है कि आप हैं लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप हैं। लेकिन हमें देखना होगा। तब यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास आया और उसके पास एक नया सन्देश, एक नया वचन था। यह बहुत सटीक है। यह हनन्याह की झूठी भविष्यवक्ता के रूप में निंदा करता है और कहता है, "मैंने सुना है कि तुम मरने वाले हो," और दो महीने में वह मर गया। इसलिए मुझे लगता है कि आप फिर से यिर्मयाह के शब्द और उसकी प्रारंभिक प्रतिक्रिया के बीच अंतर देख सकते हैं।

पैगम्बर ईश्वरीय और पवित्र लोग थे जो किसी भी अन्य इंसान की तरह एक निश्चित राय रखते थे और उसे व्यक्त करते थे, लेकिन यह प्रभु का शब्द नहीं था, यह सिर्फ एक राय थी। अब, यिर्मयाह में अन्य स्थानों पर सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बारे में टिप्पणियाँ हैं और हम व्यवस्थाविवरण 18 में भविष्यवक्ताओं के कानून पर वापस जा रहे हैं जो उन भविष्यवक्ताओं के बारे में बात करता है जो प्रभु का वचन नहीं बोल रहे थे, वे कैसे थे उनके बीच अंतर करना। वे दोनों भविष्यवक्ता होने का दावा करते हैं और वे दोनों लोगों के पास आते हैं और कहते हैं, "यहोवा यों कहता है"। वे ऐसा करने का दावा करते हैं, इसलिए ऐसा लगता है कि यह लोगों पर निर्भर है कि वे कौन सा सच्चा भविष्यवक्ता था और कौन सा झूठा भविष्यवक्ता था।

इ। उदाहरण: 1 राजा 13 पुराने पैगंबर और यहूदा से आए परमेश्वर के आदमी

1 राजा 13, बेथेल के पुराने भविष्यवक्ता की कहानी है। आप शायद इस कहानी से परिचित हैं। यहूदा से परमेश्वर का यह जन बेतेल तक जाता है, बहुत कुछ यारोबाम द्वितीय के विरुद्ध आमोस की तरह, और यहूदा से यह अनाम भविष्यवक्ता यारोबाम प्रथम को उस वेदी के बारे में संदेश सुनाता है जो राज्य के विभाजन के बाद बेतेल में बनाई गई थी। पद 2 में आप देखिये, यहूदा में से परमेश्वर के इस जन ने यहोवा के वचन के द्वारा वेदी के साम्हने चिल्लाकर कहा, हे वेदी, वेदी! यहोवा यों कहता है, कि दाऊद के घराने में योशियाह नाम का एक पुत्र उत्पन्न होगा। वह ऊंचे स्थानों के याजकों को, जो अब यहां बलि चढ़ाते हैं, तुझ

पर बलि चढ़ाएगा, और मनुष्य की हड्डियां तुझ पर जलायी जाएंगी।" उसी दिन परमेश्वर के जन ने एक चिन्ह दिया, "यह वह चिन्ह है जो यहोवा ने कहा है, कि वेदी फट जाएगी, और उस पर की राख फैल जाएगी।" जब राजा ने इस संदेश के बारे में सुना तो आप पद 4 में देख सकते हैं, "उसने वेदी पर से अपना हाथ बढ़ाया और कहा, 'उसे पकड़ लो!' परन्तु जो हाथ उस ने उस मनुष्य की ओर बढ़ाया वह सिकुड़ गया, यहां तक कि वह उसे वापस खींच न सका। और वेदी टुकड़े-टुकड़े हो गई, और उसकी राख फैल गई।" इसलिए पद 6 में राजा, यारोबाम, परमेश्वर के भक्त से कहता है, "अपने परमेश्वर यहोवा से विनती कर, और मेरे लिये प्रार्थना कर, कि मेरा हाथ फिर से ठीक हो जाए।" तब परमेश्वर के भक्त ने यहोवा से विनती की, और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया।

राजा ने परमेश्वर के भक्त से कहा, 'मेरे साथ घर आओ और कुछ खाओ, और मैं तुम्हें एक उपहार दूंगा।' परन्तु यहूदा में से परमेश्वर के भक्त ने राजा को उत्तर दिया, यदि तू मुझे अपनी सम्पत्ति का आधा भी दे, तौभी मैं तेरे संग न चलूंगा, और न यहां रोटी खाऊंगा, और न पानी पीऊंगा। - क्यों? - "क्योंकि मुझे प्रभु के वचन द्वारा आज्ञा दी गई थी: 'तुम्हें रोटी नहीं खानी चाहिए या पानी नहीं पीना चाहिए या जिस रास्ते से तुम आए हो उसी रास्ते से लौटना नहीं चाहिए।'" जहां उन्हें वहां जाने पर निर्देश मिले थे: रोटी मत खाना . पानी न पियें. "इसलिए उसने दूसरा रास्ता अपनाया और जिस रास्ते से वह बेतेल आया था, उस रास्ते से नहीं लौटा।"

लेकिन जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है, उसकी मुलाकात इस बूढ़े भविष्यवक्ता से होती है। श्लोक 18 में यह बूढ़ा भविष्यवक्ता कहता है, "मैं भी तेरे समान भविष्यवक्ता हूं। और एक स्वर्गदूत ने प्रभु के वचन के द्वारा मुझ से कहा, 'उसे अपने साथ अपने घर वापस ले आ कि वह रोटी खाए और पीए पानी।' लेकिन हम देखते हैं कि इस कथा के लेखक ने मूल कथन लिखा है - "क्योंकि वह उससे झूठ बोल रहा था। इसलिये परमेश्वर का जन उसके साथ लौट आया, और उसके घर में खाया पिया।" वह जानता था कि प्रभु का वचन क्या था; प्रभु का वचन विशिष्ट था. उन्होंने प्रार्थना की. वह शुरू में उस शब्द का आज्ञाकारी था.

अब जब यह बूढ़ा भविष्यवक्ता आता है, तो वह मान जाता है और वह अंदर जाता है

और उसके साथ भोजन करता है। श्लोक 20 कहता है, "जब वह मेज पर बैठा था," क्या हुआ? "प्रभु का वचन बूढ़े भविष्यवक्ता के पास पहुँचा। उस ने परमेश्वर के उस जन से जो यहूदा से आया था, चिल्लाकर कहा, यहोवा यों कहता है, तुम ने यहोवा के वचन की अवहेलना की है, और जो आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी थी उसका पालन नहीं किया। तुम ने लौटकर उस स्थान में रोटी खाई, और पानी पिया, जहां उस ने तुम से कहा था, कि न खाना, न पीना। इसलिये तुम्हारा शरीर तुम्हारे पुरखाओं की कब्र में दफनाया न जाएगा।"

और यदि आप अध्याय में आगे पढ़ते हैं, तो आप निश्चित रूप से उस पुराने भविष्यवक्ता के भगवान के शब्द और उसके स्वयं के शब्द के बीच अंतर देख सकते हैं। उनका शब्द झूठ बोलने वाला शब्द था। वह अपने वचन और प्रभु के वचन के बीच अंतर जानता था।

एफ। निष्कर्ष

तो मैं जो कहना चाह रहा हूँ वह यह है कि भविष्यवक्ता के मन और विवेक में, भविष्यवक्ता को पता होता है कि वह कब प्रभु का वचन बोल रहा था और कब वह अपने शब्द बोल रहा था। वहां एक स्पष्ट अंतर है। इसलिए यह कहना कि भविष्यवक्ताओं ने अपना वचन परमेश्वर के वचन के रूप में कहा, मुझे लगता है कि यह उस डेटा के साथ विरोधाभास है जो हमें पवित्रशास्त्र में इस बात के तरीके से मिलता है कि यह कैसे काम करता है। उस भविष्यवक्ता के मन में एक स्पष्ट सीमांकन या अंतर की रेखा है जिसने पवित्रशास्त्र में अपने शब्दों को गढ़ा है।

D. इस्राएल के पैगम्बरों की घटना उतनी ही पुरानी है जितनी कि इस्राएल का इतिहास

1. इस्राएल का इतिहास और पैगम्बरों का इतिहास एक साथ व्यापक हैं

चलिए डी की ओर बढ़ते हैं। "इज़राइल के भविष्यवक्ताओं की घटना उतनी ही पुरानी है जितनी कि इज़राइल का इतिहास।"

एक। पुराने पैगम्बर

मैं इस बिंदु पर यह कहने के अलावा और कुछ नहीं करने जा रहा हूँ कि इज़राइल का इतिहास और भविष्यवक्ताओं का इतिहास काफी व्यापक है। यिर्मयाह 7:25, मुझे लगता है कि हम पहले ही पढ़ चुके हैं, कहता है, "जब से तुम्हारे पुरखा मिस्र से निकले, तब से अब तक मैं ने बारंबार अपने दास तुम्हारे पास भेजे।" जिस समय आपने मिस्र छोड़ा वह यिर्मयाह के समय तक मूसा का समय था, यिर्मयाह 586 ईसा पूर्व बेबीलोन के निर्वासन से ठीक पहले था, लेकिन मूसा से भी पहले, उत्पत्ति 9:25-27 में नूह को एक भविष्यवक्ता कहा गया है और इब्राहीम को एक भविष्यवक्ता कहा गया है। उत्पत्ति 20:7 में। इसलिए पितृसत्तात्मक काल से पहले भी पैगम्बर हुए हैं।

बी। भविष्यवक्ताओं

पुरुष भविष्यवक्ताओं के अलावा , इज़राइल में भी भविष्यवक्ताएँ, यानी महिला भविष्यवक्ताएँ थीं। ये संदर्भ कम हैं, और कुछ मामलों में यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि क्या मतलब है। निर्गमन 15:20 में मूसा की बहन मरियम को भविष्यवक्ता कहा गया है। वास्तव में वह वहाँ क्या कर रही है यह इतना स्पष्ट नहीं है। आपने पढ़ा, "तब मिरियम, भविष्यवक्ता, हारून की बहन, ने अपने हाथ में डफ लिया, और सभी स्त्रियाँ डफ लेकर नाचती हुई उसके पीछे हो लीं। मरियम ने उनके लिये यह गीत गाया, 'यहोवा का भजन गाओ, क्योंकि वह बहुत महान है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुद्र में फेंक दिया है।" अब यहां संदर्भ कह रहा है, वह संगीत के साथ भगवान की स्तुति कर रही है। और प्रश्न यह है कि 'भविष्यवक्ता' शब्द का अर्थ क्या है? क्या ऐसा है कि वह उस पूजा का नेतृत्व कर रही थी जो चल रही थी या मरियम प्रभु का वचन बोल रही थी? मैं उस पर बाद में वापस आऊंगा। लेकिन वह एक भविष्यवक्ता के रूप में सामने आती है।

न्यायियों 4:4 में दबोरा एक भविष्यवक्ता है। "डेबोरा, एक भविष्यवक्ता, लैपिडोथ की

पत्नी, उस समय इज़राइल का नेतृत्व कर रही थी।" वह एक जज भी हैं।

2 राजा 22:14 में हुल्दा को भविष्यवक्ता कहा गया है। यह मंदिर की कानून की किताब की खोज का समय था जब योशियाह राजा था, जब कानून की किताब पाई गई थी, जैसा कि आपने श्लोक 14 में पढ़ा था, "हिल्कियाह याजक, अहीकाम, अकबोर, शापान और असायाह गए थे।" भविष्यवक्ता हुल्दा से बात करो, जो तिकवा के पुत्र शल्लूम की पत्नी थी, जो अलमारी के रखवाले हरहास का पोता था। वह दूसरे जिले में यरूशलेम में रहती थी। उसने उनसे कहा, 'यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यही कहता है।'" और संदेश यह है; प्रभु का एक वचन. यशायाह की पत्नी भी एक भविष्यवक्ता थी। यशायाह 8:3 में, यशायाह कहता है, "तब मैं भविष्यवक्ता के पास गया, और वह गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया," वह माहेर-शालाल-हाश-बाज़ है। सवाल यह है कि क्या यशायाह की पत्नी एक भविष्यवक्ता है क्योंकि वह एक भविष्यवक्ता की पत्नी है या क्योंकि उसने भविष्यसूचक कार्य किए हैं? यह स्पष्ट नहीं है। तो बस एक टिप्पणी, भविष्यवक्ताओं के ये उदाहरण हैं।

सी। पैगम्बरों की कम्पनियाँ

व्यक्तिगत पैगम्बरों के अलावा, पैगम्बरों के समूहों या कंपनियों का भी उल्लेख मिलता है। ऐसे सन्दर्भ असंख्य नहीं थे, लेकिन हम उन्हें विभिन्न स्थानों पर पाते हैं, विशेष रूप से सैमुअल और किंग्स में। मैं उनमें से कुछ सन्दर्भों को आपके साथ देखना चाहता हूँ।

1.1 सैम. 10 - शाऊल और भविष्यवक्ताओं की संगति

पहला 1 शमूएल 10:5-6 है। यह शाऊल को राजा के रूप में चुनने की प्रक्रिया में होता है। शाऊल अपने पिता के पशुओं की खोज में था, और वह जानकारी लेने के लिए शमूएल के पास गया और यहोवा ने शमूएल से कहा, "जो पुरुष तेरे पास आएगा वही मैं ने राजा के लिये चुना है, तू उसका अभिषेक करना। उसे सभी लोगों का राजा बनना है।" तो सैमुअल ऐसा करता है। फिर 10:1 में आपने 1 शमूएल की पुस्तक पढ़ी "प्रभु ने तेरा अभिषेक किया।" लेकिन आगे अध्याय 10 में शमूएल शाऊल को बताता है कि इस समय कुछ चीजें घटित होने वाली हैं क्योंकि प्रभु ने उसे राजा बनने के लिए चुना है। पद 5 में तुम

पढ़ते हो, “उसके बाद तुम परमेश्वर के गिबा को जाओगे, जहां पलिशितियों की एक चौकी है। जैसे ही आप शहर के पास पहुंचेंगे, आपको नबियों का एक जुलूस मिलेगा। वहां हिब्रू शब्द है जिसका अनुवाद एनआईवी पैगम्बरों के “जुलूस” के रूप में करता है। वास्तव में इसका अर्थ है “एक कंपनी” या “भविष्यवक्ताओं का एक समूह”। इसलिए “तुम्हें भविष्यवक्ताओं का एक दल उच्च न्यायालय से आता मिलेगा, जिसके आगे वीणा, डफ, बांसुरी और वीणा बजाई जाएंगी, और वे भविष्यवाणी करेंगे।” तो यहाँ भविष्यवक्ताओं की एक कंपनी भविष्यवाणी कर रही है। “प्रभु की आत्मा शक्ति के साथ तुम पर आएगी और तुम उनके साथ भविष्यवाणी करोगे और तुम एक अलग व्यक्ति में बदल जाओगे। जब ये चिन्ह पूरे हो जाएं, तो जो कुछ करने को मिले वही करो, क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे साथ है।” तो इनमें से कई संकेत थे। यह उनमें से आखिरी था। आपने पढ़ा कि यह इसी तरह काम करता है। आप आयत 9 में पढ़ते हैं, “शाऊल शमूएल को छोड़ने के लिए मुड़ा और परमेश्वर ने शाऊल का हृदय बदल दिया और ये सभी चिन्ह उस दिन पूरे हुए। जब वे गिबा में पहुंचे, तो नबियों का एक जुलूस उनसे मिला। परमेश्वर का आत्मा उन पर सामर्थ से उतरा और उनके साथ भविष्यवाणी करने लगा।” तो यहाँ एक जुलूस या भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ताओं के एक समूह का संदर्भ दिया गया है।

अब इस बिंदु पर - हम इस पर बाद में वापस आएंगे - लेकिन इस बिंदु पर मैं “भविष्यवाणी” शब्द के संबंध में यहां क्या हो रहा है, इसके बारे में एक संक्षिप्त टिप्पणी करना चाहता हूँ। ये पैगम्बर क्या थे, पैगम्बरों की ये टोली, ये पैगम्बर क्या कर रहे थे? *नाबा*, “भविष्यवाणी” क्रिया के लिए शब्द, के विभिन्न अर्थ हैं। आम तौर पर हम कहेंगे कि वह आदमी पैगम्बर, *नबी था*, या वह आदमी जिसने कुछ समय पहले भविष्यवाणी की थी और वह मर गया। हम उसके बारे में ऐसे व्यक्ति के रूप में सोचते हैं जिसने प्रभु के वचन का प्रचार किया। लेकिन यदि आप उपयोग पर ध्यान दें, तो ऐसा प्रतीत होता है या यदि आपने ब्राउन, ड्राइवर और ब्रिग्स में मूल *नाबा को देखा है, तो इसका एक अर्थ है “एक परमानंद की स्थिति में भविष्यवाणी करना।”* 1 शमूएल 10:5 में, अंतिम वाक्यांश, एनआईवी कहता है, “वे भविष्यवाणी कर रहे होंगे।” एनआरएसवी का कहना है, “वे भविष्यसूचक उन्माद में

होंगे।" बर्कले अनुवाद कहता है, "वे परमानंद में होंगे।" तो आप इस प्रश्न में पड़ गए कि इस धातु *नाबा* का क्या अर्थ है, जिसका अर्थ है भगवान के शब्द को सामान्य स्थिति में बोलना या ताकि वे एक परमानंद की स्थिति में चले जाएं और उस तरह के फ्रेम में कुछ कहें या कुछ गाएं। मन की।

यदि आप अपने उद्धरणों को देखें, पृष्ठ 2, ईजे यंग ने अपनी पुस्तक *माई सर्वेट्स, द प्रोफेट्स में इस पर चर्चा की है*। वह इस 1 शमूएल 10 परिच्छेद के बारे में बात कर रहा है। उन्होंने कहा, "आपको ध्यान देने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए, हालांकि, इस पाठ में ऐसा कोई संकेत नहीं है जो यह सुझाव दे कि भविष्यवाणी संगीत द्वारा की गई थी जैसे कि संगीत एक उत्तेजक था। नबियों के सामने संगीत वाद्ययंत्र ले जाए जाते थे। निहितार्थ यह दिया गया है कि उन्हें केवल साथ देने के लिए नियोजित किया गया था, इसलिए भविष्यवाणी करना कोई निरर्थक प्रलाप नहीं था, बल्कि संगीत की संगत के माध्यम से ईश्वर की एक भक्तिपूर्ण स्तुति थी। "यह यंग की व्याख्या है। यहां जो चल रहा था वह संगीत की संगत के माध्यम से ईश्वर की भक्तिपूर्वक स्तुति थी, जिसे " भविष्यवाणी करने के लिए" *नाबा शब्द के मौखिक रूप का उपयोग करके वर्णित किया गया है*। उनका कहना है कि, "अगर हम भविष्यवक्ताओं का वर्णन करने के लिए परमानंद शब्द का उपयोग करते हैं" - ऐसे बहुत से लोग हैं जो ऐसा करते हैं, वह इस पर टिप्पणी कर रहे हैं - "हमें इस शब्द का उपयोग सावधानी से करना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे परमेश्वर के सम्मोहक प्रभाव के अधीन थे, जैसा कि शाऊल से कहा गया था, क्योंकि जब वह भविष्यवक्ताओं से मिलेगा तो यहोवा की आत्मा उस पर दौड़ेगी और वह उनके साथ भविष्यवाणी करेगा। इस भविष्यवाणी की पूर्ति इस प्रकार संबंधित है - जब आत्मा उन पर दौड़ी, तो उसने उनके बीच में भविष्यवाणी की। फिर 10बी, जब तक ऐसा प्रतीत न हो कि इस विशेष उदाहरण में भविष्यवाणी करने का कार्य आत्मा के आने का परिणाम था, परमेश्वर की आत्मा भविष्यवक्ता पर आई, और परिणाम वह भविष्यवाणी थी। इसलिए परमानंद की स्थिति का स्रोत न तो संगीत की उपस्थिति में पाया जाता है, न ही स्वैच्छिक संगति में, न ही छूत में, न ही किसी स्व-लगाए गए या प्रेरित उत्तेजना में, बल्कि केवल ईश्वर की आत्मा की तीव्र गति में

पाया जाता है। 1”

तो यह परमेश्वर की आत्मा है जो शाऊल पर आ रही है जो उसे इस समूह या भविष्यवक्ताओं की मंडली में शामिल होने के लिए प्रेरित करती है, वे वही करते हैं जो वे कर रहे थे, जिसे यंग परमेश्वर की उत्साही प्रशंसा के रूप में देखता है। या जो कुछ हो रहा था उसका वर्णन करने के लिए *नाबा* इस शब्द का उपयोग करता था। फिलहाल, इस परिच्छेद पर आपका ध्यान आकर्षित करने का मेरा उद्देश्य मुख्य रूप से आपको भविष्यवक्ताओं की एक कंपनी का संदर्भ दिखाना है, किसी एक भविष्यवक्ता का नहीं, बल्कि भविष्यवक्ताओं की एक कंपनी का। हम बाद में इस बारे में अधिक बात करेंगे कि वे क्या कर रहे थे और ये कंपनियां आम तौर पर क्या करती थीं और भविष्यवाणी से जुड़ी आनंदमय घटनाओं का यह विचार क्या है, लेकिन वर्तमान में यहां 1 सैमुअल 10 में भविष्यवक्ताओं की एक कंपनी है।

2. 2 राजा 2-4 एलीशा और भविष्यवक्ताओं की मंडली, जेरिको, बेथेल...

एलीशा के समय में, आपको विभिन्न स्थानों पर भविष्यवक्ताओं की कंपनियों का उल्लेख मिलता है। 2 राजा 2:3 में, हम पढ़ते हैं, "बेतेल में भविष्यवक्ताओं का एक दल एलीशा के पास आया और पूछा, 'क्या तू जानता है कि यहोवा आज तेरे स्वामी को तुझ से छीन लेगा?'" 2 राजा 2:5 में, जेरिको में भी एक मंडली है, जेरिको में भविष्यवक्ताओं का एक समूह एलीशा के पास गया। 2 राजा 4:38 में, "एलीशा गिलगाल लौट आया और उस क्षेत्र में अकाल पड़ा। जब भविष्यवक्ताओं की मंडली उस से मिल रही थी, तब उस ने अपने सेवक से कहा, 'बड़ा बर्तन चढ़ाकर इन मनुष्यों के लिये कुछ पकाओ।' बेथेल में भविष्यवक्ताओं की मंडली के तीन संदर्भ हैं (2 राजा 2:3), जेरिको (2 राजा 2:5), और गिलगाल (2 राजा 4:38) और कुछ अन्य संदर्भ भी हैं।

3. 1 सैम. 19: शाऊल और भविष्यवाणी करने वाली कंपनियाँ

मुझे उन राजाओं के सन्दर्भों का उल्लेख पहले करना चाहिए था, सन्दर्भ 1 शमूएल 19:20 में है। यह तब हुआ जब शाऊल को अस्वीकार कर दिया गया था, उसकी जगह लेने के लिए डेविड का अभिषेक किया गया था और डेविड युद्ध में सफल हुआ था, और शाऊल

को ईर्ष्या होने लगी थी। शाऊल डेविड को मारने की कोशिश करता है और अंततः डेविड को अदालत से निकाल दिया जाता है और वह शरणार्थी बन जाता है। परन्तु शाऊल से भागते समय वह सबसे पहले शमूएल के पास जाता है। आइए पहले संदर्भ जान लें। 1 शमूएल 19:18 में, “जब दाऊद भाग गया और बच निकला, तब वह रामा में शमूएल के पास गया और उसे सब कुछ बताया जो शाऊल ने उसके साथ किया था। तब वह और शमूएल नाइओत को गए, और वहीं रहे। शाऊल के पास यह समाचार पहुंचा, कि दाऊद रामा के नाइओत में है; इसलिए उसने उसे पकड़ने के लिए आदमी भेजे। परन्तु जब उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं के एक समूह को, और शमूएल को उनका अगुवा खड़ा करके, भविष्यद्वाणी करते देखा, तब परमेश्वर का आत्मा शाऊल के मनुष्यों पर उतर आया, और वे भी भविष्यद्वाणी करने लगे। तो यहाँ भविष्यद्वक्ताओं का एक समूह है, शमूएल उनका नेता है। वे भविष्यवाणी कर रहे हैं; वे जो कुछ भी कर रहे हैं वह पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। शाऊल के ये एजेंट दाऊद को पकड़ने की कोशिश में आते हैं, और उनका क्या होता है? परमेश्वर की आत्मा उन पर आती है और वे भविष्यवाणी करने लगते हैं। फिर, इसका जो भी मतलब हो।

शाऊल को यह बता दिया गया, इसलिये उसने और आदमी भेजे और उन्होंने भी भविष्यवाणी की। शाऊल ने तीसरी बार मनुष्य भेजे। “अंत में, वह स्वयं रामा के लिए रवाना हुआ और सेकु में बड़े हौज के पास गया। और उस ने पूछा, शमूएल और दाऊद कहां हैं? उन्होंने कहा, 'रामा में नैओथ में।' इसलिये शाऊल रामा में नबायोत को गया। परन्तु परमेश्वर का आत्मा उस पर भी उतरा, और वह नबायोत तक पहुंचने तक भविष्यद्वाणी करता हुआ चलता रहा। उसने अपना वस्त्र उतार दिया और शमूएल की उपस्थिति में भविष्यवाणी की। वह पूरे दिन और पूरी रात उसी तरह पड़ा रहा। इसी कारण लोग कहते हैं, क्या शाऊल भी भविष्यद्वक्ताओं में से है?"

मैं इस पर बाद में वापस आऊंगा, लेकिन यहां मैं इस शब्द *नाबा के अर्थ पर ध्यान देना चाहता हूँ* और इस शब्द के उपयोग से किस प्रकार का असामान्य व्यवहार जुड़ा हो सकता है। यह पैगम्बर पर आने वाली परमानंद की स्थिति के संबंध का प्रश्न है जिसने उन्हें बोलने में सक्षम बनाया, यदि यही हो रहा है। मुझे लगता है कि यहां मुख्य बात स्पष्ट है कि

भगवान की आत्मा शाऊल के दूतों पर आती है और साथ ही खुद शाऊल पर भी इस तरह से आती है जो उन्हें वह करने से रोकती है जो वे करने के लिए निकले थे, जो कि डेविड को पकड़ना था, और वे ऐसा कर सकते थे ऐसा मत करो. आत्मा उन्हें ऐसा नहीं करने देगी। हालाँकि उसके सम्बन्ध में कहा गया कि वे भविष्यवाणी कर रहे थे।

ठीक है, तो हमारे पास समान चीज़ों के बहुत सारे संदर्भ हैं। वास्तव में इन बैंडों या भविष्यवक्ताओं की कंपनियों के कार्य क्या हैं, यह कभी भी स्पष्ट नहीं किया गया है। वे शमूएल, एलिय्याह और एलीशा के सहायक या शिष्य रहे होंगे। यह शमूएल, एलिय्याह और एलीशा के समय में है कि वे प्रकट होते हैं। शायद उन्हें उन समुदायों में सच्चे धर्म को बढ़ावा देने में एक पैगंबर की सहायता करने का काम सौंपा गया था जहां वे रहते थे।

4. 1 राजा 20 - भविष्यवक्ताओं की संगति का एक भविष्यवक्ता बोलता है

केवल एक ही अंश है - और वह 1 राजा 20:35-43 में है - जहां भविष्यवक्ताओं की मंडली का एक सदस्य वास्तव में दिव्य रहस्योद्घाटन का एक शब्द बोलता है। इसका केवल एक ही मामला है. शायद हमें उस पर गौर करना चाहिए. आपने 20:35 में पढ़ा, "यहोवा के वचन के द्वारा भविष्यवक्ताओं के पुत्रों में से एक ने अपने साथी से कहा, 'मुझे अपने हथियार से मार।'" अब वह वाक्यांश "भविष्यवक्ताओं के पुत्र" [बेने हनेबीम] का कभी-कभी अनुवाद किया जाता है एनआईवी में "भविष्यवक्ताओं की कंपनी" के रूप में, और कभी-कभी अधिक शाब्दिक रूप से "भविष्यवक्ताओं के पुत्र" के रूप में। और उस कंपनी का एक सदस्य कंपनी के दूसरे सदस्य से कहता है, "मुझे अपने हथियार से मारो," लेकिन उसके साथी ने फिर मना कर दिया। इसलिये भविष्यवक्ता ने कहा, "तू ने यहोवा की आज्ञा नहीं मानी, इस कारण जैसे ही तू मुझे छोड़ेगा, एक सिंह तुझे मार डालेगा।" और उस आदमी के चले जाने के बाद, एक शेर ने उसे पाया और उसे मार डाला।

भविष्यवक्ता को एक और आदमी मिला और उसने कहा, 'कृपया मुझे मारो।' इसलिये उस पुरुष ने उस पर वार करके उसे घायल कर दिया। तब भविष्यवक्ता जाकर सड़क के किनारे खड़ा होकर राजा की प्रतीक्षा करने लगा।" और राजा आता है. "जैसे ही

राजा पास से गुजरा, भविष्यवक्ता ने उसे पुकारकर कहा, “तेरा दास लड़ाई के मैदान में गया था, और कोई एक बन्दी को लेकर मेरे पास आया और बोला, ‘इस आदमी की रक्षा करो। यदि वह खो गया, तो यह तुम्हारा होगा।’ उसके प्राण के बदले प्राण दो, नहीं तो तुम्हें एक किव्वार चाँदी देनी होगी।’ जब आपका नौकर इधर-उधर व्यस्त था, वह आदमी गायब हो गया।’ इस्राएल के राजा ने कहा, ‘यह तुम्हारा वाक्य है।’ ‘तुमने स्वयं ही इसे सुनाया है।’ तब भविष्यवक्ता ने तुरंत अपनी आंखों से पट्टी हटा दी, और इस्राएल के राजा ने उसे भविष्यवक्ताओं में से एक के रूप में पहचाना। उसने राजा से कहा, “- और यहां एक मामला है जहां आपको इन कंपनियों में से एक का सदस्य एक शब्द देते हुए मिलता है प्रभु की ओर से, - “यहोवा यों कहता है:” - और यह भविष्यवक्ता अहाब से बात कर रहा है - “तू ने उस मनुष्य को स्वतंत्र कर दिया है जिसके बारे में मैंने निश्चय किया था कि वह मर जाएगा। इसलिए उसके प्राण के बदले में तुम्हारा प्राण है, उसके प्राण के बदले में तुम्हारे लोग हैं उसके लोग।’ उदास और क्रोधित होकर इस्राएल का राजा सामरिया में अपने महल को चला गया।” अब वह बेन्हदद, एक सीरियाई शासक था, जिसे अहाब ने आज्ञाद कर दिया था, और यह भविष्यवक्ता उसकी निंदा करता है। तो आपके पास भविष्यवक्ताओं की कंपनियों के सभी संदर्भों में से एक उदाहरण है जहां एक कंपनी का सदस्य वास्तव में प्रभु के वचन की घोषणा करता है . तो इन कंपनियों का कार्य क्या था? जैसा कि मैंने कहा, यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है।

5. पैगम्बरों की संगति का कार्य

यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 1 को देखें, तो पृष्ठ के नीचे, होबार्ट फ्रीडमैन के *पुराने नियम के पैगम्बरों के परिचय में*, वह ये टिप्पणियाँ करते हैं, “फिर भविष्यवक्ताओं के पुत्रों का असली कार्य और उद्देश्य क्या था? (‘भविष्यवक्ताओं के पुत्र’ का अनुवाद ‘भविष्यवक्ताओं की कंपनी’ के रूप में किया जाता है।) इस प्रश्न का उत्तर देने के प्रयास में, उन अंशों में उनके कार्य पर ध्यान देना अच्छा होगा जहां उनका उल्लेख पवित्रशास्त्र में किया गया था। एक, उन्हें गिलगाल, बेथेल, जेरिको जैसे धार्मिक केंद्रों में एक साथ रहते हुए,

एक महान पैगंबर के सामने बैठकर चित्रित किया गया है, जहां शायद उन्हें आध्यात्मिक निर्देश दिए गए थे। मैं उस पर वापस आने वाला हूं। मुझे पूरा यकीन नहीं है कि यह इसका हिस्सा है।

"दो, इन समूहों का एक और आध्यात्मिक कार्य एक साथ भविष्यवाणी करना था," जैसा कि 1 शमूएल 10:5 और उसके बाद, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं। "यह भविष्यवाणी क्या थी और इसने क्या रूप लिया, यह काफी अटकलों का विषय रहा है। प्रथम शमूएल 10 से प्रतीत होता है कि इसका एक भाग ईश्वर की स्तुति गा रहा था। भविष्यवक्ताओं का एक दल ऊँचे स्थान से उतर रहा था जहाँ उन्होंने किसी प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान में भाग लिया था और वे संगीत वाद्ययंत्रों के साथ भविष्यवाणी कर रहे थे। 1 इतिहास 25:1-3 से स्पष्ट है कि यह भविष्यवाणी की अभिव्यक्ति का एक स्वीकृत तरीका था। एक और जगह है जहां भविष्यवाणी करना संगीत से जुड़ा है। "इस प्रकार समूह केवल व्यक्तियों के रूप में भविष्यवाणी नहीं करेंगे, बल्कि सार्वजनिक प्रशंसा और पूजा के विभिन्न स्थानों पर एक जुलूस में संयुक्त रूप से भविष्यवाणी करेंगे।" तो जिस भी तरीके से समझा जाए, एक साथ भविष्यवाणी करने का यह दूसरा उद्देश्य है।

"तीसरा, उन्होंने इज़राइल से संबंधित महत्वपूर्ण मामलों में आध्यात्मिक दूत के रूप में भी काम किया। यह तब देखा जाता है जब एलीशा ने भविष्यवक्ताओं के पुत्रों में से एक को इस्राएल के राजा येहू का अभिषेक करने के लिए भेजा और फिर जब परमेश्वर ने बेन्हदद के साथ व्यवहार में उसकी उदारता के लिए राजा अहाब को फटकार लगाने के लिए न्याय के दूसरे दूत को भेजा, "पहला जिस अनुच्छेद को हमने अभी 1 किंग्स 20 में देखा था। तो, फ्रीमैन का सुझाव है कि ये समूह एक थे, एक नेता से निर्देश प्राप्त करने वाले, जैसे सैमुअल या एलीशा, दो, सार्वजनिक प्रशंसा और पूजा के नेता, और तीन, संदेशवाहक। इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि हम इससे अधिक कुछ कह सकते हैं। यहां तक कि उनमें से कुछ पर भी सवाल उठाया जा सकता है और हम अगले सप्ताह उसके बारे में कुछ और बात करेंगे। खास तौर पर नंबर एक. क्या भविष्यवक्ताओं की इन कंपनियों को भविष्यसूचक कार्य करने के लिए निर्देश या शिक्षा की आवश्यकता थी?

2. पैगम्बरों के पुत्र

ठीक है, नंबर दो, इन कंपनियों के सदस्यों को [*बेने हनेबीम*] कहा जाने लगा। यह वाक्यांश पुराने नियम में नौ बार आता है। ये सभी 1 राजा 20 और 2 राजा 9 के बीच हैं। यह अहाब के समय से लेकर येहू के प्रकट होने तक, या लगभग 974 से 841 ईसा पूर्व तक था। यदि आपने 2 राजा 2:3 और 5 को देखा, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, लेकिन आप एनआईवी पाठ में इसके बारे में जानते हैं कि हिब्रू शब्द क्या हैं। आप देखते हैं, 2 राजा 2-3 में, जहां आप पढ़ते हैं "बेथेल में भविष्यवक्ताओं की मंडली", वहां हिब्रू शब्द है, *बेने हानेबीम*, बेथेल के भविष्यवक्ताओं के पुत्र और एनआईवी ने इसका अनुवाद "भविष्यवक्ताओं की कंपनी" के रूप में किया है। मुझे लगता है कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि अंग्रेजी के पाठक भ्रमित न हों कि इरादा क्या है। क्या ये भविष्यवक्ताओं के बच्चे, भविष्यवक्ताओं के बेटे थे, या क्या यह एक भविष्यवक्ता है और भविष्यवक्ता के बच्चे थे और ये बेथेल में भविष्यवक्ताओं के बच्चे हैं जो एलीशा के पास आकर पूछते हैं? इसलिए लगातार, हालांकि हमेशा नहीं, एनआईवी " *बेने हनेबिइम* " का अनुवाद "भविष्यवक्ताओं के पुत्रों" के बजाय "भविष्यवक्ताओं की कंपनी" के रूप में करता है। 2 राजा 2:3, 2:5, 2:7, 2:15, 4:1, 4:38, 5:22, 6:1 में, एनआईवी के पास "भविष्यवक्ताओं की संगति" है और हर मामले में यह "पुत्र" हैं भविष्यवक्ताओं का" हिब्रू में।

एक। "बेटा" (बेन) आदि शब्द के विभिन्न अर्थ।

अब बाइबिल के उपयोग में, शब्द "बेटा" का अर्थ एक नर बच्चा भी हो सकता है, बेशक, आमतौर पर इसका उपयोग इसी तरह किया जाता है। इसका अर्थ "वंशज" हो सकता है। वहां सेमेटिक उपयोग, हालांकि यह हिब्रू नहीं है, मैथ्यू 1:1 में देखा जा सकता है, "यीशु मसीह डेविड का पुत्र" - "पुत्र" "वंशज" के अर्थ में। लेकिन इसका अर्थ "समूह का सदस्य" भी हो सकता है। मुझे लगता है कि यह शब्द उस तीसरे अर्थ में है, "एक समूह का सदस्य," इस अभिव्यक्ति में शब्द का उपयोग किया जाता है, "भविष्यवक्ताओं के पुत्र।" भविष्यवक्ताओं की मंडली के सदस्य के रूप में ही उन्हें भविष्यवक्ताओं के पुत्र कहा जाता

है। इसका मतलब उपदेशक के बच्चों या पैगम्बर के बच्चों जैसा कुछ नहीं है।

अब मैं देख रहा हूँ कि मेरा समय समाप्त हो गया है। मैं " बेन" या "बेटा" का उपयोग करने के तरीके के कुछ उदाहरण देखना चाहता हूँ जहाँ इसका उपयोग स्पष्ट रूप से बच्चों के अर्थ में नहीं, बल्कि "समूह के सदस्य" के अर्थ में किया जाता है। तो हम इस बिंदु पर रुकेंगे और वहाँ से उठाएंगे और अगले सप्ताह आगे बढ़ेंगे।

प्रतिलेखित: मिरांडा मैकिनॉन,
आरंभिक संपादन टेड हिल्डेब्रांट द्वारा
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 3

पैगंबरों की कंपनियां

एफ. 2. पैगंबरों की कंपनियां जिन्हें "पैगंबरों के पुत्र" कहा जाता है

पिछले सप्ताह हम रोमन अंक I पर चर्चा कर रहे थे और हम F तक पहुँच गए थे। रोमन अंक I "प्राचीन इज़राइल में पैगंबरवाद के बारे में सामान्य टिप्पणियाँ" था और खंड F में हम "पैगंबरों के बैंड या कंपनियों" के बारे में बात कर रहे थे जिनका उल्लेख किया गया है पुराना नियम. हमने एफ. 1 के तहत उनमें से कुछ संदर्भों को देखा था और मैंने अभी बताया था कि 2. इन कंपनियों के सदस्यों को "भविष्यवक्ताओं के पुत्र," " *बेने हनीबीम*" कहा जाने लगा। मुझे लगता है कि मैंने घंटे के अंत में ही कहा था कि वहां "बेटे" का मतलब निश्चित रूप से "पैगंबरों के बच्चे" नहीं है। हिब्रू में *बेन* शब्द का अर्थ कभी-कभी "पुरुष वंशज" होता है, कभी-कभी इसका अर्थ दीर्घकालिक "वंशज" होता है। यीशु मसीह दाऊद का पुत्र, इब्राहीम का पुत्र है। लेकिन इसका अर्थ "समूह का सदस्य" भी हो सकता है। उस अंतिम अर्थ के अंतर्गत ही हमें इस अभिव्यक्ति "भविष्यवक्ताओं के पुत्रों" को समझना चाहिए। एक। समूह 1 के सदस्य के रूप में "बेटा" उदाहरण: नेह। 12:28 मैं आपको "बेटा" शब्द के उपयोग के कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ। यदि आपने नहेमायाह 12:28 को देखा है, तो आप वहां पढ़ते हैं (मैं एनआईवी से पढ़ रहा हूँ), " गायकों को भी यरूशलेम के आसपास के क्षेत्र से - नेटोफैथियों के गांवों से - एक साथ लाया गया था " इत्यादि। यदि आप हिब्रू पाठ को देखें, तो यह *लाभकारी है*। यह "गायकों के बेटे" हैं। अब संदर्भ में यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह क्या है। वहां संदर्भ गाना बजानेवालों के सदस्यों के लिए है। वे लोग जो एक निश्चित समूह के हैं, गायक। इसलिए मुझे लगता है कि एनआईवी ने इसका सही अनुवाद किया है- "गायक," न कि "गायकों के बेटे।"

2. उदाहरण: भजन 18:44 यदि आप भजन 18:45, श्लोक 44 के अंग्रेजी अनुवाद को देखें, तो एनआईवी भजन 18:44 के लिए कहता है, " जैसे ही वे मेरी बात सुनते हैं, वे मेरी आज्ञा मानते हैं; और फिर अगला शब्द, " विदेशी मेरे सामने घबराते हैं।" विदेशी अजनबी होते हैं. हिब्रू *नेन है* - "अजनबियों के बेटे।" यह "अजनबियों के बच्चे" या " विदेशियों के बच्चे

" नहीं हैं जो मेरे सामने रोते हैं, यह वे हैं जो उस श्रेणी या समूह से संबंधित हैं। " विदेशी मेरे सामने घबराते हैं। वे सब हतोत्साहित हो जाते हैं; वे अपने गढ़ों से कांपते हुए आते हैं। " देखिए पद 43 में कहा गया है, " जिन लोगों को मैं नहीं जानता, वे मेरे अधीन हैं।" वे मेरी बात सुनते ही मेरी आज्ञा मानते हैं; विदेशी मेरे सामने घुटने टेकते हैं। "

3. उदाहरण: भजन 72:4

मैं भजन 72:4 को देखता हूँ। अब यहां एक दिलचस्प स्थिति है क्योंकि आप एक व्याख्यात्मक प्रश्न में फंस जाते हैं। एनआईवी यहां भजन 72:4 का अनुवाद करता है, "वह (अर्थात्, राजा) लोगों के बीच पीड़ितों की रक्षा करेगा।" राजा न्याय कायम रखेगा. वह लोगों का न्याय करेगा इत्यादि। " वह लोगों के बीच में पीड़ितों की रक्षा करेगा. लेकिन फिर एनआईवी में अगला वाक्यांश कहता है, और जरूरतमंदों के बच्चों को बचाएं। वहां हिब्रू *जरूरतमंदों* के "बच्चे" हैं। अब यहां एनआईवी ने इसका अनुवाद "जरूरतमंदों के बच्चे" किया है। दूसरे शब्दों में, राजा " प्रजा में दीन लोगों की रक्षा करेगा, वह दरिद्रों के बच्चों की रक्षा करेगा; वह अत्याचारी को कुचल डालेगा।" वहां उचित अनुवाद क्या है? क्या राजा "जरूरतमंदों के बच्चों" को बचाने जा रहा है, या वह जरूरतमंदों को बचाने जा रहा है? क्या जरूरतमंदों के बच्चे उस श्रेणी के लोग हैं: जरूरतमंद।

यदि आप समानता को देखें, तो आप देखेंगे कि पहला वाक्यांश है "वह लोगों के बीच पीड़ितों की रक्षा करेगा।" मुझे ऐसा लगता है कि समानता के आधार पर यहां यह निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि "वह लोगों के बीच पीड़ितों की रक्षा करेगा और जरूरतमंदों को बचाएगा।" "जरूरतमंदों के बच्चे" नहीं, बल्कि स्वयं जरूरतमंद। लेकिन आप उस पर बहस कर सकते हैं। एनआईवी, न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड और किंग जेम्स सभी का अनुवाद "जरूरतमंदों के बच्चे" है। संशोधित मानक संस्करण इसका अनुवाद "जरूरतमंद" करता है। "वह जरूरतमंदों को बचाएगा।" यहूदी प्रकाशन सोसायटी संस्करण (जेपीएस संस्करण) कहता है, "उसे लोगों के बीच दीन लोगों की हिमायत करनी चाहिए, जरूरतमंद लोगों का उद्धार करना चाहिए" - "जरूरतमंद लोगों के बच्चे" नहीं बल्कि "जरूरतमंद लोगों" - "और उन लोगों को कुचल दें जो उनके साथ अन्याय करते हैं।" अब मैं इसे "समूह के सदस्य" के

रूप में

बेने के उपयोग के एक और उदाहरण के रूप में लेने का इच्छुक हूँ। 4. उदाहरण: 2 Chr. 25:13

मेरे पास एक और सन्दर्भ है जो मैं आपको देना चाहता हूँ। यह 2 इतिहास 25:13 है। वहां आपने एनआईवी में पढ़ा, " इस बीच जिन सैनिकों को अमज़िया ने वापस भेज दिया था और युद्ध में भाग लेने की अनुमति नहीं दी थी, उन्होंने सामरिया से बेथ होरोन तक यहूदी शहरों पर हमला कर दिया। " अनुवाद "सैनिक" यदि आप हिब्रू में देखें तो यह *उबेने है*। ये "सेना के बेटे" या "बैंड, बैंड या टुकड़ी के बेटे" हैं। अब, मुझे नहीं लगता कि अमज़िया ने अपने बच्चों या सैनिकों के बेटों को वापस भेजा, उसने सैनिकों को वापस भेजा, जो लोग उस श्रेणी में थे, उनकी पहचान उस समूह से थी।

तो "बेटे" के इस तरह के उपयोग के उदाहरणों की एक उचित संख्या है, और मुझे लगता है कि जब आप इस अभिव्यक्ति "भविष्यवक्ताओं के बेटों" को देखते हैं, तो सादृश्य से, हमें इसका संदर्भ *समझना* चाहिए वे लोग जो पैगंबर कहलाने वाले लोगों की श्रेणी या वर्ग से संबंधित हैं। नबियों की संतान नहीं; वे भविष्यवक्ता हैं लेकिन उनकी पहचान भविष्यवक्ताओं के एक समूह के रूप में की जाती है। यही कारण है कि एनआईवी, जब "भविष्यवक्ताओं के पुत्र" अभिव्यक्ति की बात आती है, तो अक्सर इसका अनुवाद "भविष्यवक्ताओं की एक कंपनी" के रूप में किया जाता है।

एफ. 3. शब्द या अभिव्यक्ति "भविष्यवक्ताओं का विद्यालय"

a. "स्कूल" के लिए कोई समर्थन नहीं

आइए 3 पर चलते हैं। शब्द या अभिव्यक्ति "भविष्यवक्ताओं का विद्यालय" - अब हम भविष्यवक्ताओं के इन समूहों के बारे में बात कर रहे हैं। इसकी वकालत पहले की जाती थी - आज की तुलना में कहीं अधिक, हालाँकि यह विचार आज भी मौजूद है - कि पैगम्बरों के समूहों को एक शैक्षणिक संस्थान की तरह समझा जाना चाहिए, जहाँ आपके पास ऐसे लोगों का समूह था जिन्हें पैगम्बर के रूप में पहचाना जाता था। विभिन्न विषयों को पढ़ाया जाना, संभवतः उनकी भूमिका को समझने के संबंध में और इसकी व्याख्या और

प्रचार कैसे किया जाना चाहिए। लोगों को सैमुअल, एलिजा या एलीशा जैसे महान शिक्षकों में से किसी एक द्वारा निर्देश दिया जा सकता है, और फिर बाहर जाकर अन्य लोगों को वह सिखाया जा सकता है जो उन्होंने सीखा है। तो आपके पास भविष्यवक्ताओं का एक स्कूल था। भविष्यवक्ताओं के इन समूहों के संबंध में यह एक बहुत पुराना विचार है। यह टार्गम्स में दिखाई देता है जो अरामी अनुवाद थे जो पुराने नियम के हिब्रू के अनुवादों की तुलना में अधिक व्याख्याएँ थे।

लेकिन मुझे नहीं लगता कि वास्तव में कोई स्पष्ट आधार या सबूत है कि ये समूह किसी प्रकार की शैक्षणिक स्थिति में थे। शब्द "भविष्यवक्ताओं का विद्यालय" बाइबल आधारित अभिव्यक्ति नहीं है। यह पुराने नियम में कहीं नहीं मिलता है। मुझे नहीं लगता कि ऐसा कुछ भी है जिससे पता चले कि भविष्यवक्ताओं ने अपना कार्य या कार्य करने के लिए किसी प्रकार का विशेष प्रशिक्षण या शिक्षा प्राप्त की थी। निश्चित रूप से यह महान लेखन भविष्यवक्ताओं या विहित भविष्यवक्ताओं-यशायाह, यिर्मयाह, आमोस, आदि के संबंध में सच है। हमने कभी नहीं पढ़ा कि उन महान भविष्यवक्ताओं को अपने कार्य करने के लिए किसी प्रकार का विशेष निर्देश या शिक्षा आवश्यक थी। ऐसा अधिक प्रतीत होता है कि ये वे लोग थे जिन्हें भगवान ने उनके सामान्य कार्य से बाहर बुलाया था - अमोस एक चरवाहा था, गूलर अंजीर इकट्ठा करता था - उस सामान्य पेशे से बाहर बुलाया गया था और लोगों को अपना संदेश देने के लिए भगवान द्वारा नियुक्त किया गया था . जैसा कि हमने पिछले सप्ताह देखा, प्रभु ने कहा, "मैं अपना वचन तुम्हारे मुँह में डालूँगा। तुम जाओ; जो कुछ मैं तुम्हें लोगों से कहने को कहता हूँ उसका प्रचार करो।"

बी। नेता के रूप में सैमुअल - 1 सैम। 19 अब मुझे लगता है कि भविष्यवक्ताओं की कंपनियों के किसी प्रकार के शैक्षिक समूह होने के प्रमाण के सबसे करीब आप 1 शमूएल 19:20 और 2 राजा 4:38 पा सकते हैं। 1 शमूएल 19:20 वह मार्ग है जहां शाऊल ने अपने दूतों को दाऊद को पकड़ने की कोशिश करने के लिए भेजा था जब उसने शमूएल के साथ रामा के नैओथ नामक स्थान पर शरण ली थी, और आयत 20 में यह कहा गया है, "जब उन्होंने भविष्यवक्ताओं के एक समूह को भविष्यवाणी करते देखा , और जब शमूएल उनका

अगुवा खड़ा हुआ, तब परमेश्वर का आत्मा शाऊल के मनुष्योंपर उतरा, और उन्होंने भी भविष्यवाणी की। क्या आपको याद है कि हमने पिछले सप्ताह उस परिच्छेद के बारे में बात की थी - "भविष्यवाणी" शब्द का क्या अर्थ है? इसे किसी प्रकार के असामान्य व्यवहार के रूप में देखा जाता है। पवित्र आत्मा उन लोगों पर आया और वे दाऊद को पकड़ने में असमर्थ रहे। लेकिन उस स्थिति के संदर्भ में यह कहता है, "सैमुअल उनके नेता के रूप में खड़ा था।" तब हमें आश्चर्य होता है कि वास्तव में इसका क्या मतलब है? शमूएल क्या कर रहा था—क्या वह निर्देश दे रहा था? खैर, शायद. ऐसा नहीं कहता. अधिक जानकारी के बिना यह जानना कठिन है।

सी। लीडर के रूप में एलीशा - 2 किलोग्राम 4

2 राजा 4:38—वह एलीशा के पास है। 2 राजा 4:38 में आप पढ़ते हैं, “ एलीशा गिलगाल लौट आया और उस क्षेत्र में अकाल पड़ा। जब भविष्यवक्ताओं की मंडली उससे मिल रही थी - मुझे पूरा यकीन है कि "कंपनी" *बेने हनेबिम है* - "उसने अपने नौकर से कहा, 'बड़े बर्तन पर रखो और इन लोगों के लिए कुछ स्टू पकाओ।'" ऐसा प्रतीत होता है एलीशा वहां का नेता है: वह आदेश दे रहा है; वह बड़े समूह के लिए भोजन उपलब्ध करा रहा है। अब फिर यह निर्देश के बारे में कुछ नहीं कहता है। तो एलीशा वास्तव में एक नेता है, सैमुअल एक नेता के रूप में खड़ा है लेकिन यह जानना मुश्किल है कि इसका कितना मतलब निकाला जाए और वास्तव में वह कार्य क्या था।

डी। प्राचीन मदरसा जैसा प्रशिक्षण नहीं

मुझे नहीं लगता कि भविष्यवक्ता स्वयं-चाहे सैमुअल हों या एलीशा या यहां तक कि भविष्यवक्ताओं की ये कंपनियां आज के सेमिनरी छात्रों के कुछ प्राचीन समकक्ष हैं जिन्हें अपना कार्य करने के लिए धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। भविष्यवक्ता वे लोग थे जिन्होंने अपना संदेश सीधे ईश्वर से प्राप्त किया और उसे लोगों तक पहुँचाया। तो भविष्यवक्ताओं के स्कूल या भविष्यवक्ताओं की कंपनियों के बारे में वे टिप्पणियाँ स्पष्ट रूप से उनके अपने समुदायों में रहती थीं।

इ। पैगम्बरों की कंपनियों के स्थान

हमने पिछले सप्ताह देखा कि 2 राजाओं के शुरुआती अध्यायों में विभिन्न स्थानों पर भविष्यवक्ताओं के समूह थे - बेथेल में, जेरिको में और गिलगाल में। यदि आप 1 शमूएल 10 पर वापस जाते हैं जब शाऊल का सामना वाद्य यंत्रों के साथ भविष्यवक्ताओं के उस समूह से हुआ जो भविष्यवाणी कर रहे थे और वह उनमें से एक बन गया और उसने भविष्यवाणी की - वह गिबा में था। फिर 1 शमूएल 19 हमने अभी एक मिनट पहले देखा - रामा में नाइओथ - यह भविष्यवक्ताओं की एक कंपनी थी। हमें ये कंपनियाँ अलग-अलग इलाकों में बिखरी हुई मिलती हैं और कुछ ने सुझाव दिया है कि वे किसी प्रकार के मठ में सामुदायिक रूप से रहते थे। बहुत बाद के समय के मठ जैसा। इसके लिए फिर से साक्ष्य बहुत कम है।

एफ. 4. भविष्यवक्ताओं की कंपनियां स्पष्ट रूप से अपने स्वयं के समुदायों में रहती थीं सामुदायिक आवास एवं खान-पान

लेकिन 2 राजा 4:38 कहता है कि उन्होंने एक साथ खाना खाया। अब यह वह अंश है जिसे हमने अभी एक मिनट पहले देखा था- "ई लिशा गिलगाल लौट आई और उस क्षेत्र में अकाल पड़ा। जब भविष्यवक्ताओं की मंडली उस से मिल रही थी, तो उस ने अपने सेवक से कहा, बड़ा बर्तन चढ़ा, और इन मनुष्योंके लिथे कुछ पका पका। एलीशा ने उन्हें वहां खाना दिया और ऐसा लगता है जैसे वे एक साथ खाना खा रहे थे। हालाँकि, यह अकाल का समय है, इसका मतलब यह नहीं है कि यह पारंपरिक तरीका था जिससे वे खाना खाते थे।

सामुदायिक आवास विचार का समर्थन करने के लिए कभी-कभी जिस अन्य संदर्भ की अपील की जाती है वह 2 राजा 6:2 है। आपने पढ़ा, "भविष्यवक्ताओं की मंडली ने एलीशा से कहा, 'देख, वह स्थान जहाँ हम तुमसे मिलते हैं वह हमारे लिए बहुत छोटा है। आओ, हम यरदन तक चलें, जहां हममें से हर एक को एक खम्भा मिल सके; और आइए हम वहां अपने रहने के लिए एक जगह बनाएं।' अब यदि आप उसकी हिब्रू भाषा को देखें, तो आप अंतिम वाक्यांश "आइए हम अपने लिए बनाएं" एक *माकोम* "एक जगह" *शाम* "वहां" लें। अब आप देख सकते हैं कि *लेशेवेट का* अर्थ "बैठना" या "रहना" हो सकता है। क्या वह बैठने और इकट्ठा होने की जगह है या यह रहने की जगह है - एक घर, किसी प्रकार का? मुझे लगता है कि आप "स्थान" शब्द को ऐसे स्थान के रूप में समझ सकते हैं

जहां विभिन्न आवास बनाए जा सकते हैं, जरूरी नहीं कि एक ही आवास हो। लेकिन इस वाक्यांश का अनुवाद हमारे लिए "बैठने की जगह" के रूप में भी किया जा सकता है। किसी प्रकार का सभा भवन। आप देखिये पिछली पंक्ति में कहा गया है, " देख, वह स्थान जहाँ हम तुझ से मिलते हैं, हमारे लिये बहुत छोटा है।" इसलिए फिर से मुझे नहीं लगता कि यह कोई ऐसा संदर्भ है जो निर्विवाद रूप से यह स्थापित करता है कि यह किसी प्रकार का सांप्रदायिक आवास है।

यदि आप 2 राजा 4 - कुछ अध्याय पहले - पर जाएं तो ऐसा लगता है कि पैगम्बरों की मंडली के इन सदस्यों के पास एक सामुदायिक निवास स्थान के बजाय अपने अलग-अलग निवास स्थान थे। 2 राजा 4:1-7 में आपके पास भविष्यवक्ताओं की मंडली के एक सदस्य की पत्नी की कहानी है, जिसने एलीशा को बुलाया और कहा, "मेरा पति मर गया है और ये लेनदार मेरे दो लड़कों को अपने दास के रूप में लेने आ रहे हैं।" उसके पास चुकाने के लिए कर्ज था और कर्ज चुकाने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं था। तो 4:2 में एलीशा कहता है, " मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूं? मुझे बताओ, तुम्हारे घर में क्या है?" ऐसा लगता है जैसे उसका अपना निवास स्थान था—"तुम्हारे घर में क्या है?" " तुम्हारे नौकर के पास वहां कुछ भी नहीं है," उसने कहा, "थोड़े से तेल को छोड़कर।" एलीशा ने कहा, 'जाओ और अपने सभी पड़ोसियों से खाली घड़े माँगो। बस कुछ के लिए मत पूछो. तब भीतर जाओ और अपने और अपने पुत्रों के पीछे का दरवाजा बंद कर लो। सभी जार में तेल डालें, और जैसे ही प्रत्येक जार भर जाए, इसे एक तरफ रख दें' इत्यादि। वह ऐसा करती है और निश्चित रूप से उसके जार भर जाते हैं और वह उन्हें बेचती है और वह अपना कर्ज चुकाने में सक्षम होती है। लेकिन इसे यहां लाने का मुद्दा यह है कि यह भविष्यवक्ताओं के समूह या कंपनी के सदस्यों में से किसी एक की पत्नी के लिए सांप्रदायिक जीवन की स्थिति की तरह नहीं दिखता है। ऐसा लगता है जैसे वह किसी तरह के भविष्यसूचक पड़ोस में रहती होगी लेकिन उसका अपना घर था।

मुझे लगता है कि यह 1 शमूएल 19 की एक तरह की आकस्मिक विशेषता के साथ फिट बैठता है। यदि आप उस अनुच्छेद पर वापस जाते हैं जो रामा के नाइओथ के बारे में

है। वह अभिव्यक्ति "रामा का नाइओथ" 1 शमूएल 19:19 में है जहां राजा शाऊल को बताया गया है कि दाऊद रामा के नाइओथ में है। खैर रामा एक शहर है; रामा में नाइओथ क्या है? हिब्रू शब्द "निवास" या "निवास" है। नाइओथ उसी का बहुवचन रूप प्रतीत होता है। तो यह संभव है कि नाइओथ का अर्थ बहुवचन में "निवास" है। यदि नाइओथ को समझने का यह तरीका है तो मुझे लगता है कि आप इसे एक पड़ोस के रूप में समझ सकते हैं, आप रामा के बारे में कह सकते हैं जहां घरों का एक परिसर था जिसमें ये पैगंबर रहते थे - समूह के सदस्य या पैगंबरों की कंपनी। इसलिए शमूएल दाऊद को रामा के शहर के उस हिस्से में ले आया जहाँ भविष्यवक्ताओं की मंडली के सदस्यों के निवास स्थान थे - लेकिन बहुवचन में यह एक भी सामुदायिक आवास नहीं होगा।

तो संख्या 4.: "भविष्यवक्ताओं की कंपनियाँ स्पष्ट रूप से अपने स्वयं के समुदायों में रहती थीं।" मुझे लगता है कि इसे इस विचार से अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए कि उनके पास किसी प्रकार का मठ या मठ था।

एफ. 5. कंपनियों के भीतर भविष्यवाणी समारोह का पतन

एक। एलीशा - 2 किलोग्राम 4

संख्या 5.: "कंपनियों के भीतर भविष्यसूचक कार्य का पतन।" जब आप भविष्यवक्ताओं की इन कंपनियों के संदर्भ पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है जैसे समय के साथ पतन शुरू हो जाता है। यह पंक्तियों के बीच का पाठ है। हम इन कंपनियों के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते हैं, लेकिन यह संभव है कि समय के साथ लोग भौतिक लाभ के लिए कंपनियों से जुड़ने लगे। दूसरे शब्दों में, इससे उन्हें क्या लाभ हो सकता है। हम इसके बारे में 2 राजा 4:42 में पढ़ते हैं। 4:42 में एलिय्याह को उस समूह के लिए भोजन मिलता है जो उनके भरण-पोषण के लिए दिया गया था। " बाल शालिशाह से एक मनुष्य परमेश्वर के भक्त के पास पहली पके हुए अनाज से बनी हुई जौ की बीस रोटियां, और कुछ नए अनाज की बालें भी लेकर आया। 'इसे लोगों को खाने के लिए दे दो।' " यहाँ के लोग नबियों की संगति हैं। " " मैं इसे सौ आदमियों के सामने कैसे रख सकता हूँ? " उसके नौकर ने पूछा. परन्तु एलीशा ने उत्तर दिया, 'इसे लोगों को खाने के लिए दे दो। क्योंकि यहोवा यही कहता है: 'वे

खाएंगे और कुछ बचा रहेगा।' भविष्यवक्ता. यह बहुत संभव है कि भविष्यवक्ताओं के समूह उस प्रकार के उपहारों से जीवित रहे हों ।

बी। शाही दरबार के भविष्यवक्ता जैसे-जैसे आप ओटी में आगे बढ़ते हैं, आप पाते हैं कि कई राजाओं के पास दरबार से जुड़े भविष्यवक्ताओं के समूह थे, जिन पर वे विशेष रूप से तब बुलाते थे जब वे एक अनुकूल संदेश चाहते थे। दूसरे शब्दों में, ये आवश्यक रूप से सच्चे भविष्यवक्ता नहीं थे - ये वे लोग थे जो खुद को भविष्यवक्ता के रूप में प्रस्तुत करते थे लेकिन जिन्होंने राजा को वह बताया जो वह सुनना चाहता था। अहाब के दरबार में इस प्रकार के भविष्यवक्ता जुड़े हुए थे। यदि आप 1 राजा 22:4 को देखें, जब अहाब ने यहोशापात को गिलियड में रामा के विरुद्ध लड़ने में उसके साथ शामिल होने के लिए कहा था। “ यहोशापात ने इस्राएल के राजा को उत्तर दिया, 'जैसा तू है वैसा ही मैं हूँ, तेरी प्रजा के समान मेरी प्रजा है, तेरे घोड़ों के समान मेरे घोड़े हैं।' परन्तु यहोशापात ने इस्राएल के राजा से यह भी कहा, पहिले यहोवा से सम्मति ले। तो अहाब क्या कर रहा है? " इस्राएल के राजा ने भविष्यवक्ताओं को अर्थात् कोई चार सौ पुरूष इकट्ठे करके उन से पूछा, क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करने को जाऊँ, या रुका रहूँ?" 'जाओ,' उन्होंने उत्तर दिया, 'क्योंकि प्रभु इसे राजा के हाथ में दे देगा।'" उन्होंने मान लिया कि अहाब उनसे यही कहना चाहता था। उसने यहोशापात को अपने साथ चलने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन यहोशापात की प्रतिक्रिया क्या है? यहोशापात कहता है, क्या यहां यहोवा का कोई भविष्यवक्ता नहीं है, जिस से हम पूछ सकें? दूसरे शब्दों में, उसे विश्वास नहीं हुआ कि ये लोग प्रभु के लिए बोल रहे थे। अहाब ने उत्तर दिया, “ अभी भी एक व्यक्ति है जिसके माध्यम से हम प्रभु से पूछ सकते हैं, लेकिन मैं उससे नफरत करता हूँ क्योंकि वह कभी भी मेरे बारे में कुछ भी अच्छा नहीं बल्कि हमेशा बुरा भविष्यवाणी करता है। वह इम्ला का पुत्र मीकायाह है।” यहां आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करने में मेरी बात यह है कि राजाओं के दरबार से जुड़े भविष्यवक्ताओं की कंपनियां थीं और वे हमेशा प्रभु के वचन नहीं बोलते थे।

यदि आप मीका 3:5 को देखें, तो मीका कहता है, “ जो भविष्यवक्ता मेरी प्रजा को भरमाते हैं, यदि कोई उन्हें खिलाए, तो वे शान्ति का प्रचार करते हैं; यदि वह ऐसा नहीं

करता, तो वे उसके विरुद्ध युद्ध छेड़ने की तैयारी करते हैं।” दूसरे शब्दों में, आप उस हाथ को जानते हैं जो आपको खिलाता है और आप वही कहते हैं जो आप सोचते हैं कि वह व्यक्ति प्रभु के वचन की घोषणा करने के बजाय सुनना चाहता है। तो ऐसा लगता है जैसे भविष्यवक्ताओं के समूहों में धीरे-धीरे गिरावट आ रही है।

6. कैनोनिकल पैगंबर इन कंपनियों से अलग हैं

संख्या 6.: "विहित भविष्यवक्ता इन कंपनियों से अलग हैं।" मुझे नहीं लगता कि इस बात का कोई सबूत है कि लिखने वाले भविष्यवक्ताओं में से कोई भी, यानी, विहित भविष्यवक्ता, जिन्होंने पुराने नियम के सिद्धांत में शामिल भविष्यवाणियों की पुस्तकों में से एक का निर्माण किया था, किसी कंपनी या भविष्यवक्ताओं के संघ से संबंधित थे। हमने यह भी नहीं पढ़ा है कि किसी भी विहित भविष्यवक्ता को भविष्यसूचक कार्य करने से धन या सहायता या आजीविका प्राप्त हुई हो। ऐसा एक पाठ है जहां ऐसा लगता है कि विहित भविष्यवक्ताओं में से एक स्पष्ट रूप से इस विचार को खारिज कर देता है कि उसे भविष्यवक्ता समूह का हिस्सा माना जाना चाहिए। आमोस 7:14 में, आमोस कहता है, "मैं न तो भविष्यवक्ता था और न ही भविष्यवक्ता का पुत्र।" अब आप सवाल देख रहे हैं कि "पैगंबर के बेटे" से उनका क्या मतलब है? क्या उनका मतलब किसी समूह का सदस्य है? यह बहुत संभव है कि वह ऐसा करते हों, इस अभिव्यक्ति के कई बार उपयोग को देखते हुए। ऐसा लगता है जैसे वह कह रहे हैं, "मैं मैं न तो भविष्यवक्ता था, न भविष्यवक्ता का बेटा, परन्तु मैं एक चरवाहा था।" अब मैं इसे थोड़ा और विस्तार से देखना चाहता हूँ, और ऐसा करने के लिए मुझे लगता है कि हमें पीछे जाकर पूरा संदर्भ जानने की जरूरत है। अमोस यहूदा से उत्तरी राज्य बेतेल शहर तक गया था। राजा यारोबाम को याद करें मैंने बेतेल और दान में वेदियाँ स्थापित की थीं। उस समय यहूदा से परमेश्वर का एक जन आया और बेतेल की उस वेदी के विरुद्ध चिल्लाया। अब बहुत बाद में यारोबाम द्वितीय के अधीन आमोस ने भी यही काम किया और वह बेतेल और अमस्याह के पास गया आप श्लोक 10 में पढ़ते हैं, " बेतेल के पुजारी ने इस्राएल के राजा यारोबाम को एक संदेश भेजा: 'आमोस इस्राएल के दिल में तुम्हारे खिलाफ साजिश रच रहा है। भूमि उसके सभी शब्दों को सहन

नहीं कर सकती। क्योंकि अमोस यही कह रहा है : 'यारोबाम तलवार से मारा जाएगा, और इस्राएल निश्चय अपनी जन्मभूमि से दूर बंधुआई में चला जाएगा।' यहूदा की भूमि।" फिर यह अगला वाक्यांश है जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण है और संघर्ष का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। " अपनी रोटी वहीं कमाओ और वहीं अपनी भविष्यवाणी करो।" देखिए वह भविष्यवाणी और आजीविका के बीच संबंध बताता है। " अपनी रोटी वहीं कमाओ और वहीं अपनी भविष्यवाणी करो।" यह ऐसा है मानो दोनों जुड़े हुए हों। " अब बेतेल में भविष्यवाणी न करना, क्योंकि यह राजा का पवित्र स्थान और राज्य का मन्दिर है।" अमोस ने यही उत्तर दिया है। वह अमस्याह से कहता है, " मैं न तो भविष्यद्वक्ता था और न भविष्यवक्ता का बेटा, परन्तु मैं एक चरवाहा था, और गूलर-अंजीर के पेड़ों की देखभाल करता था।"

इससे अनुवाद का प्रश्न उठता है। प्रश्न का संबंध इस बात से है कि अमोस यहां क्या कह रहा है और वह जो कह रहा है उसे हम कैसे समझें, जो हिब्रू पाठ में अस्पष्टता लाता है। यहां कोई क्रिया नहीं है। अमोस ने उत्तर दिया और अमज़िया से कहा, लो नबी एनी। वस्तुतः, "मैं भविष्यवक्ता नहीं हूँ।" "मैं न तो भविष्यवक्ता हूँ और न ही मैं भविष्यवक्ता का पुत्र हूँ।" अब यदि आप उसके अनुवादों को देखें, तो आपको क्रिया "होना" प्रदान करना होगा। क्या आप क्रिया "होना" को वर्तमान काल या भूतकाल में प्रदान करते हैं? नया अमेरिकी मानक वर्तमान काल है। "मैं कोई भविष्यद्वक्ता नहीं हूँ, न मैं भविष्यद्वक्ता का बेटा हूँ, परन्तु चरवाहा और गूलर के फल इकट्ठा करनेवाला हूँ।" लेकिन यदि आप किंग जेम्स और एनआईवी को देखें तो वे इसे "होना" क्रिया के साथ भूतकाल में अनुवादित करते हैं। प्रदत्त क्रिया के लिए "मैं न तो भविष्यवक्ता था, न ही मैं भविष्यवक्ता का पुत्र था, परन्तु मैं एक चरवाहा, और गूलर के फल इकट्ठा करने वाला था।" बर्कले संस्करण में दोनों मौजूद हैं। "मैं न तो भविष्यद्वक्ता हूँ, न भविष्यद्वक्ता का पुत्र, परन्तु मैं एक चरवाहा, और गूलर के वृक्ष का इकट्ठा करनेवाला था।" यदि आप इसे वर्तमान काल या भूत काल के साथ अनुवादित करते हैं तो अमोस जो कह रहा है उसके अर्थ में क्या अंतर है? हो सकता है कि वे जो कह रहे थे उसमें यह अप्रासंगिक प्रतीत हो। मुझे लगता है कि इससे अर्थ में महत्वपूर्ण अंतर आता है। जो लोग किंग जेम्स और एनआईवी जैसे भूतकाल का सुझाव देते हैं, वे समझते हैं कि अमोस कह

रहा है कि उसने खुद को पैगंबर नहीं बनाया है, बल्कि भगवान ने उसे इस कार्य के लिए बुलाया है। "मैं भविष्यद्वक्ता नहीं था, मैं भविष्यद्वक्ता का पुत्र नहीं था, मैं एक चरवाहा था," और फिर आप पद 15 पर जाते हैं, "परन्तु यहोवा ने मुझे भेड़-बकरियों को चराने से ले लिया और यहोवा ने मुझ से कहा, 'जाओ, भविष्यवाणी करो।'" इसलिए मैं भविष्यवक्ता नहीं था लेकिन प्रभु ने मुझे बुलाया और मैं भविष्यवक्ता बन गया। वह मूलतः यही कहता है। इसलिए अमोस इस बात से इनकार नहीं कर रहा है कि वह एक भविष्यवक्ता है, वह केवल यह कह रहा है कि "मैं मूल रूप से ऐसा नहीं था। मैं मूलतः एक किसान था।"

लेकिन यदि आप इसे वर्तमान काल में अनुवादित करते हैं तो अमोस जो कह रहा है उसका एक अलग अर्थ निकलता है। याद रखें, अमोस वास्तव में पद 12 में पुजारी के उस कथन का जवाब दे रहा है: "अपनी रोटी वहीं कमाओ। यहूदा की भूमि पर वापस जाओ. वहाँ अपनी रोटी कमाओ और वहीं अपनी भविष्यवाणी करो।" अमोस को कुछ भी नहीं मिल रहा है, और वह उस पर प्रतिक्रिया दे रहा है। यदि आप इसे वर्तमान काल के अर्थ में अनुवादित करते हैं, "मैं भविष्यवक्ता नहीं हूँ, मैं भविष्यवक्ता का पुत्र नहीं हूँ" तो मुझे लगता है कि अमोस अमज़ियाह से जो कह रहा है, वह है, "मैं उस अर्थ में भविष्यवक्ता नहीं हूँ जैसा आप समझते हैं।" वह यह है कि "मैं इस अर्थ में भविष्यवक्ता नहीं हूँ कि मैं कोई ऐसा व्यक्ति हूँ जो अपनी आजीविका कमाने के लिए भविष्यवाणी करता हूँ।" जहां तक अमज़ियाह का सवाल है, एक भविष्यवक्ता ऐसा ही होता है: कोई ऐसा व्यक्ति जो इसमें शामिल होता है कि वह इससे क्या प्राप्त कर सकता है। लेकिन मुझे लगता है कि अमोस ने यह कहते हुए जवाब दिया, "मैं उस तरह का "पैगंबर" नहीं हूँ, और मैं भविष्यवक्ता का बेटा नहीं हूँ। मैं इन भविष्यसूचक कंपनियों में से किसी का सदस्य नहीं हूँ। क्योंकि मुझे अपनी आजीविका के लिए ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। मैं एक चरवाहा हूँ. मैं गूलर अंजीर इकट्ठा करने वाला या उत्पादक हूँ; मैं अपना गुजारा कर सकता हूँ. मैं भौतिक लाभ के लिए भविष्यवाणी नहीं करता। लेकिन प्रभु मेरे पास आए और कहा, 'जाओ इस संदेश को वहां ले जाओ, भविष्यवाणी करो।' अब यदि आप इसका अनुवाद इस तरह करते हैं तो उस वर्तमान काल में मुझे लगता है कि यहां जो हो रहा है वह यह है कि अमज़ियाह ने यह बयान दिया है जो स्पष्ट

रूप से पूर्वकल्पना करता है कि भविष्यवक्ता पैसे के लिए व्यापार में हैं। “यहूदा देश को लौट जाओ। वहाँ अपनी रोटी कमाओ और वहीं अपनी भविष्यवाणी करो।” और अमोस ने जवाब दिया, “मैं वह नहीं हूँ। मैं एक चरवाहा हूँ, मुझे भविष्यवाणी करके अपनी जीविका कमाने की जरूरत नहीं है। मैं आर्थिक लाभ के लिए भविष्यवाणी नहीं करता।”

अब यदि आप इसे इसी तरह पढ़ते हैं तो यह कुछ बातें सुझाता है। मुझे लगता है कि इससे पता चलता है कि उन दिनों भविष्यवाणी को एक निश्चित प्रकार के पेशे या आजीविका के रूप में समझा जाने लगा था - मुझे लगता है कि अमज़िया ने यही समझा था। दूसरे, मुझे लगता है कि यह सुझाव दे रहा है कि अमोस इसे बहुत स्पष्ट करना चाहता था: "मैं उस तरह का भविष्यवक्ता नहीं हूँ।" अमोस इस बात से इनकार नहीं कर रहा है कि वह शब्द के उचित अर्थों में एक भविष्यवक्ता है, लेकिन वह जो कह रहा है वह यह है, "मुझे उन भविष्यवक्ताओं से कोई लेना-देना नहीं है जिनसे वह और अमस्याह दोनों परिचित थे: इस प्रकार के लोग जो राजा के बारे में भविष्यवाणी करते थे या कोई अन्य व्यक्ति उससे जो भी लाभ प्राप्त कर सकता था उसे प्राप्त करने के लिए सुनना चाहता था।"

यहां एनआईवी भूतकाल का उपयोग करता है। यदि आप में से कोई इससे परिचित है तो इसे अब टीएनआईवी कहा जाता है - यह एनआईवी का एक संशोधन है। यह अभी भी अतीत है, लेकिन टीएनआईवी में लिखा है, "मैं न तो भविष्यवक्ता था, न ही भविष्यवक्ता का शिष्य।" दूसरे शब्दों में "मैं न तो पैगम्बर था और न ही पैगम्बर का बेटा, पैगम्बर का बेटा।" अब यह कहता है, "मैं न तो भविष्यवक्ता था और न ही भविष्यवक्ता का शिष्य, परन्तु मैं एक चरवाहा था, और गूलर के अंजीर के पेड़ों की देखभाल करता था।" इसलिए वे अभी भी टीएनआईवी के साथ भूतकाल में हैं।

यहूदी प्रकाशन सोसायटी संस्करण वर्तमान काल है। यह NASB की तरह है। और मुझे लगता है कि इसे प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह कहता है, "मैं पैगम्बर नहीं हूँ और मैं पैगम्बर का शिष्य नहीं हूँ" - वे उसी अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं, "पैगम्बर का शिष्य।" "मैं एक पशुपालक हूँ।" क्या आप में से किसी ने कभी ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस यहूदी अध्ययन बाइबिल देखी है? एनआईवी स्टडी बाइबल की तरह एक यहूदी अध्ययन बाइबिल

भी है, लेकिन ऑक्सफोर्ड प्रेस द्वारा प्रकाशित यहूदी परिप्रेक्ष्य से। यहूदी अध्ययन बाइबिल में नोट जो अनुवाद के लिए यहूदी प्रकाशन सोसायटी संस्करण का उपयोग करता है, कहता है, "अमोस का कहना है कि वह एक पेशेवर भविष्यवक्ता नहीं है कि उसे अपनी सेवाओं के लिए काम पर रखा जा सके और इस तरह खरीदा जा सके।" अब मुझे लगता है कि उन्होंने इसे सही कर लिया है। पद 12 में जब वह कहता है, "मैं न तो भविष्यवक्ता हूँ और न ही भविष्यवक्ता का पुत्र," अमोस का कहना है कि वह कोई पेशेवर भविष्यवक्ता नहीं है जिसे उसकी सेवाओं के लिए काम पर रखा जा सके और इस तरह खरीदा जा सके। इसलिए विहित भविष्यवक्ता इन कंपनियों से अलग हैं। आपके पास किसी भी विहित भविष्यवक्ता के इन कंपनियों में से किसी एक का हिस्सा होने का कोई संदर्भ नहीं है और मुझे ऐसा लगता है कि अमोस इसे स्पष्ट कर रहा है। वह भविष्यवक्ताओं की संगति या ऐसे भविष्यवक्ता के साथ एक परिवार नहीं बनना चाहता जो लाभ के लिए इसमें था।

फिर से ऐसा लगता है जैसे एलीशा, एलिय्याह और सैमुअल और उन सभी के साथ कंपनियां थीं। ऐसा लगता है जैसे सैमुअल, एलीशा और एलिजा कंपनियों के नेता थे। तो चाहे आप उन्हें कंपनियों का हिस्सा बनाएं, मुझे ऐसा लगता है कि कंपनियां किसी प्रकार का समूह थीं - यहूदी प्रकाशन सोसायटी "चेले" कहती है - शायद यह एक अच्छा शब्द है। मुझे लगता है कि आप सैमुअल, एलिजा और एलीशा को कंपनी के हिस्से के बजाय उससे ऊपर के रूप में देखेंगे।

आप जानते हैं, कुछ लोग "भविष्यवक्ता का पद" अभिव्यक्ति का उपयोग करना पसंद करते हैं। मैं इससे बचने की कोशिश करता हूँ। मैं "भविष्यवाणी कार्य" अभिव्यक्ति को पसंद करता हूँ, क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि एक पुजारी के पास एक कार्यालय था, एक राजा के पास एक कार्यालय था। एक राजा एक राजा होता था और उसका उसी पद पर अभिषेक किया जाता था। वह एक राजा था और उसकी आधिकारिक भूमिकाएँ और कर्तव्य थे। पुजारियों की आधिकारिक भूमिकाएँ और कर्तव्य थे। ऐसा लगता है कि इन भविष्यवक्ताओं ने छिटपुट रूप से कुछ और किया। जब आत्मा उन पर आई तो उन्होंने बात की और इस तरह उन्होंने उस भविष्यवाणी का कार्य किया लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि मैं

इसे एक कार्यालय कहना चाहता हूँ जैसे कि यह सब कुछ था जो उन्होंने कभी किया था। हम भविष्यवक्ताओं की उस बात पर वापस आते हैं जो स्वयं अपने दिल और दिमाग में जानते थे कि वे अपने शब्दों की तुलना में प्रभु का वचन कब बोल रहे थे। नाथन जैसा कोई व्यक्ति, जो डेविड के लिए बार-बार भविष्यवक्ता था, जहां उसने उसे प्रभु का संदेश दिया और उससे पूछा कि उसने डेविड को जो बात बताई थी वह उसकी निजी राय थी, वह गलत थी। इसलिए उनके द्वारा बोला गया प्रत्येक शब्द कोई प्रेरित शब्द नहीं था।

जी. विहित भविष्यवक्ता भविष्यवक्ता लिख रहे थे

अब जी.: "विहित भविष्यवक्ता भविष्यवक्ता लिख रहे हैं।" मैं यहां लेबल पर बस कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। आपको ये दोनों लेबल साहित्य में मिलेंगे।

1. भविष्यवक्ता लिखना

" भविष्यवक्ताओं को लिखना" उन भविष्यवक्ताओं के लिए एक पदनाम है जिन्होंने हमें पुराने नियम के कैनन में अपने नाम के साथ एक लेखन दिया है। दूसरे शब्दों में, लेखन भविष्यवक्ता पुराने नियम के सिद्धांत के 4 प्रमुख और 12 छोटे भविष्यवक्ता हैं। तो उस अर्थ में, भविष्यवक्ता और विहित भविष्यवक्ता लिखना पर्यायवाची हैं - हम उन्हीं लोगों की बात कर रहे हैं। मुझे लगता है कि वे लेबल उपयोगी हैं लेकिन उन्हें गलत समझा जा सकता है। "भविष्यवक्ताओं को लिखने" के संबंध में - हम जानते हैं कि ऐसे भविष्यवक्ता थे जिन्होंने लिखा था जिनके लेखन को एस धर्मशास्त्र के सिद्धांत में हमारे लिए संरक्षित नहीं किया गया है। दूसरे शब्दों में, यदि आप वास्तव में इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं, तो अभिव्यक्ति "भविष्यवक्ताओं को लिखना" "विहित भविष्यवक्ताओं" से बड़ी है। इतिहास कई व्यक्तियों के लेखन की बात करता है जिनके लेखन - जिन्हें हम भविष्यवक्ता कहेंगे - जिनके लेखन को हमारे लिए संरक्षित नहीं किया गया है और कैनन में शामिल नहीं किया गया है। हम कुछ संदर्भ देखेंगे। 2 इतिहास 9:29, जहां आप पढ़ते हैं, " सुलैमान के शासनकाल की अन्य घटनाएं, शुरुआत से अंत तक, क्या वे नातान भविष्यवक्ता के अभिलेखों में, शिलोनी अहिय्याह की भविष्यवाणी में और इद्दो के दर्शन में नहीं लिखी हैं ऋषि।" तो नाथन, अहिजा और इद्दो हैं, जिन्होंने ईश्वर के पैगंबर के रूप में लिखा और लिखा, लेकिन किसी भी कारण

से उन लेखों को संरक्षित नहीं किया गया और पुराने नियम के सिद्धांत में शामिल नहीं किया गया। कुछ अन्य सन्दर्भ हैं—2 इतिहास 13:22 और 21:12—मैं उन्हें देखने के लिए समय नहीं दूंगा।

2. "विहित भविष्यवक्ता"

आप यह भी कह सकते हैं कि "विहित भविष्यवक्ता" शब्द भी कुछ हद तक अपर्याप्त है क्योंकि यह भविष्यवाणी की पुस्तकों को ऐतिहासिक पुस्तकों से अलग करता है। यहूदी परंपरा में, भविष्यसूचक पुस्तकों और ऐतिहासिक पुस्तकों के बीच कोई अलगाव नहीं है। यहूदी परंपरा में हमारे पास उन लोगों का संदर्भ है जिन्हें आप "पूर्व पैगंबर" और "बाद के पैगंबर" कहते हैं। पूर्व भविष्यवक्ताओं को हम ऐतिहासिक पुस्तकें कहते हैं: यहोशू, न्यायाधीश, शमूएल और राजा। वे पूर्व पैगंबर हैं। बाद वाले भविष्यवक्ताओं को हम भविष्यसूचक पुस्तकें कहते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि यहूदी परंपरा कहीं अधिक सटीक है। वे सभी पुस्तकें भविष्यसूचक पुस्तकें हैं। ऐतिहासिक पुस्तकें पुराने नियम के काल में उन लोगों के साथ क्या हो रहा था, इसका दैवीय रूप से प्रेरित रिकॉर्ड और व्याख्या हैं। वे उतनी ही भविष्यसूचक हैं जितनी वे पुस्तकें जिन्हें हम भविष्यसूचक कहते हैं।

विद्यार्थी प्रश्न: "अब क्या एलीशा और एलिय्याह को प्रामाणिक भविष्यवक्ता माना जाएगा?" नहीं, क्योंकि उनके पास पवित्रशास्त्र का पूर्ण कैनोनाइजेशन नहीं है। उनके पास उनके द्वारा लिखित कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं है। उन्हें विहित भविष्यवक्ता या लिखित भविष्यवक्ता - इनमें से कोई भी नहीं माना जाएगा।

द्वितीय. भविष्यवाणी नामकरण

आइए रोमन अंक II, "भविष्यवाणी नामकरण" पर चलते हैं। मैं पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं को नामित करने के लिए उपयोग किए गए कुछ शब्दों और वाक्यांशों पर जाना चाहता हूं। मुझे लगता है कि नामकरण को देखने से हमें भविष्यसूचक कार्य की प्रकृति के बारे में कुछ जानकारी मिलती है। शुरू से ही मुझे यह टिप्पणी करने दीजिए। अधिकांश लोग जब "पैगंबर" शब्द सुनते हैं तो तुरंत सोचते हैं कि पुराने नियम में लोगों का यह समूह था जिसने भविष्य की भविष्यवाणी की थी। दूसरे शब्दों में, भविष्यवक्ता वह है जो

भविष्य की भविष्यवाणी करता है। मुझे लगता है कि यह वास्तव में मुद्दा भूल गया है। हां, यह सच है कि कई भविष्यवाणियों की किताबों में भविष्य में घटित होने वाली चीजों के बारे में भविष्यवाणियां होती हैं, लेकिन भविष्यवक्ता होने का मतलब भविष्य की भविष्यवाणी करना नहीं है। पैगम्बर मूलतः उपदेशक थे। उन्होंने पुराने नियम के काल में परमेश्वर के लोगों की ज़रूरतों के बारे में बात की और उन्हें जो कुछ कहना था वह पश्चाताप का आह्वान, वाचा में लौटने का आह्वान, प्रभु के प्रति आज्ञाकारी होने का आह्वान और झूठी पूजा को दूर करने का आह्वान था। . इसलिए भविष्यवाणी मंत्रालय का सार भविष्यवाणी की तुलना में कहीं और निहित है। दोनों पर्यायवाची नहीं हैं. भविष्यवक्ता बनने के लिए हमेशा यह बताना जरूरी नहीं है कि भविष्य में क्या होगा। मुझे लगता है कि यह कुछ नामकरण में सामने आता है जिसके साथ भविष्यवक्ताओं की पहचान की जाती है।

ए. भगवान का आदमी ए. द्वितीय के तहत. सबसे सामान्य नाम है: "भगवान का आदमी।" पुराने नियम में उस अभिव्यक्ति का 76 बार उपयोग किया गया है। उनमें से लगभग आधे का उपयोग एलीशा के संबंध में किया जाता है, जिसे अक्सर "भगवान का आदमी" कहा जाता है। 1 राजा 13 में एक संख्या है जहां आपके पास परमेश्वर का वह आदमी है जो बाहर गया और यारोबाम प्रथम की वेदी के खिलाफ भविष्यवाणी की। लेकिन बहुत से अन्य व्यापक रूप से बिखरे हुए हैं। मूसा को "परमेश्वर का जन" कहा जाता है, वैसे ही शमूएल, एलिजा और शेमिया को भी कहा जाता है। इसलिए, इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। इसका सुझाव यह है: भविष्यवक्ता वह व्यक्ति है जो ईश्वर के साथ संबंध रखता है। यदि आप ईश्वर के आदमी हैं तो आप ईश्वर के साथ किसी प्रकार के रिश्ते में हैं - यह रिश्ता वास्तव में क्या है, यह परिभाषित नहीं है। परन्तु यहाँ ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के जन हैं।

बी. प्रभु का सेवक

बी. है: "प्रभु का सेवक।" हमने पिछले सप्ताह "मेरे सेवक नबियों" के बारे में बात की थी। यहां संबंध अधिक स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। ये भविष्यवक्ता परमेश्वर के सेवक थे। रिश्ता सेवा का है. लेकिन फिर भी यह अभी भी सामान्य है। इसका प्रयोग कई पैगम्बरों के

साथ किया जाता है लेकिन इसका प्रयोग अधिक व्यापक रूप से किया जाता है क्योंकि पैगम्बरों के अलावा अन्य लोगों को ईश्वर का सेवक कहा जाता है। एक दिलचस्प संदर्भ यिर्मयाह 27:6 और 43:10 में राजा नबूकदनेस्सर का है। उसे "प्रभु का सेवक" कहा जाता है। वह एक भविष्यवक्ता नहीं था, वह ईश्वर का विश्वास करने वाला बच्चा भी नहीं था, लेकिन वह ईश्वर के हाथ में एक उपकरण था जिसने यहूदा पर आने वाले दंड के संबंध में ईश्वर के उद्देश्यों और योजनाओं को पूरा किया, इसलिए उसे "का सेवक" कहा जाता है। भगवान।" सी. प्रभु के दूत

सी. "प्रभु का दूत" है। अब यहां आप और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं। पैगम्बर वह व्यक्ति है जो ईश्वर का संदेश मनुष्यों तक पहुँचाता है। आप सोच सकते हैं कि इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाएगा क्योंकि भविष्यवक्ता जो करता है उसका सार यही है, लेकिन ऐसा नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि ऐसा बहुत कम होता है। इसका प्रयोग केवल हाग्वै का ही होता है। हाग्वै 1:13 में कहा गया है, " प्रभु के दूत हाग्वै ने लोगों को यहोवा का यह सन्देश दिया।" मैं कहता हूँ कि इसका उपयोग केवल हाग्वै के लिए किया गया है। अर्थात्, इसका उपयोग केवल हाग्वै के लिए किया जाता है जब तक कि आप मलाकी 1:1 न लें जहाँ यह कहता है, " एक दैवज्ञः मलाकी के माध्यम से इस्राएल के लिए यहोवा का वचन।" लेकिन अगर आप इसे हिब्रू में देखें तो यह "एक दैवज्ञः *मालियाची के माध्यम से इस्राएल के लिए प्रभु का संदेश है।*" *मालियाची*, यदि आप इसका अनुवाद करते हैं तो यह "माई मैसेंजर" है। और कुछ लोग ऐसे हैं जो सोचते हैं कि हम इस भविष्यवक्ता का नाम नहीं जानते - कि यह प्रभु के लिए एक दूत का सामान्य पदनाम मात्र है। "एक दैवज्ञः *मालियाची*, मेरे दूत के माध्यम से इसराइल के लिए भगवान का संदेश ।" मेरा मानना है कि यह एक उचित नाम है क्योंकि वह परिचयात्मक पंक्ति भविष्यसूचक दूतों की भूमिका के बहुत करीब है। आपके पास अन्य कार्यों में दिया गया पैगंबर का नाम है, इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि यह संभवतः उसका नाम है। लेकिन वह सी., "प्रभु का दूत" है।

D. हिब्रू शब्द नबी [पैगंबर]

D. हिब्रू शब्द *नबी* है। यह वह शब्द है जिसका प्रयोग अक्सर किसी भविष्यवक्ता

को नामित करने के लिए किया जाता है। जब आप हिब्रू ओल्ड टेस्टामेंट के अंग्रेजी अनुवाद में पैगम्बर शब्द देखते हैं तो यह इसी शब्द का अनुवाद है। सेप्टुआजेंट में उस हिब्रू शब्द का अनुवाद ग्रीक शब्द *प्रोफेटेस द्वारा किया गया है*। यहीं पर हमें अपना अंग्रेजी शब्द "पैगंबर" मिलता है। अंग्रेजी शब्द "प्रोफेट" ग्रीक शब्द *प्रोफेटियस से लिया गया है*। यह *नाबी* का ग्रीक सेप्टुआजेंट अनुवाद है। तो फिर सवाल यह बन जाता है: विशेष रूप से पुराने नियम के काल में किसी व्यक्ति के लिए *नबी का क्या मतलब था जिसने यह शब्द सुना था?* फिर इस शब्द का अर्थ क्या था? और इससे बहुत सारे प्रश्न सामने आते हैं जहां तक उत्पत्ति, व्युत्पत्ति, इत्यादि को लेकर बहुत अधिक असहमति है। लेकिन मुझे लगता है कि जो स्पष्ट है वह यह है कि, *नबी* का मतलब किसी प्रकार का भविष्यवक्ता, भविष्यवक्ता, शकुन पढ़ने वाला, कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो इस तरह का काम करता हो। *प्रोफेटीज़ नबी* का ग्रीक अनुवाद है। भविष्यवाणी, भविष्यवक्ता, इस तरह की चीज़ के अभ्यास के लिए, ग्रीक ने *मेंटिस शब्द का उपयोग किया*। तो पुराने नियम के हिब्रू और ग्रीक दोनों में आपको भविष्यवक्ता और भविष्यवक्ता और भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर मिलता है।

शास्त्रीय यूनानी साहित्य में, *भविष्यवक्ताओं* को ऐसे व्यक्ति के रूप में समझा जाता था जो मनुष्यों के लिए देवताओं के संदेशों की व्याख्या करता था। एक स्थान जहां यह विशेष रूप से स्पष्ट हो जाता है वह डेल्फ़ी में अपोलो का मंदिर है। एक पुजारिन थी जिसे पाइथिया कहा जाता था। यह पुजारिन एक सुनहरी तिपाई पर बैठकर उन्मादी मुद्रा में देवता के सन्देश देती थी। तो यहाँ यह पाइथिया है जो देवता अपोलो से इस प्रकार का अस्पष्ट रहस्योद्घाटन दे रहा है। लेकिन फिर आप देखिए क्या हुआ, *भविष्यवक्ता* आए और पाइथिया की उन अस्पष्ट ध्वनियों की समझने योग्य भाषा में व्याख्या की। इस प्रकार *भविष्यवक्ताओं* ने लोगों के लिए देवताओं के प्रकटीकरण की व्याख्या की। यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 2 को देखें तो पृष्ठ के नीचे पुराने नियम के विषयों पर आपके पसंदीदा लेखक गेरहार्ड वोस का उनके बाइबिल धर्मशास्त्र से एक पैराग्राफ है जहां वह नबी के बारे में बात कर रहे हैं। और वह कहते हैं, “ *नबी* के अर्थ की इस जांच के साथ, हम इसके संक्षिप्त समकक्ष *भविष्यवक्ताओं की एक संक्षिप्त चर्चा को जोड़ सकते हैं* - जिससे हमारा शब्द

'पैगंबर' आया है। हम इसके साथ अधिकतर भविष्यवक्ता या भविष्यवक्ता के विचार को जोड़ते हैं। यह मूल यूनानी व्युत्पत्ति विज्ञान के अनुरूप नहीं है। रचना में पूर्वसर्ग 'समर्थक-' पूर्व के समय बोध को व्यक्त नहीं करता है। इसका स्थानीय महत्व है. भविष्यवक्ता एक भविष्यवक्ता है / हालाँकि, यूनानी शब्द का धार्मिक संबंध हिब्रू शब्द से कम नहीं है।

भविष्यवक्ता वह है जो दैवज्ञ के लिए बोलता है। इस प्रकार ऐसा लग सकता है कि *प्रो-* सही ढंग से समझे जाने वाले हिब्रू *नबी* और ग्रीक *भविष्यवक्ता* व्यावहारिक रूप से पर्यायवाची थे। हालाँकि यह भ्रामक होगा। यूनानी *भविष्यवक्ताओं* का देवता से उतना सीधा संबंध नहीं है जितना हिब्रू *नबी* का है। वास्तव में वह पाइथिया, या किसी अन्य प्रेरित व्यक्ति के अलौकिक अंधेरे कथनों का व्याख्याकार है, जिसके पास भगवान के नीचे की गहराई से प्रेरित एक मंदिर था। इस प्रकार पाइथिया देवता के पास उसी स्थान पर खड़ा होता है जहां नबी होता है *लेकिन* पैगम्बरों को इस मध्यवर्ती व्यक्ति द्वारा देवता से अलग कर दिया जाता है। इसलिए *भविष्यवक्ता* ईश्वर जो कुछ भी बोलता है उसके मुखपत्र के बजाय एक व्याख्याकार है जिसे उसने सीधे तौर पर प्रेरित किया है। (दूसरे शब्दों में पायथिया वह था जिससे देवता बात करते थे लेकिन जब देवता पायथिया से बात करते थे तो वह अस्पष्ट ध्वनियाँ होती थीं।) इसलिए भविष्यवक्ता उन अस्पष्ट ध्वनियों को लेते हैं और उन्हें समझने योग्य बनाते हैं। इसलिए वह मुखपत्र के बजाय दुभाषिया है। वह न केवल दैवज्ञ की रोशनी को जोड़ता है, बल्कि उस रूप को भी जोड़ता है जिसे वह समझने वाले मानव को पहनाता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बाइबिल धर्म की सेवा में लिए गए *भविष्यवक्ता* शब्द को उपयोग में लाने से पहले पुनर्जनन के बपतिस्मा से गुजरना पड़ा। दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहा है वह यह है कि यदि आप पुराने नियम के हिब्रू के ग्रीक अनुवादक थे, और आप हिब्रू में *नबी* को उचित रूप से प्रस्तुत करने के लिए एक शब्द की तलाश कर रहे हैं तो आप उस ग्रीक शब्द को लेते हैं जो उस फ़ंक्शन के सबसे करीब है, और ऐसा होता है *भविष्यवक्ता* शब्द होना. लेकिन इसकी पृष्ठभूमि अलग है. जब इसे बाइबिल के संदर्भ में उपयोग में लाया जाता है तो आपको उस अंतर के बारे में जागरूक होना होगा।

डी. 1. नबी की व्युत्पत्ति अब इस शब्द पर वापस आते हैं *नबी* - इसका क्या अर्थ है?

नबीकी व्युत्पत्ति के बारे में बहुत चर्चा हुई है। अपनी रूपरेखा निकालो. मेरे पास डी के अंतर्गत दो उपबिंदु हैं। 1. "व्युत्पत्ति विज्ञान" है और 2. "उपयोग" है। जब आप व्युत्पत्ति का प्रश्न पूछते हैं, तो आप बहुत जल्दी विवादों में पड़ जाते हैं। कुछ लोगों ने कहा है कि *नाबी* एक अन्य हिब्रू मूल, " *एनबी* " का व्युत्पन्न है, जिसके व्युत्पन्न का अर्थ है "बुलबुला आगे।" यह सुझाव महान हिब्रू विद्वान गेसेनियस का था। उन्होंने कहा कि पैगंबर को उनके बोलने के प्रभाव के कारण इस नाम से बुलाया गया था; भविष्यवक्ता के मुख से "बुलबुला निकलना" शब्दों का प्रवाह। अन्य लोग इसे अक्कादियन मूल, *नबू* से व्युत्पन्न मानते हैं। अक्कादियन में *नबू* का अर्थ है "बोलना।" *नाबू* शब्द बेबीलोनियाई देवता *नाबू* से आया है जो ज्ञान और विज्ञान के देवता, शब्द और लेखन के देवता हैं। आपको वही घटक बाद के नामों जैसे नबूकदनेस्सर और नबोपोलास्सर में मिलता है। इसलिए यदि यह *नबू* से आता है तो *नबी* एक वक्ता होगा, और अधिक विशेष रूप से, कोई ऐसा व्यक्ति जो भगवान के लिए बोलता हो।

टीजे मीक के अंतर्गत आपके उद्धरण पृष्ठ 3 और *हिब्रू मूल* पर खंड देखें। वह कहते हैं, "पैगंबर के लिए तीसरा शब्द वह है जो सबसे लोकप्रिय हो गया है, लगभग पूरी तरह से पुराने शब्द *रोह की जगह ले चुका है*।" मैं बाद में *रोह* वापस आऊंगा। "यह *नबी* एक मूल शब्द है जो हिब्रू में नहीं पाया जाता है लेकिन अक्कादियन में *नबू* के रूप में पाया जाता है 'पुकारना, पुकारना, बोलना।' तदनुसार इसका अर्थ है वक्ता, ईश्वर का प्रवक्ता और ग्रीक *भविष्यवक्ताओं* द्वारा सेप्टुआजेंट में इसका सही अनुवाद किया गया है। एक संज्ञा जो पूर्वसर्ग *प्रो से ली गई है* - क्रिया के लिए, *फेमी*, 'बोलने के लिए।' के लिए, या की ओर से बोलने के लिए। *भविष्यवक्ता. समर्थक-फेमी*। "इसलिए *नबी* प्रकार का भविष्यवक्ता वास्तव में एक 'भविष्यवक्ता' नहीं था जैसा कि पहले माना जाता था, बल्कि एक 'भविष्यवक्ता, उपदेशक' था। महारानी एलिज़ाबेथ के समय तक अंग्रेजी में 'पैगंबर' का यही अर्थ था, जब किसी कारण से इस शब्द को भविष्यवाणी और भविष्यवाणी के बराबर माना जाने लगा। उदाहरण के लिए 1647 में प्रकाशित जेरेमी टेलर की एक पुस्तक, जिसका शीर्षक था *द लिबर्टी ऑफ प्रोफ़ेसिंग*, इस शब्द का वर्तमान अर्थ वह नहीं है जो किसी को

सोचने पर मजबूर करेगा। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर एक किताब है। आधुनिक भाषा में: उपदेश की स्वतंत्रता. तदनुसार, अंग्रेजी में "पैगंबर" शब्द का मूल ग्रीक और हिब्रू में अर्थ वक्ता या प्रवक्ता है। तो यह वह विचार है जो *नाबू से आया है* इसका अर्थ है "बोलना।"

ऐसे अन्य लोग भी हैं जो कहते हैं कि हाँ, यह *नाबू से आता है*, लेकिन उस अक्काडियन शब्द की सक्रिय आवाज़ से होने के बजाय यह निष्क्रिय है। तब इसका अर्थ होगा "ईश्वर द्वारा बुलाया गया कोई व्यक्ति।" यदि आप अपने उद्धरणों के पृष्ठ 3 पर मीक के उस अनुच्छेद के ऊपर देखें तो विलियम एफ. अलब्राइट के कुछ कथन हैं। वह कहते हैं, "नबी, पैगंबर शब्द की 'वक्ता' के रूप में वर्तमान व्याख्या लगभग निश्चित रूप से झूठी है। शब्द का सही व्युत्पत्तिशास्त्रीय अर्थ यह है कि 'वह व्यक्ति जिसे ईश्वर ने बुलाया है, जिसके पास ईश्वर की ओर से बुलाहट है,' जैसा कि इस तथ्य से पता चलता है कि लगभग हमेशा यही अर्थ होता है।" तीसरी पंक्ति के मध्य से अंतिम के मध्य तक। वह इस पर आगे चर्चा करते हैं - वे कुछ पंक्तियों में कहते हैं, "शब्द की व्याख्या उसके अर्थ के बिल्कुल अनुरूप है; भविष्यवक्ता या वह व्यक्ति जिसने स्वयं को ईश्वर द्वारा एक विशेष मिशन के लिए बुलाया महसूस किया जिसमें उसकी इच्छा ईश्वर की इच्छा के अधीन थी। अतः व्युत्पत्ति विज्ञान के अंतर्गत कुछ अन्य दृष्टिकोण भी हैं। मुझे लगता है कि व्युत्पत्ति अनिश्चित बनी हुई है। लेकिन मुझे लगता है कि ये विचार "बोलने के लिए," या "किसी को भगवान द्वारा बुलाया गया" बाइबिल के उपयोग में हम जो पाते हैं, उसके अनुरूप हैं। किसी भी शब्द के अर्थ के लिए व्युत्पत्ति से अधिक महत्वपूर्ण है विशिष्ट अनुच्छेदों के संदर्भ में उसका अर्थ और उसके उपयोग के तरीके से प्राप्त उसका अर्थ।

2 नबी का प्रयोग

तो यह हमें 2 पर लाता है। "नबी का उपयोग।" मुझे अभी उस पर शुरुआत करने दीजिए। हमने पिछले सप्ताह जिस तरह से इसका उपयोग किया गया था, उस पर थोड़ा काम किया और मैंने आपको मुख्य श्लोक के रूप में व्यवस्थाविवरण 18:18 का उल्लेख किया, जहां भविष्यसूचक कार्य को बहुत स्पष्ट भाषा में वर्णित किया गया है। आपके पास व्यवस्थाविवरण 18:18 में यह कथन है, "मैं उनके लिए उनके भाइयों में से एक

भविष्यद्वक्ता," एक *नबी*, "तेरे जैसा," मूसा, " उठाऊंगा ;" मैं अपने वचन उसके मुंह में डालूंगा, और जो कुछ मैं उसे आज्ञा दूंगा वह उन से कहेगा।" अब जैसा कि मैंने पिछले सप्ताह उल्लेख किया था, यह वही बात है जो यिर्मयाह 1:9 में कही गई है जहाँ प्रभु कहते हैं, "यिर्मयाह, मैं अपने शब्द तेरे मुँह में डालूँगा।"

अब उसके संबंध में निर्गमन 7:1 दिलचस्प है। वहाँ तुम पढ़ते हो, " यहोवा ने मूसा से कहा, देख, मैं ने तुझे फिरौन के लिये परमेश्वर के तुल्य बनाया है, और तेरा भाई हारून तेरा ठहरेगा। *नबी*।" मुझे लगता है कि यह आयत हमें कुछ अंतर्दृष्टि देती है कि एक पैगम्बर क्या है और पैगम्बर का ईश्वर से क्या संबंध है। हारून का मूसा से संबंध परमेश्वर के भविष्यवक्ता के समान होगा। दूसरे शब्दों में, मूसा फिरौन के संबंध में वैसा ही खड़ा होगा जैसा ईश्वर अपने लोगों के साथ करता है। परन्तु मूसा फिरौन से आप से बातें न करेगा। वह हारून द्वारा किया जाएगा. हारून मूसा का सन्देश फिरौन तक पहुँचाएगा, जैसे भविष्यवक्ता लोगों को परमेश्वर का सन्देश सुनाता है। तो तुम्हें याद होगा मूसा ने कहा था, "मैं बोल नहीं सकता" और प्रभु ने कहा, "हारून तुम्हारे लिए बोलेगा" और यहाँ यह कहता है, "मैंने तुम्हें फिरौन के लिए भगवान की तरह बनाया है। तुम्हारा भाई हारून तुम्हारा भविष्यद्वक्ता होगा।" यदि आप निर्गमन 4:15 पर जाएं, जहाँ मूसा के बोलने के बारे में चर्चा हुई थी, तो आप देखेंगे कि परमेश्वर ने मूसा से कहा, " तू उस से बातें करना, और उसके मुंह में शब्द डालना;" मैं तुम दोनों को बोलने में मदद करूँगा और तुम्हें सिखाऊँगा कि क्या करना है। वह तुम्हारे लिये लोगों से बातें करेगा, और ऐसा होगा"—अब सुनो—"मानो वह तुम्हारा मुँह हो। यह ऐसा होगा मानो वह तुम्हारा मुख हो, और मानो तुम उसके लिए भगवान हो। परन्तु इस लाठी को अपने हाथ में ले लो, कि तुम इसके द्वारा आश्चर्यकर्म कर सको।" हारून को मूसा का मुख कहा जाता है, और सादृश्य द्वारा भविष्यवक्ता को परमेश्वर का मुख कहा जाता है। इसलिए मुझे लगता है कि जब आप *नबी* का उपयोग करते हैं , तो वे पाठ हमें इस शब्द का अर्थ क्या है, इसकी स्पष्ट जानकारी देते हैं।

अगला पदनाम *रोह* है जिसका अनुवाद अक्सर "द्रष्टा" किया जाता है। हम अगली बार उस पर गौर करेंगे।

कार्ली गीमन रफ
द्वारा प्रतिलेखित, टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, फ़्राउंडेशन ऑफ़ प्रोफेसी, व्याख्यान 4

भविष्यवक्ताओं को संदर्भित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले शब्द जारी

इ। नबी - नबी

हम यहां सिर्फ भविष्यवाणी, यानी भविष्यवक्ताओं के संदेश और *नबी शब्द*, जिसका अर्थ है "पैगंबर" के बीच संबंध के बारे में बात कर रहे थे। मैं जो कह रहा हूं वह यह है कि दोनों बहुत निकट से जुड़े हुए हैं। भविष्यवक्ता के शब्द, भविष्यवाणी, वास्तव में ईश्वर के शब्द हैं और यह भविष्यवाणी हो भी सकती है और नहीं भी। दूसरे शब्दों में, भविष्यवाणी ईश्वर का एक शब्द है जो *नबी शीर्षक के साथ अच्छी तरह से फिट बैठता है*। जैसा कि उनमें से कुछ उद्धरणों ने बताया, यूनानी *भविष्यवक्ताओं के साथ*, यह वास्तव में भगवान के लिए बोल रहा है। यह मानवीय शब्दों का सार नहीं है; यह इतना अधिक पूर्वानुमानित नहीं है जितना कि यह आगे से बताया जा रहा है। उस भविष्य कथन में कुछ भविष्यवाणियाँ शामिल हो सकती हैं लेकिन भविष्यवाणी क्या है इसका सार भविष्यवाणी नहीं है।

एफ। रोह - द्रष्टा

आइए दूसरे शब्द पर चलते हैं और वह है *रोएह*। यह वास्तव में *ra'ah का एक सहभागी रूप है*, देखने के लिए। इसका अनुवाद "द्रष्टा" किया गया है। अब जैसे ही आप उस शब्द पर आते हैं, और उस पर साहित्य को देखते हैं तो आप पाएंगे कि ऐसे लोग हैं जो यह तर्क देने का प्रयास करते हैं कि *नबी* और *रोएह* मूल रूप से दो अलग-अलग प्रकार के लोग थे। दूसरे शब्दों में, आप *रोएह* और *नबी के बीच अंतर कर सकते हैं*, और यह कि बाद के समय में ही दोनों शब्द अधिक पर्यायवाची बन गए।

1. मेसोपोटामिया से महु और बारू

एक विद्वान, उनका नाम उतना महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन मैं आपको दे दूँगा, अल्फ्रेड हलदर ने तर्क दिया कि आप कुछ मेसोपोटामिया भाषाओं में "भविष्यवक्ताओं" को नामित करने में वही अंतर पाते हैं जो आप पुराने नियम में पाते हैं। मेसोपोटामिया में कुछ लोग हैं जिन्हें *महु* और *बारू कहा जाता है*। हलदर ने जो तर्क दिया वह यह था कि *माहु हिब्रू नबी*

के समान था और *बारू हिब्रू रोह* के समान था। तो अक्कादियन मेसोपोटामिया ग्रंथों में इसके ये दो पदनाम हैं और उन्होंने कहा कि इज़राइल में समतुल्य *महू* और *नबी* और *बारू* और *रोह* के बीच है। अब, मेसोपोटामिया में *महू* और *बारू* एक जैसे थे कि उन दोनों का काम यह समझना था कि ईश्वर की इच्छा क्या है और फिर उसे अन्य लोगों को बताना था। लेकिन *महू* और *बारू* में एक महत्वपूर्ण अंतर था। *महू* को सीधे देवताओं से संदेश प्राप्त हुआ और उसने परमानंद की स्थिति में ऐसा किया। तो, *महू* एक परमानंद था और जब वह उस परमानंद की स्थिति में था, तो उसे एक देवता से एक संदेश मिलता है, जिसे वह फिर दूसरों तक पहुंचाता है। वह ऐसा तब करता है जब वह अभी भी मन की आनंदमय स्थिति में होता है।

हालाँकि *बारू* अलग था / *बारू* को संदेश अप्रत्यक्ष रूप से बाह्य माध्यमों से प्राप्त हुआ। दूसरे शब्दों में, *बारू* वह व्यक्ति था जो ज्योतिषीय संकेत पढ़ता था या विभिन्न प्रकार के शगुन पढ़ता था। *बारू* ने *भगवान* की इच्छा को निर्धारित करने के तरीकों में से एक बलि चढ़ाए गए जानवरों के जिगर की जांच करना और जिगर की संरचना को देखना था। जिगर के विभिन्न विन्यासों के अलग-अलग महत्व होते हैं और वह इस तरह से भगवान की इच्छा निर्धारित करेगा या वह पानी पर तेल डालेगा और देखेगा कि किस प्रकार का पैटर्न विकसित हुआ है और उससे कुछ पढ़ेगा या बहुत कुछ डालेगा - इच्छा निर्धारित करने के विभिन्न बाहरी साधन ईश्वर।

2. ईश्वर की इच्छा निर्धारित करने के बाहरी साधन

अब हलदर जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह यह है कि जिस तरह मेसोपोटामिया में उनके परमानंद और उनके *बारू* पुजारी थे, उसी तरह इज़राइल में भी *नबी* और *रोह* के बीच अंतर पाया जा सकता है। *नबी* वह परमानंद था जिसे यह संदेश सीधे देवता से प्राप्त हुआ था। *रोह* वह व्यक्ति था जो बाहरी रूप से जानकारी प्राप्त करता था और फिर उसे दूसरों तक पहुँचाता था। अब यह एक दिलचस्प सिद्धांत है। समस्या यह है कि यदि आप बाइबिल के आंकड़ों को देखें तो यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि बाइबिल का डेटा पैटर्न में फिट नहीं बैठता है। यहां आपके पास कहीं और से एक पैटर्न है जो पवित्रशास्त्र पर थोपा

गया है और शास्त्र संबंधी डेटा की विशिष्टताओं को पहले से ही पूर्वकल्पित पैटर्न में मजबूर किया गया है। उदाहरण के लिए, शमूएल को "द्रष्टा" कहा जाता है 1 शमूएल 9:11, लेकिन उसने परमेश्वर की इच्छा निर्धारित करने के लिए बाहरी साधनों से काम नहीं किया।

अब आगे बढ़ने से पहले मुझे बाहरी तरीकों से ईश्वर की इच्छा निर्धारित करने के इस व्यवसाय के बारे में कुछ और कहने दीजिए। इसे बाइबल से पूरी तरह बाहर नहीं रखा गया है। याद रखें कि महायाजक के पास ऊरीम और तुम्मीम था और वह ऊरीम और तुम्मीम के उपयोग के माध्यम से भगवान की इच्छा निर्धारित कर सकता था। जब आप दाऊद के समय में आते हैं और जब शाऊल ने नोब में याजकों का सफाया कर दिया था, तब एब्यातार भाग गया और वह दाऊद के पास एपोद ले आया और अगले कुछ अध्यायों में आप दाऊद को यह कहते हुए देखते हैं, "मेरे लिए एपोद लाओ" और फिर वह प्रश्न पूछता है प्रभु की। "मुझे इस जगह जाना चाहिए या नहीं?" और प्रभु ने कहा, "हाँ, जाओ"। "क्या मैं विजयी होऊंगा?" और प्रभु ने कहा, "हाँ, तुम करोगे," या "नहीं, तुम नहीं करोगे।" बाइबिल सामग्री के माध्यम से वैध तरीके से बाहरी साधनों का उपयोग किया गया था। हालाँकि, जो व्यक्ति बाहरी साधनों का उपयोग कर सकता है उसे कभी भी *रोह नहीं कहा जाता है*। एब्यातार जिसके पास ऊरीम और तुम्मीम की रखवाली थी, वह याजक था; वह *रोह नहीं था*। इसलिए यह इस श्रेणी में फिट नहीं बैठता।

आपके पास ऐसे व्यक्तियों का संदर्भ है जिन्होंने ईश्वर की इच्छा निर्धारित करने के लिए बाहरी घटनाओं का उपयोग किया। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि उन्हें कभी भी "द्रष्टा" नहीं कहा जाता। उन्हें कभी भी *ro'eh* शब्द से निर्दिष्ट नहीं किया जाता। उन्हें दैवज्ञ, जादूगर, भविष्यवक्ता या जादूगर कहा जाता है। यदि आप व्यवस्थाविवरण 18:10 को देखते हैं, उस अनुच्छेद में जो वर्णन करता है कि भविष्यवक्ता क्या होगा और भगवान भविष्यवक्ता के माध्यम से कैसे बात करने जा रहे हैं, तो आप वहां पढ़ते हैं, "तुम्हारे बीच कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को बलिदान करता हो अग्नि, जो भविष्यवाणी या जादू-टोना करता है, शगुन की व्याख्या करता है, जादू-टोना करता है या जादू-टोना करता है, जो एक माध्यम है, एक प्रेतात्मवादी है, जो मृतकों से परामर्श करता है। जो कोई ये काम करता है वह यहोवा

की दृष्टि में घृणित है।” प्रभु उस चीज़ की निंदा कर रहे हैं जो इन बरू पुजारियों ने मेसोपोटामिया में किया था, जिगर से या ज्योतिषीय घटनाओं से या जो भी हो, शगुन देखना। वह कुछ ऐसा था जो इस्राएलियों के लिए वर्जित था।

3) 1 सैम. 9:9

अब, एक श्लोक है जो मुझे लगता है कि शिक्षाप्रद है, हालाँकि यह एक श्लोक भी है जो बहुत सारे प्रश्न उठाता है। लेकिन 1 शमूएल 9:9 पुराने नियम में रोएह और नबी के उपयोग के बीच संबंध के प्रश्न के संबंध में शिक्षाप्रद है। इसमें लिखा है, “पूर्व में इज़राइल में यदि कोई व्यक्ति ईश्वर से पूछताछ करने जाता था, तो वह कहता था, 'आओ, हम द्रष्टा के पास चलें, रोह,' क्योंकि आज के भविष्यवक्ता को द्रष्टा कहा जाता था। " आज के नबी, पैगम्बर को रोह, द्रष्टा कहा जाता था। " अब वह श्लोक, यदि आप एनआईवी को देख रहे हैं, तो आप इसे कोष्ठक में देखेंगे। यह एक कोष्ठक कथन है जो श्लोक 8 के बाद डाला गया है। यदि आप बड़े संदर्भ को देखें, तो मुझे लगता है कि आप यह निष्कर्ष निकालेंगे कि यह वास्तव में श्लोक 11 के बाद श्लोक 8 के बाद की तुलना में बेहतर फिट बैठता है। आप देख सकते हैं कि यह वह जगह है जहां शाऊल अपने पिता की तलाश कर रहा है खोए हुए मवेशी और वह उन्हें ढूँढ नहीं सकता। उसका नौकर कहता है, “वहाँ एक साधु है, हम जाकर उससे क्यों नहीं पूछते?” वह पद 8 में ऐसा कहता है। नौकर ने कहा, “देखो, मेरे पास एक चौथाई शेकेल चाँदी है। मैं इसे परमेश्वर के जन को दूँगा ताकि वह हमें बताये कि हमें क्या रास्ता अपनाना है।” श्लोक 9 को फिलहाल छोड़ दें। शाऊल ने अपने नौकर से कहा, "अच्छा," परन्तु वे अब भी गदहों को न पा सके, इसलिये वे उस नगर की ओर निकल पड़े जहां परमेश्वर का भक्त था। जब वे पहाड़ी पर चढ़कर शहर की ओर जा रहे थे तो उनकी मुलाकात कुछ लड़कियों से हुई जो पानी भरने के लिए बाहर आ रही थीं। उन्होंने उनसे पूछा, 'क्या द्रष्टा यहाँ है?' फिर आपको रोहशब्द का उपयोग मिलता है। "क्या द्रष्टा यहाँ है?" और, आप देखते हैं, श्लोक 9, फिर, यदि आप इसे श्लोक 11 के बाद वहां रखते हैं, "पूर्व में इज़राइल में यदि कोई व्यक्ति भगवान से पूछताछ करने जाता था तो वह कहता था,

'आओ, हम द्रष्टा के पास चलें' क्योंकि भविष्यवक्ता उस दिन को द्रष्टा कहा जाता था।" अब कई लोग जो सोचते हैं कि श्लोक 9 मूल पाठ का हिस्सा नहीं था। यह शायद पाठ के हाशिये में एक व्याख्यात्मक शब्दाडंबर था। प्रसारण की प्रक्रिया में किसी बिंदु पर, इसे पाठ में डाल दिया गया लेकिन उन्होंने इसे गलत स्थान पर डाल दिया। इसे श्लोक 11 के बाद रखा जाना चाहिए था ताकि यह समझाया जा सके कि द्रष्टा क्या है, न कि श्लोक 8 के बाद जहां यह वास्तव में इतनी अच्छी तरह से फिट नहीं बैठता है। मुझे लगता है कि यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि यह संभवतः एक व्याख्यात्मक शब्दावली है, मूल पाठ का हिस्सा नहीं। लेकिन महत्वपूर्ण बात जो यह हमें बता रही है वह यह है कि भविष्यवक्ता और द्रष्टा के बीच कोई आवश्यक अंतर नहीं है। यह भाषाई प्रयोग का मामला है। "आज के भविष्यवक्ता को द्रष्टा कहा जाता था।" "द्रष्टा" शब्द "पैगंबर" से भी पुराना है और बाद के समय में, *नबी* या "पैगंबर" शब्द अधिक सामान्य शब्द था और "द्रष्टा" शब्द काफी पुरातन भाषा बन गया, आपको एक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है ताकि कोई भ्रम न हो .

मुझे लगता है कि शायद यहाँ यही चल रहा है, लेकिन अगर आप इसके बारे में सोचते हैं और इसे इसके बड़े बाइबिल संदर्भ में रखते हैं, तो यह कुछ अन्य प्रश्न उठाता है। हम इस टिप्पणी को कब दिनांकित करेंगे? यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि शमूएल के काफी समय बाद भी भविष्यवक्ताओं को द्रष्टा ही कहा जाता था। उदाहरण के लिए, आप इसे यशायाह में पाएंगे, "द्रष्टा " शब्द का उपयोग । यह भी हैरान करने वाली बात है कि *नबी* शब्द का प्रयोग सैमुअल के समय से बहुत पहले किया गया था। उत्पत्ति 20, श्लोक 7 में इब्राहीम को *नबी* कहा गया था। और *नबी का* उपयोग संख्याओं में किया जाता है, इसका उपयोग व्यवस्थाविवरण में किया जाता है, इसका उपयोग न्यायाधीशों में किया जाता है। वास्तव में, 1 शमूएल 3:20 में शमूएल को स्वयं *नबी कहा गया है*। तो फिर सवाल यह उठता है कि यदि "पैगंबर" शब्द का प्रयोग सैमुअल के समय से पहले किया जाता है, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि जिसे बाद में पैगंबर कहा गया वह सैमुअल के समय में द्रष्टा कहा जाता था? अब कुछ लोग कह सकते हैं, "यहां एक स्पष्ट प्रमाण है कि पुराने नियम के

सभी पाठ जिनमें "पैगंबर" शब्द का उपयोग किया गया है, सैमुअल के समय के बहुत बाद के हैं।" क्या यह एक वैध निष्कर्ष है?

आइये हिब्रू पाठ पर चलते हैं। हिब्रू में है, "आज के भविष्यवक्ता को पहले द्रष्टा कहा जाता था।" अब उसका अनुवाद थोड़ा कठिन है. ध्यान दें कि एनआईवी क्या करता है - वाक्यांश "क्योंकि आज का भविष्यवक्ता" इसे एक प्रकार की रचना के रूप में लेता है: आज का भविष्यवक्ता। "उन्हें द्रष्टा कहा जाता था।" किंग जेम्स और NASB क्रिया को दोहराते हैं। "क्योंकि वह जो अब भविष्यद्वक्ता, वा आज का भविष्यद्वक्ता कहलाता है, पहिले द्रष्टा कहलाता था।" हिब्रू शास्त्र में आपके पास केवल एक क्रिया है। एनएसबी का कहना है, "उन्हें अब *नबी* कहा जाता है।"

अब, यदि आप 1 शमूएल 9:11 के सेप्टुआजेंट अनुवाद पर जाते हैं, तो वहां आपको एक अलग विचार पेश किया जाता है क्योंकि वहां आपके पास है, "समय से पहले लोगों को भविष्यवक्ता, द्रष्टा कहा जाता था।" देखिये, आप कैसे बताते हैं. वह ग्रीक *हा लाओस* [लोग] कहाँ से आता है? समय से पहले "लोग" भविष्यवक्ता को द्रष्टा कहते थे। तो वापस हिब्रू *हयोम पर*। जैसा कि सेप्टुआजेंट अनुवाद हिब्रू से मानता है, *हा योम* [आज] के बजाय, आपके पास *हा आम* [लोग] होता। क्या आप देखते हैं कि इसे कितनी आसानी से भ्रमित किया जा सकता है? " *योम* " में *बस* " *वाउ* " के स्थान पर " *अयिन* " का प्रतिस्थापन करें। "मुझे लगता है कि सेप्टुआजेंट शायद वहां जो कुछ हो रहा है उस पर सही प्रकाश डालता है। सेप्टुआजेंट और मैसोरेटिक पाठ को पढ़ने के बीच अंतर यह है कि सेप्टुआजेंट इंगित करता है कि *रोएह* लोगों का अधिक लोकप्रिय पदनाम था। जबकि *नबी* पैगंबर के लिए अधिक तकनीकी या आधिकारिक शब्द था। लोग पहले पैगंबर, द्रष्टा कहते थे। यदि ऐसा मामला है, तो शब्द " *रोएह* " का उपयोग बाद के समय में भी जारी रह सकता है और "पैगंबर" शब्द का उपयोग पहले ही किया जा सकता था जैसा कि हम वास्तव में पाते हैं। और दोनों के बीच कोई बुनियादी अंतर नहीं है. यह अधिक तकनीकी और इसके अधिक लोकप्रिय उपयोग के बीच का अंतर है, न कि पूर्ण अर्थ संबंधी भेदभाव। अतः भविष्यवक्ता द्रष्टा थे। उन्हें परमेश्वर द्वारा यह देखने के लिए बनाया गया था कि उन्हें दूसरों को क्या घोषित

करना चाहिए। इसलिए भले ही शब्द " *नबी*" और " *रोहेह*" दोनों का उपयोग किया जाता है, मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि वे एक ही कार्य के बारे में बात करते हैं। पहले लोग पैगम्बर को द्रष्टा कहते थे।

अब यदि आप उनके बीच अंतर करने जा रहे हैं, तो मुझे लगता है कि इस हद तक यह वैध है। यह कहना कि *नबी* हमें एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो, आप कह सकते हैं, ईश्वर का संदेश सुनाने के लिए लोगों की ओर मुड़ा है ताकि जोर इस बात पर हो कि उसने ईश्वर से क्या प्राप्त किया है। रोह दिखाता है कि एक व्यक्ति भगवान की ओर मुड़ गया है। दूसरे शब्दों में, *नबी* में उद्घोषणा पर अधिक जोर है, *रोएह* में संदेश प्राप्त करने, संदेश देखने पर अधिक जोर है। तो आप कह सकते हैं कि *नबी* उद्घोषणा के सक्रिय कार्य पर अधिक जोर देता है जबकि *रोह* संदेश प्राप्त करने के निष्क्रिय कार्य पर अधिक जोर देता है। लेकिन भविष्यवक्ता और द्रष्टा के बीच कोई बुनियादी अंतर नहीं है।

छात्र प्रश्न: "द्रष्टा, जिन्हें राजा ने आने और दीवार पर या कुछ और लिखने के लिए कहा है, सपनों और इस तरह की चीज़ों की व्याख्या कैसे करेंगे, वे कैसे भ्रमित नहीं होंगे?" खैर, मुझे लगता है कि आप वहां जो समझ रहे हैं वह यह सवाल है कि आप उन दोनों के बीच अंतर कैसे करते हैं जिन्हें "पैगंबर" कहा जाता है या नहीं। क्या यही है? मुझे लगता है कि यदि आप लोगों को जानते हैं - यदि लोग यशायाह या ओबद्याह या कुछ और को बुला रहे हैं, और वे केवल "द्रष्टा" शब्द का उपयोग कर रहे हैं, तो वे वास्तविक पैगम्बरों को किसी और से कैसे अलग करेंगे कि वे किसी द्रष्टा को बुलाओ? हाँ, वास्तव में यदि आप यशायाह 6:1 को देखें जहाँ यशायाह कहता है, "जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह मरा, मैंने प्रभु को देखा।" वहां आपके पास मौखिक रूप है, *राह*। इस प्रकार यशायाह को ईश्वर का दूरदर्शी अनुभव हुआ। उसने प्रभु को देखा। उसे वैध रूप से *नबी* कहा जा सकता है। मुझे लगता है कि *राह/रोह* शब्द का जोर संदेश प्राप्त करने के इस दूरदर्शी साधन पर है। जबकि *नबी* शब्द का जोर है दूसरों को संदेश की उद्घोषणा पर अधिक जोर दिया जाता है। लेकिन *रोएह* और *नबी* एक ही चीज़ हैं। यह सिर्फ एक अलग पदनाम है। ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों के बीच पहले *रोएह* और बाद में *नबी* शब्द का उपयोग करना पसंद किया जाने लगा है। यह

कार्य करने वालों के लिए यह तकनीकी लेबल की तुलना में अधिक लोकप्रिय है। लेकिन बाइबिल के अनुसार कोई भेद देखने का कोई कारण नहीं है।

4) आमोस 1:1 आइए आमोस 1:1 को देखें। मैं *ro'eh* ढूँढ रहा था , लेकिन यह संज्ञा के बजाय एक क्रिया है। “तकौआ के चरवाहों में से एक आमोस के शब्द। भूकंप से दो साल पहले उसने इसराइल के बारे में क्या देखा था।” यदि ये आमोस के शब्द हैं, तो आप निम्नलिखित वाक्यांश को पढ़ने के लिए जिस तरह से हम बात करते हैं, उसी तरह से उम्मीद करेंगे, “तकौआ के चरवाहों में से एक, आमोस के शब्द। जलप्रलय से दो वर्ष पहले उसने इस्राएल के विषय में क्या सुना था।” यह नहीं कहता कि यह कहता है "उसने क्या देखा।" ध्यान उस दूरदर्शी प्रकार के स्वागत पर है। यहाँ क्रिया *हाज़ा* है। यह अगला शब्द है जिसे हम देख रहे हैं, जो है "उसने देखा"। एक ही बात है। इसका अर्थ है "देखना" या "एकटक देखना।" मुझे लगता है कि यहां महत्वपूर्ण बात *नबी को रोह* से अलग करने का इस तरह का प्रयास है क्योंकि बाइबिल के पाठ में दो अलग-अलग प्रकार के व्यक्तियों के बारे में नहीं बताया गया है, वे एक ही हैं।

छात्र प्रश्न: "तो जो कोई राजा के लिए काम करता था उसे भविष्यवक्ता नहीं माना जाता था, बल्कि वह भविष्यवक्ता था या जो भविष्य की भविष्यवाणी करता था, क्या उन्हें द्रष्टा भी कहा जाता था?" नहीं, उन्हें भविष्यवक्ता, भविष्य बताने वाला, या शकुन देने वाला कहा जाएगा। उस प्रकार के व्यक्तियों के लिए अन्य शब्द भी थे।

जी होज़ेह

आइए *होज़ेह की ओर चलें*। मैं *हाज़ा* के बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा। यह क्रिया *हाज़ा से आता है* जैसे *ro'eh* क्रिया *ra'ah* से आता है। और *हाज़ा का* अर्थ है "देखना", या "देखना"। यह वास्तव में रोएह का पर्यायवाची है , इसका उपयोग उसी तरह किया जाता है। *रोएह* की तरह ही , भगवान के रहस्योद्घाटन को प्राप्त करने पर जोर दिया जाता है। इसलिए यदि आप यशायाह 1:1 को देखें, “यहूदा और यरूशलेम के विषय में वह दर्शन जो आमोज़ के पुत्र यशायाह ने यहूदा के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह

के शासनकाल के दौरान देखा था। "दृष्टि हेज़ोन है। यह क्रिया हाज़ा से व्युत्पन्न एक संज्ञा है। यशायाह ने जो दर्शन देखा, वह हज़ोन है। तो आप यशायाह को होज़ेके साथ-साथ नबी या रोएह भी कह सकते हैं। मेरा मतलब है, ये सभी शब्द एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किये जाते हैं।

3. इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति

चलिए तीन पर चलते हैं। "इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति।" आप तीन उप-बिंदुओं पर ध्यान दें। ए है, "अन्य राष्ट्रों में इज़राइल के भविष्यवक्तावाद की कथित उपमाएँ।" बी. है, "भविष्यवाणी की उत्पत्ति के लिए आंतरिक इज़राइली स्पष्टीकरण," और सी. है, "मैं जो सोचता हूँ वह भविष्यवक्तावाद की बाइबिल व्याख्या है।" तो सबसे पहले, हम बी और सी की तुलना में ए पर अधिक समय बिताना चाहते हैं।

ए. इज़राइल में इज़राइल पैगम्बरवाद की कथित उपमाएँ

ए है, "अन्य राष्ट्रों में इज़राइल के भविष्यवक्तावाद की कथित उपमाएँ।" आप साहित्य में पाएंगे कि यह कहा गया है कि इज़राइल में अन्य लोगों और प्राचीन निकट पूर्व के देशों में भविष्यवाणियों में समानताएं पाई जा सकती हैं। फिर आम तौर पर ऐसा होता है कि विद्वान इज़राइल में पैगम्बरवाद की घटना को इज़राइल के बाहर की इन घटनाओं के व्युत्पन्न के रूप में समझाने का प्रयास करते हैं ताकि इज़राइल के भविष्यवक्ताओं की उत्पत्ति को इज़राइल के बाहर पाए जाने वाले अनुरूप घटनाओं द्वारा समझाया या समझाया जा सके।

औपचारिक समानताएँ

अब, इस बारे में कुछ टिप्पणियाँ। मेरा मानना है कि शुरू से ही, हमें ईमानदार, स्पष्ट और खुला रहना होगा और कहना होगा कि हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते हैं कि हम इज़राइल में जो पाते हैं और अन्यत्र पैगम्बरवाद की घटनाओं के बीच "औपचारिक समानताएं" कह सकते हैं। वास्तव में जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो इज़राइल में बहुत

सारे रीति-रिवाज, धार्मिक संस्थान और प्रथाएं हैं जो अन्य लोगों के बीच औपचारिक समानताएं रखती हैं। लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि यह कहना बहुत कुछ कहता है। भले ही औपचारिक समानताएं हों, सवाल यह है: क्या यह कहने का आधार देता है कि इज़राइल और आसपास के देशों में हम जो पाते हैं, उसके बीच किसी प्रकार का आंतरिक संबंध या लिंक है? इज़राइल में भविष्यसूचक कार्य की प्रकृति के बारे में हम जो पहले ही कह चुके हैं, उसे ध्यान में रखते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि यदि ये ईश्वर द्वारा चुने गए लोग हैं जिनके माध्यम से वह अपने लोगों को अपना वचन उनके मुंह में डालकर देगा, तो इज़राइल में जो चल रहा है और जो हम अन्य लोगों के बीच पा सकते हैं, उनके बीच किसी भी प्रकार के आंतरिक संबंध के बारे में बात करना कुछ ऐसा होगा जो अत्यधिक संदिग्ध होगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि व्युत्पत्ति के बारे में बात करना एक ऐसी चीज़ है जिसे भविष्यवाणी शास्त्र के आधार पर बाहर रखा जाएगा। लेकिन ऐसा कहने के बाद, यह भी बहुत स्पष्ट है कि भगवान मनुष्यों से बात करते हैं, जिसमें पुराने नियम के काल में उनके लोग इज़राइल भी शामिल हैं, उन लोगों की संस्कृति, संस्थानों, विचार रूपों के संदर्भ में जिनसे वह बात कर रहे हैं। जब आप पुराने नियम को देखते हैं, तो आपको पुराने नियम में कई घटनाएं मिलेंगी जिनके लिए आप इज़राइल के बाहर औपचारिक उपमाएँ पा सकते हैं। पुराना नियम बलिदान लाने के नियमों से भरा हुआ है। अन्य प्राचीन लोग अपने धार्मिक अनुष्ठान में बलि का प्रयोग करते थे। पुराने नियम की वाचा का चिन्ह खतना था। अन्य प्राचीन लोग खतना का अभ्यास करते थे। पुराने नियम के संदर्भ में खतना ने एक बहुत ही विशिष्ट महत्व या अर्थ प्राप्त कर लिया है, लेकिन यह प्राचीन दुनिया में कुछ अज्ञात नहीं था।

संधि की पूरी अवधारणा के बारे में सोचें जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नियंत्रित करने वाली संधि की अवधारणा पर स्पष्ट रूप से ढाली गई प्रतीत होती है, जो हिती संधि के रूप हैं। बाइबिल अनुबंध प्रपत्र हिती संधि प्रपत्र के आसपास ढाला गया है। ईश्वर मानवीय कानूनी रिश्तों का एक साधन लेता है और इसका उपयोग उस रिश्ते की संरचना के लिए करता है जिसे वह अपने और अपने लोगों के बीच स्थापित करता है, यह बहुत अच्छी बात है।

बस राजत्व का विचार लीजिए। इज़राइल, एक निश्चित समय पर, अपने राजा के रूप में ईश्वर से संतुष्ट नहीं था; वे चारों ओर के राष्ट्रों के समान एक मानव राजा चाहते थे। यहोवा ने शमूएल से कहा, “उन्हें एक राजा दो।” इस प्रकार इस्राएल के पास चारों ओर की जातियों के समान एक राजा था। हालाँकि, योग्यता के साथ जब भगवान ने सैमुअल से उन्हें एक राजा देने के लिए कहा तो सैमुअल ने राजत्व के तरीके का वर्णन किया। 1 शमूएल 10:25 में, इस्राएल के राजा की भूमिका और कार्य उसके आसपास के राष्ट्रों से काफी भिन्न थे। तो आपमें समानता और अंतर था। इस्राएल का एक राजा था, लेकिन वह ऐसा राजा नहीं था जो उसी तरह कार्य करता था जैसे इस्राएल के बाहर के राजा करते थे।

इस्राएल का एक याजक था। अन्य प्राचीन लोगों के पास पुजारी थे। तो यदि अन्य प्राचीन लोगों के पास भविष्यवक्ता थे तो इस्राएल में भविष्यवक्ता क्यों नहीं होना चाहिए, लेकिन उनके बीच आवश्यक अंतर क्या हैं? जिस तरह से पैगम्बर ने इसराइल में कार्य किया और जिस तरह से पैगम्बर ने इसराइल के बाहर कार्य किया वह अलग था। इसलिए यदि आप इज़राइल के बाहर एक औपचारिक, मैं कह रहा हूँ औपचारिक, भविष्यवाणी समारोह के संबंध में इज़राइल में जो कुछ भी आप पाते हैं, उसके अनुरूप पा सकते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि यह किसी भी तरह से इज़राइल के पैगंबरों की विशिष्टता को कम करता है। हाँ, अन्य लोगों के पास भविष्यवक्ता थे, लेकिन इज़राइल में, कुछ अलग है। इज़राइल में पैगम्बरवाद की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इज़राइल में, पैगंबर अपने विचार नहीं बोलते हैं, वे अपने शब्द नहीं देते हैं। वह सीधे एकमात्र सच्चे ईश्वर द्वारा उसे दिया गया संदेश देता है। इसलिए जब आप इज़राइल के बाहर भविष्यवक्तावाद की समानता और इज़राइल में जो पाते हैं, उसके बारे में प्रश्न पूछते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको इसे ध्यान में रखना होगा।

लेकिन ऐसा कहने के बाद भी, मुझे लगता है कि अगला सवाल यह हो जाता है, "इजरायल के बाहर भविष्यवक्तावाद के किसी प्रकार के औपचारिक सादृश्य के लिए किस तरह का सबूत है अगर यह इसके सार में यह आंतरिक गुण नहीं है जहां भगवान अपने शब्दों को रख रहे हैं इन व्यक्तियों का मुँह?" पैगम्बरवाद की इस घटना के लिए हमें प्राचीन

विश्व में किस प्रकार के औपचारिक प्रमाण मिलते हैं? अपनी रूपरेखा पर ध्यान दें, मेरे पास मेसोपोटामिया की उपमाएँ, मिस्र की उपमाएँ, कनानी उपमाएँ और एक निष्कर्ष है

1) मेसोपोटामिया सादृश्य

पहला है मेसोपोटामिया उपमाएँ। मेसोपोटामिया उपमाओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण अतिरिक्त बाइबिल पाठ वे पाठ हैं जो मारी नामक स्थान पर पाए गए थे जो ऊपरी मेसोपोटामिया में बेबीलोन के आसपास है। हम्मुराबी के समय से पहले यह एक समृद्ध शहर था। हम्मुराबी लगभग 1700 ईसा पूर्व में रहते थे, इसलिए यह काफी प्रारंभिक है। हम्मुराबी पर कब्ज़ा होने से ठीक पहले के समय में वहां का शासक ज़िमरी लिम के नाम से जाना जाता था। मारी की खुदाई में एक संग्रह में लगभग 5,000 कीलाकार गोलियाँ मिली हैं। उनमें से कुछ को मेसोपोटामिया में जिसे वे पैगम्बरवाद कहते हैं, उसके निशान मिलते हैं। यदि आप उस हैंडआउट पर अक्षर ए को देखते हैं, तो अक्काडियन पत्रों के तहत पहला पाठ, आपको "दिव्य रहस्योद्घाटन" शीर्षक दिखाई देगा। यह सामग्री प्रिचर्ड के *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों से ली गई है* जिसे आमतौर पर संक्षिप्त रूप में ANET कहा जाता है। यह प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित, जेम्स प्राइसहार्ड द्वारा संपादित प्राचीन निकट पूर्व के अतिरिक्त-बाइबिल ग्रंथों का मानक अंग्रेजी भाषा अनुवाद है।

क) मारी के ज़िमरी लिम को इटोरस्तु का एक पत्र

वहां का पहला पाठ ज़िमरी लिम को इटोरस्तु का एक पत्र है, जो मारी का राजा था। मुझे पाठ पढ़ने दें और उस पर कुछ टिप्पणियाँ करने दें। इसमें लिखा है, "मेरे प्रभु से बात करो। इस प्रकार इटोरस्तु आपका सेवक। जिस दिन मैंने अपनी यह गोली अपने स्वामी, मलाक डैगन को भेजी, शॉटगा का एक आदमी आया और मुझसे इस प्रकार बोला, 'मेरे एक सपने में, मैं सिगारिकोन के किले के एक अन्य व्यक्ति की कंपनी में जाने के लिए तैयार था। मारी के ऊपरी जिले में। अपने रास्ते में, मैंने तुर्का में प्रवेश किया और प्रवेश करने के ठीक बाद, मैं दागोन के मंदिर में प्रवेश किया और साष्टांग प्रणाम किया। जब मैं साष्टांग झुक रहा था, दागोन ने अपना मुंह खोला और मुझसे इस प्रकार बोला, "क्या अम्मोनियों के राजाओं और उनकी सेनाओं ने जिम्री लिम की सेनाओं के साथ सन्धि कर ली है?" मैंने कहा, "उन्होंने

शांति स्थापित नहीं की।" मेरे बाहर जाने से ठीक पहले, उन्होंने मुझसे इस प्रकार बात की, 'ज़िमरी लिम के दूत लगातार मेरी उपस्थिति में क्यों नहीं रहते हैं और वह अपनी पूरी रिपोर्ट मेरे सामने क्यों नहीं रखते? यदि ऐसा किया गया होता, तो मैंने बहुत पहले ही अम्मोनियों के राजाओं को जिम्री लिम के अधिकार में दे दिया होता। अब जाओ, मैं तुम्हें भेजता हूँ। तू जिम्री लिम से इस प्रकार कहना, "अपने दूतों, मेरे पास भेजो। अपनी पूरी रिपोर्ट मेरे सामने रखो और फिर मैं अम्मोनियों के राजाओं को मछुआरे की छड़ी पर पकाकर तुम्हारे सामने रख दूँगा।" यह उद्धरण का अंत है। "यह वही है जो इस आदमी ने अपने सपने में देखा और फिर मुझे बताया। अब मैं अपने प्रभु को लिखता हूँ। मेरे प्रभु को इससे निपटना चाहिए। इसके अलावा, यदि मेरा प्रभु चाहे, तो मेरा स्वामी अपना पूरा विवरण दागोन के साम्हने रखे, और मेरे प्रभु के दूत दागोन के मार्ग में निरन्तर चलते रहें। जिस व्यक्ति ने मुझे यह स्वप्न बताया था, उसे दागोन के लिये बलिदान चढ़ाना था। और इसलिए मैंने उसे आगे नहीं भेजा। इसके अलावा, चूँकि यह आदमी भरोसेमंद था, इसलिए मैंने उसका कोई बाल या उसके परिधान की झालर नहीं काटी।"

तो, इटोरस्तु का कहना है कि जिस दिन उसने यह पत्र लिखा था, उस दिन शॉटगा का एक व्यक्ति था, जिसका नाम मलाक डैगन था, जो संदेश लेकर उसके पास आया था। मैलाक डैगन का कहना है कि उसने किसी दूसरे आदमी की संगति में जाने के बजाय सपने में सपना देखा था। सपने में, वह और यह दूसरा व्यक्ति तुर्का गए, जो कि मारी के पास एक जगह है, और दागोन नाम के एक देवता के मंदिर में गए, शायद वही दागोन जिसका उल्लेख पुराने नियम में पलिशितियों के देवता के रूप में किया गया था। लेकिन पत्र में कहा गया है कि जब मलाक डैगन मंदिर में गया, तो उसके सपने में भगवान ने उससे एक सवाल पूछा, "क्या अम्मोनियों के राजाओं ने ज़िमरी लिम की सेना के साथ शांति स्थापित की थी?" संभवतः ज़िमरी लिम के सैनिकों और अम्मोनियों कहे जाने वाले इन लोगों के बीच झड़पें हुई थीं। जब मैलाक डैगन नकारात्मक उत्तर देता है, तो भगवान कहते हैं, "ज़िमरी लिम के दूत मुझ पर निरन्तर उपस्थित क्यों नहीं रहते? वे मुझे पूरी रिपोर्ट क्यों नहीं देते? यदि उन्होंने ऐसा किया होता, तो मैं इन लोगों, अम्मोनियों, को जिम्री लिम के अधिकार में दे देता।" और फिर

वह कहता है, अब जा, मैं तुझे भेजता हूँ, तू जिम्री लिम से इस प्रकार कहना, कि अपने दूत मेरे पास भेज। अपनी पूरी रिपोर्ट मेरे सामने रखो, और मैं इन अम्मोनियों को मछुआरे की लाठी पर पकाऊंगा।"

इसलिए इटोरस्तु ने जिमरी लिम को बताया कि इस मलैक डैगन ने अपने सपने में क्या देखा था, उसने उसे डैगन के निर्देशों का पालन करने की सलाह दी। अब, कुछ लोग मलाक डैगन में इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के साथ एक सादृश्य देखते हैं और उन्होंने इसे इस तरह से स्थापित किया: मलैक डैगन देवता से एक संदेश देता है जिसे जिमरी लिम को मानना चाहिए था और इज़राइल के पैगंबर अक्सर देवता यहोवा से संदेश देते थे एक राजा के लिए जिसकी उसे आज्ञा माननी थी। हालाँकि इस बिंदु पर, हम बाद में इस पर वापस आएंगे, लेकिन इस बिंदु पर मुझे लगता है कि यह ध्यान देने योग्य है कि मैलाक डैगन सीधे तौर पर ऐसा नहीं करता है। मैलाक डैगन इटोरस्तु को संदेश देता है और इटोरास्तु इसे एक पत्र, एक टैबलेट के माध्यम से राजा तक पहुंचाता है, इसे लिखता है, उसे भेजता है। इसलिए कुछ समानताएं और भिन्नताएं भी हैं।

बी) मैरी के जिमरी लिम को किदरी डैगन का एक पत्र

आइए टेक्स्ट बी पर चलते हैं, जो किदरी डैगन का जिमरी लिम को लिखा एक पत्र है। यह एक संक्षिप्त पाठ है। इसमें लिखा है, "इसके अलावा जिस दिन मैंने अपनी यह गोली अपने स्वामी को भेजी, डैगन का एक परमानंद आया और उसने मुझे इस प्रकार संबोधित किया।" यह परमानंद के लिए *मह* शब्द है। यह डैगन का परमानंद है। अनुवाद "परमानंद" व्युत्पत्ति और सामान्य उपयोग पर आधारित है, लेकिन मारी सामग्री असाधारण मानसिक स्थिति का कोई सबूत नहीं देती है। "डैगन का यह परमानंद आया और मुझे इस प्रकार संबोधित किया, 'भगवान ने मुझे सीधे राजा के पास भेजा है कि वे यदु लिम की छाया के लिए मुर्दाघर की बलि चढ़ाएं।' परमानन्द ने मुझसे यही कहा। इसलिए, मैंने अपने प्रभु को लिखा है कि मेरे स्वामी वही करें जो उन्हें पसंद हो।" अब किदरी डैगन ने यह पत्र जिमरी लिम को भेजा। वह मारी के निकट एक स्थान का राज्यपाल था। और वह कहता है कि यह परमानंद उसके पास यह संदेश लेकर आया था, "राजा को लिखो कि वे यदु लिम की छाया के लिए

मुर्दाघर की बलि चढ़ाएँ।" यदु लिम ज़िमरी लिम का पिता था, इसलिए राजा का पिता था। ऐसा लगता है कि ज़िमरी लिम अपने मृत पिता की आत्मा के लिए प्रसाद लाने में विफल रहा था। तो किदरी डैगन को यह संदेश अति उत्साह से मिलता है और वह यह संदेश राजा तक पहुंचा देता है। आपने देखा कि आखिरी पंक्ति में वह राजा को सलाह देता है, "आपको ऐसा करना चाहिए।" लेकिन फिर वह कहता है, "मेरे प्रभु को वही करने दो जो उसे अच्छा लगे।"

सी। मारी के ज़िमरी लिम को परमानंद पाठ

आपकी रूपरेखा पर C. आपके हैंडआउट पर G. है। मैं वह सब नहीं पढ़ूंगा लेकिन यह एक टूटी हुई गोली है; बीच में एक अंतराल है और ऐसा लगता है कि यह एक उत्साहपूर्ण कहावत के संदेश की चिंता करता है कि ज़िमरी लिम को आने वाले महीने के 13 वें दिन देवता के लिए एक भेंट लानी थी - शायद वही भेंट जो पिछले पाठ में उल्लिखित थी। आपने देखा कि इसका अंत कैसे होता है। "मेरे स्वामी जैसा चाहें वैसा ही करें।"

डी. किदरी डैगन का एक और पत्र

आपकी रूपरेखा का D. आपके हैंडआउट पर F. है। परमानंद के संदर्भ में किदरी डैगन का एक और पत्र। तो यह परमानन्द यहाँ पहले आ गया। लेकिन इसे समझना कठिन है। ऐसा लगता है कि संदेश शहर के द्वार के निर्माण से संबंधित है। गेट के बारे में जो कहा गया है वह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि गेट बनाने के निर्देश दिए गए हैं। दूसरों का कहना है कि यह इसे न बनाने की चेतावनी है, लेकिन यह एक परमानंद है जो एक संदेश प्रकट करता है जो शहर के द्वार के संबंध में राजा को दिया जाना है।

ई. मेसोपोटामिया उपमाओं के संबंध में निष्कर्ष

ई: "मेसोपोटामिया उपमाओं से संबंधित निष्कर्ष।" यहीं पुस्तकों और लेखों की एक सूची है। उस साहित्य में, कई लोगों ने तर्क दिया है कि इन ग्रंथों के उत्साह और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के बीच, रूप और सामग्री दोनों में समानताएं हैं। आइए इनमें से कुछ पर नजर डालें। जहाँ तक रूप में समानता की बात है, तो यह तर्क दिया जाता है कि जिस प्रकार इज़राइल में एक भविष्यवक्ता को अपना संदेश प्रभु, यहोवा से प्राप्त हुआ, उसी प्रकार मारी में परमानंद को अपना संदेश डैगन से प्राप्त हुआ। यह काफी उचित है। यह

एक औपचारिक समानता है। दूसरे, जैसे इसराइल में भविष्यवक्ता अपना संदेश बिना पूछे ही दैवीय अधिकार के साथ राजा के पास भेज देते थे, वैसे ही मारी में भी इस उत्साह के साथ संदेश राजा के पास बिना मांगे भेज दिया जाता था। राजा ने संदेश नहीं माँगा। इस बात का पहले से कोई निर्धारण नहीं है कि राजा संदेश सुनना चाहेगा या नहीं। उन्हें संदेश दिया गया, इसलिए एक और समानांतर। तीसरा, जैसे इज़राइल में पैगंबर अक्सर राजा के कार्यों की आलोचना करते हैं, वैसे ही यहां मारी में उत्साह के साथ आलोचना होती है। “आपने मुझे सूचित क्यों नहीं किया? तुमने बलि क्यों नहीं दी? आपको होना चाहिए।” तो इन्हें आप औपचारिक समानताएँ कह सकते हैं: रूप में समानताएँ।

सामग्री में समानता के बारे में क्या? कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि उस पहले पाठ में आपको पुराने नियम में मुक्ति की भविष्यवाणी के बराबर कुछ मिलता है। दूसरे शब्दों में, “यदि आपने मुझे सूचित किया होता (आप नीचे 2, 4, 6 पंक्तियों में देखेंगे), यदि ऐसा किया गया होता, तो मैं गया होता और राजाओं और अम्मोनियों को जिम्मी लिम के अधिकार में सौंप दिया होता।” तो यह पुराने नियम में मुक्ति की भविष्यवाणी के समानांतर है। उस पहले पाठ से लगभग 8 पंक्ति नीचे एक दूसरी समानता भी मिलती है। “अब जाओ, मैं तुम्हें भेजता हूँ। इस प्रकार आप जिम्मी लिम से बात करेंगे। यिर्मयाह 1:7 के समान, “जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूं उसके पास जाना, और जो कुछ मैं आज्ञा दूँ वही कहना।” “अब जाओ, बोलो।” तो मुझे लगता है कि उस स्तर पर आप कह सकते हैं, “हां, मारी सामग्री और पुराने नियम के बीच स्वरूप में कुछ समानताएं हैं और यहां तक कि सामग्री में कुछ हल्की समानताएं भी हैं।” लेकिन ऐसा कहने के बाद, मुझे लगता है कि यह नोटिस करना बहुत महत्वपूर्ण है कि ऐसा नहीं किया गया है। कुछ बहुत महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। मैं उनमें से कुछ का उल्लेख करना चाहता हूँ।

1) पहला पाठ, मैलाक डैगन

सबसे पहले, उस पहले पाठ में, मलैक डैगन, जिसने वह संदेश प्राप्त किया था, सीधे राजा के पास नहीं जाता है। वह राजा के एक हाकिम के पास जाता है; वह इटोरस्तु जाता है। यह इटोरस्तु ही है जो संदेश को एक टेबलेट पर रखता है और राजा को भेजता है। तो,

आप कह सकते हैं, संदेश प्राप्त करने वाले भविष्यवक्ता और उसे राजा तक पहुंचाने वाले व्यक्ति के बीच एक मध्यस्थ है। वहां एक तीसरा पक्ष है। अन्य तीन पत्रों में, परमानंद किदरी डैगन के पास जाता है जो संदेश को लिखित रूप में राजा तक पहुंचाता है। अतः दूसरे शब्दों में कहें तो इन सभी ग्रंथों में अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे पक्ष के माध्यम से संदेश राजा तक पहुंचता है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के लिए यह प्रथा है कि वे अपना संदेश सीधे राजा तक पहुँचाएँ। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण एलिय्याह है जो अहाब का सामना करता है। वह बस बाहर जाता है और उसका सामना करता है। या यशायाह, जो बाहर जाता है और सीधे आहाज का सामना करता है।

2) दो गोलियाँ एक प्रभावशाली वक्तव्य के साथ समाप्त होती हैं

दूसरे, दो गोलियाँ एक आश्चर्यजनक कथन के साथ समाप्त होती हैं। हैंडआउट में यह ई और जी है। ई. संदेश दिए जाने के बाद इस कथन के साथ समाप्त होता है, "मेरे स्वामी को वह करने दें जो उन्हें प्रसन्न करता है", और जी., "मेरे स्वामी उनके विचार-विमर्श के अनुसार ठीक हों जो उन्हें प्रसन्न करता है।" तो उनमें से दो गोलियाँ इस प्रकार के कथन के साथ समाप्त हुईं। इस प्रकार की योग्यता संदेश की ताकत और अधिकार को कम कर देती है। संदेश यही है, लेकिन जो चाहो करो। यह निश्चित रूप से इसे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संदेश से अलग करता है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने कभी भी प्रभु की ओर से उस प्रकार की योग्यता के साथ कोई संदेश नहीं दिया।

3) मारी पाठ में संदेश नैतिक या आध्यात्मिक वास्तविकताओं से संबंधित नहीं है

तीसरा, मारी पाठ में संदेश का ध्यान नैतिक या आध्यात्मिक वास्तविकताओं से संबंधित नहीं है, बल्कि केवल बाहरी सांस्कृतिक दायित्वों से संबंधित है। "यह बलिदान चढ़ाओ," "क्या हो रहा है इसके बारे में मुझे एक रिपोर्ट दो।" मारी पाठ का संदेश नैतिक या आध्यात्मिक वास्तविकताओं से संबंधित नहीं है, केवल बाहरी सांस्कृतिक दायित्वों से संबंधित है। यह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संदेश से बहुत भिन्न है जिनकी प्राथमिक चिंता राजा और लोगों की नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति से थी। मैं उस पर थोड़ा विस्तार करना चाहता हूँ, लेकिन मैं पहले ही समय पार कर चुका हूँ इसलिए मुझे रुकना होगा।

लेकिन आइए हम इसे अपने अगले सत्र की शुरुआत में उठाएँ और वहाँ से आगे बढ़ें।

क्रिस्टा वॉल्श द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव; व्याख्यान 5

प्राचीन निकट पूर्व में भविष्यवाणी

तृतीय. इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति

A. अन्य राष्ट्रों में इज़राइल की भविष्यवाणी की कथित समानताएँ

1. मेसोपोटामिया सादृश्य

a) सारांश समीक्षा

पिछले सप्ताह हम रोमन अंक III., "इजरायल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति" और ए., "अन्य राष्ट्रों में इजराइल की भविष्यवाणी के कथित सादृश्य" पर थे। चार उप-बिंदु थे: मेसोपोटामिया उपमाएँ, मिस्र उपमाएँ, कनानी उपमाएँ और एक निष्कर्ष। हम मेसोपोटामिया सादृश्य के अंतर्गत थे। मैंने आपको प्रिचर्ड द्वारा लिखित *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों* से एक हैंडआउट दिया है, जिसे "दिव्य रहस्योद्घाटन" उपशीर्षक के साथ अक्काडियन पत्र कहा जाता है। हमने मारी के उन कुछ ग्रंथों को देखा, जहां आपके पास उस व्यक्ति का उदाहरण है जिसने एक देवता से संदेश प्राप्त किया, इस मामले में डैगन से, और वह उस संदेश को दूसरे व्यक्ति तक ले जाता है जो इसे एक टैबलेट पर लिखता है और भेजता है राजा के साथ और यह हमने पिछले सप्ताह नोट किया था। मारी में मेसोपोटामिया की इस घटना और पुराने नियम में आपको जो मिलता है, उसके बीच रूप और सामग्री दोनों में कुछ हल्की समानताएँ थीं। आपके पास एक ऐसा व्यक्ति है जो दावा करता है कि उसके पास देवता का एक संदेशवाहक है जो इसे राजा तक पहुंचाता है, हालांकि अप्रत्यक्ष रूप से, प्रत्यक्ष रूप से नहीं।

ख) मतभेद

1) परोक्ष रूप से राजा को

लेकिन समय के अंत में, मैं कुछ मतभेदों पर चर्चा कर रहा था। आप कुछ हल्की-फुल्की समानताएँ देख सकते हैं, लेकिन कुछ बहुत ही आश्चर्यजनक अंतर भी हैं। पहला जिसका मैंने उल्लेख किया वह यह है कि यह अप्रत्यक्ष रूप से मारी में दिया गया है, जबकि इस्राएली भविष्यवक्ता सीधे राजा को उसका सामना करने का संदेश देते हैं। दो तख्तियाँ इस कथन के साथ समाप्त होती हैं, "मेरे भगवान को वह करने दो जो उन्हें प्रसन्न करता है।" तो

यहाँ एक देवता की ओर से औपचारिक रूप से एक राजा को दिया गया संदेश है, लेकिन उस योग्यता के साथ, जो निश्चित रूप से पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संदेश से मौलिक रूप से भिन्न है। प्रभु के वचन का पालन करना था। जब किसी ने प्रभु का वचन सुना, तो उसे वह नहीं करना था जो उसे प्रसन्न करता था, उसे वह करना था जो प्रभु को प्रसन्न करता था। तो यह निश्चित रूप से एक अंतर है।

2)...3) बिना किसी नैतिक या आध्यात्मिक चिंता के सांस्कृतिक चिंताएँ

फिर घंटे के अंत में मैंने जो तीसरी बात बताई वह यह थी कि मारी पाठ में संदेश का फोकस नैतिक या आध्यात्मिक वास्तविकताओं से नहीं बल्कि बाहरी सांस्कृतिक दायित्वों से संबंधित है। दूसरे शब्दों में, आपने यह बलिदान नहीं किया, आपने मुझे सांस्कृतिक दायित्वों के लिए कोई रिपोर्ट नहीं दी। वह शब्द "सांस्कृतिक" पुराने नियम के काम के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है, इसका संबंध पूजा के बाहरी रूपों से है। दूसरे शब्दों में, यदि आप इज़राइल के पंथ के बारे में बात करते हैं, तो आप इज़राइल की पूजा के बाहरी रूपों के बारे में बात कर रहे हैं: बलिदान, त्यौहार, अनुष्ठान - इस अर्थ में सांस्कृतिक नहीं कि यह हमारी समझ के लिए सामान्य है। हम यहोवा के साक्षियों, मॉर्मन या ऐसी किसी चीज़ के बारे में सोचते हैं। लेकिन जब आप प्राचीन इज़राइल के पंथ के बारे में बात करते हैं तो आप पूजा के बाहरी रूपों के बारे में बात कर रहे होते हैं। इसलिए, यह संदेश इस रिपोर्ट में प्रयुक्त बलिदान के माध्यम से बाहरी सांस्कृतिक दायित्वों से संबंधित है, न कि नैतिक या आध्यात्मिक वास्तविकताओं से। यदि आप पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के संदेश को देखें, तो उन्होंने संभवतः सांस्कृतिक टिप्पणियों के बारे में कुछ कहा होगा। यशायाह, मीका, अमोस, इस्राएल द्वारा बलिदान लाने के बहुत आलोचक थे जब उनका मन बलिदानों में नहीं था, लेकिन संदेश का ध्यान पश्चाताप और "अपने हाथ धोएं, स्वच्छ हृदय से प्रभु के पास आओ, आओ" पर है। प्रभु उसकी आज्ञा मानने और उसकी आराधना करने की इच्छा से।" इसलिए, आम तौर पर कहें तो वे मुख्य रूप से राजा और प्रजा दोनों की नैतिकता और आध्यात्मिक स्थिति से चिंतित थे।

4) इतिहास में किसी उद्देश्यपूर्ण दैवीय कृत्य का उल्लेख नहीं है

जिस व्यक्ति के अधीन मैंने नीदरलैंड में अध्ययन किया, रिडरबोस, उसने इज़राइल में भविष्यवक्ताओं और इज़राइल के बाहर के भविष्यवक्ताओं के इस प्रश्न पर कुछ लिखा कि वे कैसे तुलना करते हैं। और वह अपने एक निबंध में कहते हैं, “जब इज़राइल के पैगंबर किसी ठोस स्थिति में एक संदेश लाते हैं, तो हमें उनकी घोषणाओं की पृष्ठभूमि पर ध्यान देना चाहिए। लेकिन विस्तृत बयान देते समय, वे जिस विशेष स्थिति से निपटते हैं उसे इतिहास में ईश्वर की उद्देश्यपूर्ण कार्रवाई के महान विषय से भी जोड़ते हैं। इज़राइल के बाहर के भविष्यवक्ता इतिहास में ऐसे उद्देश्यपूर्ण दिव्य कृत्यों के बारे में कुछ भी जानने का कोई संकेत नहीं देते हैं।

अब आप एक मिनट के लिए इस पर विचार करें, यह एक महत्वपूर्ण अंतर है। दूसरे शब्दों में, पुराने नियम में दिए गए भविष्यवक्ता के किसी भी व्यक्तिगत कथन को एक बड़े संदर्भ में रखा जाना चाहिए, और वह बड़ा संदर्भ वास्तव में भविष्यवाणी लेखन और भविष्यवक्ताओं का संपूर्ण संग्रह है, जो मूसा और सैमुअल से शुरू होता है और भविष्यवक्ता के माध्यम से आगे बढ़ता है। पुराने नियम काल में आंदोलन. ये व्यक्तियों का एक क्रम था जो सदियों से अस्तित्व में आया। उनका संदेश एक मुक्तिदायक संदेश था, न कि सही बलिदान लाने के बारे में तत्काल विस्तृत छोटी-छोटी बातों के बारे में, हालाँकि हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं। यह संदेश इतिहास के चरमोत्कर्ष और पूर्णता तक छुटकारे वाले इतिहास के आंदोलन के बड़े संदर्भ को निर्धारित करता है।

अब आपको सभी राष्ट्रों, सभी लोगों पर ईश्वर के संप्रभु उद्देश्यपूर्ण नियंत्रण का युगांतशास्त्रीय दृष्टिकोण मिलता है, और उसके उद्देश्य इतिहास में पूरे होने जा रहे हैं। आपके पास संदेश के अत्यधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य की यह छलांग है और, जैसा कि रिडरबोस बताते हैं, जब आप मारी में इस प्रकार की गोलियों को देखते हैं, तो इस बात की कोई जागरूकता भी नहीं होती है कि इतिहास में इतना व्यापक उद्देश्यपूर्ण आंदोलन है। तो, फिर से, एक महत्वपूर्ण अंतर। जब आप इन मेसोपोटामिया ग्रंथों में जो कुछ पाते हैं उसे देखते हैं, किसी भी तरह से देखते हैं, तो यह आपको इज़राइल में झूठे भविष्यवक्ताओं की याद दिलाता है। आपके पास इज़राइल में लोग पैगंबर होने का दावा करते थे, लेकिन वे अपने स्वयं के दिल से,

अपने विचारों से अपना संदेश दे रहे थे। मुझे नहीं लगता कि आप इन मारी ग्रंथों में जो पाते हैं, वह उन चीजों से भिन्न है जो आप भविष्यवक्ताओं और भविष्यवक्ताओं के बीच देखते हैं, जो आप सभी लोगों के बीच पाते हैं, और हमेशा वहाँ पाए गए हैं। आप उन्हें मारी में पाते हैं। इसलिए, यह कहने का प्रयास करना कि जो कुछ आप मारी में पाते हैं वह कुछ हद तक इज़राइल में जो मिलता है उसके अनुरूप है, मुझे लगता है कि समग्र रूप से भविष्यवाणी संदेश और जो आप वहाँ पाते हैं, के बीच मौलिक अंतर को नजरअंदाज कर देता है।

5) मारी "पैगंबर" इस्राएली पैगंबरों से भिन्न हैं

द हिब्रू बाइबल और इसके आधुनिक व्याख्याकार नामक खंड में एक निबंध, "भविष्यवाणी और भविष्यवाणी साहित्य" के कुछ पैराग्राफ हैं। यह निबंध जीन टकर का है, जो एक इंजील विद्वान नहीं हैं, लेकिन ध्यान दें कि वह कहते हैं, "मलामत मारी 'भविष्यवक्ताओं' की अपनी परिभाषा में अधिक विशिष्ट थे और ओटी के साथ समानता के बारे में अधिक सतर्क थे। उन्होंने उन्हें मिशन की चेतना और भगवान के नाम पर अधिकारियों से बिन बुलाए बात करने की इच्छा में पुराने नियम के पैगंबरों के समानांतर देखा। लेकिन, भविष्यवाणी संदेश के सार और पैगंबर के मिशन को सौंपी गई नियति में बिल्कुल स्पष्ट अंतर स्पष्ट है। मारी लेख प्रतिनिधियों के लिए उत्पत्ति के नियम को संबोधित करते हैं, न कि संपूर्ण राष्ट्र को, और स्थानीय लोगों की भौतिक चिंताओं को व्यक्त करते हैं। "मारी ग्रंथों का सबसे हालिया प्रमुख उपचार, और सबसे सावधान में से एक, नूट का है, जो बिल्कुल भी आश्चस्त नहीं है कि मारी" पैगंबर "पुराने नियम से ज्ञात लोगों के पूर्ववर्ती थे, या यहां तक कि दोनों संबंधित थे. कम से कम अंतिम बिंदु में वह निश्चित रूप से बहुत आगे निकल जाता है।

अब यह टकर बोल रहा है, "यदि ऐतिहासिक रूप से संबंधित नहीं हैं तो दोनों घटनात्मक रूप से संबंधित हैं।" अब घटनात्मक रूप से संबंधित, या आवधिक घटनाएं: आपके पास किसी ऐसे व्यक्ति की घटना है जो किसी देवता के लिए बोलने का दावा करता है - आप इसे मारी में पाते हैं, आप इसे पुराने नियम में पाते हैं, लेकिन यह बिल्कुल सामान्य है, यह भौतिक नहीं है। इसलिए उनका कहना है कि यदि वे ऐतिहासिक रूप से संबंधित नहीं हैं तो वे घटनात्मक रूप से संबंधित हैं। दूसरे शब्दों में, वह कह रहे हैं कि यह कहना बहुत

कठिन है कि मारी में जो हो रहा है और जो हम इज़राइल में पाते हैं, उसके बीच किसी प्रकार का ऐतिहासिक संबंध है। "चाहे कोई उनके निष्कर्ष को स्वीकार करे या नहीं कि मारी भविष्यवाणी मूल रूप से पुराने नियम की भविष्यवाणी के विपरीत है, उन्होंने मारी में रहस्योद्घाटन के विभिन्न माध्यमों और वक्ताओं और संबोधनकर्ताओं दोनों की भूमिकाओं में एक बहुत ही उपयोगी विश्लेषण प्रस्तुत किया है। संदेश काफी विविध हैं, लेकिन उनमें संकट की स्थिति में भगवान के शब्द का संचार समान है। अब उनमें यही समानता है, और यह बहुत कुछ नहीं है। हम पाते हैं कि संकट की स्थिति में ईश्वर के वचन का संचार होता है, मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि हमारे पास इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए मारी ग्रंथों से कोई बहुत ठोस सबूत है कि इज़राइल में भविष्यवक्तावाद मेसोपोटामिया में जो कुछ भी मिलता है उससे लिया गया था या उधार लिया गया था।

2. मिस्र की उपमाएँ: मिस्र की भविष्यवाणियाँ और भविष्यवाणियाँ

आइए मिस्र की उपमाओं पर चलते हैं। पिछले सप्ताह हैंडआउट देखें, कुछ पृष्ठों पर जाएँ, आपको "मिस्र के भविष्यवाणियाँ और भविष्यवाणियाँ" उपशीर्षक के साथ "भविष्यवाणियाँ और भविष्यवाणियाँ" शीर्षक वाला एक अनुभाग दिखाई देगा। जिस तरह कुछ लोगों ने मेसोपोटामिया में इज़राइल के भविष्यवक्तावाद की कथित उपमा दी है, वही बात मिस्र के संबंध में भी कही गई है। यदि आप अपनी रूपरेखा पर ध्यान दें तो मैं आपका ध्यान मिस्र के दो ग्रंथों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पहला है इपुवर की चेतावनी और दूसरा, नेफ़र-रोहू के लिए की गई भविष्यवाणी। लेकिन उस पहले पृष्ठ पर, जो वास्तव में *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों में पृष्ठ 441* है, आप इपुवर की चेतावनियाँ देखते हैं।

ए) इपुवर की चेतावनी

1. सारांश

यह ग्रन्थ लगभग 1350 से 1100 ईसा पूर्व का है, परन्तु यह एक प्रति है। मूल पाठ बहुत पुराना था, संभवतः लगभग 2000 ईसा पूर्व का। पाठ की शुरुआत और अंत गायब है और पाठ के मुख्य भाग में ही बहुत सारे अंतराल हैं, इस तरह के पाठ को वे अंतराल, लैकुने कहते हैं। . लेकिन यह अभी भी यथोचित रूप से स्पष्ट है कि पाठ किस बारे में है। इपुवर नाम

का एक आदमी है जो मिस्र में राज करने वाले फिरौन के सामने पेश होता है। वह मिस्र की भूमि पर आई आपदाओं का सारांश और वर्णन करता है। हर जगह परेशानी है। वहाँ डकैती है, क्रांति है, विदेशी आ गए हैं, नील नदी के किनारे बह गए हैं, महिलाएँ गर्भधारण नहीं कर पाती हैं, सबके कपड़े गंदे हैं, पानी की कमी है, ज़मीन उजाड़ है, बहुत कष्ट है, भूमिका उलट गई है समझ में आता है कि जिन लोगों के पास गुलाम थे वे अब स्वयं गुलाम बन गए हैं, अमीर लोग अब गरीब हैं, गरीब लोग अब अमीर हैं, जिनके पास सुंदर कपड़े थे वे अब चिथड़ों में हैं, जिनके पास कोई कपड़े नहीं थे उनके पास अब बढ़िया लिनन है और इसी तरह। तो, आप कह सकते हैं, मिस्र में बहुत उथल-पुथल मची हुई है।

यदि आप उस पहले पृष्ठ, दूसरे कॉलम, ठीक शीर्ष पर देखें, तो आप देखेंगे "हर जगह डकैती है। वास्तव में नील नदी में बाढ़ क्यों है? क्यों सच में महिलाएं सूख जाती हैं और कोई गर्भधारण नहीं कर पाती। वास्तव में गरीबों की संपत्ति और खजाना क्यों बन गया है।" पृष्ठ के नीचे जाएँ, "वास्तव में पूरे देश में गंदगी क्यों है।" अंतिम पैराग्राफ के आगे, "बाहर से बर्बर लोग मिस्र आए हैं।" इसलिए वह मिस्र में इस स्थिति का वर्णन करता है और एक संक्षिप्त खंड के बाद जिसमें इपुवर फिरौन और उसके दर्शकों को एक बेहतर अतीत की याद दिलाता है। दूसरे शब्दों में, चीज़ें हमेशा इतनी बुरी नहीं थीं, हालाँकि अभी वे बहुत खराब हैं।

2. कथित "मसीहानिक" भविष्यवाणी पाठ और उसका अनुवाद

फिर पाठ में एक विराम के बाद जहाँ यह बताना कठिन है कि संबंध क्या है, आप एक ऐसे खंड में आते हैं जिसे कुछ लोग मसीहाई भविष्यवाणी कहेंगे। वह पृष्ठ 443 पर है, 2 पृष्ठ अधिक। पहले कॉलम के नीचे, आप उन सभी को देखते हैं, पहले कॉलम के मध्य के बारे में, आप प्रत्येक पैराग्राफ को याद रखें, याद रखें, याद रखें, याद रखें से शुरू होते हुए देखते हैं, जो कि बहुत बेहतर अतीत को याद कर रहा है। लेकिन एक अंतराल के बाद उस पहले कॉलम का आखिरी पैराग्राफ कहता है, "ऐसा आएगा कि वह दिल को ठंडक पहुंचाएगा। लोग कहेंगे, वह तो सब मनुष्यों का चरवाहा है, उसके मन में कोई बुराई नहीं। वे झुंड छोटे हो सकते हैं, फिर भी उसने उनकी देखभाल में दिन बिताया है, चाहे वह पहली पीढ़ी से उनके चरित्र को समझ सके, फिर वह बुराई को हरा देगा, वह उसके खिलाफ हाथ बढ़ाएगा, वह

बीज को नष्ट कर देगा वहाँ और उनके उत्तराधिकारियों के।" ऐसा लगता है कि इपुवर जो कर रहा है वह एक आदर्श राजा के बारे में बात कर रहा है। प्रश्न संदर्भ में है, और यह संदर्भ में बहुत स्पष्ट नहीं है: क्या यह अतीत का एक आदर्श राजा है, या यह भविष्य का राजा है? कथन के चारों ओर पाठ में अंतराल के कारण उस प्रश्न का उत्तर आसानी से नहीं दिया जा सकता है।

इस पाठ के तीन प्रमुख प्रकाशित मान्यता प्राप्त अनुवाद हैं, दो अंग्रेजी में और एक जर्मन में। जर्मन में, एक वॉल्यूम है जो अंग्रेजी *एंशिंट नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्स के समतुल्य है*, और इसका संक्षिप्त रूप *एओटीपी* है, जो कि *प्राचीन ओरिएंटल टेक्स्ट्स एंड पिक्चर्स* है, यही *एओटीपी* है। यह पाठ का मानक जर्मन अनुवाद है; यह रांके नाम के एक व्यक्ति द्वारा है। आप जो अनुवाद देख रहे हैं वह प्रिचर्ड का *एन्शिंट नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्स (एएनईटी)* द्वारा किया गया अनुवाद है, जिसका अनुवाद जॉन विल्सन नाम के एक मिस्रविज्ञानी ने किया है, जिसका नाम शुरुआत में है। *कॉन्टेक्ट ऑफ स्क्रिप्चर* नामक खंड में अंग्रेजी में तीसरा अनुवाद है। जो 1997 में प्रकाशित प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों का तीन खंडों वाला संग्रह है, जिसका वास्तव में *धर्मग्रंथ के संदर्भ* में प्राचीन ग्रंथों का संग्रह होने का इरादा है। इसका उद्देश्य प्रिचर्ड के *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों* का अद्यतनीकरण करना है। दूसरे शब्दों में, यह प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों का एक नया प्रकाशित संग्रह है, जिसमें उन सभी ग्रंथों के नए अनुवाद शामिल हैं। *एंशिंट नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्स* 1950 के दशक में प्रकाशित हुआ था, मेरा मानना है कि तारीख के लिए आपको अपनी ग्रंथ सूची देखनी होगी, लेकिन यह अंग्रेजी ग्रंथों का एक नया संग्रह है। ब्रिल द्वारा प्रकाशित *स्क्रिप्चर के संदर्भ* में "एडमोनिशन्स ऑफ इपुवर" का अनुवादक शुपाक नाम का एक व्यक्ति है।

तो आपके पास इस पाठ के 3 मान्यताप्राप्त प्रमुख अनुवाद हैं। अब यदि आप अनुवादों की तुलना करते हैं तो आप पाएंगे कि विल्सन ने इस खंड का अनुवाद किया है जिसे हमने देखा था, उस पहले कॉलम के नीचे, भविष्य काल में, "ऐसा आएगा कि वह दिल पर ठंडक लाएगा।" आप फुटनोट 36 में देखते हैं, जो उस पैराग्राफ के शुरू होने से ठीक पहले है, विल्सन कहते हैं, "कमियों के संदर्भ में, एक नए विषय में बदलाव है। दुर्भाग्य से, हम इस

तर्क के बारे में निश्चित नहीं हो सकते। इपुवर निश्चित रूप से आदर्श नियम का वर्णन कर रहा है। विकल्प हैं, ए, कि इस शासक को पाठ से शक्ति प्राप्त है, शायद सूर्य देव रे, या बी, कि मार्ग वास्तव में मसीहाई है, और इपुवर उस देव राजा की प्रतीक्षा कर रहा है जो मिस्र को उसके संकटों से मुक्ति दिलाएगा। ।" और फिर आप उनकी अगली टिप्पणी देखते हैं, "यह अनुवाद बाद का दृष्टिकोण अपनाता है।" दूसरे शब्दों में, विल्सन इसे भविष्य के रूप में अनुवाद करना चुनते हैं, यह भविष्य का एक देवता राजा है, एक मसीहा प्रकार का व्यक्ति है जो आने वाला है और पृथ्वी से बुराई को हटा देगा, बुराई को नष्ट कर देगा। बुराई उसके दिल में नहीं है।

अब यदि आप रैंके द्वारा जर्मन अनुवाद को देखें, तो रैंके भूतकाल को चुनता है। रैंके के अनुवाद में नोट में, वह कहते हैं कि अनुवाद पूरी तरह से निश्चित नहीं है, लेकिन यह निश्चित है कि इसका भविष्य नहीं होना चाहिए, "उन्होंने दिल पर ठंडक पहुंचाई थी।" ऐसा नहीं है कि वह लाता है या लाएगा, वह लाया था। यदि आप *धर्मग्रंथ के संदर्भ* में शुपाक अनुवादों को देखें, तो वह इसका अनुवाद भूतकाल में करते हैं, "उन्होंने हृदय पर पूर्णता ला दी है" और अपने नोट में वे कहते हैं, "निम्नलिखित खंड बहुत समस्याग्रस्त है और इस पर विस्तार से चर्चा की गई है अनुसंधान के क्षेत्र में। विद्वानों की राय इस बात पर विभाजित है कि क्या हम यहां रे की ओर निर्देशित आलोचना से निपट रहे हैं या आदर्श मुक्तिदाता के वर्णन से। तो, वह चर्चा जारी है, विल्सन और आपके द्वारा रिकॉर्ड किए गए अनुवाद सहित कुछ ने इसे भविष्य के रूप में अनुवादित किया है और इसे भविष्य के मसीहा उद्धारकर्ता के संदर्भ के रूप में देखते हैं। जो लोग इसका इस तरह अनुवाद करते हैं, वे कहते हैं कि जैसे इज़राइल के पैगंबर ने आने वाले मसीहा का वर्णन किया है, वैसे ही यहां आप इस मिस्र के पाठ में, एक आने वाले उद्धारकर्ता के विचार के साथ, एक मसीहाई भविष्यवाणी पाते हैं।

3) इपुवर का विश्लेषण

कुछ टिप्पणियाँ: मुझे लगता है कि यदि आप इन दो पाठों को तैयार करना शुरू करना चाहते हैं, तो आपको शुरुआत करनी होगी और यह पहचानना होगा कि पहले और बाद में अंतराल के कारण यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि इस पाठ में क्या हो रहा है, इसलिए यह संदिग्ध है कि क्या तथाकथित संदेशवाहक अनुभाग पाठ के एक विचार के रूप में,

भविष्य की बात भी कर रहा है। दूसरे, भले ही यह भविष्य के बारे में बात कर रहा हो, फिर भी पुराने नियम की मसीहाई अवधारणा और हमने यहां इपुवर में जो पाया है, उसके बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं। पुराने नियम में, आने वाला राजा अपने लोगों को ईश्वर की संगति में लाएगा और पूरी पृथ्वी पर शांति और सद्भाव बहाल करेगा। पुराने नियम में वह मसीहाई दृष्टि एक सार्वभौमिक स्थिति की भविष्यवाणी करती है, जहां शेर मेमने के साथ लेटे हुए होगा और तलवारें हल के फालों में टकराएंगी और उस तरह की सार्वभौमिक युगांतवादी दृष्टि आध्यात्मिक वास्तविकताओं में निहित है। इसमें से कुछ भी आपको यहां नहीं मिलता है, न ही आप इसे बाइबिल से परे साहित्य में कहीं और पाते हैं।

एक और बात है जो कभी-कभी इस पाठ के साथ कही जाती है, हालाँकि दुर्भाग्य से विल्सन के अनुवाद में इसे शामिल भी नहीं किया गया है। यदि आप दूसरे कॉलम के शीर्ष पर जाते हैं, तो आप फुटनोट 38 को उस पहले पैराग्राफ के ठीक अंत में देखेंगे, विल्सन कहते हैं, "एक अस्पष्ट अनुभाग में, यहां छोड़ दिया गया है, इपुवर दूसरे व्यक्ति एकवचन का उपयोग करता है। जैसा कि नाथन ने डेविड से कहा, 'तू ही आदमी है,' इसलिए इपुवर अंततः फिरौन को संबोधित कर रहा होगा और मिस्र के संकटों की जिम्मेदारी सीधे राजा पर डाल रहा होगा जैसा कि निम्नलिखित संदर्भ में संकेत दिया गया है। तो, किसी ने कहा, "यह वैसा ही है जैसा हम पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं को करते हुए पाते हैं, नाथन से डेविड, 'तू ही आदमी है', यहां इपुवर फिरौन से कह रहा है, 'तू ही आदमी है।' तुम्हारे कारण ही देश में इतनी परेशानी है।" लेकिन फिर, यह एक ऐसा खंड है जो पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है, और वास्तव में विल्सन कहते हैं, "एक अस्पष्ट खंड, यहां छोड़ दिया गया है," इसलिए यदि आप इसे पूरी तरह से बनाने जा रहे हैं, तो ऐसा लगता है कि यह बिल्कुल भी नहीं है ठोस आधार और इसके अलावा, भले ही वह राजा पर जिम्मेदारी डालता है, इतिहास के माध्यम से भगवान की उद्देश्यपूर्ण और संप्रभु दिशात्मक भूमिका का कोई संकेत नहीं मिलता है।

बी) नेफ़रोहू की भविष्यवाणी

1. पाठ सारांश और डेटिंग

यह मिस्र की पहली उपमा है; यदि आप अगले पृष्ठ पर जाएंगे तो दूसरा "नेफ़र-रोहू की भविष्यवाणी" है। विल्सन का शीर्षक है, "नेफ़र्टी की भविष्यवाणी।" नेफ़र्टी और नेफ़र-रोहू एक ही हैं, आप फुटनोट 1 पर ध्यान दें, "नेफ़र्टी। यह अनुवाद मिस्र के भविष्यवक्ता के लिए नेफ़र-रोहू के अब के पारंपरिक नाम को बरकरार रखता है, भले ही पॉस्टर ने यह सुनिश्चित करने के लिए साक्ष्य प्रस्तुत किया है कि किसका नाम लिखा जाना है, उसका नाम कैसे पढ़ा जाए, इस पर कुछ असहमति है। लेकिन यह एक और पाठ है जिसमें कुछ लोग इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के साथ समानता पाते हैं और जो कुछ लोग मिस्र में पुराने साम्राज्य के पूर्ण होने और अमेनेमेट प्रथम के तहत हताशा की भविष्यवाणी के रूप में देखते हैं, उससे संबंधित है।

यह भविष्यवाणी नेफ़र्टी या नेफ़र-रोहू नामक व्यक्ति ने की है। अमेनेमेट I का समय लगभग 1910 ईसा पूर्व का है। इस पाठ के अनुसार, स्नेफ़ू, आप उसका नाम दूसरी पंक्ति में देखते हैं, "अब यह ऊपरी निचले मिस्र के राज्य की महिमा हुई, विजयी स्नेफ़ू इस पूरे ग्रह का शानदार राजा था।" स्नेफ़ू - जो मिस्र का बहुत प्रारंभिक शासक था, मुझे लगता है कि यह 2650 है - ने मिस्र की राजधानी, मिस्र में नगर परिषद से पूछा, क्या उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो उनका मनोरंजन कर सके जिसे वह "अच्छे शब्दों और अच्छी तरह से" कहते हैं। चुने हुए भाषण," अपने मनोरंजन के लिए किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहे थे, जो अच्छा बोल सके। उन्हें नेफ़र-रोहू का नाम दिया गया है, जो बास्टेट के पुजारी थे। बासेट बछड़े की देवी थी।

इसलिए, उसे नेफ़र-रोहू का नाम दिया गया है, उसने आदेश दिया है कि नेफ़र-रोहू को अदालत में लाया जाएगा, और आप पाएंगे कि यदि आप पृष्ठ 444 पर दूसरे कॉलम में जाते हैं, "तब उसकी महिमा जीवन, समृद्धि के साथ सिखाई जाती है, स्वास्थ्य ने कहा, 'हे मेरी प्रजा, देख, मैं ने तुझे बुलाया है, कि तू मेरे लिये एक ऐसा पुत्र ढूंढ़े जो बुद्धिमान हो, या तेरा कोई भाई जो विश्वासी हो, या तेरा कोई मित्र जो अच्छा काम करता हो एक अच्छा काम, जो मुझसे कह सकता है, कुछ अच्छे शब्द या अच्छे भाषण जिन्हें सुनकर मेरी महिमा का मनोरंजन हो सके। तो आप देखिये कि वह यही चाहता है।

अगले पैराग्राफ के मध्य में, "बास्टेट का एक महान व्याख्याता-पुजारी एक संप्रभु शासक जिसका नाम नेफर-रोहू है, वह एक ऐसा व्यक्ति है।" तो अगला पैराग्राफ, "उसे उसमें प्रवेश कराया गया," वह मिस्र का राजा है। "तब उनकी महिमा, जीवन, समृद्धि, स्वास्थ्य," - हर बार जब आप राजा को संबोधित करते हैं तो आपको जीवन, समृद्धि स्वास्थ्य भी कहना पड़ता है - "कहा, 'महान नेफर-रोहू आओ, जो, मेरे दोस्त, कि तुम मुझसे कह सको कुछ अच्छे शब्द और बेहतरीन भाषण, जिन्हें सुनकर मेरे महामहिम का मनोरंजन हो सके।'" फिर व्याख्याता-पुजारी, नेफर-रोहू, जिन्होंने कहा, "जो पहले ही हो चुका है या जो होने वाला है, उसके बारे में, संप्रभु, जीवन, समृद्धि, स्वास्थ्य?" तब महामहिम ने कहा, जीवन, समृद्धि, स्वास्थ्य, 'क्या होने वाला है।' इसलिए वह इस बारे में कुछ भाषण चाहता है कि भविष्य में क्या होने वाला है और जब नेफर-रोहू बोलना शुरू करता है तो वह भविष्य के बारे में बात नहीं करता है, वह फिर से भूमि की स्थितियों और भूमि की आपदाओं का वर्णन करता है।

यदि आप पृष्ठ 445 पर जाते हैं, तो आप दूसरे पैराग्राफ में देखते हैं, "यह भूमि इतनी क्षतिग्रस्त है कि कोई भी इससे चिंतित नहीं है, कोई बोलने वाला नहीं है, सूर्य डिस्क ढकी हुई है।" और फिर उस पैराग्राफ के अंत में अगली पंक्ति, "मैं उस व्यक्ति के बारे में बात करूंगा जो मेरे सामने है। जो अभी तक नहीं आया है मैं उसकी भविष्यवाणी नहीं कर सकता।" तो यहाँ यह आदमी है जिसे राजा का मनोरंजन करने के लिए लाया गया है और राजा कहता है कि वह जानना चाहता है कि भविष्य में क्या होने वाला है, और नेफर-रोहू कहता है, "मैं ऐसा नहीं कर सकता।" हालाँकि, वह अंततः दूसरे कॉलम के अंत में, पृष्ठ 445 पर, अंतिम पैराग्राफ में कहता है, कि "एक राजा आएगा, जो दक्षिण से होगा। उसके नाम पर कई लोग विजय प्राप्त करेंगे, वह नूबिया देश की एक महिला का बेटा है, वह ऊपरी मिस्र में पैदा हुआ है, वह सफेद मुकुट लेगा, वह लाल मुकुट पहनेगा, वह दो शक्तिशाली लोगों को एकजुट करेगा। वह दोनों प्रभुओं को उनकी इच्छा से संतुष्ट करेगा।" अगले पैराग्राफ के मध्य में, "एशियावासी तलवारों से गिरेंगे, लीबियाई लोग तलवारों से गिरेंगे इत्यादि।" तो वह इस अमेनी के बारे में बोलता है जो आएगा, और अमेनी और अधिकांश लोग इसे अमेनेमेट साम्राज्य

समझते हैं। लेकिन वह स्नेफू के काफी समय बाद 1910 में आये और मिस्र, ऊपरी और निचले मिस्र के राज्यों को एकजुट किया।

इस पाठ के बारे में क्या? अपने उद्धरण पृष्ठ 5 को देखें, पृष्ठ के मध्य में, *माई सर्वैट्स द प्रोफेक्ट्स में ईजे यंग का एक पैराग्राफ है*। वह कहते हैं, "किसी को इस पाठ में गंभीरता की घोर कमी पर ध्यान देना चाहिए। राजा केवल मनोरंजन की तलाश में है, और इसलिए वह भविष्य के बारे में सूचित होना चाहता है। नेफर-रोहू भविष्यवक्ता होने का कोई दिखावा नहीं करता; वास्तव में, वह स्पष्ट रूप से यह भी कहता है कि वह भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर सकता। इसके अलावा, पाठ में कहा गया है कि यह नेफर-रोहू के संदेश से निपट रहा है, क्योंकि वह इस बात पर विचार कर रहा था कि देश में क्या होगा। दूसरे शब्दों में, संदेश प्रकट नहीं है, न ही ऐसा होने की सूचना है। यह प्राचीन दुनिया की कई "भविष्यवाणियों" वाली कक्षा में है, और पुराने नियम की भविष्यवाणियों से बहुत दूर है। सो यंग पाठ में गंभीरता की कमी की ओर इशारा करते हैं।

2. वेटिसिनियम पूर्व घटना लेकिन यहां एक और मुद्दा शामिल है। यह पाठ की प्रामाणिकता का ही प्रश्न है। यदि आप अपने उद्धरणों में उसी पृष्ठ को देखते हैं, तो आईएसबीई, *इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबिल इनसाइक्लोपीडिया* में "पैगंबर" पर लेख में जीडी स्मिथ क्या कहते हैं, वे कहते हैं, "नेफर-रोहू की भविष्यवाणी" यह बताने का इरादा रखती है कि फिरौन स्नेफू कैसे चौथे राजवंश का मनोरंजन एक भविष्यवक्ता ने किया था जिसने भविष्यवाणी की थी कि अराजकता जल्द ही मिस्र पर हावी हो जाएगी, लेकिन जब नूबिया के अमेनी (12वें राजवंश के पहले राजा, आमीन-एम-हेप प्रथम का एक संदर्भ) राजा बने तो वह व्यवस्था और न्याय फिर से स्थापित हो जाएगा। . तथाकथित भविष्यवाणी निस्संदेह आमीन-एम-हेप प्रथम के शासन का समर्थन करने के लिए राजनीतिक प्रचार के रूप में लिखी गई थी। दूसरे शब्दों में, प्रश्न यह है कि पाठ की तारीख के बारे में क्या? ऐसा माना जाता है कि यह स्नेफू के समय का है, 2650 ईसा पूर्व यह लगभग 1900 की घटनाओं का वर्णन करता है, अगर यह अमेनेमेट के बारे में बात कर रहा है। हालाँकि, पाठ की सबसे पुरानी प्रतियाँ लगभग 1450 की हैं। दूसरे शब्दों में, जहाँ तक भविष्यवाणी की बात है, उस समय से पाँच

शताब्दी बाद की बात कही जा रही है।

यदि आप अपने उद्धरणों के पृष्ठ 5 पर दूसरे पैराग्राफ पर जाते हैं, तो विलियम एफ. अलब्राइट की *द स्टोन एज टू क्रिस्चियनिटी* इस पाठ के बारे में कहती है, "कुछ हद तक बाद में नेफ़र-रोहु की भविष्यवाणी है, जो सबसे पुराने निश्चित उदाहरण के रूप में बेहद दिलचस्प है एक *वेटिकिनियम पूर्व घटना*। यह एक लैटिन वाक्यांश है जिसका अर्थ है "घटनाओं से बोलना।" दूसरे शब्दों में, आप जो भी बात कर रहे हैं उसके समय के बाद कुछ कह रहे हैं, लेकिन कथित तौर पर उस समय से पहले बोल रहे हैं जब वह घटित हुआ था। यह स्नेफ़ू के शासनकाल की तारीख बताता है, लेकिन छह शताब्दियों के बाद 12वें राजवंश के संस्थापक अमेनी के शासनकाल का कुछ विस्तार से वर्णन करता है। लेकिन यह घटना से पहले की बजाय घटना के बाद बोल रहा है। इसलिए कई लोग इसकी प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हैं। क्या यह वास्तव में अमेनेमेट की भविष्यवाणी है या यह अमेनेमेट के समय के बाद लिखा गया राजनीतिक प्रचार है, जो उसके शासन को ऊपर उठाने की कोशिश कर रहा है? यह निश्चित रूप से एक बहुत ही वैध प्रश्न है। लेकिन वे मिस्र के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से दो हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि उनमें कुछ वैसा ही है जैसा हम पुराने नियम में भविष्यवाणी के उद्देश्य में पाते हैं।

सी. कनानी उपमाएँ

1. डेटा की कमी

आइए कनानी उपमाओं पर चलते हैं। कनानियों के बीच इज़राइल की भविष्यवाणी के लिए उपमाएँ खोजने का काफी प्रयास किया गया है। एक छोटी सी समस्या है। अब तक कोई नहीं मिला। हमारे पास कनान भूमि से बहुत सारे ग्रंथ नहीं हैं। हमारे पास धार्मिक प्रकार के ग्रंथों का निकटतम स्थान

फोनीशियन तट पर उगारिट के रास शामरा ग्रंथ हैं। लेकिन वहां भी आपके पास इज़राइल में पैगम्बरवाद के अनुरूप कुछ भी नहीं है। इसके बावजूद, यदि आप साहित्य को देखें, तो ऐसे कई विद्वान हैं जो इस बात से सहमत हैं कि कनान की भूमि को इज़राइल में पैगम्बरवाद का

उद्गम स्थल माना जाना चाहिए, कि यह उन संपर्कों से बाहर रहा होगा जो इज़राइलियों ने इस भूमि में बनाए थे। कनान में पैगम्बरवाद को जन्म दिया गया।

आपके उद्धरणों में, पृष्ठ 5 के नीचे से लेकर पृष्ठ 6 तक, अब्राहम कुएनन ने 1800 के दशक के उत्तरार्ध के एक खंड में इस पर चर्चा की, जिसे हाल ही में पिछले 15 वर्षों में पुनः प्रकाशित किया गया था, इसलिए यह अभी भी बहुत कुछ संदर्भित है। अब्राहम कुएनन पिछले ग्राफ-कुएनन-वेलहौसेन सिद्धांत के वही कुएनन हैं, इसलिए बाइबिल के ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण विश्लेषण के उस पूरे काल में आप सही हैं। कुएनन कहते हैं, "निश्चित रूप से यह बहुत वांछनीय होगा कि हम इस जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर निश्चितता के साथ बोलने में सक्षम हों। लेकिन ऐतिहासिक विवरण के अभाव में, हमें संभावित अनुमानों पर ही संतोष करना चाहिए... वे हमें इज़राइल में भविष्यवाणी की पहली उपस्थिति का संतोषजनक विवरण देते हैं। इसलिए वह कनानी उपमाओं की तलाश कर रहा है और उसे कोई नहीं मिल रहा है। इसलिए उनका कहना है कि हमें संभावित अनुमान से संतुष्ट रहना होगा और उस संभावित अनुमान की सराहना की जानी चाहिए क्योंकि "यह हमें इज़राइल में भविष्यवाणी की पहली उपस्थिति का संतोषजनक स्पष्टीकरण प्रदान करेगा।" वे कनानियों में से आये होंगे। अब 1800 के उत्तरार्ध से 1900 के उत्तरार्ध के कुएनन को अद्यतन करने के लिए, गेरहार्ड वॉन रैड ने अपने *ओल्ड टेस्टामेंट थियोलॉजी* में क्या कहा, इसे देखें। "ग्यारहवीं शताब्दी के सीरिया और फ़िलिस्तीन में, एक उन्मादी और उन्मत्त आंदोलन के उदय के संकेत हैं जिनकी उत्पत्ति स्पष्ट रूप से उस क्षेत्र के बाहर है, और शायद थ्रेस और एशिया माइनर के उन्मत्त में निहित है।" अगली पंक्ति पर ध्यान दें. "तो फिर, कनानी धर्म वह माध्यम रहा होगा जिसके द्वारा यह आंदोलन इज़राइल में आया। इसके प्रकट होने के सबसे पुराने पुराने नियम के साक्ष्य दरवेश जैसे उत्साही लोगों के वृत्तांत हैं जो समय-समय पर भूमि पर ऊपर-नीचे उभरते थे, संभवतः स्थापित इज़राइली किसानों द्वारा उन पर सवाल उठाए जाते थे। अब वह वहां जिस बारे में बात कर रहा है, "दरवेश जैसे उत्साही," क्या ये भविष्यवक्ताओं की कंपनियां हैं? याद कीजिए जब शाऊल भविष्यवक्ताओं के एक समूह से मिला और उनके पास संगीत वाद्ययंत्र थे और वे भविष्यवाणी कर रहे थे और शाऊल उनके साथ चल रहा था और

भविष्यवाणी कर रहा था। इस प्रकार का असामान्य व्यवहार, आप मेसोपोटामिया, एशिया माइनर के आनंद से, उस आनंदमय आंदोलन से प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं जिसे वॉन रैड और अन्य लोग इज़राइल में कुछ इसी तरह पाते हैं और आप उन कड़ियों को बनाने जा रहे हैं, बिंदुओं को जोड़ रहे हैं। कनान वह स्रोत रहा होगा जहां से इस घटना का परिचय इस्राएलियों को हुआ था, जब वे कनान देश में बस गए थे।

2) 1 किलोग्राम 18:19: अहाब, एलिजा और माउंट कार्मेल पर बाल के पैगंबर

अब यह विचार कि कनानियों के धर्म में भविष्यवक्तावाद जाना जाता था, इस स्थिति के लोगों के लिए फीनिशियनों के बारे में जो कुछ हम जानते हैं, उनकी धार्मिक प्रथाएं, संभवतः कनानियों के समान थीं, को मजबूत किया गया है। फर्स्ट किंग्स 18:19 इस नए बिंदु के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ बन जाता है। यह अहाब और इज़ेबेल का समय है। आपने 1 राजा 18:19 में पढ़ा, एलिय्याह ने कहा, “पूरे इस्राएल से लोगों को कार्मेल पर्वत पर मुझसे मिलने के लिए बुलाओ। बाल के 450 नबियों और अशेरा के 400 नबियों को लाओ, जो ईज़ेबेल की मेज पर खाते हैं।” इज़ेबेल वह फ़ोनीशियन महिला थी जिसका विवाह अहाब से हुआ था, जिसने बाल और अशेरा के नबियों को इज़राइल में आयात किया था। एलिय्याह वहाँ यहोवा के नाम पर अहाब और बाल के नबियों को चुनौती दे रहा है, और आप कार्मेल पर्वत पर उस टकराव की कहानी से परिचित हैं।

यदि आप उस अध्याय में और नीचे जाते हैं, तो श्लोक 27 को देखें। “दोपहर के समय एलिय्याह ने उन्हें चिढ़ाना शुरू कर दिया। ‘जोर से चिल्लाओ,’ उसने कहा। ‘निश्चय ही वह एक देवता है। शायद वह किसी गहरे विचार में है, या व्यस्त है, या यात्रा कर रहा है। शायद वह सो रहा है और उसे जगाया जाना चाहिए,” बाल का जिक्र करते हुए। “इसलिए वे ऊंचे स्वर से चिल्लाने लगे, और अपनी रीति के अनुसार तलवारों और भालों से अपने आप को तब तक घायल करते रहे जब तक कि उनका खून बहने न लगा। दोपहर बीत गई और उन्होंने अपना काम जारी रखा”—एनआईवी का कहना है—“उन्मत्त भविष्यवाणी करना।” अब यह क्रिया *नबा का एक रूप है*, भविष्यवाणी करने के लिए, “शाम के बलिदान के समय तक।” तो यहाँ आपके पास बाल के ये भविष्यवक्ता किसी प्रकार की उन्मादी अवस्था में वेदी के चारों ओर

नृत्य कर रहे हैं, खुद को काट रहे हैं, अपने देवता को पुकार रहे हैं, और यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द यह है कि वे "भविष्यवाणी" कर रहे थे। लेकिन वे वास्तव में क्या कर रहे थे? क्या उन्हें बाल से कोई संदेश मिल रहा था? ऐसा प्रतीत नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे भविष्यवाणी करना शुरू कर देंगे, जो किसी प्रकार के अत्यंत असामान्य व्यवहार का वर्णन है। परमानंदपूर्ण व्यवहार, यदि आप किसी प्रकार के उस शब्द का उपयोग करना चाहते हैं।

3. वेनामेन से फोनीशिया तक की यात्रा

मिस्र का एक और पाठ है जो मैंने आपको पिछले सप्ताह भी दिया था। इसे कहा जाता है, "द जर्नी ऑफ वेनामेन टू फेनिशिया।" यह पाठ वेनामेन नाम के एक व्यक्ति की यात्रा के बारे में बताता है जो मिस्र का पुजारी था। वह मिस्र के देवता आमोन-रे के लिए एक बजरा या नाव के निर्माण के लिए लकड़ी खरीदने के लिए मिस्र से फेनिशिया गया था। वह बजरा जहाज रूपी देवता का सिंहासन होना था। वह इस लकड़ी को खरीदने के लिए फेनिशिया में बायब्लोस के राजा के पास जाता है और जो कीमत वह चुकाना चाहता था वह स्वीकार्य नहीं थी। बाइब्लोस के राजा ने उसे मिस्र वापस जाने के लिए कहा, क्योंकि शिपिंग की लागत के कारण वह इसे तुरंत नहीं भेज सका। लेकिन बायब्लोस के राजा को इस लकड़ी को वेनामेन को बेचने के बारे में अपना मन बदलना पड़ा जब उन्हें एक परमानंद से एक संदेश मिला। यदि आप पृष्ठ 18 पर जाएं, तो इस हैंडआउट का दूसरा पृष्ठ, आप पृष्ठ के मध्य के बारे में पढ़ते हैं, "बाइब्लोस के राजकुमार ने मुझे यह कहते हुए भेजा, 'मेरे बंदरगाह से बाहर निकल जाओ।' और मैं ने उसके पास कहला भेजा, कि मैं कहां जाऊं? तुम्हारे पास मुझे ले जाने के लिये एक जहाज है, उस पर मुझे फिर मिस्र ले चलो।' इसलिए मैंने उसके बंदरगाह में 29 दिन बिताए। इस दौरान वह हर दिन मुझे संदेश भेजता रहा और कहता रहा, 'मेरे बंदरगाह से बाहर निकल जाओ।' जब वह अपने देवताओं को भेंट चढ़ा रहा था, तब परमेश्वर ने उसके एक जवान को पकड़कर अपने वश में कर लिया, और उस से कहा, परमेश्वर को ऊपर ले आ। उस दूत को ले आओ जो उसे ले जा रहा है। आमोन ही वह है जिसने उसे बाहर भेजा था। वह वही है जिसने उसे आने के लिए प्रेरित किया।' और जब इस रात को वह जुनूनी युवक अपने उन्माद में था, मैंने पहले ही जहाज को मिस्र की ओर जाते हुए देख लिया था और अपना

सब कुछ उसमें लाद दिया था। जब मैं अँधेरे का इंतज़ार कर रहा था, सोच रहा था, “जब यह उतरेगा तो मैं भगवान पर भी सवार हो जाऊँगा, ताकि कोई और आँख न देख सके। बंदरगाह का मालिक कहने आया, 'सुबह तक प्रतीक्षा करो, ऐसा राजकुमार कहता है।' तो मैंने उससे कहा, 'क्या तुम वही नहीं हो जो हर दिन मेरे पास आकर यह कहते हुए समय बिताता था, "मेरे बंदरगाह से बाहर रहो?" जबकि वह कहता है, "सुबह तक प्रतीक्षा करें।" अंत में एक समझौता हुआ और लकड़ी बेच दी गई।

लेकिन यहां जो बात कही गई है वह यह है कि इस कहानी में, आपके पास एक उदाहरण है जिसे कुछ लोग भविष्यसूचक उन्माद कहते हैं। यहाँ यह युवक है जो देखता है और जब वह वशीभूत होता है तो वह बायब्लोस के राजा को यह संदेश देता है कि वह मिस्र के इस पुजारी के साथ यह सौदा करे। तो आपको इस पाठ, "वेनामेन की यात्रा" में भविष्यसूचक उन्माद का संदर्भ मिलता है। आप इसे 1 राजा 18 में बाल के भविष्यवक्ताओं के व्यवहार के साथ जोड़ते हैं और फिर इसे शमूएल के समय में भविष्यवाणियों के बैंड के साथ जोड़ते हैं। जो निष्कर्ष निकाला गया वह यह है कि इज़राइल में उत्पन्न हुआ पैगम्बरवाद इस प्रकार की आनंदमयी घटना है। हमारे पास इसके सबूत हैं कि यह फोनीशिया, मेसोपोटामिया में संभवतः कनान में मौजूद था, कम से कम अहाब और इज़ेबेल के दरबार में बाल और अशेरा के पुजारी के साथ, और शमूएल के समय में भविष्यवक्ताओं की इन कंपनियों में। तो उस तरह के आधार पर यह कहा जाता है कि कनान को इज़राइल में भविष्यवक्ता का उद्गम स्थल होना चाहिए। चूँकि सैमुअल पैगम्बरों के इन उन्मादी समूहों का नेता था, इसलिए सैमुअल वह व्यक्ति है जिसने मूल रूप से इस बुतपरस्त घटना को इज़राइल के लिए अनुकूलित किया था। तो यही सिद्धांत है।

मुझे लगता है कि आप जो कह सकते हैं वह यह है कि यह काफी हद तक अटकलबाजी है, यह बहुत कम सबूतों पर आधारित है और निश्चित रूप से कनान धर्म के प्रति सैमुअल के मजबूत विरोध के साथ फिट नहीं बैठता है जैसा कि 1 सैमुअल के शुरुआती अध्यायों में दर्ज किया गया है। उसने इस्राएल से दूर चले जाने, उनके बाल देवताओं को नष्ट करने और यहोवा की आराधना करने को कहा। निश्चित रूप से वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जो

इस विवरण में फिट बैठता हो। लेकिन इसराइल में भविष्यवक्तावाद की उत्पत्ति खोजने का मामला इसी तरह बनाया गया है - इन प्रभावों और घटनाओं के आधार पर हम मेसोपोटामिया, मिस्र और कथित तौर पर कनानियों के बीच पाते हैं, हालांकि वहां सबूत वास्तव में अस्तित्वहीन है।

4 निर्णय

यह हमें 4., "निष्कर्ष" पर लाता है। मुझे ऐसा लगता है कि भले ही हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि, हां, इज़राइल के बाहर की भविष्यवाणी और इज़राइल में जो हम पाते हैं, उसके बीच कुछ औपचारिक समानताएं हैं, लेकिन जिसे मैं भौतिक पत्राचार कहूंगा, उसके क्षेत्र में बहुत कम तुलना की जा सकती है। औपचारिक पत्राचार के संदर्भ में, एक व्यक्ति जो दावा करता है कि उसके पास किसी देवता का संदेश है, वह आपको हर जगह मिलता है। जहाँ तक भौतिक पत्राचार की बात है, अर्थात्, इज़राइल के पैगम्बरों के संदेश और इज़राइल के बाहर इन पैगम्बरों द्वारा दिए गए बयानों के प्रकार के बीच पत्राचार, बहुत कम समानता है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि इज़राइल के बाहर की उपमाओं से इज़राइल के भविष्यवक्तावाद की उत्पत्ति को समझाने का प्रयास ठोस है।

बी. पैगंबरवाद की उत्पत्ति के लिए आंतरिक इज़राइली स्पष्टीकरण हमें इज़राइल में पैगंबरवाद की उत्पत्ति कहीं और तलाशनी चाहिए और यह हमें आपकी रूपरेखा पर बी. और सी. पर लाता है। बी है, "पैगंबरवाद की उत्पत्ति के लिए आंतरिक इज़राइली स्पष्टीकरण।"

1. इज़राइल की धार्मिक प्रतिभा 1., "इज़राइल की धार्मिक प्रतिभा।" कुछ लोगों का तर्क है कि इज़राइल का यह विशेष आध्यात्मिक झुकाव था। इस प्रकार, उसके कारण, उन्होंने धर्म का एक बहुत ही उच्च स्वरूप विकसित किया। ऐसा कुछ करने के लिए उनके पास एक विशेष उपहार था। धर्म के उस उच्च रूप में, उसका एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा, पैगंबरवाद था; यह इस धार्मिक प्रतिभा की एक अनिवार्य विशेषता है जो कुछ लोगों के पास थी। इसलिए

इज़राइल की धार्मिक प्रतिभा को ही इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति के स्पष्टीकरण के रूप में इस्तेमाल किया गया था। मुझे ऐसा लगता है कि वह स्पष्टीकरण इसराइल के इतिहास की वास्तविकता को पहचानने में विफल रहता है। यदि आप पुराने नियम को देखें, तो यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है। ऐतिहासिक रूप से, इज़राइल ने खुद को धर्म के उच्च स्वरूप के प्रति स्वाभाविक झुकाव वाले लोगों के रूप में नहीं दिखाया जो पैगम्बरों के संदेश में सन्निहित था। इसके विपरीत, इज़राइल का झुकाव आसपास के बुतपरस्त देशों की धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं का पालन करने का था। भविष्यवक्ता जिस चीज़ पर अपना भारी समय खर्च करते हैं, वह इज़राइल से उन बुतपरस्त देवताओं से दूर जाने और एक, जीवित और सच्चे ईश्वर की पूजा करने का आग्रह कर रहा है। तो, यह कहना कि इज़राइल की धार्मिक प्रतिभा ही इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति का स्पष्टीकरण है, वास्तव में इज़राइल के धार्मिक दृष्टिकोण और अभिव्यक्तियों के इतिहास में किसी भी आधार का अभाव है। आप कह सकते हैं कि इस्राएल के भविष्यवक्ता सांस्कृतिक विरोधी थे। वे अनाज के पार जा रहे थे, इस्राएल की ओर से भविष्यवक्ताओं के शब्दों को सुनने की कोई इच्छा नहीं थी, अधिक बार उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसलिए इज़राइल स्वयं पैगम्बरवाद की उत्पत्ति के लिए पर्याप्त व्याख्या नहीं है।

केवल समर्थन करने और कहने के बारे में क्या, "यह भविष्यवक्ताओं की धार्मिक चेतना है?" यदि पूरे राष्ट्र के पास धर्म के इस उच्च रूप को विकसित करने के लिए कोई विशेष उपहार नहीं था, जैसा कि हम पुराने नियम में पाते हैं, तो शायद कुछ व्यक्तिगत इस्राएलियों के पास वह उपहार था। वे ही हैं जिन्हें इज़राइल में पैगम्बरवाद का प्रवर्तक माना जाता है।

अब मुझे फिर से ऐसा लगता है कि आप तुरंत ही किसी समस्या में फंस जाते हैं। समस्या वह है जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, जो यह है: जब भविष्यवक्ता बोलते हैं, तो वे बहुत स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि वे जो बोलते हैं वह प्रभु की ओर से है, न कि उनके अपने शब्दों या विचारों से। वे वही बोलते हैं जो स्वयं ईश्वर उन्हें कहने के लिए बाध्य करते हैं। भगवान कहते हैं, "मैं अपने शब्द तुम्हारे मुँह में डालूँगा।" यह भविष्यवक्ता के शब्द

नहीं हैं, यह ईश्वर के शब्द हैं। वे जो सन्देश देते हैं वह उनका अपना सन्देश नहीं, ईश्वर का सन्देश है। इसलिए भविष्यवक्ता स्वयं अपनी स्वयं की गवाही में इस बात से स्पष्ट रूप से इनकार करते हैं कि "ईश्वर का वचन बोलना" नामक यह घटना कुछ ऐसी है जो स्वयं पैगंबर में मौजूद बातों से उत्पन्न होती है। यह कुछ ऐसा है जो उसे बाहर से आता है। इसलिए, पैगम्बरवाद की उत्पत्ति के लिए आंतरिक इज़राइली स्पष्टीकरण भी यह समझाने में विफल रहे कि यह घटना इज़राइल में क्यों उत्पन्न हुई।

सी. ओटी के गवाह के अनुसार इज़राइल में पैगम्बरवाद का मूल ईश्वर में पाया जाता है

जो हमें सी पर लाता है: "ओटी के गवाह के अनुसार इज़राइल में पैगम्बरवाद का मूल ईश्वर में पाया जाता है, और इसे ईश्वर के उपहार के रूप में देखा जाना चाहिए अपने लोगों के लिए।" मुझे ऐसा लगता है कि बाइबिल स्वयं इस स्पष्टीकरण का प्रतिनिधित्व करती है कि इज़राइल में पैगम्बरवाद क्यों उत्पन्न हुआ। अब मैं उस पर विस्तार से बात करना चाहता हूं, लेकिन हमें अगली बार ऐसा करना होगा।

केटी ब्रूस्टर

रफ द्वारा प्रतिलेखित, टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित, केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन, टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, भविष्यवाणी की नींव,

ओटी के अनुसार इज़राइल में व्याख्यान 6 पैगम्बरवाद

सी. इज़राइल में प्रारंभिक पैगम्बरवाद

हम "इज़राइल में प्रारंभिक पैगम्बरवाद" के अंतर्गत सी तक आ गए हैं। मैंने इसे ब्रेक से ठीक पहले पढ़ा, जिसका शीर्षक था "पुराने नियम के गवाहों के अनुसार इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति ईश्वर में हुई है और इसे ईश्वर की ओर से अपने लोगों के लिए एक उपहार के रूप में देखा जाना चाहिए।"

1. व्यवस्थाविवरण 18:9-22

आप वहां संदर्भ पर ध्यान दें, व्यवस्थाविवरण 18:9-22। मुझे लगता है कि हमें इस प्रस्ताव के संबंध में उस पाठ को थोड़ा और करीब से देखने की जरूरत है। व्यवस्थाविवरण 18:9-42 इस प्रश्न को संबोधित कर रहा है कि मूसा की मृत्यु के बाद इस्राएल को दिव्य मार्गदर्शन कहाँ मिलेगा। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक मूसा की मृत्यु से कुछ समय पहले मोआब के मैदानों पर वाचा के नवीनीकरण का दस्तावेजीकरण करती है। पुस्तक के अंत में, हमारे पास मूसा की मृत्यु का रिकॉर्ड है। मूसा भविष्यवक्ता रहा है, वह परमेश्वर और उसके लोगों के बीच मध्यस्थ रहा है और परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से उनसे बात की है। जब मूसा चला जाएगा तो क्या होगा? यहाँ इसी बात को संबोधित किया गया है।

एक। Deut. 18:9-14 पहली चीज़ जो आप पाते हैं वह यह है कि जब इज़राइल कनान देश में आता है, तो उन्हें कनान देश के निवासियों द्वारा की जाने वाली किसी भी प्रथागत चीज़ का अभ्यास करने के माध्यम से दिव्य रहस्योद्घाटन नहीं मिला। तो आप व्यवस्थाविवरण 18 के श्लोक 9-14 में ध्यान दें, "जब तुम देश में प्रवेश करो, तो वहां के राष्ट्रों के घृणित आचरण का अनुकरण करना मत सीखो। तुम में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे वा बेटे को आग में होम करता हो, वा टोना करता हो, शकुन निकालता हो, जादू टोना करता हो, वा जादू करता हो, जो ओझल या भूतसिद्धि करता हो, वा मुर्दों को सम्मति देता हो। जो कोई ये काम करता है

वह यहोवा की दृष्टि में घृणित है; इन घृणित कामों के कारण, तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को तेरे साम्हने से निकाल देगा।” इसलिये तुम्हें कनानियों की रीतियों का पालन नहीं करना चाहिए। परमेश्वर इस्राएल को कुछ बेहतर देगा और यह आप श्लोक 15 में पाते हैं। 14 में यह कहा गया है, “जिन राष्ट्रों को तुम बेदखल करोगे वे उन लोगों की सुनेंगे जो जादू-टोना या भविष्यवाणी करते हैं। परन्तु जहां तक तुम्हारी बात है, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी है। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे लिये तुम्हारे भाइयोंमें से मुझ [मूसा] के समान एक भविष्यद्वक्ता खड़ा करेगा। आपको उसकी बात जरूर सुननी चाहिए. क्योंकि होरेब में सभा के दिन जब तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा से यह पूछा था, कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का शब्द न सुनें, वा उसकी बड़ी आग न देखें, नहीं तो हम मर जाएंगे। प्रभु ने मुझसे कहा, 'वे जो कहते हैं वह अच्छा है। मैं उनके लिये उनके संगी इस्राएलियों में से तेरे समान एक भविष्यद्वक्ता खड़ा करूंगा, और अपने वचन उसके मुंह में डालूंगा। वह उन्हें वह सब कुछ बताएगा जो मैं उसे आदेश दूंगा।" इसलिए मुझे लगता है कि संदर्भ में यह स्पष्ट है कि श्लोक 15-19, मैंने 19 तक पूरा नहीं पढ़ा, लेकिन श्लोक 15-19 इज़राइल को बताता है कि उन्हें अपना मार्गदर्शन कहाँ प्राप्त करना है। यह कनानी लोगों द्वारा किये गये कार्यों से नहीं है। यह उसी माध्यम से होगा जो मूसा के माध्यम से आया था।

बी) देउत। 18:20-22 छंद 20-22 एक और प्रश्न उठाता है, और वह है झूठे भविष्यवक्ताओं को सुनने का खतरा जो भगवान के लिए नहीं बोल रहे हैं, और संबंध में, झूठे भविष्यवक्ता को पहचानने का एक तरीका देना। देखें आयत 20 कहती है, “परन्तु जो भविष्यद्वक्ता मेरे नाम से ऐसी कोई बात कहने का साहस करे जिसे मैं ने उसे कहने की आज्ञा न दी हो, या जो भविष्यद्वक्ता दूसरे देवताओं के नाम से बोलता हो, वह अवश्य मार डाला जाए। आप अपने आप से कह सकते हैं, 'हम कैसे जान सकते हैं कि कोई संदेश प्रभु द्वारा नहीं कहा गया है?'” श्लोक 22 यह निर्धारित करने का एक साधन देता है, "यदि भविष्यवक्ता प्रभु के नाम पर जो घोषणा करता है वह पूरा नहीं होता है या सच हो, यह एक संदेश है जिसे प्रभु ने नहीं कहा है। उस भविष्यवक्ता ने अभिमान से कहा है, इसलिये घबराओ मत।” मैं झूठे

भविष्यवक्ताओं की इस पूरी बात पर वापस आना चाहता हूं। वह तो एक ही है। ऐसे अन्य तरीके हैं जिनका उपयोग इस्राएली सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर करने के लिए कर सकते हैं। लेकिन छंद 9 से 22 में इस मार्ग का केंद्रीय भाग यह है कि आपको कनानियों के तरीकों का पालन नहीं करना है, आपको झूठे भविष्यवक्ताओं का पालन नहीं करना है, लेकिन आपको उन भविष्यवक्ताओं के शब्दों का पालन करना है जिन्हें प्रभु उठाएंगे मूसा की तरह ऊपर.

ग) अधिनियम 3:19-23 और ड्यूट। 18:15

अब, वह केंद्रीय खंड जो 15-19 तक चलता है, उसकी अलग-अलग तरीकों से व्याख्या की गई है, मुख्यतः क्योंकि अधिनियम 3:19-23 में आपके पास इसका एक संदर्भ है जो उस मार्ग को मसीह पर लागू करता प्रतीत होता है। प्रेरितों के काम 3:19 में यह कहा गया है, "फिर मन फिराओ, और परमेश्वर की ओर फिरो, कि तुम्हारे पाप मिट जाएं, कि प्रभु की ओर से विश्राम के समय आएँ, और वह मसीह को भेज सके, जिस के लिये नियुक्त किया गया है।" आप—यहाँ तक कि यीशु भी। उसे तब तक स्वर्ग में रहना चाहिए जब तक कि ईश्वर द्वारा सब कुछ बहाल करने का समय न आ जाए, जैसा कि उसने बहुत पहले अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के माध्यम से वादा किया था। क्योंकि जैसा मूसा ने कहा, कि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे निज लोगों में से मेरे समान एक भविष्यवक्ता को खड़ा करेगा; तुम्हें वह सब कुछ सुनना चाहिए जो वह तुमसे कहता है। जो कोई उसकी बात नहीं मानेगा वह अपने लोगों से पूरी तरह अलग कर दिया जाएगा।" तो उस भविष्यवक्ता की पहचान यहाँ मसीह के रूप में की गई है, और इसका मतलब है कि लोगों ने इस मार्ग के साथ अलग-अलग काम किए हैं।

2. Deut में "मेरे जैसा पैगंबर" की व्याख्या। 18:15 क) पैगंबरों का सामूहिक उत्तराधिकार

में तीन अलग-अलग तरीकों का उल्लेख करना चाहता हूं जिनकी व्याख्या की गई है। पहला तरीका सामूहिक व्याख्या है जब आप व्यवस्थाविवरण 18:15 में पढ़ते हैं "तुम्हारा

परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाइयों के बीच में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को खड़ा करेगा।" यहां "भविष्यद्वक्ताओं" को एक सामूहिक संज्ञा के रूप में लिया गया है, और इसलिए यह समझा जाता है कि यह पुराने नियम काल के भविष्यसूचक क्षण के सभी भविष्यद्वक्ताओं के उत्तराधिकार को समाहित करता है। प्रभु सामूहिक संज्ञा के रूप में एक भविष्यद्वक्ता को खड़ा करेंगे। जब तुम कनान में आओ, तो विभिन्न राष्ट्रों के बुरे तरीकों का पालन मत करो। तुम्हें भविष्यद्वक्ताओं की बात अवश्य सुननी चाहिए।

बी) पैगंबर = यीशु (अधिनियम 3 आधारित)

दूसरी व्याख्या उस अनुच्छेद की एक व्यक्तिगत व्याख्या है कि शब्द "पैगंबर," "प्रभु आपके लिए एक भविष्यद्वक्ता के रूप में खड़ा होगा," अधिनियम 3 के संदर्भ के आधार पर मसीह का एक विशेष संदर्भ है। तो जो लोग उस व्याख्या का उपयोग करते हैं वे कहेंगे कि इस अनुच्छेद में प्राचीन इज़राइल में भविष्यवाणी के क्षण का कोई संदर्भ नहीं है। यह एक मसीहाई भविष्यवाणी है, पूरी तरह से मसीह की भविष्यवाणी है।

ग) क्रमिक भविष्यद्वक्ता अंततः मसीह में पूर्ण हुए

एक तीसरा दृष्टिकोण है, जो एक सामूहिक व्याख्या है लेकिन कहता है कि वह सामूहिक व्याख्या पूरी तरह से मसीह के व्यक्तित्व में पूरी होती है जिसमें भविष्यसूचक आदेश का विचार पूरी तरह से साकार हुआ। इस प्रकार दोनों का मेल होता है।

यदि आप पृष्ठ 6 पर आपके उद्धरणों को देखें, तो मेरे पास इस अनुच्छेद पर दो प्रविष्टियाँ हैं। पहला होबार्ट फ्रीमैन से है। वह कहते हैं, "मूसा, व्यवस्थाविवरण 18 में, घोषणा करता है कि ईश्वर हिब्रू भविष्यवाणी संस्थान की स्थापना करेगा, जो एक प्रकार के रूप में एक दिन आदर्श पैगंबर, प्रतिरूप यीशु मसीह में परिणत होगा। भविष्यसूचक संस्था को ईश्वर द्वारा नियुक्त पैगम्बर, ईसा मसीह का एक प्रकार का 'संकेत' होना था, उसी तरह जैसे पुरोहिती, या पुजारी, ईश्वर के अभिषिक्त पुजारी का संकेत थे, जैसा कि जकर्याह 3: 8 में दर्शाया गया है। अब मुझे ऐसा लगता है कि फ्रीमैन यहां क्या कर रहा है, यदि आप इसका रेखाचित्र बनाएं, तो यहां व्यवस्थाविवरण 18 है और भविष्यद्वक्ता है जिसे मूसा की तरह उठाया जाना है। वह कहेंगे कि यह कथन पुराने नियम काल के सामूहिक अर्थ में

भविष्यसूचक आंदोलन के बारे में बात कर रहा है। यही विशेष रूप से दृष्टि में है, भविष्यसूचक आंदोलन। यहाँ मसीह है। तब वह कहेंगे कि भविष्यसूचक आंदोलन विशिष्ट रूप से मसीह की ओर इशारा कर रहा है। दूसरे शब्दों में, सभी पैगंबर भाग ले रहे हैं, आने वाले महान पैगंबर की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं, जो मसीह हैं। वह कहेंगे कि व्यवस्थाविवरण 18 विशेष रूप से भविष्यवाणी आंदोलन के बारे में बोल रहा है, लेकिन भविष्यवाणी आंदोलन स्वयं महान पैगंबर के आगमन की पूर्वसूचना दे रहा है, वह पूर्ति जिसकी सभी भविष्यवक्ताओं को प्रतीक्षा थी, और वह है, मसीह। तो, उस अर्थ में यह कहना वैध होगा कि व्यवस्थाविवरण मसीह के बारे में बात कर रहा है लेकिन अप्रत्यक्ष तरीके से। यह विशेष रूप से पुराने नियम में भविष्यसूचक आंदोलन के बारे में बोल रहा है।

अब, आप देखते हैं कि आप इसे अन्य तरीकों से चित्रित कर सकते हैं। आप कह सकते हैं कि व्यवस्थाविवरण 18 भविष्यवाणी आंदोलन के बारे में बोल रहा है और साथ ही उन्हीं शब्दों में यह मसीह के बारे में भी बोल रहा है। अब यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह एक मुद्दा उठाता है कि हम वापस आएँगे और बाद में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। आप कह रहे हैं कि Deuteronomy 18 में एक ही शब्द के लिए दोहरा संदर्भ है, लेकिन दो अलग-अलग चीजों की बात की जा रही है। भविष्यवाणी आंदोलन और साथ ही मसीह के बारे में बोलना। या आप कुछ लोगों की तरह कह सकते हैं, व्यवस्थाविवरण 18 केवल मसीह के बारे में बोल रहा है। यह पुराने नियम में भविष्यवाणी आंदोलन के बारे में बात नहीं कर रहा है। अब मुझे वह कठिन लगता है, यानी वह व्यक्तिगत व्याख्या जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था। इसमें कहा गया है कि अधिनियम 3 के संदर्भ के कारण यह मसीह का एक विशेष संदर्भ है और पुराने नियम की अवधि में भविष्यवाणी के आदेश के विचार का कोई संदर्भ नहीं है। मुझे यह कठिन लगता है क्योंकि इसके पहले और बाद के दोनों संदर्भों में यह सुझाव दिया गया है, "कनानियों के भविष्य बताने के तरीकों पर ध्यान न दें और यदि कोई झूठा भविष्यवक्ता उठता है तो उन पर भी ध्यान न दें।"

तो, संदर्भ में ऐसा लगता है कि व्यवस्थाविवरण 18:15-19 के उस अंश का हृदय पुराने नियम के भविष्यवाणी क्रम के बारे में बात कर रहा है। तो फिर सवाल यह है कि आप

इस दोहरे संदर्भ मुद्दे के साथ क्या करते हैं? क्या यह दोनों के बारे में बात कर रहा है, या क्या यह एक मॉडल है जैसा फ्रीमैन सुझाव देता है - हाँ, यह भविष्यवाणी के आदेश के बारे में बात कर रहा है, लेकिन भविष्यवाणी का आदेश तब मसीह को दर्शाता है या इंगित करता है।

पेज 6 पर इस बार ईजे यंग, *माई सर्वेंट्स ऑफ प्रोफेट्स का एक और उद्घरण*, जहां उन्होंने इस परिच्छेद पर चर्चा की है, “इस बिंदु पर रुकना और अब तक के अध्ययन के परिणामों को संक्षेप में प्रस्तुत करना अच्छा हो सकता है। हमने पाया कि व्यवस्थाविवरण 18 में दोहरा संदर्भ शामिल है। एक, भविष्यवक्ताओं का एक समूह होना चाहिए, एक संस्था होनी चाहिए, जो उन शब्दों की घोषणा करेगी जिनकी आज्ञा ईश्वर ने दी थी। दो, एक महान भविष्यवक्ता होना था, जो अकेले मूसा के समान होगा और उसकी तुलना मसीहा से की जा सकती है। अब सवाल यह उठता है कि इन दोनों जोरों के बीच क्या संबंध है। कुछ लोगों का मानना है कि हमें भविष्यवक्ताओं के उस संग्रह या समूह को समझना चाहिए जिसमें मसीह भी शामिल होंगे, उन्हें भविष्यवक्ताओं के शरीर की पूर्ण प्राप्ति के रूप में समझना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, हमें भविष्यवक्ताओं के इस संग्रह की तरह कुछ समझना है, जिसमें से मसीह उनके पूर्ण अहसास के रूप में संबंधित होगा। लेकिन यंग कहते हैं, “हालांकि, यह शब्दों से निकला कोई वैध विचार नहीं है। पैगंबर को एक आदर्श व्यक्ति के रूप में मानना पाठ के प्रति कहीं अधिक बेहतर और अधिक वफादार है, जिसमें सभी सच्चे पैगंबरों को समझा जाता है। अब मेरे लिए यह बहुत सारगर्भित हो गया है। “भविष्यवाणी का आदेश एक आदर्श एकता है, जो ऐतिहासिक ईसा मसीह में अपना केंद्र बिंदु खोजना है। क्योंकि मसीह की आत्मा सब सच्चे भविष्यवक्ताओं में थी। जब आखिरकार ईसा मसीह पृथ्वी पर प्रकट हुए तो वादा अपने उच्चतम और पूर्ण अर्थ में पूरा हुआ। इसलिए, यह एक मसीहाई वादा है।”

अब, मुझे नहीं पता कि आप इसे कैसे चित्रित करते हैं, लेकिन यदि यह एक आदर्श व्यक्ति है और मसीह केंद्र बिंदु है तो शायद आप ऐसा कुछ करेंगे। मुझे ऐसा लगता है कि यंग दोहरे संदर्भ के इस मुद्दे को दरकिनार करने की कोशिश कर रहा है। वह ऐसा इस आदर्श व्यक्ति के माध्यम से करता है जो सभी भविष्यवक्ताओं को अपने केंद्र बिंदु मसीह के साथ समझता

है ताकि एक आदर्श व्यक्ति के इस निर्माण के माध्यम से दोहरे संदर्भ व्याख्या से बचा जा सके। शायद ऐसा करने का यही एक तरीका है। मेरे लिए यह काफी सारगर्भित है। लेकिन क्या आप देखते हैं कि मामला क्या है? क्या यह अनुच्छेद भविष्यवाणी आंदोलन के बारे में बोल रहा है, या यह मसीह के बारे में बोल रहा है, या दोनों के बारे में? मुझे ऐसा लगता है कि दोनों दृश्य में हैं।

घ) समाधान

दूसरा प्रश्न यह है: “आपको कैसे पता कि यहाँ क्या हो रहा है? क्या यह एक आदर्श व्यक्ति है?” मेरा मानना है कि यह कम से कम समस्याओं वाला सबसे आसान समाधान है। फ्रीमैन का सुझाव है कि वे भविष्यवाणी क्रम के बारे में बात कर रहे हैं; भविष्यवाणी के क्रम का अपने आप में प्रतीकात्मक महत्व है क्योंकि भविष्यवाणी का आदेश आने वाले प्रभु मसीह की ओर इशारा करता है। इसलिए व्यवस्थाविवरण 18 का ईसा मसीह के आगमन से जुड़ा होना वैध है लेकिन अप्रत्यक्ष तरीके से। इससे दोहरे संदर्भ से बचा जा सकता है और मेरे लिए पुराने नियम में अन्य स्थानों पर भी ऐसी ही चीजें चल रही हैं।

3. पैगम्बरवाद कहाँ से आता है?

लेकिन, यह सब छोड़कर, यह न कहें कि यह महत्वहीन है, आप हमारे प्रश्न पर वापस आते हैं: पैगम्बरवाद कहाँ से आता है? बाइबिल के पाठ के अनुसार, यह मार्ग हमें जो बताता है वह भविष्यवक्ताओं, भविष्यवक्ताओं, भूत-प्रेतों और माध्यमों के खिलाफ है, जिन्हें भगवान कहते हैं कि ये घृणित हैं और आपको उन चीजों को नहीं करना है, भगवान के पास अपने लोगों को भविष्यवक्ताओं को देने की इच्छा है मूसा की तरह लोग भी उन पैगम्बरों की बात सुनने के लिए जिम्मेदार हैं। आपने ध्यान दिया कि मैंने वह आयत 19 नहीं पढ़ी, जो कहती है, "यदि कोई मेरी बातें न सुने, जो भविष्यद्वक्ता मेरे नाम से बोलते हैं, तो मैं आप ही उन से लेखा लूंगा।" इसलिए यहां कुछ जवाबदेही है। "मैं एक भविष्यद्वक्ता को खड़ा करूंगा और अपने शब्द उसके मुंह में डालूंगा और तुम्हें उसकी बात सुननी होगी और जो कुछ वह कहता है उसका पालन करना होगा और यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हें जवाबदेह

ठहराया जाएगा।" भगवान यही कह रहे हैं. तो यह इज़राइल में पैगम्बरवाद की उत्पत्ति की व्याख्या है। इसका मूल ईश्वर में निहित है। यह अपने लोगों के माध्यम से भगवान का उपहार था। भगवान ने कहा, "इस तरह मैं तुम्हारे साथ संवाद करूंगा, मैं व्यक्तियों के माध्यम से तुम्हारे साथ संवाद करूंगा। मैं मूसा के समान कार्य के साथ किसी को खड़ा करूंगा और तुम्हें उनकी बात सुननी होगी और वे जो कहते हैं उसके प्रति जवाबदेह होना होगा।

4. 2 पतरस 1:21 मनुष्यों में कोई उत्पत्ति नहीं 2 पतरस 1:21 कहता है, "भविष्यवाणी की उत्पत्ति मनुष्यों की इच्छा से कभी नहीं हुई।" आप पूछते हैं कि भविष्यवाणी कहां से आती है? यह मनुष्यों की इच्छा से नहीं आता। "परन्तु मनुष्य परमेश्वर की ओर से बोलते थे, क्योंकि वे पवित्र आत्मा के साथ प्रवाहित हुए थे।" बाइबल सुसंगत है, वह नया नियम है, लेकिन वह वही बात कह रही है जो व्यवस्थाविवरण में कही गई थी। भविष्यवाणी शब्द कहाँ से आया? यह ईश्वर की ओर से एक उपहार है; वह अपने शब्दों को कुछ ऐसे व्यक्तियों के मुंह में डाल रहा है जिन्हें उसने अपने लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए खड़ा किया है।

चतुर्थ. भविष्यवक्ताओं के लिए रहस्योद्घाटन के तरीके और साधन प्रारंभिक टिप्पणियाँ आइए 4 पर चलते हैं, "भविष्यवक्ताओं के लिए रहस्योद्घाटन के तरीके और साधन।" यहाँ तीन उपशीर्षक हैं। हम परमानंद और पवित्र आत्मा की इस चीज़ पर वापस लौटेंगे। लेकिन ए. है, "ईश्वर के वचन को देखना और सुनना।" इससे पहले कि मैं ए पर जाऊं, मैं कुछ प्रारंभिक टिप्पणियाँ करना चाहूँगा। जब आप पैगम्बरों के रहस्योद्घाटन के तरीकों और साधनों के बारे में बात करते हैं, तो पैगम्बर शुरू में ही यह स्पष्ट कर देते हैं कि पैगम्बर जो कहते हैं वह स्वयं से उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि वे ईश्वर का वचन बोलते हैं। वे अपने विचार या विचार नहीं दे रहे हैं; वे जो सन्देश देते हैं वह परमेश्वर का वचन है। मुझे नहीं लगता कि व्याख्यात्मक तौर पर इससे इनकार करने का कोई कारण है। यह बहुत स्पष्ट है. बाइबल इसे विभिन्न तरीकों और स्थानों पर कई बार कहती है। यदि आप इस बात से इनकार करने जा रहे हैं कि भगवान ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के माध्यम से बात

की है, यदि आप इससे इनकार करने जा रहे हैं, तो यह इनकार स्वयं ग्रंथों से नहीं आएगा, यह एक पूर्वधारणा से आएगा। पाठ कहीं और से. धारणा वह रहस्योद्घाटन है जो किसी व्यक्ति को ईश्वर की ओर से, बाहर से, *अतिरिक्त रूप से आता है, कुछ ऐसा है जो घटित नहीं हो सकता है*। फिर आप यह समझाने के अन्य तरीकों की तलाश करते हैं कि पाठ में क्या चल रहा है। इस धारणा को बनाने वाला ढेर सारा साहित्य मौजूद है। आम तौर पर यदि आपके पास यह धारणा है और विश्वास नहीं है कि भगवान उस तरह से काम करता है, तो आम तौर पर भविष्यवक्ता को मनोवैज्ञानिक आधार पर समझाया जाता है। दूसरे शब्दों में, यहां जो कुछ हो रहा है वह ऐसा कुछ नहीं है जो उस व्यक्ति के लिए बाहर से आता है जो भविष्यवक्ता है, बल्कि यह कुछ ऐसा है जो *एब इंटर* के हितों के भीतर से उठता है न कि एब एक्स्ट्रा से, जो भीतर से आता है, और बाहर *आता* है भविष्यवक्ता, और उसमें आप भविष्यवाणी के लिए मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण ढूंढते हैं। लेकिन अगर आप ऐसा करते हैं, तो आपको भविष्यवाणी की गवाही को ही नज़रअंदाज़ करना होगा क्योंकि बाइबल ऐसा नहीं कह रही है। यह कुछ ऐसा नहीं है जो भीतर से आता है, यह कुछ ऐसा है जो बाहर से आता है।

भविष्यवक्ता परमेश्वर के वचन के प्राप्तकर्ता और प्रेषक दोनों थे। उन्हें यह संदेश ईश्वर से प्राप्त हुआ और फिर उन्होंने इसे उन लोगों तक पहुँचाया जिनसे उन्होंने बात की थी। तो उस बिंदु पर, हम पूछ सकते हैं, "बाइबल उस तरीके या माध्यम के बारे में क्या कहती है जिसके द्वारा भविष्यवक्ताओं ने अपना संदेश प्राप्त किया?" यह सन्देश उन्हें बाहर से प्राप्त हुआ। उन्होंने इसे किस प्रकार प्राप्त किया?

ए. ईश्वर के वचन को भविष्यसूचक देखना और सुनना यह हमें ए पर लाता है, "ईश्वर के वचन को देखना और सुनना।" हम पहले ही कुछ दृष्टांत देख चुके हैं; भविष्यवक्ता बार-बार कहते हैं कि परमेश्वर ने उनसे बात की। मैं आपको एक उदाहरण दे सकता हूँ, यशायाह 7:3, और यह सैकड़ों समान अभिव्यक्तियों का विशिष्ट है, "तब यहोवा ने यशायाह से कहा, 'तू और तेरा पुत्र शियर-याशूब, समुद्र के अन्त में आहाज से मिलने को बाहर जाओ।'" धोबी

के खेत की सड़क पर, ऊपरी पूल का जलसेतु। उससे कहो, " और संदेश इस प्रकार है। "यहोवा ने यशायाह से कहा।" भविष्यवक्ता बार-बार इस प्रकार के कथन कहते थे। ईश्वर द्वारा भविष्यवक्ताओं से की गई बातें भविष्यवक्ताओं द्वारा अपने कानों से सुनी जाती हैं। यशायाह 22:14 को देखें, "सर्वशक्तिमान यहोवा ने मेरे सुनने में यह प्रगट किया है।" यदि आप हिब्रू को देख रहे हैं तो यह "मेरे कानों में है, सर्वशक्तिमान भगवान ने मेरे कानों में यह प्रकट किया है।" यशायाह 5:9 को देखें, "सर्वशक्तिमान प्रभु ने मेरे कानों में घोषणा की है," एनआईवी कहता है "मेरी सुनवाई में।" 1 शमूएल 9:15, "जिस दिन शाऊल आया, उसी दिन यहोवा ने शमूएल पर यह प्रगट किया था," यदि आप हिब्रू में देखें तो इसका शाब्दिक अनुवाद है "यहोवा ने कान उघाड़े हैं," जो कि एक अजीब अभिव्यक्ति है। परन्तु, यहोवा ने कहा और शमूएल ने सुना। अब इस प्रकार के अन्य संदर्भ भी हैं।

तो फिर सवाल यह है कि हम इस तरह के बयानों से क्या समझते हैं? यदि आप यशायाह के बगल में खड़े होते, जब प्रभु ने यशायाह से बात की, तो क्या आपने कुछ सुना होता? दूसरे शब्दों में, क्या भविष्यवक्ता ने कुछ ऐसा सुना जो अन्यथा श्रव्य था, क्या उसने ध्वनि तरंगों के माध्यम से अपने कान से कुछ सुना और कान का तंत्र जो ध्वनि तरंगों को विशिष्ट प्रकार की ध्वनियों के रूप में व्याख्या करता है? मुझे लगता है कि यह संभव है, लेकिन आवश्यक नहीं है। मुझे नहीं लगता कि हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि इसने कैसे काम किया। कई लोग सोचते हैं कि भगवान ने श्रवण तंत्र के माध्यम से श्रव्य आवाज के बिना अधिक सीधे काम किया, लेकिन इस संदेश या शब्द को पैगंबर की प्रत्यक्ष चेतना में लाया। इसलिए भविष्यवक्ता के लिए यह ध्वनि के समान स्पष्ट और विशिष्ट था, मानो उसने इसे अपने बाहरी कानों से सुना हो। दूसरे शब्दों में, उसने कहा, "यहोवा ने मेरे कान में कहा, मैं ने यह सुना, यहोवा ने मुझ से यही कहा।" लेकिन मुझे लगता है कि भगवान पैगंबर की चेतना से सीधे बात कर सकते थे, लेकिन पैगंबर पर प्रभाव बिल्कुल वैसा ही था जैसे कि उनसे किसी बाहरी आवाज से बात की गई हो। इसलिए मुझे नहीं लगता कि हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि यह कानों के माध्यम से आया। लेकिन क्या यह एक ऐसी ध्वनि थी जो श्रव्य थी या यह एक ऐसी ध्वनि थी जिसे अकेले पैगंबर ने उस ध्वनि के समान सुना था जो

अन्यथा श्रव्य थी? मुझे नहीं लगता कि हम इस बारे में निश्चित हो सकते हैं। लेकिन पैगम्बर ने एक सन्देश सुना।

परंतु यदि आप इस कथन को देखें कि भविष्यवक्ताओं ने अपना संदेश किस प्रकार प्राप्त किया, तो वे कहते हैं कि उन्होंने न केवल परमेश्वर का वचन सुना, बल्कि उसे देखा भी। इसलिए परमेश्वर ने स्वयं को न केवल कान से, बल्कि आँख से भी प्रकट किया। 1 शमूएल 3 एक दिलचस्प अध्याय है, जहां प्रभु ने शमूएल को भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलाया। याद रखें, वह तम्बू में महायाजक एली के साथ काम कर रहा था। यहोवा ने शमूएल को पुकारा, और शमूएल ने सोचा कि एली उसे बुला रहा है। पद 4 में, “तब यहोवा ने शमूएल को बुलाया। शमूएल ने उत्तर दिया, ‘मैं यहाँ हूँ।’ और वह एली के पास दौड़ा और कहा, ‘मैं यहाँ हूँ, तुमने मुझे बुलाया।’” उसने कुछ स्पष्ट सुना। एली ने फोन नहीं किया और उसने कहा, “वापस जाओ और लेट जाओ।” तब यहोवा ने शमूएल को फिर बुलाया। शमूएल उठता है और एली के पास जाता है और कहता है, “मैं यहाँ हूँ, तुमने मुझे बुलाया?” एली कहता है, “मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, लौट जाओ और लेट जाओ।” “शमूएल अब तक यहोवा को नहीं जानता था।” अब यह एक तरह का अजीब बयान है। कुछ लोग इसका कुछ अर्थ निकालते हुए कहते हैं कि प्रभु शमूएल को उसके जानने से पहले ही बुला रहा था। मुझे नहीं लगता कि आप श्लोक 7 को इस तरह से समझते हैं। “शमूएल अभी तक प्रभु को नहीं जानता था,” मुझे लगता है कि उस श्लोक के अंतिम वाक्यांश में समझाया गया है, “प्रभु का वचन अभी तक उस पर प्रकट नहीं हुआ था।” दूसरे शब्दों में, शमूएल को प्रभु से संदेश प्राप्त करने के अर्थ में प्रभु के शब्दों का ज्ञान नहीं था। यह बात उन्हें नहीं बताई गई थी। यह कुछ नया था, कि वह दिव्य रहस्योद्घाटन का प्राप्तकर्ता बनने जा रहा था। “प्रभु ने शमूएल को तीसरी बार बुलाया। शमूएल ने एली के पास जाकर कहा, मैं यहाँ हूँ, क्या तू ने मुझे बुलाया? तब एली को एहसास हुआ कि प्रभु लड़के को बुला रहे थे। इसलिये उस ने शमूएल से कहा, कि लेट जाए, और कहे, हे प्रभु, बोल, तेरा दास सुन रहा है। अतः शमूएल अपने स्थान पर लेट गया।” अब इस खाते में इस बिंदु पर, आपको एक और विचार पेश किया जाता है। इस बिंदु तक ऐसा लगता है मानो यह वही ध्वनि थी, कोई “सैमुअल, सैमुअल” कह

रहा है। शमूएल इसे सुनता है, लेकिन क्या एली इसे सुनता है? यह सब एक साथ स्पष्ट नहीं है, लेकिन एली ने घोषणा की कि जब परमेश्वर आपसे बात कर रहा हो तो कहें, "हे प्रभु, बोल, तेरा दास सुन रहा है।" आप श्लोक 10 पर ध्यान दें, "प्रभु आये और वहाँ खड़े रहे," यहाँ यह कुछ और का परिचय देता है, "अन्य समयों की तरह बुला रहा है," और यह वास्तव में एक दूरदर्शी चीज़ में बदल जाता है। सैमुअल ने न केवल प्रभु को उसे बुलाते हुए सुना, बल्कि उसने कुछ देखा भी। आप पद 15 पर जाएँ, "शमूएल भोर तक लेटा रहा और तब उसने यहोवा के भवन का द्वार खोला।" इस बीच, प्रभु ने बात की थी और एली पर न्याय का यह संदेश दिया था, और आप श्लोक 15 में पढ़ते हैं, "वह एली को दर्शन बताने से डरता था।" तो आप देखिए वहाँ देखना और सुनना दोनों था। प्रभु खड़े थे और प्रभु बुला रहे थे और पूरी बात को श्लोक 15 में "एक दर्शन" के रूप में संदर्भित किया गया था।

यदि आप अन्य भविष्यसूचक पुस्तकों को देखें, तो मुझे लगता है कि मैंने इसका उल्लेख पहले किया है, आमोस 1:1, मीका 1:1, आपको उस तरह का अजीब परिचयात्मक कथन मिलता है। आमोस 1:1 में, "तकोआ के चरवाहों में से एक आमोस के शब्द - वह दर्शन जो उसने इस्राएल के विषय में देखा," वह नहीं जो उसने सुना, जो उसने देखा - दूरदर्शी। यह मीका 1:1 के समान है, "उसने सामरिया और यरूशलेम के विषय में जो दर्शन देखा।" बेशक, किताबों में इनमें से कई पैगम्बरों के पास उन्हें प्राप्त दर्शनों का विशिष्ट विवरण है। यहजेकेल के मंदिर के दर्शन, सभी माप, वेदी से बहने वाली नदी के डिज़ाइन के बारे में सोचें। इसलिए भविष्यवक्ताओं ने न केवल परमेश्वर का वचन सुना, बल्कि उसे देखा भी। क्या आप इसे देख पाते अगर आप यशायाह के बगल में खड़े होते जब उसने यशायाह 6 में प्रभु के ऊंचे और ऊंचे दर्शन को देखा, और प्रभु को उससे बात करते हुए सुना, वेदी के पास सेराफिम के पास सिंहासन देखा? मुझे लगता है कि अगर मैं यशायाह के बगल में खड़ा होता तो मुझे नहीं लगता कि मैंने कुछ भी सुना या देखा होता। लेकिन यशायाह सुन भी रहा है और देख भी रहा है साफ़ साफ़. तो, जहां तक भविष्यवक्ताओं के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन के तरीकों और साधनों की बात है, तो ईश्वर के वचन को देखना और सुनना भविष्यसूचक है।

बी. भविष्यवक्ताओं के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन में पवित्र आत्मा का कार्य बी. है, "भविष्यवक्ताओं के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन में पवित्र आत्मा का कार्य।" बाइबिल में कई अनुच्छेद हैं जो पवित्र आत्मा को भविष्यवाणी से जोड़ते हैं। अब इनमें से कुछ अंश व्याख्या के प्रश्न उठाते हैं, लेकिन आइए उनमें से कुछ पर नजर डालें।

1. गिनती 11:25-29 एल्दाद और मेदाद हम गिनती 11:25-29 से शुरू करेंगे, जहां आप पढ़ते हैं, "तब प्रभु बादल से नीचे आए और उससे बात की," वह मूसा है, "और वह जो आत्मा उस पर थी, उसे लेकर सत्तर पुरनियों पर डाल दिया। जब आत्मा उन पर आ गई तो उन्होंने भविष्यवाणी की, परन्तु उन्होंने फिर ऐसा नहीं किया। हालाँकि, दो व्यक्ति जिनके नाम एल्दाद और मेदाद थे, शिविर में रह गए थे। वे पुरनियों में गिने गए, परन्तु तम्बू से बाहर न निकले। तौभी आत्मा उन पर स्थिर हुई, और वे छावनी में भविष्यवाणी करने लगे।" तो यहाँ, आत्मा इन बुजुर्गों पर आता है, और वे भविष्यवाणी करते हैं। "एक जवान ने दौड़कर मूसा से कहा, एल्दाद और मेदाद छावनी में भविष्यवाणी कर रहे हैं।" नून का पुत्र यहोशू, जो बचपन से ही मूसा का सहायक रहा है, बोला, "मूसा, मेरे प्रभु, उन्हें रोको। परन्तु मूसा ने उत्तर दिया, क्या तुम मेरे कारण डाह करते हो? काश, प्रभु के सभी लोग भविष्यवक्ता होते और प्रभु उन पर अपनी आत्मा डालते।" स्पष्ट रूप से भविष्यवक्ता होने और पवित्र आत्मा के उन पर आने के बीच एक संबंध प्रतीत होता है। अब जैसा कि मैंने कहा, कुछ व्याख्यात्मक मुद्दे हैं। यहाँ इसका क्या मतलब है, भविष्यवक्ता किसी अर्थ में ईश्वर के आधिकारिक प्रवक्ता हैं या यह कुछ और है? मुझे लगता है कि यह कुछ और है। लेकिन किसी व्यक्ति पर पवित्र आत्मा के आने और यहां जो भी भविष्यवाणी की जा रही है, उसके बीच अभी भी एक संबंध है।

बी) 1 शमूएल 10:6-10 भविष्यवक्ताओं में शाऊल, जिस पाठ को हमने पहले देखा है, 1 शमूएल 10:6-10 कहता है, "प्रभु की आत्मा तुम पर आएगी, [शाऊल], शक्ति में, और तुम

उनके साथ भविष्यद्वाणी करोगे, और तुम दूसरे मनुष्य में बदल जाओगे।” यदि आप श्लोक 10 में आगे पढ़ें तो ऐसा होता है। “जब वे गिबा में पहुंचे, तो भविष्यवक्ताओं का एक जुलूस शक्तिशाली [शाऊल] से मिला, और वह भी उनके साथ भविष्यवाणी करने लगा।” फिर, पवित्र आत्मा के आने और भविष्यवाणी करने के बीच संबंध, चाहे वह भविष्यवाणी कुछ भी हो। यही बात 1 शमूएल 19 में रामा के नाइओत में घटित होती है। 1 शमूएल 19:20 में शाऊल ने दाऊद को पकड़ने के लिए आदमी भेजे, “परन्तु जब उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं के एक समूह को भविष्यवाणी करते देखा, और शमूएल उनका अगुवा खड़ा था, तब परमेश्वर की आत्मा शाऊल के आदमियों पर आई, और वे भी भविष्यद्वाणी करने लगे।” फिर पद 23 में शाऊल के साथ भी वैसा ही हुआ, परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा, और वह भविष्यद्वाणी करने लगा।

ग) 2 शमूएल 23

2 शमूएल 23 में, “द लास्ट वर्ड्स ऑफ डेविड” नामक एक अंश में, आपके पास पवित्र आत्मा का संदर्भ है। 2 शमूएल 23:2 में, दाऊद कहता है, “प्रभु का आत्मा मेरे द्वारा बोला; उनके शब्द मेरी जुबान पर थे।” जब यह कहता है “उसके शब्द मेरी जीभ पर थे” तो यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा एक भविष्यवक्ता होता है, व्यवस्थाविवरण 18 पर वापस जाएं, “मैं अपने शब्द तुम्हारे मुंह में डालूंगा,” और यहां यह पवित्र आत्मा से जुड़ा है। पवित्र आत्मा उसके द्वारा बोलता था, उसके वचन उसकी जीभ पर थे।

घ) मीका 3:8

मीका 3:8 को देखें, “परन्तु जहाँ तक मेरी बात है [मीका कहता है,] मैं यहोवा की आत्मा, और न्याय और शक्ति से परिपूर्ण हूँ, कि मैं याकूब को उसका अपराध, और इस्राएल को उसका पाप बता सकूँ।” इसलिये वह यहोवा की आत्मा से भर गया है, कि जो सन्देश परमेश्वर ने उसे दिया है उसका प्रचार कर सके।

ई) 2 इतिहास 15:1 2 इतिहास 15:1 में, (अब इतिहास में ऐसे कई अंश हैं), “परमेश्वर की आत्मा ओदेद के पुत्र अजर्याह पर आई। वह आसा से मिलने को निकला, और उस से कहा, हे आसा, हे सब यहूदा और बिन्यामीन, मेरी सुनो। जब यहोवा तुम्हारे संग रहता है, तब वह तुम्हारे संग रहता है।” और वह सन्देश देता है, परन्तु प्रभु का आत्मा उस पर उतरा, और वह सन्देश देता है। 2 इतिहास 20:14, “तब यहोवा का आत्मा जकर्याह का पुत्र, बनायाह का पोता, यीएल का परपोता, मत्तन्याह का परपोता, और आसाप का वंशज, यहजीएल पर आया, और उस ने कहा, हे राजा, सुनो यहोशापात और यहूदा और यरूशलेम में रहने वाले सभी लोग! यहोवा यही कहता है।” अतः आत्मा उस पर आकर बोलता है, और यहोवा यही कहता है। 2 इतिहास 24:20, “तब परमेश्वर का आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह पर उतरा। वह लोगों के सामने खड़ा हुआ और बोला, 'परमेश्वर यही कहता है।'” यहजेकेल 11:5, “तब यहोवा का आत्मा मुझ पर आया, और उस ने मुझ से कहने को कहा। प्रभु यही कहते हैं।” इसलिए यदि आप इस प्रकार के ग्रंथों को देखें, तो यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि भविष्यवाणी और ईश्वर की आत्मा के बीच एक संबंध है। यह परमेश्वर की आत्मा द्वारा भविष्यवाणी की गई है।

2. पैगंबर में पवित्र आत्मा का परमानंद अब 2. है, “पवित्र आत्मा का पैगंबर में परमानंद।” आप उत्साहपूर्ण भविष्यवाणी के इस प्रश्न पर वापस आते हैं। यहां छह उप-बिंदु हैं, और हम प्रत्येक पर बहुत संक्षेप में चर्चा करेंगे।

ए) मोविनकेल का कहना है कि आत्मा और परमानंद एक साथ हैं लेकिन ए। है: “मोविनकेल का कहना है कि आत्मा और परमानंद एक साथ हैं।” सिगमंड मोविनकेल नॉर्वेजियन पुराने नियम के विद्वान थे। उनकी राय में पवित्र आत्मा की गतिविधि का हमेशा यह परिणाम होता था कि जिस व्यक्ति पर पवित्र आत्मा ने विजय प्राप्त की थी, उसे परमानंद की स्थिति में लाया गया था। तो, मोविनकेल ने कहा, आत्मा और परमानंद एक साथ हैं। किसी व्यक्ति पर पवित्र आत्मा के आने से उत्पन्न उस प्रकार की आनंददायक गतिविधि

इज़राइल के शुरुआती दिनों में पाई जाती है, और इज़राइल के इतिहास के अंत में निर्वासन के बाद के भविष्यवक्ताओं में भी पाई जाती है। लेकिन यह निर्वासित इज़राइल के महान लेखन वाले भविष्यवक्ताओं के संबंध में नहीं पाया जाता है। तो आपके पास यह शमूएल के समय में था, आपके पास यह यहजेकेल में था, लेकिन ओबद्याह, योएल, होशे और यिर्मयाह के समय में नहीं। उनका तर्क है कि निर्वासित इज़राइल के उन महान लेखन भविष्यवक्ताओं ने आत्मा के कब्जे को अवांछनीय माना। पूर्व-निर्वासन काल के उन महान लेखन भविष्यवक्ताओं ने जो व्यक्त किया वह आत्मा के कब्जे के विपरीत, शब्द का कब्ज़ा है। शब्द और आत्मा एक दूसरे के विरुद्ध खड़े हैं। यदि आप ग्रंथ सूची को देखें, तो आप देख सकते हैं कि वह इस सब पर कहाँ चर्चा करता है। लेकिन उनका तर्क है कि आत्मा और परमानंद अविभाज्य हैं। जब आत्मा किसी व्यक्ति पर आती है तो यह उन्हें उस परमानंद की स्थिति में डाल देती है, आप इसे प्रारंभिक इज़राइल और बाद के इज़राइल में पाते हैं, लेकिन महान लेखन वाले भविष्यवक्ताओं में नहीं जिन्होंने ईश्वर के वचन पर अधिक जोर दिया।

ख) कभी-कभी पवित्र आत्मा उस असामान्य व्यवहार को उत्पन्न करता है । " कभी-कभी पवित्र आत्मा उस असामान्य व्यवहार को उत्पन्न करता है जिसे भविष्यवाणी के रूप में वर्णित किया जाता है।" मुझे लगता है कि जब हम बाइबिल के पाठ में कुछ कथनों को देखते हैं, तो इस बात से इनकार करना मुश्किल होता है कि कभी-कभी जब पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति पर आती है, तो इसका परिणाम यह होता है कि वह व्यक्ति कुछ प्रकार के असामान्य व्यवहार प्रदर्शित करता है जैसा कि भविष्यवाणी करते समय वर्णित है। हमने इसके उदाहरण देखे हैं—देखिए शाऊल के साथ क्या हुआ। आत्मा उस पर उतरा और उसने भविष्यवाणी की। वह लेट गया और अपने कपड़े उतार दिया—यह सामान्य व्यवहार नहीं है। यह पवित्र आत्मा के उस पर आने से उत्पन्न हुआ था, जिसने उसे वह करने से रोक दिया जो वह करना चाहता था, जो कि डेविड को पकड़ना था। लेकिन मैं यह कहते हुए जोड़ना चाहता था कि पुराने नियम में इसके उदाहरण बहुत कम हैं। ये अलग-अलग

घटनाएं हैं। किसी भी मामले में आपको किसी भविष्यवाणी पुस्तक के लेखक के साथ इस प्रकार के संबंध का संदर्भ नहीं मिलता है। मुझे ऐसा लगता है कि असामान्य व्यवहार पैदा करने वाले लोगों पर आत्मा के आने के इस तरह के संदर्भ, नियम के बजाय अपवाद हैं।

उनमें से कुछ अंश जिन्हें हमने अभी देखा उनमें पवित्र आत्मा के कुछ लोगों पर आने और उन्होंने भविष्यवाणी करने के बारे में बताया है। अब सवाल यह है कि वे क्या कर रहे हैं? यदि आप संख्या 11 पर वापस जाएँ जहाँ आत्मा नेताओं और एल्दाद और मेदाद पर आती है और उन्होंने भविष्यवाणी की, तो वे क्या कर रहे थे? मुझे नहीं लगता कि वे ईश्वर के अधिकृत प्रवक्ता के रूप में कार्य कर रहे थे और ईश्वर की ओर से किसी प्रकार का संदेश दे रहे थे। मुझे ऐसा लगता है कि वे किसी प्रकार का असामान्य व्यवहार प्रदर्शित कर रहे हैं। संभवतः हमें ईश्वर की किसी प्रकार की उत्साहपूर्ण स्तुति के बारे में सोचना चाहिए। मूसा कहता है कि वह चाहता है कि वे सभी भविष्यवाणी करें। 1 शमूएल 10 के अनुच्छेद में यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है, जहाँ भविष्यवक्ताओं की यह मंडली अपने वाद्य यंत्रों के साथ ऊँचे स्थान से नीचे आ रही थी और शाऊल ने उनका सामना किया और आत्मा ने उस पर विजय प्राप्त की और उसने भविष्यवाणी की, कि वे जो कर रहे थे उसमें किसी प्रकार का उत्साह शामिल था। भगवान की स्तुति। 1 इतिहास 25:1 में एक दिलचस्प पाठ है, "दाऊद ने सेना के कमांडरों के साथ मिलकर आसाप, हेमान और यदूतून के कुछ बेटों को वीणा, वीणा और झांझ के साथ भविष्यवाणी करने के काम के लिए अलग कर दिया। यहां उन पुरुषों की सूची दी गई है, जिन्होंने यह सेवा की। आपके पास लोगों की एक सूची है, और पद 3 के अंत में, सभी लोगों के नाम के बाद यह कहा गया है, "किसने प्रभु को धन्यवाद देने और स्तुति करने के लिए वीणा का उपयोग करते हुए भविष्यवाणी की।" फिर से आप इस तरह का संगीतमय प्रसंग सुनते हैं, और ऐसा प्रसंग जहां ऐसा लगता है कि भगवान की किसी प्रकार की उत्साही स्तुति की गई है, और इसे भविष्यवाणी के रूप में वर्णित किया गया है।

यदि आप लाल सागर की मुक्ति के बाद निर्गमन 15 पर वापस जाते हैं, तो आपके पास मरियम का संदर्भ है। निर्गमन 15:20, "तब हारून की बहन मिरियम भविष्यवक्ता ने हाथ में डफ लिया, और सब स्त्रियां डफ लेकर नाचती हुई उसके पीछे हो लीं। मरियम ने

उनके लिये यह गीत गाया, 'यहोवा का भजन गाओ, क्योंकि वह बहुत महान है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुद्र में फेंक दिया है।' फिर से आप एक संगीतमय संदर्भ में हैं, और मरियम को भविष्यवक्ता कहा जाता है। इसलिए मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि कभी-कभी पवित्र आत्मा भविष्यवाणी के अनुसार असामान्य व्यवहार उत्पन्न करता है। अधिकांश मामलों में यह ईश्वर की किसी प्रकार की उत्साही स्तुति प्रतीत होती है। शाऊल के मामले में, 1 शमूएल 19, उसे वह करने से रोका गया जो वह करना चाहता था और वह था डेविड को पकड़ना। तो क्या वह असामान्य व्यवहार था? लेकिन इस तरह का संदर्भ कभी भी भविष्यवाणी पुस्तक के लेखक या किसी भी महान भविष्यवक्ता पर लागू नहीं किया जाता है और इस तरह के संदर्भ बिखरे हुए हैं और अपवाद प्रतीत होते हैं, नियम नहीं।

ग) हमें इसे बाइबल में जो कहा गया है, उससे अधिक बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताना चाहिए, इसलिए मुझे लगता है कि यह सी. की ओर ले जाता है, "हमें इसे बाइबल में जो कहा गया है, उससे अधिक बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताना चाहिए।" जब आप मुख्यधारा के बाइबिल अध्ययन के साहित्य को जानते हैं, तो आपको बाइबिल के विद्वानों के लेख के बाद लेख मिलेंगे जो इज़राइल में भविष्यवक्ता की उत्पत्ति और सार को परिभाषित करने के लिए इन अस्पष्ट अंशों का उपयोग करते हैं। ये वे पाठ हैं जो पूरे आंदोलन के केंद्र में आते हैं और फिर उन्हें उन्मादी व्यक्तियों के इन समूहों का वर्णन करने के रूप में समझा जाता है जो देश के चारों ओर अर्ध-पागल तरीके से घूमते हैं। ये बाल के भविष्यवक्ताओं, 1 राजा 18 से जुड़े हुए हैं, जिन्हें हमने देखा, वेनामोन के उस अनुभव और उसकी यात्रा से जुड़े हुए हैं जहां उस युवक को पकड़ लिया गया था और बायब्लोस के राजा को एक संदेश दिया था। यह मारी ग्रंथों के माहू के साथ जुड़ा हुआ है, मारी पाठ के उत्साह के साथ, और सभी एक साथ कह रहे हैं कि इज़राइल में भविष्यवक्ता का उदय इस तरह की उन्मादपूर्ण घटना से हुआ है जैसा कि प्राचीन निकट पूर्व में जाना जाता था / मुझे ऐसा लगता है कि इस तरह के निष्कर्ष निकालना बाइबिल के अर्थ से परे जाना है। मेरे विचार में जब आप इस प्रकार की कार्यप्रणाली का उपयोग करते हैं तो आप बाहरी धर्मग्रंथों से ली गई श्रेणियां पवित्रशास्त्र पर

थोप देते हैं और शास्त्र को तर्क के बारे में बोलने नहीं देते हैं। इसलिए, हमें इसे बाइबल में कहे गए शब्दों से अधिक बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताना चाहिए।

डी। असामान्य व्यवहार को स्वीकार करने का मतलब बुतपरस्त प्रथाओं से व्युत्पन्न होना नहीं है । " असामान्य व्यवहार को स्वीकार करने का मतलब बुतपरस्त प्रथाओं से व्युत्पन्न होना नहीं है।" मुझे लगता है कि यह निहित है कि प्राचीन निकट पूर्व में आम तौर पर कुछ प्रकार के उत्साहपूर्ण भविष्यवक्ता थे, लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता है कि इज़राइल में पैगम्बरवाद उस तरह की घटना से लिया गया था जो इन अन्य देशों में पाई गई थी। इसलिए असामान्य व्यवहार को स्वीकार करने का मतलब बुतपरस्त स्रोतों से पैगम्बरवाद की व्युत्पत्ति नहीं है।

ई) बाइबल किसी व्यक्ति पर आत्मा के आने का संकेत नहीं देती है, हमेशा असामान्य व्यवहार लाती है । " बाइबल यह संकेत नहीं देती कि व्यक्ति पर आत्मा का आगमन हमेशा असामान्य व्यवहार लाता है।" वास्तव में, उन उदाहरणों को नियम के बजाय अपवाद के रूप में देखा जाता है। ऐसे कई अन्य स्थान हैं जहां आपको ईश्वर की आत्मा द्वारा किसी व्यक्ति को एक निश्चित संदेश से लैस करने का संदर्भ मिलता है जिसमें असामान्य व्यवहार शामिल नहीं होता है। इसलिए ये असाधारण मामले हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा भविष्यवाणी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दोनों को जोड़ा जाना चाहिए.

च) मोविन्केल का तर्क मान्य नहीं है । "मोविन्केल का तर्क मान्य नहीं है।" उनका विचार है कि पवित्र आत्मा का कार्य प्रारंभिक इज़राइल और निर्वासन के बाद के समय में मौजूद था, लेकिन महान भविष्यवक्ताओं के साथ नहीं, मुझे लगता है कि यह अच्छी तरह से व्यक्त नहीं किया गया है। मुझे नहीं लगता कि यह कहना उचित है कि महान भविष्यवक्ता पवित्र आत्मा के कार्य को अलग रखना चाहते थे और उसकी आत्मा से अधिक शब्द पर जोर देना

चाहते थे। यह सच है कि महान लेखन भविष्यवक्ताओं में पवित्र आत्मा के कार्य का बहुत कम उल्लेख है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इसका मतलब यह है कि वे पवित्र आत्मा के कार्य से अवगत नहीं थे और इसके बजाय शब्दों पर जोर देना चाहते थे और आत्मा को प्रतिस्थापित करना चाहते थे। निश्चित रूप से बाइबिल का दृष्टिकोण यह है कि भविष्यवक्ता पवित्र आत्मा के सशक्तिकरण के माध्यम से शब्द का प्रचार करते हैं। सिर्फ इसलिए कि वे इसकी व्याख्या नहीं करते हैं या इसका उल्लेख नहीं करते हैं इसका मतलब यह नहीं है कि मामला ऐसा नहीं है। मुझे लगता है कि अंतर यह है कि महान लेखन भविष्यवक्ताओं ने उस शब्द पर जोर दिया जो वे लाए थे न कि उस माध्यम पर जिसके द्वारा शब्द उनके पास आया।

लेकिन निर्वासन-पूर्व काल के कुछ भविष्यवक्ता आत्मा की बात करते हैं। हमने मीका 3:8 को देखा, जो सबसे स्पष्ट उदाहरण है, "परन्तु मैं प्रभु की आत्मा से सामर्थ और न्याय और पराक्रम से परिपूर्ण हूँ, कि याकूब को उसका अपराध, और इस्राएल को उसका पाप प्रगट कर सकूँ।" 1" मोविन्केल इसके साथ क्या करता है? उनका कहना है कि यह पाठ में बाद में जोड़ा गया है। तो क्या आप पाठ में संशोधन करते हैं ताकि पाठ को पूर्व-कल्पित सिद्धांत में फिट किया जा सके कि महान लेखन भविष्यवक्ताओं के समय में आत्मा कार्य नहीं करती थी? यह एक निराधार विचार है।

सी. हम किस अर्थ में इस्राएली पैगम्बरों के बीच परमानंद की बात कर सकते हैं? आइए सी पर चलते हैं, "हम किस अर्थ में इस्राएली भविष्यवक्ताओं के बीच परमानंद की बात कर सकते हैं?"

1. यहां हमेशा विचारों में मतभेद रहा है। "यहां हमेशा विचारों में मतभेद रहा है।" यदि आप अलेक्जेंड्रिया के फिलो तक जाते हैं - जो एक यहूदी विद्वान था, जिसकी मृत्यु 42 ईस्वी में हुई थी - उसने सिखाया था, "जब एक दिव्य आत्मा किसी व्यक्ति पर आती है, तो मन अपने घर से चला जाता है क्योंकि नश्वर और अमर इसे साझा नहीं कर सकते हैं वही घर।" इसलिए जब पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति पर आता है, "मन अपने घर से चला जाता है।" फिलो के

अनुसार भविष्यवक्ताओं के साथ नियमित रूप से ऐसा ही होता था। और उस समय से ऐसे कई विद्वान हुए हैं जो पुराने नियम के काल के पैगम्बरों के परमानंद चरित्र के लिए तर्क देते हैं ताकि परमानंद पैगम्बरवाद के सार से संबंधित हो। लेकिन ऐसे अन्य विद्वान भी हैं जिन्होंने कहा है कि शास्त्रीय डेटा उस तरह के निष्कर्ष पर नहीं पहुंचता है और परमानंद और भविष्यवक्ता के बीच कोई आवश्यक संबंध नहीं है।

2. परमानंद एक बहुत व्यापक अवधारणा है और इसके द्वारा बहुत अलग-अलग चीजें समझी जा सकती हैं। 2. "ई सीस्टेसी एक बहुत व्यापक अवधारणा है और इसके द्वारा बहुत अलग-अलग चीजों को समझा जा सकता है।" जे. लिनबोल्म नामक एक व्यक्ति - जिसने *इज़राइल में पैगम्बरिज़्म* नामक पुस्तक लिखी, जो आपकी ग्रंथ सूची में सूचीबद्ध है - उसने परमानंद के दो रूपों के बीच अंतर किया। एक वह है जिसे आप "अवशोषण परमानंद" कहते हैं, और दूसरा "एकाग्रता परमानंद" है। अवशोषण परमानंद में वह कहता है कि पैगम्बर ईश्वर के साथ मिल गया है, वह देवता में लीन हो गया है। एकाग्रता परमानंद में, वह कहता है कि पैगम्बर एक निश्चित विचार या भावना पर इतना ध्यान केंद्रित करता है या ध्यान केंद्रित करता है कि वह सामान्य चेतना खो देता है। उस ध्यान या एकाग्रता के कारण बाह्य इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो जाती हैं। लिनबोल्म ने तर्क दिया कि अवशोषण परमानंद पूर्वी धर्मों में पाया जाता है और परमानंद का उद्देश्य स्वयं को अनंत में खोना, देवता में लीन होना, पृथ्वी से मुक्त होना, अपनी चेतना में इस अन्यता, "सभी" में लीन होना है। ब्रह्माण्ड का। अब मुझे ऐसा लगता है, जब आप उस तरह के परमानंद के बारे में बात करते हैं जो पुराने नियम से बिल्कुल अलग है। यदि पुराने नियम में किसी चीज़ पर ज़ोर दिया गया है, तो वह ईश्वर और मनुष्य के बीच की दूरी है और वह दूरी इतनी अधिक है कि कोई संकेत नहीं है कि मनुष्य को देवता में लीन किया जा सकता है। ईश्वर मनुष्य के साथ संबंध स्थापित करता है और यह बहुत महत्वपूर्ण है। आप देखते हैं कि किसी रिश्ते में संगति होती है, मेलजोल होता है, लेकिन मेल नहीं होता है। यह बिल्कुल अलग अवधारणा है जो पुराने नियम में कहीं नहीं पाई जाती है। तो मुझे ऐसा लगता है कि यदि आप अवशोषण परमानंद के बारे में बात करते

हैं जो पुराने नियम के लिए बिल्कुल विदेशी है।

एकाग्रता परमानंद, क्या आप इसे किसी भविष्यवक्ता में पा सकते हैं? आप यह कहने में सक्षम हो सकते हैं कि कुछ औपचारिक समानताएँ हैं, लेकिन संक्षेप में यह जो है, वह पैगम्बरवाद की उत्पत्ति के लिए इन मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरणों में से एक है, यह कहते हुए कि यह कुछ ऐसा है जो एकाग्रता के आधार पर भीतर से उठता है। ऐसा लगता है जैसे बाइबिल का पाठ कहता है कि पैगंबर का कार्य कुछ ऐसा है जो बाहर से आता है, भीतर से नहीं, यह पवित्र आत्मा है जो बाहर से कुछ लाता है। यह केवल सद्गुण या एकाग्रता या भीतर से किसी अन्य चीज़ से उत्पन्न होने वाली चीज़ नहीं है।

3. निश्चित रूप से कैनोनिकल भविष्यवक्ताओं की ओर से परमानंद व्यवहार के रूप में लेबल की गई हर चीज़ पर इतना विचार नहीं किया जा सकता है 3. "निश्चित रूप से कैनोनिकल भविष्यवक्ताओं की ओर से परमानंद व्यवहार के रूप में लेबल की गई हर चीज़ पर इतना विचार नहीं किया जा सकता है।" जो लोग कहते हैं कि भविष्यवक्ता परमानंद थे, वे इसके लिए उन स्थानों पर साक्ष्य की तलाश करते हैं, जहां मुझे लगता है कि वे अक्सर निकाले गए निष्कर्षों का समर्थन नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग पैगम्बरों के प्रतीकात्मक कृत्यों को साक्ष्य के रूप में इंगित करते हैं कि पैगम्बर परमानंद की स्थिति में चले गए थे।

ए) ईज़ेक। 4 एक उदाहरण यहजेकेल 4 में है, आपने पढ़ा कि यहजेकेल मानव मल पर पकाई गई रोटी पर रहता था। घेराबंदी की असुविधा को दर्शाने के लिए वह काफी देर तक एक तरफ लेटा रहा; यरूशलेम के भाग्य के प्रतीक के रूप में उसने अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा ली। श्लोक 4 में देखें, "तब अपनी बाईं ओर लेट जाओ और इस्राएल के घराने का पाप अपने ऊपर ले लो। जितने दिन तुम अपने पक्ष में पड़े रहोगे उतने दिन तक तुम्हें उनका पाप भोगना पड़ेगा।" आप श्लोक 6 में देखते हैं, "यह पूरा करने के बाद, फिर से अपनी दाहिनी ओर लेट जाओ, और यहूदा के लोगों के पाप को अपने ऊपर ले लो।" श्लोक 12 में

लिखा है, “जौ की रोटी के समान भोजन खाओ; ईंधन के रूप में मानव मल का उपयोग करके, लोगों के सामने इसे पकाओ।” पद 15, “मैं तुम्हें मनुष्य के मल के स्थान पर गाय के गोबर पर रोटी पकाने दूँगा।” यह इस बात का प्रतीक है कि लोग राशन का खाना खाएंगे और राशन का पानी पिएंगे क्योंकि भोजन और पानी बहुत दुर्लभ था। ये प्रतीकात्मक कार्य थे जो इस संदेश को दर्शाते हैं। जब यह जकेल ये काम कर रहा था तो क्या वह मन की परमानंद की स्थिति में था? मुझे लगता है कि यह बिल्कुल भी आवश्यक निष्कर्ष नहीं है। वह बहुत ही सरलता से लोगों को जो संदेश दिया गया था उसका दृश्यात्मक पाठ दे रहे थे। क्या यह सामान्य चेतना में किया गया था? क्यों नहीं?

बी) ईसा। 21:3-4

सशक्त भावनात्मक अभिव्यक्ति के अन्य तर्क भी हैं। उदाहरण के लिए, यशायाह 21:3-4 में, यशायाह कहता है, “इस पर मेरा शरीर पीड़ा से भर जाता है, और प्रसव पीड़ा से पीड़ित स्त्री की सी वेदना मुझे घेर लेती है; मैं जो सुनता हूँ उससे स्तब्ध हो जाता हूँ, जो देखता हूँ उससे व्याकुल हो जाता हूँ। मेरा हृदय लड़खड़ा जाता है, भय से मैं कांप उठता हूँ; जिस गोधूलि की मैं कामना करता था वह मेरे लिए भयावह हो गई है।” जाहिर है, यशायाह बहुत परेशान है और इतना परेशान है कि इसका असर उसके शरीर पर पड़ रहा है। इसका कारण क्या है? यदि आप संदर्भ को देखें तो इसका कारण वह दर्शन है जो भगवान ने उसे बेबीलोन के फैसले पर दिया था। यह एक भयानक निर्णय था जो आने वाला था। लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह कहने की कोई ज़रूरत है कि श्लोक 3 इंगित करता है कि वह परमानंद की स्थिति में था। आप कोई विनाशकारी संदेश सुन सकते हैं जो आपको शारीरिक रूप से प्रभावित करेगा। यिर्मयाह 23:9 में, यिर्मयाह कहता है, “मेरा हृदय भीतर से टूट गया है; मेरी सारी हड्डियाँ कांप उठीं। मैं प्रभु और उसके पवित्र वचनों के कारण मतवाले मनुष्य के समान हो गया हूँ, और शराब के नशे में धुत्त मनुष्य के समान हो गया हूँ। वह फिर से उस धारणा को व्यक्त कर रहा है जो भगवान के रहस्योद्घाटन ने उस पर बनाई है। वहां का रहस्योद्घाटन देश के लोगों और नेताओं पर फैसले की घोषणा थी। लेकिन मुझे नहीं लगता

कि यह यह कहने का सबूत है कि वह परमानंद की स्थिति में था।

ग) आमोस 3:1 तीसरी चीज़ जिसकी मैंने अपील की है वह है भविष्यवाणी भाषण की प्रथम-व्यक्ति शैली। एक विद्वान उस चीज़ के बारे में बात करता है जिसे वह "दिव्य शैली" कहता है। दूसरे शब्दों में, जब भविष्यवक्ता ईश्वर के नाम पर बोलते हैं, तो वे अक्सर पहले व्यक्ति में ऐसे बोलते हैं जैसे कि वे स्वयं ईश्वर हों। उदाहरण के लिए अमोस 3 को देखें। आमोस 3:1 कहता है, "हे इस्राएल के लोगो, यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध जो वचन कहा है सुनो, मैं तुम को मिस्र से निकाल लाया हूँ, और सारे परिवार के विरुद्ध कहता हूँ।" वहाँ प्रथम-पुरुष है। वह भगवान के लिए बोल रहा है। "पृथ्वी के सभी परिवारों में से केवल मैंने ही तुम्हें चुना है," "मैं" ईश्वर है; इसलिये मैं तुम्हें तुम्हारे सारे पापों का दण्ड दूँगा।" फिर, "मैं" ही ईश्वर है। इसलिए भाषण में प्रथम व्यक्ति का प्रयोग बहुत आम है। अब कुछ विद्वानों का कहना है कि ऐसे संकेत हैं कि भविष्यवक्ता उत्साहपूर्वक बोल रहे हैं क्योंकि वे स्वयं को ईश्वर के साथ पहचानते हैं। मुझे नहीं लगता कि यह बिल्कुल भी आवश्यक निष्कर्ष है। ऐसे कई उदाहरण हैं ऐसे दूतों के जो पहले व्यक्ति में संदेश देते हैं इसका मतलब यह नहीं है कि वे परमानंद की स्थिति में हैं। इसका सीधा सा मतलब है कि वे उस प्राधिकार का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जिसके लिए वे बोल रहे हैं।

घ) 2 किलोग्राम। 18:28-31 यदि आप 2 राजा 18:28-31 पर जाएं, तो यह वह समय है जब सन्हेरीब ने हिजकिय्याह के समय में यरूशलेम को धमकी दी थी और आप श्लोक 28 में पढ़ते हैं, "तब सेनापति खड़ा हुआ और हिब्रू में चिल्लाया, 'सुनो महान राजा, अशशूर के राजा का वचन! राजा यों कहता है: [सन्नाचेरीब,] हिजकिय्याह को तुम्हें धोखा न देने दे। वह तुम्हें मेरे हाथ से नहीं बचा सकता। हिजकिय्याह तुम को यहोवा पर भरोसा करने के लिये उकसाने न पाए, और वह कहता है, कि यहोवा हमें निश्चय बचाएगा; यह नगर अशशूर के राजा के हाथ में न दिया जाएगा। हिजकिय्याह की बात मत सुनो. अशशूर का राजा यही कहता है: मेरे साथ मेल कर लो।" ध्यान दें कि यहां सन्हेरीब नहीं, बल्कि दूत बोल रहा है।

सन्हेरीब का दूत पहले व्यक्ति का उपयोग करता है, "मेरे साथ शांति बनाओ और मेरे पास आओ। तब हर कोई अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के पेड़ का फल खाएगा, और अपने हौद का फल पिएगा, जब तक कि मैं आकर तुम्हें तुम्हारे देश के समान देश में न ले जाऊं। यह वही शैली है जिसका उपयोग भविष्यवक्ता तब करते हैं जब वे प्रभु के लिए बोलते हैं। तो भविष्यवाणी भाषण की प्रथम व्यक्ति शैली बस एक शैली है जिसमें संदेशवाहक यह स्पष्ट करता है कि यह उसके अपने शब्द नहीं हैं बल्कि उस व्यक्ति के शब्द हैं जिसने उसे भेजा है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह ऐसा करने के लिए परमानंद की स्थिति में है।

मैं देख रहा हूँ कि मेरा समय समाप्त हो गया है, मैं अगली बार बिंदु 3 के लिए इस तरह का एक और उदाहरण देने जा रहा हूँ, "निश्चित रूप से विहित भविष्यवक्ताओं की ओर से परमानंद व्यवहार के रूप में लेबल की गई हर चीज को ऐसा नहीं माना जा सकता है।"

एरिक वोलाक द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा
 प्रारंभिक संपादन कैथरीन एल्स द्वारा प्रमुख संपादन
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय: भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 7

पिछले सप्ताह हम रोमन अंक IV के अंतर्गत थे, "भविष्यवक्ताओं के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन के तरीके और साधन," बिंदु सी पर, "हम किस अर्थ में इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के बीच परमानंद की बात कर सकते हैं?" कई मुख्य धारा के बाइबिल अध्ययनों में इस आनंदमय घटना का बहुत कुछ उल्लेख किया गया है जो प्राचीन दुनिया में इज़राइल के आसपास के देशों में मौजूद थी। यह सिद्धांत दिया गया है कि आनंदमय घटनाएँ इज़राइल में भविष्यवक्ता का स्रोत थीं, और इज़राइल इससे अवगत था और आप इज़राइल के पैगम्बरों के बीच इसी तरह की घटनाएँ पा सकते हैं। सी. में हम बिंदु 3 तक नीचे आ गए थे, "निश्चित रूप से विहित भविष्यवक्ताओं की ओर से परमानंद व्यवहार के रूप में लेबल की गई हर चीज़ को ऐसा नहीं माना जा सकता है।" जो लोग इसराइल के भविष्यवक्ताओं के बीच परमानंद की घटनाओं के साक्ष्य की तलाश कर रहे हैं, उन्होंने भविष्यवाणी की किताबों में विभिन्न चीज़ों की ओर इशारा किया है जो जरूरी नहीं कि भविष्यवाणी की किताबों में थीं, बल्कि ऐतिहासिक किताबों में थीं जहां भविष्यवाणी की घटनाएं घटित हुईं या उनका उल्लेख किया गया था। मैंने पिछली बार उल्लेख किया था कि आपको इज़राइल के पैगम्बरों के बीच परमानंद की बात करते समय अतिशयोक्ति से सावधान रहना होगा, और अक्सर जो साक्ष्य उपयोग किया जाता है वह वास्तव में ठोस नहीं होता है - जैसे कि प्रतीकात्मक कार्य, मजबूत भावनात्मक अभिव्यक्ति, जैसा कि हमने यशायाह 21:3 में देखा था। और यिर्मयाह 23:9. फिर 'मैं,' या भाषण की प्रथम-पुरुष शैली जहां भविष्यवक्ता ऐसे बोलते हैं जैसे कि वे स्वयं भगवान हों, पहले व्यक्ति में बोल रहे हों। मैंने वहां उल्लेख किया है कि यह बस एक शैली है जिसके द्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि संदेशवाहक वास्तव में अपना शब्द नहीं दे रहा है बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति का शब्द दे रहा है जिसने उसे भेजा है। हमने 2 राजा 18:29 को देखा जहां एक दूत अशशूर के राजा सन्हेरीब का संदेश हिजकिय्याह के पास लाता है - और वह पहले व्यक्ति में सन्हेरीब के लिए बोलता है। तो, फिर से, वह दूत निश्चित रूप से परमानंद में नहीं था, और प्रथम व्यक्ति का भाषण

इस निष्कर्ष के लिए कोई आधार नहीं देता है कि जो पैगंबर इसका उपयोग करता है वह परमानंद की स्थिति में रहा होगा।

आखिरी बिंदु जो मुझे संख्या 3 में उस शीर्षक के अंतर्गत नहीं मिला, वह है, "भविष्यवक्ताओं को पागल करार देना।" उस संबंध में कभी-कभी 2 राजा 9:11 का उल्लेख किया जाता है। वहाँ आपके पास भविष्यवक्ताओं की मंडली का एक सदस्य है, "जब येहू अपने साथी अधिकारियों के पास गया, तो उनमें से एक ने उससे पूछा, 'क्या सब ठीक है?' यह पागल आदमी तुम्हारे पास क्यों आया? कुछ लोग उस साक्ष्य में देखते हैं कि इन भविष्यवक्ताओं को पागलों के रूप में देखा जाता था और इसका कारण यह था कि उनमें उन्मादपूर्ण व्यवहार की विशेषता थी। इसका परमानंद वाला हिस्सा निश्चित रूप से वहाँ स्पष्ट नहीं है। यह किसी व्यक्ति द्वारा येहू के पास आए इस व्यक्ति का मज़ाक उड़ाते हुए की गई टिप्पणी है।

यदि आप यिर्मयाह 29:26 को देखें तो आपके पास एक समान संदर्भ है। यिर्मयाह 29:25 में आपके पास बेबीलोन के झूठे भविष्यवक्ता के शब्द हैं। यिर्मयाह लिखता है, "शमायाह से कहो, सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यह कहता है: तू ने यरूशलेम के सब लोगों को, मासेयाह याजक के पुत्र सपन्याह को, और अन्य सब लोगों को अपने नाम से पत्र भेजे हैं पुजारी तू ने सपन्याह से कहा, यहोवा ने तुझे यहोयादा के स्थान पर यहोवा के भवन का अधिकारी होने के लिये याजक नियुक्त किया है; जो पागल भविष्यवक्ता के समान काम करता हो, उसे तू काठ और बेड़ियों में डाल देना। तो फिर आपने अनातोत के यिर्मयाह को क्यों नहीं डांटा, जो आपके बीच भविष्यवक्ता होने का दिखावा करता है।" अब "पागल" में यिर्मयाह को पागल के रूप में संदर्भित किया गया है, लेकिन एक झूठे भविष्यवक्ता द्वारा उसे पागल के रूप में चित्रित किया गया है। मुझे नहीं लगता कि यह आनंदित होने के बारे में कुछ कहता है। यह सिर्फ कोई है जो यिर्मयाह को उसके संदेश के कारण बदनाम करना चाहता है। इसलिए उसे पागल कहा जाता है।

यदि आप जॉन 10:20 में नए नियम पर जाएं तो यह दिलचस्प है, "[यीशु के] इन शब्दों पर यहूदी फिर से विभाजित हो गए। उनमें से बहुतों ने कहा, 'उसमें दुष्टात्मा है और वह पागल

हो गया है। उसकी बात क्यों सुनें?" यीशु को पागल क्यों कहा गया? इसलिए नहीं कि वह परमानंद था, यह उसके संदेश के कारण है। आपको इस झूठे भविष्यवक्ता के साथ यिर्मयाह में भी ऐसा ही मिलता है। इसका परमानंद से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन संदेश से इसका सब कुछ लेना-देना है। नए नियम में अधिनियम 26:24 में एक और पाठ है जहां पॉल अग्रिप्पा और फेस्तुस के सामने है और अपने विश्वास की गवाही दे रहा है। आपने पढ़ा, "इस समय फेस्तुस ने पॉल के बचाव में बाधा डाली। 'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, पॉल!' वह चिल्लाया। 'आपकी महान सीख आपको पागल बना रही है। परन्तु इस पर पौलुस ने उत्तर दिया, 'मैं फेस्तुस पागल नहीं हूँ। मैं जो कह रहा हूँ वह सत्य और उचित है।' उन्होंने क्या कहा था? ठीक है, यदि आप श्लोक 22 पर वापस जाएं, "मुझे आज भी भगवान की मदद मिली है और इसलिए मैं यहां खड़ा हूँ और गवाही देता हूँ। भविष्यवक्ताओं और मूसा ने जो कहा था, उसके अलावा मैं कुछ भी नहीं कह रहा हूँ, कि मसीह कष्ट सहेगा और मृतकों में से सबसे पहले जी उठेगा और अपने लोगों और अन्यजातियों के लिए जीवन का प्रचार करेगा। फेस्तुस कहता है, "तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।" इसका परमानंद की स्थिति से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए, भविष्यवक्ताओं को "पागल" के रूप में लेबल करना कुछ लोगों द्वारा उन्हें परमानंद मानने के तर्क के रूप में उपयोग किया गया है, लेकिन यह एक मजबूत तर्क नहीं है।

आइए सी के तहत 4 पर चलते हैं, जो है, "इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के बीच सबसे अधिक बार प्रदर्शित परमानंद व्यवहार का रूप दूरदर्शी अनुभव का है, न कि जंगली असामान्य व्यवहार का।" यदि आप यह कहने जा रहे हैं कि बाइबिल के पाठ में कुछ भी है जो इज़राइल के पैगंबरों के बीच परमानंद की घटनाओं की ओर इशारा करता है, तो आप जो पाएंगे वह दूरदर्शी स्थिति है, न कि जंगली, असामान्य या अनियमित व्यवहार। यह दर्शन दिव्य रहस्योद्घाटन का एक साधन था जो भविष्यवक्ताओं के पास अक्सर आता था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह कुछ भविष्यवक्ताओं के साथ दूसरों की तुलना में अधिक बड़ी भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, आप इसे यहजेकेल के साथ अक्सर पाते हैं। उनकी पुस्तक का पूरा दूसरा भाग एक भविष्य के मंदिर का दर्शन और उससे जुड़ी कई बातें हैं।

आप इसे यिर्मयाह में बहुत कम पाते हैं। आप यशायाह में दूरदर्शी स्थितियों का बिखराव पाते हैं। इसलिए यह हर पैगम्बर से दूसरे पैगम्बर में भिन्न होता है। लेकिन पैगम्बर के माध्यम से अपने लोगों तक ईश्वर के वचन को संप्रेषित करने का दूरदर्शी साधन कुछ ऐसा है जो बहुत आम है। अब, यदि आप मुख्यधारा के साहित्य को देखें तो उस संपूर्ण दूरदर्शी चीज़ पर उचित मात्रा में ध्यान दिया जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि यह केवल एक साहित्यिक उपकरण है और इसमें कोई वास्तविक ऐतिहासिक वास्तविकता नहीं है; यह ठीक उसी तरह है जैसे लेखक ने दिव्य रहस्योद्घाटन की धारणा को चित्रित किया है। अन्य लोग मनोवैज्ञानिक दिशा में जाते हैं और कहते हैं कि ये वास्तव में मतिभ्रम हैं जो स्वयं भविष्यवक्ताओं के मानस से निकलते हैं। यदि आप इनमें से किसी भी दिशा में जाते हैं तो आप दूरदर्शी तरीकों से दिव्य रहस्योद्घाटन से इनकार कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि बाइबिल का पाठ हमें जो बता रहा है वह यह है कि ईश्वर ने भविष्यवक्ताओं को अपना संदेश संप्रेषित करने के लिए दर्शन का उपयोग किया था।

खैर, दर्शन क्या है? इसका वर्णन करना कठिन है, मुझे नहीं पता कि आपमें से किसी ने कोई सपना देखा है या नहीं। मेरे पास कभी नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि जागते हुए व्यक्ति को जो स्वप्न दिखाई देता है, वह स्वप्न तब होता है जब हम सो रहे होते हैं। हम सपने देखने से परिचित हैं। सपने बहुत वास्तविक हो सकते हैं—कभी-कभी बहुत वास्तविक भी। लेकिन एक दृष्टि वह व्यक्ति है जो जागृत अवस्था में है जहां वह किसी अन्य वास्तविकता में स्थानांतरित हो जाता है। वह चीज़ें देखता है, वह चीज़ें सुनता है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे वह वहां था। यशायाह 6 में, यशायाह भगवान के उस दर्शन को सेराफिम के साथ मंदिर में ऊंचे और ऊंचे स्थान पर देखता है, और सेराफिम वेदी से कटोरा लेता है। यशायाह ने होश नहीं खोया है क्योंकि संचार आगे-पीछे हो रहा है। उसने सामान्य चेतना नहीं खोई है बल्कि एक और वास्तविकता देखता है। ऑगस्टीन ने कहा कि हमारी चेतना का हास नहीं हुआ है, बल्कि चेतना को शारीरिक इंद्रियों से मुक्त कर दिया गया है, ताकि "ईश्वर जो दिखाना चाहता था वह दिखाया जा सके।" भविष्यवक्ता स्वयं को किसी अन्य आध्यात्मिक दुनिया में महसूस करते हैं, जिसमें वे आवाजें सुनते हैं और छवियां देखते हैं। उस दिन हमें जो कुछ

मिला, उसका यह काफ़ी अच्छा वर्णन प्रतीत होता है। यदि आप इन भविष्यवक्ताओं में से किसी एक के बगल में खड़े होते तो आपने कुछ भी नहीं देखा या सुना होता—कम से कम मैं इसे इसी तरह समझता। लेकिन उन्होंने ऐसा किया और भगवान ने उनसे इस तरह से संवाद किया।

अब इज़राइल के पैगंबरों के साथ परमानंद की बात पर वापस आने के लिए, मुझे लगता है कि दिव्य रहस्योद्घाटन के इस दूरदर्शी रूप को "परमानंद" कहना स्वीकार्य है। इसके लिए कुछ बाइबिल आधार हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 10:10, जहां आपके पास पीटर का यह वर्णन है कि उसने स्वर्ग से एक चादर उतरते हुए देखा जिस पर शुद्ध और अशुद्ध जानवर हैं। आपने पढ़ा, "वह भूखा हो गया और कुछ खाना चाहता था और जब भोजन तैयार किया जा रहा था, तो वह बेहोश हो गया।" यदि आप वहां के ग्रीक पाठ को देखें, तो "ट्रान्स" ग्रीक में *एक्स्टेसिस* शब्द का अंग्रेजी अनुवाद है। तो वह परमानंद में था. "उसने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, एक बड़ी चादर जैसी कोई चीज़ चारों कोनों से ज़मीन पर उतारी जा रही थी।" पीटर के उस दूरदर्शी अनुभव को *परमानंद* शब्द द्वारा वर्णित किया गया है।

प्रेरितों 22:17 में, पॉल के साथ भी हमारी यही बात है जहाँ वह एक दर्शन देखता है। और हम पढ़ते हैं, "जब मैं यरूशलेम लौटा और मंदिर में प्रार्थना कर रहा था, तो मैं बेहोश हो गया।" वह फिर से *परमानंद* है। "और मैंने देखा," वहां की भाषा पर ध्यान दें, यह बिल्कुल भविष्यवक्ता की तरह है, "मैंने प्रभु को बोलते हुए देखा। 'जल्दी करो,' उसने मुझसे कहा, 'तुरंत यरूशलेम छोड़ दो क्योंकि वे मेरे बारे में तुम्हारी गवाही स्वीकार नहीं करेंगे।'" यह पुराने नियम के दूरदर्शी अनुभव में हमें जो मिलता है, उसके समान ही लगता है। तो मुझे ऐसा लगता है कि हम दिव्य रहस्योद्घाटन को प्राप्त करने के इस दूरदर्शी साधन को "दूरदर्शी परमानंद" कह सकते हैं। यदि पुराने नियम में कुछ भी है जो यहूदी पैगम्बरों के बीच परमानंद की घटनाओं के माध्यम से बोलता है तो मुझे ऐसा लगता है कि यह एक दूरदर्शी अनुभव है, न कि जंगली या अनियमित व्यवहार।

आइए फिर रोमन अंक V पर चलते हैं, जो है, "भविष्यवक्ताओं का उपदेश।" मैं बस

इस बारे में कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। हम कुछ औपचारिक विशेषताओं और फिर सामग्री की कुछ विशेषताओं को देखेंगे लेकिन यह सब बहुत सामान्य है। ए के अंतर्गत, "सामान्य टिप्पणियाँ," 1., "भविष्यवक्ता परमेश्वर के वचन के सबसे पहले और सबसे प्रमुख उद्घोषक थे।" भविष्यवक्ताओं को दिव्य रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ, हाँ, लेकिन उन्हें इसे अपने तक ही सीमित रखने के लिए दिव्य रहस्योद्घाटन प्राप्त नहीं हुआ। उन्होंने इसे अन्य लोगों को घोषित करने के लिए प्राप्त किया। उन्होंने ऐसा मुख्य रूप से उपदेश देकर किया। अतः भविष्यवक्ता काफी हद तक उपदेशक थे। अब हो सकता है कि कुछ सामग्री लिखी गई हो और लिखित रूप में प्रस्तुत की गई हो, लेकिन अधिकांश भाग में आप भविष्यवक्ताओं को सार्वजनिक मंचों पर जाकर उपदेश देते हुए और अपने समकालीनों को ईश्वर का संदेश देते हुए पाएंगे, चाहे वह किसी राजा के लिए हो या किसी अन्य के लिए। बड़े पैमाने पर लोग भविष्यवाणी की किताबें काफी हद तक उनकी मौखिक उद्घोषणा का लिखित रिकॉर्ड हैं। हम रोमन अंक आठवीं के अंतर्गत उस पर वापस आने जा रहे हैं, "भविष्यवाणी पुस्तकों की रचना-क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?" हम उस प्रश्न के बारे में थोड़ा आगे बात करेंगे। लेकिन विहित पुस्तकें काफी हद तक उनकी मौखिक उद्घोषणा का लिखित रिकॉर्ड हैं। इस विचार का अभाव है कि उन्होंने अपने संदेश किसी प्रकार की आनंदमय स्थिति में दिए थे। उन्होंने अपना संदेश समझने योग्य भाषा में दिया और पाठ के संकेत से उन्होंने इसे बोलने या उपदेश देने के बहुत ही शांत और सामान्य तरीके से कहा। तथ्य यह है कि उन्हें दूसरों द्वारा अजीब माना जाता था, कभी-कभी उनके प्रतीकात्मक कृत्यों के कारण, कभी-कभी उनकी भावनात्मक अभिव्यक्तियों या किसी अन्य कारण से, यह कहने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं है कि वे परमानंद थे। लेकिन वे सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण परमेश्वर के वचन के उद्घोषक थे।

2. "भविष्यवक्ताओं का संदेश ईश्वर के रहस्योद्घाटन की एक विश्वसनीय घोषणा थी।" लेकिन, और यहां एक योग्यता है, इसकी प्रस्तुति के रूप में किसी व्यक्तिगत तत्व का बहिष्कार नहीं। तो रहस्योद्घाटन और उद्घोषणा के बीच क्या संबंध है? जब आप यह प्रश्न पूछते हैं, तो यह बहुत महत्वपूर्ण है कि रहस्योद्घाटन और उद्घोषणा के बीच कोई तनाव

या विभाजन न रखा जाए। दूसरे शब्दों में, भविष्यवक्ताओं का उपदेश ईश्वर ने उन पर जो प्रकट किया उसका एक विश्वसनीय प्रतिनिधित्व था।

हालाँकि, और यहीं पर आपके हैंडआउट के बिंदु 2 पर योग्यता उत्पन्न होती है, संदेश के प्रतिनिधित्व में व्यक्तिगत भविष्यवक्ता का व्यक्तिगत तत्व नियोजित होता है। दूसरे शब्दों में, यदि आप यशायाह, यिर्मयाह, अमोस, ईजेकील के संदेशों को देखें और उद्घोषणा के स्वरूप की तुलना करें तो आप पाएंगे कि भाषा, शैली, शब्दों का चयन, व्यक्तित्व लक्षण, व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, कृषि बनाम पौरोहित्य. यिर्मयाह के संदेश से यह स्पष्ट है कि वह आमोस से बहुत अलग व्यक्ति था। यिर्मयाह स्पष्ट रूप से एक बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति है, और यह उसके द्वारा दिए गए संदेशों से पता चलता है। यशायाह में आप यशायाह के आंतरिक व्यक्तित्व का बहुत कम या कुछ भी नहीं देखते हैं। तो आप विभिन्न पैगम्बरों के संदेशों की भाषा और शैली में अंतर देखते हैं जो पैगम्बरों के व्यक्तित्व से संबंधित हैं।

अब जब आप इसे देखते हैं, तो मुझे लगता है कि यहां एक रहस्य है और यह रहस्य है कि भगवान किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं, गुणों, पृष्ठभूमि और प्रभावित करने के विभिन्न तरीकों को कैसे अपनाते हैं और उनका उपयोग अपनी उद्घोषणा में करते हैं। शब्द। आपको परमेश्वर के वचन की उद्घोषणा में परमात्मा और मानव का यह अंतर्संबंध मिलता है। तो यह मनुष्य का शब्द है लेकिन साथ ही यह भगवान का शब्द भी है। जहां कहीं भी आपको परमात्मा और मानव के बीच उस तरह का अंतर्संबंध मिलता है, आप एक रहस्य के सामने आ जाते हैं। हम पूरी तरह से यह नहीं समझा सकते कि यह कैसे काम करता है या यह कैसे काम करता है। आपके पास धर्मग्रंथ की प्रेरणा है जो वास्तव में भविष्यवक्ताओं की प्रेरणा के समान है क्योंकि धर्मग्रंथ ईश्वर का शब्द है, धर्मग्रंथ का लेखक ईश्वर के वचन की घोषणा कर रहा है, फिर भी उसका अपना व्यक्तित्व लेखन में सामने आता है। मुझे लगता है कि वोस इस बिंदु पर अच्छी तरह से चर्चा करता है। पृष्ठ सात पर उनके द्वारा लिखे गए एक निबंध के उद्धरण, जिसका शीर्षक है, "एक धार्मिक अनुशासन के रूप में बाइबिल धर्मशास्त्र और विज्ञान का विचार।" ध्यान दें कि वह क्या कहता है, पृष्ठ सात। वह कहते हैं, "क्योंकि, ईश्वर ने मानव उपकरणों के माध्यम से सत्य को प्रकट करने का निर्णय लिया है,

इसका मतलब यह है कि ये उपकरण आम लक्ष्य के लिए असंख्य और विविध अनुकूलन वाले होने चाहिए। इसलिए, व्यक्तिगत रंग-रूप और प्रतिनिधित्व का एक अनोखा तरीका न केवल सत्य के पूर्ण बयान के लिए हानिकारक है, बल्कि सीधे तौर पर इसके अधीन है। ईश्वर के रहस्योद्घाटन की पद्धति में अपने स्वयं के उद्देश्य के लिए व्यक्तित्वों को आकार देना और तराशना शामिल है। इसे ठोस रूप से कहने के लिए: हमें इसकी कल्पना नहीं करनी चाहिए जैसे कि भगवान ने पॉल को 'तैयार' पाया, जैसा कि यह था, और रहस्योद्घाटन के एक अंग के रूप में पॉल का उपयोग करते हुए, इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ा कि पॉल का द्वंद्वात्मक दिमाग प्रतिबिंबित होता है सत्य को द्वंद्वात्मक, हठधर्मी रूप में सत्य की हानि के लिए। तथ्य ये हैं: सत्य, स्वाभाविक रूप से, अन्य पहलुओं के अलावा, एक द्वंद्वात्मक और हठधर्मिता पक्ष है, और भगवान ने इस पक्ष को पूर्ण अभिव्यक्ति देने का इरादा किया, पॉल को गर्भ से चुना, उसके चरित्र को ढाला, और उसे ऐसा प्रशिक्षण दिया कि सत्य उनके माध्यम से जो खुलासा हुआ, वह अनिवार्य रूप से उनके दिमाग पर हठधर्मिता और द्वंद्वात्मक प्रभाव डालता है। और फिर अगला भाग है, "यहाँ दैवीय निष्पक्षता और मानवीय व्यक्तित्व न तो टकराते हैं और न ही एक-दूसरे को बाहर करते हैं, क्योंकि पॉल नाम का व्यक्ति, अपने पूरे चरित्र, अपने उपहारों और अपने प्रशिक्षण के साथ, दैवीय योजना के अंतर्गत समाहित है।" दूसरे शब्दों में, ईश्वर ने ठीक उसी प्रकार के व्यक्ति और मन को पहले से तैयार किया था जिसे वह चाहता था ताकि उसके माध्यम से कोई विशेष संदेश दिया जा सके। और पॉल के मामले में, उनका द्वंद्वात्मक और तार्किक दिमाग उनके कुछ लेखों में तार्किक वाक्य उत्पन्न कर सकता है। खैर, यह परमेश्वर का उद्देश्य है कि उसका वचन उस प्रकार का हो जैसा उसने व्यक्ति को करने के लिए तैयार किया है। "मानव केवल वह कांच है जिसके माध्यम से दिव्य प्रकाश प्रतिबिंबित होता है, और जिन सभी पक्षों और कोणों में इस कांच को काटा गया है, वे इसके प्रिज्मीय रंगों के सभी धन में सत्य को हमें वितरित करने के अलावा और कोई उद्देश्य नहीं रखते हैं।" अब इसे अक्सर "प्रेरणा का जैविक दृष्टिकोण" कहा जाता है, जहां इस मानव व्यक्ति को इस प्रक्रिया में शामिल किया जाता है और संदेश के निर्माण में भगवान द्वारा इसका उपयोग या नियोजित किया जाता है।

आप में से कुछ लोग संभवतः नीदरलैंड के धर्मशास्त्री जीसी बर्कौवर से परिचित हैं। उन्होंने *स्टडीज ऑफ डॉगमैटिक्स* नामक सिद्धांत और खंड लिखे, जिसे वह उस समय लिख रहे थे जब मैं 1960 के दशक में नीदरलैंड में अध्ययन कर रहा था। वह बहुत अच्छे विद्वान हैं। वह इस प्रश्न के बारे में कुछ दिलचस्प बातें कहते हैं और समय के साथ पवित्रशास्त्र के बारे में उनका दृष्टिकोण कैसे बदल गया। कुछ लोगों ने प्रारंभिक बर्कौवर और बाद के बर्कौवर के बारे में बात की है लेकिन प्रारंभिक बर्कौवर ने इस प्रश्न पर इस तरह से बात की है। उन्होंने कहा, "आप रहस्य को कहां रखते हैं?" और यदि आप शुरूआती बर्कौवर से यह प्रश्न पूछते हैं, "एक शब्द भगवान का शब्द और मनुष्य का शब्द दोनों कैसे हो सकता है?" बर्कौवर का कहना है कि रहस्य भगवान की आत्मा और मानव चेतना के बीच काम करने की प्रकृति में है, दिव्य और मानव का प्रतिच्छेदन ताकि मानव व्यक्तित्व को भगवान के शब्द की उद्घोषणा में ले जाया जा सके। वहाँ रहस्य है। वह वास्तव में कैसे काम करता है? मुझे लगता है कि रहस्य को यहीं रखा जाना चाहिए और इसे वहीं छोड़ देना चाहिए। यदि आप पवित्रशास्त्र की सभी विशिष्टताओं को देखें, "मैं अपने शब्द तुम्हारे मुँह में डालूँगा," तो ऐसा प्रतीत होता है कि उद्घोषणा मानव व्यक्तित्व में है। परिणाम यह है कि मानवीय मध्यस्थता के बावजूद धर्मग्रंथ ईश्वर का अचूक शब्द बना हुआ है। क्योंकि यह ईश्वर का शब्द है और यह ईश्वर का अचूक शब्द रहता है।

बाद के बर्कौवर ने उस प्रश्न का फिर से उत्तर दिया - "मानव शब्द एक ही समय में भगवान का शब्द कैसे हो सकता है?" - लेकिन रहस्य को एक अलग बिंदु पर रखता है। बाद के बर्कौवर में, सवाल यह है कि मानव शब्द कैसे हो सकता है - जो कि मानव होने के कारण अनिवार्य रूप से त्रुटिपूर्ण है - एक मानव शब्द और इसलिए एक त्रुटिपूर्ण शब्द, एक ही समय में भगवान का शब्द कैसे हो सकता है? बाद के बर्कौवर में, रहस्य यह है कि एक गलत मानवीय शब्द के लिए एक ही समय में भगवान का शब्द होना और दिव्य सत्य को व्यक्त करना कैसे संभव है। अब ऐसा लग सकता है जैसे मैं बड़बड़ा रहा हूँ। लेकिन बाद के बर्कौवर ने कहा, धर्मग्रंथ त्रुटिहीन नहीं है बल्कि यह ईश्वर का वचन है। ऐसा होना अनेक समस्याओं को जन्म देता है। हम यह कहकर यह पता लगाने की कोशिश करने लगते हैं कि

कौन सा शब्द बेहतर है, कौन सा विश्वसनीय है और कौन सा नहीं। तो यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है लेकिन यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है जब आप भविष्यसूचक लेखन को देखते हैं तो वहां व्यक्तित्व भिन्न होते हैं। जिस तरह से संदेश तैयार किया गया है वह उसे प्रतिबिंबित करता है, लेकिन यह भगवान का शब्द ही रहता है।

आइए बी पर चलते हैं, "भविष्यवाणी उद्घोषणा की कुछ औपचारिक विशेषताएं।" और 1. है, "संदेश प्रत्यक्ष और सजीव हैं—अमूर्त और शुष्क नहीं।" जब आप भविष्यवाणी की किताबें पढ़ते हैं, तो आप पाते हैं कि भविष्यवक्ता आए और उन्होंने अपने दर्शकों से ज्वलंत, सशक्त और शक्तिशाली तरीके से बात की। वे अमूर्त, शुष्क, सैद्धांतिक, औपचारिक व्याख्यान नहीं हैं। मैं आपको केवल कुछ उदाहरण देता हूँ: यिर्मयाह 7 इसे स्पष्ट करने के लिए एक अच्छा अध्याय है। इसे अक्सर *यिर्मयाह का मंदिर उपदेश कहा जाता है*। आप पहले पद में यिर्मयाह 7 के संदर्भ को देखें, "यह वह वचन है जो प्रभु की ओर से यिर्मयाह के पास आया: 'प्रभु के घर के द्वार पर खड़े हो जाओ और वहां इस संदेश का प्रचार करो।'" यहोवा ने यिर्मयाह से कहा कि वह बाहर जाए और मन्दिर के द्वार पर उसे ढूंढे और यह सन्देश दे, "हे यहूदा के सब लोगों, जो यहोवा की आराधना करने के लिये इन द्वारों से होकर आते हो, यहोवा का वचन सुनो। सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, यह कहता है: अपने चालचलन और काम सुधारो, और मैं तुम्हें इस स्थान में रहने दूंगा। भ्रामक शब्दों पर भरोसा मत करो और कहो, 'यह भगवान का मंदिर है, भगवान का मंदिर, भगवान का मंदिर!' यदि तुम सचमुच अपनी चाल-चलन और काम-काज बदलो, और एक दूसरे के साथ न्याय से व्यवहार करो, यदि तुम परदेशी, अनाथ, वा विधवा पर अन्धे न करो, और इस स्थान में निर्दोष का खून न बहाओ, और यदि तुम अपने देवताओं के पीछे दूसरे देवताओं का अनुसरण न करो। हानि उठाओ, तो मैं तुम को इस स्थान में, इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दिया था, सदा सर्वदा के लिये रहने दूंगा। परन्तु देखो, तुम व्यर्थ की भ्रामक बातों पर भरोसा रखते हो। क्या तुम चोरी करोगे और हत्या करोगे, व्यभिचार करोगे और झूठी गवाही दोगे, बाल के लिये धूप जलाओगे और अन्य देवताओं के पीछे चलोगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो, और फिर आकर इस भवन में, जिस पर मेरा नाम है, मेरे साम्हने खड़े होकर

कहोगे, 'हम सुरक्षित हैं—सुरक्षित हैं। ये सब घिनौने काम करते हो?' क्या यह घर जिस पर मेरा नाम है, तुम्हारे लिये डाकुओं का अड्डा बन गया है? लेकिन मैं देखता रहा हूँ!' प्रभु की घोषणा है. अब शीलो के उस स्थान पर जाओ, जहाँ मैं ने पहिले आपके नाम के लिथे निवास बनाया, और देखो कि अपक्की प्रजा इस्राएल की दुष्टता के कारण मैं ने उसका क्या हाल किया है। शमूएल के नगर का यही हाल हुआ और उन्होंने उसके तम्बू को नष्ट कर दिया। “यहोवा की यह वाणी है, कि जब तुम ये सब काम कर रहे थे, तब मैं ने तुम से बारंबार कहा, परन्तु तुम ने न सुनी; मैंने तुम्हें फोन किया, लेकिन तुमने जवाब नहीं दिया. इसलिये जो मैं ने शीलो से किया, वैसा ही अब उस भवन से भी करूंगा जिस पर मेरा नाम है, अर्थात् जिस मन्दिर पर तू ने भरोसा किया, और जो स्थान मैं ने तुझे और तेरे पुरखाओं को दिया है, वैसा ही मैं ने तुझ को अपने साम्हने से दूर कर दूंगा, जैसा मैं ने तेरे सब भाइयोंके साय किया है। इस्राएली, एप्रेम के लोग।” तो यहाँ वह मंदिर के द्वार पर खड़ा होकर कह रहा है, "यह मंदिर नष्ट होने वाला है।" मन्दिर वह है जिसकी इस्राएली महिमा करते थे। यह उनके बीच में परमेश्वर का निवास था। वे इन सभी अनुष्ठानों से गुज़रे, लेकिन उनका जीवन कुछ और ही कहानी कह रहा था। जैसा कि कहा गया है, वे अन्य देवताओं का अनुसरण करते हुए बाल के लिये धूप जला रहे थे। अब यह एक शक्तिशाली संदेश है, और पैगम्बरों की यह विशेषता है कि वे इस तरह सशक्त तरीके से संदेश देते हैं - अमूर्त और शुष्क व्याख्यान नहीं।

हम कई अन्य उदाहरण देख सकते हैं, लेकिन मैं ऐसा करने में समय नहीं लगाऊंगा। यह जोएल 2 की भाषा है जहाँ टिड्डियों की महामारी का वर्णन है। यह वास्तव में वर्णनात्मक और बहुत सुंदर मार्ग है। लेकिन यह आने वाले फैसले का एक अंश है। टिड्डियाँ दुनिया के आने वाले फैसले का प्रतीक थीं। अश्शूर की राजधानी नीनवे पर आने वाले न्याय के वर्णन के साथ नहूम को देखें। इसलिए संदेश प्रत्यक्ष हैं, अमूर्त और शुष्क नहीं।

2. है, "भविष्यवक्ता अक्सर अपनी बात मनवाने के लिए शब्दों का सहारा लेते थे।" भविष्यवाणी की पुस्तकों में इसके बारे में बहुत कुछ है, यदि आप केवल अंग्रेजी पाठों को देखते तो शायद आपको इसके बारे में पता होता क्योंकि यदि आप एक भाषा से अनुवाद करने का प्रयास कर रहे हैं तो शब्दों पर नाटक करना सबसे कठिन चीजों में से एक है

जिससे आप निपट सकते हैं। दूसरे करने के लिए। और शब्दों के खेल को ग्राही भाषा में ले जाना अक्सर असंभव होता है।

मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ। यह यशायाह 5:7 है, जिसमें यदि आप वहां के इब्रानी भाषा को देखें, तो आप पाएंगे, "और उस ने न्याय की बाट जोही, परन्तु खून-खराबा देखा।" आप *मिशपैट* और *मिसपोक* वाले शब्दों का खेल देखते हैं, ध्वनि में लगभग समान हैं, लेकिन आप इसे अनुवाद में कैसे ले जाते हैं? लेकिन फिर वहां दूसरा वाक्यांश, उसने धार्मिकता की तलाश की, *लेसेडेका*, लेकिन देखो एक संकट का रोना, *सदक*। उनमें से दो आपको उस श्लोक में मिलते हैं। इस तरह के शब्दों का नाटक उस मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करने का एक बहुत ही प्रभावी तरीका है जो कहा जा रहा है। इसलिए यह कथन की ताकत और प्रभावशीलता को बढ़ाता है, लेकिन अनुवाद में इसे पकड़ना मुश्किल है।

एनआईवी में यशायाह 7:9 को देखें, "यदि आप अपने विश्वास में दृढ़ नहीं हैं तो आप बिल्कुल भी खड़े नहीं रह पाएंगे।" वहां उन्होंने शब्दों के उस खेल का कुछ अंश कैद किया है जो हमने वहां सुना था। जहां तक इसके मूल अर्थ की बात है तो आमीन का अर्थ "पुष्टि करना" या "समर्थन करना" है / हिफिल स्टेम में इसका अर्थ है "विश्वास" या "विश्वास।" निफल तने में इसका अर्थ है "पुष्टि करना" या "स्थापित करना"। तो आपको हिफिल और निफल के बीच अंतर मिलता है और आपको विश्वास करने का विचार स्थापित होता है। लेकिन जब आप इसे हिब्रू में पढ़ते हैं तो आपको ध्वनि में वह समानता नहीं मिलती जो आपको मिलती है।

मैं आपको एक और उदाहरण देता हूँ। यह एक पाठ्य समस्या है जो पाठ्य समस्या के साथ-साथ शब्दों के प्रयोग का एक संयोजन है। यदि आप यिर्मयाह 23:33 को देखें - जो वास्तव में सेप्टुआजेंट और वुल्गेट का अनुसरण करता है, जो मुझे लगता है कि यहां बेहतर हैं - मैसोरेटिक पाठ से। मैं एक मिनट में सेप्टुआजेंट पाठ पर वापस आऊंगा। लेकिन यदि आप मैसोरेटिक पाठ का अनुसरण करते हैं तो अनुवाद होगा, "जब इनमें से कोई व्यक्ति या भविष्यवक्ता या पुजारी आपसे पूछता है, 'प्रभु का बोझ क्या है?' तब तू उन से कहेगा, 'तुम ही बोझ हो।' शासक कहता है, 'और मैं तुम्हें त्याग दूंगा।' अब वहाँ शब्दों पर एक खेल है

और शब्दों पर खेल *मस्सा* शब्द के साथ है जिसे आप हिब्रू पंक्ति में अंतिम शब्द देखते हैं। यदि आप वहां प्रारंभ में देखें तो वहां *मस्सा* शब्द है। प्रभु का भार क्या है? *मस्सा* एक ऐसा शब्द है जिसका दोहरा अर्थ होता है। इसका अर्थ "बोझ" हो सकता है या इसका अर्थ "दैवज्ञ" हो सकता है। सो, जब लोगों, भविष्यवक्ताओं या याजकों में से कोई तुम से कहता है, प्रभु का बोझ क्या है? प्रभु का दैवज्ञ या संदेश क्या है? तब तू उन से कहेगा, तुम यहोवा के बोझ हो। संदेश के अर्थ में नहीं बल्कि अपनी पीठ पर बोझ के अर्थ में। आप देखिए, *मस्सा* शब्द के दोहरे अर्थ पर एक नाटक है। मुझे लगता है कि पाठ को इसी तरह पढ़ा जाना चाहिए। यह सेप्टुआजेंट द्वारा पूर्वकल्पित हिब्रू पाठ है। प्रभु का भार क्या है? तुम बोझ हो। यदि आपने एनआईवी और किंग जेम्स को देखा, "प्रभु का बोझ क्या है? तू कहेगा, उनके नीचे कैसा बोझ?" मैसोरेटिक पाठ इसी प्रकार पढ़ा जाता है। "प्रभु का बोझ क्या है? हम उनसे कहेंगे. कैसा बोझ?" अब आप देखिए कि यहां क्या हुआ है? सवाल यह है कि आप शब्दों को कहां बांटते हैं? क्या आप *ताव के बाद भाग करते हैं और मेम को प्रश्रवाचक* 'ही के साथ रखते हैं या आप इसे 'ही के बाद विभाजित करते हैं? मुझे ऐसा लगता है कि सेप्टुआजेंट ने शब्दों के खेल को कहीं बेहतर तरीके से रखा है। यह कहना कि "कौन सा बोझ" उतना अच्छा नहीं बैठता जितना "आप बोझ हैं।"

मैं आपको शब्दों के इस खेल का एक और उदाहरण देता हूँ। यिर्मयाह 1:11 कहता है, "प्रभु का यह वचन मेरे पास आया: 'यिर्मयाह तुम क्या देखते हो?' मैंने उत्तर दिया, 'मुझे बादाम के पेड़ की शाखा दिख रही है।' बादाम का पेड़ *हिल गया है।*" मैं बादाम के पेड़ की शाखा देख रहा हूँ। भगवान ने मुझसे कहा, 'तुमने सही देखा है क्योंकि मैं यह देखने के लिए **देख रहा हूँ** कि मेरा वचन पूरा हो गया है।' "देखना हैरान है।

तो हमने *हिलाया* और *हिलाया है*। हम इसे अनुवाद में नहीं पकड़ सकते लेकिन यह शब्दों का खेल है। *Shoqed* एक क्रिया है जिसका अर्थ है "देखना" या "इंतज़ार करना" और *shaqed* [बादाम का पेड़] उस मूल से लिया गया है। इसे सर्दियों की नींद से जल्दी जागने के कारण ही कहा जाता है कि यह जल्दी फूलने वाला पेड़ है। लेकिन जहां तक व्युत्पत्ति का

सवाल है, आपको शब्दों का *स्तब्ध/स्तब्ध* खेल मिलता है और यह कुछ ऐसा है जो भविष्यसूचक प्रवचन में काफी सामान्य है।

तीसरा, यह महज़ एक साहित्यिक तकनीक है, जो बात आप कह रहे हैं उसे अधिक प्रभावी, सशक्त तरीके से कहने का एक तरीका या साधन है। मैं उस तरह की चीज़ में अच्छा नहीं हूँ; ऐसे लेखक और भाषण देने वाले हैं जिनके पास ऐसा करने की चतुर क्षमता है। यदि आप इसे सही ढंग से कर सकते हैं तो यह बोलने का एक सशक्त तरीका है। यह मेरा अगला बिंदु है, बहुत से भविष्यवक्ताओं ने काव्यात्मक रूप में लिखा है और काव्यात्मक भाषा अक्सर एक शब्द पर आधारित होती है। एम्स्टर्डम में फ्री यूनिवर्सिटी में जहां मैंने डॉक्टरेट की उपाधि ली, वहां एक दार्शनिक थे, जो दार्शनिक मुद्दे उठाने के लिए हर समय नाटकों में शब्दों पर बात करते थे। उसने स्वाभाविक रूप से ऐसा किया।

3. है, "भविष्यवक्ता अक्सर काव्यात्मक अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं।"

भविष्यवाणी पुस्तकों के महान भाग हिब्रू कविता में हैं। आप इसे केवल यशायाह को खोलकर देख सकते हैं, या यदि मैं इस पृष्ठ को खोलता हूँ तो आप टाइपसेट को इंगित करते हुए देख सकते हैं कि यह कब गद्य है। लेकिन जब आप यशायाह को पढ़ते हैं तो आप देखते हैं कि अधिकांश पुस्तक काव्यात्मक रूप में है। कुछ पुराने अनुवाद जो टाइपसेट में दिखाई नहीं देते थे, उन अनुवादों को पढ़ने से आपको पता नहीं चलेगा कि आप कविता पढ़ रहे थे या गद्य। नए अनुवादों से संकेत मिलता है कि यह गद्य की तरह अनुच्छेदों के बजाय पंक्ति दर पंक्ति टाइपसेट है।

हिब्रू कविता समानताओं की विशेषता है। ये समानांतर रेखाएँ समानार्थी समानता, प्रतिपक्षी समानता या सिंथेटिक समानता हो सकती हैं। ये तीन मुख्य प्रकार हैं। पर्यायवाची में आपको दो पंक्तियाँ मिलती हैं जो अलग-अलग शब्दों के साथ लगभग एक ही बात कहती हैं। विपरीत में, आपको दो पंक्तियाँ मिलती हैं जहाँ पहली एक बात कहती है और दूसरी विपरीत कहती है। सिंथेटिक में, कभी-कभी दोनों के बीच एक इमारत होती है। उनके बीच की रेखाएँ खींचना कभी-कभी कठिन होता है लेकिन यह स्पष्ट है कि हिब्रू कविता समानांतर रेखाओं पर बनी है।

यशायाह 2:2 को देखें, "अन्तिम दिनों में, प्रभु के मन्दिर का पर्वत स्थापित किया जाएगा," और फिर समानांतर वाक्यांश, जो वास्तव में उस पर बनता है, "पहाड़ों में प्रमुख के रूप में।" और फिर अगला वाक्यांश, "यह पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा," और समानांतर, "सभी राष्ट्र इसकी ओर प्रवाहित होंगे।" "बहुत से लोग आएं और कहेंगे, आओ, हम प्रभु के पर्वत पर चलें।" और समानांतर वाक्यांश, "याकूब के परमेश्वर के घर तक।" "वह हमें अपने तरीके सिखाएगा," समानांतर वाक्यांश, "ताकि हम उसके पथों पर चल सकें।" "कानून सियोन से निकलेगा," समानांतर वाक्यांश, "यरूशलेम से प्रभु का वचन।" देखिए, यह उसी तरह चलता रहता है। यह अधिकांश भविष्यवाणी प्रवचनों की विशेषता है।

चौथा, सभी भविष्यवक्ता कल्पना या आलंकारिक भाषा का उपयोग करते हैं। अब जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, कल्पना, आलंकारिक भाषा अक्सर काव्यात्मक अभिव्यक्ति की विशेषता होती है। यशायाह 28 को देखें। पहले चार छंदों में, यशायाह कहता है, "धिक्कार है उस माला पर, एप्रैम के शराबियों के गौरव पर, मुरझाते फूल पर, उसकी शानदार सुंदरता पर, उपजाऊ घाटी के सिर पर स्थापित - उस शहर पर, गौरव पर उन लोगों में से जो शराब के नशे में डूबे हुए हैं! देख, प्रभु के पास एक है जो सामर्थी और सामर्थी है। वह उसे ओलों और विनाशकारी आँधी की नाई, मूसलाधार वर्षा और बाढ़ की नाई बलपूर्वक भूमि पर फेंक देगा। वह माला, एप्रैम के पियक्कड़ों का घमण्ड, पैरों तले रौंदा जाएगा। वह मुरझाता फूल, उसकी शानदार सुंदरता, उपजाऊ घाटी के सिर पर स्थापित, फसल से पहले पके हुए अंजीर की तरह होगा - जैसे ही कोई इसे देखता है और इसे अपने हाथ में लेता है, वह इसे निगल लेता है। अब वह किस बारे में बात कर रहा है? यह कौन सी पुष्पांजलि है जो एप्रैम के शराबियों का गौरव है जो विनाश की इस ओलावृष्टि के माध्यम से जमीन पर गिरा दी जाएगी? यह आलंकारिक भाषा है, जो उत्तरी साम्राज्य की राजधानी सामरिया का वर्णन करती है। सामरिया पुष्पमाला है, एप्रैम के पियक्कड़ों का घमण्ड है; "एक उपजाऊ घाटी के सिर पर स्थापित, शहर के लिए, शराब से कुचले हुए लोगों का गौरव। देखो प्रभु वह है जो शक्तिशाली और मजबूत है। ओलावृष्टि और विनाशक आँधी की तरह, भारी बारिश और बाढ़ की तरह" - यह अश्रू है जो आकर सामरिया को नष्ट कर

देगा। अशशूर विनाश की वह ओलावृष्टि है। सामरिया को पैरों तले रौंदा जाएगा। अब वहां की आलंकारिक भाषा काफी स्पष्ट है, कभी-कभी यह समझना अधिक कठिन होता है कि वास्तव में आकृति क्या दर्शाती है। कभी-कभी यह जानना मुश्किल होता है कि किसी अनुच्छेद को आलंकारिक रूप से लिया जाना है या शाब्दिक रूप से। हमें इसे सुलझाना होगा और उन कारणों पर गौर करना होगा कि क्यों हो सकता है कि आपने इसे शाब्दिक रूप से पढ़ा हो और हो सकता है कि आपने इसे आलंकारिक रूप से पढ़ा हो। यह बहुत जटिल हो सकता है।

चित्र का एक और स्पष्ट उदाहरण यशायाह 5, "दाख की बारी का गीत" है, जहां आप पढ़ते हैं, "मैं जिसे प्यार करता हूं उसके लिए उसके अंगूर के बगीचे के बारे में एक गीत गाऊंगा: मेरे प्रियजन के पास एक उपजाऊ पहाड़ी पर एक अंगूर का बगीचा था। उसने इसे खोदा और इसमें से पत्थर साफ किये और इसमें सबसे अच्छी लताएँ लगाईं। उसने उसमें एक प्रहरीदुर्ग बनाया और एक शराब का कुण्ड भी कटवाया। फिर उसने अच्छे अंगूरों की फ़सल की तलाश की, लेकिन उसका फल खराब ही निकला। अब हे यरूशलेम के निवासियों, हे यहूदा के मनुष्यों, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो। मैंने अपने अंगूर के बगीचे के लिए जितना किया है, उससे अधिक और क्या किया जा सकता था? जब मैं अच्छे अंगूरों की तलाश में था, तो खराब अंगूर ही क्यों मिले? अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं अपने अंगूर के बगीचे के साथ क्या करने जा रहा हूं: मैं उसकी बाड़ को हटा दूंगा, और वह नष्ट हो जाएगा; मैं उसकी शहरपनाह तोड़ डालूंगा, और वह रौंदा जाएगा। मैं उसे बंजर भूमि बना दूंगा, जो न तो काटी जाएगी, न खेती की जाएगी, और वहां झाड़ियां और कांटे उगेंगे। मैं बादलों को आज्ञा दूँगा कि उस पर वर्षा न करें।" और फिर आपको एक स्पष्टीकरण मिलेगा। यह आकृति किस बारे में है? यह एक विस्तारित आकृति है, लगभग एक रूपक। हाँ, पद 7 में, "सर्वशक्तिमान यहोवा की दाख की बारी है इस्राएल का घराना, और यहूदा के लोग उसकी प्रसन्नता की बारी हैं।" और फिर आपको वह कविता मिलती है जिसे हमने पहले देखा था, इसमें शब्दों का खेल है, "और उसने **न्याय की तलाश की** [मिशपत], लेकिन **रक्तपात देखा** [मिशपोह]; **नेकी** के लिए [सदका], परन्तु **संकट की चीखें** [सअका]

सुनीं।" इसलिए, भविष्यसूचक प्रवचन में बहुत सारी कल्पना और आलंकारिक भाषा है।

मैं आपको एक और विस्तारित विवरण देता हूँ, और वह यहजेकेल 27 है, जहाँ आपके पास सोर शहर का वर्णन है, जो एक व्यापारिक शहर था। इसे यहजेकेल 27 में समुद्र में एक व्यापारी जहाज के रूप में चित्रित किया गया है। तो आप पहले पद में पढ़ते हैं, "यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा: 'हे मनुष्य के सन्तान, सोर के विषय में विलाप का गीत गाओ। सोर जो समुद्र के द्वार पर स्थित है, और अनेक तटों के लोगों का व्यापारी है, उस से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है, तू कहता है, हे सोर, मैं सुन्दरता में परिपूर्ण हूँ। आपका अधिकार क्षेत्र ऊँचे समुद्र पर था; आपके बिल्डरों ने आपकी सुंदरता को पूर्णता तक पहुंचाया। उन्होंने तेरी सब लकड़ियाँ सनीर के देवदार के वृक्षों की बनाई; वे आपके लिए मस्तूल बनाने के लिए लेबनान से एक देवदार ले आए।" तो यहाँ जहाज के रूप में इस शहर की यह तस्वीर है। "उन्होंने बाशान के बांज वृक्षों से तुम्हारे चप्पू बनाए; उन्होंने तेरा डेक साइप्रस के तटों से प्राप्त सरू की लकड़ी से, हाथी दांत से जड़ा हुआ बनाया। मिस्र से बढ़िया कढ़ाई किया हुआ सनी का कपड़ा तुम्हारे पाल का काम करता था, और तुम्हारे झण्डे का काम करता था; तुम्हारे शामियाने एलीशा के तट से नीले और बैजनी रंग के थे।" अब मैं सीधे पद 26 पर जा रहा हूँ। "तुम्हारे नाविक तुम्हें गहरे समुद्र में ले जाते हैं। परन्तु पुरवाई तुम्हें समुद्र के बीच में टुकड़े टुकड़े कर डालेगी। आपका धन, माल और माल, आपके नाविक, नाविक और जहाज बनाने वाले, आपके व्यापारी और आपके सभी सैनिक, और जहाज पर सवार बाकी सभी लोग आपके जहाज़ डूबने के दिन समुद्र के बीच में डूब जायेंगे। जब तेरे नाविक चिल्लाएँगे तो तट काँप उठेंगे। जितने चप्पू संभालते हैं वे सब अपने जहाज छोड़ देंगे; मल्लाह और सब मल्लाह किनारे पर खड़े रहेंगे। वे तेरे कारण ऊंचे शब्द से चिल्लाएँगे, और फूट-फूटकर रोएँगे; वे अपने सिरों पर धूल छिड़केंगे और राख में लोटेंगे।" पद 32 जारी है, "जब वे तुम्हारे लिए विलाप करेंगे और विलाप करेंगे, तो वे तुम्हारे विषय में विलाप करेंगे: "सोर के समान कौन कभी चुप रहा, जो समुद्र से घिरा हुआ था?" जब तेरा माल समुद्र के पार चला गया, तब तू ने बहुत सी जातियोंको तृप्त किया; अपने अपार धन के साथ. अब तुम समुद्र की गहराइयों में डूबकर चकनाचूर हो गए हो।" इसलिए,

सोर शहर पर न्याय आने वाला है। यह तस्वीरें हैं; यह कल्पना एक व्यापारिक जहाज की काव्यात्मक और आलंकारिक दोनों है। ये काव्य लेखन की कुछ औपचारिक विशेषताएँ हैं।

आइए सी पर चलते हैं, "भविष्यवाणी लेखन की सामग्री की कुछ विशेषताएं" मेरे यहां दो उप-बिंदु हैं। एक, "पैगंबर कोई नया धर्म या नैतिकता नहीं लाते हैं।" तो सबसे पहले, कुछ ऐसा जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण है - विशेष रूप से उन दृष्टिकोणों में जिनकी कई लोगों ने वकालत की है कि पैगंबर इज़राइल में महान धार्मिक नवप्रवर्तक हैं - आपको शुरू से ही समझना होगा; पैगंबरों ने कोई नया धर्म शुरू नहीं किया या उसका पालन नहीं किया। भविष्यवाणी संदेश नई धार्मिक अवधारणाओं से अलग नहीं है। भविष्यवक्ताओं का प्राथमिक जोर भगवान के लोगों को मोक्ष की ओर वापस बुलाने पर है, और जो कुछ भगवान ने पहले प्रकट किया है उस पर वापस बुलाने पर है। उन्होंने इज़राइल को ईश्वर की वाचा के लोगों के रूप में अपने दायित्वों के लिए वापस बुलाया, वह वाचा जो मूसा के नेतृत्व में सिनाई पर्वत पर स्थापित की गई थी। वह वाचा इस बात का आधार थी कि इस्राएल को एक व्यक्ति के रूप में कैसा होना चाहिए। तो आप पाएंगे कि भविष्यवक्ता, काफी हद तक, इज़राइल को उस वाचा के प्रति वफादार रहने के लिए कह रहे हैं। यह नवप्रवर्तन नहीं है, यह अधिक सुधार है। फिर भी आपको पहले से प्रकट धार्मिक अवधारणाओं में कुछ गहराई और आगे का विकास मिलता है, निश्चित रूप से मुक्ति के इतिहास की प्रगति स्पष्ट हो जाती है क्योंकि भविष्यवक्ता भविष्य में भगवान के शब्द बोलना शुरू करते हैं कि भगवान अपने मुक्ति के उद्देश्यों के साथ कहां और कब जाना चाहते हैं। आप रहस्योद्घाटन की प्रगति के बारे में बात कर सकते हैं लेकिन आवश्यक परिवर्तन के बारे में नहीं। इसलिए पैगंबर इज़राइल में महान धार्मिक नवप्रवर्तक नहीं थे, जिन्होंने, जैसा कि कई लोगों ने आरोप लगाया है, नैतिक एकेश्वरवाद के विचार को स्थापित किया।

वेलहाउजेन ने कानून और भविष्यवक्ताओं की भूमिका को उलट दिया और भविष्यवक्ताओं को पहले और कानून को दूसरे स्थान पर रखा। उनका मानना था कि भविष्यवक्ता धार्मिक नवप्रवर्तक थे जिन्होंने नैतिक एकेश्वरवाद का विचार बनाया। हालाँकि,

बाइबल स्वयं इसके बिल्कुल विपरीत है। मूसा ने सिनाई पर्वत पर वाचा के स्पष्टीकरण की नींव रखी, और यह भविष्यवक्ता ही थे जिन्होंने लोगों को उस धारणा पर वापस बुलाया।

दूसरे, "भविष्यवक्ताओं का संदेश चार क्षेत्रों में केंद्रित है," और मैंने ए, बी, सी और डी में सामग्री की चार व्यापक श्रेणियां सूचीबद्ध की हैं: ए। धार्मिक या धार्मिक है, बी. नैतिकता या सामाजिक रिश्ते हैं, सी। राजनीतिक मुद्दे हैं, और डी. युगांतशास्त्र और मसीहाई अपेक्षा है। वे सभी चीजें आपस में जुड़ी हुई हैं, लेकिन मुझे लगता है कि भविष्यवक्ताओं को जो कुछ कहना था, उनमें से अधिकांश को उनमें से एक के अंतर्गत रखा जा सकता है जहां तक कि वे जो कह रहे थे उसके प्राथमिक जोर या फोकस की बात है। तो मुझे उनमें से प्रत्येक के बारे में बस कुछ टिप्पणियाँ करने दीजिए।

"धार्मिक या धार्मिक" में ईश्वर और उसके लोगों के साथ ईश्वर के संबंध के बारे में शिक्षा शामिल होगी। इसमें मूर्तिपूजा और झूठी पूजा के खिलाफ चेतावनियां शामिल होंगी, साथ ही धार्मिक औपचारिकता के खिलाफ चेतावनियां भी शामिल होंगी, अनुष्ठान से गुजरना लेकिन जीवन नहीं जीना। इज़राइल में बहुत कुछ चल रहा था; यह भविष्यवक्ताओं का एक प्रमुख फोकस था।

जहां तक ईश्वर के बारे में सामान्य शिक्षा की बात है, तो एकेश्वरवाद पर जोर दिया जाता है - ईश्वर केवल एक ही है। यशायाह 45:4-5 को देखें, जहां यशायाह कहता है, "अपने सेवक याकूब के लिए, अपने चुने हुए इस्राएल के लिए, मैं तुम्हें नाम लेकर बुलाता हूँ" और यह फारस के शासक साइरस के बारे में बात कर रहा है, "और तुम्हें एक उपाधि प्रदान करता हूँ" आदर की बात है, यद्यपि तुम मुझे स्वीकार नहीं करते, तौभी मैं यहोवा हूँ, और कोई दूसरा नहीं। मेरे अलावा कोई भगवान नहीं है।" यह एकेश्वरवाद का सीधा-सीधा कथन है।

यदि आप यशायाह 18:45 में जाते हैं तो आप पढ़ते हैं, "क्योंकि यहोवा यों कहता है, जिस ने स्वर्ग का सृजन किया, वही परमेश्वर है। जिस ने पृथ्वी को बनाया, और बनाया, और उसकी नेव की, उस ने उसे खाली होने के लिथे नहीं, परन्तु रहने के लिथे बनाया। वह कहता है, "मैं यहोवा हूँ और कोई दूसरा नहीं है।" इसलिए ईश्वर एक है, और उस पर जोर दिया

गया है।

ईश्वर की शक्ति और संप्रभुता पर बहुत अधिक जोर दिया गया है। ईश्वर की शक्ति, उनके रचनात्मक कार्य और संप्रभुता पर संपूर्ण बाइबिल में सबसे महान अध्यायों में से एक, यशायाह 40 है। श्लोक 18 देखें, "आप ईश्वर की तुलना किससे करेंगे? आप उसकी तुलना किस छवि से करेंगे?" और फिर वह मूर्तिपूजा का उपहास करता है, "एक मूर्ति के रूप में एक कारीगर सोना ढालता है, या एक सुनार उसे सोने से मढ़ता है और सुनार चाँदी की जंजीरें बनाता है। जो कोई भी इस तरह के योगदान के लिए बहुत गरीब है वह एक ऐसा पेड़ चुनता है जो सड़ेगा नहीं; वह अपने लिये एक कुशल कारीगर ढूंढ़ता है, जो एक ऐसी नक्काशीदार मूरत तैयार करे जो हिले नहीं। क्या आप नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? क्या यह तुम्हें शुरू से नहीं बताया गया है? क्या तुम पृथ्वी की उत्पत्ति से नहीं समझे? वह जो परमेश्वर है, पृथ्वी के घेरे के ऊपर विराजमान है, और उसके लोग टिड्डे के समान हैं। वह आकाश को छत्र के समान तानता है, और रहने के लिये तम्बू के समान फैलाता है। वह हाकिमों को चूर कर देता है, और इस जगत के हाकिमों को चूर चूर कर देता है।" वह प्रकृति और इतिहास दोनों पर संप्रभु है, वह निर्माता है। श्लोक 26, "अपनी आँखें ऊपर उठाओ, और देखो कि इन वस्तुओं को किसने बनाया है, जो तारों की सेना को गिनकर बाहर लाता है, वह उन सभी को नाम से बुलाता है, अपनी शक्ति की महानता और अपनी शक्ति के बल पर, नहीं एक लापता है।" यहाँ शक्तिशाली ईश्वर है जो प्रकृति और इतिहास को नियंत्रित करता है। श्लोक 27, "हे याकूब, तू क्यों कहता है, और हे इस्राएल, तू क्यों कहता है: मेरा मार्ग यहोवा से छिपा है, और मेरा न्याय मेरे परमेश्वर ने छोड़ दिया है?" क्या आप नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? यहोवा अनन्त परमेश्वर है, पृथ्वी के छोर का रचयिता है।" इसलिए जोर दैवीय शक्ति और संप्रभुता पर है। वह सारी पृथ्वी का रचयिता है।

साथ ही ईश्वर की पवित्रता और न्याय पर भी जोर दिया गया है। इस्राएल का परमेश्वर एक ऐसा परमेश्वर है जो पाप का न्याय करता है। लेकिन परमेश्वर का एक नाम है जो यशायाह की विशेषता है, वह है "इज़राइल का पवित्र।" इसी तरह से अक्सर भगवान का उल्लेख किया जाता है। उनकी पवित्रता और उनके न्याय पर बहुत अधिक जोर दिया गया

है। लेकिन साथ ही उसकी दया पर भी जोर है। वह अपने लोगों को ढूंढ़ता है। वह उन्हें वापस अपनी ओर खींचता है, यहाँ तक कि निर्णय में भी दया होती है। वह चाहता है कि उसके लोग पश्चाताप करें, और जब उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया, और अंततः उन्हें देश से बाहर निकाल दिया गया, तो अवशेष को वापस लाया गया। इसलिए प्रेम और दया पर जोर है। तो ये ईश्वर के बारे में शिक्षाओं के बारे में केवल व्यापक, सामान्य टिप्पणियाँ हैं।

जहाँ तक अपने लोगों के साथ परमेश्वर के रिश्ते के बारे में शिक्षा देने की बात है, तो वहाँ ध्यान अनुबंध के रिश्ते पर है। लेकिन ऐसा कहने के बाद, दिलचस्प बात यह है कि आपको भविष्यवक्ताओं द्वारा बड़े पैमाने पर *बेरिट*, *वाचा* शब्द का उपयोग नहीं मिलता है। यदि आप सभी भविष्यवाणियों की पुस्तकों, प्रमुख और लघु भविष्यवक्ताओं को पढ़ें, तो "वाचा" शब्द की 65 बार आवृत्ति होती है। कई भविष्यवक्ताओं में, इस शब्द का कोई संदर्भ ही नहीं है। दिखता ही नहीं। इसका उपयोग ओबद्याह, जोएल, योना, अमोस, मीका, नहूम, सपन्याह या हबक्कूक में नहीं किया गया है। एक समय था जब लोग भविष्यवाणी की पुस्तकों को देखते थे और कहते थे, "ओह, 'वाचा' शब्द प्रकट नहीं होता है, इसलिए इन भविष्यवक्ताओं को वाचा के बारे में कुछ भी नहीं पता था।" अपने उद्धरण देखें, पृष्ठ 7, पृष्ठ के नीचे, *पुराने नियम के धर्मशास्त्र में वाल्टर आइक्रोडट* बताते हैं, "महत्वपूर्ण बिंदु यह नहीं है - जैसा कि एक बहुत ही भोली आलोचना कभी-कभी सोचती है - की घटना या अनुपस्थिति हिब्रू शब्द *b'rit*, लेकिन तथ्य यह है कि पुराने नियम में विश्वास के सभी महत्वपूर्ण कथन इस धारणा पर आधारित हैं, चाहे वह स्पष्ट हो या न हो, कि इतिहास में ईश्वर के एक स्वतंत्र कार्य ने इज़राइल को ईश्वर के लोगों की अद्वितीय गरिमा तक पहुँचाया, जिसमें उसकी प्रकृति और उद्देश्य को प्रकट किया जाना था। इसलिए, वास्तविक शब्द 'संविदा' एक अधिक दूरगामी निश्चितता के लिए केवल कोड-शब्द है, जिसने इज़राइल के विश्वास की नींव की सबसे गहरी परत बनाई, और जिसके बिना वास्तव में इज़राइल का अस्तित्व ही नहीं होता। बिल्कुल इज़राइल।" दूसरे शब्दों में, भविष्यवक्ताओं का पूरा संदेश इस धारणा पर आधारित है कि ईश्वर और उसके लोगों के बीच एक ऐसा वाचापूर्ण संबंध था।

वे "संविदा" शब्द का उपयोग करते हैं या नहीं, इसका वास्तव में इससे कोई लेना-देना नहीं है। मुझे लगता है कि इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण बाद में अमोस की पुस्तक में मिलता है। अमोस की किताब में *बेरिट* शब्द बिल्कुल नहीं आता है। लेकिन अमोस के संदेश लगातार वाचा भाषा, शब्दावली और वाचा अवधारणाओं का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए हम यह देखने और देखने से यह निर्धारित नहीं करते हैं कि शब्द या नहीं और वाचा का विचार भविष्यवक्ताओं के संदेश में मौजूद था या नहीं, यह देखकर कि वे *बेरिट शब्द का उपयोग करते हैं या नहीं*।

लेकिन भविष्यवाणियों की किताबों में भगवान के अपने लोगों के साथ संबंध के बारे में शिक्षा वाचा के रिश्ते पर आधारित है, और इस वजह से, भविष्यवक्ता चेतावनी और न्याय के इन संदेशों के साथ आते हैं। वाचा में आज्ञाकारिता के लिए आशीर्वाद और अवज्ञा के लिए शाप शामिल थे, और आने वाले न्याय के बारे में चेतावनियाँ वाचा के शाप में निहित हैं। भविष्यवक्ता आते हैं और परमेश्वर के लोगों को आज्ञाकारिता और परमेश्वर की आराधना करने के लिए बुलाते हैं। वह कहां से आता है? यह वाचा से आता है. वे वाचा की शर्तों का पालन करने और अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्रभु अपने भगवान से प्यार करने के लिए बाध्य थे। तो अपने लोगों के साथ भगवान के रिश्ते के संबंध में मौलिक धारणा वाचा का रिश्ता है।

आइए बी पर चलते हैं: "नैतिकता और सामाजिक रिश्ते।" नैतिकता और सामाजिक संबंधों के प्रश्नों पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि भविष्यवक्ता किसी व्यक्ति की नैतिकता और सच्चे धर्म के बीच बहुत करीबी संबंध देखते हैं। दूसरे शब्दों में, मोज़ेक कानून में किसी के पड़ोसी के प्रति प्यार और किसी के दैनिक जीवन में इसका क्या अर्थ है या क्या शामिल है, के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। सच्चे धर्म में सामाजिक न्याय की चिंता और उसका अभ्यास शामिल है। इसलिए भविष्यवक्ता अपने दिनों में इस्राएल में मौजूद सामाजिक बुराइयों को प्रभु से धर्मत्याग के रूप में देखते हैं, अपने वाचा के दायित्वों से विमुख होते हैं। इसलिए वे ऐसी चीजों के खिलाफ बोलते हैं। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 22:13 को देखें। यिर्मयाह यहोयाकीम के बारे में कहता है, "हाय उस पर

जो अधर्म से अपना महल बनाता है। उनके ऊपरी कमरे अन्याय के द्वारा, अपने देशवासियों से बिना मूल्य के काम करवाते थे, उन्हें उनके श्रम का भुगतान नहीं करते थे। वह कहता है, “मैं अपने लिये विशाल ऊपरी कमरों वाला एक बड़ा महल बनवाऊँगा।” इसलिये उस ने उस में बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ बनाई, और उस पर देवदार की लकड़ी लगाई, और उसे लाल रंग से सजाया। क्या अधिक से अधिक देवदार रखना आपको राजा बनाता है? क्या तुम्हारे पिता के पास खाना-पीना नहीं था? उसने वही किया जो सही और उचित था, इसलिए उसके साथ सब कुछ अच्छा हुआ।” जो सही और न्यायपूर्ण है उसे करना क्या है? वह वाचा के मार्ग पर चलना है, जो सही और न्यायपूर्ण है उसे करना है। तो उसके साथ सब ठीक हो गया। “उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों के हितों का बचाव किया, इसलिए सब ठीक हो गया।” और फिर एक बहुत ही दिलचस्प अगली पंक्ति है, “क्या मुझे जानने का यही मतलब नहीं है?” प्रभु की यही वाणी है।” प्रभु को जानने का क्या मतलब है? वह संविदात्मक भाषा भी है। वह यहोवा को संप्रभु के रूप में पहचानना और उसकी शर्तों को बाध्यकारी के रूप में पहचानना है। प्रभु को जानने का यही अर्थ है। तुम्हारे पिता ने ऐसा किया, परन्तु हे यहोयाकीम, तुम ने नहीं किया। पद 17, “तू ने अपनी आंखें और अपना मन बेईमानी के लाभ, और निर्दोषों का खून बहाने, और अन्धे और अन्धे उठाने पर लगाया है।” इस कारण यहोवा यहूदा के योशियाह के पुत्र यहोयाकीम के विषय में यों कहता है, वे उसके लिये यह कहकर विलाप नहीं करेंगे, कि हाय मेरे भाई! हाय मेरी बहन! वे उसके लिये यह कहकर विलाप नहीं करेंगे, “हाय मेरे स्वामी! हाय, उसका वैभव!” उसे गधे की तरह दफनाया जाएगा - घसीटकर यरूशलेम के फाटकों के बाहर फेंक दिया जाएगा।” पद 9 तक, “क्योंकि तुम प्रभु से दूर हो गए हो।”

आमोस 8:4-12 को देखें, “हे दरिद्रों को रौंदनेवालों, और देश के कंगालोंको नाश करनेवालों, यह सुनो, कि नया चांद कब होगा कि हम अन्न बेच सकें, और उस दिन सब्त का दिन समाप्त हो। क्या हम गेहूँ का विपणन कर सकते हैं? - माप में कंजूसी करना, कीमत बढ़ाना, और बेईमान तराजू से धोखा देना, गरीबों को चाँदी से और जरूरतमंदों को एक जोड़ी चप्पलों से खरीदना, यहाँ तक कि गेहूँ के साथ झाड़ू भी बेचना।

दुनिया बहुत ज्यादा नहीं बदली है। कुछ साल पहले किसी ने थैंक्सगिविंग के समय सुपरमार्केट में टर्की पर एक सर्वेक्षण किया था। आप एक टर्की उठाते हैं और उस पर "13 ½ पाउंड" लिखा होता है। उन्होंने इन सभी चीज़ों का वजन किया और पाया कि उनका वज़न उस चीज़ पर अंकित वजन से लगातार कम था। बेईमान तराजू से धोखा, बहुत कुछ नहीं बदला। "गेहूं के साथ झाड़ू-पोछा भी बेचना।" परन्तु भविष्यवक्ता इस प्रकार की चीज़ों के विरुद्ध बोलते हैं।

फिर अदालतों में भ्रष्टाचार है। मीका 3:9-11 को देखें, "हे याकूब के घराने के हाकिमों, हे इस्राएल के घराने के हाकिमों, तुम न्याय को तुच्छ जानते और सब धर्मों को बिगाड़ते हो, यह सुनो; जो खून बहाकर सिय्योन को, और दुष्टता करके यरूशलेम को बनाते हैं। उसके नेता रिश्वत के लिए न्याय करते हैं, उसके पुजारी कीमत के लिए पढ़ाते हैं, और उसके भविष्यवक्ता पैसे के लिए भाग्य बताते हैं। तौभी वे यहोवा पर भरोसा करके कहते हैं, 'क्या यहोवा हमारे बीच में नहीं है?'" यह घृणित बात है।

यशायाह 3:16-26 के भौतिकवाद को देखें। यह एक बहुत ही वर्णनात्मक मार्ग है। "प्रभु कहते हैं," और यहां हमें यरूशलेम की महिलाओं, सिय्योन की महिलाओं का वर्णन मिलता है। "सिय्योन की स्त्रियाँ घमण्डी हैं, गर्दन फैलाए चलती हैं, आँखें तरेरती हैं, कूल्हे हिलाती हुई अकड़ती हैं, टखनों पर आभूषण झनझनाती हैं। इस कारण यहोवा सिय्योन की स्त्रियोंके सिर पर फोड़े डालेगा; यहोवा उनकी खोपड़ी गंजा कर देगा।" उस दिन यहोवा उनका वैभव छीन लेगा।" यहां आपको सिय्योन की इन महिलाओं की सजावट का विवरण मिलता है। "चूड़ियाँ और हेडबैंड और अर्धचंद्राकार हार, झुमके और कंगन और घूँघट, हेडड्रेस और टखने की चेन और कमरबंद, इत्र की बोतलें और आकर्षण, हस्ताक्षर अंगूठियाँ और नाक के छल्ले, बढ़िया वस्त्र और टोपी और लबादा, पर्स और दर्पण, और सनी के वस्त्र और मुकुट और शॉल।" तो यह उस समय की महिलाओं की तस्वीर है फिर भी यह कई मायनों में आज के समान ही लगती है।

परन्तु फिर यशायाह कहता है, "सुगन्ध की सन्ती दुर्गन्ध, और कमरबन्द की सन्ती रस्सी होगी; अच्छे से सजे बालों के बजाय गंजापन; सुन्दर वस्त्र की सन्ती टाट का कपड़ा;

खूबसूरती की जगह ब्रांडिंग. तेरे पुरूष तलवार से, और तेरे योद्धा युद्ध में मारे जाएंगे।
सियोन के फाटक विलाप और विलाप करेंगे; वह निराश्रित होकर जमीन पर बैठेगी।”
फैसला आने वाला है. इसलिए भविष्यवक्ताओं में नैतिक और सामाजिक संबंधों के बारे में
पर्याप्त मात्रा में जानकारी है।

प्रतिलेखित: एरिक टर्नर, डैन फ़िस्टनर, जॉन अल्वाराडो, जॉन क्लैन्सी
एलेक्स बार्कर, जॉन स्टीफ़न (संपादक)
प्रतिलेखित: जॉन स्टेसी, जज एब्स, एलिसन फैबर, जेफ लेन, स्टीव कैपुजिएलो,
कोडी लार्किन और क्रिस्टन रेमी (संपादक)
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
केटी एल्स द्वारा संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 8

भविष्यवाणी संदेश और टी/एफ पैगंबर

ग) राजनीतिक मुद्दे

हम भविष्यवक्ताओं के संदेश को चार क्षेत्रों पर केंद्रित कर रहे हैं - हमने धार्मिक-धार्मिक और नैतिकता-सामाजिक संबंधों को देखा, और यह हमें "राजनीतिक मुद्दों" पर लाता है।

1. इज़राइल

a) सैमुअल पैगंबर राजनीतिक मुद्दों पर बहुत बार बोलते हैं। इस देश में चर्च और राजनीति को अलग रखा जाता है। लेकिन आप कह सकते हैं कि जब भविष्यवक्ता राजनीतिक मुद्दों पर बोलते थे तो उनके दो अलग-अलग फोकस होते थे। एक आंतरिक राजनीति थी और वह विशेष रूप से राजा के वाचा के संबंध से संबंधित है और क्या वह एक सच्चे वाचा राजा के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा था। यदि आप विशेष रूप से राजत्व के इतिहास पर जाएं तो आपको याद आएगा कि राजत्व की स्थापना एक भविष्यवक्ता, सैमुअल द्वारा की गई थी। उसने पहले शाऊल का अभिषेक किया, और फिर बाद में प्रभु के वचन द्वारा शाऊल को अस्वीकार करने के बाद, प्रभु ने शमूएल से कहा कि वह जाकर शाऊल से कहे, "क्योंकि तुमने मुझे अस्वीकार कर दिया है, मैंने भी तुम्हें अस्वीकार कर दिया है।" तब उसने शमूएल को यिशै के घर बेतलेहेम भेजा, जहां उसने शाऊल के स्थान पर राजा बनने के लिये दाऊद का अभिषेक किया। इसलिए, आरंभ से ही राजा भविष्यवक्ता के वचन के अधीन था। जब राजा अपनी वाचा संबंधी जिम्मेदारियों से भटक गए तो भविष्यवक्ताओं ने जाकर उनका सामना करने में संकोच नहीं किया।

बी) एलिय्याह - 1 राजा 17 इसलिए, एलिय्याह जैसा भविष्यवक्ता, 1 राजा 17 में, बाहर जाता है और राजा अहाब का सामना करता है। हम 1 राजा 17:1 को देख रहे हैं, "गिलाद के तिशबे के एलिय्याह तिशबी ने अहाब से कहा, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की

शपथ, जिसकी मैं सेवा करता हूँ, उस में न तो ओस पड़ेगी और न वर्षा होगी। अगले कुछ साल, मेरे कहने के अलावा।" यह भविष्यवक्ताओं की खासियत है। जब राजाओं का सामना करने की बात आती है तो वे निडर होते हैं।

ग) यशायाह 7 यशायाह यशायाह 7:3 में आहाज के साथ भी ऐसा ही करता है, "यहोवा ने यशायाह से कहा, 'तू और तेरा पुत्र शियर-याशूब, आहाज से मिलने के लिये ऊपरी कुण्ड के जलसेतु के सिरे पर निकल जाओ।" धोबी के खेत की सड़क।" वह सार्वजनिक स्थान पर है, "उससे कहो, "सावधान रहो, शांत रहो और डरो मत। जलाऊ लकड़ी के इन दो सुलगते ढूँठों के कारण, रसीन और अराम और रमल्याह के पुत्र के भड़के हुए क्रोध के कारण अपना साहस न खोना। अराम, एप्रैम और रमल्याह के पुत्र ने यह कहकर तुम्हारे विनाश की साज़िश रची है, 'आओ हम यहूदा पर आक्रमण करें।'" तभी इस्राएल के पेकह और सीरिया के रेजिन ने यहूदा के सिंहासन पर आहाज की जगह लेने की धमकी दी। दूसरे शब्दों में, यहूदा के सिंहासन पर आहाज से छुटकारा पाने के लिए उत्तरी राज्य सीरियाई या अराम के साथ गठबंधन किया गया था। अब आहाज क्या कर रहा है? वह रेजिन और पेकाह के पीछे अश्शूरियों के पास जाता है और अश्शूरियों के साथ गठबंधन बनाता है। असीरियन नीचे आए और आहाज पर दबाव कम किया, और ऐसा लगता है कि यह सफल हो गया होगा। परन्तु प्रभु उससे ऐसा नहीं चाहते थे। वह यहाँ पद 7 में कहता है, "प्रभु यहोवा यों कहता है, 'ऐसा नहीं होगा, ऐसा नहीं होगा, क्योंकि अराम का मुखिया दमिश्क है, और दमिश्क का मुखिया रसीन है। पैंसठ वर्ष के भीतर एप्रैम इतना टूट जाएगा कि वह एक जाति ही नहीं रह जाएगा। एप्रैम का मुखिया सामरिया है, और सामरिया का मुखिया रमल्याह का पुत्र ही है। यदि आप अपने विश्वास में दृढ़ नहीं रहते हैं, तो आप बिल्कुल भी खड़े नहीं रह पाएंगे।" भगवान कह रहे हैं कि उन्हें उस पर भरोसा करना है। "मैं तुम्हें इन लोगों से बचाऊंगा," और आहाज ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उसने प्रभु की अपेक्षा अश्शूर पर भरोसा करना पसंद किया। इसलिए, जब राजा भटक जाते हैं तो भविष्यवक्ता राजाओं का सामना करते हैं।

घ) 2 राजा 19 और 22 हिजकिय्याह और योशिय्याह

कभी-कभी, राजा भविष्यवक्ताओं से वचन मांगते हैं। 2 राजाओं 19 में, हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा कि उसने किस स्थिति का सामना किया और उसे क्या करना चाहिए। 2 राजाओं 22 में, योशिय्याह हुल्दा की तलाश करता है - तभी कानून की किताब मंदिर में मिली थी - और वह उसे हुल्दा के पास ले जाता है यह देखने के लिए कि वह प्रभु से क्या कहेगी। तो, राजा और भविष्यवक्ताओं के बीच यह संबंध है।

यदि आप अपने उद्धरणों में पृष्ठ 7 को देखते हैं, तो वोस यह कहता है, "इस राज्य-उत्पादक आंदोलन के साथ, पैगम्बरवाद का उदय और विकास स्वयं जुड़ा हुआ है। भविष्यवक्ता उभरते हुए धर्मतंत्र के संरक्षक थे, और संरक्षकता का प्रयोग इसके केंद्र, राज्य में किया जाता था। इसका उद्देश्य इसे यहोवा के राज्य का सच्चा प्रतिनिधित्व बनाए रखना था। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है मानो भविष्यवक्ताओं को लोगों के बजाय राजाओं के पास भेजा गया हो।" राजा नेता था. राजा उस प्रकार का नेतृत्व देने के लिए ज़िम्मेदार था जो लोगों को वाचा का पालन करने के लिए कहता और यदि वे ऐसा नहीं करते, तो भविष्यवक्ता राजाओं का सामना करते थे। तो यह उस चीज़ से संबंधित है जिसे आप राजनीतिक रूप से "आंतरिक मुद्दे" कह सकते हैं।

2) विदेशी संबंध

जहां तक विदेशी संबंधों का सवाल है, भविष्यवक्ताओं के पास भी कहने के लिए बहुत कुछ था। यहां उन्होंने जो किया वह बुतपरस्त देशों के साथ गठबंधन का विरोध करना था।

क) आहाज ने असीरिया के साथ गठबंधन किया

आहाज ने असीरिया के साथ गठबंधन किया, जिसकी यशायाह ने निंदा की है। यदि आप यशायाह 30 श्लोक 1 को देखें, तो यशायाह कहता है, प्रभु की वाणी है, "अड़ियल बच्चों पर धिक्कार है," उन पर जो मेरी नहीं, गठबंधन बनाकर, परन्तु मेरी आत्मा के द्वारा नहीं, पाप का ढेर लगाते हैं। पाप; जो मुझ से बिना पूछे मिस्र को चले जाते हैं; जो फिरौन की शरण में और

मिस्र की शरण में शरण की आशा करते हैं।" दूसरे शब्दों में, इस्राएल को अपनी सुरक्षा कहाँ मिलनी थी? बुतपरस्त राजाओं और राष्ट्रों के साथ गठबंधन में, चाहे वह असीरिया हो या मिस्र? नहीं, तुम्हें प्रभु पर भरोसा रखना है, वाचा के मार्ग पर चलना है और प्रभु स्वयं उनका रक्षक होगा। तो, यशायाह कहता है, "हाय तुम पर जो फिरौन से सहायता की आशा रखते हो।" यह अध्याय 31 के समान है, "धिक्कार है उन लोगों पर जो मदद के लिए मिस्र जाते हैं, जो घोड़ों पर भरोसा करते हैं, जो अपने रथों की भीड़ और अपने घुड़सवारों की महान ताकत पर भरोसा करते हैं, लेकिन पवित्र की ओर नहीं देखते हैं।" इस्राएल, या यहोवा से सहायता मांगो।" इसलिए, भविष्यवक्ता विदेशी गठबंधनों की निंदा करते हैं। अक्सर विदेशी गठबंधनों में धार्मिक समझौता शामिल होता था क्योंकि अक्सर इन विदेशी शासकों के देवताओं को इज़राइल के साथ संबंध में लाया जाता था और इससे एकमात्र सच्चे ईश्वर में इज़राइल के विश्वास से समझौता होता था।

ख) 2 इतिहास 16:7-9 2 इतिहास 16:7-9 को देखें, "उस समय, हनन्याह द्रष्टा यहूदा के राजा आसा के पास आया, और उस से कहा, 'क्योंकि तू ने अराम के राजा पर भरोसा किया था, न कि तेरे परमेश्वर यहोवा की कृपा है, अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से बच गई है।" फिर वह श्लोक 8 में कहता है, "क्या कूशी और लीबियाई बड़ी संख्या में रथों और घुड़सवारों के साथ एक शक्तिशाली सेना नहीं थे? तौभी जब तुम ने यहोवा पर भरोसा रखा, तब उस ने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया।" यदि आप प्रभु पर भरोसा करते हैं, तो आपको मुक्ति, सुरक्षा और सुरक्षा मिलेगी - विदेशी राष्ट्रों से नहीं। पद 9, "क्योंकि यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर फैली हुई है, और उन लोगों को बल देती है जिनके मन उसके प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। तुमने मूर्खतापूर्ण काम किया है, और अब से तुम युद्ध में रहोगे।" आसा की प्रतिक्रिया क्या थी? इस बात से आसा द्रष्टा से क्रोधित हुआ। वह इतना क्रोधित हुआ कि उसने उसे जेल में डाल दिया। यह वह नहीं था जो वह सुनना चाहता था।

3) राष्ट्रों का उत्थान और पतन विदेशी गठबंधनों से परे भविष्यवक्ताओं ने अक्सर कई

विदेशी राष्ट्रों के उत्थान और पतन के बारे में भी बात की। आपको बेबीलोन, अशूर, मिस्र, एदोम और मोआब के बारे में भविष्यवाणियाँ मिलती हैं, विशेषकर यशायाह और यिर्मयाह में। मुख्य बात यह है कि सभी राष्ट्रों की नियति ईश्वर की संप्रभु शक्ति के अधीन है। इसलिए, इज़राइल की शत्रु शक्तियाँ, चाहे बेबीलोन, असीरिया, मिस्र या अराम, सभी को भविष्यवक्ताओं द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ईश्वर के हाथों में उपकरण के रूप में माना जाता है - कभी-कभी अपने ही लोगों पर निर्णय लेने के लिए जब असीरिया उत्तरी पर हमला करता है साम्राज्य। यही कारण है कि जब आप यिर्मयाह के पास पहुंचते हैं तो उसे उन लोगों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं होती है जो बेबीलोन के जुए को उतार फेंकना चाहते हैं और बेबीलोन के उत्पीड़न का विरोध करना चाहते हैं क्योंकि यिर्मयाह कहता है कि यह ईश्वर का उद्देश्य है, उनके लिए उसकी इच्छा बेबीलोन के अधीन होने की है। यह भगवान का फैसला है। लेकिन फिर हम बाद में जानते हैं कि यहूदा के बाबुल की कैद में चले जाने के बाद, प्रभु ने फारस के शासक कुसू को खड़ा किया, और फिर कुसू परमेश्वर के हाथ में मुक्ति का साधन बन गया। भगवान अपने लोगों को वापस लौटने और खुद को फिर से स्थापित करने की अनुमति देने जा रहे हैं। तो ये राजनीतिक मुद्दों के बारे में संक्षिप्त टिप्पणियाँ हैं।

डी। एस्कैटोलॉजी और मसीहाई उम्मीदें डी। "एस्कैटोलॉजी और मसीहाई उम्मीदें।" बहुत व्यापक शब्दों में भविष्यवक्ता एक ऐसे भविष्य के बारे में बात करते हैं जिसमें, प्रभु के दिन, सभी अधर्मियों पर न्याय आएगा और मसीहा राजा के शासन के तहत भगवान के अपने लोगों के लिए खुशी और शांति का भविष्य होगा। तो वहाँ वह दीर्घकालिक युगांतशास्त्रीय दृष्टि है कि अंततः संपूर्ण मानव इतिहास आ जाएगा, समाप्ति का एक बिंदु जिसमें मसीहा राजा पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा। यशायाह कहते हैं, अभिशाप हटा दिया जाएगा और शांति और सद्भाव बनाया जाएगा, तलवारों को पीट-पीट कर हल के फाल और उस तरह की चीजों में बदल दिया जाएगा।

1) फ्रीमैन: नेशन एंड सफ़रिंग सर्वेंट फ्रीमैन के *एन इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेंट*

प्रोफेट्स में वह मसीहाई भविष्यवाणी की दो धाराओं की बात करता है जो उत्पत्ति 12 :1-3 में इब्राहीम से किए गए वादे से विकसित होती हैं। उत्पत्ति 12 में, आपको याद होगा, प्रभु ने इब्राहीम से कहा था, "मैं तुमसे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा" और फिर वह कहते हैं, "तुम्हारे और तुम्हारे वंश के कारण पृथ्वी की सभी जातियाँ धन्य होंगी।" फ्रीमैन का कहना है कि भविष्यवाणी की ये दो धाराएँ हैं जो इब्राहीम से किए गए वादे में निहित हैं। एक धारा इस्राएल राष्ट्र के भविष्य की बात करती है, "मैं तुमसे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा।" उस राष्ट्र पर दाऊद के राजा या मसीहा के राजा का शासन होगा जो आएगा। भविष्यवाणी की दूसरी धारा पीड़ित सेवक के रूप में मसीहा के कार्य पर जोर देती है; जो अपने लोगों के पापों को सहन करेगा, उस दुःखी सेवक के कार्य के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाएंगी। मुझे लगता है कि इसमें कुछ बात है। भविष्यवाणी की उन दो धाराओं के बारे में सोचें। तू एक को देख, पीड़ित सेवक का काम; वहां ध्यान ईसा मसीह के पहले आगमन और ईसा मसीह के पहले आगमन में शामिल सभी चीजों पर है - विशेष रूप से क्रूस पर उनकी प्रायश्चित बलिदानी मृत्यु पर। यह स्पष्ट रूप से उन अंशों का संदेश है, यशायाह की पुस्तक का चरमोत्कर्ष, यशायाह के अध्याय 53 में, जहां आपके पास उन लोगों के पापों को सहन करने वाले पीड़ित सेवक का अद्भुत वर्णन है जिन्होंने भगवान की आज्ञा को तोड़ा है। लेकिन भविष्यवाणी की दूसरी धारा इस बारे में है कि "मैं तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाऊंगा।" वे भविष्यवाणियाँ मसीह के दूसरे आगमन से संबंधित हैं, जब वह महान मसीहा राजा अधर्मियों को वश में करेगा और पूरी पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा।

अब, इस बिंदु पर, मैं भविष्यवाणी की इन दो धाराओं के बीच अंतर-संबंधों को कैसे विकसित किया जाए, इससे संबंधित किसी भी मुद्दे पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ; क्या आप उस दूसरी धारा की पूर्ति, इज़राइल को एक महान राष्ट्र के रूप में देखते हैं; क्या आप इज़राइल की किसी पुनर्स्थापना और इस धरती पर सहस्राब्दी साम्राज्य में इसकी तलाश कर रहे हैं। ये कठिन प्रश्न हैं। लेकिन, निश्चित रूप से, भविष्यवक्ताओं ने युगांत संबंधी मुद्दों और जिस तरह से भगवान का उद्देश्य पुराने नियम के समय से परे ईसा मसीह के पहले और दूसरे आगमन में खेला है, उसे संबोधित करने में काफी समय बिताया

। 2) वोस

मुझे लगता है कि वोस जो कहता है वह यह है कि भविष्यवक्ता अपने संदेश को राज्य के केंद्र के लिए हृदय के माध्यम से प्रभावित करते हैं, जो राजा के व्यक्ति को दिया गया था। पुजारी बलिदानों, परंपरा के संचालन के लिए जिम्मेदार होगा, और लेवियों को उनकी भूमिका सिखाने के लिए जिम्मेदार होगा। लेवी शिक्षा देने में लगे हुए थे और याजक समारोहों में भाग ले रहे थे। हमारे पास इस तरह से दुर्व्यवहार के उदाहरण हैं और भविष्यवक्ता ईश्वर के प्रति उचित हृदय दृष्टिकोण के बिना दुष्ट रूपों और अनुष्ठानों के खतरों के बारे में बात करते हैं। इसका एक स्पष्ट उदाहरण है जब एली और उसके बेटों को बलि प्रणाली के दुरुपयोग के लिए दोषी ठहराया गया।

6. सच्चे और झूठे पैग़म्बर a. एक पैग़म्बर के कथन - इस प्रकार भगवान कहते हैं आइए 6., "सच्चे और झूठे पैग़म्बर," और ए पर चलते हैं। "एक भविष्यवक्ता के बयान।" हमने पहले इसका उल्लेख किया था, यह तथ्य कि सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता मौजूद हैं - क्या इससे इस्राएलियों की जिम्मेदारी नहीं बढ़ती है जो सच्चे भविष्यवक्ताओं पर ध्यान देते हैं न कि झूठे भविष्यवक्ताओं पर? हमने पहले भी कहा है कि भविष्यवक्ताओं को स्वयं इस तथ्य का बहुत तत्काल और निश्चित ज्ञान था कि उन्होंने जो संदेश कहा था वह उनका अपना नहीं था बल्कि वह ईश्वर का संदेश था। वे अपने शब्दों और प्रभु के शब्दों के बीच अंतर कर सकते थे। हम उसके उदाहरण देख सकते हैं। इसलिए एक भविष्यवक्ता को निश्चितता थी जब उसने कहा कि यह परमेश्वर का वचन है। वह बिना किसी संदेह के जान सकता था कि वह जो कह रहा था वह परमेश्वर का वचन था। लेकिन उन लोगों के साथ ऐसा नहीं है जिनसे भविष्यवक्ता बात करते हैं। लोग यह कैसे जान सकते हैं कि भविष्यवक्ता ने जो कहा वह वास्तव में दैवीय मूल का था, और क्या भविष्यवक्ता का दावा वास्तव में सच था, अर्थात् वह ईश्वर के लिए बोल रहा था? आप पूछ सकते हैं, क्या भविष्यवक्ता की आत्म-साक्षी पर्याप्त नहीं है क्योंकि भविष्यवक्ता बार-बार कहते हैं कि उनका संदेश ईश्वर की ओर से है? यह महत्वपूर्ण है, और

मैं इसे कम नहीं करना चाहता। वे सदैव अपना संदेश प्रस्तुत करते हैं, "प्रभु ऐसा कहते हैं।"

बी) एजेक 13:6 लेकिन समस्या यह है कि ऐसे लोग भी आते हैं और कहते हैं कि उनके पास भगवान का एक संदेश है और यहां तक कि उस भाषा का इस्तेमाल भी करते हैं, "यहोवा यों कहता है," जबकि भगवान ने उन्हें नहीं भेजा था। यहजेकेल 13:6 को देखें, जहाँ यहजेकेल कहता है, "उनके दर्शन झूठे हैं, उनकी भविष्यवाणियाँ झूठी हैं।" ये लोग हैं कौन? यदि आप पद दो पर वापस जाते हैं, "उन लोगों से कहो जो अपनी कल्पना से भविष्यवाणी करते हैं, 'प्रभु का वचन सुनो!' प्रभु यहोवा यही कहता है, 'हाय उन मूर्ख भविष्यवक्ताओं पर जो अपनी आत्मा के पीछे चलते हैं और कुछ नहीं देखा।" और छंद छह में, "उनके दर्शन झूठे हैं और उनकी भविष्यवाणियाँ झूठी हैं। वे कहते हैं, 'प्रभु की वाणी है,' जबकि प्रभु ने उन्हें नहीं भेजा, फिर भी वे अपने शब्दों के पूरे होने की आशा करते हैं।" इसलिए झूठे भविष्यवक्ता आते हैं, और झूठे भविष्यवक्ता सच्चे भविष्यवक्ताओं की तुलना में भगवान के मुखपत्र होने के अपने दावों में कम निश्चित नहीं हैं। इसलिए आपको अपने आप को प्राचीन इस्राएलियों की स्थिति में रखना होगा, जहां आप बाहर जा सकते हैं और आप एक भविष्यवक्ता को यह कहते हुए सुन सकते हैं, "यहोवा यों कहता है।" वह एक संदेश देता है, और फिर एक और भविष्यवक्ता आता है और कहता है, "प्रभु यों कहता है" और वह एक विपरीत संदेश देता है। फिर आपको यह पता लगाना होगा कि सच्चा पैगम्बर कौन है, या दोनों में से कोई भी सच्चा पैगम्बर नहीं है?

इससे यह प्रश्न उठता है कि फिर इस्राएली सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर कैसे कर सकते थे? यह केवल एक सैद्धांतिक मुद्दा नहीं है क्योंकि यह इस्राएलियों के रहने के तरीके को प्रभावित करेगा। उन्होंने जो संदेश सुना उस पर उन्हें कैसे प्रतिक्रिया देनी थी? फिर हम व्यवस्थाविवरण 18 पर वापस जाते हैं, वह मार्ग जहां संपूर्ण भविष्यवाणी आंदोलन स्थापित किया गया है और पहले से ही समझाया गया है कि इसे क्या होना चाहिए। व्यवस्थाविवरण 18:19 कहता है, "यदि कोई मेरी बातें न सुने, जो भविष्यद्वक्ता मेरे नाम से कहे, तो मैं आप ही उस से लेखा लूंगा।" इस प्रकार इस्राएली परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी था कि वह भविष्यद्वक्ता के शब्दों को सुने और उस प्रकार व्यवहार करे जिस प्रकार

भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि उसे करना चाहिए। जब दो विरोधाभासी संदेश कार्रवाई के विपरीत तरीकों की वकालत करते थे, और उन दोनों को ईश्वर के शब्द के रूप में दर्शाया जाता था, तो इस्राएलियों को क्या करना था?

ग) यिर्मयाह 27 इसका एक क्लासिक उदाहरण, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, यिर्मयाह 27 और 28 में है, जहां हनन्याह नाम का एक भविष्यवक्ता यह कहते हुए आ रहा है, "यहोवा यों कहता है, बेबीलोन का जूआ उतार फेंको, उसका विरोध करो," और वादा करता है कि प्रभु मदद करेगा और दो साल के भीतर, प्रभु के घर के बर्तन यरूशलेम लौट आएंगे। उसी समय, यिर्मयाह आता है और इसके विपरीत कहता है, "बाबुल के अधीन हो जाओ, हनन्याह जो कहता है वह होने वाला नहीं है।" दोनों भविष्यवक्ता प्रभु के नाम का उपयोग करते हैं - जो उनके संदेश को मंजूरी देता है। तो आपको यह मुद्दा समझ आ गया है कि आप सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर कैसे सुलझाते हैं? उस मुद्दे की कल्पना व्यवस्थाविवरण 18 में पहले से ही की गई थी, उस अनुच्छेद में जहां भविष्यवाणी आंदोलन स्थापित है। पद 21 में और व्यवस्थाविवरण 18 के बाद आप पढ़ते हैं, "आप अपने आप से कह सकते हैं, 'हम कैसे जान सकते हैं कि संदेश प्रभु द्वारा नहीं कहा गया है?'" निस्संदेह, यही प्रश्न है। सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर करने का एक तरीका इस प्रकार है। श्लोक 22 कहता है, "यदि भविष्यवक्ता प्रभु के नाम पर जो घोषणा करता है वह पूरा नहीं होता या सच नहीं होता, तो यह वह संदेश है जो प्रभु ने नहीं कहा है।" मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यदि भविष्यवक्ता कहता है कि कुछ होने वाला है, तो यह पता चलता है कि ऐसा नहीं होता है - वह भविष्यवक्ता प्रभु का वचन नहीं दे रहा है बल्कि झूठा वचन दे रहा है। यह प्रभु की ओर से नहीं हो सकता। लेकिन समस्या यह है कि यह केवल उन चीजों के बारे में बात करता है जो भविष्य में घटित होंगी और उसके बाद ही जो कुछ भी कल्पना की जाती है वह या तो घटित होता है या नहीं होता है। इसलिए इसके अतिरिक्त कुछ अन्य तरीकों की भी आवश्यकता है जिससे उस प्रश्न का समाधान किया जा सके।

बी। सच्ची भविष्यवाणी के लिए मान्यता मानदंड

आइए बी पर आगे बढ़ें, "सच्ची भविष्यवाणी के लिए सत्यापन मानदंड।" मुझे लगता है कि जब हम पूरी स्थिति को देखते हैं तो कम से कम पांच विचार हैं जो इज़राइलियों को सच्ची और झूठी भविष्यवाणी के बीच अंतर करने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मैं उन पांच को देखना चाहता हूँ जो सत्यापन मानदंडों के तहत वहाँ सूचीबद्ध हैं। मुझे लगता है कि जब आप इनमें से प्रत्येक को देखेंगे तो हमें यह कहना होगा कि वे अलग-अलग काम नहीं करते हैं। दूसरे शब्दों में, ये मानदंड प्राचीन इस्राएलियों को सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर करने का साधन प्रदान करने के लिए संयोजन में कार्य करते थे। तो इनमें से ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जिन्होंने इस्राएलियों को यह भेद करने में सक्षम बनाया?

1) पैगंबर का नैतिक चरित्र

पहला, "पैगंबर का नैतिक चरित्र जैसा कि उनके दैनिक आचरण में देखा जाता है।" इसे अक्सर ऐसी चीज़ के रूप में इंगित किया जाता है जो एक भूमिका निभाती है। मुझे लगता है कि कभी-कभी इस पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया गया है। यदि आप अपने उद्घरणों में पृष्ठ आठ को देखते हैं, तो ध्यान दें कि होबार्ट फ्रीमैन कहते हैं, "झूठे भविष्यवक्ताओं की विशेषता उनकी कम नैतिकता थी; इसलिए, सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं को व्यक्तिगत या बाहरी परीक्षण द्वारा पहचाना जा सकता है। झूठा भविष्यवक्ता एक भाड़े का व्यक्ति था जो भाड़े के लिए भविष्यवाणी करता था (मीका 3:5, 11); वह शराबी था (यशायाह 28:7); वह अपवित्र और दुष्ट था (यिर्मयाह 23:11); उसने दूसरों के साथ मिलकर धोखा देने और धोखा देने की साजिश रची (यहेजकेल 22:45); वह हल्का और विश्वासघाती था (सफन्याह 3:4); उसने व्यभिचार किया, झूठ बोला और दुष्टों का साथ दिया (यिर्मयाह 23:1); और वह आम तौर पर जीवन आचरण में अनैतिक था (यिर्मयाह 23:15)।" अब आप उन सभी संदर्भों, उन सभी चीज़ों को देखें जो इसमें कही गई हैं; हाँ, वे वहाँ हैं। आप देख सकते हैं कि यह किसी ईमानदार ईश्वरीय व्यक्ति का चित्रण नहीं करता है। वह आगे कहते हैं, "झूठा पैगंबर, इसके अलावा, एक धार्मिक अवसरवादी था जो केवल वही भविष्यवाणी करता था जो पतित लोग

सुनना चाहते थे, उसने शांति और समृद्धि का एक आशावादी संदेश दिया; वह अक्सर भविष्यवाणी करता था, और अपने दिल से झूठ की भविष्यवाणी करता था। नीचे की पंक्ति देखें, "पैगंबर का नैतिक चरित्र स्वयं उसके अधिकार की पुष्टि करेगा। जिसने इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की ओर से एक दैवीय आदेश का दावा किया, उसे उस दावे के अनुरूप आचरण और चरित्र को प्रतिबिंबित करना चाहिए। मैथ्यू 7:15-20 कहता है, "तुम्हारे फल से तुम उन्हें पहचानोगे।" तो बुरा फल और अच्छा फल होता है। इस प्रकार उनके फल से तुम उन्हें पहचान लोगे। हम पैगम्बर के नैतिक चरित्र को देख सकते हैं और यह सच्चे और झूठे पैगम्बर के बीच अंतर करने में सहायक है।

अब मुझे लगता है कि इस पर विचार करना महत्वपूर्ण है, लेकिन मुझे लगता है कि फ्रीमैन ने यहां मामले को स्पष्ट रूप से बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है। मेरे ऐसा कहने का कारण यह है कि भले ही आपको झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अनैतिकता के ये संदर्भ मिलते हैं, पुराने नियम में चित्रित अन्य झूठे भविष्यवक्ता भी हैं जिनके बारे में उस प्रकार का कुछ भी नहीं कहा गया है। अब हम हनन्याह के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते, उदाहरण के लिए; उनके नैतिक चरित्र के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। मैं सोचता हूं कि यह संभव है कि जहां तक उनके नैतिक आचरण का सवाल है, कुछ झूठे भविष्यवक्ता अनुकरणीय जीवन जीएंगे। तो यह सिक्के का एक पहलू है।

दूसरा पक्ष यह है कि हमें सच्चे पैगम्बरों के नैतिक चरित्र की दोषहीनता को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताना चाहिए क्योंकि सच्चे पैगम्बर पापरहित नहीं थे। मुझे लगता है कि फ्रीमैन जो कहता है, वह सामान्य तौर पर सच है - कि सच्चे भविष्यवक्ताओं को ईश्वरीय, धर्मपरायण लोगों के रूप में चित्रित किया गया है जो ईश्वरीय जीवन जीते थे। हालाँकि, आप बिलाम के साथ क्या करते हैं? वह सच्चा भविष्यवक्ता था, लेकिन उसे एक धर्मात्मा व्यक्ति के रूप में चित्रित नहीं किया गया है; वह एक विधर्मी भविष्यवक्ता था। आप उस बूढ़े भविष्यवक्ता के साथ क्या करते हैं जिसने 1 राजा 13 में यहूदा से परमेश्वर के भक्त को धोखा दिया था जो इस्राएल की यारोबाम की वेदी के विरुद्ध भविष्यवाणी करने आया था। इस बूढ़े भविष्यवक्ता ने उसे घर आने और उसके साथ भोजन करने में मदद करने के लिए उस भविष्यवक्ता से

झूठ बोला। परन्तु उस झूठ बोलनेवाले भविष्यवक्ता ने यहोवा की ओर से सच्चा सन्देश भी दिया। इसलिए मेरा मानना है कि एक भविष्यवक्ता के नैतिक चरित्र को ध्यान में रखा जाना चाहिए, लेकिन अपने आप में यह एक सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर करने के लिए आधार प्रदान करने के लिए पर्याप्त नहीं है। 2 कुरिन्थियों 11:13-15 को देखें, "क्योंकि ऐसे मनुष्य झूठे प्रेरित, और धोखेबाज, और मसीह के प्रेरितों का भेष धारण करने वाले हैं। और कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान स्वयं ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का भेष धारण करता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है, यदि उसके सेवक धार्मिकता के सेवकों का रूप धारण करते हैं। उनका अंत वही होगा जो उनके कृत्यों के योग्य होगा।" तो हाँ, एक भविष्यवक्ता का नैतिक चरित्र, ऐसे कई ग्रंथ हैं जो बताते हैं कि सामान्य तौर पर सच्चे भविष्यवक्ता ईश्वरीय लोग थे, और झूठे भविष्यवक्ता नहीं थे। लेकिन यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो वायुरोधी हो; इसे अन्य चीज़ों से भी जोड़ा जाना चाहिए।

2) चिन्हों और चमत्कारों का प्रदर्शन दूसरा विचार या मानदंड है, "चिन्हों और चमत्कारों का प्रदर्शन।" अक्सर संकेतों और चमत्कारों को सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर करने के लिए एक महत्वपूर्ण सत्यापन मानदंड के रूप में इंगित किया जाता है। यदि आप देखें कि पवित्रशास्त्र में, विशेष रूप से पुराने नियम में, संकेत और चमत्कार कैसे कार्य करते हैं, तो आप पाएंगे कि संकेत और चमत्कार मुख्य रूप से भविष्यवक्ता के शब्द को प्रमाणित करने और यह दिखाने के लिए दिए गए हैं कि भविष्यवक्ता वास्तव में भगवान से शब्द दे रहा है। संकेत और चमत्कार संदेश की प्रामाणिकता की पुष्टि करते हैं। इस तरह, संकेत और चमत्कार विश्वास के लिए सहायक हैं, कि भविष्यवक्ता जो कह रहा है वह वास्तव में भगवान का एक शब्द है। ल्यूक 10:13 में यीशु चोराज़िन के निवासियों से कहते हैं, "जो चमत्कार तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए गए होते, तो उन्होंने टाट और राख में बैठकर बहुत पहले ही पश्चाताप कर लिया होता।" चमत्कार देखें जो विश्वास में सहायक थे। जॉन 20:30-31 में यह कहा गया है, "यीशु ने कई अन्य चमत्कार किए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं, लेकिन ये लिखे गए हैं," - हमारे पास कुछ चमत्कारों का वर्णन क्यों है? - "ताकि आप विश्वास

कर सकें कि यीशु हैं मसीह।" चमत्कार उसके संदेश को प्रमाणित करते हैं। यूहन्ना 14:11 कहता है, "जब मैं कहता हूँ कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है, तो मुझ पर विश्वास करो, या कम से कम चमत्कारों के प्रमाण पर विश्वास करो।" इसलिए संकेत और चमत्कार भविष्यवक्ता के शब्दों को प्रमाणित करने में कार्य कर सकते हैं।

पुराने नियम के निर्गमन अध्याय 4 पर वापस जाएँ। प्रभु ने इस्राएल को मिस्र की दासता से छुड़ाने के लिए अध्याय 3 में मूसा को बुलाया, लेकिन अध्याय 4 में मूसा ने आपत्ति जताते हुए कहा, "वे मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे या मेरी बात नहीं सुनेंगे, वे कहेंगे, 'प्रभु ने तुम्हें दर्शन नहीं दिया।' मूसा सोच रहा है, 'मैं इसका प्रतिकार कैसे कर सकता हूँ?' मैं कहता हुआ आता हूँ, 'यहोवा यही कहता है,' वे कहते हैं, 'मैं तुम पर विश्वास नहीं करता।'" "प्रभु ने उससे कहा, 'तुम्हारे हाथ में वह क्या है?' 'एक कर्मचारी,' उसने उत्तर दिया। प्रभु ने कहा, 'इसे नीचे फेंक दो।' मूसा ने उसे भूमि पर पटक दिया और वह साँप बन गया और वह उसके पास से भागा। प्रभु ने कहा, 'अपना हाथ बढ़ाओ और इसकी पूंछ पकड़ लो।' तब मूसा ने हाथ बढ़ाकर साँप को पकड़ लिया, और वह उसके हाथ में लाठी बन गया।" श्लोक 5 में ध्यान दें, "'यह,' प्रभु ने कहा, 'ताकि वे विश्वास करें कि प्रभु, उनके पूर्वजों का परमेश्वर - इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, याकूब का परमेश्वर - तुम्हारे सामने प्रकट हुआ है। तब प्रभु ने कहा, 'अपना हाथ अपने कोट में डालो। तब मूसा ने उसके अंगरखे में हाथ डाला, और जब उस ने उसे निकाला तो उसकी खाल कोढ़ जैसी हो गई, और बर्फ की नाई उजली हो गई। 'अब इसे वापस अपने कोट में डाल लो,' उन्होंने कहा। इसलिए मूसा ने उसे वापस अपने कोट में डाल लिया और वह उसके शरीर के बाकी हिस्सों की तरह ठीक हो गया। तब प्रभु ने कहा, 'यदि वे तुम पर विश्वास नहीं करते या पहले चमत्कारी चिन्ह पर ध्यान नहीं देते, तो वे दूसरे पर विश्वास कर सकते हैं। परन्तु यदि वे इन दोनों चिन्हों पर विश्वास न करें, या तेरी बात न मानें, तो नील नदी से थोड़ा जल ले आओ, और सूखी भूमि पर डाल दो। जो पानी तुम नदी से लोगे वह खून बन जाएगा।'" तो आप देखिए कि प्रभु यहां मूसा से क्या कह रहे हैं - वह उसे चमत्कारी संकेत और चमत्कार दिखाने में सक्षम करेगा जो प्रमाणित करेगा कि वह जो कह रहा है वह उसी से आ रहा है। और निःसंदेह, इसके बाद जो होता है वह अध्याय 5 में फिरौन को आदेश

देने वाला प्रश्न है कि इस्राएल को प्रभु की आराधना करने के लिए जंगल में जाने दिया जाए। और फिरौन कहता है, मैं यहोवा पर विश्वास नहीं करता। मैं तुम्हें प्रभु की आराधना क्यों करने दूँ? तब तुम्हें चमत्कारी संकेतों की एक पूरी शृंखला मिलेगी, दस विपत्तियाँ। पूरे रास्ते इस कथन के साथ कि "ताकि तुम जान लो कि मैं प्रभु हूँ।" तो वे चमत्कार प्रामाणिक संकेत बन जाते हैं कि मूसा यहोवा के लिए बोल रहा है और यहोवा मौजूद है और वह जो कह रहा है वह वास्तव में यहोवा की ओर से है।

मुझे लगता है कि आप जो पाते हैं वह रहस्योद्घाटन और मुक्ति के इतिहास में महत्वपूर्ण बिंदुओं पर है, ऐसे मोड़ हैं, जिन समय मैं कहूँगा कि संकेत और चमत्कार भविष्यवक्ता के शब्द का प्रमाणीकरण देने के लिए कई गुना बढ़ जाते हैं, इस मामले में मूसा के लिए। इसलिए संकेत और चमत्कार महत्वपूर्ण हैं और हमें उनके महत्व को कम नहीं करना चाहिए।

लेकिन साथ ही मुझे लगता है कि हमें यह पहचानना होगा कि एक संकेत या चमत्कार अपने आप में सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं को अलग करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसका कारण यह है कि पवित्रशास्त्र यह भी मानता है कि झूठे भविष्यवक्ता संकेत और चमत्कार दिखाने में सक्षम हैं। यहां तक कि मिस्रवासी भी पहली तीन विपत्तियों की नकल कर सकते थे। वे उससे आगे नहीं बढ़ सके। लेकिन मैथ्यू 24:23 को देखें। यह मसीह के दूसरे आगमन की बात कर रहा है, "उस समय यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है!' या 'वह वहाँ है!' उस पर विश्वास मत करो। क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता प्रकट होंगे और चुने हुए लोगों को भी धोखा देने के लिए बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाएंगे, यदि ऐसा हो सके।" पॉल, 2 थिस्सलुनीकियों 2:9 में मसीह-विरोधी के बारे में बोलते हुए कहते हैं कि उनका आना "सभी प्रकार के नकली चमत्कारों, संकेतों और चमत्कारों में प्रदर्शित शैतान के कार्य के अनुसार है।" उनके पास नकली चमत्कार हैं।

आप व्यवस्थाविवरण पर वापस जाएँ, इस बार अध्याय 13 पर। श्लोक 1-4 में, मूसा कहते हैं, "यदि कोई भविष्यवक्ता, या स्वप्न के द्वारा भविष्यवाणी करने वाला, तुम्हारे बीच प्रकट होता है और तुम्हें चमत्कारी चिन्ह या चमत्कारों की घोषणा करता है, और यदि चिन्ह या

जो कुछ उस ने कहा वह आश्चर्य घटित होता है, और भविष्यद्वक्ता कहता है, आओ हम दूसरे देवताओं के पीछे चलें जिन्हें तुम नहीं जानते, और उनकी उपासना करें। तुम्हें उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखने वाले की बातें नहीं सुननी चाहिए। क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा यह जानने के लिये तुम्हारी परीक्षा कर रहा है कि तुम उस से अपने सारे मन और सारे प्राण से प्रेम रखते हो या नहीं। यह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है जिसका तुम्हें अनुसरण करना चाहिए, और तुम्हें उसका आदर करना चाहिए।" फिर पद 5, "उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्नदृष्टा को अवश्य मार डाला जाना चाहिए क्योंकि उस ने तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध विद्रोह का प्रचार किया।" व्यवस्थाविवरण 13 का वह अंश कह रहा है कि झूठे भविष्यद्वक्ता चिन्ह और चमत्कार भी दिखा सकते हैं, लेकिन आपको उनसे गुमराह नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि बाइबल जो सुझाव देती है वह यह है कि संकेत और चमत्कार सच्चे और झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बीच अंतर करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं लेकिन अलगाव में संकेत और चमत्कार निर्णायक नहीं होते हैं। आपको वास्तव में संदेश को भी देखना होगा। आप देखते हैं, यदि अन्य देवताओं की सेवा करने के संदेश के संबंध में कोई संकेत या चमत्कार आता है, तो आप जानते हैं कि यह भगवान का एक शब्द नहीं है, और वह संकेत या चमत्कार भगवान की शक्ति का प्रकटीकरण नहीं है। इसलिए आप इसके महत्व को कम नहीं करना चाहते क्योंकि उन्हें अक्सर पवित्रशास्त्र में विश्वास के सहायक के रूप में और भगवान के वचन को वास्तव में भगवान से होने के रूप में प्रमाणित करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन साथ ही आपको इस बात से भी अवगत रहना होगा कि सच्चे उपदेशक के रूप में झूठे भविष्यद्वक्ता द्वारा किए गए संकेतों और चमत्कारों की संभावना है।

3) सच्चे और झूठे भविष्यद्वक्ताओं को अलग करने के लिए एक मानदंड के रूप में भविष्यवाणी की पूर्ति a) Deut। 18

आइए तीसरे पर चलते हैं, "सच्चे और झूठे भविष्यद्वक्ताओं को अलग करने के मानदंड के रूप में भविष्यवाणी की पूर्ति।" व्यवस्थाविवरण 18 में हम पहले ही देख चुके हैं कि यदि यह सच नहीं होता है तो यह परमेश्वर की ओर से नहीं है। और यह निश्चित रूप से

एक वैध मानदंड है। यह केवल नकारात्मक अर्थ में है भले ही यह ईश्वर की ओर से नहीं है, और इसे भविष्य में केवल तभी लागू किया जा सकता है जब जो कुछ भी भविष्यवाणी की गई है वह घटित होता है या नहीं होता है। इसलिए आप इसके महत्व को कम नहीं करना चाहते क्योंकि उन्हें अक्सर पवित्रशास्त्र में विश्वास के सहायक के रूप में और भगवान के वचन को वास्तव में भगवान से होने के रूप में प्रमाणित करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन साथ ही, आपको इस बात से भी अवगत रहना होगा कि सच्चे भविष्यवक्ता

के रूप में झूठे भविष्यवक्ता द्वारा किए गए संकेतों और चमत्कारों की संभावना है। बी)
ईसा। 41:22

आप इसे पुराने नियम में भी पाते हैं। यशायाह 41:22 को देखें, “हमें बताने के लिए कि क्या होने वाला है, अपनी मूर्तियाँ लाओ। क्या कोई मूर्ति भविष्य बता सकती है? हमें बताओ कि पिछली बातें क्या थीं ताकि हम उन पर विचार कर सकें और उनका अंतिम परिणाम जान सकें। या हमें आनेवाली बातें बता दो, और हमें बताओ कि भविष्य में क्या होगा, कि हम जान लें कि तुम ईश्वर हो। कुछ ऐसा करो, चाहे अच्छा हो या बुरा, ताकि हम डर से भर जाएँ।” श्लोक 26 पर जाएँ, “इस बात को आरम्भ से किसने बताया, कि हम पहले से जान सकें, और कह सकें, 'वह सही था'? किसी ने इसके बारे में नहीं बताया, किसी ने इसकी भविष्यवाणी नहीं की, किसी ने आपकी कोई बात नहीं सुनी।” यशायाह 48:3 को देखें, “मैं ने पहिली बातों को बहुत पहिले से बताया, और अपने मुंह से प्रगट किया, और मैं ने उनको प्रगट किया; फिर अचानक मैंने कार्रवाई की और वे पूरे हो गये। क्योंकि मैं जानता था कि तुम कितने हठीले हो; तेरी गर्दन की नसें लोहे की, और तेरा माथा पीतल का था। इसलिये मैं ने ये बातें तुम से बहुत पहिले कह दी थीं; उनके घटित होने से पहले ही मैंने तुम्हें उनकी घोषणा कर दी ताकि तुम यह न कह सको, 'मेरी मूर्तियों ने उन्हें बनाया, मेरी लकड़ी की मूर्ति और पदक भगवान ने उन्हें ठहराया।' ये बातें तो तुम सुन चुके हो; उन सभी को देखो. क्या आप उन्हें स्वीकार नहीं करेंगे?” यीशु ने यूहन्ना 13.19 में कहा, “मैं तुम्हें इसके

घटित होने से पहले ही बता रहा हूँ ताकि जब वह घटित हो, तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ।" देखिए, उन्होंने जो कहा, उसकी सत्यता के प्रमाण के रूप में भविष्यवाणी की पूर्ति की सकारात्मक प्रस्तुति है।

अब ऐसे ग्रंथों से पता चलता है कि केवल ईश्वर के पास ही भविष्य का आवश्यक ज्ञान है ताकि वह सटीकता और निरंतरता के साथ होने वाली चीजों के बारे में पहले से बता सके। वह सटीकता और निरंतरता महत्वपूर्ण है। मेरा मानना है कि यह केवल ईश्वर ही है जो भविष्य में होने वाली चीजों के बारे में लगातार और सटीक रूप से बोल सकता है। इसलिए मुझे लगता है कि भविष्यवाणी की पूर्ति को ईश्वरीय रहस्योद्घाटन को मान्य करने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ग) देउता। 13

लेकिन इसकी भी अपनी सीमाएँ हैं। यह अपने आप में निर्णायक नहीं है और यह अलगाव में भी निर्णायक नहीं है। आपने व्यवस्थाविवरण 13 में देखा कि हमने संकेतों और चमत्कारों के अंतर्गत देखा। निश्चित रूप से भविष्यवाणियों को वहाँ शामिल किया जाना चाहिए "यदि कोई भविष्यवक्ता या सपने में भविष्यवाणी करने वाला आपके बीच प्रकट होता है और आपको एक चमत्कारी संकेत या चमत्कार की घोषणा करता है और यदि संकेत या चमत्कार होता है," दूसरे शब्दों में, यदि वह जो भविष्यवाणी करता है वह वास्तव में होता है। "लेकिन वह कहता है, 'चलो अन्य देवताओं की पूजा करें,'" आप निश्चित हो सकते हैं कि वह वह नहीं है जिसका संदेश ईश्वर की ओर से है। मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से कुछ स्थितियों में संभव है जहाँ भविष्यवक्ता और भविष्यवक्ता भी सच्ची भविष्यवाणी देने में सक्षम थे। प्रेरितों के काम 16:16 कहता है, "एक बार जब हम प्रार्थना के स्थान पर जा रहे थे, तो हमारी मुलाकात एक दासी से हुई जिसके पास एक आत्मा थी जिसके द्वारा वह भविष्य की भविष्यवाणी करती थी। उसने भाग्य-विद्या से अपने मालिकों के लिए बहुत सारा पैसा कमाया। यह लड़की चिल्लाते हुए पॉल और हममें से बाकी लोगों के पीछे चली गई, 'ये लोग परमप्रधान ईश्वर के सेवक हैं, जो आपको बचाए जाने का रास्ता बता

रहे हैं।" मुझे लगता है कि आत्माओं की इस शैतानी दुनिया के भीतर यह संभव है भविष्य का ज्ञान रखने के लिए कुछ सीमित मापदंड। आप कभी-कभी पा सकते हैं कि एक बुतपरस्त भविष्यवक्ता वास्तव में कुछ भविष्यवाणी करता है। इसलिए अलगाव में कोई भी भविष्यवाणी इस बात का प्रमाण नहीं है कि जो भविष्यवक्ता इसे बनाता है वह ईश्वर का प्रवक्ता होने की गारंटी है।

इसके बारे में दूसरी बात यह है, जैसा कि हमने पहले व्यवस्थाविवरण 18 में बात की थी, यदि यह घटित नहीं होता है तो यह ईश्वर की ओर से नहीं आता है। आप इसे केवल भविष्य में ही लागू कर सकते हैं और यदि भविष्यवाणी सुदूर भविष्य की है तो मूल संदेश सुनने वाला कोई भी आसपास नहीं होगा। इसलिए गैर-पूर्ति महत्वपूर्ण है लेकिन इसकी अपनी सीमाएँ हैं।

मैंने इस बारे में सोचने के लिए अय्यूब के शुरुआती अध्यायों का उपयोग किया है जहां भगवान शैतान को पट्टे पर रखता है लेकिन कुछ मापदंडों के भीतर। शैतान को वह करने की अनुमति है जो वह करना चाहता है। वह अय्यूब की जान नहीं ले सकता, इसलिए वह पट्टे पर है। लेकिन उन मापदंडों के भीतर वह पहले से जान सकता है कि वह क्या करने जा रहा है, इसलिए वह सर्वज्ञ नहीं है। लेकिन भविष्य का ज्ञान सीमित है।

मारी गोलियों में भविष्यवक्ता भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर रहे थे। समस्या का एक हिस्सा यह था कि बाइबिल के बाहर आपको भविष्यवाणियों का कोई अन्य संग्रह नहीं मिलता है जो इतना व्यापक हो और जो सदियों से शताब्दी तक आंदोलनों के सुसंगत तनाव के साथ सदियों से अनुक्रमिक हो। यह बढ़ता और विकसित होता है। तुलनीय कुछ भी नहीं है और मुझे लगता है कि बाइबल जो दावा करती है, उसकी सच्चाई के लिए यह स्वयं एक प्रमाण है।

4. पिछले रहस्योद्घाटन की अनुरूपता मुझे लगता है कि यहां महत्वपूर्ण सत्यापन मानदंड है, और यह 4 से संबंधित है, "पिछले रहस्योद्घाटन की अनुरूपता।" यह प्रगति है। इसलिए नई भविष्यवाणी केवल उसी पर आधारित हो सकती है जो पहले हो चुकी है और

उसका खंडन नहीं कर सकती। भविष्यवक्ता हनैया आते हैं और कहते हैं "शांति", लेकिन इज़राइल शांति की उम्मीद नहीं कर सकता क्योंकि वे प्रभु का अनुसरण नहीं कर रहे हैं और उन्हें न्याय की उम्मीद करनी चाहिए। यह पिछले खुलासों के अनुरूप नहीं है। हमें कुछ ऐसा मिलना शुरू होता है, जो इन कुछ अन्य मानदंडों के साथ संयोजन में, अंतर करने का साधन देगा। लेकिन हनन्याह के साथ वह अल्पकालिक भविष्यवाणी है और दो साल के साथ हनन्याह होगी।

5. ईश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन जो आवश्यक भी है, यह वह तरीका है जिससे ये मानदंड एक साथ काम करते हैं जो 5 के साथ चलता है, "ईश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन जो आवश्यक भी है।" हम अगली बार संख्या 4 और 5 पर और गौर करेंगे।

प्रतिलेखित: टेसा व्हाइट, सारा हॉकिन्स, ब्रीन्ना ऑरिगेमा, केजिया
पार्क, हेले पोमेरॉय (संपादक)
प्रतिलेखित: नामा मेंडेस, एना परेरा, लौरा नॉक्स, एंड्रिया मस्तांगेलो,
टेड हिल्डेब्रांट, सेरेन किंग (संपादक)
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 9

सच्चे पैगम्बरों के लिए मान्यता मानदंड

VI. सच्ची भविष्यवाणी के लिए मान्यता मानदंड

पिछले सप्ताह हम सच्चे या झूठे भविष्यवक्ताओं के प्रश्न पर विचार कर रहे थे और यह भी देख रहे थे कि इस्राएली इन दोनों के बीच अंतर कैसे कर सकते हैं। जैसा कि मैंने जोर दिया, वह कुछ था प्राचीन इस्राएलियों के लिए इसका बहुत महत्व था क्योंकि उन्हें भविष्यवक्ता के वचन को सुनने के लिए जवाबदेह ठहराया गया था। इसलिए हम रोमन अंक VI, "सच्ची भविष्यवाणी के लिए मान्य मानदंड" को देख रहे थे और हमने ए, "पैगंबर के नैतिक चरित्र" पर कुछ महत्वपूर्ण के रूप में चर्चा की थी, लेकिन कुछ ऐसा जो अपने आप में एक साधन के रूप में पूरी तरह से पर्याप्त नहीं था। सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर करने के लिए। बी के साथ भी ऐसा ही, "चिह्न और चमत्कार।" हम संकेतों और चमत्कारों के महत्व को कम नहीं करना चाहते क्योंकि प्रभु अक्सर अपने प्रवक्ता को प्रमाणित करने के लिए संकेतों और चमत्कारों का उपयोग करना चुनते हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण मूसा के साथ है। "भविष्यवाणी की पूर्ति," सी., एक और महत्वपूर्ण मानदंड है क्योंकि केवल ईश्वर ही भविष्य की समग्रता को जानता है और उस पर नियंत्रण रखता है ताकि वह आने वाली चीजों के बारे में पहले से बता सके। लेकिन पृथक, सीमित स्थितियों में कुछ भविष्यवाणी हो सकती है जो एक झूठा भविष्यवक्ता कर सकता है। व्यवस्थाविवरण 13:1-3 इसका संकेत देता है, एक झूठा भविष्यवक्ता कुछ कह सकता है और ऐसा होता है, लेकिन जब वह कहता है, "आओ, यहोवा के बजाय किसी अन्य देवता का अनुसरण करें," तो उन्हें उसकी बात नहीं सुननी थी। हम वहीं से निकल पड़े।

4. पिछले रहस्योद्घाटन के लिए संदेश की अनुरूपता हमें 4 पर लाती है, "पिछले रहस्योद्घाटन के लिए संदेश की अनुरूपता।" मैंने हमारे पिछले सत्र के अंत में कहा था कि मुझे लगता है कि यह सत्यापन मानदंडों में सबसे महत्वपूर्ण है। मैं कहूंगा कि वस्तुनिष्ठ सत्यापन मानदंड में सबसे महत्वपूर्ण है, व्यक्ति के बाहर कुछ, क्योंकि यदि आप आगे देखें,

तो संख्या 5 है, "ईश्वर की आत्मा द्वारा ज्ञानोदय", जो अधिक आंतरिक और व्यक्तिपरक है। यह ईश्वर जो कर रहा है उसके प्रति ग्रहणशील रूप से हृदय और मस्तिष्क का खुलना है।

इसलिए "पिछले रहस्योद्घाटन के अनुरूप" के तहत, यदि कोई भविष्यवक्ता वास्तव में ईश्वर का प्रवक्ता है, तो उसका संदेश इस बात से सहमत होना चाहिए कि इज़राइल के पास कानून और पूर्ववर्ती भविष्यवक्ताओं दोनों में दिव्य रहस्योद्घाटन के क्षेत्र में पहले से ही क्या है। कानून परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से दिया था, पूर्ववर्ती भविष्यवक्ता परमेश्वर के प्रवक्ता थे; ईश्वर स्वयं का खंडन नहीं करेगा। इसलिए एक सच्चे भविष्यवक्ता का संदेश पहले से दिए गए रहस्योद्घाटन के अनुरूप होना चाहिए। उससे कोई भी विचलन झूठी भविष्यवाणी का संकेत है। मैंने कहा है कि यह सत्यापन मानदंडों में सबसे महत्वपूर्ण है। यह एक कसौटी है जो प्राचीन इस्राएलियों के लिए सदैव उपलब्ध थी। उसे पूर्ति के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। मानक को किसी भी भविष्यवाणी के समय लागू किया जा सकता है। धारणा यह है कि प्रत्येक इस्राएली को कानून का और पिछले भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन के बारे में पर्याप्त ज्ञान हो सकता है ताकि वह जो संदेश सुन रहा था वह उस संदेश की अनुरूपता पर निर्णय ले सके जो पहले दिया गया था।

एक। Deut. 13 मुझे लगता है कि यह वास्तव में व्यवस्थाविवरण 13:1-3 का मानदंड है, जिसे हमने पिछले सप्ताह देखा, जहां हमने पढ़ा, "यदि कोई भविष्यवक्ता, या स्वप्न के द्वारा भविष्यवाणी करने वाला, तुम्हारे बीच प्रकट होता है और तुम्हें एक चमत्कारी चिन्ह या आश्चर्य की घोषणा करता है और यदि वह चिन्ह या चमत्कार, जिसकी उस ने चर्चा की है, घटित हो, और कहे, 'आओ हम पराये देवताओं के पीछे चलें, अर्थात् ऐसे देवताओं के पीछे चलें जिन्हें तुम नहीं जानते, और आओ हम उनकी उपासना करें,' तो तुम उसका वचन न सुनना। भविष्यवक्ता या वह भविष्यवक्ता।" आप देखिए, यह हमें जो बता रहा है वह यह है कि संकेतों, चमत्कारों और भविष्यवाणियों को शिक्षा या सिद्धांत द्वारा आंका जाना चाहिए। यह वह सिद्धांत नहीं है जिसका मूल्यांकन संकेतों, चमत्कारों और भविष्यवाणियों से किया जाता है। आप संकेतों, चमत्कारों और भविष्यवाणियों को शिक्षा या सिद्धांत के आधार पर

आंकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि संकेतों, चमत्कारों और भविष्यवाणियों का कोई कार्य नहीं है—वे करते हैं। मैं उन्हें खारिज नहीं करना चाहता क्योंकि उनका एक महत्वपूर्ण कार्य है, लेकिन अपने आप में वे पर्याप्त नहीं हैं।

बी। जेर. 28

मुझे लगता है कि यह मूल रूप से वही बात है जिसकी अपील यिर्मयाह ने यिर्मयाह 28 में हनन्याह के साथ उस टकराव में की थी। जैसा कि आप यिर्मयाह 28:8 को देखते हैं, जहां हनन्याह कह रहा था, "दो साल में तुम बेबीलोन से लौट आओगे," और यिर्मयाह कह रहा है, "नहीं, बन्धुवाई के समय बेबीलोनियों के अधीन हो जाओ।" अध्याय 28, श्लोक 8 में यिर्मयाह कहता है, "प्राचीन काल से ही तुम्हारे और मुझसे पहले के भविष्यवक्ताओं ने कई देशों और बड़े राज्यों के विरुद्ध युद्ध, आपदा और महामारी की भविष्यवाणी की है। लेकिन जो भविष्यवक्ता शांति की भविष्यवाणी करता है, उसे वास्तव में भगवान द्वारा भेजा गया एक ही माना जाएगा यदि उसकी भविष्यवाणी सच हो। दूसरे शब्दों में, हनन्याह को मुक्ति और शांति का यह संदेश दिया गया था और यिर्मयाह इस बिंदु पर हनन्याह के साथ अपनी चर्चा में संक्षेप में कह रहा है, "ठीक है, मुझे आशा है कि आप सही हैं।" आप पद 6 में देखिए वह कहता है, "आमीन! प्रभु ऐसा करें।" लेकिन आप श्लोक 7 में देखते हैं, "फिर भी, मुझे जो कहना है उसे सुनो। आप जो कह रहे हैं वह पूर्व भविष्यवक्ताओं ने जो कहा है उसके अनुरूप नहीं है। आपसे पहले जो भी भविष्यवक्ता हुए हैं, उन्होंने कई देशों के खिलाफ युद्ध, आपदा और प्लेग की भविष्यवाणी की है, लेकिन जो भविष्यवक्ता शांति की भविष्यवाणी करता है..." - विशेष रूप से एक देश और लोगों के लिए शांति, वे प्रभु के वचन पर नहीं चल रहे हैं या वचन की अवज्ञा कर रहे हैं प्रभु की और जिस पर न्याय के समय के बारे में लगातार कई भविष्यवक्ता बोलते रहे हैं।

यदि आप यिर्मयाह 6:13 पर वापस जाएँ और उसका अनुसरण करें, तो यिर्मयाह कहता है, "छोटे से लेकर बड़े तक, सभी बड़े लाभ के लालची हैं; भविष्यवक्ता और याजक, सभी छल करते हैं। वे मेरे लोगों के घावों पर ऐसे मरहम लगाते हैं मानो यह कोई गंभीर घाव

ही न हो। 'शांति, शांति,' वे तब कहते हैं जब शांति नहीं होती। हनन्याह यही कर रहा था। “क्या वे अपने घृणित आचरण पर शर्मिंदा हैं? नहीं, उन्हें बिल्कुल भी शर्म नहीं आती. वे शरमाना भी नहीं जानते।” इसलिए, यिर्मयाह पहले के भविष्यवक्ताओं से अपील करता है जो संकेत देते हैं कि उसकी भविष्यवाणी पहले के भविष्यवक्ताओं के शब्दों के साथ मेल खाती है जबकि हनन्या की भविष्यवाणी का एक अलग चरित्र है और यही उसकी भविष्यवाणी को एक सच्चे भविष्यवक्ता के शब्द के रूप में चिह्नित नहीं करता है। यही कारण है कि यिर्मयाह को अपनी बातों पर बहुत संदेह है। भविष्यवक्ताओं ने लगातार पापी पीढ़ी पर न्याय की घोषणा की है। इसलिए जब हनन्याह इस संदेश के साथ आता है जो पिछले भविष्यवक्ताओं के संदेश से भिन्न है, तो इसका मतलब है कि उसे भगवान द्वारा नहीं भेजा जा सकता है।

सी। ईसा 8:19-20 यशायाह 8:19 और 20 में प्रभु अगला कथन कहते हैं, "जब मनुष्य तुम से ओझाओं और भूत-प्रेतों, जो फुसफुसाते और गुनगुनाते हैं, से परामर्श लेने को कहते हैं, तो क्या लोगों को अपने परमेश्वर से नहीं पूछना चाहिए? जीवितों की ओर से मृतकों से परामर्श क्यों करें? कानून और गवाही के लिए! यदि वे इस वचन के अनुसार न बोलें, तो उन्हें भोर का प्रकाश नहीं मिलेगा।" हम कानून और गवाही का अध्ययन करते हैं और देखते हैं कि क्या पहले दिए गए खुलासों के अनुरूप है।

घ) इस मानदंड पर आपत्तियाँ

1)

अब, इस मानदंड पर कुछ आपत्तियों के बारे में क्या ? कुछ लोग कह सकते हैं, "प्रकटीकरण अपनी प्रकृति से नई चीज़ों का अनावरण है। यदि वे नई चीज़ें हैं, तो उनका परीक्षण उस रहस्योद्घाटन द्वारा कैसे किया जा सकता है जो पहले ही दिया जा चुका है? यदि यह नया है, तो आप पहले से दिए गए रहस्योद्घाटन में कुछ समकक्ष कैसे पा सकते हैं? यह एक संभावित आपत्ति है. मुझे नहीं लगता कि यह उतना गंभीर है जितना शुरू में लग

सकता है। मुझे नहीं लगता कि यह इतना गंभीर है क्योंकि मुझे लगता है कि मैंने पिछली बार कहा था, पुराने नियम में रहस्योद्घाटन कभी भी इसके पहले से पूरी तरह से अलग नहीं है। पुराने नियम में रहस्योद्घाटन जैविक विकास में उभरा। यह एक ऐसा विकास है जो पहले से ही रखी गई नींव पर आधारित है। प्रगति, हाँ, लेकिन यह उन्हीं जड़ों, एक ही तने से प्रगति है, जैसे-जैसे इसकी शाखाएँ निकलती हैं और यह फैलती और बढ़ती है। इसलिए जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है इसमें एक निरंतरता होती है। तो, मुझे ऐसा लगता है कि वह आपत्ति उतनी प्रबल नहीं है जितनी लग सकती है।

2) दूसरी आपत्ति जो आप उठा सकते हैं वह यह है कि यह ऐसी चीज़ नहीं है जो विशेष भविष्यवाणियों के विशिष्ट विवरणों के परीक्षण के लिए पर्याप्त है। उदाहरण के लिए, यशायाह का कहना है कि सन्हेरीब यरूशलेम को नहीं लेगा। वह एक विशिष्ट घटना है। सन्हेरीब की घेराबंदी। यशायाह ने कहा, "यह सफल नहीं होने वाला है।" बेशक, एस एन्नाचेरीब को यरूशलेम से पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा। वास्तव में, सन्हेरीब के इतिहास में से एक में वह कहता है कि उसने "हिजकिय्याह को पिंजरे में बंद पक्षी की तरह बंद कर दिया," लेकिन वह यह नहीं कहता कि उसने उस पर विजय प्राप्त कर ली क्योंकि उसने उसे नहीं हराया। या यह भविष्यवाणी कि बन्धुवाई 70 वर्ष तक रहेगी, यही यिर्मयाह ने कहा था। आप पहले दिए गए रहस्योद्घाटन द्वारा उस जैसे विशिष्ट विवरण का परीक्षण कैसे कर सकते हैं? खासतौर पर अगर पहले किसी ने इस बारे में कुछ नहीं कहा हो कि कब तक कैद कायम रहेगी। मैं इसके साथ सोचता हूँ, यह सही है कि आप इस तरह के विशिष्ट विवरणों को उनके पूरा होने से पहले, पिछले रहस्योद्घाटन के साथ तुलना करके सही या गलत के रूप में स्थापित नहीं कर सकते क्योंकि उन विशिष्ट विवरणों पर कोई पिछला रहस्योद्घाटन नहीं था। हालाँकि, फिर भी, वे विवरण अलग से प्रकट नहीं होते हैं। आपको एक बड़ी भविष्यवाणी के संदर्भ में ऐसे विवरण मिलेंगे। व्यापक संदर्भ में मुझे लगता है कि उन्हें अपनी मान्यता मिल गई है।

आप पाएंगे कि अक्सर नहीं, दीर्घकालिक भविष्यवाणी को अल्पकालिक भविष्यवाणी द्वारा मान्य किया जाता है। श्रोता अल्पकालिक भविष्यवाणी की पूर्ति का

निरीक्षण कर सकते हैं और दीर्घकालिक भविष्यवाणी के लिए इसके माध्यम से मान्यता प्राप्त कर सकते हैं। आपको 1 राजा 13 में याद है जहां वह आदमी जो यहूदा से निकला था, बेतेल में वेदी के पास जाता है और वेदी के खिलाफ भविष्यवाणी करता है। उस भविष्यवाणी के संदर्भ में वह कहते हैं, विभाजित राज्य काल के इस समय में, कि योशियाह उस वेदी पर झूठे पुजारियों की हड्डियों को जला देगा। यह 900 ईसा पूर्व की बात है और आप तीन शताब्दी बाद की बात कर रहे हैं। उन्होंने योशियाह का नाम लेकर उल्लेख किया। आप पिछले रहस्योद्घाटन द्वारा इसे कैसे मान्य कर सकते हैं? खैर, आप नहीं कर सकते. लेकिन उसी अध्याय में वह कुछ और बातें भी कहते हैं होने वाले हैं. यदि आप पद 3 को देखें, तो वह कहता है, "उसी दिन परमेश्वर के जन ने एक चिन्ह दिया, कि प्रभु ने घोषणा की है कि वेदी टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी, और उस पर की राख उड़ेल दी जाएगी" और वही हुआ, उसी दिन दिन। "जब राजा यारोबाम ने बेतेल की वेदी के साम्हने परमेश्वर के भक्त की चिल्लाहट सुनी, तब उसने अपना हाथ बढ़ाकर कहा, "उसे पकड़ लो!" परन्तु जो हाथ उसने उस आदमी की ओर बढ़ाया वह सिकुड़ गया था, इसलिए वह उसे वापस नहीं खींच सका। और वेदी फट गई, और राख फैल गई।" तब यारोबाम ने परमेश्वर के उस जन से प्रार्थना की, और परमेश्वर के उस जन ने यहूदा में से उसके लिये बिनती की, और उसका हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया। वहाँ दो संकेत प्रदर्शित किए गए हैं जो उसी दिन पूरे हुए थे जिस दिन यह दीर्घकालिक भविष्यवाणी की गई थी। दीर्घकालिक भविष्यवाणी का प्रमाणीकरण अल्पावधि भविष्यवाणी की पूर्ति के अवलोकन से किया जाता है। तो हां , कुछ हद तक आप पिछले रहस्योद्घाटन द्वारा दी गई भविष्यवाणी की सभी विशिष्टताओं का परीक्षण नहीं कर सकते हैं। लेकिन आम तौर पर वे विशिष्टताएँ एक ऐसे संदर्भ में होती हैं, जो किसी न किसी रूप में, संपूर्ण को भगवान के शब्द के रूप में स्वीकार करने के लिए पर्याप्त मान्यता प्रदान करती है।

3)

जब आप बाइबिल अध्ययन में जाते हैं, तो वहां विभिन्न प्रकार के लोग होते हैं, चाहे वे यहूदी हों, प्रोटेस्टेंट हों, कैथोलिक हों या कुछ और। मैंने पहले इसका उल्लेख नहीं किया था,

लेकिन उदाहरण के लिए, यदि आप वाल्टर ब्रूगेमैन को देखें - जो प्रोटेस्टेंट हैं, लेकिन इंजीलवादी नहीं हैं - उन्होंने 1999 में *पुराने नियम का धर्मशास्त्र* लिखा था, लेकिन उस धर्मशास्त्र में वे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के बारे में कहते हैं, "वे प्राधिकार का ऐसा दावा करें जिसे सत्यापित करना असंभव है।" वह कहते हैं, "विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि ऐसे मुद्दे के लिए कोई वस्तुनिष्ठ मानदंड नहीं हैं।" मुझे यकीन है कि यहूदी विद्वानों में से कुछ ऐसा कुछ कहेंगे, फिर भी कुछ कहेंगे कि इस प्रकार के मानदंड इसके लिए पर्याप्त आधार प्रदान करते हैं। मुझे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ईश्वर स्वयं व्यवस्थाविवरण 18 में इस्राएल से कह रहा है कि "तुम्हारे पास भविष्यवक्ता के वचन के जवाब में अपने व्यवहार के लिए जवाबदेह ठहराए जाने के लिए पर्याप्त आधार है।"

छात्र प्रश्न: ईजेक 18:1-4 बच्चों पर माता-पिता के पाप (सीएफ. उदाहरण 20) छात्र प्रश्न: क्या आप यहजेकेल 18 पर टिप्पणी कर सकते हैं जहां यह कहा गया है कि पिता के पापों का फल बच्चों पर नहीं पड़ेगा, इसके विपरीत निर्गमन 20 और दस आज्ञाओं के लिए? आप जानते हैं, यह निर्गमन 20 छंद 4 और 5 में दस आज्ञाओं पर वापस जाता है। क्योंकि मैं, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, ईर्ष्यालु ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके अधर्म का दण्ड बच्चों को, वरन तीसरी, चौथी पीढ़ी को भी देता हूं। फिर जैसा कि आपने यहजेकेल 18:1-4 में कहा है, तात्पर्य यह है कि आप अपने स्वयं के पापों के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन आपको अपने पूर्वजों के पापों के लिए दंडित नहीं किया जाएगा। उदाहरण के लिए, श्लोक 3 में, "मेरे जीवन की शपथ," परमप्रधान प्रभु की यह वाणी है, 'अब तुम इस्राएल में इस कहावत को उद्धृत नहीं करोगे। क्योंकि हर जीवित प्राणी मेरा है, पिता और पुत्र दोनों एक समान मेरे हैं। जो आत्मा पाप करता है वही मरेगा।' यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा: 'इस्राएल देश के विषय में यह कहावत कहने से तुम लोगों का क्या अभिप्राय है: 'खट्टे अंगूर तो बाप खाते हैं, और दांत खट्टे होते हैं पुत्रों के?'" दूसरे शब्दों में, पिता कुछ करो और इसका खामियाजा बच्चों को भुगतना पड़ेगा। आप यह कहावत क्यों उद्धृत कर रहे हैं? मुझे यकीन नहीं है कि मैं इसे हल कर सकता हूं, लेकिन मुझे लगता है, इसका वह हिस्सा

यह है: जब आप निर्गमन 20 में वापस जाते हैं, तीसरी और चौथी पीढ़ी तक जो वास्तव में उस संस्कृति में एक घर है। परदादा, परदादा, पिता और बच्चे एक ही घर में रहते थे, ताकि एक का पाप सभी को प्रभावित करे। मुझे ऐसा लगता है कि यह निर्गमन 20 अवधारणा में शामिल है। जबकि ईजेकील 18 में, मुझे लगता है कि यहां जिस बात को संबोधित किया जा रहा है वह वे लोग हैं जो इसे अपने दुर्व्यवहार के लिए एक बहाने के रूप में उपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, हम कष्ट क्यों उठाते हैं? हमने कुछ भी गलत नहीं किया। किसी और ने कुछ गलत किया है और हमें उसकी सजा मिल रही है।' मुझे लगता है कि ईजेकील जो कह रहा है वह यह है कि अपनी जिम्मेदारी लें। यह कहने की कोशिश न करें, "चीजें जैसी हैं, उसका कारण किसी और ने किया है। अपनी जिम्मेदारी खुद लीजिए।" इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि यह विरोधाभास इतना तीव्र है, "यहां एक रहस्योद्घाटन है, और यहां एक और है जो इसका खंडन करता है।"

4. अल्पावधि भविष्यवाणी दीर्घकालिक को सत्यापित करती है - जेर 26-28 आइए उन उदाहरणों पर वापस जाएं जिनकी हम तलाश कर रहे थे, अल्पकालिक भविष्यवाणियों के जो भविष्यवाणी की विशिष्टताओं के संबंध में दीर्घकालिक भविष्यवाणियों को मान्य कर सकते हैं। यदि आप यिर्मयाह 27 और 28 में हनन्याह और यिर्मयाह के पास जाते हैं, तो एक इस्राएली कैसे जान सकता है कि हनन्याह की बाबुल के जुए को तोड़ने की भविष्यवाणी करने वाली भविष्यवाणी झूठी थी और यिर्मयाह की भविष्यवाणी जिसने बाबुल के जुए के जारी रहने की भविष्यवाणी की थी वह सच थी? मुझे लगता है कि आम तौर पर आप वही कर सकते हैं जो अतिरिक्त रहस्योद्घाटन मिलने से पहले यिर्मयाह ने स्वयं किया था, और वह यह है कि हनन्याह एक अपश्चातापी लोगों पर शांति की भविष्यवाणी कर रहा है, इसलिए उसका संदेश संदिग्ध है। दूसरी ओर, यिर्मयाह एक विद्रोही लोगों पर फैसले की भविष्यवाणी कर रहा है जो आम तौर पर बाइबिल के रहस्योद्घाटन के अनुरूप है। श्रोताओं को केवल यह आश्चस्त करने की आवश्यकता थी कि भविष्यवाणी अपनी मूल विशेषताओं में भगवान द्वारा पहले ही कही गई बातों से मेल खाती है। यह संदेश उस बात से मेल खाता है जो

पिछले भविष्यवक्ता उन्हें बताते रहे हैं। उस अर्थ में, जो विवरण अपने आप में अप्राप्य हो सकते हैं, उन्हें बड़े संदर्भ में अपना स्थान ढूँढकर मान्य किया जाता है। लेकिन इस उदाहरण में भी, जब प्रभु अध्याय 28 के अंत में एक अतिरिक्त संदेश देकर यिर्मयाह से बात करते हैं, तो यिर्मयाह ने पद 15 में कहा, “हनन्याह सुनो! यहोवा ने तुम्हें नहीं भेजा है, फिर भी तुमने इस राष्ट्र को झूठ पर भरोसा करने के लिए उकसाया है। इसलिये यहोवा यों कहता है, मैं तुम को पृथ्वी पर से उठा लेने पर हूँ। इसी साल तुम मरने वाले हो” और 2 महीने बाद वह मर गया। अल्पकालिक भविष्यवाणी का सत्यापन था - आप लंबी भविष्यवाणियों में देख सकते हैं।

यिर्मयाह 26 में संदेश अध्याय 7, मंदिर उपदेश में यिर्मयाह के संदेश के समान है। परन्तु 26:4-6 में, यिर्मयाह मन्दिर के आँगन में है, "उन से कह, 'यहोवा यों कहता है: यदि तुम मेरी बात नहीं सुनोगे और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं करोगे, जो मैं ने तुम्हारे साम्हने रखी है, और यदि तुम मेरे दास भविष्यद्वक्ताओं की बातें, जिन्हें मैं ने तुम्हारे पास बारम्बार भेजा है, तुम ने न सुनी, तो मैं इस भवन को शीलो के समान और इस नगर को सब जातियों के बीच शाप का कारण बनाऊंगा। पृथ्वी।" मंदिर के विनाश का वह संदेश है जो कई इस्राएलियों के लिए लगभग निंदनीय होगा जिन्होंने मंदिर में महिमा की, भले ही उन्होंने प्रभु का अनुसरण नहीं किया। तो प्रतिक्रिया क्या है? श्लोक 7-11 में आप पढ़ते हैं, “याजकों, भविष्यवक्ताओं और सभी लोगों ने यिर्मयाह को प्रभु के भवन में ये शब्द बोलते हुए सुना। परन्तु जैसे ही यिर्मयाह सब लोगों को वह सब बता चुका जो यहोवा ने उसे कहने की आज्ञा दी थी, याजकों, भविष्यद्वक्ताओं और सब लोगों ने उसे पकड़ लिया और कहा, 'तुम्हें अवश्य मरना चाहिए! तुम यहोवा के नाम पर यह भविष्यवाणी क्यों करते हो, कि यह भवन शीलो के समान होगा, और यह नगर उजाड़ और सुनसान हो जाएगा?' और सब लोग यहोवा के भवन में यिर्मयाह के चारों ओर इकट्ठे हो गए। जब यहूदा के हाकिमों ने ये बातें सुनीं, तब वे राजभवन से यहोवा के भवन में गए, और यहोवा के भवन के नये फाटक के द्वार पर खड़े हो गए। तब याजकों और भविष्यद्वक्ताओं ने हाकिमों और सब लोगों से कहा, इस मनुष्य को प्राणदण्ड दिया जाना चाहिए क्योंकि उस ने इस नगर के विरूद्ध भविष्यद्वक्ताणी की है। आपने

इसे अपने कानों से सुना है। " तो प्रतिक्रिया है। यहोवा ने यिर्मयाह को सन्देश दिया। उसने उन लोगों को संदेश दिया जो उसे मारने के लिए तैयार थे।

यिर्मयाह कैसे प्रतिक्रिया देता है? श्लोक 12 से 15 में आपको यिर्मयाह की प्रतिक्रिया मिलती है, वह अपना बचाव करता है, "तब यिर्मयाह ने सभी अधिकारियों और लोगों से कहा, 'यहोवा ने मुझे भविष्यवाणी करने के लिए भेजा है इस घर और इस नगर के विरुद्ध जितनी बातें तुम ने सुनी हैं। अब अपने चालचलन और काम सुधारो, और यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञा मानो। तब प्रभु नरम पड़ जाओगे।" श्लोक 13 इस बारे में बात करता है, "यदि लोग नरम पड़ जाएं तो मैं भी नरम पड़ जाऊंगा।" तो वह कहते हैं, "पश्चात्ताप करो, अपने तरीके, अपने कार्य सुधारो। तब यहोवा पछताएगा और वह विपत्ति नहीं लाएगा जो उसने तुम्हारे विरुद्ध घोषित की है।" श्लोक 14, "जहाँ तक मेरी बात है, मैं तेरे हाथ में हूँ; तुम्हें जो अच्छा और उचित लगे वही मेरे साथ करो।" लेकिन फिर चेतावनी, "हालाँकि, आश्वस्त रहो, कि यदि तुम मुझे मार डालोगे, तो तुम अपने ऊपर और इस शहर पर और इसमें रहने वालों पर निर्दोष खून का दोष लगाओगे, क्योंकि सच में प्रभु ने मुझे भेजा है तुझ से ये सब वचन तेरे सुनने में कहने को। कुंआ, यह एक तरह से अधिकारियों को थोड़ा पीछे ले जाता है। फिर आप श्लोक 16 में पढ़ते हैं, "तब हाकिमों और सब लोगों ने याजकों और भविष्यद्वक्ताओं से कहा, 'इस मनुष्य को मार डाला न जाए, इसने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से कहा है।" लेकिन इसके बाद क्या हुआ मैं आपका ध्यान इसी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। "देश के कुछ पुरनियों ने आगे बढ़कर लोगों की पूरी सभा से कहा, 'यहूदा के राजा हिजकिय्याह के दिनों में मोरेशेत के मीका ने भविष्यवाणी की थी। उस ने यहूदा के सब लोगों से कहा, सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, सिय्योन खेत की नाई जोता जाएगा, यरूशलेम मलबे का ढेर, और मन्दिर की पहाड़ी झाड़ियों से ऊंचा टीला बन जाएगी। क्या यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने या यहूदा में किसी और ने उसे मार डाला? क्या हिजकिय्याह ने यहोवा का भय नहीं माना और उसका अनुग्रह नहीं चाहा? और क्या यहोवा न पछताया, कि उस ने वह विपत्ति न डाली जो उस ने सुनाई थी? हम अपने ऊपर एक भयानक आपदा लाने वाले हैं!" तो आप देखिए कि वहाँ क्या हुआ, उन्होंने यिर्मयाह के संदेश की तुलना मीका

के संदेश से की और जो मीका ने बहुत समय पहले कहा था और जो यिर्मयाह कह रहा था, उसके बीच एकरूपता थी। मीका लगभग 735 ईसा पूर्व में रहता था, यिर्मयाह लगभग 609 में। इसलिए सौ साल से भी पहले एक भविष्यवक्ता हुआ था जिसके पास एक ही संदेश था और वह यिर्मयाह के संदेश को मान्य करता था क्योंकि यह उसी के अनुरूप था जो उन्होंने पहले सुना था। तो यह संख्या 4 का निष्कर्ष है, "पिछले रहस्योद्घाटन के संदेश की अनुरूपता।"

5. परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन आइए 5 पर चलते हैं और वह है, "परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन।" इस बिंदु तक, हम इस बारे में बात कर रहे थे कि हम "सत्यापन के वस्तुनिष्ठ मानदंड" को क्या कह सकते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि उन सभी वस्तुनिष्ठ मानदंडों के साथ, आपके पास सच्ची और झूठी भविष्यवाणी को अलग करने में पूर्ण निश्चितता की स्वचालित या यांत्रिक मोहर नहीं है। वे ऐसा प्रदान नहीं करते हैं, क्योंकि उन वस्तुनिष्ठ मानदंडों में ईश्वर की आत्मा की आंतरिक प्रबुद्धता को जोड़ा जाना चाहिए। सत्य को देखने की आंख तो होनी ही चाहिए.

ए) देउत। 29:2-4 व्यवस्थाविवरण 29:2-4 में मूसा कुछ दिलचस्प बात कहता है। जिन लोगों ने मिस्र से मुक्ति के समय परमेश्वर के पराक्रम के कार्य देखे थे, उनके लिए वह कहता है, "जो कुछ यहोवा ने मिस्र में फिरौन, उसके हाकिमों, और उसके सारे देश के साथ किया वह सब तुम ने अपनी आंखों से देखा है; महान परीक्षण, वे चमत्कारी चिन्ह और महान चमत्कार।" और यहाँ मुद्दा यह है, "आज तक, प्रभु ने तुम्हें समझने वाला दिमाग या देखने वाली आँखें या सुनने वाले कान नहीं दिए हैं।" तुमने इसे अपनी आँखों से देखा है, परन्तु प्रभु ने तुम्हें समझने वाला दिमाग या देखने वाली आँखें या सुनने वाले कान नहीं दिये हैं। उन्होंने विपत्तियों में और लाल सागर के माध्यम से इस्राएल की मुक्ति में परमेश्वर की शक्तिशाली शक्ति देखी थी। लेकिन इसका परिणाम उनके निर्माता और मुक्तिदाता के रूप में यहोवा के सामने झुकना नहीं था। तो उन्होंने देखा, परन्तु उन्होंने नहीं देखा। मुझे लगता है कि इन

सत्यापन मानदंडों के साथ भी कार्य करता है , चाहे वह पिछले रहस्योद्घाटन या संकेतों और चमत्कारों के अनुरूप हो, भविष्यवाणी की पूर्ति हो , या पैगंबर का नैतिक चरित्र हो। जो रहस्योद्घाटन दिया गया था उसका सही उपयोग करने के लिए यह आवश्यक था कि परमेश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा उनकी आँखें खोली जाएँ । जो रहस्योद्घाटन दिया गया था उसका सही उपयोग करने के लिए, परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन अपरिहार्य है। मुझे ऐसा लगता है कि जहां ईश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन मौजूद है, वहां इस्राएली, वस्तुनिष्ठ सत्यापन मानदंडों के माध्यम से, विश्वास और निश्चितता के साथ सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर कर सकते हैं। जहाँ परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रबोधन का अभाव था, वहाँ उस प्रकार की निश्चितता और अंतर्दृष्टि का भी अभाव था।

मुझे लगता है कि वस्तुनिष्ठ दिव्य रहस्योद्घाटन में गुमराह होने के हर बहाने को दूर करने के लिए पर्याप्त रोशनी है। लेकिन, और यह आज भी उतना ही सत्य है जितना पुराने नियम के काल में था, मनुष्य की पापी प्रकृति के कारण और मनुष्य की सत्य को दबाने की दृढ़ इच्छा के कारण। आप जो पाते हैं वह यह है: परमेश्वर की आत्मा के बिना मनुष्य जानबूझकर उस चीज़ से दूर हो जाते हैं जो उनके सामने स्पष्ट रूप से प्रस्तुत की जाती है। इसलिए हर बहाने को दूर करने के लिए पर्याप्त रोशनी थी लेकिन भगवान की आत्मा द्वारा प्रबुद्धता महत्वपूर्ण थी ताकि जो रहस्योद्घाटन दिया गया था उसका उचित तरीके से उपयोग किया जा सके। और इसी कारण से, झूठे पैगम्बरों का अनुसरण करने पर लोगों की निंदा की गई और उन्हें जिम्मेदार ठहराया गया। वे उस प्रकाश का जवाब देने के लिए जिम्मेदार थे जो उन्हें दिया गया था, जो पर्याप्त था लेकिन जो रहस्योद्घाटन दिया गया था उसे प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की आत्मा द्वारा दिल और दिमाग को खोलने की भी आवश्यकता थी। बी)

वर्तमान आवेदन में कुछ टिप्पणियाँ दी गई हैं कि यह वर्तमान समय से कैसे संबंधित हो सकता है। बेशक, यह एक धार्मिक मुद्दा बन जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि वर्तमान समय में, वह स्थान जहां हम स्वयं को मुक्तिदायी इतिहास की प्रगति में पाते हैं - वह मुद्दा

जिसका प्राचीन इस्राएलियों को सच्चे और झूठे पैगम्बरों के बीच अंतर करने का सामना करना पड़ा था - मुझे नहीं लगता कि यह अस्तित्व में है हमें इस अर्थ में कि इसने प्राचीन इस्राएलियों के लिए किया था। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि भगवान के रहस्योद्घाटन के पूरा होने और पुराने और नए नियम के धर्मग्रंथों में इसके निर्धारण के बाद से, अब जो कुछ भी है उसे इस अर्थ में भविष्यवाणी माना जाएगा कि यह पुराने नियम की अवधि में दिया गया था।, कुछ ऐसा है जिस पर पहले से ही मुहर लगा दी गई है या सच होने के रूप में चिह्नित किया गया है, क्योंकि रहस्योद्घाटन पूरा हो गया है, यह जारी नहीं है। मैं पवित्रशास्त्र के सिद्धांत के पूरा होने के साथ आज निरंतर रहस्योद्घाटन की आशा नहीं करता। मुझे ऐसा लगता है कि हमारे समय में समस्या एक अलग रूप में दिखाई देती है और वह यह है कि हम बाइबिल के सत्य को सत्य के अन्य दावों से कैसे अलग कर सकते हैं। अब हम जानते हैं कि पवित्रशास्त्र में निहित ईश्वर का रहस्योद्घाटन वास्तव में ईश्वर का रहस्योद्घाटन है, और यह आपको क्षमाप्रार्थी के प्रश्न के पूरे मुद्दे से परिचित कराता है, और आप ईसाई धर्म की सत्यता और बाइबिल के रहस्योद्घाटन की सत्यता के लिए तर्क कैसे दे सकते हैं और उसके लिए किन तर्कों की अपील की जा सकती है। आप देखिए, यह उस मुद्दे से भिन्न है जिसका विशेष रूप से पुराने नियम के काल में सामना किया गया था।

1. वोस: मैं इसमें वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक पहलुओं का पालन करता हूँ, काफी हद तक गीरहार्डस वोस के मॉडल में, यदि आप अपने उद्धरणों को देखते हैं, पृष्ठ 10, वहां उस पर एक पैराग्राफ है, मैं इसे पढ़ने नहीं जा रहा हूँ। लेकिन यदि आप जानते हैं, तो रहस्योद्घाटन और मुक्ति के अपने मॉडल में, वह अपने उद्देश्य-केंद्रीय पहलू के साथ-साथ व्यक्तिपरक-व्यक्तिगत पहलू में भी रहस्योद्घाटन की बात करते हैं। उनका कहना है कि जैसे-जैसे ईश्वर मुक्ति की अपनी योजना को आगे बढ़ाता है, रहस्योद्घाटन भी उसके साथ-साथ आगे बढ़ता है, वास्तव में ईश्वर मुक्ति के लिए क्या कर रहा है, उस पर टिप्पणी या स्पष्टीकरण। रहस्योद्घाटन मुक्तिबोध इतिहास के उस उद्देश्य-केंद्रीय आंदोलन के साथ है।

तो आपको निर्गमन के साथ रहस्योद्घाटन मिलता है, आपको मसीह के पहले आगमन के साथ भारी मात्रा में रहस्योद्घाटन मिलता है। लेकिन जब मसीह आता है, और रहस्योद्घाटन का उद्देश्य-केंद्रीय आंदोलन पहलू निष्कर्ष पर आता है, तो रहस्योद्घाटन बंद हो जाता है। यह रहस्योद्घाटन के इस व्यक्तिपरक-व्यक्तिगत प्रकार के अनुप्रयोग की ओर बढ़ता है। यदि आप अपने उद्धरणों में पृष्ठ 9 और 10 को देखें, तो अब वह मुझसे कहीं अधिक बेहतर शब्द लिखता है। उनके मॉडल से, वह बिंदु जहां रहस्योद्घाटन जारी रह सकता है वह मसीह के दूसरे आगमन के साथ होगा। वहां आपको मुक्तिबोध इतिहास की प्रगति में एक और प्रमुख आंदोलन मिलता है। यह रहस्योद्घाटन के साथ हो सकता है, और यह निश्चित रूप से संभव है। हो सकता है कि आप पृष्ठ 10 के नीचे का लगभग दो-तिहाई भाग देख सकें अनुच्छेद, "अब रहस्योद्घाटन केवल उद्देश्य-केंद्रीय मोचन की प्रक्रिया के साथ होता है, और यह बताता है कि मोचन रहस्योद्घाटन से आगे क्यों बढ़ता है।" और फिर यह आखिरी पैराग्राफ. "भविष्य में केवल एक ही युग है जब हम वस्तुनिष्ठ-केंद्रीय मुक्ति फिर से शुरू होने की उम्मीद करेंगे, वह मसीह का दूसरा आगमन है। उस समय महान मुक्तिदायी कार्य घटित होंगे। "

2. बाबिनक रहस्योद्घाटन मसीह में अपने अंत तक पहुंच गया यदि आप अपने उद्धरणों में पृष्ठ 8 पर वापस जाते हैं, तो मेरे पास हरमन बाबिनक के *रिफॉर्म डॉगमैटिक्स* से कुछ पैराग्राफ हैं, जो वर्तमान में दिलचस्प हैं। वह 1900 के आरंभ में डच भाषा में प्रकाशित हुआ था और पिछले कुछ वर्षों तक इसका कभी अनुवाद नहीं किया गया था। यह अभी अनुवादित और प्रकाशित होने की प्रक्रिया में है। मुझे लगता है कि चार खंडों में से दो या तीन का अनुवाद किया जा चुका है। लेकिन इस प्रश्न पर उनकी कुछ टिप्पणियों का खंड 1 से यह मेरा अपना अनुवाद है। वह कहते हैं, "प्रकाशितवाक्य, समग्र रूप से देखा जाए तो, सबसे पहले मसीह के आगमन में अपने अंत और उद्देश्य तक पहुंचा। लेकिन यह दो महान अवधियों में, दो अलग-अलग व्यवस्थाओं में पड़ता है। पहली अवधि ने मानवता के इतिहास में ईश्वर के पूर्ण रहस्योद्घाटन को शामिल करने का काम किया। संपूर्ण अर्थव्यवस्था को

ईश्वर का अपने लोगों के पास आना, मसीह के लिए एक तम्बू की तलाश के रूप में माना जा सकता है। इस प्रकार यह मुख्य रूप से मसीह में ईश्वर का रहस्योद्घाटन है। यह एक वस्तुनिष्ठ चरित्र धारण करता है। इसकी विशेषता असाधारण कार्य, थियोफनी, भविष्यवाणी और चमत्कार हैं जिनके माध्यम से भगवान अपने लोगों के पास आते हैं। मसीह इसकी सामग्री और बिंदु है। वह लोगो है, जो अंधेरे में चमकता है, अपने पास आता है और यीशु में देह बन जाता है। पवित्र आत्मा अभी तक नहीं था, क्योंकि मसीह की अभी तक महिमा नहीं हुई थी। इस अवधि में शिलालेखीकरण (यह वोस जैसी ही अवधारणा है) रहस्योद्घाटन के अनुरूप था। दोनों एक सदी से दूसरी सदी तक बढ़ते गए। जिस हद तक रहस्योद्घाटन आगे बढ़ा, पवित्रशास्त्र का दायरा बढ़ता गया। जब मसीह में ईश्वर का पूर्ण रहस्योद्घाटन दिया गया है, थियोफनी, भविष्यवाणी और आश्चर्य उसमें अपने उच्च बिंदु पर पहुंच गए हैं और मसीह में ईश्वर की कृपा सभी मनुष्यों पर प्रकट हुई है, तो, उसी समय, इसका समापन भी होता है धर्मग्रंथ. मसीह ने अपने व्यक्तित्व और कार्य में पिता को पूरी तरह से हमारे सामने प्रकट किया है, इसलिए वह रहस्योद्घाटन हमारे लिए पवित्रशास्त्र में पूरी तरह से वर्णित है। पुत्र की अर्थव्यवस्था आत्मा की अर्थव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करती है। वस्तुनिष्ठ रहस्योद्घाटन व्यक्तिपरक अनुप्रयोग में बदल जाता है। फिर से यह बहुत समान है, कुछ अलग शब्द, वही अवधारणा, वोस के रूप में, "मसीह में इतिहास के बीच में भगवान द्वारा एक जैविक केंद्र बनाया गया है, इस केंद्र से रहस्योद्घाटन की रोशनी लगातार व्यापक मंडलियों में चमकती है... पवित्र आत्मा मसीह से सब कुछ लेता है, वह रहस्योद्घाटन में कुछ भी नया नहीं जोड़ता है। यह पूर्ण है और इसलिए इसे बड़ा करने में सक्षम नहीं है। मसीह शब्द है, अनुग्रह और सत्य से भरपूर; उसका काम पूरा हो गया है, पिता स्वयं अपने काम में रहता है, संतों के अच्छे कार्यों में एक शब्द भी जोड़ा या बढ़ाया नहीं जाता है, परंपरा से नहीं, बल्कि उसके व्यक्ति द्वारा, पोप द्वारा नहीं। मसीह में, भगवान ने खुद को पूरी तरह से प्रकट किया है और खुद को पूरी तरह से समर्पित कर दिया है, इसलिए पवित्रशास्त्र भी पूर्ण है। यह परमेश्वर का संपूर्ण वचन है। भले ही रहस्योद्घाटन पूरा हो गया है। काम नहीं रुकता. "सुधार ने पूर्णता और पर्याप्तता को स्वीकार किया रोमन सिद्धांत के विरुद्ध

पवित्रशास्त्र का।" उस अंतिम अनुच्छेद के 2/3 भाग से नीचे जाएँ। "पवित्र धर्मग्रंथ की पर्याप्तता भी यहीं से प्रवाहित होती है नये नियम की व्यवस्था की प्रकृति. मसीह ने देहधारण किया और अपना कार्य पूरा किया। वह ईश्वर का अंतिम और सर्वोच्च रहस्योद्घाटन है। उसने हमें पिता घोषित किया। उसके द्वारा परमेश्वर ने अंतिम दिनों में हमसे बात की है। वह सर्वोच्च, एकमात्र पैगम्बर है। जब यीशु ने अपना काम पूरा किया तो उसने पवित्र आत्मा को भेजा जो रहस्योद्घाटन में कुछ नया नहीं जोड़ता, बल्कि परमेश्वर के लोगों को तब तक सच्चाई में ले जाता है जब तक कि वे परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में विश्वास की एकता तक नहीं पहुंच जाते।

3. आधुनिक अनुप्रयोग अब मैंने कहा कि यह धर्मशास्त्रीय है। मैं उस तरह के मुद्दे की तलाश में नहीं हूँ जिसका सामना आज हम कर रहे हैं जहां हम लोगों को भविष्यवक्ता बनने की कोशिश करते हुए सुन रहे हैं और उन्हें वही समस्या है जो प्राचीन इस्राएलियों को सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं के बीच अंतर करने में थी। चूँकि आज ऐसे लोग हैं और चूँकि रहस्योद्घाटन का समापन हो रहा है, इसलिए उन पर स्वतः ही झूठ का ठप्पा लग जाता है। अब यदि आप उस तरह के धार्मिक निर्माण को स्वीकार नहीं करते हैं और रहस्योद्घाटन की निरंतरता के संबंध में एक खुला दृष्टिकोण रखते हैं तो आप उसी मॉडल पर वापस जा सकते हैं जिसका उपयोग पुराने नियम के लोग करते थे: आप संकेतों और चमत्कारों को देखते हैं, आप देखते हैं पैगम्बर का नैतिक चरित्र, आप भविष्यवाणी और पूर्ति, और पिछले रहस्योद्घाटन के अनुरूपता की तलाश करते हैं। क्या यह पवित्रशास्त्र में कही गई बातों के अनुरूप है? आप पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता को देखें। आप वैसे ही काम करते हैं। मैं यह कहने का इच्छुक नहीं हूँ कि आज हम उसी स्थिति में हैं।

नहीं, मैं ऐसा नहीं कहूंगा. मैं कहूंगा कि नये नियम में आप संक्रमण काल में हैं। जब आरंभिक चर्च इस बात पर काम कर रहा था कि दिए गए इस रहस्योद्घाटन को कैसे लिया जाए और इसे नई अर्थव्यवस्था में कैसे लागू किया जाए जो जोर पकड़ रही थी, तब भगवान के लोगों की इस राष्ट्रीय इकाई इज़राइल के साथ पहचान होने और अब एक आध्यात्मिक

निकाय बनने से एक बड़ा बदलाव आया था। , और उस संक्रमण काल में भविष्यवाणी अभी भी चल रही थी। लेकिन जब आप प्रेरितिक युग से आगे निकल जाते हैं तो मुझे ऐसा लगता है कि वह कार्य अब आवश्यक नहीं रह गया है। वह वापस आ सकता है। फिर आपको यह प्रश्न करना होगा कि हम उस अवधि में कब प्रवेश करते हैं। शायद यह समझना कुछ कठिन है। लेकिन उस बिंदु पर हां, रहस्योद्घाटन के उस उद्देश्य-केंद्रीय सुविधा आंदोलन के साथ अतिरिक्त रहस्योद्घाटन की संभावना है।

सातवीं. प्राचीन इज़राइल में पैगंबर और पंथ आइए यहां अपने अगले विषय पर चलते हैं, रोमन अंक VII., "प्राचीन इज़राइल में पैगंबर और पंथ।" इस विषय पर कुछ भी कहने से पहले हमें संभवतः "पंथ" को परिभाषित करना चाहिए। यहां पंथ का उपयोग इज़राइल की पूजा के बाहरी रूपों के लिए तकनीकी अर्थ में किया जाता है। पैगम्बरों का पुराने नियम के धार्मिक अनुष्ठान के अनुष्ठान कार्यों से क्या संबंध था? क्या वे मंदिर और उनके अनुष्ठानों, बलिदानों और त्योहारों के आधिकारिक पदाधिकारी थे जो मंदिर में किए जाते थे? पिछली शताब्दी में इस बात पर बहुत चर्चा हुई है कि पैगम्बर इसराइल की पूजा के बाहरी रूपों से कैसे संबंधित थे। क्या वे आधिकारिक पंथ पदाधिकारी थे या वे पंथ के विरोधी थे ? पंथ के प्रति उनका दृष्टिकोण क्या था? पंथ का उपयोग इज़राइल की पूजा के बाहरी रूपों के अर्थ में किया जाता है, न कि यहोवा के साक्षियों या मॉर्मन या उस जैसी चीज़ों के अर्थ में।

क. यह दृष्टिकोण कि पैगंबर पंथ-विरोधी थे, आपने देखा कि आपकी रूपरेखा में तीन शीर्षक हैं: ए., "यह दृष्टिकोण कि पैगंबर पंथ-विरोधी थे," यानी, वे अनुष्ठानों के पालन और बाहरी प्रकार की पूजा के विरोधी थे। ; बी। इसके विपरीत है, "भविष्यवक्ता सांस्कृतिक पदाधिकारी थे जो पुजारियों की तरह ही मंदिर में कार्यरत थे"; और सी., जो मुझे लगता है वह चित्रण है जो हमें पुराने नियम से मिलता है, "वे न तो पंथ-विरोधी थे और न ही पंथ पदाधिकारी थे, बल्कि केवल दैवीय रहस्योद्घाटन के उद्घोषक थे।" आइए उन 3 शीर्षकों पर नजर डालें।

1. यह दृष्टिकोण कि पैगम्बर पंथ-विरोधी थे पहला, यह विचार कि पैगम्बर पंथ-विरोधी थे।

1. दृष्टि का विवेचन. 20^{वीं} शताब्दी के अधिकांश समय में, विशेष रूप से मुख्यधारा की बाइबिल विद्वता में, इस बात की वकालत की गई कि पैगम्बर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे। ऐसा नहीं है कि वे पंथ या पंथ के किसी विशेष रूप के दुरुपयोग के खिलाफ थे, लेकिन वे इस तरह से पंथ के खिलाफ थे। इस दृष्टिकोण के समर्थकों ने कहा कि भविष्यवक्ताओं ने ईश्वर की पूजा को बढ़ावा दिया जिसमें अपने पड़ोसी से प्यार करना, सामाजिक न्याय के लिए चिंता और उच्च नैतिक मानकों का अभ्यास शामिल था। इसलिए, इस दृष्टिकोण के अनुसार, भविष्यवक्ताओं ने नैतिकता को न केवल पंथ से ऊपर रखा, बल्कि पंथ के स्थान पर भी रखा। भगवान जो चाहते थे वह अनुष्ठान नहीं था। ईश्वर ऐसे लोगों को चाहता था जो न्यायपूर्ण कार्य करें, अपने पड़ोसियों से प्रेम करें और गरीबों पर अत्याचार का विरोध करें। उस दृष्टिकोण के समर्थकों में से एक जर्मन विद्वान पॉल बोल्ज़ थे जिन्होंने *मूसा और उनका कार्य नामक* पुस्तक लिखी थी। उस पुस्तक की मूल थीसिस यह है कि भविष्यवक्ताओं ने इज़राइल से कहा कि वह वापस लौट आए, इस मोज़ेक धर्म को प्राप्त करें, जिसे उन्होंने "पंथ-विहीन" कहा था। उन्होंने कहा कि इज़राइल में सांस्कृतिक गतिविधि का उदय कनानी प्रभाव के माध्यम से हुआ। इज़राइली पूजा में कनानी धार्मिक प्रथाओं के अनुकूलन ने सच्चे धर्म की मोज़ेक उंचाइयों में गिरावट का गठन किया था। अब बोल्ज़ ऐसा कैसे कह सकते थे. जब आप पेंटाटेच पढ़ते हैं तो इसमें सभी प्रकार के बलिदानों, पुजारियों के कर्तव्यों और कौन से त्योहार मनाए जाने चाहिए, इसके बारे में सभी प्रकार के विधान हैं। वह सब सांस्कृतिक सामग्री है। वह कैसे कह सकता था कि मोज़ेक धर्म पंथ-विहीन था? वैसे वह वेलहाउज़ेन और उन लोगों का अनुयायी था जो कहते थे कि पेंटाटेच में सभी पुरोहित सामग्री देर से, निर्वासन के बाद की थी। उनका दावा है कि ये पैगंबर ही थे जो नैतिक एकेश्वरवाद के महान प्रवर्तक थे। पैगम्बरों के बाद ही इस प्रकार की सभी अनुष्ठान सामग्री इतनी प्रमुख हो गई और इसका श्रेय मूसा को दिया गया। लेकिन मूसा के समय में, उनके अनुसार, इस्राएलियों का धर्म पंथ-विहीन था। तो विचार यह था कि इज़राइल ने कनानियों से, बुतपरस्त लोगों से उनका पंथ छीन लिया और इसलिए भविष्यवक्ताओं ने इसका विरोध

किया। वे नहीं चाहते थे कि इसके स्थान पर केवल एक शुद्ध व्यवस्था कायम हो, बल्कि वे सामाजिक न्याय का अभ्यास चाहते थे जो सच्चा धर्म था।

अपने उद्धरण पृष्ठ 10 को देखें। इसमें लुडविग कोहलर का भी एक पैराग्राफ है जो इसी विचार का था। वह कहते हैं, “हालाँकि यह पंथ कोई नई चीज़ नहीं है और न ही इज़राइल की रचना है; यह अब भी यहोवा का रहस्योद्घाटन है। यह विजित भूमि के पारंपरिक पंथ का एक संयोजन है। सिर्फ इसलिए कि पंथ एक तरह से जातीय जीवन का हिस्सा है, भविष्यवक्ता हमेशा इसके खिलाफ सवालिया निशान लगाते रहे हैं, इसके औचित्य पर संदेह करते रहे हैं और इसे खारिज करते रहे हैं। आमोस 5:25, "क्या तुम चालीस वर्ष तक जंगल में मेरे लिये बलिदान और भेंट लाते रहे।" यह प्रश्न उत्तर के लिए "नहीं" की अपेक्षा करता है, जो ऐतिहासिक रूप से गलत है लेकिन जो इस हद तक सही है - कि यह भगवान नहीं बल्कि मनुष्य थे जिन्होंने पंथ की स्थापना की थी। हम पंथ कहते हैं, क्योंकि पुराने नियम में पंथ लगभग बलिदान के समान है; इसमें इसके अलावा और कुछ नहीं है, सबसे बढ़कर इसमें शब्द की कोई उद्घोषणा नहीं है। 'जिस दिन मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल लाया, उस दिन होमबलि वा मेलबलि के विषय में न तो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं से कुछ कहा, और न उन्हें आज्ञा दी।' यिर्मयाह 7:22. बयान स्पष्ट और बिना शर्त है. बलि प्रथा की उत्पत्ति का श्रेय ईश्वर को नहीं दिया जाता। उसकी इच्छा केवल इसके नियमन में है, “तुम्हारे इतने सारे बलिदान किस प्रयोजन के लिये हैं? मैं मेढ़ों के होमबलि से परिपूर्ण हूँ। जब तू मेरे साम्हने आया, तो तुझ से यह किस ने चाहा? यशायाह 1:11-12. अब इस प्रकार के कई और अंश उद्धृत किये जा सकते हैं और वे महत्वपूर्ण हैं।”

2. इस दृष्टिकोण के समर्थन के लिए धर्मग्रंथ प्रस्तुत किया गया कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे , आइए 2 पर चलते हैं, क्योंकि उद्धरण सीधे 2 में जाते हैं, "इस दृष्टिकोण के समर्थन के लिए धर्मग्रंथ प्रस्तुत किया गया कि भविष्यवक्ता मूल रूप से पंथ के विरोधी थे। पंथ के लिए।” लुडविग कोहलर ने जिन ग्रंथों का उल्लेख किया है उनमें से कुछ का मैं फिर से उल्लेख करूंगा लेकिन मैं आपको कई मुख्य अंश देना चाहता हूँ। पहला यशायाह 1:11-

17 है। यशायाह कहता है, "तुम्हारे इतने सारे बलिदान मेरे लिए क्या हैं?" प्रभु कहते हैं. 'मेरे पास होमबलियों, मेढ़ों और मोटे पशुओं की चर्बी बहुत है; मुझे बैलों, मेमनों, और बकरियों के खून से कोई खुशी नहीं है। जब तू मेरे सामने उपस्थित होने को आता है, तो तुझ से यह, मेरी अदालतों को रौंदने की बात किसने पूछी है? निरर्थक प्रसाद लाना बंद करो! तेरी धूप मेरे लिये घृणित है। नये चाँद, विश्रामदिन और सभाएँ—मैं तुम्हारी दुष्ट सभाएँ सहन नहीं कर सकता। मेरे मन को तेरे नये चाँद के पर्व और तेरे नियत पर्वों से घृणा है। वे मेरे लिये बोझ बन गये हैं; मैं उन्हें सहन करते-करते थक गया हूँ।' जब तू प्रार्थना के लिये हाथ फैलाए, तब मैं तुझ से आंखें फेर लूंगा; चाहे तुम बहुत प्रार्थना करो, तौभी मैं न सुनूंगा। तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं! अपने आप को धोकर स्वच्छ करो। अपने बुरे काम मेरी दृष्टि से दूर करो; गलत करना बंद करो, सही करना सीखो; न्याय मांगो, उत्पीड़ितों की रक्षा करो। अनाय का मुक़दमा उठाओ, विधवा का मुक़दमा लड़ो।" इसलिए यशायाह जैसी स्वीकारोक्ति का उपयोग यह दिखाने के लिए किया जाता है कि भविष्यवक्ता पंथ के विरोधी थे। वे जो चाहते थे वह सामाजिक न्याय था - इन सभी रीति-रिवाजों से दूर।

आमोस 5:21-27 कहता है, "मैं तुम्हारे धार्मिक पर्वों से घृणा करता हूँ, मैं उनका तिरस्कार करता हूँ; मैं आपकी सभाओं को बर्दाश्त नहीं कर सकता. चाहे तुम मेरे लिये होमबलि और अन्नबलि लाओ, तौभी मैं उन्हें ग्रहण न करूंगा। यद्यपि तुम उत्तम मेल-प्रसाद लाते हो, तौभी मैं उन पर कोई ध्यान नहीं दूंगा। अपने गानों के शोर से दूर! मैं तेरी वीणाओं का संगीत नहीं सुनूंगा। परन्तु न्याय को नदी की नाई, और धर्म को कभी न बहनेवाली धारा के समान बहने दो!" फिर एक अलंकारिक प्रश्न और इसका उपयोग अक्सर इस पंथ-विरोधी स्थिति का समर्थन करने के लिए किया जाता है। "हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक मेरे लिये बलिदान और भेंट लाते रहे? तू ने अपने राजा का मन्दिर, और अपनी मूरतों का आसन, और अपने देवता का तारा, जिसे तू ने अपने लिये बनाया है, उंचा कर दिया है। इस कारण मैं तुम्हें दमिश्क के पार बंधुआई में भेज दूंगा, यहोवा जिसका नाम सर्वशक्तिमान है, उसका यही वचन है। "परन्तु क्या तुम मेरे लिये जंगल में बलि ले आए?" एक अलंकारिक प्रश्न के लिए उत्तर "नहीं" की आवश्यकता प्रतीत होती है। अब क्यों ला रहे

हो?

होशे 6:6 "क्योंकि मैं बलिदान नहीं, दया चाहता हूँ, होमबलि से अधिक परमेश्वर का प्रगट होना चाहता हूँ।"

मीका 6:6-8: "मैं क्या लेकर यहोवा के साम्हने आऊँ, और महान परमेश्वर के साम्हने दण्डवत् करूँ? क्या मैं होमबलि और एक वर्ष के बछड़े लिये हुए उसके साम्हने आऊँ? क्या यहोवा हजारों मेढ़ों और दस हजार तेल की नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के बदले में अपने पहिलौठे को, और अपने प्राण के पाप के बदले में अपने शरीर का फल चढ़ाऊँ? हे मनुष्य, उस ने तुझे दिखा दिया, कि क्या अच्छा है। और भगवान को आपसे क्या चाहिए? न्यायपूर्वक कार्य करना, दया से प्रेम करना और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलना।"

यिर्मयाह 7:21-23 "इस्राएल का परमेश्वर, सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, आगे बढ़ो, अपने होमबलि को अपने अन्य बलिदानों में मिलाओ, और मांस तुम ही खाओ! क्योंकि जब मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकाल लाया, और उन से बातें की, तब मैं ने उनको होमबलि और मेलबलि के विषय में केवल आज्ञा ही नहीं दी, कि जो कुछ इब्रानी भाषा में है वह न्याय नहीं है। हिब्रू में यह कहा गया है. "जब मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकाल लाया, और उन से बातें की, तब मैं ने उन्हें होमबलि के विषय में आज्ञा न दी। परन्तु मैं ने उन्हें यह आज्ञा दी, कि मेरी मानो, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूंगा, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे। उन सब मार्गों पर चलो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, कि तुम्हारा भला हो।

तो वे कुछ मजबूत ग्रंथ हैं जिन पर यह विचार है कि भविष्यवक्ताओं ने पंथ का विरोध किया था और न केवल पंथ का कुछ दुरुपयोग या पंथ का गलत रूप या अभ्यास बल्कि स्वयं पंथ का भी विरोध किया था। वे मूल रूप से इस पंथ के विरोधी थे और इसे प्रतिस्थापित होते देखना चाहते थे।

1 शमूएल 15 में जब शाऊल जानवरों को बचाने के अपने कार्यों को सही ठहराने की कोशिश कर रहा है, तो भगवान ने कहा "बलिदान करने से आज्ञापालन करना बेहतर है।" इसलिए भविष्यवक्ताओं के लिए यह कोई नया विचार नहीं है।

चलिए "आकलन" पर चलते हैं। लेकिन शायद बेहतर होगा कि हम पहले एक ब्रेक ले लें।

प्रतिलेखन: केली सैंडविक, एशले बुसिव, यूनबिन चो,
डेनियल शैफ़र और पीटर कांग (संपादक)
संपादित: टेड हिल्डेब्रांट और बिल गेट्स
बिल गेट्स द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल की भविष्यवाणी की नींव , व्याख्यान 10

पैगंबर और पंथ, क्या पैगंबर लेखक थे?

ए. भविष्यवक्ताओं ने पंथ की समीक्षा का विरोध किया

हम इस विचार के समर्थन के लिए पवित्रशास्त्र और विचारों को देख रहे थे कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे। हमने यशायाह, अमोस, होशे, मीका, यिर्मयाह में कुछ ग्रंथों का संदर्भ दिया, और मैं कह सकता हूँ, भविष्यवक्ताओं द्वारा दिए गए कुछ बयान बहुत शक्तिशाली बयान थे और पंथ की कड़ी निंदा थे। फिर क्या आप इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि भविष्यवक्ता मूल रूप से पंथ के विरोधी थे, मुझे लगता है कि यह एक और सवाल है।

लेकिन कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि इज़राइल में सांस्कृतिक अनुष्ठान के बारे में कुछ मजबूत नकारात्मक बयान हैं जो कई भविष्यवाणी पुस्तकों में पाए गए थे।

1. कुछ कथन पंथ का विरोध नहीं करते

एक। यशायाह

हालाँकि, आपको तुरंत इस बात से अवगत होना होगा कि भविष्यवक्ताओं की कुछ घोषणाएँ भी हैं जिनमें वे मूल रूप से पंथ के विरोध में नहीं दिखते हैं; वे पंथ-विहीन धर्म के प्रवर्तक नहीं थे जैसा कि कुछ लोगों ने आरोप लगाया है। यशायाह, जैसा कि हमने अध्याय 1:11-17 में देखा, यरूशलेम में बलिदानों के संबंध में जो कुछ चल रहा था, उसके विरुद्ध बहुत दृढ़ता से बोलता है। वह अपनी भविष्यवाणी में यह भी घोषणा करता है कि मंदिर यहोवा का घर है। वह सिय्योन पर्वत पर प्रभु के निवास की बात करता है। उनके लिए मंदिर भगवान की विशेष उपस्थिति का स्थान है। वह मंदिर में सिंहासन पर बैठे हुए, ऊँचे और ऊपर उठे हुए भगवान के उस दर्शन को देखता है। इसलिए, ऐसा नहीं लगता कि वह मूल रूप से पंथ के विरोधी हैं।

बी। यिर्मयाह

इसी तरह, यिर्मयाह 7:10, 32:34, 34:15, और कई अन्य स्थानों में प्रभु के नाम पर बोलते हुए, यिर्मयाह बार-बार मंदिर को "वह घर जो मेरे नाम से बुलाया जाता है" कहता है। यिर्मयाह 17:26 में, यिर्मयाह कहता है, "यहूदा के नगरों और यरूशलेम के आस-पास के

गांवों से, बिन्यामीन के क्षेत्र और पश्चिमी तलहटी से, पहाड़ी देश और नेगेव से लोग होमबलि और बलिदान, अन्नबलि लेकर आएंगे। " , धूप, और यहोवा को धन्यवाद भेंट ।" वह इसके बारे में बहुत सकारात्मक तरीके से बात करते हैं। 2 शमूएल 24:18 में परमेश्वर ने दाऊद को एक वेदी बनाने का निर्देश दिया, "उस दिन, गाद भविष्यद्वक्ता दाऊद के पास गया और उस से कहा, 'जाओ, और यबूसी अरौना के खलिहान पर यहोवा के लिये एक वेदी बनाओ। ' इसलिये दाऊद ऊपर गया, जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी। तो, यहाँ 2 शमूएल 24:18 में एक भविष्यवक्ता डेविड को एक वेदी बनाने के लिए कह रहा है। यिर्मयाह 27:18 में - यह दिलचस्प है, यिर्मयाह के पास वे उपदेश थे जहां उसने कहा था कि भगवान मंदिर को नष्ट करने जा रहे थे - लेकिन यिर्मयाह 27:18 को देखें, "सर्वशक्तिमान भगवान से विनती करें कि भगवान के घर में बचा हुआ सामान और यहूदा के राजा के भवन में और यरूशलेम में बाबुल को न ले जाया जाए।" वह मंदिर के संरक्षण के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। इसलिए भविष्यवाणियों की पुस्तकों में बहुत सारी अभिव्यक्तियाँ बिखरी हुई हैं जिनमें यह स्पष्ट है कि भविष्यवक्ता इस अर्थ में पंथ-विरोधी नहीं थे कि वे पंथ के बिना एक धर्म चाहते थे। उनके पास मंदिर और मंदिर की पूजा के बारे में कहने के लिए सकारात्मक बातें थीं।

सी। क्या ओटी में कोई पंथविहीन धर्म है?

वास्तव में, मुझे ऐसा लगता है कि पंथ के बिना धर्म का विचार एक अजीब विचार है। निश्चित रूप से यह पवित्रशास्त्र के आंकड़ों के विपरीत है। पेंटाटेच के विशाल खंड उन नियमों का वर्णन करने के लिए दिए गए हैं जो भगवान ने मूसा के माध्यम से इज़राइल को बलिदान और प्रसाद लाने के लिए दिए थे। यह सब कुछ बहुत बाद के समय का बताकर और यह कहकर कि यह मोज़ेक नहीं है और डेटा का हिस्सा नहीं है, आप कहते हैं कि बाइबल को बलिदान की आवश्यकता नहीं है।

इसके अलावा, आप पूछ सकते हैं कि पंथ के बिना धर्म क्या है? क्या नैतिकता ही एकमात्र धर्म है? यह एक दार्शनिक प्रश्न बन जाता है। कई एंग्लिकन इस दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी थे, और पैगंबरों को केवल नैतिकता के प्रचारक के रूप में देखते हैं। लेकिन वह धर्म को नैतिकता तक सीमित कर देता है। एक

अर्थ में, जहां तक सच्चे बाइबिल धर्म का सवाल है, नैतिकता वास्तव में सच्चे धर्म का विनाशक है। मुझे लगता है कि आप यह तर्क दे सकते हैं कि पंथ के बिना सच्चा धर्म वास्तव में अस्तित्व में नहीं है।

घ) ईसाई धर्म और पंथ

नए नियम के युग के हमारे अपने संदर्भ में, निश्चित रूप से ईसाई धर्म पंथ के बिना मौजूद नहीं हो सकता है। प्रार्थना के बिना, प्रसाद के बिना और धार्मिक सभा के बिना धर्म कैसा है? मैं अपने सार में सोचता हूं, सच्चा धर्म ईश्वर के साथ संगति है, और यदि ऐसा है तो इसे केवल नैतिक कार्यों में नहीं, बल्कि धार्मिक कार्यों में भी व्यक्त होना चाहिए। इससे क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर संबंध का प्रश्न उठता है। हाँ, सच्चे धर्म की आवश्यकता है कि हम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें, कि हम क्षैतिज स्तर पर अन्याय के विरुद्ध उपदेश दें। लेकिन सच्चे धर्म के लिए यह भी आवश्यक है कि हम ईश्वर के साथ संगति रखें और ईश्वर के साथ एक रिश्ता रखें जो प्रार्थना, स्तुति, संगति और अभिषेक आदि में खुद को व्यक्त करता है। ऐसी अभिव्यक्तियाँ केवल व्यक्तिगत और निजी नहीं हैं। उन्हें सांप्रदायिक और सार्वजनिक होना चाहिए, यह निश्चित रूप से पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा है।

1. पेंटाटेच में निर्धारित पंथ

इसलिए, मुझे यह कहना बाइबिल, विशेष रूप से पेंटाटेच और सच्चे धर्म की प्रकृति, दोनों के लिए विरोधाभासी लगता है कि एक समय था जब इज़राइल का धर्म पंथ-विहीन था। वास्तव में, लैव्यिकस हमें बताता है कि पंथ अपने लोगों के लिए ईश्वर का एक उपहार था। लैव्यव्यवस्था 17:11 में देखें, “क्योंकि प्राणी का प्राण लोह में है, और मैं ने उसे तुम को वेदी पर प्रायश्चित्त करने को दिया है; यह वह खून है जो किसी के जीवन का प्रायश्चित्त करता है।” पुराने नियम काल के इस बलिदान में रक्त बहाया गया था। और परमेश्वर कहते हैं, “मैंने वह तुम्हें वेदी पर दिया है, क्योंकि यह वह लहू है जो प्रायश्चित्त करता है।” इसलिए यदि आप पुराने नियम को उसी रूप में लेते हैं जैसे वह स्वयं प्रस्तुत करता है, तो निश्चित रूप से आप यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते हैं कि सांस्कृतिक अनुष्ठान कनानियों से ली गई बुतपरस्त प्रथाओं का मिश्रण थे। पुराने नियम में कहा गया है कि ये नियम ईश्वर द्वारा मूसा के माध्यम

से इज़राइल को दिए गए थे। उन्हें पाप के प्रायश्चित के साधन के रूप में दिया गया था जो अंततः मसीह के बलिदान कार्य की ओर इशारा करता था, जो मेमना है जो दुनिया की नींव से मारा गया था। इसलिए मुझे लगता है कि जब आपको पूरी तस्वीर मिल जाएगी। यह अकल्पनीय है कि भविष्यवक्ता मूल रूप से पंथ के विरोधी रहे होंगे। यह पूरे पुराने नियम के रहस्योद्घाटन के साथ पूरी तरह से असंगत है।

2. भविष्यवक्ताओं ने पंथ में बुतपरस्ती की निंदा की: ओपस ऑपरेटम

भविष्यवक्ताओं ने जिस चीज की निंदा की, वह इजरायली पंथ में प्रवेश करने वाली बुतपरस्तताएं थीं जहां यहोवा की पूजा की जाने लगी, बाल या किसी अन्य बुतपरस्त देवता की तरह, साथ ही अनुष्ठान प्रणाली का एक औपचारिक यांत्रिक विचार भी। एक लैटिन वाक्यांश है जो अक्सर उस *ओपस ऑपरेटम के लिए उपयोग किया जाता है*, जिसका अर्थ है "काम से यह काम किया जाता है।" दूसरे शब्दों में, आप अनुष्ठान से गुजरते हैं और यह स्वचालित रूप से वांछित परिणाम उत्पन्न करता है। वे बस इन धार्मिक अनुष्ठानों से गुजरेंगे और सोचेंगे कि केवल इसके द्वारा ही उन्हें भगवान का एक निश्चित अनुग्रह प्राप्त हुआ है। फिर वे अपनी इच्छानुसार अपना जीवन जिएंगे।

क) होशे और हीथेन सांस्कृतिक प्रथाएँ

होशे के समय में, आप होशे की पुस्तक पर काम कर रहे हैं, और मुझे लगता है कि आप इससे अवगत हैं, बाल पूजा उत्तरी साम्राज्य में प्रचलित थी। होशे 2:5 और 8 में भूमि का फल बाल को बताया गया था। लोगों ने मंदिर वेश्यावृत्ति सहित कई अन्यजातियों की प्रथाओं का पालन किया, जो कि होशे 4:11 और निम्नलिखित में है। वे ये सब काम कर रहे थे, फिर भी अपने बलिदान यहोवा के पास ला रहे थे। यही कारण है कि होशे पंथ के विरुद्ध बोलता है। उन्होंने होशे 8:4-6 में मूर्तियाँ बनाई हैं। होशे 10:1 में उनके पास पवित्र स्तंभ थे, लेकिन वे अभी भी यहोवा के अनुष्ठानों से गुजर रहे हैं। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि उनके मन में, इस्राएलियों के मन में, यह था कि बाहरी रूप में सुरक्षा थी, बस इन रूपों से गुजरते हुए, बस यही उनके लिए आवश्यक था। जबकि होशे को एहसास है कि इस तरह का सांस्कृतिक

अनुष्ठान बिल्कुल बेकार है। यह प्रभु के लिए घृणित है। भगवान ने और मांगा. जैसा कि वह होशे 6:6 में कहता है, "मैं बलिदान नहीं, दया चाहता हूं, होमबलि से अधिक परमेश्वर का ज्ञान चाहता हूं।"

ख) खाली अनुष्ठानों पर प्रतिबंध लगाएं

यदि आप यशायाह 1 पर वापस जाएं तो लोग अपने बलिदान श्लोक 11 ला रहे हैं, वे उनमें से बहुत से ला रहे हैं और प्रभु कहते हैं, "वे मेरे लिए क्या हैं?" ऐसा वह श्लोक 15 के अंत में कहता है, "तुम्हारे हाथ खून से भरे हुए हैं।" आप ऐसा जीवन नहीं जी रहे हैं जो ईश्वर के प्रति किसी समर्पण या समर्पण या प्रभु के रास्ते पर चलने की इच्छा को दर्शाता हो, आप बस इन अनुष्ठानों से गुजर रहे हैं। इसलिए वे भगवान से दूर हो गए, वे बस रूपों के माध्यम से जा रहे हैं, और भगवान कहते हैं कि यह घृणित है।

3. आमोस 5:21-25 और पंथ

अब, मुझे लगता है कि दो मार्ग जो संभवतः सबसे कठिन हैं वे अमोस 5 और जेरेमिया 7 हैं, जिन्हें हमने ब्रेक से पहले देखा था। आमोस 5:21-25 निश्चित रूप से वह है जिसकी अक्सर अपील की जाती है। विशेष रूप से श्लोक 25 का अलंकारिक प्रश्न। "हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में 40 वर्ष तक मेरे लिये बलिदान और भेंट लाते रहे?" ऐसा लगता है कि प्रश्न "नहीं" के इच्छित उत्तर के साथ पूछा गया है। कुछ लोग इसका तात्पर्य यह समझते हैं कि इस्राएल पहले से ही जंगल की अवधि में अवज्ञाकारी था और जंगल की अवधि के दौरान प्रभु के लिए बलिदान नहीं लाता था।

ए) मैककॉमिस्की

यदि आप अपने उद्धरणों, पृष्ठ 12 को देखें, तो वहां *एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेंटरी* में अमोस पर टॉम मैककॉमिस्की की टिप्पणी के कुछ पैराग्राफ हैं, जहां वह कहते हैं, "छंद 25 और 26 कठिन हैं। कई टिप्पणीकारों का मानना है कि खंड 25 के प्रश्न के नकारात्मक उत्तर की अपेक्षा के कारण, अमोस इस बात की पुष्टि कर रहा था कि जंगल की अवधि के दौरान बलिदान अज्ञात था, या कि इसे यहोवा के साथ उचित संबंध के लिए आवश्यक नहीं माना गया था, आज्ञाकारिता ही एकमात्र आवश्यकता थी। लेकिन यह व्याख्या वीवी की निरंतरता

के साथ न्याय नहीं करती है। 25-26 को हिब्रू कण *वाव* (एनआईवी में अनुवादित) द्वारा बुलाया गया है जो श्लोक 26 से शुरू होता है। एनआईवी 26 के अनुवाद में एक *वाव से शुरू नहीं होता है*; वहां कोई "और" या "लेकिन" नहीं है, यह सिर्फ इतना कहता है, "आपने अपने राजा के मंदिर को ऊपर उठाया।" "न ही यह पर्याप्त रूप से समझाता है कि बलिदान की प्रभावकारिता से इनकार करने वाला एक बयान दैवज्ञ के निर्णय अनुभाग में क्यों रखा गया था। प्रश्न (पद्य 25 का) एक नकारात्मक उत्तर की मांग करता है: "नहीं," तब इस्राएलियों ने बलिदान नहीं दिया था। जाहिर तौर पर चालीस साल की अवधि एक ऐसा समय था जब प्रभु की आज्ञाकारिता या लेवीय संस्थाओं के प्रति आज्ञाकारिता में गिरावट आई थी। यह अवधि कादेश में इस्राएलियों के दलबदल के साथ शुरू हुई। भविष्यवाणी परंपरा में इस जंगल काल में मूर्तिपूजा की ओर झुकाव पर जोर दिया गया है।" तो, जैसा कि मैककोमिस्की ने इस अनुच्छेद को पढ़ा है, वह कह रहा है कि श्लोक 25 एक अलंकारिक प्रश्न है - इसका उत्तर "नहीं" है, क्योंकि इज़राइल ने जंगल की अवधि के दौरान बलिदानों का पालन नहीं किया था, लेकिन उन्होंने कुछ और किया था।

वह उस कानून का अनुवाद करता है जो आयत 26 को एक *कानून* प्रतिकूल के रूप में पेश करता है; उनकी अगली पंक्ति पद्य 26 है जो सबसे अच्छी तरह से प्रतिकूल समझे जाने वाले शब्द से शुरू होती है, "परन्तु तू ने अपने राजा के मन्दिर को, और अपनी मूरतों के भवन को ऊंचा कर दिया है।" इसलिए इस्राएल ने बलिदान की उपेक्षा करके परमेश्वर की अवज्ञा की और मूर्तिपूजा की ओर मुड़ गया। इसीलिए वह जंगल के समय का जिक्र करते हुए 25 और 26 पढ़ता है। "मंदिर" और "पीठ" शब्दों को बदलने की आवश्यकता नहीं है।

यहां श्लोक 26 की व्याख्या और अनुवाद करने के बारे में बहुत चर्चा हुई है। लेकिन उनका निष्कर्ष है, "यह श्लोक एक अज्ञात सूक्ष्म देवता की मूर्तिपूजा के उपकरणों को संदर्भित करता है। इस तरह से देखा जाए तो, श्लोक 26 औपचारिक संरचना में अच्छी तरह से फिट बैठता है, क्योंकि ईजेकील और होशे की तरह अमोस ने अपने इतिहास में भगवान के लोगों की अवज्ञा का पता लगाया है। तो मैककोमिस्की उस अलंकारिक प्रश्न को इसी तरह देखता है और निश्चित रूप से वह अलंकारिक प्रश्न वह है जिसके बारे में लोग कहते हैं

कि इसका तात्पर्य पंथ-विहीन धर्म के प्रति नकारात्मक उत्तर है। खैर, मैककॉमिस्की का कहना है कि वास्तव में इसका उद्देश्य पंथ-रहित धर्म होना नहीं है क्योंकि इज़राइल जंगल काल में अवज्ञाकारी था और बलिदानों का पालन नहीं करता था और इसके बजाय मूर्तिपूजा की ओर मुड़ गया था।

बी। अमोस 5 पर रिडरबोस

यहां एक डच ओल्ड टेस्टामेंट विद्वान जे. रिडरबोस हैं जिन्होंने अमोस पर एक टिप्पणी लिखी है और मैककोमिस्की जैसी व्याख्या पर सवाल उठाते हैं और पूछते हैं कि क्या यह वास्तव में श्लोक 25 और 26 के बारे में जाने का सबसे अच्छा तरीका है। रिडरबोस की अमोस 5 की चर्चा में उन्होंने सुझाव दिया है पिछले संदर्भ में मुद्दा भगवान द्वारा वर्तमान में लाए गए प्रसाद को अस्वीकार करने का है। अमोस 5:21 पर वापस जाएँ, “मैं तुम्हारे धार्मिक पर्वों से घृणा करता हूँ, मैं उनका तिरस्कार करता हूँ। चाहे तुम मेरे लिये होमबलि लाओ, तौभी मैं उन्हें ग्रहण न करूंगा।” मुद्दा वर्तमान में प्रसाद लाने का था और उनका मानना है कि यह तर्क देना कठिन है कि भगवान वर्तमान प्रसाद को इस आधार पर अस्वीकार कर देंगे कि उन्होंने जंगल के समय में प्रसाद लाने की उपेक्षा की थी। श्लोक 21 और 22 और श्लोक 25 में स्पष्ट रूप से क्या संबोधित किया जा रहा है, के बीच क्या संबंध है ? उनका सुझाव यह है कि 25 वास्तव में 22 के विचार को इस अर्थ में जारी रखता है कि बलिदान लाना प्राथमिक और एकमात्र चीज नहीं है जिसे प्रभु इसराइल से चाहते हैं। यदि आप पेंटाटेच को देखें, तो ऐसा लगता है कि बलि प्रणाली जंगल काल में स्थापित की गई थी, और इज़राइल ने, कम से कम आंशिक रूप से, जंगल की यात्राओं के दौरान अनुष्ठान प्रणाली का पालन किया था। संख्या 16:46 में, वेदी की आग का उल्लेख किया गया है, और यह माना जाता है कि दैनिक बलिदान लाए जा रहे थे, लेकिन संख्या 16:46 के अलावा, आपको जंगल में भटकने के दौरान बलि प्रणाली के पालन का कोई स्पष्ट संदर्भ नहीं मिलता है।

लेकिन रिडरबोस का मानना है कि "निःसंदेह प्रसाद लाया गया था, लेकिन जिन परिस्थितियों में इस्राएली रह रहे थे, उनके कारण जंगल की अवधि के दौरान संभवतः सभी

बलि प्रणाली का पूर्ण और नियमित पालन नहीं हुआ था।" तो उनका सुझाव यह है कि श्लोक 25 में उस अलंकारिक प्रश्न का उद्देश्य जितना प्रतीत हो सकता है उससे कम निरपेक्ष है। वह यह सुझाव नहीं दे रहा है कि जंगल में जो कुछ भी लाया गया था, वह कोई बलिदान नहीं था, बल्कि यह कि उस जंगल के समय में बहुत कमी थी।

फिर, अमोस जिस तर्क पर आगे बढ़ रहा है, वह यह है कि बलिदानों का वह महत्व नहीं है जो इस्राएली उन्हें दे रहे थे - अर्थात्, अनुष्ठान का पालन स्वयं सच्चे धर्म का सार था। "क्या तुम जंगल में मेरे लिये बलिदान लाए हो?" सम्पूर्ण अनुष्ठान व्यवस्था का पूर्णतः पालन नहीं किया गया। बलिदान सच्चे धर्म का सार नहीं है। सच्चा धर्म भगवान के प्रति आज्ञाकारी होने की दिल की इच्छा है। यह 1 शमूएल 15 के कथन पर वापस जाता है, "आज्ञापालन बलिदान से बेहतर है;" प्रभु यही चाहते हैं। इसलिए, चाहे आप मैककोमिस्की का दृष्टिकोण लें या रिडरबोस जैसा दृष्टिकोण, निश्चित रूप से श्लोक 25 जो कह रहा है वह यह नहीं है कि मोज़ेक धर्म जानबूझकर पंथ-विहीन था या सच्चा धर्म केवल नैतिकता का मामला है।

4. जेर 7:21-23 और पंथ

दूसरा पाठ जो मुझे कठिन लगता है वह है यिर्मयाह 7:21-23। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि इस पंथ-विरोधी दृष्टिकोण से यह सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है, क्योंकि श्लोक 22 में, आपका कथन है, "जब मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया और उनसे बात की, तो मैंने उन्हें होमबलि के बारे में आदेश नहीं दिया। और बलिदान।" हम उस कथन के साथ क्या करें?

एक। निर्गमन 19:5 के साथ रॉल्स प्रतिक्रिया

दो सुझाव हैं जो मैं दे सकता हूँ। एक रॉल्स का है, जो कहता है, "वाचा की पेशकश के साथ यहोवा के इसराइल के सबसे पहले दृष्टिकोण पर," जो कि निर्गमन 19 में है, "यहां तक कि डिकालॉग के प्रख्यापित होने से पहले, यह यहोवा के सबसे पहले एक साथ आने पर था" और इज़राइल भगवान ने बलिदानों के बारे में कुछ भी कहने से परहेज किया, बस इतना कहा कि लोगों और उनके बीच पूरा समझौता उनकी वफादारी और आज्ञाकारिता पर आधारित था। देखिए वह निर्गमन 19:5 है। "अब यदि तू पूरी रीति से मेरी आज्ञा माने, और

मेरी वाचा का पालन करे, तो सब जातियों में से तू ही मेरी निज सम्पत्ति ठहरेगा। यद्यपि सारी पृथ्वी मेरी है, तौभी तुम याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।' ये वे शब्द हैं जो तुम्हें इस्राएल से कहने हैं।" वाचा की वह पहली प्रस्तुति बलिदान के बारे में कुछ नहीं कहती है। तो, "जब मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया और उनसे बात की, तो मैंने उन्हें होमबलि और बलिदान के बारे में आदेश नहीं दिया," उस प्रारंभिक प्रस्तुति को संदर्भित किया जा सकता है। तो यह एक तरीका है जिससे आप पद 21 से निपट सकते हैं।

बी। ओटी एलिस की प्रतिक्रिया: →के संबंध में

ओटी एलिस का एक अलग सुझाव है। मैंने आपके उद्धरणों में उसका उल्लेख किया है, पृष्ठ 11, "जिन चौंकाने वाले शब्दों पर हमने अभी विचार किया है उनका कारण लगभग समान रूप से आश्चर्यजनक शब्दों में दिया गया है: 'क्योंकि मैंने तुम्हारे पिता से कुछ नहीं कहा था, और न ही उन्हें उस दिन आज्ञा दी थी जब मैं उन्हें बाहर लाया था होमबलि या बलिदान के विषय में मिस्र की भूमि।' पहली नज़र में ये शब्द आलोचकों के इस दावे को पूरी तरह से पुष्ट करते प्रतीत होते हैं कि यिर्मयाह को निर्गमन के समय मूसा द्वारा शुरू की गई बलि प्रणाली के बारे में कुछ भी नहीं पता था। लेकिन ऐसा निष्कर्ष 'संबंधित' प्रस्तुत हिब्रू शब्द की अस्पष्टता के साथ न्याय करने में अंग्रेजी अनुवाद की विफलता पर आधारित है; और विशेष रूप से इस तथ्य से कि, जैसा कि उपयोग के अध्ययन से स्पष्ट हो गया है, उन्हें 'के कारण' या 'के लिए' द्वारा भी प्रस्तुत किया जा सकता है। यह स्पष्ट है कि यदि यिर्मयाह 7:22 में हम 'के कारण' या 'के लिए' मजबूत प्रतिपादन का उपयोग करते हैं, तो यह कविता न केवल उस अनुमान का समर्थन करना बंद कर देती है जिसे आलोचक इस पर आधारित करते हैं, बल्कि यह अत्यधिक उपयुक्त हो जाता है प्रसंग।" मुझे लगता है कि यहां एलिस के तर्क की ताकत उसका सुझाव है कि यह संदर्भ में कितनी अच्छी तरह फिट बैठता है।

“यहोवा इस्राएल से यह नहीं कहता, कि उस ने उनके पूर्वजोंको बलिदान **के विषय में कोई आज्ञा नहीं दी।** पहले तो यिर्मयाह को सुनने वाले लोग सोच सकते थे कि यह उसका अर्थ था, लेकिन एक पल के प्रतिबिंब से उन्हें विश्वास हो जाएगा कि उसके शब्दों का सही अर्थ नहीं हो सकता है। यहोवा का मतलब यह था कि उसने बलिदानों **के लिए** उनके पूर्वजों से

बात नहीं की, जैसे कि उसे उनकी ज़रूरत थी और वह तब तक भूखा रहेगा जब तक कि वह उन पापी मनुष्यों की घृणित भेंटों से तृप्त न हो जाए, जिन्हें उस वास्तविक संबंध का कोई अंदाज़ा नहीं था जिसमें वे खड़े थे। उसे।

भाषा जानबूझकर अस्पष्ट प्रतीत होती है, यहाँ तक कि आश्चर्यजनक रूप से भी। लेकिन ये शब्द "अपनी होमबलि को अपने बलिदानों में रखो और तुम मांस खाओ" का उद्देश्य उनके अर्थ का संकेत देना है। आप देखिए, श्लोक 21 पर वापस जाएँ, "इस्राएल का परमेश्वर, सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, 'आगे बढ़ो, अपने होमबलि को अपने अन्य बलिदानों में शामिल करो और मांस स्वयं खाओ।'"

आप देख रहे हैं कि एलीस यहां क्या कह रहा है, "फिर यह स्पष्ट रूप से इंगित करने के बाद कि भगवान को अपने प्राणियों के बलिदान की कोई आवश्यकता नहीं है, पैगंबर यह घोषणा करते हैं कि आज्ञाकारिता सिनैटिक विधान का वास्तविक उद्देश्य और आवश्यकता थी।" होमबलि का कोई भी भाग नहीं खाया जाना चाहिए। इसलिए जब यह 21 में कहता है, "आगे बढ़ो, अपने होमबलि को अपने अन्य बलिदानों में शामिल करो और मांस स्वयं खाओ," प्रभु वास्तव में कह रहे हैं, कि जिन्होंने उन्हें उनके प्रसाद के उस हिस्से से नाराज किया, जिसे उन्होंने दावा किया है उसका अपना, इसे पूरा अपने पास रखने के लिए स्वागत है। वह उस प्रकार का बलिदान नहीं चाहता या उसकी आवश्यकता नहीं है। इसलिए आगे बढ़ो, अपने अन्य बलिदानों में अपने होमबलि भी मिलाओ, और उनका मांस तुम ही खाओ; क्योंकि जब मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकाल लाया, और उन से बातें की, तब मैं ने उन्हें आज्ञा नहीं दी।

एनआईवी कहता है "होमबलि के बारे में।" लेकिन आप देखिए कि एलिस का अनुवाद क्या करता है। किंग जेम्स कहते हैं "संबंधित" और एनआईवी कहते हैं "के बारे में", लेकिन यह 'अलपूर्वसर्ग है, आप वहां हिब्रू पाठ को देखते हैं, 'अल। आप उस 'अल' का अनुवाद कैसे करते हैं? क्या यह "के बारे में" या "संबंधित" है जैसा कि एनआईवी और किंग जेम्स कहते हैं? एलिस कहते हैं "नहीं;" यह "की वजह से" या "की खातिर" होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, "जब मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र से निकाल लाया, और उन से बातें की, तब

मैं ने उन्हें होमबलि और मेलबलि के लिये आज्ञा नहीं दी," क्योंकि मुझे उनकी आवश्यकता नहीं। आप इन्हें अपने पास रख सकते हैं. मुझे लगता है कि यह सुझाव श्लोक 21 के साथ बेहतर फिट बैठता है। "आगे बढ़ो, अपने होमबलि को अपने अन्य बलिदानों में शामिल करो और मांस स्वयं खाओ," मुझे आपके बलिदानों की आवश्यकता नहीं है। मैं जो चाहता हूँ वह आपकी आज्ञाकारिता है। तो, फिर से, मुझे लगता है कि यिर्मयाह जो कर रहा है वह यह नहीं कह रहा है कि बलिदान कुछ ऐसा है जिसका भगवान मूल रूप से विरोध करते हैं। यह वह तरीका है जिससे इस्राएली बलिदान ला रहे थे जिसका यहोवा विरोध कर रहा था।

3. धर्म में कर्मकाण्ड का स्थान

संभवतः ईसाई धर्म प्रचारक समुदाय में यह कोई मुद्दा नहीं है, कोई प्रश्न नहीं है जिसे लोग संबोधित कर रहे हैं। आप एक विश्वविद्यालय परिसर में जाते हैं जहां छात्र "साहित्य के रूप में बाइबिल" पर एक पाठ्यक्रम लेते हैं, यह उस प्रकार की सामग्री है जिसके बारे में वे बात करेंगे। यह इन सभी पाठ्यपुस्तकों में है जिनका उपयोग पुराने नियम के उस प्रकार के उपचार में किया जाता है। इसलिए, मुझे यकीन है कि वहाँ बहुत सारे लोग हैं जो सोचते हैं कि यह इस प्रकार के विचारों का विरोध है। यदि और कुछ नहीं तो यह हमारा ध्यान इस प्रश्न की ओर आकर्षित करता है कि भविष्यवक्ता इज़राइल से उनकी अनुष्ठानिक आज्ञाकारिता के बारे में इतनी दृढ़ता से क्यों बात करते हैं। क्योंकि तब यह प्रश्न उठता है कि पूजा में कर्मकाण्ड का क्या स्थान है? यह आज भी निरंतर चलने वाला मुद्दा है। हमारी पूजा में अनुष्ठान का क्या स्थान है? विभिन्न रूपों में आप आज अनुष्ठान के उसी प्रकार के दुरुपयोग में पड़ सकते हैं जैसे पुराने नियम के काल में इस्राएलियों ने किया था। आप सोचते हैं कि केवल चर्च में जाकर, कुछ पंथों का पाठ करके, कुछ विशेष प्रार्थनाएँ करके, आप ईश्वर की कृपा प्राप्त कर लेते हैं। यदि आपका जीवन इस बात का प्रमाण नहीं दे रहा है कि आप उस तरह से जीने के इच्छुक हैं जिस तरह प्रभु चाहते हैं कि आप जियें। अनुष्ठान स्वचालित रूप से भगवान का आशीर्वाद और लाभ नहीं लाते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वे महत्वहीन हैं और हमें उन्हें किनारे कर देना चाहिए, क्योंकि उनका उपयोग वास्तविक है।

बी. पैगंबर सांस्कृतिक कार्यकर्ता थे

1. दृष्टिकोण की व्याख्या आइए बी पर चलते हैं, इस स्थिति का दूसरा चरम, यानी, "पैगंबर सांस्कृतिक कार्यकर्ता थे।" 1. उसके अंतर्गत है, "दृष्टिकोण की व्याख्या।" मैं कहूंगा कि आज 30 या 40 साल पहले की तुलना में अधिक मान्यता है कि पैगंबर मूल रूप से पंथ के विरोधी नहीं थे, लेकिन पेंडुलम घूम गया है। पिछले लगभग 50 वर्षों में पुराने नियम के विद्वानों के एक निश्चित वर्ग के बीच पैगम्बर और पंथ को इतनी निकटता से जोड़ने के लिए एक आंदोलन चला है कि पैगम्बरों के साथ-साथ पुजारियों को भी आधिकारिक पंथ पदाधिकारियों के रूप में देखा जाए।

एक। ऑडब्रे आर. जॉनसन वकालत करते हैं

इस दृष्टिकोण के समर्थकों में से एक, जिनके काम का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है, ऑब्रे आर. जॉनसन हैं। यदि आप पृष्ठ 12 के निचले भाग को देखें, तो आपको उनके खंड *द कल्टिक प्रोफेट इन एंशिअंट इज़राइल से उद्धारण* मिलेंगे, वे कहते हैं, "परिणामस्वरूप पैगंबर की भूमिका के मध्यस्थ कार्यों को कमोबेश नजरअंदाज कर दिया गया है। फिर भी यह निस्संदेह सच है कि *नबी* या पैगंबर, एक पेशेवर व्यक्ति के रूप में, यहोवा के प्रवक्ता के समान ही लोगों के प्रतिनिधि थे; प्रार्थना करने के साथ-साथ दैवीय प्रतिक्रिया या दैवज्ञ देना उनके कार्य का हिस्सा था। ऐसी स्थिति में, यह प्रश्न फिर उठता है कि वास्तव में इन सलाहकार विशेषज्ञों की स्थिति क्या थी। क्या प्रारंभिक भविष्यवक्ताओं की तरह, उनकी भी पंथ के भीतर पुरोहित के समान स्थिति थी? विशेष रूप से, क्या हमें यरूशलेम के भविष्यवक्ताओं को मंदिर कर्मियों के सदस्य के रूप में सोचना चाहिए?" बेशक यह एक सवाल है, लेकिन उनका निष्कर्ष "हाँ" है।

बी। सिगमंड मोविन्केल और सांस्कृतिक पैगंबर

भविष्यवक्ताओं को पंथ के हिस्से के रूप में इस अर्थ में शामिल करने की दिशा में बहुत अधिक आंदोलन हुआ है कि वे सांस्कृतिक पदाधिकारी थे, जो सिगमंड मोविन्केल के नाम से नॉर्वेजियन पुराने नियम के विद्वान के प्रभाव से आता है। आप उसका नाम अपनी ग्रंथ सूची में पाएंगे। उन्होंने भजनों पर कई खंड प्रकाशित किए, और उनमें से एक खंड में,

उन्होंने तर्क दिया कि भजनों में, भगवान कभी-कभी सीधे बोलते हैं। उदाहरण के लिए, भजन 75:2 और निम्नलिखित कहता है, “ हे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, हम धन्यवाद करते हैं, क्योंकि तेरा नाम निकट है; मनुष्य तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन करते हैं। तुम कहते हो, 'मैं नियत समय चुनता हूँ; मैं ही सीधा न्याय करता हूँ। जब पृथ्वी और उसके सभी लोग कांपते हैं, तो मैं ही उसके खंभों को मजबूती से थामता हूँ।" आप वहां पहली कविता में देखते हैं, भगवान भविष्यवाणी बोलने के रूप में बहुत कुछ बोल रहे हैं। मोविनकेल ने इस प्रकार के उदाहरणों से तर्क दिया कि आपको इनमें से कई भजनों में एक भविष्यसूचक भाषण की शैली अंतर्निहित मिलती है। इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि अधिकांश भजन पंथ में उत्पन्न हुए थे और भजन के कई हिस्सों के शब्द भविष्यवक्ताओं द्वारा बोले गए थे जो सांस्कृतिक अनुष्ठानों से जुड़े थे। उन्होंने उन्हें "पंथ पैगंबर" कहा। इसलिए प्रथम व्यक्ति एकवचन को उन्होंने भविष्यवक्ता की एक अलौकिक प्रतिक्रिया के रूप में माना जो एकत्रित होने पर पूजा करने वाले लोगों के लिए ईश्वर का वचन ला रहा था। इसलिए पुजारी के अलावा, जो मंदिर में प्रसाद लाता था, आपके पास एक व्यक्ति था जिसने वहां एक भविष्यवाणी दी थी। उन्होंने ईश्वर के वचन को धार्मिक पूजा के संदर्भ में लाया। तो, उनका निष्कर्ष यह था कि भविष्यवक्ता और पुजारी मंदिर सेवा, या विभिन्न अन्य अभयारण्यों में पूजा के दो अलग-अलग कार्यालय थे। कभी-कभी वे एक व्यक्ति में एकजुट हो सकते हैं - ईजेकील एक पैगंबर और एक पुजारी थे - लेकिन आम तौर पर, उन्हें लगता था कि वे दो अलग-अलग व्यक्ति थे, दोनों सांस्कृतिक पदाधिकारी थे।

2. शास्त्रीय समर्थन कमजोर है

आप पूछ सकते हैं, "इसके लिए शास्त्रीय समर्थन कहाँ है?" इन लोगों के लेखन में सिद्धांत के लिए प्रत्यक्ष शास्त्रीय समर्थन बहुत कम है। कुछ लोगों का तर्क है कि सैमुअल शीलो के तम्बू से जुड़ा था। वह रामा में बलिदान स्थल से जुड़ा हुआ था। आपके पास पैगम्बरों और पुजारियों का एक साथ उल्लेख किये जाने के बिखरे हुए सन्दर्भ हैं। उदाहरण के लिए, यशायाह 28:7 जहां आपको यह कथन मिलता है, "याजक और भविष्यद्वक्ता शराब से लड़खड़ाते हैं और शराब से भ्रमित हो जाते हैं।" इसलिए पुजारियों और पैगम्बरों का

उल्लेख एक ही वाक्य में किया जाता है जैसे कि वे किसी तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हों। यिर्मयाह 4:9, आपके पास एक समान संदर्भ है "प्रभु की वाणी है, 'उस दिन, 'राजा और हाकिम हतोत्साहित हो जाएंगे, याजक भयभीत हो जाएंगे, और भविष्यद्वक्ता भयभीत हो जाएंगे।" इसमें याजकों की सूची है और भविष्यवक्ता एक साथ. आपके पास एलियाह कार्मेल पर्वत पर बलि अनुष्ठानों या समारोहों से जुड़ा हुआ है , जब वह बाल के पुजारियों का सामना करता है। उदाहरण के लिए, आपके पास मंदिर में प्रकट होने वाले भविष्यवक्ता हैं, यिर्मयाह। यिर्मयाह अध्याय 7 की पुस्तक में वह मंदिर के दरबार में है। देखिये ये सभी अप्रत्यक्ष प्रकार के सन्दर्भ हैं। सिद्धांत को आधार बनाने के लिए बहुत कम स्पष्ट साक्ष्य हैं। सी. यह दृष्टिकोण कि भविष्यवक्ता न तो पंथ-विरोधी थे, न ही पंथ-कार्यकर्ता, बल्कि केवल दैवीय रहस्योद्घाटन के उद्घोषक थे

आइये 3., "दृष्टिकोण का आकलन" पर चलते हैं। यदि आप *न्यू बाइबल डिक्शनरी* में भविष्यवाणी पर लेख देखें , तो जे. मोटयेर लिखते हैं, "पंथ पैगंबर की स्थिति का आधार काफी हद तक अनुमानात्मक है। यह देखना मुश्किल है कि कोई भी सिद्धांत कैसे स्थिर हो सकता है जब वह इतनी मामूली नींव पर टिका हो।" मुझे लगता है कि वह सही हैं कि ऐसे बहुत कम प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जो इस निष्कर्ष का समर्थन करते हों कि भविष्यवक्ता सांस्कृतिक पदाधिकारी थे। ईजे यंग ने अपने खंड *माई सर्वेन्ट्स द प्रोफेट्स में* कहा है, "हम भविष्यवक्ताओं और मंदिर के बीच सटीक संबंध के प्रश्न को अनुत्तरित छोड़ देंगे। हमें नहीं लगता कि धर्मग्रंथ में इस मामले पर निश्चितता के साथ कुछ कहने के लिए पर्याप्त सबूत दिए गए हैं।" जॉनसन का मोनोग्राफ, जिसे हमने *प्राचीन इज़राइल में पंथ पैगंबर पर देखा* था, वेलहाउजेन के स्कूलों के तहत प्रचलित दृष्टिकोणों के लिए एक संपूर्ण सुधारात्मक के रूप में कार्य करता है जो कि पंथ-विरोधी होगा। तो यह उसमें सुधारात्मक है। इससे हमें यह देखने को मिलता है कि वास्तव में भविष्यवक्ताओं और बलिदान के स्थान के बीच कुछ संबंध था। हालाँकि, यह संबंध क्या था, हम अपनी ओर से यह कहने में असमर्थ हैं। हम जॉनसन के इस तर्क का पालन करने में असमर्थ हैं कि भविष्यवक्ता सांस्कृतिक विशेषज्ञ थे। मुझे लगता है कि मोटयेर की बात सही है क्योंकि यह काफी हद तक ठोस सबूतों पर आधारित है।

तो चलिए सी. पर चलते हैं, "यह दृष्टिकोण कि भविष्यवक्ता न तो पंथ-विरोधी थे, न ही पंथ-कार्यकर्ता, बल्कि केवल दैवीय रहस्योद्घाटन के उद्घोषक थे।" मुझे ऐसा लगता है कि अंतिम बात यहीं है। हमने शुरू से ही बात की है कि भविष्यवाणी का कार्य ईश्वरीय आह्वान पर आधारित है। ईश्वर एक पुजारी को भविष्यवक्ता के रूप में कार्य करने के लिए बुला सकता है। ईजेकील इसका एक उदाहरण था। वह एक किसान को एलीशा और आमोस की तरह बुला सकता था। वह जो कोई भी था, उस व्यक्ति को परमेश्वर ने अपने वचन का प्रचार करने के लिए बुलाया था; परमेश्वर ने अपना वचन उनके मुँह में डाला और उन्होंने परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का सन्देश दिया। मुझे ऐसा लगता है कि जब आप पूरे पुराने नियम और भविष्यवक्ताओं के लेखन को देखते हैं, तो निष्कर्ष यह है: न तो भविष्यवक्ता पंथ के खिलाफ थे, न ही पेशेवर सांस्कृतिक अधिकारी। इनमें से किसी भी स्थिति के लिए हमारे पास बहुत कम सबूत हैं। कभी-कभी भविष्यवक्ताओं ने पंथ की निंदा की, लेकिन उन्होंने ऐसा तब किया जब यह अपने इच्छित उद्देश्य से भटक गया; वे बुनियादी तौर पर इसके विरोधी नहीं थे। मुझे लगता है कि भविष्यवक्ताओं ने जिसे प्रचारित किया वह था जिसे मैं अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से भगवान से प्यार करने के लिए दिल के आंतरिक स्वभाव की "संविदात्मक एकता" कहूंगा, और उस प्यार की नैतिक और नैतिक ईमानदारी दोनों में बाहरी अभिव्यक्ति होगी। न्याय करना, अपने पड़ोसी से प्यार करना, वगैरह-वगैरह, साथ ही दैवीय निर्धारित मानकों के अनुसार पूजा करना। तो आपको उन सभी घटकों की आवश्यकता है, आप केवल अनुष्ठानों से न गुजरें और भगवान का अनुग्रह प्राप्त करने की उम्मीद न करें। उन अनुष्ठानों को भगवान के प्रति प्रेम और भगवान के उद्देश्यों के लिए जीने की इच्छा के साथ जोड़ा जाना चाहिए। यह नैतिकता और अनुष्ठान पालन दोनों द्वारा किया जाता है।

सांस्कृतिक कृत्यों का अपने आप में कोई मूल्य नहीं है। मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जो भविष्यवक्ता प्राचीन इज़राइल को बता रहे हैं, यह कुछ ऐसा है जो वे हमें भी बता सकते हैं। सांस्कृतिक कृत्य तभी सार्थक होते हैं जब उन्हें ईश्वर के प्रति अविभाजित प्रेम और उनके मार्ग पर चलने की इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता है। जब कोई व्यक्ति

ईश्वर से प्रेम करता है और उसके मार्गों पर चलने की इच्छा रखता है, तो वह कर्मकांडों में व्यक्त होता है। लेकिन ईश्वर के प्रति प्रेम और उनके मार्गों पर चलने की इच्छा से अलग अनुष्ठान कार्य प्रभु के लिए घृणास्पद हैं। मुझे लगता है कि भविष्यवक्ता यही कह रहे हैं जब वे इसराइल में जो कुछ भी हो रहा है उसकी निंदा करते हैं, जो कि चढ़ावे को जलाने के गुणन के संबंध में हो रहा है, लेकिन ऐसे जीवन जी रहे हैं जो पूरी तरह से भगवान की इच्छाओं के विपरीत थे।

आठवीं. भविष्यवाणी पुस्तकों की रचना - क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?

हम आगे बढ़ते हैं. रोमन अंक आठवीं. है, "भविष्यवाणी की पुस्तकों की संरचना— क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?" 3 या 4 उप-बिंदु हैं. ए. है, "पारंपरिक दृश्य।" बी. है, "लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल।" सी. है, "इतिहास और पारंपरिक स्कूल, वह मौखिक परंपरा स्कूल है।" ए. पारंपरिक दृष्टिकोण

लेखन को भविष्यवक्ता इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे अपना संदेश लिखित रूप में देते हैं ताकि इसे स्थायी रूप में संरक्षित किया जा सके। उस दृष्टिकोण के अनुसार भविष्यवक्ता लेखक थे। शायद यिर्मयाह 36:1-28 और यशायाह 30 पद 8 जैसे अनुच्छेद उस पद्धति पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं जिसमें चीजें लिखी गई थीं।

1. यिर्मयाह 36:1-28

यिर्मयाह 36:1-28 काफी दिलचस्प है। आइए उस पर नजर डालें। यह किसी भविष्यसूचक संदेश को लिखित रूप में रखने का सबसे स्पष्ट वर्णन है। आपने पढ़ा "यहूदा के राजा यहोयाकीम के चौथे वर्ष में, यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा: 'एक पुस्तक ले और उस पर वे सभी वचन लिख, जो मैंने इस्राएल, यहूदा और उस समय के अन्य सभी राष्ट्रों के विषय में तुमसे कहे हैं। मैं ने योशियाह के राज्यकाल से अब तक तुम से बातें करना आरम्भ किया। कदाचित जब यहूदा के लोग उस हर विपत्ति के विषय में सुनेंगे जो मैं उन पर डालने की योजना बना रहा हूं, तो उनमें से हर एक अपनी दुष्ट चाल से फिर जाएगा; तब मैं उनकी दुष्टता और उनका पाप क्षमा करूंगा।'" इसलिए यहोवा ने यिर्मयाह से कहा कि वह एक शास्त्री से यह सन्देश लिखवा ले।

तो यिर्मयाह क्या कर रहा है? श्लोक 4, उसने "नेरिय्याह के पुत्र बारूक को बुलाया, और जब यहोवा ने यिर्मयाह से सब वचन कहे थे, तब बारूक ने उन्हें पुस्तक पर लिखा।" तब उस पुस्तक को दरबार में ले जाया गया और राजा को पढ़कर सुनाया गया। राजा ने क्या किया? आप श्लोक 21 में पढ़ते हैं, "राजा ने यहूदी को पुस्तक लाने के लिए भेजा, और यहूदी ने उसे एलीशामा सचिव के कमरे से लाया और उसे राजा और उसके पास खड़े सभी अधिकारियों को पढ़कर सुनाया। यह नौवां महीना था और राजा शीतकालीन भवन में बैठा था, उसके सामने अंगीठी में आग जल रही थी। जब भी यहूदी ने पुस्तक के तीन या चार स्तम्भ पढ़े, राजा ने उन्हें एक मुंशी के चाकू से काट दिया और उन्हें आग के बर्तन में फेंक दिया, जब तक कि पूरी पुस्तक आग में जल न गई। आयत 26 में आपने पढ़ा, "राजा ने राजा के पुत्र यरहमील, अज़्रीएल के पुत्र सरायाह और अब्देल के पुत्र शेलेम्याह को बारूक मंत्री और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। परन्तु यहोवा ने उन्हें छिपा रखा था," इसलिये वे गिरफ्तार नहीं किये गये।

“ जब राजा ने उस पुस्तक को जला दिया जिसमें वे शब्द थे जो बारूक ने यिर्मयाह के कहने पर लिखे थे, तब यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा: 'एक और पुस्तक ले और उस पर वे सभी शब्द लिख दे जो पहली पुस्तक में थे, जिसे यहूदा के राजा यहोयाकीम ने लिखा था। जल गया। यहूदा के राजा यहोयाकीम से यह भी कह, यहोवा यों कहता है, कि तू ने उस पुस्तक को जलाकर यह कहा, कि तू ने उस पर यह क्यों लिखा, कि बाबुल का राजा निश्चय आकर इस देश को नाश करेगा, और मनुष्य और पशु दोनों को इस में से नाश करेगा। ?'” इसलिये, यहूदा के राजा यहोयाकीम के विषय में यहोवा यह कहता है: 'उसके पास दाऊद की गद्दी पर बैठनेवाला कोई न होगा; उसके शरीर को बाहर फेंक दिया जाएगा और उजागर कर दिया जाएगा।"

तो, प्रभु ने यिर्मयाह से कहा कि इस संदेश को एक पुस्तक पर रख दो और यिर्मयाह संदेश लिखता है और मुंशी इसकी प्रतिलिपि बनाता है, इसे राजा के पास भेजा जाता है, वह इसे जला देता है, फिर प्रभु उसे संदेश फिर से देता है और वह इसे फिर से लिखता है।

2. यशायाह 30:8

यशायाह 30 पद 8 एक अन्य पाठ है जिसमें लेखन का संदर्भ है, जहां यह कहा गया है, "अब जाओ, इसे उनके लिए एक पट्टिका पर लिखो, इसे एक पुस्तक पर लिखो, कि यह आने वाले दिनों के लिए एक शाश्वत गवाही हो।" तो संदेश दिया जा चुका था और प्रभु ने कहा, "इसे एक पुस्तक पर लिखो।" अब वे दो परिच्छेद संभवतः सबसे स्पष्ट परिच्छेद हैं जो "क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?" के मुद्दे को संबोधित करते हैं। और उन्होंने उन तरीकों पर कुछ प्रकाश डाला जिनके द्वारा भविष्यसूचक पुस्तकें हमारे पास आईं। हम इन कुछ प्रकार की टिप्पणियों से अधिक कुछ नहीं जानते हैं। प्रत्येक मामले में अपनाई गई विधि को स्थापित करने के लिए बहुत अधिक आंतरिक साक्ष्य नहीं हैं, लेकिन यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि कम से कम कुछ मामलों में, भविष्यवक्ताओं ने स्वयं संदेश लिखे, शायद दूसरों ने संदेश को हटा दिया और यदि यह मौखिक रूप से दिया गया था तो संदेश को संरक्षित किया, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि भविष्यवक्ता लेखक थे, केवल वक्ता नहीं। हम स्पष्ट रूप से नहीं जानते हैं कि क्या हर मामले में, पैगंबर ने खुद वह सामग्री लिखी थी जो उस पुस्तक में शामिल थी जिसमें उनका नाम लिखा था, चाहे वह शास्त्रियों द्वारा लिखा गया था या संपादित किया गया था और किसी और के द्वारा एक साथ रखा गया था। लेकिन पारंपरिक दृष्टिकोण यह है कि भविष्यवक्ता लेखक थे।

बी। द लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल

बी. है, "द लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल।" साहित्यिक आलोचनात्मक विचारधारा में भविष्यवक्ताओं को लेखक के रूप में भी देखा जाता था। हालाँकि, साहित्यिक आलोचकों ने जो बड़ा काम अपने सामने रखा वह यह था कि जो मूल था उसे बाद में जोड़े गए से अलग करना। इसलिए, उन्होंने यह निर्धारित करने के लिए बाद के समय की द्वितीयक अभिवृद्धि से मूल को अलग करने की कोशिश की कि क्या प्रामाणिक और सत्य था, जिसका श्रेय उस भविष्यवक्ता को दिया जा सकता है जिसका नाम किताब में दिया गया था, इसकी तुलना में जो बाद में जोड़ा गया था। बहुत जल्दी, वास्तविक भविष्यवाणियों को बाहर करने वाले तर्कसंगत विचारों ने भूमिका निभानी शुरू कर दी। आपको भविष्यसूचक कथन मिलते हैं,

विशेष रूप से यशायाह के बारे में, साइरस के बारे में बात करते हुए, यह संभव नहीं था और यह किसी और से आया होगा, यशायाह भविष्यवक्ता से नहीं। इसके कई उदाहरण हैं।

तो साहित्यिक आलोचनात्मक स्कूल के तहत मैं जो करना चाहता हूँ वह उन दो पुस्तकों के बारे में बोलना है जिन पर विशेष रूप से हमला किया जा रहा है क्योंकि ये उस पैगंबर के शब्द नहीं हैं जिनका नाम पुस्तक में है। वे दो पुस्तकें यशायाह और डैनियल हैं।

इतना नहीं यशायाह 1-39, कहाँ और यहाँ बहुत भिन्नता है। यहाँ तक कि आलोचनात्मक विद्वानों के बीच भी आहाज और हिजकिय्याह के समय में यशायाह भविष्यवक्ता को कम से कम 1-39 का श्रेय देने की सामान्य इच्छा है। लेकिन जब आप अध्याय 40-66 पर आते हैं, तो एक व्यापक आम सहमति है कि यशायाह नहीं बोल रहा है, बल्कि बेबीलोन की कैद के अंत में साइरस के समय में दूसरा यशायाह बोल रहा है। डैनियल के साथ भी ऐसी ही हरकतें की गईं। तो आइए लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल के अंतर्गत यशायाह और डैनियल को देखें।

1. यशायाह 40-66 - या "दूसरा यशायाह"

मुख्यधारा के साहित्यिक आलोचकों द्वारा अक्सर यह दावा किया जाता है कि यशायाह, यशायाह की पुस्तक के अध्याय 40-66 के लेखक नहीं हैं। समकालीन बाइबिल अध्ययन की मुख्यधारा में आगे बढ़ने वाले विद्वानों द्वारा इसे आमतौर पर ड्यूटेरो-इसैया के रूप में संदर्भित किया जाता है। आप इसे टिप्पणियों के शीर्षकों में पाएंगे। आप इसे मुख्यधारा की टिप्पणियों में पाएंगे, यशायाह पर एक टिप्पणी और ड्यूटेरो-यशायाह पर एक टिप्पणी। आपको एक खंड यशायाह 1-39 पर, दूसरा खंड अध्याय 40 और उसके बाद मिलता है।

1. राचेल मार्गालियोथ

आप अपने उद्धरणों को देखें, पृष्ठ 14, यशायाह पर एक महिला राचेल मार्गालियोथ, एक यहूदी विद्वान द्वारा एक बहुत ही दिलचस्प अध्ययन है, जो यशायाह की पुस्तक की एकता के लिए बहस कर रही है। ध्यान दें कि वह पृष्ठ के शीर्ष पर क्या कहती है, "यह धारणा कि यशायाह की पुस्तक एक लेखक का काम नहीं है, लेकिन अध्याय 40 से 66 एक

गुमनाम भविष्यवक्ता का है जो सियोन की वापसी के दौरान रहता था, इसे माना जाता है बाइबिल आलोचना की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक। यह निर्णय विद्वानों के दायरे से आगे निकल गया है और आम तौर पर सभी वर्गों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है, और बाइबिल स्कूली शिक्षा का हिस्सा बन गया है। कोई शायद ही ऐसे प्रबुद्ध व्यक्ति से मिलता है जो इसे निर्विवाद सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करता है।

दिलचस्प बयान. "पुस्तक का विभाजन सबसे पहले डोएडरलीन (1775) के क्रिटिकल स्कूल द्वारा व्यक्त किया गया था। उनकी प्रणाली को ईसाई आलोचकों द्वारा विकसित और विस्तारित किया गया था", और उनके पास उनमें से एक पूरा मेजबान है। "कई यहूदी विद्वानों ने उनका अनुसरण किया," इनमें से क्रॉस और उनकी "यशायाह पर वैज्ञानिक टिप्पणी" का उल्लेख है। "आधुनिक टिप्पणीकारों के बीच यह एक स्वीकृत तथ्य है कि अध्याय 40 से अंत तक यशायाह द्वारा नहीं लिखा गया है।" वह आगे कहते हैं: 'हमारे ज्ञान की वर्तमान स्थिति के अनुसार, इन अध्यायों की प्रामाणिकता को साबित करने का प्रयास करना किसी की ओर से एक निरर्थक प्रयास होगा, क्योंकि यह आंतरिक साक्ष्य से पता चलता है कि उन्हें सच्चे यशायाह के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। "अब यह एक विशिष्ट प्रकार का कथन है जो आपको साहित्य में मिलता है।

2. आरएन व्हायब्रे

उन्होंने वह पुस्तक 1964 में लिखी थी, यदि आप इसके बारे में हाल ही में चर्चा करते हैं, तो आरएन व्हायब्रे, *द सेकेंड इसैयाह* के अंतर्गत पृष्ठ 15ए देखें। मुझे नहीं पता कि आप ओल्ड टेस्टामेंट गाइड्स नामक खंडों की उस श्रृंखला से अवगत हैं या नहीं। वे छोटी किताबें हैं, आमतौर पर अधिकतम एक सौ पचास पृष्ठ, और पुराने नियम की प्रत्येक पुस्तक के लिए एक है। यह जो करता है वह आपको लेखकत्व, तिथि से परिचित कराता है, यह काफी हद तक प्रीमैन की तरह है, प्रत्येक विहित पुस्तक पर प्रमुख व्याख्यात्मक मुद्दों, लेखकत्व, तिथि और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के महत्वपूर्ण विश्लेषण के साथ एक पुस्तक को छोड़कर। जब आप पुराने नियम की श्रृंखला में यशायाह के पास आते हैं, तो यशायाह के लिए सिर्फ एक खंड नहीं है, देखिए यशायाह के लिए एक खंड है, और फिर अध्याय 40 से 66 के लिए यह

खंड, दूसरा यशायाह है। व्हायब्रे यह कहते हुए लिखते हैं, "यह वॉल्यूम, न्यू सेंचुरी बाइबिल में यशायाह 40-66 पर मेरी टिप्पणी की तरह, मेरे दो मोनोग्राफ... यशायाह की पुस्तक के दूसरे भाग के साथ निरंतर व्यस्तता का परिणाम है क्योंकि मैंने पहली बार 1965 में इस पर व्याख्यान तैयार किया था। मेरा मानना है कि यह दृष्टिकोण जो कि कई वर्षों से लगभग सार्वभौमिक रूप से माना जाता रहा है, कि अध्याय 40 से 55 काफी हद तक एक ही अज्ञात 'निर्वासन के पैगंबर' का काम है, मान्य है और अधिकांश विद्वानों का दृष्टिकोण बने रहने की संभावना है। तो, जब आप पूछते हैं कि यशायाह 40 से 66 का लेखक कौन था? यह एक अज्ञात भविष्यवक्ता है, जो निर्वासन के समय जीवित था। हम नहीं जानते कि वह कौन था। इस बात पर लगभग आम सहमति है कि यशायाह ने स्वयं पुस्तक का दूसरा भाग नहीं लिखा है।

3. दूसरे यशायाह तर्क का आधार

अब, इस तरह के निष्कर्ष पर पहुंचने का आधार क्या है? जब आप उन तर्कों को देखते हैं जो आपको इस ड्यूटेरो-यशायाह दृष्टिकोण की वकालत करने वालों में मिलते हैं, तो आमतौर पर जो आधार दिए जाते हैं वे मूल रूप से तीन तर्क होते हैं। मैंने इसके सार को तीन मूलभूत तर्कों तक सीमित करने का प्रयास किया है।

एक। ऐसा कहा जाता है कि यशायाह 40 से 66 में पाई गई अवधारणाएँ और विचार ईसा से काफी भिन्न हैं। 1-39

एक। " कहा जाता है कि यशायाह 40 से 66 में पाई गई अवधारणाएं और विचार पुस्तक के पहले भाग के निर्विरोध खंडों में दिखाई देने वाली अवधारणाओं और विचारों से काफी भिन्न हैं," यानी, पुस्तक का पहला भाग यशायाह को बताया गया है। दूसरे शब्दों में, वहाँ कुछ बचाव है, क्योंकि कुछ विद्वान कहेंगे कि प्रथम यशायाह का सब कुछ यशायाह का नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ कुछ गौण सामग्री है। लेकिन सामान्य तौर पर, तर्क यह है कि यदि आप यशायाह 1-39 में प्रस्तुत अवधारणाओं और विचारों को देखते हैं, और उनकी तुलना 40-66 में पाए गए अवधारणाओं और विचारों से करते हैं, तो अवधारणाओं और विचारों में पर्याप्त महत्वपूर्ण अंतर है। अवधारणाओं और विचारों में अंतर के कारण यह

निष्कर्ष निकलता है कि यह किसी एक लेखक का काम नहीं है। हम वापस आएं और इन तर्कों की प्रतिक्रियाओं को देखेंगे और एक मिनट में तर्कों को थोड़ा और पूर्ण रूप से भर देंगे।

बी। यशायाह की पुस्तक के दो भागों के बीच भाषा और शैली में ध्यान देने योग्य अंतर

दूसरे तर्क में आरोप लगाया गया है कि पुस्तक के दोनों भागों के बीच भाषा और शैली में उल्लेखनीय अंतर है। शब्दों के प्रयोग, व्याकरणिक निर्माण, इस तरह की चीजों को देखते हुए यह और अधिक तकनीकी हो जाता है। इससे वे यह तर्क देने का प्रयास करते हैं कि इस पुस्तक के दो भाग एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लिखे जा सकते, क्योंकि इसकी भाषा और शैली अलग-अलग है।

सी। अध्याय 40-66 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यशायाह के समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं है

तीसरा तर्क कहता है कि अध्याय 40-66 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यशायाह के समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नहीं है। यशायाह आहाज के समय में और हिजकिय्याह मनश्शे के समय तक जीवित रहा। अध्याय 40-66 में यरूशलेम और मंदिर को नष्ट कर दिया गया है, लोग बेबीलोन में निर्वासन में हैं और वे इस फ़ारसी शासक, साइरस के माध्यम से निर्वासन से मुक्त होने वाले हैं, जिसका उल्लेख नाम से किया गया था। तो निष्कर्ष यह है कि जब तक यह लिखा गया तब तक साइरस विश्व परिदृश्य पर पहले ही आ चुके होंगे। लेकिन इस दृष्टिकोण को अपनाने वाले अधिकांश विद्वान यह तर्क देंगे कि आहाज और हिजकिय्याह के समय के भविष्यवक्ता यशायाह के समय में किसी के लिए भी साइरस का नाम जानना असंभव होगा। तो ये तीन सामान्य तर्क हैं: अवधारणाएँ और विचार, भाषा और शैली, और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; वे अध्याय 40-66 में पिछले अध्याय से भिन्न हैं। यदि आप उन लोगों को पढ़ते हैं जो इस पर चर्चा करते हैं और फिर वे जो कहते हैं उसका विश्लेषण करते हैं, जहां तक ड्यूटेरो-यशायाह के समर्थन की बात है, तो आप पाएंगे कि यहीं तर्क केंद्र हैं।

2. मूल्यांकन: प्रतिवाद

क) अवधारणाएँ और विचार पुस्तक के दूसरे भाग से भिन्न हैं

आइए पहले तर्क को देखें, "अवधारणाएँ और विचार पुस्तक के दूसरे भाग से लेकर पुस्तक के निर्विरोध पहले भाग तक भिन्न होते हैं।" मैं तर्क दूंगा कि यह तर्क निर्णायक नहीं है और निर्णायक नहीं हो सकता क्योंकि यह किसी व्यक्ति के निर्णय पर निर्भर करता है कि अवधारणा और विचारों में किस हद तक अंतर लेखकत्व में अंतर को इंगित करता है या आवश्यक है। मुझे लगता है कि अंततः यह दृढ़ संकल्प का व्यक्तिपरक मामला है। अवधारणाओं और विचारों में अंतर जरूरी नहीं कि इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि एक अलग लेखक की आवश्यकता है। ध्यान दें, इस स्थिति के समर्थक यह दावा नहीं करते हैं कि पुस्तक के दो भागों के बीच अवधारणाओं और विचारों में विरोधाभास हैं। यदि विरोधाभास होते तो यह अधिक मजबूत तर्क होता, लेकिन यह तर्क नहीं है। मुझे लगता है कि यह तर्क देना कठिन है कि अवधारणाओं और विचारों में अंतर के लिए लेखकत्व में अंतर की आवश्यकता होती है। और भी अधिक जब आपने यह विचार कर लिया है कि पुस्तक, यदि आप स्वीकार करते हैं कि वह क्या होने का दावा करती है, तो वह केवल मानवीय शब्द नहीं है, बल्कि एक दिव्य शब्द है; यह दिव्य रहस्योद्घाटन है। क्या यह संभव नहीं है कि ईश्वर एक व्यक्ति, अर्थात् यशायाह के भविष्यसूचक जीवन के विभिन्न अवधियों में विभिन्न विचारों, सत्यों और अवधारणाओं का संचार कर सके? यशायाह लम्बे समय तक जीवित रहा और सेवा करता रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका मंत्रालय लगभग 740 से 681 ईसा पूर्व यानी लगभग 60 वर्ष तक चला। अब 60 वर्षों की अवधि में क्या यह संभव है कि अवधारणाओं और विचारों में विकास हो सके? आप ऐसी आशा करेंगे। क्या इसका मतलब यह है कि आपको यह निष्कर्ष निकालना होगा कि कोई अलग लेखक है? जैसा कि मैं आगे बढ़ता हूँ और यहां कहता हूँ, उदाहरण के लिए, यहोवा की सेवा से संबंधित यह विशेष रहस्योद्घाटन यशायाह के जीवन के उत्तरार्ध में पहली बार क्यों नहीं दिया जाना चाहिए? अब यह एक नई अवधारणा है जो पुस्तक के दूसरे भाग में है, प्रभु का सेवक विषय एक ऐसा विषय है जो पुस्तक के पहले भाग में नहीं है जो पुस्तक के दूसरे भाग में विकसित होता है। क्या इसके लिए किसी भिन्न लेखक की आवश्यकता होगी?

यहां पृष्ठ 13 पर एक उद्धरण है जहां ड्राइवर कहता है, उदाहरण के लिए, कि यशायाह 40 से 66 में ईश्वर की अवधारणा "बड़ी और पूर्ण" है, ये उसके शब्द हैं, क्या उसी भविष्यवक्ता के लेखन में इसे असंभव माना जा सकता है? जब ड्राइवर कहता है, "राष्ट्रों के संबंध में दैवीय उद्देश्य, विशेष रूप से इज़राइल के भविष्यवाणी मिशन के संबंध में, अधिक स्पष्ट रूप से विकसित हुआ है।" क्या इसके लिए किसी भिन्न लेखक की आवश्यकता है? या क्या यह समय के साथ विचारों में हुई प्रगति मात्र है? ड्राइवर अवधारणाओं और विचारों में अंतर को लेखकत्व में अंतर का आधार मानते हैं। हालाँकि, वह मानते हैं कि दोनों खंडों के बीच कोई आवश्यक अंतर नहीं है जब वह कहते हैं, "सच्चाई जो केवल यशायाह में पुष्टि की गई है," यह पुस्तक का पहला भाग है, "यहाँ होना प्रतिबिंब और तर्क का विषय बना दिया गया है।"

तो, मुझे ऐसा लगता है कि यह तर्क काफी हद तक उस व्यक्तिपरक निर्णय पर आधारित है। कितना अंतर है - और विशेष रूप से अंतर जो विरोधाभासी नहीं हैं, विकास दिखाते हैं, और शायद नए विचारों और विषयों का परिचय देते हैं - यह अपने आप में कितना आपको इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए मजबूर करता है कि आपके पास एक अलग लेखक होना चाहिए? यह एक निर्णय कॉल है। यह कोई आवश्यक निष्कर्ष नहीं है।

वास्तव में, ए. कॉमिका ने फ्रेंच में एक अध्ययन में, दोनों वर्गों के बीच अवधारणाओं और विचारों में समझौते के आधार पर पुस्तक की एकता के लिए एक तर्क दिया। यशायाह 1-39 और 40-66 की बहुत सारी विशेषताएं हैं, जहां आपको अवधारणाओं और विचारों में सहमति मिलती है। इसलिए इस जंक्शन पर यह उतना कट्टरपंथी नहीं है जितना ड्यूटेरो-इसैया सिद्धांत के कुछ समर्थकों द्वारा सुझाया जा सकता है। मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम यहीं रुकें और इसे पृष्ठ 3, "भाषा और शैली से तर्क" पर उठाएं, जो मुझे लगता है कि अवधारणाओं और विचारों से अधिक महत्वपूर्ण तर्क है।

डैन मोंटगोमरी द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन

टेड हिल्डेब्रांट
द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 11

पैगम्बर और पंथ, क्या पैगम्बर लेखक थे?

समीक्षा: क्या पैगम्बर लेखक थे?

बी। द लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल ने भविष्यसूचक पुस्तकों की रचना के बारे में हैंडआउट में पूछा, "क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?" हमने पारंपरिक दृष्टिकोण को देखा कि भविष्यवक्ता लेखक थे। हमने बी., "द लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल" से शुरुआत की, जो पैगंबरों को लेखक के रूप में भी देखता था, लेकिन फिर भविष्यवाणी की किताबों में यह छांटने का प्रयास करता था कि क्या प्रामाणिक था, पैगंबर के हाथ से क्या था जिसका नाम दिया गया है पुस्तक, और उसे बाद के परिवर्धनों से क्रमबद्ध करना। मैंने पिछली बार उन दो पुस्तकों का उल्लेख किया था जिन पर सबसे अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है जहां तक आलोचनात्मक विद्वता का सवाल है, यशायाह और डैनियल हैं। मुझे लगता है कि यशायाह और डैनियल पर ध्यान देने का एक कारण उल्लेखनीय दीर्घकालिक भविष्यवाणियाँ हैं जो यशायाह के दूसरे भाग के साथ-साथ डैनियल के अनेक दर्शनों में पाई जाती हैं। जिनके पास ज्ञानवर्धक विश्वदृष्टिकोण के साथ ऐतिहासिक-आलोचनात्मक प्रकार की मानसिकता है, जो मानवीय मामलों में अलौकिक और दैवीय हस्तक्षेप के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं और निश्चित रूप से दैवीय रहस्योद्घाटन को उस तरह से नहीं देखते हैं जिस तरह से बाइबिल इसका प्रतिनिधित्व करती है। उन्हें साइरस के संदर्भ में एक समस्या है, उदाहरण के लिए यशायाह के दूसरे भाग में, जो यशायाह भविष्यवक्ता के बाद लंबे समय तक जीवित रहे, या आपके पास डैनियल की पुस्तक के साथ-साथ डैनियल की दीर्घकालिक भविष्यवाणियां भी हैं। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में रहने वाले एंटीओकस एपिफेन्स के समय की विशिष्ट युगांतशास्त्रीय सामग्री के संबंध में डैनियल को इसके बारे में कैसे पता चल सकता था? तो, निष्कर्ष निकाला गया कि यशायाह का दूसरा भाग यशायाह के पहले भाग के समान लेखक द्वारा नहीं लिखा गया था और डैनियल की पुस्तक बाद में लिखी गई थी, न कि मूल भविष्यवक्ता डैनियल द्वारा।

1. यशायाह 40-66 जारी

बी। "पुस्तक के दोनों भागों में भाषा और शैली में अंतर है।"

हमने कुछ तर्कों पर गौर करना शुरू किया जिनका उपयोग उस दृष्टिकोण के लोग यह दावा करने के लिए करते हैं कि यशायाह 40 यशायाह से नहीं है। पृष्ठ एक के नीचे उस हैंडआउट में मैंने तीन तर्कों का सारांश प्रस्तुत किया है। पहला, "यशायाह 40-66 की अवधारणाएँ और विचार पुस्तक के पहले भाग (1-39) की अवधारणाओं और विचारों से भिन्न हैं।" दूसरा, "पुस्तक के दोनों भागों में भाषा और शैली में अंतर है।" तीसरा, "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और तथ्य में अंतर हैं।" हमने पहले तर्क में प्रतिक्रियाओं के माध्यम से काम किया था कि यशायाह 40-66 में अवधारणाएँ और विचार पुस्तक के पहले खंड में निर्विरोध खंडों की अवधारणाओं से भिन्न हैं। मुझे नहीं लगता कि हमने दूसरे तर्क के साथ बहुत कुछ किया है जो पेज तीन पर है, यानी भाषा और शैली में अंतर से निकला तर्क। मुझे लगता है कि यह पहले तर्क की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण तर्क है क्योंकि पहले तर्क में व्यक्तिपरक निर्णय शामिल होता है कि एक अलग लेखक की आवश्यकता के लिए अवधारणा और विचारों में कितना अंतर होना चाहिए। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि भगवान यशायाह को प्रभु के सेवक विषय के बारे में सामग्री उसके बहुत लंबे मंत्रालय के आरंभ के बजाय बाद के भाग में प्रकट नहीं कर सके। यह एक नई अवधारणा है लेकिन इसके लिए किसी नए लेखक की आवश्यकता नहीं है।

जब आप भाषा और शैली पर आते हैं तो तर्क अधिक महत्वपूर्ण होता है। ड्राइवर 40-66 में आने वाले कई शब्दों को सूचीबद्ध करता है लेकिन 1-39 में नहीं या ऐसे शब्द जो 40-66 में अक्सर आते हैं लेकिन 1-39 में शायद ही कभी आते हैं। तो उस विशेष परिप्रेक्ष्य से आप शब्द के उपयोग को देखना शुरू करते हैं और आपको अंतर दिखाई देता है। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि आपको पुस्तक के दूसरे भाग में पहले की तुलना में अलग-अलग शब्द या अभिव्यक्तियाँ मिलें क्योंकि विषय-वस्तु में अंतर है। यदि आपके पास विषय वस्तु में अंतर है तो आप शब्दों के उपयोग में अंतर की अपेक्षा करेंगे। इसलिए मुझे नहीं लगता कि वह तर्क भी ठोस है।

शैली का सबसे मजबूत तर्क यह है कि कुछ भाषाई विषमताएँ जो बाद के समय के साथ चलती हैं, यशायाह 40-66 में पाई जाती हैं। ड्राइवर ने अपने *परिचय टू द ओल्ड टेस्टामेंट* में पृष्ठ 240 पर यह तर्क दिया है। इसे विस्तार से देखने के लिए बहुत अधिक समय की आवश्यकता होगी, इसलिए मैं इस पर इतना समय बर्बाद नहीं करना चाहता, लेकिन मैं आपको कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ। एनपर एल्डर्स के काम में *पुराने नियम का परिचय* जिसमें वह ड्राइवर के तर्कों और अन्य पर चर्चा करता है, वह नोट करता है कि एक शैलीगत तर्क जो वे देते हैं वह दूसरे यशायाह में 'अनोकी' के बजाय पहले एकवचन 'अनी' को प्राथमिकता देना है, जैसा कि आप जानते हैं कि दोनों पहले व्यक्ति सर्वनाम हैं। ऐसा कहा जाता है कि यह बाद के समय में भाषाई उपयोग को इंगित करता है। यशायाह 40-66 में 'अनी' 79 बार आती है 'अनोकी' 29 बार आती है। तो, हाँ, यशायाह 40-66 में 'अनी' को प्राथमिकता दी गई है। लेकिन यदि आप हाग्वै और जकर्याह को देखें, जो हाग्वै के संबंध में स्पष्ट रूप से निर्वासन के बाद के हैं, तो आल्डर्स क्या इंगित करते हैं, 'अनोकी' बिल्कुल भी नहीं होती है; 'अनि' 5 बार और 'अनोकी' 0 बार है। जकर्याह में 'अनि' 9 बार और 'अनोकी' 0 बार आता है। यदि आप यहजेकेल में वापस जाते हैं - हाग्वै और जकर्याह से थोड़ा पहले - तो आपको 'एनी' 162 बार और 'अनोकी' 1 बार मिलता है। वहाँ एक घटना है। आल्डर्स ने जो नोट किया है वह यह है कि यशायाह 40-66 के समय में 'अनोकी' का उपयोग न करने की प्रवृत्ति यहजेकेल के समय तक आगे नहीं बढ़ी थी। इससे पता चलता है कि यशायाह यहजेकेल से भी पहले का है। दूसरे शब्दों में, यशायाह के दूसरे भाग में एक उपयोग पैटर्न है जो निर्वासन के बाद के समय में फिट नहीं बैठता है। तो यशायाह को यहजेकेल से पहले होना चाहिए। तो आप इनमें से कुछ भाषाई उपयोग वाली चीज़ों को देख सकते हैं और उनके बारे में प्रश्न उठा सकते हैं।

मुझे लगता है कि सिक्के के दूसरी तरफ, यानी पृष्ठ 4 पर, आप पुस्तक में दो खंडों के बीच भाषाई सहमति के बिंदु भी पा सकते हैं जिन्हें आप भाषाई विषमताएं कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, भविष्यवक्ताओं द्वारा प्रयुक्त बारंबार अभिव्यक्ति, "प्रभु यों कहता है," का यशायाह में एक रूप है और वह रूप केवल यशायाह में होता है। वह संस्करण पूर्ण "अमर

"को अपूर्ण" योमर" से प्रतिस्थापित करता है और इस प्रकार टिकाऊ कार्रवाई का संकेत देता है, "इस प्रकार भगवान कह रहे हैं।" वह संस्करण यशायाह के लिए अद्वितीय है। इसका उपयोग 1-39 के साथ-साथ 40-66 में भिन्न संदर्भों में किया गया है, और ऐसे और भी संदर्भ हैं जो संपूर्ण पुस्तक में विस्तारित हैं। तो तथ्य यह है कि यह अभिव्यक्ति सभी भविष्यवक्ताओं में आम है, लेकिन यह यशायाह में एक प्रकार में होती है और यशायाह के दोनों खंडों में भिन्न रूप में होती है, यह निश्चित रूप से एकाधिक लेखकों के बजाय लेखकत्व की एकता की ओर एक संकेतक है।

1) यशायाह में शैली के तर्क का खंडन करते हुए राचेल मार्गालियोथ अब मैं 'अनोकी' के उपयोग और योमरकी अपूर्णता के वे दो उदाहरण देता हूँ क्योंकि जब आप भाषाई उपयोग के इस रूप में आते हैं तो यह बहुत जल्दी बहुत जटिल हो सकता है। मुझे लगता है कि यदि आप इसमें रुचि रखते हैं और इसे करने के लिए समय लेते हैं और इस पर चर्चा करने वाले कुछ साहित्य को देखते हैं, तो आप पाएंगे कि तर्क दोनों तरफ जाते हैं। यह उतना स्पष्ट नहीं है जितना लगता है। पुस्तक के पहले भाग की भाषा और शैलियाँ पुस्तक के दूसरे भाग की तुलना में भिन्न हैं। राचेल मार्गालियोथ नाम की एक महिला द्वारा *द इंडिविजिबल इसैयाह* नामक एक अध्ययन किया गया है। यह प्रिंट से बाहर है लेकिन बहुत उपयोगी पुस्तक है। वह भाषा और शैली में सहमति के आधार पर पुस्तक की एकता के लिए प्रभावी ढंग से तर्क देती है। दूसरे शब्दों में, तर्क उल्टा हो जाता है। यदि आप पृष्ठ 14 पर अपने उद्धरणों को देखते हैं, तो उस बड़े पैराग्राफ में पृष्ठ के मध्य तक जाएं, जो पृष्ठ 14 के मध्य से शुरू होता है, मार्गालियोथ कहते हैं, "क्रॉस ने अठारह शब्दों और अभिव्यक्तियों की गणना की है जो यशायाह 'दूसरे' के लिए 'अजीब' हैं।" उनमें से कई, जैसा कि वह स्वीकार करते हैं, यशायाह 'प्रथम' में भी पाए जाते हैं, लेकिन उन अध्यायों में जिन्हें क्रॉस यशायाह को 'दूसरा' बताते हैं।" अब यह कुछ महत्वपूर्ण विद्वानों के लिए एक संकेत है कि वे आदर्श हैं पाठ पर थोपना यशायाह के उस भाग में फिट नहीं बैठता। "लेकिन यदि ऐसी अभिव्यक्तियाँ कहीं अधिक संख्या में पाई भी जाएँ, तो उससे क्या प्रमाण निकाला जा सकता है? क्या किसी अन्य अध्याय

में विशेष शब्द या अभिव्यक्तियाँ कुछ सिद्ध करती हैं? क्या यह तथ्य इस अध्याय या किसी अन्य अध्याय को पुस्तक के मुख्य भाग से अलग करने का आधार देता है? भविष्यवक्ताओं में एक या अधिक शब्द का कुछ अध्यायों में कई बार आना असामान्य नहीं है, हालाँकि वे पिछले अध्यायों में एक बार भी नहीं पाए जाते हैं। अभिव्यक्ति "प्रभु का प्रतिशोध" लें, जो यिर्मयाह 50 और 51 में कई बार प्रकट होता है, लेकिन पूरी किताब में दोबारा नहीं मिलता है। क्या इन दोनों अध्यायों को पुस्तक से अलग करने का यह पर्याप्त कारण है?" वह जो कह रही है वह सिर्फ इसलिए है क्योंकि आपके पास दो शब्द हैं जो वहां दिखाई देते हैं जो कहीं और नहीं होते हैं, क्या इससे आपको यह सवाल करने का कोई कारण मिलता है कि क्या यिर्मयाह ने उन दो अध्यायों को लिखा था?

“ या फिर यह अभिव्यक्ति 'तलवार से मारा गया' यहजेकेल 31 और 32 में कम से कम दस बार पाई जाती है, लेकिन पिछले अध्यायों में एक बार भी प्रकट नहीं होती है। क्या ईजेकील 31 दूसरा ईजेकील शुरू करता है? प्रत्येक भविष्यवाणी पुस्तक में केवल एक अध्याय में या अध्यायों के समूह में कई बार आने वाले असंख्य शब्दों, वाक्यांशों, अभिव्यक्तियों को इंगित करना संभव है, पुस्तक में कहीं और नहीं। फिर हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि ऐसे शब्दों और वाक्यांशों को संदर्भ के संदर्भ में पसंद किया जाता है।

2) यशायाह की एकता के लिए मार्गालियोथ के तर्क आप देखते हैं, यदि आपकी भाषा अलग है तो यह चर्चा के किसी भी विषय से अधिक जुड़ी हो सकती है या पैगंबर उन विशेष अध्यायों में जो विशिष्ट संदेश दे रहा है। "जहां तक इस तर्क का संबंध है कि यशायाह की पुस्तक के दो खंड भाषा और शैली में भिन्न हैं, जो बेन ज़ीव के साथ होता है, वह एक ऐसी बात है जिसे उदाहरण से सिद्ध नहीं किया जा सकता है, हम इस पुस्तक में सैकड़ों उदाहरणों द्वारा प्रदर्शित करेंगे, कि विपरीत सत्य है. दोनों खंड न केवल भाषा और शैली दोनों में समान हैं, बल्कि वे अपनी एकता के लिए उल्लेखनीय हैं क्योंकि उनके बीच की समानता को किसी भी प्रभाव के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है... यहां की प्रणाली दोनों भागों की एकता को प्रदर्शित करने जा रही है," और यह अगला पैराग्राफ पृष्ठ 4 पर उस हैंडआउट पर है जहां

मार्गालियो वें उन प्रणालियों का वर्णन करती है जिनका वह उपयोग करती है, “यशायाह की पुस्तक को विषय के आधार पर वर्गीकृत करने के बाद हमने दिखाया है कि प्रत्येक विषय के संबंध में दोनों भाग असंख्य समान अभिव्यक्तियों का उपयोग करते हैं जो केवल इस पुस्तक के लिए विशिष्ट हैं। यह भी सिद्ध हो चुका है कि विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ दोनों भागों में समान शक्ति के साथ-साथ समान उपयोग को भी प्रकट करती हैं। यहां तक कि सामान्य अभिव्यक्तियां भी दोनों में समान एक विशेष उपयोग से भिन्न होती हैं। दूसरा खंड पहले के शब्दों को उलट देता है। आप पृष्ठ 4 और पृष्ठ 5 और पृष्ठ 6 पर ऐसे विषय पाएंगे जिनका उपयोग वह विषय सामग्री के आधार पर यशायाह की पुस्तक को वर्गीकृत करने के लिए करती है।

मैं वह सारी सामग्री नहीं पढ़ूंगा, लेकिन आइए उसके कुछ विषय वर्गीकरणों पर नजर डालें। नंबर 1, “ईश्वर के पदनाम” और वह जो सूचीबद्ध करती है वह दिव्य उपाधियाँ हैं जो विशेष रूप से यशायाह में उपयोग की जाती हैं जो दोनों भागों में समान पाई जाती हैं। दूसरे शब्दों में, ईश्वर के लिए पदनाम कहीं और नहीं पाए जाते - उदाहरण के लिए, “इज़राइल का पवित्र”, पुस्तक के दोनों हिस्सों में पाया जाता है। या “इज़राइल के लोगों के पदनाम”, यहूदी लोगों के संबंध में ग्यारह विशिष्ट विशेषण हैं जो दो वर्गों में पाए जाते हैं। संख्या 9 देखें “चेतावनी के शब्द;” फटकार के इक्कीस अलग-अलग शब्द यशायाह के लिए विशिष्ट और दोनों भागों में समान हैं। संख्या 10, “ताड़ना के शब्द;” उन्तीस शब्दों में पतन का विशिष्ट वर्णन, यशायाह के दोनों खंडों की शैली में समान। तो ऐसे पंद्रह विषय हैं जो यशायाह की पुस्तक के दोनों भागों में व्यक्त किए गए हैं, और कई मामलों में यशायाह की पुस्तक के लिए अद्वितीय हैं। इसलिए मुझे लगता है कि मार्गालियोथ ने इस शैली और भाषा के तर्क को अपनाया है और पुस्तक और एक लेखक की एकता के लिए एक बहुत अच्छा मामला बनाया है। हम कुछ ही मिनटों में इस पर वापस आने वाले हैं।

3) रिडेक्शनल यूनिटी एफ या लंबे समय तक ये आलोचनात्मक तर्क क्षेत्र पर हावी रहे और अधिकांश बाइबिल विद्वानों को आश्चर्य कि यशायाह की पुस्तक के कई लेखक थे और

यह ड्राइवर और अन्य लोगों के तर्कों के प्रकार पर आधारित था। पुस्तक के दोनों भागों में भाषा और शैली की एकता के लिए मार्गालियोथ के तर्कों को अब आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा भी स्वीकार किया जा रहा है। लेकिन यह उन्हें इस निष्कर्ष पर नहीं ले जाता कि यशायाह पुस्तक के लेखक थे। वे अब क्रांतिकारी एकता की बात करेंगे। दूसरे शब्दों में, इन अन्य लेखकों ने यशायाह की शैली का अनुकरण किया, इसलिए आपको एक रचनात्मक एकता तो मिलती है लेकिन एक भी लेखक नहीं। मैंने कहा कि मैं उस पर बाद में वापस आऊंगा। लेकिन इस तर्क के जवाब में जो मार्गालियोथ और अन्य ने दिया है, पृष्ठ छह के मध्य को देखें।

4) मार्क रूकर एफ या भाषाई उपयोग और यशायाह के विषय पर हालिया चर्चा में मार्क रूकर देखें, "डेटिंग यशायाह 40-66: भाषाई साक्ष्य क्या कहते हैं?" वह वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल जर्नल खंड में था। 1996 में 58—यदि आप इस प्रकार की चीज़ों में रुचि रखते हैं तो यह एक बहुत ही उपयोगी लेख है। इस लेख में रूकर कई उदाहरण देते हैं कि कैसे ईजेकील और निर्वासन के बाद हिब्रू में भाषाई उपयोग लगातार बाद की भाषाई विशेषताओं को दर्शाता है जो हम यशायाह 40-66 में पाते हैं। यह फिर से कुछ हद तक तकनीकी हो जाता है लेकिन वह एक बहुत अच्छा मामला बनाता है और बहुत ठोस उदाहरण देता है। उनका निष्कर्ष यह है कि यदि "महत्वपूर्ण विद्वान इस बात पर जोर देना जारी रखते हैं कि यशायाह को निर्वासन या निर्वासन के बाद की अवधि में दिनांकित किया जाना चाहिए, तो उन्हें डायक्रोनिक विश्लेषण से विपरीत सबूतों के सामने ऐसा करना चाहिए," अर्थात्, विश्लेषण जो विकास के इतिहास का उपयोग करता है हिब्रू भाषा और समय के माध्यम से भाषाई उपयोग।

भाषा और शैली के तर्क पर मेरा निष्कर्ष यह है कि यह इनमें से किसी भी स्थिति के लिए अंतिम प्रमाण प्रदान नहीं कर सकता है, हालांकि ऐतिहासिक अध्ययन प्रामाणिकता और एकता के लिए सबसे मजबूत तर्क प्रदान करते हैं। किसी भी मामले में यह निश्चित रूप से सच है कि भाषा और शैली पर विचार करने के लिए यशायाह में दो या दो से अधिक लेखकों की आवश्यकता नहीं है - यह मेरा कहना है।

5) भाषाई डेटा का कंप्यूटर विश्लेषण

अब एक अन्य मुद्दा जो कभी-कभी इस विशेष चर्चा में आता है वह भाषाई उपयोग का कंप्यूटर विश्लेषण है जो बाइबिल के अध्ययनों में दिखाई देने लगा है। यदि आप यशायाह की पुस्तक पर जॉन ओसवाल्ट की एनआईसीओटी टिप्पणी में अपने उद्धरण के पृष्ठ 15 को देखें जहां वह इस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं। वह कहते हैं, "रचना में एकता की कमी के वस्तुनिष्ठ प्रमाण की सबसे निकटतम चीज़ वाई. रैडडे की प्रभावशाली जांच, *द यूनिटी ऑफ़ इसैया इन लाइट ऑफ़ स्टैटिस्टिकल लिग्विस्टिक्स में दिखाई देती है*। रैडडे ने यशायाह की पुस्तक की कई भाषाई विशेषताओं का कम्प्यूटरीकृत अध्ययन किया और पुस्तक के विभिन्न खंडों में उनकी तुलना की। नियंत्रण के रूप में उन्होंने बाइबिल और अतिरिक्त बाइबिल दोनों साहित्य के अन्य टुकड़ों का अध्ययन किया, जिनके बारे में माना जाता है कि वे एक ही लेखक से आए थे। इन शोधों के परिणामस्वरूप उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि भाषाई विविधताएँ इतनी गंभीर थीं कि एक लेखक यशायाह की पूरी पुस्तक का निर्माण नहीं कर सकता था। जैसा कि उम्मीद की जा सकती है, इन निष्कर्षों का आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा अनुमोदन के साथ स्वागत किया गया, जिन्होंने अपनी स्थिति को सही साबित होते देखा...

रैडडे की कार्यप्रणाली से कई प्रश्न उठ सकते हैं। सांख्यिकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र की प्रारंभिक अवस्था ही कुछ प्रश्न उठाती है। यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु है. "क्या हम अभी भी किसी व्यक्ति के उपयोग में भिन्नता की संभावित सीमाओं के बारे में विश्वास के साथ बोलने के लिए पर्याप्त जानते हैं?" यदि आप साठ वर्षों के जीवनकाल को देखें तो समय के साथ किसी व्यक्ति का भाषाई उपयोग कितना बदल जाता है? "इसमें से कोई भी उस अखंडता पर सवाल नहीं उठा रहा है जिसके साथ रैडडे का अध्ययन किया गया और निष्पादित किया गया था, लेकिन यह इंगित करना है कि साक्ष्य अभी भी पांडुलिपि के रूप में उद्देश्यपूर्ण नहीं है जिसमें अध्याय 1-39 दिखाई देगा।

अब दो फुटनोट हैं. आपने देखा कि "किसी व्यक्ति के भाषाई उपयोग में भिन्नता की सीमा" के बारे में उस प्रश्न के ठीक बाद 5 नंबर का फुटनोट है। पाँच यहाँ अनुसरण करते हैं,

"ध्यान दें कि पुस्तक की विशेषताओं के एक अन्य प्रकार के कम्प्यूटरीकृत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि यह एक एकात्मक रचना है।" दूसरे शब्दों में, कंप्यूटर विश्लेषण और उससे निकले निष्कर्ष भिन्न-भिन्न हैं। आर. पॉस्नर के एक अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि रचना एक एकता नहीं है, लेकिन उनके परिणामों ने रेडडे की तुलना में पुस्तक के विभिन्न विभाजनों की ओर इशारा किया। अब आप देखते हैं कि किसी भी प्रकार के कंप्यूटर विश्लेषण के कई परिणाम होते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि आप विश्लेषण करने के लिए प्रोग्राम कैसे सेट करते हैं - इसमें बहुत सारे कारक होते हैं।

अन्य फुटनोट दिलचस्प है. नंबर छह, "यह विडंबना है कि जिन लोगों ने यशायाह पर लागू होने वाली रेडडे की पद्धति की विश्वसनीयता की सराहना की, वे इसकी विश्वसनीयता के बारे में बहुत कम आश्वस्त थे जब उन्होंने हाल ही में रिपोर्ट दी कि उसी पद्धति ने उत्पत्ति की एकता स्थापित की।" इसलिए आलोचनात्मक सिद्धांतों के लिए वह तर्क दोनों तरीकों से कटता है। उत्पत्ति के साथ एक तरीका, यशायाह के साथ दूसरा तरीका। निःसंदेह अगले दशक में बाइबिल लेखों के कंप्यूटर विश्लेषण का बहुत अधिक उपयोग होगा और निष्कर्ष निकाले जाएंगे। यह देखना दिलचस्प होगा कि यह कैसे विकसित होता है, लेकिन इस बिंदु पर भी यह कुछ ऐसा नहीं है जिसके साथ निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सके। मुझे नहीं लगता कि भाषा और शैली पर आधारित तर्क किसी भी तरह से निर्णायक होते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि आप जो कह सकते हैं वह यह है कि तर्क कहते हैं कि आप निर्णायक रूप से इस बात से *इनकार नहीं कर सकते* कि यशायाह पुस्तक के दूसरे भाग के लिए जिम्मेदार हो सकता है।

3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से तर्क

तीसरा तर्क है, "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का तर्क।" यह संभवतः सबसे महत्वपूर्ण तर्क है। मुझे लगता है कि यह निर्विवाद है कि अध्याय 40-66 1-39 की तुलना में एक अलग ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है। यशायाह के शुरुआती भाग में इस्राएल के लोगों की बहुत भर्त्सना और भविष्यवाणी है कि भगवान उनके पाप के लिए राष्ट्र को निर्वासन में भेज देंगे।

जब हम किताब के दूसरे भाग पर पहुंचते हैं तो आपको उस तरह की सामग्री नहीं मिलती। धारणा यह है कि वे पहले से ही निर्वासन में हैं और निर्णय पहले ही हो चुका है। पुस्तक के दूसरे भाग में जोर ईश्वर के वादे पर है कि उन्हें उनकी कैद से छोड़ा जाएगा। पुस्तक के पहले भाग में आपको अशूरियों के कई संदर्भ मिलेंगे। वे इस समय इस्राएल के बहुत बड़े शत्रु थे। आहाज़ की मृत्यु हो गई है। लेकिन पुस्तक के दूसरे भाग में असीरियन नहीं बल्कि बेबीलोनियन और फारसी साइरस का उदय दिखाई देता है। बेशक, साइरस का उल्लेख नाम से किया गया है। पुस्तक के दूसरे भाग के लोग बेबीलोनियों के बंधन में हैं लेकिन उन्हें छोड़ा जाना है। इसलिए पहली और दूसरी किताबों के बीच ऐतिहासिक दृष्टिकोण में स्पष्ट ऐतिहासिक अंतर है।

एक। स्पष्टीकरण यह देखते हुए कि यह विवाद में है, आप इसे दो तरीकों से समझ सकते हैं। आलोचक का सुझाव यह है कि पुस्तक का दूसरा भाग एक अलग लेखक द्वारा लिखा गया है जो निर्वासन के बाद रहता था जो पहले ही शुरू हो चुका था और समाप्त होने वाला था। इजराइल को अपने वतन लौटने के लिए रिहा किया जाने वाला था। दूसरे तरीके से आप इसे समझ सकते हैं कि यशायाह ने पुस्तक के दोनों भाग लिखे लेकिन पुस्तक के दूसरे भाग में उसका उद्देश्य इस्राएल को सांत्वना देना था जब इस्राएल इस घोषणा के साथ निर्वासन में चला गया था कि ईश्वर उन्हें बचाएगा।

यदि आप यह मानते हैं कि यशायाह लेखक थे, तो आपको साहित्य में अक्सर पाए जाने वाले प्रश्न का उत्तर देना होगा: क्या कोई कारण है कि यशायाह कुछ ऐसा लिखेंगे जिसमें उनके समय के एक शताब्दी से भी अधिक समय बाद की स्थिति का संदर्भ होगा?

3. दूसरा यशायाह ऐतिहासिक रूप से भिन्न कुछ लोग कहते हैं, "नहीं, इसका कोई मतलब नहीं है।" वे इसका उपयोग यह तर्क देने के लिए करते हैं कि पुस्तक का दूसरा भाग किसी और ने लिखा है। व्हाईब्रेज़ लाइब्रेरीज़ ओल्ड टेस्टामेंट गाइड टू यशायाह पैराग्राफ बी से अपने उद्धरणों के पृष्ठ 16 को देखें, जहां वह कहते हैं, "यह स्पष्ट रूप से उन लोगों के एक समूह को

संबोधित है जिन्हें एक विजयी शक्ति द्वारा अपनी मातृभूमि से निर्वासित किया गया है, जिसे भी संदर्भित किया गया है नाम से: बेबीलोन. चार परिच्छेदों में इन शब्दों में बेबीलोन का नाम लेकर उल्लेख किया गया है और कई अन्य परिच्छेदों में इस ऐतिहासिक स्थिति की पुष्टि की गई है। अध्याय 40-55 तो, आठवीं शताब्दी में कोई मतलब नहीं होता, जब यरूशलेम और यहूदा के लोग अभी भी अपने राजाओं के शासन के तहत घर पर रह रहे थे; जब बेबीलोन, एक महान शक्ति होने से बहुत दूर, सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में असीरिया के पतन तक, यशायाह की मृत्यु के लंबे समय बाद तक बना रहा - केवल असीरियन साम्राज्य के शहरों में से एक था; [यशायाह भविष्यवक्ता के समय में बेबीलोन असीरियन साम्राज्य का हिस्सा था।] और जब साइरस का जन्म नहीं हुआ था और फ़ारसी साम्राज्य अभी तक अस्तित्व में नहीं था। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का तर्क है। "दूसरी ओर, इन अध्यायों में सब कुछ बेबीलोन में यहूदी निर्वासितों के लिए छठी शताब्दी के भविष्यवक्ता के संदेश के रूप में अच्छी तरह से समझ में आता है। दूसरे शब्दों में, तर्क यह है कि यदि यशायाह ने इसे लिखा तो यह उसके समय के लोगों के लिए अर्थहीन होगा जो पूरी तरह से अलग परिस्थितियों में रहते थे। बात क्या रही होगी? तो आप प्रश्न पूछें: क्या यशायाह के अपने समकालीनों के लिए यशायाह 40-66 की कोई प्रासंगिकता है? होबार्ट फ़्रीमैन के उद्धरणों के पृष्ठ 13 पर जाएँ, जिन्होंने *पुराने नियम के पैगंबरों के अपने परिचय में इसकी चर्चा की है*। उनकी टिप्पणी है, "प्रत्येक भविष्यवाणी को किसी निश्चित समसामयिक ऐतिहासिक स्थिति से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है, न ही यह उस पीढ़ी पर सीधे लागू होती है जिसके लिए यह बोली जाती है। इसे कायम नहीं रखा जा सकता है, जैसा कि ड्राइवर का तर्क है, कि 'भविष्यवक्ता हमेशा, सबसे पहले अपने समकालीनों से बोलता है: वह जो संदेश लाता है वह उसके समय की परिस्थितियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा होता है: उसके वादे और भविष्यवाणियाँ... उन जरूरतों के अनुरूप होती हैं जो फिर महसूस किया जाता है।"

बी. उस दृष्टिकोण के साथ समस्याएँ - सात्वना के शब्दों की आवश्यकता भविष्यवाणी की इस अवधारणा के स्पष्ट विरोधाभास हैं जकर्याह 9-14, जो कि भविष्य है, डैनियल 11-12 स्पष्ट

रूप से भविष्य है, और यशायाह के पहले भाग में यशायाह 24-27, जो कि है इसे अक्सर "छोटा सर्वनाश" कहा जाता है। वहाँ यशायाह प्रभु के दिन और अंत समय के बारे में बात करता है। यह निश्चित रूप से ऐतिहासिक स्थिति के साथ भविष्यवाणी के सामान्य संबंध को नजरअंदाज नहीं करना है, जो दोनों भविष्यवाणी कथन को दर्ज करते हैं। तो फ्रीमैन की प्रतिक्रिया यह है कि प्रत्येक भविष्यवाणी उस पीढ़ी पर सीधे लागू नहीं होनी चाहिए जिसके लिए वह बोली गई है। अधिकतर ऐसा होता है, लेकिन ऐसा समय भी आता है जब वह गूढ़ प्रकार की भविष्यवाणी आती है जो स्पष्ट रूप से एक ऐसी स्थिति को संबोधित करने के लिए बोली जाती है जो भविष्यवक्ता ने जिन लोगों से बात की थी वे सभी के चले जाने के बाद लंबे समय तक घटित होंगी।

यहां मेरी टिप्पणी हैंडआउट के पृष्ठ 7 पर वापस आ रही है जबकि फ्रीमैन जहां तक जाता है सही है, मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय 40-66 का यशायाह के समय के लोगों के संबंध में एक उद्देश्य है। यशायाह पुस्तक के शुरुआती अध्यायों के दो उद्देश्य थे: राष्ट्र को उसके पाप के बारे में बताना और पश्चाताप करने की आवश्यकता; फिर दूसरी बात यह कि परमेश्वर उन्हें निर्वासन में भेजकर दण्ड देगा। वे सभी ज़ोर किताब के पहले भाग में बहुत स्पष्ट हैं। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने यशायाह की बात सुनी और उसका समर्थन किया, हालाँकि आम तौर पर उसके संदेश को अच्छी प्रतिक्रिया नहीं मिली। उसे बताया गया था कि उसके कॉल के समय, जैसा कि यशायाह 6 में दर्ज है, कि उसका संदेश बहरे कानों तक नहीं पड़ेगा। मुझे लगता है कि यह अधिक से अधिक स्पष्ट होता जा रहा था कि लोग ईश्वर से विमुख हो रहे थे। यशायाह 6:9-10 की भविष्यवाणी पूरी हो रही थी और यह स्पष्ट था कि 6:11-12 में भविष्यवाणी की गई निर्वासन अनिवार्य रूप से आएगी।

हिजकिय्याह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मनश्शे राजा बना। मनश्शे के शासन के तहत राष्ट्र भयानक धर्मत्याग में गिर गया। 2 राजा 21 मनश्शे के समय की बुराई का वर्णन करता है, जो दक्षिणी राज्य के राजाओं में सबसे दुष्ट था। यहूदी परंपरा के अनुसार यशायाह को मनश्शे के शासन के दौरान टुकड़ों में काट दिया गया था। इब्रानियों के ग्यारहवें अध्याय में टुकड़े-टुकड़े किये जाने के बारे में एक कथन है और कुछ लोग सोचते हैं कि यह यशायाह की

ओर संकेत है जो एक पेड़ के खोखले में मनश्शे के एजेंटों से भाग रहा था। पेड़ को काट दिया गया और परिणामस्वरूप, वह टुकड़े-टुकड़े हो गया। अब यह अपोकलिफ़ल हो सकता है, लेकिन यह स्पष्ट है कि यशायाह अभी भी मनश्शे के समय में रहता था, भले ही, यदि आप पुस्तक के शीर्षक को देखें, तो यह यशायाह 1:1 में कहता है, "यशायाह के शासनकाल के दौरान दर्शन उज्जिय्याह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह।" इसमें मनश्शे का उल्लेख नहीं है।

लेकिन यदि आप यशायाह 37:38 को देखें तो उन ऐतिहासिक आख्यानों में से एक में आप पढ़ते हैं, "एक दिन जब वह अपने देवता निस्रोक के मंदिर में पूजा कर रहा था। [यह अश्शूर का राजा सन्हेरीब है], उसके पुत्रों अद्रम्मेलोक और शरेजेर ने उसे तलवार से मार डाला, और वे अरारात देश में भाग गए। और उसका पुत्र एशर्हदोन उसके स्थान पर राजा हुआ।" एशरहादोन ने 681 ईसा पूर्व में शासन करना शुरू किया मनश्शे ने 687 ईसा पूर्व में शासन करना शुरू किया इसलिए 681 में, मनश्शे पहले से ही सिंहासन पर था। इसलिए यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यशायाह का मंत्रालय मनश्शे के काल तक बढ़ा। अब मनश्शे का उल्लेख शीर्षक में क्यों नहीं किया गया? कुछ लोग सोचते हैं कि यशायाह मनश्शे के समय में इसराइल के अधिक ईश्वरीय अवशेष के साथ एक सार्वजनिक मंत्रालय से अधिक निजी प्रकार के मंत्रालय में बदल गया जब सब कुछ इतना खराब था और पुस्तक का दूसरा भाग उसी अवधि से आता है।

यहाँ हमारे हैंडआउट पर वापस आने के लिए, जब मनश्शे राजा बन गया, तो यहूदा प्रभु से दूर हो गया। इसलिए अच्छे राजा हिजकिय्याह की मृत्यु के बाद यशायाह को यह स्पष्ट हो गया होगा कि संपूर्ण राष्ट्र पश्चाताप नहीं करेगा। निर्वासन अपरिहार्य था. यह ईश्वर के सच्चे लोगों, ईश्वरीय अवशेषों के लिए भी स्पष्ट होता, और उन परिस्थितियों में फटकार और निंदा के इस संदेश को जारी रखने की आवश्यकता नहीं होती। एक नई जरूरत थी. नई आवश्यकता परमेश्वर के सच्चे लोगों के लिए सांत्वना और आशा के शब्द लाने की थी, जो यशायाह का अनुसरण कर रहे थे, लोगों का वह छोटा सा अल्पसंख्यक वर्ग जो परमेश्वर के सच्चे अनुयायी थे। जैसा कि उन लोगों ने देखा कि न्याय और निर्वासन आ रहा था और यशायाह की तरह ही

अपरिहार्य था, मुझे ऐसा लगता है, आराम और आशा के संदेश की प्रासंगिकता है। हां, तुम निर्वासन में जाओगे, लेकिन निर्वासन हमेशा के लिए नहीं रहेगा। आप वापस लौट सकेंगे। इसलिए यह संदेश कि ईश्वर अपने लोगों को मुक्ति दिलाने जा रहा है, यशायाह के समय के दौरान भी ईश्वर के सच्चे लोगों के लिए एक सांत्वना होगी, साथ ही उन लोगों के लिए भी सांत्वना होगी जो बाद में उस निर्वासन का अनुभव करेंगे और जानेंगे कि ईश्वर ने उन्हें नहीं छोड़ा है।

मैं कह सकता हूँ कि यशायाह के जीवनकाल के दौरान उत्तरी साम्राज्य अशूरियों के हाथों निर्वासन में चला गया था। उज्जिय्याह का शासनकाल 729 से 715 तक था। उत्तरी राज्य 721 में अशूरियों के हाथों गिर गया, इसलिए यह यशायाह के जीवनकाल के दौरान था। इसलिए यहूदा के लोगों को निर्वासन के बारे में पता चला। वे जानते थे कि उन पर भी यही फैसला सुनाया गया है। यह दिलचस्प है कि सन्हेरीब के इतिहास में वह न केवल लोगों को उत्तरी राज्य से निर्वासन में ले जाने का दावा करता है, बल्कि यहूदा की भूमि से भी बंदी बनाने का दावा करता है। इसलिए, यदि आप सन्हेरीब के इतिहास को स्वीकार करते हैं, तो यहूदा के लोग भी थे, जो यशायाह के जीवनकाल के दौरान निर्वासन में चले गए थे। इसलिए मुझे लगता है कि संदेश की उस समय के लिए प्रासंगिकता है। निर्वासन अंत नहीं है। भगवान अभी भी अपने लोगों के साथ हैं। आगे अभी भी भविष्य है। वे वनवास से लौटेंगे। पृष्ठ नौ के शीर्ष पर जाएँ: इस प्रकार, यह स्वीकार करते हुए कि यशायाह 40-66 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पहले से ही निर्वासन में रहने वाले लोगों की है, जिनके शहर नष्ट हो गए हैं और मंदिर खंडहर हो गए हैं, मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि यह परिच्छेद क्यों है शायद यशायाह ने बेबीलोन की निर्वासन से एक सदी पहले नहीं लिखा होगा। ऐसा कोई कारण नहीं है कि यह उनके अपने समकालीनों के लिए महत्वपूर्ण न हो।

सी। सारांश निष्कर्ष तो मुझे लगता है कि यह निष्कर्ष निकालने के लिए ये तीन मुख्य तर्क हैं कि यशायाह का दूसरा भाग यशायाह भविष्यवक्ता द्वारा नहीं लिखा गया था। अवधारणाओं और विचारों में अंतर, भाषा और शैली में अंतर, या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अंतर - मुझे नहीं

लगता कि इनमें से कोई भी तर्क निर्णायक है कि अध्याय 40-66 लिखने के लिए कोई दूसरा यशायाह होना चाहिए। इसलिए वे प्राथमिक तर्क लेखकत्व की बहुलता को साबित करने में विफल रहते हैं।

घ) यशायाह की एकता के लिए कुछ अंतिम तर्क - एनटी उद्धरण

मुझे लगता है, इसके विपरीत, यशायाह के लेखकत्व को बनाए रखने के कुछ मजबूत कारण हैं। सबसे पहले, इस बात का कोई पांडुलिपि प्रमाण नहीं है कि यह पुस्तक अपने वर्तमान एकीकृत स्वरूप के अलावा किसी अन्य रूप में अस्तित्व में थी। बेशक, दिलचस्प बात यह है कि मृत सागर स्क्रॉल के बीच हमारे पास ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी की यशायाह की पूरी किताब की एक पांडुलिपि है, जो इसकी एकता का गवाह है। वह काफ़ी पुराना है। सेप्टुआजेंट भी उन्हें अलग नहीं करता है, जो 250-200 ईसा पूर्व से आया था, इसलिए, कुछ बहुत प्रारंभिक पांडुलिपि साक्ष्य एकता का समर्थन करते हैं।

दूसरी बात, और मुझे लगता है कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपके पास इसाईयन लेखकत्व का नया नियम का गवाह है। नए नियम में यशायाह को लगभग 21 बार उद्धृत किया गया है। वे उद्धरण पुस्तक के दोनों भागों अध्याय 1, 6, 8, 9, 10, 11, 29, 40, 42, 53, 61, और 65 से लिए गए हैं। विशेष रूप से यूहन्ना 12:38-40 पर ध्यान दें जहाँ आप पढ़ते हैं "यह यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा करना था। 'हे प्रभु, हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया है और प्रभु का भुजबल किस पर प्रकट हुआ है?" यह यशायाह 53:1 से है जो पुस्तक का दूसरा भाग है। "इस कारण से वे विश्वास नहीं कर सके क्योंकि जैसा कि यशायाह ने कहीं और कहा था, 'उसने उनकी आंखें अंधी और उनके हृदयों को मुर्दा कर दिया है, जिससे वे न आंखों से देख सकते हैं, न हृदय से समझ सकते हैं, अन्यथा मैं उन्हें चंगा कर दूंगा।'" यह यशायाह 6 से है। :10. तो वहीं उस एक उद्धरण में आपके पास पुस्तक के दूसरे भाग से एक उद्धरण और पुस्तक के पहले भाग से एक उद्धरण है। कहा जाता है कि ये दोनों यशायाह भविष्यद्वक्ता की ओर से हैं। श्लोक 41 में, जॉन कहते हैं कि यशायाह ने ऐसा इसलिए कहा, "क्योंकि उसने यीशु की महिमा देखी और उसके बारे में बात की।" ल्यूक

4:17 में आपने पढ़ा कि भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक यीशु को दी गई थी और उसने अध्याय 61 से पढ़ा था और उसे वहां उद्धृत किया गया है। वह किताब के दूसरे भाग में है। प्रेरितों के काम 8:30 में इथियोपिया का खोजी यशायाह भविष्यवक्ता को पढ़ रहा था और वह जो पढ़ रहा है वह अध्याय 53 है। तो वे नए नियम के उद्धरण के कई उदाहरण हैं जो स्पष्ट रूप से पुस्तक के दूसरे भाग से यशायाह भविष्यवक्ता की सामग्री का श्रेय देते हैं।

ई) लॉन्गमैन और डिलार्ड, ओटी का परिचय अभी मैंने कक्षा से पहले रे डिलार्ड और ट्रेम्पर लॉन्गमैन द्वारा लिखित *द इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेंट से पृष्ठ 274-275 का एक एकल पृष्ठ हैंडआउट वितरित किया है*, जो कि हाल ही में ओल्ड टेस्टामेंट का परिचय है। दो बहुत सक्षम इंजील विद्वान। मैं इसे आपके साथ देखना चाहता हूं क्योंकि वे इस प्रश्न के साथ क्या करते हैं। शीर्ष पृष्ठ 274 पर पहले पैराग्राफ के मध्य के बारे में लॉन्गमैन और डिलार्ड कहते हैं, "कुछ मामलों में यशायाह की एकता के बारे में बहस एक महत्वपूर्ण अंतर के साथ पूरी हो गई है:" (यह वही है जिसका पहले उल्लेख किया गया था) "बल्कि" किसी एक लेखक के हाथ से उत्पन्न एकता की तुलना में, पुस्तक को अब व्यापक रूप से एक पुनर्मूल्यांकन एकता के रूप में देखा जाता है। यशायाह 40-66 को एक स्वतंत्र कार्य के रूप में देखने के बजाय जो गलती से आठवीं शताब्दी के भविष्यवक्ता के काम में जुड़ गया, कुछ विद्वान अब तर्क देते हैं कि यशायाह 40-66 पुस्तक के पहले भाग के अलावा कभी अस्तित्व में नहीं था और इसकी रचना (किस माध्यम से) की गई थी पहले की सामग्री के आलोक में यह अभी भी एक जटिल सुधारात्मक प्रक्रिया हो सकती है।" तो आप आज के साहित्य को देखें, आपको अक्सर एक किताब का संदर्भ मिलता है, लेकिन एक लेखक का संदर्भ नहीं मिलता है। जिस रूप में हम इसे पाते हैं उसमें पुस्तक के अनेक लेखकत्व और कभी-कभी अत्यधिक जटिल प्रक्रिया होती है। इसलिए पुस्तक में एकता तो है लेकिन लेखकत्व की एकता नहीं है।

डिलार्ड और लॉन्गमैन के अगले भाग को यहां "एक आकलन" कहा जाता है और यहीं पर वे स्थिति और समस्या की वर्तमान स्थिति का आकलन करते हैं, "कई मामलों में यशायाह के बारे में समकालीन आलोचनात्मक सोच उन ज्यादातियों से उबर गई है जो अठारहवीं सदी

के अंत से लेकर शुरुआत तक विद्वता की विशेषता थी। उन्नीसवीं सदी. आलोचनात्मक विद्वानों के बीच आम सहमति उस बात को स्वीकार करने की दिशा में आगे बढ़ी है जो रूढ़िवादियों को प्रिय थी: कि यशायाह एक आकस्मिक दुर्घटना और आंतरिक रूप से विरोधाभासी का परिणाम नहीं है, बल्कि यह कि पुस्तक पूरी तरह से चीजों और रूपांकनों की एकता को दर्शाती है, " - मार्गालियोथ इसी बारे में बात कर रहा था। पुस्तक के दोनों भागों में ये विषय और भाषा सुसंगत हैं। "ज्यादातर बहस का रुख स्रोतों और सेटिंग्स को पुनर्प्राप्त करने के लिए पाठ को विच्छेदित करने पर ध्यान केंद्रित करने से हटकर, पाठ की सुसंगतता और एकता को उजागर करने के प्रयासों पर केंद्रित हो गया है।"

यह अपने अंतिम रूप में पाठ के डायक्रोनिक से समकालिक प्रकार के विश्लेषण में बदलाव को दर्शाता है। अब पिछले लगभग 20 वर्षों में ध्यान इस बात पर है कि वे पाठ के अंतिम रूप को देखें, न कि इस बात पर कि यह उस अंतिम रूप तक कैसे पहुंचा। इसके बजाय वे समकालिक रूप से उस चीज़ को देखते हैं जो पाठ को एक साथ रखती है। सामान्य विषयों और शब्दावली के आधार पर लेखकत्व की एकता के लिए रूढ़िवादियों के तर्कों को अब एक बड़े हिस्से में ले लिया गया है और उन तर्कों की सेवा में लगाया गया है जो इसकी एकता को साबित नहीं करते हैं बल्कि पुस्तक में एक प्रतिक्रियात्मक एकता साबित करते हैं। मैं उस अन्य हैंडआउट के साथ बाद में उस पर वापस आना चाहता हूँ लेकिन चलिए आगे बढ़ते हैं।

“ निश्चित रूप से, आलोचनात्मक और रूढ़िवादी सोच लेखकत्व के मुद्दे पर विभाजित रहती है। यद्यपि यशायाह की समग्र एकता के बारे में आम सहमति बढ़ रही है, आलोचनात्मक विद्वता के लिए यह एक एकल लेखक से प्राप्त एकता के बजाय सुधार के इतिहास के माध्यम से बनी एकता है। अगले दो पैराग्राफों में वह रूढ़िवादी दृष्टिकोण और फिर आलोचनात्मक दृष्टिकोण पर चर्चा करते हैं। उनका कहना है कि रूढ़िवादी सोच दो चीजों के धार्मिक विश्वास पर आधारित है। सबसे पहले, भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन की वास्तविकता के बारे में कि ईश्वर की आत्मा ने प्राचीन लेखकों को भविष्य पर एक नज़र डाली थी। दूसरे, समग्र रूप से पवित्रशास्त्र की अखंडता और विश्वसनीयता के बारे में, अर्थात्,

कथनों और उपशीर्षकों और नए नियम के उद्धरणों को स्वीकृति की आवश्यकता होती है।

1) ईश्वर और भविष्य की भविष्यवाणी

उन्होंने यशायाह 40-66 पर विवाद करते हुए कहा कि यशायाह भविष्य की घोषणा करता है और ईश्वर उसे पूरा करने में सक्षम है। दूसरे शब्दों में, साइरस का संदर्भ किसी भविष्य के शासक के लिए एक प्रकार का पृथक संदर्भ नहीं है, बल्कि यह उस निरंतर तर्क में एकीकृत है जो पुस्तक में चलता है, कि ईश्वर भविष्य की भविष्यवाणी करने में सक्षम है। एक उदाहरण आने वाले मसीहा का सेवक विषय है। यह एक और दीर्घकालिक भविष्यवाणी है जो नौकर अनुक्रम को कायम रखती है जो साइरस भविष्यवाणी की तुलना में अधिक उल्लेखनीय है, कुछ लोग कह सकते हैं। "पहले से ही यशायाह 1-39 में, निर्वासन और पुनर्स्थापना का अनुमान उन अंशों में लगाया गया है जिन्हें लगभग सार्वभौमिक रूप से आम तौर पर इसाई माना जाता है। अपने आह्वान में भविष्यवक्ता उस दिन की भविष्यवाणी करता है जब यरूशलेम नष्ट हो जाएगा और आबादी से वंचित हो जाएगा और उसने प्रत्याशित बहाली के आलोक में एक बेटे का नाम रखा ('शियर-जशुब' का अर्थ है 'एक अवशेष वापस आएगा')। यशायाह 1-39 में भविष्यवक्ता द्वारा अवशेष रूपांकन का व्यापक उपयोग बेबीलोन से आने वाले खतरे की आशंका व्यक्त करता है। भविष्यवक्ता ने अपनी समझ को स्पष्ट कर दिया कि उनकी भविष्यवाणी का पहलू तत्काल नहीं, बल्कि दूर के भविष्य से संबंधित था। इसलिए वह रूढ़िवादी दृष्टिकोण के बारे में ये बातें कहते हैं।

" आलोचनात्मक राय विशेष रूप से इस तथ्य पर आधारित है कि यशायाह 40-66 आठवीं शताब्दी में यरूशलेम में यशायाह के अलावा किसी अन्य ऐतिहासिक सेटिंग का अनुमान लगाता है।" यह तीसरा तर्क है जिसके बारे में हमने "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि" शीर्षक के अंतर्गत बात की है। अब वह कहते हैं कि दोनों स्थितियों की जांच की आवश्यकता है और यही वह पृष्ठ 275 पर करते हैं, "एक ओर, यदि कोई एक संप्रभु ईश्वर और भविष्यसूचक प्रेरणा की वास्तविकता को स्वीकार करता है, तो वह यह नहीं कह सकता, 'ईश्वर स्वयं को इस तरह से यशायाह के सामने प्रकट नहीं कर सकता था।'।" ऐतिहासिक आलोचना में इतना

भोला विश्वास हर तरह से उतना ही धार्मिक बयान है जितना कि उन्होंने ऐसा किया था।

2) Deut से तुलना. 34

दूसरी ओर, दूसरी ओर, जब आलोचनात्मक विद्वान यशायाह 40-66 की सेटिंग से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इन अध्यायों के लेखक बेबीलोन के निर्वासन में काफी देर तक रहे, तो यह सैद्धांतिक रूप से एक अलग तर्क नहीं है, "(यह मूल है) इस पुस्तक में जो स्थिति चल रही है वह सैद्धांतिक रूप से एक अलग तर्क नहीं है) "उस तर्क से जो रूढ़िवादी बनाने के लिए तैयार हैं, उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 34 के बारे में।" व्यवस्थाविवरण 34 मूसा की मृत्यु के बारे में एक अंश है। देखें कि उन्होंने यह तर्क क्यों दिया, "मूसा और व्यवस्थाविवरण के बीच ऐतिहासिक संबंध के बारे में कोई भी निष्कर्ष निकाले, यह स्पष्ट है कि मूसा ने अपनी मृत्यु का वृत्तांत नहीं लिखा (व्यवस्थाविवरण 34:1-8); जिस व्यक्ति ने इस पुस्तक का यह अंतिम भाग लिखा वह ऐसे समय में रहता था जब बहुत से भविष्यवक्ता आए और चले गए, लेकिन मूसा जैसा कोई नहीं था। कहने का तात्पर्य यह है कि इस अध्याय द्वारा अनुमानित सेटिंग (मूसा की मृत्यु के बाद का समय) मूसा द्वारा इसे लिखे जाने से रोकती है। यद्यपि नया नियम व्यवस्थाविवरण का हवाला देता है और इसका श्रेय मूसा को देता है, कोई भी गंभीरता से यह तर्क नहीं देगा कि इसमें व्यवस्थाविवरण 34 भी शामिल है। यह स्वीकार करते हुए कि व्यवस्थाविवरण 34 की स्थापना के लिए बाद में रहने वाले लेखक की आवश्यकता होती है, मूसा, जो लेखक पारंपरिक रूप से पुस्तक के लिए नियुक्त किया गया है, भौतिक रूप से भिन्न नहीं है। यह पहचानने से कि यशायाह 40-66 की पृष्ठभूमि निर्वासन के दौरान जीवित एक लेखक का अनुमान लगाती है। अब आप देखिए कि तर्क किस प्रकार दिया जाता है। व्यवस्थाविवरण का श्रेय आम तौर पर मूसा को दिया जाता है, लेकिन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण यह बहुत स्पष्ट है कि मूसा ने अध्याय 34 नहीं लिखा है। यशायाह की पुस्तक का श्रेय आम तौर पर यशायाह को दिया जाता है, लेकिन अध्याय 40-66 के साथ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण, यह जरूरी नहीं है कि यशायाह ने ही लिखा हो। उन्हें लिखा. उनका तर्क है कि व्यवस्थाविवरण 34 और यशायाह 40-66 के बीच एक समानता है।

3) कॉन्ट्रा ड्यूट। 34 तुलना

मुझे ऐसा लगता है कि वह सादृश्य संदिग्ध है। मैं यह मानने को तैयार नहीं हूँ कि उस तर्क के आधार पर यशायाह 40-66 का रचयिता यशायाह के अलावा कोई और साबित होता है। मैं बस कुछ बिंदु बताऊंगा। व्यवस्थाविवरण 34 बारह श्लोक है। यह ऐतिहासिक सामग्री है। यह वास्तव में पुस्तक को इस अर्थ में निष्कर्ष देता है कि 34 तक जो ले जा रहा है वह मूसा और जोशुआ के बीच नेतृत्व का परिवर्तन है - मूसा और जोशुआ के साथ परिवर्तन वास्तव में मूसा की मृत्यु के साथ प्रभावित होता है। यदि आप यहोशू की ओर बढ़ते हैं, तो यहोशू ने इस्राएल के नेता के रूप में मूसा का स्थान ले लिया है। मुझे ऐसा लगता है कि व्यवस्थाविवरण 34 और यशायाह 40-66 के बीच मात्रात्मक और गुणात्मक अंतर है। जैसा कि मैंने कहा, व्यवस्थाविवरण बारह छंद और एक ऐतिहासिक कथा है। यशायाह 40-66 अत्यधिक महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण भविष्यसूचक प्रवचन के 27 अध्याय हैं। डिलार्ड और लॉन्गमैन का कहना है कि नया नियम व्यवस्थाविवरण का हवाला देता है और इसका श्रेय मूसा को देता है। हाँ, लेकिन यह अध्याय 34 से कुछ भी उद्धृत नहीं करता है और इसका श्रेय मूसा को देता है। दूसरे शब्दों में, यह काफी अंतर है। जब हमने जॉन 12:38-40 में देखा जहाँ पुस्तक का दूसरा भाग उद्धृत किया गया है और इसका श्रेय यशायाह को दिया गया है, तो व्यवस्थाविवरण के लिए इसकी तुलना कुछ भी नहीं है। हमारे पास ऐसे सन्दर्भ हैं जो व्यवस्थाविवरण का श्रेय मूसा को देते हैं जो महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आज व्यवस्थाविवरण पर भी सवाल उठाए जाते हैं, लेकिन नए नियम में अध्याय 34 से कुछ भी उद्धृत नहीं किया गया है। इसलिए, मुझे इतना यकीन नहीं है कि वह सादृश्य वास्तव में इस संभावना को साबित करने के लिए पर्याप्त है कि यशायाह 40-66 यशायाह भविष्यवक्ता से नहीं है।

4) लॉन्गमैन/डिलार्ड - ईसा में यशायाह का उल्लेख नहीं है। 40-66 ध्यान दीजिए कि वे आगे क्या कहते हैं, "पुस्तक के दूसरे भाग में यशायाह का उल्लेख नहीं है। हालाँकि, भविष्यसूचक प्रेरणा की वास्तविकता को समाप्त नहीं किया गया है: बाद में निर्वासन में रहने

वाले एक लेखक ने दैवीय प्रेरणा के माध्यम से पूर्वाभास किया कि भगवान साइरस के माध्यम से क्या करने वाले थे, जैसे यशायाह ने देखा कि भगवान जल्द ही टिग्लैथ-पाइल्सर III के साथ क्या करेंगे। इस बाद के लेखक ने यशायाह की निर्वासन की भविष्यवाणियों और अवशेष घटनाओं को देखा जो उसके अपने समय में घटित हो रही थीं, और उसने यशायाह के उपदेश को अपने साथी निर्वासितों के लिए विकसित करने और लागू करने के लिए लिखा। हालाँकि इस महान भविष्यवक्ता की गुमनामी एक समस्या है, यह ऐतिहासिक पुस्तकों या इब्रानियों की किताब की गुमनामी से अधिक असामान्य नहीं है। मैं कहूँगा कि इसकी गुमनामी एक समस्या है और विशेष रूप से इसलिए, क्योंकि ऐतिहासिक पुस्तकों के विपरीत, आपके पास यशायाह 1:1 जैसा कोई श्लोक नहीं है। यशायाह 1:1 पुस्तक का परिचय देता है, "वह दर्शन जो आमोस के पुत्र यशायाह ने देखा।" ऐसा लगता है कि यह शीर्षक पूरी किताब का शीर्षक है जिसका श्रेय यशायाह को दिया गया है। हमारे पास ऐतिहासिक किताबों में ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है। तो अंतिम पैराग्राफ कहता है, "इसे धार्मिक *शिबोलेथ*या रूढ़िवाद के लिए परीक्षण नहीं बनाया जाना चाहिए। कुछ मामलों में बहस के अंतिम परिणाम कुछ हद तक अस्पष्ट हैं, चाहे आठवीं शताब्दी में यशायाह द्वारा लिखा गया हो या बाद के समय में उनकी लिखित अंतर्दृष्टि को लागू करने वाले अन्य लोगों द्वारा, यशायाह 40-66, स्पष्ट रूप से बड़े पैमाने पर निर्वासित समुदाय की जरूरतों को संबोधित किया गया था।"

5) यशायाह पर रिचर्ड शुल्स की प्रतिक्रिया टी हैट अन्य हैंडआउट जो मैंने आपको दिया था वह 2004 में प्रकाशित पुस्तक *इवेंजेलिकल्स एंड स्क्रिपचर से लिया गया एक लेख* है, और जो लेख मैंने आपको दिया है वह रिचर्ड शुल्स का शीर्षक है, "कितने यशायाह थे" वहाँ और इससे क्या फर्क पड़ता है? हालिया इंजील विद्वता में भविष्यसूचक प्रेरणा।" मुझे लगता है यह एक अच्छा लेख है। मैं आपका ध्यान कुछ पत्रों की ओर दिलाना चाहता हूँ। ध्यान दें कि वह पृष्ठ के निचले भाग 158 पर क्या कहता है, जहाँ वह बाइबिल के पाठ में परिवर्धन और संशोधन के लिए तैयार इंजील विद्वानों के बारे में बात करता है। वह कहते हैं, "फिर,

पवित्रशास्त्र के बारे में अपने इंजील दृष्टिकोण को बनाए रखते हुए, वे बस प्रेरणा के सिद्धांत को उस चीज़ को कवर करने के लिए बढ़ाते हैं जो उन्होंने अभी प्रस्तावित किया है।" दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहे हैं वह यह है कि बहुत से इंजील विद्वान कई आलोचनात्मक विद्वानों की कार्यप्रणाली को अपना लेते हैं, लेकिन फिर प्रेरणा के बारे में अपने दृष्टिकोण को बढ़ाते हुए कहते हैं कि इन सभी संपादकों और बाद के संस्करणों को भी प्रेरणा के सिद्धांत के तहत माना जाता है। "हालांकि, किसी को आश्चर्य होता है कि क्या बाइबिल साहित्य की उत्पत्ति के किसी भी ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण सिद्धांत को इंजील रूप से स्वीकार्य बनाया जा सकता है, जब तक कि कोई इस प्रक्रिया में पारंपरिक लेखक की 'पर्याप्त भागीदारी' की पुष्टि करता है।"

वह आगे कहते हैं, "मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि बौद्धिक ईमानदारी और पाठ्य साक्ष्य यह मांग करते हैं कि इंजीलवादी इस बात को स्वीकार करें कि अधिकांश पुराने नियम के विद्वान आज यशायाह की पुस्तक के जटिल रचनात्मक इतिहास के बारे में क्या दावा करते हैं।"

पृष्ठ 161 पर पृष्ठ के मध्य में वे कहते हैं, "मुद्दा यह है कि क्या हम वैध रूप से प्रेरित लेखकों या संपादकों की एक श्रृंखला प्रस्तुत कर सकते हैं जब पाठ में कई भविष्यवक्ताओं की भागीदारी को स्वीकार नहीं किया गया है और जब प्रस्तुत करने के कारणों में से एक है ऐसी जटिल रचना प्रक्रिया का दावा है कि ईश्वर की आत्मा यशायाह की पुस्तक में पहचानी गई सामग्री की विविधता को केवल एक व्यक्ति के सामने प्रकट नहीं कर सकती (या कम से कम शायद नहीं) / अच्छा प्रश्न।

पेज 162 के दूसरे पैराग्राफ पर जाएं, "[येल के] बच्चे रूढ़िवादियों पर यशायाह को 'भविष्य के दिव्यदर्शी' में बदलने का आरोप लगाते हैं," उस विशेष रूढ़िवादी शैली में। और अगले पैराग्राफ में शुल्ज़ कहते हैं, "साइरस का परेशानी भरा संदर्भ शायद एक प्राथमिक कारण है कि कई इंजील विद्वानों ने एक-लेखक की व्याख्या को छोड़ दिया है, या कम से कम सवाल उठा रहे हैं। हालाँकि, यशायाह 41-42 में, साइरस की प्रस्तुति को नौकर की प्रस्तुति के साथ जोड़ा गया है, दोनों चित्र समान अभिव्यक्तियों में उपयोग किए गए हैं। यदि साइरस

पहले से ही घटनास्थल पर है, तो क्या नौकर को भी कथित भविष्यवक्ता दूसरे यशायाह का समकालीन होना चाहिए? कुछ पंक्तियाँ नीचे लिखें, "हालाँकि, यदि आध्यात्मिक उद्धारकर्ता, यीशु के आने के समय, भविष्य में सात शताब्दियों में एक भविष्यवक्ता के लिए बोलना संभव था, तो क्या यरूशलेम के यशायाह के साइरस के बारे में बोलने की कल्पना करना समस्याग्रस्त है, उनका राजनीतिक अग्रदूत, भविष्य में केवल दो शताब्दियाँ?"

6) लॉन्गमैन/डिलार्ड को वन्नॉय की प्रतिक्रिया

अब अंतिम पृष्ठ के दूसरे पैराग्राफ पृष्ठ 170 पर जाएँ, जहाँ हम अपने प्रारंभिक प्रश्न पर लौट रहे हैं, "कितने यशायाह थे और इससे क्या फर्क पड़ता है।" "डिलार्ड और लॉन्गमैन इस बात पर जोर देते हैं कि 'कुछ मामलों में बहस के अंतिम परिणाम कुछ विवादास्पद हैं।' इसके विपरीत, मैंने यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि भविष्यसूचक पुस्तकों में भविष्यसूचक प्रेरणा, भविष्यसूचक भविष्यवाणी, अलंकारिक सुसंगतता और धर्मशास्त्रीय विकास की प्रकृति के संबंध में ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण निष्कर्षों को अपनाने के महत्वपूर्ण परिणाम हैं - ऐसे परिणाम जिन्हें नजरअंदाज कर दिया जाता है, कम महत्व दिया जाता है या अस्वीकार कर दिया जाता है। हालिया इंजील (और गैर-इंजील) साहित्य जिसका हमने सर्वेक्षण किया है। तो यह एक बहस है जो चल रही है। आपको इस पर आगे पढ़ने में रुचि हो सकती है, लेकिन हम वह पूरा लेख नहीं पढ़ रहे हैं; मैंने अभी कुछ चीजों पर प्रकाश डाला है।

2. डैनियल - मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वानों के बीच एक आम सहमति है कि डैनियल की काल्पनिक किताब संख्या 2., "मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वानों के बीच एक आम सहमति है कि डैनियल की काल्पनिक किताब।" उनका मानना है कि यह तब लिखा गया था जब इज़राइल 165 ईसा पूर्व से कुछ समय पहले एंटीओकस एपिफेन्स के तहत पीड़ित था। हालाँकि यह किताब 539 में साइरस द्वारा बेबीलोन पर कब्ज़ा करने से पहले और उसके तुरंत बाद इस भविष्यवाणी के दाता के रूप में डैनियल का प्रतिनिधित्व करती है। तो यह मुद्दा है। हम डैनियल की पुस्तक की भविष्यवाणियों का श्रेय किसको दें - स्वयं डैनियल को लगभग

539, या ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी, लगभग 165 ईसा पूर्व के दौरान मैकाबीन काल में रहने वाले किसी अज्ञात व्यक्ति को।

मेरा मानना है कि मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वानों के लंबे निष्कर्ष के लिए यहां तीन प्राथमिक कारण हैं। एक वह है जिसे मैं मूलभूत अंतर्निहित मुद्दा कहता हूं; यह व्यापक रूप से फैली हुई धारणा है कि आम तौर पर पूर्वानुमानित भविष्यवाणी नहीं होती है। दूसरे, कहा जाता है कि पुस्तक में कथित ऐतिहासिक त्रुटियां वर्णित घटनाओं के काफी समय बाद इसकी उत्पत्ति को दर्शाती हैं, जब जो कोई भी इसे लिख रहा था उसे या तो पता नहीं था या वह भूल गया था कि वास्तव में ऐतिहासिक रूप से क्या हुआ था। तीसरे कथित देर से भाषाई संकेतक हैं।

एक। "पी रिडिक्टिव भविष्यवाणी नहीं होती है।"

तो आइए उन तीन तर्कों पर नजर डालते हैं। धारणा ए. कि "भविष्यवाणी भविष्यवाणी नहीं होती है।" यह मूलतः एक दार्शनिक विश्वदृष्टि मुद्दा है। यदि ब्रह्माण्ड कारण और प्रभाव संबंधों का एक बंद सातत्य है जिसमें दैवीय हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं है, तो निस्संदेह आपके पास दैवीय रहस्योद्घाटन नहीं है। डैनियल के लिए उन घटनाओं का वर्णन करना असंभव होगा जो हमारे द्वारा बताए गए समय के इतने लंबे समय बाद घटित हुईं। यदि आप यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उस प्रकार की वास्तविक भविष्यवाणी न तो होती है और न ही हो सकती है, तो तुरंत एक प्रश्न उठता है जो डैनियल की पुस्तक में प्रमुखता के कारण काफी महत्वपूर्ण है।

1) डैनियल 2 और 7 और महत्वपूर्ण सिद्धांत उदाहरण के लिए, क्या डैनियल अध्याय 2 और अध्याय 7 में साम्राज्यों का एक क्रम है? डैनियल 2 में आपको उस छवि का दर्शन मिलता है जिसका सिर सोने का, छाती और भुजाएं चांदी की, पेट और जांघें कांस्य की और टांगें और पैर लोहे के हैं, जो चार साम्राज्यों के उत्तराधिकार का चित्रण कर रहे थे जो सत्ता में आने वाले थे। निकटपूर्व। साम्राज्यों का वही क्रम डैनियल 7 में पाया जाता है लेकिन वहां चार

अलग-अलग प्रकार के जानवरों को दर्शाया गया है। अब अध्याय 7 में सोने का सिर, छाती और भुजाएं, पेट और जांघें और पैर के बजाय आपके पास एक शेर, एक भालू, एक तेंदुआ और कुछ अनाम भयानक जानवर हैं। उन जानवरों के प्रतीकवाद की पारंपरिक व्याख्या, साथ ही छवि के वे हिस्से जो छवि में सोने के सिर हैं, बेबीलोनियन साम्राज्य है। स्तन और भुजाएँ मादी-फ़ारसी साम्राज्य हैं। पेट और जांघें यूनानी साम्राज्य, सिकंदर महान और उसके उत्तराधिकारी हैं। पैर और पैर रोमन साम्राज्य हैं। अब वह क्रम मुख्यधारा के आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ फिट नहीं बैठता है क्योंकि रोमन साम्राज्य ऐतिहासिक रूप से एंटीओकस एपिफेनीज़ के समय तक नहीं उभरा था जो ग्रीक काल का हिस्सा था। बदले में इसका मतलब यह है कि मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वान, जो एंटीओकस एपिफेन्स के समय में किताब की तारीख बताते हैं, उन्हें उन साम्राज्यों का उत्तराधिकार ढूंढना होगा जो उस समय से पहले मौजूद थे जब किताब लिखी जाने का आरोप लगाया गया था या आप भविष्यवाणी पर वापस आ गए हैं। यदि आपके पास रोमन साम्राज्य है, तो वह एंटीओकस के समय में भी अस्तित्व में नहीं था।

अतः, आलोचनात्मक विद्वानों के इस प्रस्ताव को आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि सोने का सिर बेबीलोनियन साम्राज्य है। स्तन और भुजाएँ एक अपोक्रीफ़ल मेडियन साम्राज्य हैं - मैं "एपोक्रीफ़ल" कहता हूँ क्योंकि बेबीलोनियन और फ़ारसी साम्राज्यों के बीच स्वतंत्र अस्तित्व में कोई मेडियन साम्राज्य नहीं था। फारसियों द्वारा बेबीलोन पर विजय प्राप्त करने से पहले मीडिया फारस का हिस्सा बन गया था, इसलिए जिन आलोचनात्मक विद्वानों को चार राज्यों का क्रम मिलता है, उन्हें बेबीलोनियन और फारसी के बीच इस मध्य साम्राज्य का निर्माण करना होगा, जबकि यह ऐतिहासिक रूप से गलत है। लेकिन तब पेट और जांघें फ़ारसी होनी चाहिए और फिर टाँगें और पाँव यूनानी होने चाहिए ताकि यह उस समय समाप्त हो जाए जब यह कथित तौर पर लिखा गया था।

यदि डैनियल की भविष्यवाणियाँ राज्यों के इस विशेष उत्तराधिकार को दर्शाती हैं तो वे ऐतिहासिक रूप से गलत हैं। आलोचनात्मक विद्वानों के लिए यह कोई समस्या नहीं है क्योंकि वे बस दावा करते हैं कि इन भविष्यवाणियों के लेखक सदियों बाद, मैकाबीयन काल

के दौरान रहते थे। हो सकता है कि वह इतिहास के पहले पाठ्यक्रम के बारे में भ्रमित हो गया हो और उसने गलती से सोचा हो कि फ़ारसी और बेबीलोनियन काल के बीच मेडियन का एक स्वतंत्र अस्तित्व था। निष्कर्ष यह है, "हम लेखक डैनियल से बेहतर जानते हैं, चाहे वह कोई भी हो, जिसने राज्यों के उस क्रम के बारे में बस गलती की थी।"

2) डैन में ऐतिहासिक त्रुटियों के गंभीर सिद्धांत संबंधी आरोपों का जवाब। 2 और 7

इसलिए आपकी यह धारणा है कि वास्तव में पूर्वानुमानित भविष्यवाणी घटित नहीं होती है। ये ऐतिहासिक त्रुटियाँ, जैसा कि हमने अभी देखा है, प्रमुख कथित ऐतिहासिक त्रुटियों में से एक इस अपोकलिफ़ल मेडियन साम्राज्य का अस्तित्व है, लेकिन उनकी अन्य त्रुटियों में शामिल हैं - मैं यहाँ तीन का उल्लेख करूँगा, जिनमें से कोई भी बहुत महत्वपूर्ण नहीं है: इसके बजाय बेलशेज़र का संदर्भ उस समय नबोनिडस, जब बेबीलोनवासी फारसियों के हाथों गिरे थे (डैनियल 5:30-31) को एक ऐतिहासिक गलती कहा जाता है। "उसी रात बेबीलोनियों का राजा बेलशस्सर मारा गया और 62 वर्ष की आयु में मादी डेरियस ने राज्य पर अधिकार कर लिया।" हम एक मिनट में उस पर वापस आएंगे, लेकिन अक्सर यह तर्क दिया गया है कि बेलशस्सर शासक नहीं था, यह नबोनिडस था।

दूसरे, डेरियस द मेडे नाम का व्यक्ति उस ऐतिहासिक संदर्भ में कभी अस्तित्व में नहीं था जिसमें उसे डैनियल में रखा गया है। वही आयत डेरियस मादी के राज्य पर कब्ज़ा करने की बात करती है। तीसरा, दानिय्येल 5:2 और 22 में बेलशस्सर के पिता के रूप में नबूकदनेस्सर के अभिलेख केवल गलत होंगे क्योंकि बेलशस्सर पुत्र के बजाय पोता होगा। उन सभी आरोपों पर वाजिब प्रतिक्रियाएं आ रही हैं।

ए) नबोनिदास और बेलशस्सर प्रथम, बेबीलोन के ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि नबोनिडस ने अपने बेटे का नाम बेलशस्सर सह-शासनकर्ता रखा था, जब वह बेबीलोन से असीरिया और उत्तरी अरब के लिए रवाना हुआ था। दानिय्येल 5:29 कहता है कि उन्होंने एक होकर शासन किया। यह बहुत संभव है कि नबोनिडस उस रात आसपास नहीं था और

बेबीलोनियन से फारसी शासन में संक्रमण के समय उसका सह-शासक बेलशस्सर प्रभारी था।

बी) डेरियस द मेड एस सेकेंड कौन है, जबकि यह सच है कि डेरियस द मेड का उल्लेख बाइबिल के बाहर नहीं किया गया है और फारस के साइरस के उत्तराधिकार में बेलशस्सर और नबोनिडस के बीच कोई अंतराल नहीं है - यह साइरस ही था जिसने बेबीलोन साम्राज्य पर कब्जा कर लिया था - इसका मतलब यह नहीं है कि डैनियल गलती पर है। कई उचित सुझाव दिए गए हैं जो डेरियस द मेड की पहचान करने का प्रयास करते हैं। यह संभव है कि यह स्वयं साइरस का दूसरा नाम है, शायद सिंहासन का नाम। 1 इतिहास 5:26 में आपको राजा तिग्लथ-पाइलसर का पुल के रूप में उल्लेख मिलता है। क्या साइरस को डेरियस द मेड के नाम से भी जाना जाता था? यह संभव है। कुछ लोग 6:28 को देखते हैं जहाँ यह कहा गया है, "इस प्रकार दानियेल डेरियस के शासनकाल और फारस के साइरस के शासनकाल के दौरान समृद्ध हुआ" कुछ ने इसका अनुवाद केवल इसे सीमित करने के रूप में किया - यहाँ तक कि पहले साइरस के शासनकाल के दौरान भी। ताकि डेरियस और साइरस एक ही हों। यह संभव है। अन्य लोगों ने सुझाव दिया है कि यह गुबरू नाम का एक अन्य व्यक्ति था, जो कि बेबीलोनियाई ग्रंथों में पाया जाने वाला नाम है जिसे साइरस ने बेबीलोन का गवर्नर नियुक्त किया था। उसका नाम गुबरू था जिसे डेरियस भी कहा जाता था। आप देखते हैं कि यह सच है कि हमारे पास डेरियस द मेडे की पहचान को हल करने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं - और हम नहीं करते हैं - मुझे नहीं लगता कि यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण है कि पुस्तक मैकाबीन काल में लिखी गई थी या कि ऐतिहासिक सन्दर्भ में पुस्तक आवश्यक रूप से त्रुटिपूर्ण है।

ग) नबूकदनेस्सर पिता या दादा के रूप में? तीसरा, नबूकदनेस्सर को दादा के बजाय पिता के रूप में संदर्भित करना आम सेमेटिक उपयोग है। यह आश्चर्य की बात है कि इसे एक तर्क के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। बात बस इतनी है कि वह पूर्वज था और बेलशस्सर

उसका वंशज था। यदि आप अपने उद्धरण में पृष्ठ 17 और 18 को देखें तो डीआर डेविस, जो एक इंजीलवादी नहीं हैं, अपने ओल्ड टेस्टामेंट गाइड टू डैनियल में कहते हैं, "आलोचनात्मक टिप्पणियाँ, विशेष रूप से सदी के अंत के आसपास, इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया कि बेलशस्सर न तो पुत्र था नबूकदनेस्सर का, न बेबीलोन का राजा। इसे अभी भी कभी-कभी डैनियल की ऐतिहासिकता के खिलाफ आरोप के रूप में दोहराया जाता है, और रूढ़िवादी विद्वानों द्वारा इसका विरोध किया जाता है। लेकिन 1924 से यह स्पष्ट हो गया है कि यद्यपि नबोनिडस नव-बेबीलोनियन राजवंश का अंतिम राजा था, बेलशस्सर प्रभावी रूप से बेबीलोन पर शासन कर रहा था। इस संबंध में, डैनियल सही है। 'पुत्र' का शाब्दिक अर्थ नहीं दबाना चाहिए; भले ही यह डैनियल की ओर से गलतफहमी पैदा कर सकता है, डैनियल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के खिलाफ एक मजबूत मामला इस तरह के कमजोर तर्कों को शामिल करने से नहीं बढ़ता है। तो ये उस प्रकार की ऐतिहासिक त्रुटियाँ हैं जिनके अस्तित्व में होने का आरोप है जो कुछ लोगों को दिखाती हैं कि डैनियल लेखक नहीं थे। आइए इस बिंदु पर विराम लें।

प्रतिलेखित: बेन हेल्
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
 केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
 टेड हिल्डेबैट्ट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल की भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 12

डैनियल की तारीख, परंपराओं के स्कूल का इतिहास, मौखिक परंपरा और लेखन सी. डैनियल के लिए कथित देर से भाषाई विशेषताएं हैं

1. यूनानी ऋण शब्द

हम डैनियल की देर से डेट के तर्कों पर गौर कर रहे हैं। हमने इस धारणा पर गौर किया है कि पूर्वानुमानित भविष्यवाणी घटित नहीं होती है। हमने ऐतिहासिक त्रुटियों को देखा है और अब सी., "कथित रूप से देर से भाषाई विशेषताएं हैं।" यह तर्क संगीत वाद्ययंत्रों के लिए डैनियल 3:5 में पाए गए कई ग्रीक ऋण शब्दों के उपयोग के साथ-साथ अरामी भाषा के उपयोग पर केंद्रित है, जिसे अरामी के बाद के प्रकार का कहा जाता है। जैसा कि आप जानते हैं, डैनियल 2:4 से अध्याय 7 के अंत तक हिब्रू के बजाय अरामी भाषा में लिखा गया था। उस खंड के अरामाइक को अरामाइक का बाद का रूप कहा जाता है। फिर, मुझे नहीं लगता कि इनमें से कोई भी तर्क ठोस है। सिकंदर महान के समय से बहुत पहले यूनानियों और प्राचीन निकट पूर्व के बीच संपर्क के प्रचुर प्रमाण मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में, धारणा यह है कि यदि आपके पास ग्रीक ऋण शब्द हैं तो यह सिकंदर के अधीन ग्रीक साम्राज्य के विकास और उसकी विजय के संबंध में ग्रीक भाषा के प्रसार के समय के बाद का होगा। तर्क वास्तव में पलटा जा सकता है। यह आश्चर्य की बात है कि यदि पुस्तक वास्तव में दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में लिखी गई थी तो इसमें ग्रीक शब्दों की तुलना में अधिक ग्रीक शब्द नहीं हैं, केवल तीन हैं, और ये संगीत वाद्ययंत्रों के लिए तकनीकी प्रकार के शब्द हैं, इसलिए यह कुछ महत्वपूर्ण नहीं लगता है .

2. स्वर्गीय अरामाइक जो लोग अरामाइक प्रश्न का अध्ययन करते हैं, वे पाएंगे कि यह काफी तकनीकी और जटिल हो गया है। एक लेख में कहा गया है कि डैनियल की अरामी शब्दावली में 90 प्रतिशत शब्दावली ईसा पूर्व 5वीं शताब्दी या उससे पहले के दस्तावेजों से प्रमाणित है। यदि आप अपने उद्धरणों के पृष्ठ 16 को देखते हैं, तो पृष्ठ के नीचे और पृष्ठ 17 पर टिंडेल श्रृंखला में जॉयस बाल्डविन, *डैनियल की टिप्पणी* से कुछ सामग्री मौजूद है। आप

देखेंगे कि वह अरामी तर्क के बारे में बोल रही है और कहती है, "डैनियल की अरामाइक को शाही अरामाइक दिखाया गया है, या 'अपने आप में, सी के भीतर किसी भी दृढ़ विश्वास के साथ व्यावहारिक रूप से अप्राप्य है। 600 से 330 ईसा पूर्व इसलिए 'पूर्वी' और 'पश्चिमी' अरामी के बीच अंतर करना अप्रासंगिक है, जो बाद में विकसित हुआ। मूल स्थान का एकमात्र संकेत शब्द क्रम से उत्पन्न होता है, जो अक्कादियन प्रभाव को दर्शाता है, और साबित करता है कि 'डेनियल का अरामी शाही अरामी की प्रारंभिक परंपरा से संबंधित है, जो शाही अरामी के बाद के स्थानीय, फिलिस्तीनी व्युत्पन्न के विपरीत है।" यदि आप पृष्ठ 8 पर अपनी ग्रंथ सूची को देखते हैं, तो आप देखेंगे कि केए किचन का एक निबंध है, "द अरामाइक ऑफ डैनियल," और फिर एडविन यामूची के तीन लेख हैं, "द आर्कियोलॉजिकल बैकग्राउंड ऑफ डैनियल," "डैनियल और अलेक्जेंडर से पहले ईजियन और निकट पूर्व के बीच संपर्क," और "निकट पूर्व में ग्रीक प्रभाव के प्रकाश में डैनियल में ग्रीक शब्द।" वे लेख इस प्रश्न पर विशेष रूप से उपयोगी हैं कि हमारे पास किस प्रकार के अरामाइक हैं, साथ ही ये ग्रीक ऋण शब्द भी हैं। मुझे लगता है कि बाल्डविन और यामूची दोनों के निष्कर्ष कि ये मजबूत तर्क नहीं हैं, बहुत अच्छी तरह से तर्क दिए गए हैं। मैं आपके उद्धरणों में बाल्डविन से आगे पढ़ने के लिए समय नहीं लूंगा।

3. कुमरान (मृत सागर स्क्रॉल) से तर्क, आइए हैंडआउट पर जाएं। हमने वहां पढ़ा कि मृत सागर स्क्रॉल के साक्ष्य 150 से 100 ईसा पूर्व में कुमरान की प्रतियों में डैनियल के अस्तित्व की पुष्टि करते हैं, नवीनतम या शायद उससे भी पहले। इन दोनों का काल 165 ईसा पूर्व से पहले का होने का एक मजबूत तर्क है। रचना की नकल करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है और अगर इसकी रचना की देर की तारीख को स्वीकार कर लिया जाए तो इसने कुमरान समुदाय के साथ विहित दर्जा हासिल कर लिया है। दूसरे शब्दों में, अगर हम यह कहें कि यह लगभग 165 में लिखा गया था, नवीनतम 150 तक, तो यह पहले से ही कुमरान समुदाय में पवित्रशास्त्र के एक विहित भाग के रूप में मान्यता प्राप्त है। ऐसा लगता है कि यह बहुत ही असंभव है अगर इसे हाल ही में लिखा गया होता।

4। निष्कर्ष

निष्कर्ष। डैनियल के साथ देर से डेटिंग करने का कोई ठोस कारण नहीं है। देर की तारीख के लिए प्रत्येक ऐतिहासिक और भाषाई तर्क के लिए पर्याप्त उत्तर हैं। अंतर्निहित प्रश्न यह है कि क्या कोई सामान्य भविष्यसूचक भविष्यवाणी की संभावना को स्वीकार करने के लिए तैयार है या नहीं। यदि कोई आश्वस्त है कि डैनियल भविष्य के बारे में इतनी स्पष्टता से बात नहीं कर सकता था, विशेषकर एंटीओकस एपिफेन्स के समय के बारे में, तो उसे इस समय के बाद की तारीख तलाशनी चाहिए। जो लोग वास्तविक भविष्यवाणियों की संभावना को स्वीकार करते हैं, उनके लिए यह सामग्री, पवित्रशास्त्र के कई अन्य पूर्वानुमानित खंडों के साथ, सबूत के रूप में उपयोग की जाती है कि एक ईश्वर है जो पूरे इतिहास को नियंत्रित करता है, जिसने अपने लोगों से अपने सेवकों के माध्यम से भविष्य की घटनाओं के बारे में बात की है। भविष्यवक्ता।

छात्र प्रश्न

विद्यार्थी प्रश्न: डैनियल ने हिब्रू और अरामी दोनों में क्यों लिखा?

मुझे नहीं लगता कि किसी ने कभी भी इसका स्पष्ट उत्तर दिया है। कुछ लोग यह तर्क देने का प्रयास करते हैं कि हिब्रू में भाग यहूदी लोगों के लिए अधिक निर्देशित है, और दूसरा भाग बड़े पैमाने पर दुनिया के लिए है। अरामाइक को अधिक सार्वभौमिक रूप से समझा जाता था। लेकिन मुझे पूरा यकीन नहीं है कि आप इसे समझा सकेंगे। मैं तुम्हें इससे अधिक कुछ नहीं दे सकता। मुझे नहीं लगता कि किसी ने कभी भी इसके लिए कोई अच्छी ठोस व्याख्या दी है।

सी. परंपराओं के स्कूल का इतिहास 1. मौखिक परंपरा - एचएस न्यबर्ग

खंड सी, जहां तक हमारे सामान्य विषय का संबंध है, "भविष्यवक्ताओं के लेखक थे" "परंपरा विद्यालय का इतिहास" है। यह ऐसी चीज़ है जो पिछली आधी सदी में विकसित हुई

है। इस दृष्टिकोण के शुरुआती प्रवर्तकों में से एक स्वीडन के उप्साला का एचएस न्यबर्ग नाम का एक व्यक्ति था। उन्होंने *स्टडीज ऑफ होसे नामक* पुस्तक लिखी। न्यबर्ग के अनुसार, प्राचीन निकट पूर्व में विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के प्रसारण का सामान्य तरीका लिखित के बजाय मौखिक था। इसलिए परंपराओं के इस इतिहास ने यह तर्क देने का प्रयास किया कि भविष्यवक्ताओं द्वारा दर्ज किए गए पुराने नियम में सामग्री के इन निकायों के संचरण के साधन और तरीके जो उन्होंने पाए थे, लिखित के बजाय संचरण का मौखिक साधन थे। उन्होंने कहा कि कहानियाँ, गीत, किंवदंतियाँ और मिथक लिखित साहित्य के बजाय मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे। उन्होंने दावा किया कि यह पुराने नियम के बारे में सच है, इसलिए पूर्व-निर्वासन फिलिस्तीन लेखन अनुबंधों, स्मारकों, आधिकारिक सूचियों, पत्रों जैसे व्यावहारिक मामलों तक ही सीमित था - वे चीजें जो अधिक तकनीकी चीजें थीं। परन्तु इतिहास, महाकाव्य कथाएँ, लोक कथाएँ आदि का प्रसारण मौखिक रूप से होता था।

इसके बाद न्यबर्ग का प्रस्ताव है कि यदि ऐसा है, तो निष्कर्ष यह है कि लिखित पुराना नियम बहुत बाद में आता है। यह 587 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश और मैकाबीन काल (लगभग 165 ईसा पूर्व) के बीच यहूदी समुदाय का निर्माण था। तो उस काल में जब इजराइल बेबीलोन गया था ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी तक यही वह काल था जब यह सारी मौखिक सामग्री लिखित रूप में दी गई थी। उस समय से पहले जो कुछ लिखित रूप में है उसे बहुत मामूली माना जाना चाहिए। प्रसारण लगभग पूरी तरह से मौखिक था।

तीसरा, भविष्यसूचक उपदेश भी मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था और बेबीलोन की कैद के बाद ही लिखा गया था। भविष्यवक्ता लेखक नहीं थे। देखिए, यही वह प्रश्न है जिसके साथ हमने यह चर्चा शुरू की थी: क्या भविष्यवक्ता लेखक थे? उन्होंने कहा, नहीं वे उपदेशक थे. जिन अवधारणाओं की उन्होंने घोषणा की है, वे निर्वासन के बाद तक मौखिक रूप से ही सर्वोत्तम थीं। वहां न्यबर्ग का एक उद्धरण है, जो *द ओल्ड टेस्टामेंट इन मॉडर्न स्टडी में ईसफेल्ट के एक लेख में पाया* गया है, यह आपकी ग्रंथ सूची में है जहां न्यबर्ग कहते हैं, "लिखित पुराना नियम निर्वासन के बाद यहूदी समुदाय की रचना है; इससे

पहले जो कुछ हुआ वह निश्चित रूप से निश्चित लिखित रूप में छोटी मात्रा में ही था। केवल सबसे बड़े रिज़र्व के साथ ही हम भविष्यवक्ताओं में लेखकों की गिनती कर सकते हैं। हमें उस परंपरा के मंडलों, कभी-कभी केंद्रों पर विचार करना चाहिए, जिन्होंने सामग्री को संरक्षित और हस्तांतरित किया। यह स्वयं स्पष्ट है कि प्रसारण की ऐसी प्रक्रिया सौंपी गई सामग्री में कुछ बदलाव के बिना जारी नहीं रह सकती है, लेकिन हमारे पास पाठ्य भ्रष्टाचार नहीं है, बल्कि एक सक्रिय परिवर्तन है। बाकी लोगों के लिए, पुराने नियम की छात्रवृत्ति के लिए ईमानदारी से विचार करना अच्छा होगा कि पुराने नियम के व्यक्तित्वों के शब्दों, *इप्सिमा वर्बा को पुनः प्राप्त करने की क्या संभावना हो सकती है*। हमारे पास उनके कथनों की परंपरा के अलावा कुछ भी नहीं है, और यह अत्यधिक संभावना नहीं है कि उनके लिए प्रसारण का मौखिक रूप कभी भी अस्तित्व में था। यह आपकी सोच को लिखित साहित्य की श्रेणियों से बाहर खींचकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी शिष्यों के मंडल के माध्यम से परंपरा के मौखिक हस्तांतरण की श्रेणियों में ले जाता है, जिस प्रक्रिया में सामग्री बदल जाती है। जिस प्रकृति में यह सामग्री सौंपी गई थी, उसके कारण आप वास्तव में भविष्यवक्ताओं के शब्दों तक वापस नहीं पहुंच सकते।

2. हैरिस बिक्लैंड नंबर 2, हैरिस बिक्लैंड न्यबर्ग के छात्र थे और उन्होंने उनके विचार लिए और उन्हें व्यक्तिगत भविष्यवाणी पुस्तकों में लागू किया। उन्होंने कहा कि भविष्यवाणी की किताबें संभवतः पहले से ही डरी हुई मौखिक परंपरा का साहित्यिक प्रतिनिधित्व थीं। पैगंबर एक घरे से घिरे हुए थे, जो पहले छोटा था, लेकिन फिर बढ़ता गया, जिसने उनकी मृत्यु के बाद भी उनका काम जारी रखा। यह शिष्यों की इन मंडलियों के बीच है कि भविष्यसूचक कथन के जीवित प्रसारण ने अपना घर पाया। बिक्लैंड ने अनुमान लगाया कि भविष्यवक्ताओं को जीवित रखा गया था या उन्हें लगातार बढ़ते बड़े "परंपरा परिसरों", भविष्यवाणी त्यागों और परंपरा परिसरों के संयोजन में जोड़ा गया था। भविष्यवक्ताओं के शब्दों के अलावा उनके बारे में अन्य जानकारी भी एक साथ मिल गई थी। इस प्रकार भविष्यसूचक बातें पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंपी गईं और इस प्रक्रिया में उन्हें लगातार दोहराया

गया। अंततः जो बरकरार रखा गया वह इस पर निर्भर था कि लोगों के जीवन में क्या प्रासंगिक और सक्रिय साबित हुआ, ताकि इस प्रक्रिया में एक विकल्प चुना जा सके, जिसकी तुलना बिर्कलैंड ने प्राकृतिक जीवन में योग्यतम के अस्तित्व से की। जो महत्वपूर्ण और प्रासंगिक साबित हुआ उसे संरक्षित किया गया। संपूर्ण प्रसारण प्रक्रिया तथाकथित "परंपरा मंडलियों" में हुई। प्रसारण के साधनों के कारण अब कोई यह नहीं कह सकता कि मूल रूप से पैगंबर का क्या था और परंपरा के लिए क्या जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। इसलिए वह कहते हैं कि ज्यादातर मामलों में हमें "भविष्यवक्ताओं और स्वयं महान जीनियस के पास वापस जाने का प्रयास छोड़ देना चाहिए।" पैगम्बर के शब्द कहाँ हैं? खैर, संचरण की विधि के बारे में यह पूरा विचार हमें बताता है कि आप वास्तव में ठीक से नहीं जान सकते। परिणामस्वरूप, हमें भविष्यसूचक पुस्तकों के अपने अध्ययन से "नोट्स", "बड़े साहित्यिक टुकड़े", अभिव्यक्ति जैसे विचारों को हटा देना चाहिए जिन्हें साहित्यिक पैटर्न के अनुसार आकार दिया गया है। हमें ऐसे भावों को प्रतिस्थापित करना चाहिए जो संचरण की मौखिक प्रक्रिया के लिए उपयुक्त हों, जैसे कि "परंपरा," "जटिल," "मंडलियाँ," आदि। इसके अलावा, हमें इस तथ्य को पूरी तरह से पहचानना चाहिए कि "इप्सिमा वर्बा के बारे में प्रश्न भविष्यवक्ताओं का समाधान केवल साहित्यिक-आलोचनात्मक आधार पर नहीं, बल्कि पारंपरिक-ऐतिहासिक आधार पर ही किया जा सकता है।" दूसरे शब्दों में, आप साहित्यिक प्रकार की चिंताओं से निकलकर मौखिक परंपरा की चिंताओं की ओर बढ़ते हैं।

3. एडुआर्ड नील्सन, मौखिक परंपरा और आधुनिक समस्या पुराने नियम का परिचय

इस दृष्टिकोण में यहां तीसरी महत्वपूर्ण बात है एडुआर्ड नील्सन, उनका वॉल्यूम *ओरल ट्रेडिशन और द मॉडर्न प्रॉब्लम ओल्ड टेस्टामेंट इंटरोडक्शन*, जो अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ था और वह न्यबर्ग और बिर्कलैंड की ही तर्ज पर चलता है। मैं ए देना चाहता हूं। "इस थीसिस का सारांश।" अपना ध्यान उस सामग्री की ओर आकर्षित करें जो वह अपनी पुस्तक में प्रकाशित करता है, न कि उस तर्क के लिए जो वह कर रहा है, हालाँकि वह निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि केवल उस साक्ष्य के लिए जो वह भारी मात्रा में सामग्री को याद रखने

की भूमिका के बारे में देता है। प्राचीन निकट पूर्वी संस्कृति में मौखिक रूप से बजाया जाता था। इसमें से कुछ दिलचस्प है।

1. बेबीलोन में संस्मरण आपके हैंडआउट पर, “इस पुस्तक का पहला अध्याय प्राचीन निकट पूर्व में मौखिक परंपरा के उपयोग से संबंधित है। नीलसन दर्शाते हैं कि दिल से सीखने के प्रति आधुनिक अवमानना प्राचीन सेमाइट्स की विशेषता नहीं है। मुझे लगता है कि 21^{वीं} सदी के अमेरिका के लिए यह अवमानना अभी भी महत्वपूर्ण है। हमें चीजों को याद रखना पसंद नहीं है। वह कुछ बेबीलोनियाई ग्रंथों की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं जो संकेत देते हैं कि मौखिक परंपरा का आधार बनने वाले पुराने ग्रंथों को याद करना बेबीलोन में अजीब नहीं था। पृष्ठ 17, खंड ए पर अपना उद्धरण देखें, “पाठों को कंठस्थ करने की आधुनिक अवमानना मौखिक परंपरा के लिए आवश्यक आधार है... प्राचीन मेसोपोटामिया संस्कृति लेखन के प्रति उत्साही प्रतीत होती है; लेकिन हमारे पास कुछ ऐसे संदर्भ हैं जो दिल से सीखने से जुड़े महत्व पर जोर देते हैं। उस इरा मिथक के अक्सर उद्धृत निष्कर्ष से हम उद्धृत करते हैं: ‘जो मुंशी इस पाठ को दिल से सीखता है वह दुश्मन से बच जाता है, उसे सम्मानित किया जाता है। ‘विद्वानों की सभा में, जहाँ मेरा नाम निरंतर बोला जाता हो, मैं उसके कान खोल दूँगा।’ शमश के लिए अशर्बनिपाल की प्रार्थना उल्लेखनीय है क्योंकि यह एक अभिशाप और आशीर्वाद के साथ समाप्त होती है, जो कुछ हद तक प्राचीन प्राच्य शाही शिलालेख के समान है, जिसमें हम आशीर्वाद में पढ़ते हैं: ‘जो कोई भी इस पाठ को दिल से सीखेगा और देवताओं के न्यायाधीश, शमाश की महिमा करेगा क्या वह अपना बहुमूल्य बना सकता है, क्या उसके मुंह के शब्द लोगों को प्रसन्न कर सकते हैं। ” यह इन ग्रंथों को याद करने के लिए सीखने का एक संदर्भ है।

2. कुरान को याद करना हैंडआउट पर वापस जाएं। अरब में, कुरान विशेष रूप से अस्तित्व के प्रारंभिक समय में मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था। जो कोई भी अल अज़हर की मस्जिद में प्रवेश चाहता है काहिरा में बिना किसी हिचकिचाहट के पूरे कुरान

को पढ़ने में सक्षम होना चाहिए। वह मस्जिद आज भी काहिरा की एक बहुत महत्वपूर्ण मस्जिद है / अपने उद्धरण के पृष्ठ 18 पर पैराग्राफ बी को देखें, “पश्चिम-सेमेटिक संस्कृति की ओर मुड़ते हुए हम टिप्पणी करेंगे कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि लिखित शब्द को अत्यधिक महत्व नहीं दिया जाता है। इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्र विधा नहीं माना जाता। भले ही कुरान ने 'पवित्रशास्त्र के धर्मशास्त्र' को जन्म दिया है, जिसकी तुलना यहूदी धर्म और प्रोटेस्टेंटवाद से की जा सकती है, कुरान की लिखित प्रतियां इस्लाम में आश्चर्यजनक रूप से विनीत भूमिका निभाती हैं। कुरान लगातार - अपने अस्तित्व के पहले दिनों की तरह - मौखिक रूप से दिया गया है; हर कोई मस्जिद अल अज़हर में भर्ती होना चाहता है (काहिरा में) बिना किसी हिचकिचाहट के पूरे कुरान को पढ़ने में सक्षम होना चाहिए, और उनके पवित्र पाठ को शुरू करने वालों में से एक द्वारा इसे याद किया जाता है और युवा शिष्यों द्वारा इसे दोहराया जाता है, जब तक कि वे इसे दिल से नहीं जानते। अब वह एक अलग दुनिया है, जहां हम रहते हैं। कुरान की पूरी किताब को मौखिक रूप से सुनकर, उसे उद्धृत करके, और फिर उसे अपनी याददाश्त में रखकर याद करने के लिए ताकि आप मस्जिद में दीक्षार्थियों के एक समूह के रूप में इसे पढ़ सकें।

3. जोहानन बेन ज़क्कई और मिशनाह संस्मरण अपनी रूपरेखा पर वापस जाएँ। यहूदी धर्म में, वेस्पासियन के शिविर में एक कैदी, जोहानन बेन ज़क्कई, स्मृति से पूरे मिशनाह का पाठ कर सकता था और इस तरह जानता था कि दिन का सही समय क्या था, क्योंकि वह जानता था कि मिशनाह के प्रत्येक भाग को पढ़ने में कितना समय लगेगा। . अपने उद्धरणों के पृष्ठ 18 के नीचे पैराग्राफ सी पर जाएँ। कहानी वेस्पासियन के शिविर में जोहानन बेन ज़क्कई के बारे में बताती है। वेस्पासियन द्वारा पहली बार दर्शकों के बीच उनका स्वागत करने के बाद 'उन्होंने उसे पकड़ लिया और उसे सात तालों से बंद कर दिया, और उससे पूछा कि रात का क्या समय हुआ है। और उसने उनसे कहा. और दिन का कौन सा समय था, और उस ने उनको बता दिया, और हमारे स्वामी जोहानन बेन ज़क्कई को कैसे पता चला? मिशनाह के पाठ से. दूसरे शब्दों में, रब्बी जोहानन बेन ज़क्कई न केवल अपने

मिश्रा को दिल से जानते थे, बल्कि उन्हें यह भी पता था कि प्रत्येक पैराग्राफ को पढ़ने में कितना समय लगता है, और यह सब पूरा करने के लिए उन्हें कितना समय चाहिए।" तो किसी ने उनसे पूछा कि यह कितना समय है था और वह मिशनाह के पाठ के कारण जानता था। अब शायद यह कुछ ज्यादा ही अतिशयोक्ति है, लेकिन आप देख रहे हैं कि नीलसन यहां क्या स्थापित कर रहा है, वह यह है कि प्राचीन निकट पूर्व में, लोगों ने अपनी यादों के लिए भारी मात्रा में सामग्री समर्पित की थी।

4. प्लेटो और मौखिक स्मृति

पृष्ठ 19 के शीर्ष पर पैराग्राफ डी, जो फिर से नीलसन से है, "लेखन की कला के प्रसार के खिलाफ एक स्पष्ट प्रतिक्रिया के रूप में हम प्लेटो के निम्नलिखित शब्दों (फैड्रियस से) का हवाला दे सकते हैं /" वे उस प्रतिक्रिया के रूप में उल्लेखनीय हैं जो आम लोगों, अज्ञानी अपरिष्कृत जनता से उत्पन्न नहीं होती है - क्योंकि एक अनपढ़ लोगों की विशेषता अवमानना नहीं है, बल्कि लिखित शब्द के प्रति सम्मान है। ये शब्द उस दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं जो प्लेटो का अपने समय के बौद्धिक अभिजात वर्ग के साथ समान था। " और यहाँ प्लेटो सुकरात को उद्धृत करता है। प्लेटो सुकरात का शिष्य था। "सुकरातः फिर, मैंने सुना कि मिस्र में नौक्रेटिस देश के प्राचीन देवताओं में से एक था, जिसके पवित्र पक्षी को इबिस कहा जाता है और देवता का नाम स्वयं थ्यूथ था। वह वह व्यक्ति था जिसने संख्याओं और अंकगणित, ज्यामिति और खगोल विज्ञान, और ड्राफ्ट और पासे, और, सबसे महत्वपूर्ण, अक्षरों का आविष्कार किया था। अब उस समय पूरे मिस्र का राजा थामुस था, जो ऊपरी क्षेत्र के महान शहर में रहता था, जिसे यूनानी लोग मिस्र के थेब्स कहते थे, और वे स्वयं देवता को अम्मोन कहते थे। थ्यूथ उसके पास अपने आविष्कार दिखाने के लिए आया और कहा कि उन्हें अन्य मिस्रवासियों को प्रदान किया जाना चाहिए। लेकिन थैमस पूछता है कि प्रत्येक में क्या उपयोग था, और जैसे ही थ्यूथ ने उनके उपयोगों की गणना की, उन्होंने अनुमोदन या अस्वीकृति के अनुसार प्रशंसा या दोष व्यक्त किया। कहानी यह है कि थामस ने विभिन्न कलाओं की प्रशंसा या दोष में थ्यूथ से कई बातें कहीं, जिन्हें दोहराने में बहुत

समय लगेगा; लेकिन जब उन्हें पत्र मिले, 'यह आविष्कार, हे राजा,' थ्यूथ ने कहा, 'मिस्रवासियों को समझदार बना देगा और उनकी याददाश्त में सुधार करेगा; क्योंकि यह स्मृति और ज्ञान के अमृत में है जिसे मैंने खोजा है।' लेकिन थामस ने उत्तर दिया, 'सबसे सरल थ्यूथ, किसी के पास कला उत्पन्न करने की क्षमता होती है, लेकिन अपने उपयोगकर्ताओं के लिए उनकी उपयोगिता या हानिकारकता का न्याय करने की क्षमता दूसरे की होती है; और अब, आप, जो अक्षरों के जनक हैं, अपने स्नेह के कारण उन्हें एक ऐसी शक्ति का श्रेय देने के लिए प्रेरित हुए हैं जो वास्तव में उनके पास है। क्योंकि यह आविष्कार उन लोगों के दिमाग में विस्मृति पैदा करेगा जो इसका उपयोग करना सीखते हैं क्योंकि वे अपनी याददाश्त का अभ्यास नहीं करेंगे। लेखन में उनका भरोसा, बाहरी पात्रों द्वारा निर्मित, जो स्वयं का हिस्सा नहीं हैं, उनके भीतर उनकी अपनी स्मृति के उपयोग को हतोत्साहित करेगा। आपने स्मृति का नहीं, याद दिलाने का अमृत आविष्कार किया है; और आप अपने विद्यार्थियों को ज्ञान का दिखावा तो देते हैं लेकिन सच्चा ज्ञान नहीं," क्यों? "क्योंकि वे बिना निर्देश के बहुत सी चीज़ें पढ़ेंगे और इसलिए ऐसा प्रतीत होगा कि वे बहुत सी चीज़ें जानते हैं, जबकि वे अधिकांशतः अज्ञानी हैं और उनका साथ पाना कठिन है, क्योंकि वे बुद्धिमान नहीं हैं बल्कि केवल बुद्धिमान प्रतीत होते हैं।" 5. आधुनिक

विचार

मुझे यह काफी दिलचस्प लगता है और यदि वह बात सुकरात ने कई सदियों पहले कही थी, और फिर आप हमारे तकनीकी युग में आते हैं जहां हमारे पास न केवल मुद्रित शब्द हैं बल्कि अब यह सारी जानकारी है जिसमें हम डूब गए हैं और हम देखते हैं ये सभी चीज़ें हर समय होती हैं और इनमें से 90% हम तुरंत भूल जाते हैं क्योंकि हमने इसे आत्मसात नहीं किया है। यह बस वहां से बाहर तैरने जैसा है। हमने चीजों को स्मृति में समर्पित करने से दूर होकर बहुत कुछ खो दिया है - विशेष रूप से पवित्रशास्त्र के दायरे में और पवित्रशास्त्र के शब्दों और उस प्रकार की चीजों में। इसलिए, मुझे यह आकर्षक लगता है, इसलिए नहीं कि यह वास्तव में उस तर्क का समर्थन करता है जिसे नील्सन इसके साथ

बनाने की कोशिश कर रहा है, बल्कि सिर्फ इसलिए कि यह उन मुद्दों और सवालों का समर्थन करता है जो यह उठाता है।

हैंडआउट के पृष्ठ 16 पर वापस जाएँ। हजारों ब्राह्मणों ने अभी भी अपनी पुस्तकें कंठस्थ कर ली हैं और यह 153,826 शब्द लंबी हैं। हिंदुओं ने अपने वेदों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से प्रसारित किया। प्राचीन ग्रीस में भी यही सच था।

6. इज़राइल और स्मृति और लेखन उद्धरण के पृष्ठ 19 पर उस पर एक अनुच्छेद है। हम उस पर गौर करने में समय नहीं लगाएंगे। लेकिन नील्सन इन सभी उदाहरणों का हवाला देते हैं और फिर वह कहते हैं कि इज़राइल में, धार्मिक ग्रंथों को उसी तरह प्रसारित किया गया था। और निर्वासन के बाद ही उन्हें महान स्थिरता प्राप्त हुई। और वह न्यबर्ग से सहमत हैं कि लेखन की शुरूआत आत्मविश्वास के संकट के कारण हुई थी, और आत्मविश्वास का संकट निर्वासन में जाने के कारण हुआ था। वे सामान खोने जा रहे थे इसलिए उन्हें इसे लिखने की ज़रूरत थी।

वह इस विवाद को दोतरफा तरीके से स्थापित करने का प्रयास करता है, एक नकारात्मक तरीके से इज़राइल में लेखन की इस अधीनस्थ भूमिका को स्थापित करके और दूसरा सकारात्मक रूप से मौखिक प्रसारण के महत्व को स्थापित करके। मैं उस चर्चा के उनके तर्कों पर गौर करने के लिए समय लेना चाहता था, लेकिन उनके अनुसार, इज़राइल के निर्वासन से पहले लेखन मुख्य रूप से केवल व्यावहारिक उद्देश्यों जैसे अनुबंधों, सरकारों, स्मारकों, आधिकारिक रजिस्टर की सूचियों, पत्रों के लिए किया जाता था और इसका उपयोग नहीं किया जाता था। विशुद्ध साहित्यिक प्रयोजनों के लिए। इतिहास की परंपरा, महाकाव्य कथाएँ, लोक किंवदंतियाँ, यहाँ तक कि कानून भी उन्हें मौखिक रूप से सौंपे गए थे। अपने निष्कर्ष में वे कहते हैं, "अत्यधिक सावधानी बरते बिना लेखकों को भविष्यवक्ताओं और कवियों में नहीं गिना जाना चाहिए।" यही परंपरा-इतिहास दृष्टिकोण है।

बी. नीलसन की थीसिस का मूल्यांकन

1. ओटी मौखिक परंपरा उदाहरण: निर्गमन। 10 :1-2

बी. "नीलसन की थीसिस का आकलन।" यह निश्चित रूप से सच है कि प्राचीन इज़राइल में मौखिक परंपरा मौजूद थी, लेकिन हमें नहाने के पानी के साथ बच्चे को बाहर नहीं फेंकना चाहिए। एक डच विद्वान डब्ल्यूएच गिस्पेन ने पुराने नियम में मौखिक परंपरा पर एक मोनोग्राफ लिखा था। उस मोनोग्राफ में, वह पुराने नियम के अट्टाईस विभिन्न ग्रंथों पर चर्चा करता है जो मौखिक परंपरा की बात करते हैं। उनमें से निर्गमन 10:1, 2, व्यवस्थाविवरण 6:20-25, न्यायाधीश 6:13, भजन 44:1-3 और भजन 78 उत्कृष्ट हैं। आइए इनमें से कुछ को देखें। निर्गमन 10:1 और 2, यह विपत्तियों के संदर्भ में है और आप वहां पढ़ते हैं, "यहोवा ने मूसा से कहा, 'फिरौन के पास जाओ क्योंकि मैं ने उसके मन और उसके हाकिमों के मन को कठोर कर दिया है, कि मैं ये चमत्कार कर सकूं' "फिर पद दो में, "ताकि तुम अपने बच्चों और पोते-पोतियों को बता सको कि मैं ने मिस्रियों के साथ कैसा कठोरता से व्यवहार किया, और उनके बीच कैसे अपने चिन्ह दिखाए, कि तुम जान लो कि मैं यहोवा हूँ।" यहाँ प्रभु के उद्देश्य का एक भाग यह था कि माता-पिता ये बातें अपने बच्चों को मौखिक रूप से बताएँगे और उनके बच्चे इसे अपने बच्चों तक पहुँचाएँगे, और ईश्वर ने जो किया उसकी कहानी पीढ़ियों तक प्रसारित होती रहेगी।

2. व्यवस्थाविवरण 6:20-25

व्यवस्थाविवरण 6:20-25, "भविष्य में जब तेरा पुत्र तुझ से पूछे, 'हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझे जो आज्ञा दी है, उसका क्या अर्थ है?' उसे बताएं:" और यहां यह कहानी है कि भगवान ने अपने लोगों के लिए क्या किया है, "हम मिस्र में फिरौन के गुलाम थे, लेकिन प्रभु ने हमें अपने शक्तिशाली हाथ से मिस्र से बाहर निकाला। हमारी आंखों के सामने यहोवा ने मिस्र और फिरौन और उसके सारे घराने पर बड़े और भयानक चिन्ह और चमत्कार भेजे। परन्तु वह हमें वहां से निकाल लाया, और हमें वह देश दिया, जिसके देने का वचन उस ने हमारे पुरखाओं से शपथ खाकर कहा था। यहोवा ने हमें इन सब नियमों का पालन करने

और अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानने की आज्ञा दी, कि हम सदा उन्नति करते रहें, और जीवित बने रहें, जैसा कि आज होता है। और यदि हम अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने इन सब व्यवस्थाओं का पालन करने में चौकसी करें, जैसे उस ने हमें आज्ञा दी है, तो यही हमारा धर्म ठहरेगा।' इसलिए, जब आपके बच्चे पूछें कि इन बातों का क्या मतलब है, तो उन्हें बताएं।

3. भजन 44 और 78

आइये भजन 44:1-3 की ओर चलें, “हे परमेश्वर, हम ने अपने कानों से सुना है; हमारे बाप-दादों ने हम से कहा है, कि तुम ने उनके दिनों में, अर्थात् बहुत समय पहले क्या किया था। तू ने अपने हाथ से अन्यजातियोंको निकाल दिया, और हमारे पुरखाओंको बसाया; तू ने देश देश के लोगों को कुचल डाला, और हमारे पुरखाओं को फलने-फूलने दिया। न तो उन्होंने अपनी तलवार के बल पर देश जीता, और न उनकी भुजाओं ने उन्हें विजय दिलाई; वह तेरा दाहिना हाथ, तेरी भुजा, और तेरे चेहरे का नूर था, क्योंकि तू उनसे प्रेम करता था।”

फिर भजन 78, आइए श्लोक 1 से शुरू करें, “हे मेरी प्रजा, मेरी शिक्षा सुनो; मेरे मुख की बातें सुनो। मैं दृष्टान्तों में अपना मुंह खोलूंगा, मैं गुप्त बातें, वरन प्राचीनकाल की बातें कहूंगा। जो कुछ हमने सुना और जाना है, जो हमारे बाप-दादों ने हमें बताया है। हम उन्हें उनके बच्चों से नहीं छिपाएंगे; हम अगली पीढ़ी को प्रभु के प्रशंसनीय कार्यों, उनकी शक्ति और उनके द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में बताएंगे” इत्यादि। श्लोक 6, “ताकि अगली पीढ़ी उन्हें जान सके, यहाँ तक कि उनके बच्चे भी जो अभी पैदा होने वाले हैं, और वे बदले में अपने बच्चों को बताएँगे। तब वे परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे, और उसके कामों को न भूलेंगे, वरन उसकी आज्ञाओं को मानेंगे।”

4. सारांश

इसलिए, पुराने नियम के काल में काम करने वाली मौखिक परंपरा के स्पष्ट संदर्भ हैं, लेकिन हमें जो नोटिस करना चाहिए वह यह है कि, यह मौखिक प्रसारण परिवार के दायरे

में एक *सिट्ज़ इम लेबेन में* पाया जाता है। जीवन में इसकी स्थिति क्या है? यह पिता बच्चों को बता रहे हैं, बच्चे अपने बच्चों को बता रहे हैं। जो व्यक्ति अपनी परंपरा को आगे बढ़ाते थे वे अपने बच्चों के पिता थे। अन्य क्षेत्रों और स्थानों पर मौजूद पेशेवर चारणों या संकटमोचकों का कोई सबूत नहीं है। दो, भजन 78:6 के शब्दों में इसका उद्देश्य है कि आने वाली पीढ़ी परमेश्वर के कार्यों को जान सके। तीन, चली आ रही परंपरा में कम से कम वह शामिल है जो हम मोक्षदायी इतिहास के बुनियादी तथ्यों के सारांश के संदर्भों से बता सकते हैं। आप शायद कह सकते हैं कि भगवान ने अपने लोगों के लिए क्या किया है, इसका एक संक्षिप्त सारांश। चौथा, जो मुझे काफी महत्वपूर्ण लगता है, वह परंपरा कभी भी लिखित निर्धारण से अलग नहीं थी।

उदाहरण के लिए, निर्गमन 17:14 में, हम यहां मोज़ेक पर वापस आते हैं - यह वह जगह है जहां मिस्र से सिनाई के रास्ते में अमालेकियों द्वारा इज़राइल पर हमला किया जाता है। तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इसे स्मरण रखने योग्य पुस्तक में लिख ले, और यहोशू भी इसे सुने, क्योंकि मैं स्वर्ग के नीचे से अमालेक का स्मरण पूरी रीति से मिटा डालूंगा।” निश्चित रूप से, इसे बच्चों के साथ बताया जा सकता है लेकिन इसे लिखा भी गया ताकि परंपरा लिखित निर्धारण से अलग न हो। अधिकांशतः इज़राइल के बाहर भी यही स्थिति थी, यहाँ तक कि उन देशों में भी जिनका उल्लेख नीलसन ने किया था, मिस्र और बेबीलोन में, और कुरान में भी। आप देख सकते हैं कि नीलसन जिन उदाहरणों का उपयोग करता है, वे वास्तव में उसकी बात को स्थापित नहीं करते हैं। क्योंकि प्राचीन मेसोपोटामिया में सीखी गई वे किंवदंतियाँ कंठस्थ पाठ थे; कुरान एक पाठ था जिसे याद किया गया और आगे बढ़ाया गया। तो, हाँ, एक मौखिक परंपरा थी लेकिन मौखिक परंपरा पाठ के लिखित निर्धारण के अलावा या उसके उदाहरणों में भी संचालित नहीं होती है। मौखिक पाठ लिखित मूल का अनुसरण करता है।

5. लिखित या मौखिक कानून संहिता पाँच, मुझे नहीं लगता कि इस बात से इनकार किया जा सकता है कि इज़राइल के पास शुरुआती समय में लिखित कानून थे। वह यह तर्क देने

की कोशिश करता है कि कानून भी मौखिक रूप से पारित किए गए थे। लिखित रूप में ऐसे कई कानून कोड हैं जो मध्य पूर्व में पाए गए हैं जो मूसा के समय से बहुत पहले के हैं। उदाहरण के लिए, हम्मुराबी कोड और लिपित-ईशतर कोड। वे सभी मूसा से भी पहले के समय के हैं और सभी मिट्टी की पट्टियों पर लिखित रूप में हैं।

6. लिखित इतिहास -- संख्या 33:2 और अंत में, इसमें लिखित इतिहास का भी स्पष्ट उल्लेख है। संख्या 33:2 मूसा द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा के रिकॉर्ड के बारे में बताता है। संख्या 21:14 प्रभु के युद्धों की पुस्तक की बात करता है, जिसे पुस्तक या स्कॉल कहा जाता है। यह एक लिखित स्रोत रहा होगा। फिर भी नीलसन का कहना है कि सामरिया के पतन के समय तक यह एक काव्य रचना के रूप में केवल मौखिक रूप में मौजूद था। 1 राजा 11:41 में वह पुस्तक जिसमें सुलैमान के इतिहास का उल्लेख है। प्रथम राजा 14:19 और 29 में उस पुस्तक का उल्लेख है जो यहूदा के राजाओं का विवरण देती है।

7. भविष्यवक्ताओं के ग्रंथ लिखना: 1 और 2 इतिहास इसके अलावा, भविष्यवक्ताओं के लेखों का उल्लेख है। यहां हमारी चिंता मुख्य रूप से यह है कि भविष्यवक्ता कौन थे। क्या भविष्यवक्ता लेखक थे? 1 इतिहास 29:29 को देखें, "जहां तक राजा दाऊद के शासनकाल की घटनाओं की बात है, आरंभ से अंत तक, वे शमूएल द्रष्टा के अभिलेखों, नातान भविष्यवक्ता के अभिलेखों और गाद द्रष्टा के अभिलेखों सहित, में लिखी गई हैं।" उसके शासनकाल और शक्ति का विवरण, और उन परिस्थितियों का विवरण जिन्होंने उसे और इस्राएल और अन्य सभी देशों के राज्यों को घेर लिया।" यह काफी व्यापक लगता है। यह कहता है कि ये इन भविष्यवक्ताओं शमूएल, नाथन और गाद द्वारा लिखे गए थे। फिर 2 इतिहास 12:15 में, "रहूबियाम के शासनकाल की शुरुआत से अंत तक की घटनाएँ क्या शेमिया भविष्यवक्ता और इदो ददर्शी के अभिलेखों में नहीं लिखी गई हैं जो वंशावली से संबंधित हैं?" और फिर इदो द्रष्टा के तीन और संदर्भ हैं। दिलचस्प बात यह है कि 2 इतिहास 32:32 यशायाह को संदर्भित करता है। आइए उस पर नज़र डालें, "हिजकिय्याह के शासन

की अन्य घटनाएँ और उसकी भक्ति के कार्य यहूदा और इस्राएल के राजाओं की पुस्तकों में आमोज़ के पुत्र भविष्यवक्ता यशायाह के दर्शन में लिखे गए हैं।"

तो मुझे ऐसा लगता है कि भले ही यह एक दिलचस्प विचार है और भले ही नीलसन ने स्मृति के लिए प्रतिबद्ध भारी मात्रा में सामग्री के ऐसे कई उदाहरणों की अपील की है जो मौखिक रूप में प्रसारित किए गए थे, इससे यह मामला नहीं बनता है कि मौखिक परंपरा अस्तित्व में थी एक लिखित निर्धारण के अलावा. इसलिए मुझे नहीं लगता कि उन्होंने अपनी बात स्थापित की है।

8. पुनश्च. 77 - मौखिक परंपरा का उदाहरण मैं यहां यह सम्मिलित कर सकता हूं कि यहां कुछ स्थान हैं जहां प्राचीन इज़राइल में मौखिक परंपरा के साक्ष्य पुराने नियम की लिखित सामग्री के पूरक हैं। और इससे मेरा तात्पर्य यह है कि यदि आप भजन 77 को देखें, तो यह मिस्र से इस्राएल की मुक्ति के बारे में बात करता है। श्लोक 15 पर जाएँ, "तू ने अपने पराक्रमी हाथ से अपने लोगों, याकूब और यूसुफ के वंशजों को छुड़ाया। हे परमेश्वर, जल ने तुझे देखा, और जल ने तुझे देखा, और क्रोधित हुआ; बहुत गहराइयाँ हिल गईं। बादलों ने जल बरसाया, आकाश गड़गड़ाहट से गूँज उठा; तुम्हारे तीर आगे-पीछे चमकते रहे। बवंडर में तेरी गड़गड़ाहट सुनाई दी, तेरी बिजली ने जगत को प्रकाशित कर दिया; पृथ्वी कांप उठी और कांप उठी। तुम्हारा मार्ग समुद्र से होकर जाता था, तुम्हारा मार्ग विशाल जल से होकर जाता था, यद्यपि तुम्हारे पदचिन्ह दिखाई नहीं देते थे। तू ने मूसा और हारून के द्वारा अपनी प्रजा की अगुवाई झुण्ड की नाई की। लाल सागर के उस सन्दर्भ में; इसमें यहाँ "गरज और बिजली" का उल्लेख है। यदि आप निर्गमन 14 के पाठ पर पीछे जाएँ, तो वहाँ गड़गड़ाहट और बिजली या तूफ़ान की घटनाओं का कोई संदर्भ नहीं है। वह कहां से आया? यह संभवतः भजनकारों की मौखिक परंपरा से आया है, जो जानते हैं कि उस समय जो कुछ हुआ था उसके विवरण में इसका उपयोग किया जा रहा है।

9. यहोशू 24 मौखिक परंपरा के एक उदाहरण के रूप में यहोशू 24:2 में यहोशू के

जीवन के अंत में एक अनुबंध नवीनीकरण समारोह है जो उसने शकेम में आयोजित किया था। और यहोशू 24:2 में कहता है, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, कहता है: 'बहुत समय पहले तुम्हारे पूर्वज, इब्राहीम और नाहोर के पिता तेरह सहित, नदी के पार रहते थे और अन्य देवताओं की पूजा करते थे।'" यहोशू कहाँ है मिलता है कि? उत्पत्ति में तेरह और नाहोर द्वारा अन्य देवताओं की पूजा करने का कोई संदर्भ नहीं है। संभवतः मौखिक जानकारी रही होगी जो पीढ़ियों से चली आ रही थी।

10. 2 टिम. 3:8 मौखिक परंपरा के उदाहरण के रूप में

2 तीमुथियुस 3:8 में, आपको मिस्र में पलायन के समय के जादूगरों, जैनेस और जाम्ब्रेस का संदर्भ मिलता है। वे नाम कहाँ से आते हैं? निर्गमन की पुस्तक में जादूगरों के नाम का कोई उल्लेख नहीं है। हो सकता है कि यह मौखिक परंपरा से आया हो। पुराने नियम के बाद के बिंदुओं में इस तरह की जानकारी के बहुत सारे उदाहरण हैं नए नियम में वह शामिल है जो पुराने नियम की विहित पुस्तकों की पूर्व लिखित सामग्री में नहीं है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि हमें उस भूमिका के बारे में रक्षात्मक होने की ज़रूरत है जो मौखिक परंपरा ने प्राचीन इज़राइल में निभाई होगी। यह शायद बहुत प्रमुख बात रही होगी। लेकिन मुद्दा यह है कि यह उस तरह से काम नहीं करता जिस तरह से नील्सन यह कहने की कोशिश कर रहा है कि इसने काम किया - कि यह सदियों से भविष्यसूचक सामग्री के इन महान निकायों के प्रसारण का साधन था जब तक कि अंततः यह एक लिखित निर्धारण पर नहीं आया।

11. निष्कर्ष तो, निष्कर्ष में: एक, भले ही मौखिक परंपरा प्राचीन इज़राइल में मौजूद थी, लेकिन इसने वह भूमिका नहीं निभाई जो नील्सन ने बताई है। और दो, मुझे नहीं लगता कि इस बात का कोई ठोस सबूत है कि निर्वासन से पहले लेखन का उपयोग साहित्यिक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता था। यह दुनिया के प्राचीन क्षेत्रों के साथ-साथ पुराने नियम के बारे में हम जो कुछ भी जानते हैं, उसके विपरीत है। उदाहरण के लिए, एबला में हाल ही में

बाइबिल से इतर पुरातात्विक खोजों ने इब्राहीम से पहले के समय में "साहित्यिक उद्देश्यों" के लिए लेखन के उपयोग की स्थापना की। आप एबला में लगभग 2300 ईसा पूर्व में वापस जा रहे हैं, और उन ग्रंथों के बारे में जो कहा गया है, उसके अनुसार, भले ही ग्रंथ स्वयं प्रकाशित नहीं हुए हैं, वहां बहुत सारी महाकाव्य प्रकार की कहानी सामग्री मौजूद है। और तीन, इतिहासकार द्वारा उल्लिखित स्रोतों से संकेत मिलता है कि भविष्यवक्ताओं ने लिखा था। इतिहासकार ने विशेष रूप से कई भविष्यवक्ताओं का नाम लिया है जिन्होंने लिखा था। अब केवल यशायाह का उल्लेख किया गया था जो विहित भविष्यवक्ताओं के लेखकों में से एक था। दूसरे की सामग्री संरक्षित नहीं थी, लेकिन वे भविष्यवक्ता थे जिन्होंने लिखा था। यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण नहीं है कि भविष्यवक्ता लेखक नहीं थे। किसी को यिर्मयाह अध्याय 36.IX में भविष्यवक्ता यिर्मयाह की लेखन प्रक्रिया के विस्तृत विवरण को

नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। भविष्यवाणी लेखों की व्याख्या के लिए कुछ व्याख्यात्मक सिद्धांत

यह हमें रोमन अंक IX, "भविष्यवाणी लेखन की व्याख्या के लिए कुछ व्याख्यात्मक सिद्धांत," और ए, "भविष्यवाणी भविष्यवाणी की कुछ सामान्य विशेषताएं" तक लाता है। मैं पहले उन सामान्य विशेषताओं को देखना चाहता हूं, और फिर बी के अंतर्गत "व्याख्या के लिए कुछ दिशानिर्देश।"

1. पूर्वानुमानित भविष्यवाणी का उद्देश्य तो पहले पूर्वानुमानित भविष्यवाणी की कुछ सामान्य विशेषताएँ। 1. "भविष्यवाणी भविष्यवाणी का उद्देश्य।" आप कह सकते हैं कि हमने पहले ही बाइबिल की भविष्यवाणी के दो पहलुओं का उल्लेख किया है, जिन्हें कभी-कभी "आगे बताना" और "भविष्यवाणी" शब्दों के साथ लेबल किया गया है। आगे बताने से मेरा तात्पर्य उपदेश, फटकार, सुधार और निर्देश से है। भविष्यवाणी से मेरा तात्पर्य भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी से है, कुछ तत्काल भविष्य में और कुछ सुदूर भविष्य में। मुझे लगता है कि आमतौर पर किसी भविष्यवाणी संदेश के भविष्य बताने वाले

पहलू को भविष्यवाणी पहलू के पक्ष में इस तरह से उपेक्षित कर दिया जाता है कि अक्सर भविष्यवाणी संदेश का मूल उद्देश्य अस्पष्ट हो जाता है।

हम यहां पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के उद्देश्य के बारे में बात करने जा रहे हैं। क्या है वह? मुझे लगता है कि इसका उद्देश्य उन लोगों की भूख को संतुष्ट करना नहीं है जो भविष्य के बारे में उत्सुक हैं और भविष्यसूचक भविष्यवाणी का उपयोग आज उस तरह से नहीं किया जाना चाहिए। भविष्यवाणी में भविष्य कहनेवाला तत्व - जब आप भविष्यवक्ताओं के बारे में बात करते हैं तो ज्यादातर लोग यही सोचते हैं - को कभी भी इसके पारमार्थिक कार्य, यानी इसकी निर्देशात्मक प्रकृति से अलग या पृथक नहीं किया जाना चाहिए। भविष्यवाणी संदेश का उद्देश्य उपदेश देना, फटकारना, चिंतन करना, प्रोत्साहित करना और पश्चाताप का आह्वान करना है।

अपने उद्धरण पृष्ठ 20 को देखें। मुझे लगता है कि यहां 3 अलग-अलग लेखक हैं। सबसे पहले विलियम डायरनेस से है और ध्यान दें कि उन्होंने क्या कहा, "यह कोई संयोग नहीं है कि भविष्यवाणी पर हैल लिंगसे की पहली पुस्तक [द लेट ग्रेट प्लैनेट ई अर्थ, 25 साल पहले एक बेहद लोकप्रिय किताब] का प्रकाशन ज्योतिष के सबसे बड़े पुनरुद्धार के साथ हुआ था।" तीन सौ साल. (यह देखना दिलचस्प है कि उनकी किताब किताबों की दुकानों में ज्योतिष पुस्तिकाओं के साथ कितनी बार दिखाई देती है।) मनुष्य भविष्यवाणी में उतनी ही आसानी से बच सकता है जितना कि ज्योतिष में। किसी भी स्थिति में वह एक मोहरा है और इस तरह नैतिक जिम्मेदारी से मुक्त हो गया है। यह किताब के अंतिम पन्नों से लिंगसे के उद्देश्यों का कोई हिस्सा नहीं था... लेकिन, हमें सावधान रहना चाहिए कि मसीह की वापसी की हमारी लालसा जिम्मेदारी से बचने की हमारी इच्छा से प्रेरित न हो।"

और फिर रॉस अगले पैराग्राफ में, "यदि भविष्यवाणियां वास्तव में एक बुनियादी नैतिक चिंता से प्रेरित हो रही हैं, जैसा कि मुझे विश्वास है कि एक विस्तृत अध्ययन प्रदर्शित करेगा, तो यह हमारी प्रतिक्रिया है जो सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। अगर हमें भविष्यवाणियों की व्याख्या में विशेषज्ञ बनना चाहिए, अगर हमें भविष्य की चीजों का सारा ज्ञान है, हां, भले ही हम यीशु के आने का दिन और समय जानते हों, लेकिन अगर हमारा जीवन इस उम्मीद से

नहीं बदलता है कि ईश्वर क्या करेगा, तो हमने भविष्यसूचक अध्ययन को पार्लर के खेल में बदल दिया है और हमारा ज्ञान आशीर्वाद के बजाय अभिशाप बन गया है।

फिर अंत में ड्वाइट विल्सन अब यहां कुछ ऐसा रखते हैं जो अक्सर, मुझे लगता है, पूर्वसहस्राब्दी युगांतशास्त्रीय विचार के बारे में एक कमजोर विशेषता रही है। मैं अपनी पहचान प्रीमिलेनियल के रूप में बताऊंगा, लेकिन प्रीमिलेनियलवादियों के लिए भविष्यवाणियों की व्याख्या का बहुत दुरुपयोग हुआ है। वह कहते हैं, "प्रीमिलिनेरियन का इतिहास, गलत अटकलों से भरा पड़ा है, जिसने उनकी विश्वसनीयता को कम कर दिया है। कभी-कभी झूठी पहचान हठधर्मिता से की गई है, कभी-कभी केवल संभावनाओं या संभावनाओं के रूप में, लेकिन परिणाम हमेशा एक ही रहा है - पूर्वसहस्राब्दीवाद के प्रति बढ़ा हुआ संदेह। पूर्वसहस्राब्दी की प्रस्तुति का सामना करने वाले व्यक्तियों को भविष्यसूचक व्याख्या के समग्र अतीत के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है, जिसमें निम्नलिखित घटनाएं शामिल हैं। वर्तमान संकट को आमतौर पर अंत के संकेत के रूप में पहचाना जाता है, चाहे वह रुसो-जापानी युद्ध, प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध, फिलिस्तीन युद्ध, स्वेज संकट, जून युद्ध और योम किप्पुर हो। युद्ध। रोमन साम्राज्य के पुनरुद्धार को मुसोलिनी के साम्राज्य, राष्ट्र संघ, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय रक्षा समुदाय, आम बाज़ार और नाटो के रूप में पहचाना गया है। एंटीक्रिस्ट पर अटकलों में नेपोलियन, मुसोलिनी, हिटलर और हेनरी किसिंजर शामिल थे। वर्तमान घटनाओं के पुराने नियम में कुछ भविष्यसूचक खंडों की पूर्ति के साथ इस तरह की पहचान का एक इतिहास है, जिन्होंने समय-समय पर खुद को गलत साबित किया है। कुछ लोग उस तरह की चीज़ों में फंस जाते हैं, खो जाते हैं और उससे मोहित हो जाते हैं।

2. पवित्रशास्त्र में पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के कार्य

जहां तक पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के कार्य का प्रश्न है, आइए बाइबल की ओर ही मुड़ें, इसका उद्देश्य क्या है? 1 देखो यूहन्ना 3:3. पद 2 में मसीह के दूसरे आगमन के बारे में बोलने के बाद, "हम जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो हम उसके समान होंगे क्योंकि वह

जैसा है वैसा ही देखेंगे। जो कोई उस पर यह आशा रखता है वह अपने आप को वैसे ही शुद्ध करता है जैसे वह पवित्र है।” दूसरे शब्दों में, मसीह का दूसरा आगमन केवल अटकलों के लिए नहीं है। इसका असर अब आपके जीने के तरीके पर पड़ेगा।

1 पतरस 4:7 को भी देखें, “सभी चीजों का अंत निकट है। इसलिए स्पष्ट मन और संयमित रहो ताकि तुम प्रार्थना कर सको क्योंकि मसीह वापस आने वाला है।” यह अब आपके जीने के तरीके को प्रभावित करने के लिए है, “सबसे बढ़कर, एक-दूसरे से गहराई से प्यार करें क्योंकि प्यार कई पापों को ढक देता है। बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का आतिथ्य सत्कार करो। प्रत्येक व्यक्ति को अपने पास मौजूद किसी भी उपहार का उपयोग विभिन्न रूपों में ईश्वर की कृपा के वफादार प्रबंधक के रूप में दूसरों की सेवा करने के लिए करना चाहिए। यदि कोई बोले तो वह ऐसे बोलेगा जैसे वह परमेश्वर के वचन बोल रहा हो। यदि कोई सेवा करता है तो उसे शक्ति के साथ करना चाहिए।” क्यों? “क्योंकि सभी चीजों का अंत निकट है, वह आ रहा है।”

2 पतरस 3:11 को देखें। श्लोक 10 में उन्होंने आकाश के गायब होने, आग से नष्ट होने की बात कही, पृथ्वी और उसमें सब कुछ उजाड़ पड़ा है। “चूँकि इस तरह से सब कुछ नष्ट हो जाएगा, तो तुम्हें किस तरह का इंसान बनना चाहिए? आप सभी को परमेश्वर के दिन की प्रतीक्षा करते हुए पवित्र और धार्मिक जीवन जीना चाहिए। श्लोक 14 को देखें, “तो फिर, प्रिय मित्रों, चूँकि आप इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, इसलिए उसके साथ बेदाग, निर्दोष और शांति से रहने का हर संभव प्रयास करें।” 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-11, “अब प्रिय भाइयों, समय और तारीखों के विषय में हमें तुम्हें लिखने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि प्रभु रात को चोर के समान आएगा।” और वह पद 6 में हमारी प्रतिक्रिया के बारे में आगे कहते हैं, “तो फिर, हम औरों के समान न बनें, जो सो रहे हैं, परन्तु सचेत रहें, और आत्म-संयमी रहें।” पद 8 से नीचे, “आइए हम विश्वास और प्रेम को कवच के रूप में, और उद्धार की आशा को टोप के रूप में धारण करके आत्मसंयमी बनें।” श्लोक 11, “एक दूसरे को प्रोत्साहित करो और एक दूसरे का विकास करो, जैसा कि वास्तव में तुम कर रहे हो।”

3. भविष्यसूचक भविष्यवाणी का उद्देश्य

हम उस तरह के एक पाठ को देखते हैं जहां भविष्यवाणी में पूर्वानुमानित तत्व भगवान के लोगों को यह दिखाने के लिए दिया जाता है कि उनका मुक्ति का कार्यक्रम उनके दिव्य उद्देश्य, योजना और कार्यक्रम के अनुसार आगे बढ़ रहा है। सभी लोगों और राष्ट्रों का इतिहास ऐतिहासिक प्रक्रिया के इस संप्रभु आदेश के अधीन है क्योंकि यह उसके उद्देश्यों के माध्यम से आगे बढ़ता है। उस तथ्य का उद्देश्य उस संदेश को सुनने वालों के जीवन के तरीके को प्रभावित करना है। भविष्यवक्ताओं ने अपने समय में, साथ ही उन लोगों के समय में भी, जो उस समय के बाद लंबे समय तक जीवित रहे, जिसमें उन्होंने उपदेश दिया, परमेश्वर के लोगों के बीच पवित्र जीवन और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता को प्रेरित करने के लिए बात की। हमें उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए क्योंकि मेरे लिए वह संदेश के आरंभिक वितरण के कारण का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। हां, भगवान के पास एक उद्देश्य और एक योजना है, ऐसी चीजें हैं जो भविष्य में हमारे साथ घटित होने वाली हैं। लेकिन इसे उस तरीके को आकार देना चाहिए जिसमें हम अभी रहते हैं। इसलिए भविष्यसूचक संदेश के भविष्यवक्ता पहलू को भविष्यसूचक संदेश के पूर्वकथन पहलू में रुचि के कारण निगल नहीं जाना चाहिए। ठीक है, हमें वहीं रुकना होगा।

रेबेका वोल्ड, जेसिका हंकलर, रूथ चैडविक, कॉनर ब्रिग्स
द्वारा लिखित ओलिविया ग्रे, कायला श्वान्के, जोशुआ अल्वेरा (संपादक)
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 13ए,

IX, भविष्यसूचक लेखों की व्याख्या के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत

ए. 1. भविष्यसूचक लेखों की व्याख्या के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत

पिछले सप्ताह हम रोमन अंक IX, "भविष्यवाणी लेखन की व्याख्या के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत" पर अपनी चर्चा शुरू कर रहे थे। हमने ए. 1 पर चर्चा की थी जो है: "भविष्यवाणी भविष्यवाणी का उद्देश्य।" मुझे लगता है कि यह न केवल उस समय के लिए महत्वपूर्ण है जब भविष्यवक्ताओं ने संदेश की घोषणा की थी बल्कि हमारे लिए भी। भविष्यवाणी का मतलब केवल उस भूख को संतुष्ट करना नहीं है जो लगभग हर किसी के मन में यह जानने के लिए होती है कि भविष्य में क्या होने वाला है। यह कुछ ऐसा है जो इतिहास में ईश्वर के उद्देश्यपूर्ण आंदोलन के संदर्भ में दिया गया है जो अंततः समाप्ति की अवधि की ओर इशारा करता है जब मसीह वापस आता है और इसका हमारे आज जीने के तरीके पर क्या प्रभाव पड़ता है; वह प्राथमिक बात है।

2. भविष्यसूचक भविष्यवाणी और इतिहास लेखन

नंबर 2. "भविष्यवाणी भविष्यवाणी और इतिहास लेखन" है। मुझे लगता है कि पूर्वानुमानित भविष्यवाणी और इतिहास लेखन के बीच संबंधों की प्रकृति के बारे में दो सामान्य लेकिन गलत विचार हैं, और मैं साहित्य की शैलियों के रूप में पूर्वानुमानित भविष्यवाणी और इतिहास लेखन के बारे में बात कर रहा हूँ। वे गलत विचार इसलिए उत्पन्न होते हैं क्योंकि भविष्यवाणी संबंधी प्रवचन और ऐतिहासिक प्रवचन के बीच साहित्यिक रूप में अंतर अक्सर नहीं देखा जाता है। कुछ लोग पूर्वानुमानित भविष्यवाणी को ऐतिहासिक लेखन के एक मनोरम रूप के रूप में देखते हैं और यह आलोचनात्मक विचारधारा का सामान्य दृष्टिकोण है जो वास्तव में यह स्वीकार नहीं करता है कि वास्तविक पूर्वानुमानित भविष्यवाणी जैसी कोई चीज़ होती है, बल्कि इसे एक मनोरम रूप के रूप में देखते हैं। ऐतिहासिक लेखन जो उन घटनाओं के बाद तैयार किया गया जिनका वर्णन किया गया है।

दूसरे शब्दों में, यह घटना के बाद लिखा गया इतिहास है।

एक। भविष्यवाणी इतिहास नहीं है: अधिक गूढ़ चरित्र यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 21 को देखें, तो *बाइबल की व्याख्या* पर अपने खंड में मिकेलसन इस बारे में बात करते हैं और कहते हैं, “लेकिन भविष्यवाणी घटना के बाद लिखा गया इतिहास नहीं है। बाइबल में सामान्य ऐतिहासिक लेखन में भविष्यवाणी के रहस्यमय चरित्र का अभाव है। यह कुछ प्रकार के कालानुक्रमिक पैटर्न में विवरणों के उपचार और बुनियादी घटनाओं के अधीनता की विशेषता है। यह उन भविष्यसूचक आख्यानों के विपरीत है जो भविष्य की वास्तविकताओं से संबंधित हैं। इन वास्तविकताओं को महत्वपूर्ण विवरणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है लेकिन अधीनस्थ विवरण विकसित समय अनुक्रमों या विचार की सुसंगत ट्रेनों में प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। कोई भी व्यक्ति जो हिब्रू भविष्यवाणी के रूप में इतिहास लिख सकता है, उसे पैगंबर होने का दिखावा करने के लिए जो कुछ भी वह जानता था उसका आधा हिस्सा भूलना होगा। लेकिन ऐसी रणनीति की कृत्रिमता निश्चित रूप से दिखाई देगी।”

मुझे लगता है कि मिकेलसन को जो मिल रहा है वह यह है कि यदि आप बाइबिल के ऐतिहासिक प्रवचन और भविष्यसूचक प्रवचन की तुलना करते हैं तो आपको भविष्यवाणी में एक रहस्यमय चरित्र मिलेगा। ऐतिहासिक प्रवचन में आपके पास ये सभी विवरण होते हैं जिन्हें एक क्रमबद्ध समकालिक तरीके से एक साथ रखा जाता है। भविष्यवाणी में आपको सभी विवरण नहीं मिलते, आपको उनमें से कुछ विवरण मिलते हैं। लेकिन आपको पूरी तस्वीर समझने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं है, और भविष्यसूचक प्रवचन और ऐतिहासिक प्रवचन के बीच यही अंतर है। आप देख रहे हैं कि मिकेलसन जो बात कह रहे हैं वह यह है कि भविष्यसूचक प्रवचन का चरित्र ऐतिहासिक प्रवचन के चरित्र से अलग है। इसमें एक निश्चित रहस्यमय चरित्र है। सारी जानकारी वहां नहीं है। इसलिए यह घटना के बाद लिखा गया इतिहास नहीं है, क्योंकि उनका कहना है कि इतिहास को भविष्यवाणी के रूप में लिखने के लिए किसी को जो कुछ भी पता था उसका आधा भूलना होगा।

बी। पी अनुदेशात्मक भविष्यवाणी पहले से लिखा गया इतिहास है

तो यह एक सामान्य ग़लत विचार है जो वहां मौजूद है, लेकिन दूसरा यह है कि पूर्वानुमानित भविष्यवाणी पहले से लिखा गया इतिहास है। अब इससे मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं भविष्यवाणियों की वैधता को चुनौती दे रहा हूं क्योंकि वास्तव में भविष्य में क्या होने वाला है, इसके बारे में बात कर रहा हूं, लेकिन हम प्रवचन के चरित्र को देख रहे हैं। भविष्यसूचक प्रवचन आम तौर पर किसी घटना की उतनी संपूर्ण तस्वीर नहीं देता जितना ऐतिहासिक प्रवचन देता है। ऐतिहासिक प्रवचन में आपके पास सभी विवरण होते हैं और भविष्यसूचक प्रवचन में आपके पास नहीं; इसके बजाय आपको वह रहस्यमय चरित्र मिलता है। वह रहस्यमय चरित्र पूर्णता की पहचान को नकारता नहीं है। जब यह पूरा होने की बात आती है तो वहां इतना कुछ होता है कि जब पहले से कही गई बात घटित होती है तो उसे पहचाना जा सकता है। ऐसा होने पर पूर्ति देखने के लिए आपके पास पर्याप्त जानकारी है। हालाँकि, और यहाँ एक चेतावनी है, पूर्ति ऐसे तरीकों से आ सकती है जिनकी पूरी तरह से कल्पना या प्रत्याशित नहीं है। दूसरे शब्दों में, जब पूर्णता आती है तो उसमें कुछ मोड़ और विशेषताएं आ सकती हैं जो आश्चर्यजनक हों।

सी। उदाहरण यशायाह 9 और मैथ्यू 4 आइए मैं आपको केवल एक उदाहरण देता हूं: यदि आप यशायाह 9 और फिर मैथ्यू 4 को देखते हैं। यशायाह अध्याय 9 के पहले छंद में, आप पढ़ते हैं, "फिर भी उन लोगों के लिए कोई और निराशा नहीं होगी जो अंदर थे तनाव; अतीत में उसने जबुलोन और नप्ताली के देश को नीचा किया, परन्तु भविष्य में वह यरदन के पार समुद्र के मार्ग से अन्यजातियों के गलील को प्रतिष्ठित करेगा। अन्धकार में चलनेवालों ने बड़ी ज्योति देखी है। मृत्यु की छाया की भूमि में रहने वालों पर, एक प्रकाश का उदय हुआ है।" अब एक भविष्यवाणी कथन है. अब मैट 4:12-16 की ओर मुड़ें जहाँ आप पढ़ते हैं, "जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया गया है, तो वह गलील लौट आया। नाज़रेथ को छोड़कर, वह कफरनहूम में जाकर रहने लगा, जो कि जबुलोन और नप्ताली के क्षेत्र में झील के किनारे था, ताकि भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा कही गई

बात को पूरा कर सके।” फिर आपको यशायाह 9:1 और 4 से एक उद्धरण मिलता है।
 "ज़ेबुलोन के देश में, नफ्ताली के देश में, समुद्र के किनारे, जॉर्डन के किनारे, अन्यजातियों के गलील में, अंधेरे में रहने वाले लोगों ने एक देखा है महान प्रकाश, मृत्यु की छाया की भूमि में रहने वालों पर, एक प्रकाश का उदय हुआ है।" उस समय से यीशु ने उपदेश देना शुरू किया, 'पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।'"

अब यदि आप उस यशायाह 9 पर वापस जाते हैं तो यह यशायाह के उस खंड के संदर्भ में प्रकट होता है जिसे अक्सर "इमैनुएल की पुस्तक" कहा जाता है। यह अध्याय 7 से शुरू होता है और अध्याय 12 तक चलता है। यशायाह अध्याय 7 से 12 तक यशायाह जो संदेश ला रहा था उसका ऐतिहासिक संदर्भ यह है कि उस समय यहूदा के राजा, आहाज को गठबंधन के हमले से खतरा था। उत्तरी साम्राज्य और दमिश्क के रेजिन के राजा। और अध्याय 7 में उस धमकी को ध्यान में रखते हुए, यशायाह बाहर जाता है और आहाज का सामना करता है और कहता है, "इन लोगों से मत डरो। यह वास्तव में होने वाला नहीं है। प्रभु पर भरोसा रखो।" आहाज को प्रभु पर भरोसा रखने में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसके बजाय वह अश्शूरियों के साथ गठबंधन बनाता है। और यदि आप इस बारे में सोचते हैं कि आपके पास यहूदा के उत्तर में उत्तरी साम्राज्य है, उत्तर में थोड़ा आगे दमिश्क है, लेकिन उत्तर और पश्चिम में और उनके पीछे असीरिया है। इसलिए, वह उनके पीछे-पीछे जाता है और अश्शूर के साथ गठबंधन बनाता है, जो सामरिया के पेकह और दमिश्क के रेजिन के खतरे से सुरक्षा प्रदान करता है।

बेशक, असीरिया के साथ गठबंधन अंततः असीरिया को नीचे लाएगा, दमिश्क लेगा, फिर सामरिया लेगा और यहूदा को धमकी देगा। इससे इस्राएल और यहूदा दोनों के लिए बहुत सारी समस्याएँ पैदा हुईं। यशायाह के अध्याय 9 में, गलील सागर के उत्तर के क्षेत्र के लिए एक बहुत ही अंधकारमय चित्र खींचा गया है। यह ठीक वही क्षेत्र है जिसे अश्शूर के राजा तिग्लथ-पाइल्सर ने तबाह कर दिया था। यदि आप 2 राजा 15:29 को देखें तो आपको तिग्लथ-पिलेसेर की प्रगति का वर्णन मिलता है और यह कहता है, "इस्राएल के राजा पेकह के समय में," जो आहाज को धमकी देने वाला था, "अश्शूर का राजा तिग्लथ-पिलेसेर आया

और इय्योन, आबेलबेतमाका, यानोह, केदेश, और हासोर को ले लिया। उसने गिलाद और गलील को, नप्ताली की सारी भूमि समेत, ले लिया।” यह वही क्षेत्र है जिसका वर्णन यशायाह 9:1 में कर रहा है। "और लोगों को अशशूर को निर्वासित कर दिया।"

तो, गलील सागर के उत्तर में उस क्षेत्र की एक अंधेरी तस्वीर खींची गई है, लेकिन यशायाह फिर अध्याय 9 में कहता है, भविष्य में किसी समय उसी क्षेत्र में कि अंधकार एक महान प्रकाश से दूर हो जाएगा। यशायाह 9 में आप आश्चर्यचकित हो सकते हैं, वह महान प्रकाश क्या है?

पद 2, "जबूलोन और नप्ताली के उस देश में जो लोग अन्धकार में चल रहे थे, उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; मृत्यु की छाया की भूमि में रहने वालों पर एक प्रकाश का उदय हुआ है।" मैं कह सकता हूँ कि इस पूरे परिच्छेद में, आप हिब्रू मौखिक काल के उपयोग से संबंधित एक व्याख्यात्मक मुद्दे पर पहुँचेंगे। सभी काल पूर्ण काल हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप नीचे जाएँ, जहाँ यह श्लोक 6 में आगे प्रकट होता है, जहाँ "हमारे लिए एक बच्चा पैदा हुआ है," एक बहुत ही परिचित श्लोक, "हमें एक बेटा दिया गया है।" वे पूर्ण काल हैं. "हमारे लिए एक बच्चा पैदा हुआ है, एक बेटा दिया गया है।" लेकिन यह बिल्कुल सही भविष्यवाणी है। इसे वास्तव में भविष्य के रूप में अनुवादित किया जाना चाहिए और इस मार्ग के माध्यम से सभी को वास्तव में भविष्य के रूप में अनुवादित किया जाना चाहिए। तो उस महान प्रकाश को, जो उस क्षेत्र में अंधेरे को दूर करना था, आहाज के अशशूरियों के साथ गठबंधन के बाद अशशूर के राजा द्वारा आक्रमण किया गया था, लेकिन यीशु का गैलीलियन मंत्रालय उसी क्षेत्र में केंद्रित है।

लेकिन आप देखिए, यशायाह की भविष्यवाणी में सभी विवरण नहीं हैं। यह सभी विवरण नहीं भरता है. जब मसीह आता है तो आप कह सकते हैं, हां, यह फिट बैठता है, यह लंबी दूरी के भविष्य का एक अद्भुत दृश्य है, और मसीह के पहले आगमन की एक तस्वीर है। लेकिन आप देखते हैं कि "रहस्यमय चरित्र", आप कह सकते हैं, यह भविष्यसूचक प्रवचन की विशेषता है। आमतौर पर भविष्यवाणियों और उनके पूरा होने से पहले पूर्वानुमानित कथनों का एक रहस्यमय चरित्र होता है। यही बात भविष्यसूचक प्रवचन को

ऐतिहासिक प्रवचन से अलग करती है। इसलिए पूर्वानुमानित भविष्यवाणी पहले से लिखा गया इतिहास नहीं है।

लेकिन वहां आप भविष्यसूचक स्वर में ऐतिहासिक प्रवचन से नहीं निपट रहे हैं। यह पूर्वानुमानित भविष्यवाणी नहीं है। मेरी टिप्पणियाँ पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के बारे में हैं। यशायाह के अध्याय 36-39 जैसे खंड हैं जहां आपके पास ऐतिहासिक प्रवचन है जो वास्तव में राजाओं की तरह प्रवचन है। यिर्मयाह के अनुभागों में आपके पास एक प्रवचन है जो राजाओं की तरह है।

3. भविष्यसूचक भविष्यवाणी का प्रगतिशील चरित्र

ठीक है, आइए 3 पर चलते हैं, "भविष्यवाणी भविष्यवाणी का प्रगतिशील चरित्र।" मैं सोचता हूँ कि जैसे सामान्य तौर पर रहस्योद्घाटन के साथ, वैसे ही पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के साथ, आपके पास धीरे-धीरे खुलासा और विकास होता है। इसलिए, रहस्योद्घाटन की प्रगति के साथ, कुछ भविष्यसूचक विषयों पर आपको अधिक जानकारी मिलती है, अधिक विवरण भरे जाते हैं। भविष्य कहनेवाला भविष्यवाणी का वह प्रगतिशील चरित्र हमें और अधिक जानकारी देता है। लेकिन, सामग्री की अधिक मात्रा से भविष्यवाणी की अस्पष्टता और रहस्यमय चरित्र पूरी तरह से समाप्त नहीं होता है।

इसका एक उदाहरण मसीह-विरोधी हो सकता है। मसीह-विरोधी की छवि धीरे-धीरे विकसित होती है। जैसे-जैसे आप इस व्यक्ति के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं, तस्वीर पूरी होती जाती है, लेकिन उस हद तक नहीं कि आपके पास पूरी तस्वीर हो। इस प्रकार, मुझे लगता है, व्याख्या के इतिहास में आपकी ये सभी गलत पहचानें हैं। दानिय्येल 7 में, एक छोटे से सींग के बारे में बात की गई है। राज्यों के उत्तराधिकार के संदर्भ में, उन्हें 4 जानवरों के रूप में चित्रित किया गया है, और वह छोटा सींग संतों के साथ युद्ध करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह ईश्वर और ईश्वर के लोगों के विरोधी नेता का प्रतिनिधि है। लेकिन आपको इसका कोई वास्तविक स्पष्ट विस्तृत विवरण नहीं मिलता कि यह व्यक्ति कौन है। डैनियल 9 में, आपको थोड़ी अधिक जानकारी मिलती है, जहां उजाड़ने की घृणित वस्तु का

संदर्भ है, और अध्याय 12 में, थोड़ी अधिक जानकारी मिलती है। लेकिन, फिर जब आप नए नियम में जाते हैं, 2 थिस्सलुनीकियों 2:4 में, आपको एक पापी व्यक्ति का संदर्भ मिलता है, जो खुद को भगवान के रूप में दर्शाता है और मंदिर में बैठा है। प्रकाशितवाक्य 13, एक जानवर है जो डैनियल 7 में छोटे सींग के समान प्रतीत होता है, इसलिए आप बाइबिल के अंशों को जोड़ना शुरू करते हैं। आपको अधिक से अधिक जानकारी मिलती है, लेकिन सभी रहस्यमय चरित्रों को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं। पूर्वानुमानित भविष्यवाणी का प्रगतिशील चरित्र इसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। लेकिन, यह पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के रहस्यमय चरित्र को पूरी तरह से खत्म नहीं करता है।

4. पूर्वानुमानित भविष्यवाणी का अपना विशिष्ट समय परिप्रेक्ष्य होता है

संख्या 4., "भविष्यवाणी भविष्यवाणी का अपना विशिष्ट समय परिप्रेक्ष्य होता है।" अधिकांश भाग में पूर्वानुमानित भविष्यवाणियों में सटीक कालानुक्रमिक जानकारी पर आपका बहुत अधिक जोर नहीं होता है। कुछ अपवाद हैं, लेकिन सामान्य तौर पर आप ऐसा नहीं करते। इसके अलावा, अक्सर ऐसा लगता है कि कई घटनाओं को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है कि उन्हें एक छोटी सी अवधि में समेट दिया जाता है। कुछ लोग इसे भविष्यसूचक समय परिप्रेक्ष्य के रूप में बोलते हैं। लुईस बर्खोफ़ के *बाइबिल व्याख्या के सिद्धांतों* के अंतर्गत, पृष्ठ 21 पर अपने उद्धरण देखें। वह कहते हैं, "भविष्यवक्ताओं में समय का तत्व नगण्य मात्रा में है। हालाँकि समय के पदनाम पूरी तरह से आकर्षक नहीं हैं, उनकी संख्या असाधारण रूप से कम है। भविष्यवक्ताओं ने महान घटनाओं को समय के एक संक्षिप्त अंतराल में समेट दिया, महत्वपूर्ण गतिविधियों को अस्थायी अर्थों में एक साथ ला दिया और उन्हें एक ही नज़र में समेट लिया। इसे 'भविष्यवाणी परिप्रेक्ष्य' कहा जाता है, या जैसा कि डेलिट्ज़ इसे कहते हैं, 'भविष्यवक्ता के क्षितिज का छोटा होना।' आपने शायद उस वर्णनात्मक वाक्यांश के बारे में सुना होगा। "उन्होंने भविष्य को वैसे ही देखा जैसे एक यात्री दूर स्थित पर्वत श्रृंखला को देखता है। वह कल्पना करता है कि एक पर्वत-शिखर दूसरे पर्वत-शिखर के ठीक पीछे उठता है, जबकि वास्तव में वे मीलों दूर हैं।" आप इसे "प्रभु के

दिन के भविष्यसूचक परिप्रेक्ष्य, और मसीह के दोहरे आगमन" में संदर्भित देखते हैं। मुझे लगता है कि वह तस्वीर मददगार है। मुझे यकीन है कि आपने वह देखा होगा, जहां आप यात्रा कर रहे हैं और आपको एक पर्वत श्रृंखला दिखाई देती है, और ऐसा लगता है कि वे एक-दूसरे के करीब हैं। आप एक के शीर्ष पर पहुँच जाते हैं, और अगला बहुत आगे है। एक। उदाहरण: यशायाह 61:1-2 और ल्यूक 4 यशायाह 61:1 और 2 को देखें, और ल्यूक 4 में इसके नए नियम के उद्धरण को देखें। यशायाह, 61:1 और 2 में, यशायाह कहता है, "प्रभु प्रभु की आत्मा है मुझ पर, क्योंकि प्रभु ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे टूटे हुए मनो को बाँधने, और बन्धुओं के लिये स्वतंत्रता और अन्धकार से मुक्ति का प्रचार करने, और प्रभु की कृपा के वर्ष और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करने के लिये भेजा है।" यह दूसरी कविता है जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। जब लूका 4 में, यीशु आराधनालय में उसे पढ़ता है। लूका 4:16, "वह नासरत को गया, जहां उसका पालन-पोषण हुआ था। और सब्ब के दिन वह अपनी रीति के अनुसार आराधनालय में गया। और वह पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक उसे सौंपी गई। उसे खोलकर, उसे एक जगह मिली जहाँ यह लिखा था, " (और यह यशायाह 61:1 और 2 है) "प्रभु की आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे कैदियों के लिए मुक्ति, और अंधों के लिए दृष्टि की बहाली, और उत्पीड़ितों को रिहा करने, प्रभु के अनुग्रह के वर्ष की घोषणा करने के लिए भेजा है, "और वह रुक जाता है। आपने देखा कि वह पद 2 के मध्य में रुकता है। फिर यह कहता है, "उसने पुस्तक को लपेटा, और उसे परिचारक को वापस दे दिया और बैठ गया। आराधनालय में सभी की निगाहें उस पर टिक गईं। उसने उनसे यह कहकर आरंभ किया, 'आज यह धर्मग्रन्थ तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ है।'" लेकिन आप ध्यान दें कि उसने यशायाह 61 का 2बी, "और हमारे परमेश्वर के प्रतिशोध का दिन" नहीं पढ़ा। हमारे परमेश्वर का पलटा लेने का दिन उसके दिन में पूरा नहीं हुआ। वह उनके दूसरे आगमन पर पूरा होगा। तो, दूसरे शब्दों में, 61:1 और 2ए उनके पहले आगमन में पूरे हुए। लेकिन 61:2बी उसके दूसरे आगमन तक पूरा नहीं होना था। लेकिन

अगर आप यशायाह 61:1 और 2 पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि ये दोनों चीजें समय के साथ-साथ घटित होने वाली हैं। यशायाह 61:2ए और 61:2बी के बीच, एक समय अंतराल है। इसलिए, भविष्यवक्ताओं के साथ व्यवहार करते समय, भविष्यसूचक क्षितिज का छोटा होना, एक ऐसी चीज़ है जिसे आपको ध्यान में रखना होगा। एक वाक्य बनाने वाले सम वाक्यांशों के बीच समय का अंतराल हो सकता है। आप शायद ही इसे पहले से जान सकें, जब तक कि आपके पास ऐसी जानकारी न हो जो इसे स्पष्ट करती हो। यहाँ की तरह, आप पवित्रशास्त्र की तुलना पवित्रशास्त्र से कर सकते हैं और मुझे लगता है कि यह इसे स्पष्ट कर देता है।

केइल कहते हैं, अब मेरे पास आपके उद्धरणों में यह नहीं है, “आत्मा में भविष्यवक्ता भविष्य को ऐसे देखते हैं जैसे कि वह वर्तमान हो; उनकी आत्मा को भविष्य की छवियां और विन्यास वर्तमान के रूप में, पहले से ही वास्तविक वास्तविकताओं के रूप में दिखाई देते हैं। यह न केवल भविष्यसूचक प्रवचन में तथाकथित भविष्यसूचक परिपूर्ण के प्रमुख उपयोग की व्याख्या करता है। वे चीजों के बारे में इस तरह से बात कर सकते हैं, जैसे कि यह पूर्ण काल में हो, फिर भी यह भविष्य है, क्योंकि वे भविष्य की पूर्ति की वर्तमान वास्तविकता को देखते हैं। "लेकिन यह भी तथ्य है कि पूर्वानुमानित घटनाओं का कालानुक्रमिक क्रम पृष्ठभूमि में चला जाता है, भविष्यवाणी तथाकथित परिप्रेक्ष्य चरित्र ग्रहण करती है।" तो यह एक और विशेषता है जिसे आपको भविष्यसूचक भविष्यवाणी के साथ ध्यान में रखना होगा, कि समय का परिप्रेक्ष्य ऐतिहासिक रिकॉर्ड में आपके पास मौजूद समय के परिप्रेक्ष्य से भिन्न है।

5. पूर्वानुमानित भविष्यवाणी का संदेश सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली में समाहित हो सकता है।

आइए 5 पर चलते हैं, "भविष्यवाणी भविष्यवाणी का संदेश सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली में निहित हो सकता है।" यह एक दिलचस्प मुद्दा है क्योंकि जब आप वास्तविक भविष्यवाणी से निपट रहे होते हैं तो यह कई व्याख्यात्मक प्रश्न उठाता है। मुझे लगता है कि जब आप पूर्वानुमानित भविष्यवाणी पढ़ते हैं तो आपको एहसास होता है कि

भविष्यवक्ताओं ने अपने समकालीनों से, भाषा में, विचार पैटर्न में और अपने समय की सांस्कृतिक सेटिंग में बात की थी। जैसा कि अपेक्षित है, उन्होंने ऐसी भाषा और शब्दावली का प्रयोग किया जो उनके समय के लिए उपयुक्त थी। यदि वे परिवहन के बारे में बात करते हैं, तो वे घोड़ों और रथों और ऊंटों और छोटे जहाजों के बारे में बात करने जा रहे हैं - उस तरह की चीजें, परिवहन के प्रकार जो उस समय के विशिष्ट थे। यदि वे हथियारों और आयुधों के बारे में बात करते हैं, तो वे तलवारों, ढालों, धनुष-बाणों और गुल्लकों के बारे में भी बात करने लगेंगे। यदि वे पूजा के साधनों और तरीके के बारे में बात करते हैं तो वे ऐसी भाषा में बात करेंगे जो मंदिर की सेवाओं या बलिदानों को दर्शाती है। यदि वे विश्व की घटनाओं के बारे में बात करते हैं जिनमें अन्य राष्ट्र और लोग शामिल हैं, तो वे उन राष्ट्रों के संदर्भ में बात करने जा रहे हैं जिन्होंने उस समय इज़राइल को घेर लिया था जिसमें वे रहते थे: मोआब, एदोम, मिस्र, बेबीलोन, असीरिया और इसी तरह।

एक। सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली - शाब्दिक दृष्टिकोण अब यह कहा जा रहा है कि, जब आप किसी दी गई भविष्यसूचक भविष्यवाणी पर आते हैं जो सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली का उपयोग करती है तो यह सवाल उठता है कि उस सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली को कैसे समझा जाए। इसके साथ क्या किया जाएगा? मुझे लगता है कि तीन बुनियादी तरीके हैं जिनसे व्याख्याकारों ने पूर्वानुमानित भविष्यवाणी की उस विशेष विशेषता से निपटा है। मैं उनका उल्लेख करना चाहता हूँ और फिर वापस जाकर उनमें से प्रत्येक को अधिक विस्तार से देखना चाहता हूँ। पहला तरीका यह है कि विवरण तक, सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली पर भी, शाब्दिक पूर्ति पर जोर दिया जाए। यदि कोई भविष्यवक्ता किसी भविष्यवाणी परिच्छेद में घोड़ों और रथों की बात करता है, तो पूर्ति के समय इसमें घोड़े और रथ शामिल होंगे। यदि वह धनुष और बाण की बात करता है, तो पूर्ति के समय उन्हीं हथियारों का उपयोग किया जाएगा। यदि वह मोआब और एदोम की बात करता है, तो पूर्ति के समय मोआब और एदोम शामिल होने वाले हैं।

अब, मैं यहां एक संक्षिप्त टिप्पणी करना चाहता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसा

करना पैगंबर के सांस्कृतिक परिवेश और जिन लोगों से उन्होंने बात की थी, उन्हें पर्याप्त रूप से ध्यान में नहीं रखता है। यदि वह अपने समकालीनों से बात कर रहे होते और 20वीं सदी की भाषा का उपयोग कर रहे होते तो उन्होंने जो कुछ कहा वह समझ से परे होता। निश्चित रूप से हम जानते हैं कि युद्ध के हथियार यशायाह के समय में या जिनके बारे में आप बात कर रहे हैं, उनके बारे में सोचा नहीं गया था और अनसुना था। इससे उनका संदेश उन लोगों के लिए अर्थहीन हो जाएगा जिनसे उन्होंने बात की थी। तो मुझे ऐसा लगता है, भविष्यवक्ता ने ऐसे तरीकों से बात की जो उसके श्रोताओं को समझ में आ सके। सवाल यह है: जब हम पूर्ति के समय को देखते हैं, तो हम उस तरह की सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली के साथ क्या करते हैं?

बी। प्रतीकात्मक अर्थ - भविष्यवाणी का आध्यात्मिकीकरण शाब्दिक पूर्ति पर जोर देने के विपरीत, कुछ व्याख्याकारों ने जो दूसरा दृष्टिकोण अपनाया है, वह यह कहना है कि संपूर्ण भविष्यवाणी का एक प्रतीकात्मक अर्थ है। मुझे निम्नलिखित शब्द का उपयोग करना पसंद नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि यह संभवतः किसी भी अन्य शब्द की तुलना में इस पद्धति को बेहतर ढंग से दर्शाता है, और वह शब्द है "आध्यात्मिकीकरण।" दूसरे शब्दों में, आप भविष्यवाणी को आध्यात्मिक बनाते हैं। तब शब्दों को भौतिक या भौतिक अर्थ में बिल्कुल भी नहीं समझा जाता है। लेकिन उन्हें आध्यात्मिक वास्तविकताओं और आध्यात्मिक शक्तियों के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। अब यह कुछ अस्पष्ट है। मुझे लगता है कि हमें एक अनुच्छेद को देखना होगा और यह देखना होगा कि यह वास्तव में क्या मतलब है यह समझने के लिए कैसे काम करता है, लेकिन दूसरी श्रेणी को ध्यान में रखें। अध्यात्मिकीकरण; यह सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली द्वारा वर्णित आध्यात्मिक वास्तविकताओं का प्रतीक है।

सी। समकक्ष या पत्राचार की तलाश तीसरी श्रेणी यह है कि कुछ व्याख्याकार समकक्ष या पत्राचार की तलाश करके सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली से निपटते हैं। दूसरे

शब्दों में, इस दृष्टिकोण के व्याख्याकार यह स्वीकार करेंगे कि पैगंबर के प्रवचन में आलंकारिक भाषा का एक तत्व है, लेकिन वे आध्यात्मिकीकरण नहीं करते हैं। वे अभी भी भाषा को मूर्त भौतिक वास्तविकताओं के सन्दर्भ में देखते हैं। यदि हथियारों के संदर्भ में धनुष और बाण की बात की जाती है तो हम पूर्ति के समय तुल्यता या अनुरूपता की तलाश करते हैं। हम टैंक और रॉकेट या उसके समकक्ष किसी चीज़ की तलाश करते हैं। कोई उस समय के हथियारों के समकक्षों की तलाश करता है जिनमें पैगम्बरों ने बात की थी।

भविष्यवक्ता के समय में ईश्वर के लोगों के शत्रुओं का स्थान बाद के शत्रुओं द्वारा ले लिया जाएगा जो संबंधित क्षेत्र पर कब्जा कर लेंगे। इसलिए हम मोआब और एदोम को देखते हैं। मोआब और एदोम नष्ट हो गये। पूर्ति के समय उन प्रदेशों में कौन रहता है ? असीरिया चला गया है. वहां कौन रहता है? वह कौन सा राष्ट्र है जो उस समय के लोगों से मेल खाता है जिसके बारे में पैगंबर ने बात की थी? इसलिए मुझे लगता है कि सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली के लिए वे बुनियादी तीन दृष्टिकोण हैं: शाब्दिक पूर्ति, आध्यात्मिककरण और आध्यात्मिक वास्तविकताओं के बारे में बोलना, और सादृश्य, पत्राचार या समकक्ष की तलाश करना।

इन रेखाओं को खींचना कठिन है। और हमेशा यह प्रश्न रहता है कि आप इन्हें किसी दिए गए अनुच्छेद पर वास्तव में कैसे लागू करते हैं। इसका सामान्यीकरण करना कठिन है। आपको विशिष्ट अनुच्छेदों को देखना होगा और अलग-अलग अनुच्छेदों की भाषा और सामग्री के साथ संघर्ष करना होगा। इसलिए सैद्धांतिक रूप से ऐसा लगता है जैसे ये तंग श्रेणियां हैं। वे शायद उतने सख्त नहीं हैं लेकिन यह इस पर निर्भर करता है कि उन्हें कैसे लागू किया जाता है।

डी। उदाहरण: यशायाह 11 और आध्यात्मिक दृष्टिकोण आइए यशायाह 11 अध्याय के अंतिम भाग को देखें। अध्याय के पहले भाग से आप शायद परिचित हैं क्योंकि पहले भाग में छंद 6 वाला वह भाग है, "भेड़िया मेमने के साथ रहेगा, तेंदुआ बकरी के साथ रहेगा, बछड़ा और शेर और बछड़ा एक साथ रहेंगे" ; और एक छोटा बच्चा उनका नेतृत्व करेगा। गाय

भालू के संग चरेगी, और उनके बच्चे इकट्ठे सोएंगे, और सिंह बैल की नाई भूसा खाएगा।” श्लोक 9, "वे मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न हानि पहुंचाएंगे और न नाश करेंगे, क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है।" यह उस भविष्य के समय की बात कर रहा है जब बाहरी खतरे का अभाव है। हर कोई शांति और सद्भाव से रह रहा है। लेकिन जब आप उस अध्याय के दूसरे भाग में आते हैं, तो हम पद 10 में पढ़ते हैं, "उस दिन यिश्शै की जड़ लोगों के झंडे के लिए खड़ी होगी। लोग उसके पास इकट्ठे होंगे और उसका विश्रामस्थान महिमामय होगा।" फिर 11 अंत तक, "उस दिन यहोवा अपनी प्रजा के बचे हुए लोगों को अश्शूर से, निचले मिस्र से, ऊपरी मिस्र से, कुश से, एलाम से, बेबीलोनिया से, हमात से और समुद्र के द्वीपों से। वह अन्यजातियों के लिये झण्डा खड़ा करेगा, और इस्राएल के बंधुओं को इकट्ठा करेगा; वह यहूदा के बिखरे हुए लोगों को पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा। एप्रैम की जलन मिट जाएगी, और यहूदा के शत्रु नाश हो जाएंगे; एप्रैम यहूदा से ईर्ष्या न करेगा, और न यहूदा एप्रैम से बैर करेगा। वे पलिशितियों की पच्छिम की ओर की ढलानों पर झपट्टा मारेंगे; वे मिलकर पूर्व के लोगों को लूटेंगे। वे एदोम और मोआब पर हाथ रखेंगे, और अम्मोनी उनके वश में हो जायेंगे। यहोवा मिस्र के समुद्र की खाड़ी को सुखा देगा; वह प्रचंड वायु से परात नदी पर अपना हाथ बढ़ाएगा। वह इसे सात धाराओं में तोड़ देगा ताकि लोग जूते पहनकर पार कर सकें। अश्शूर से बचे हुए उसके लोगों के लिए एक राजमार्ग होगा, जैसा कि इस्राएल के लिए था जब वे मिस्र से आए थे।

अपने उद्धरण पृष्ठ 23 को देखें। मैं उस दूसरी श्रेणी के उदाहरण के रूप में यशायाह पर ईजे यंग की टिप्पणी का उपयोग करना चाहता हूं। दूसरे शब्दों में, आपके पास सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली है; आप इसके साथ कैसे लेन - देन करते हैं? यंग का सुझाव है कि आप इसे आध्यात्मिक बनाएं और आप कहते हैं कि भाषा आध्यात्मिक वास्तविकताओं का प्रतीक है। मुझे लगता है कि यंग उस दूसरी श्रेणी का अच्छा उदाहरण देता है। पद 12 में आप ध्यान दें, "वह अन्यजातियों के लिये झण्डा खड़ा करेगा, और इस्राएल के बंधुओं को इकट्ठा करेगा; वह यहूदा के बिखरे हुए लोगों को पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा।" 12 पर उनकी टिप्पणी है, "मसीहा अन्यजातियों के लिए एक

आकर्षण बिंदु होगा, और ईसाई उपदेश और ईसाई मिशनरियों के काम के माध्यम से वह उन्हें अपनी ओर आकर्षित करेगा। यह कितना महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से इस दिन और युग में, इसलिए कि चर्च पृथ्वी के चारों कोनों में मिशनरियों को भेजे जो इस सच्चाई से प्रज्वलित हैं कि सच्चे मसीहा, यीशु के अलावा कोई मुक्ति नहीं है। यशायाह 11:13, “एप्रैम की जलन मिट जाएगी, और यहूदा के शत्रु नाश हो जाएंगे; एप्रैम यहूदा से ईर्ष्या नहीं करेगा, और न ही यहूदा एप्रैम से शत्रुता करेगा।” वह किस बारे में बात कर रहा है? यंग कहते हैं, “मसीह में सभी राष्ट्रीय, अनुभागीय और क्षेत्रीय भेदभाव समाप्त कर दिए जाएंगे, और इस श्लोक में प्रयुक्त चित्र के माध्यम से हम सीखते हैं कि मसीह में किसी भी जाति और रंग के सभी लोगों के लिए सच्ची एकता और जगह है। केवल मसीह में ही वे एक हो सकते हैं।” फिर पद 14, “वे पश्चिम की ओर पलिशियों की ढलानों पर झपट्टा मारेंगे; वे मिलकर पूर्व के लोगों को लूटेंगे। वे एदोम और मोआब पर हाथ रखेंगे, और अम्मोनी उनके अधीन हो जायेंगे।” यंग कहते हैं, “दुनिया की शत्रुता के विरोध में आस्था की सच्ची एकता यहीं है। यह सच्ची एकता हमले की उम्मीद में आत्मरक्षा के लिए झुकने में नहीं छिपती। यह आक्रामक होता है; मसीहा के शत्रुओं को नष्ट किया जाना चाहिए, और मसीहा द्वारा दी गई एकता की ताकत में, लोग पलिशियों पर हमला करते हैं, जो परमेश्वर और उसके चर्च के दुश्मनों के प्रतिनिधि हैं। अब अगली टिप्पणी पर ध्यान दें, “यशायाह यहां जो वर्णन कर रहा है, उसे निश्चित रूप से शाब्दिक अर्थ में नहीं समझा जा सकता है। बल्कि, यहां एकता की एक सुंदर तस्वीर है जो भगवान के संतों का अधिकार है, जो उनके लिए उनके अपने कार्यों के माध्यम से नहीं, बल्कि मसीह के खून के माध्यम से और दुश्मन पर विजय प्राप्त करने के काम में जोरदार, सक्रिय भागीदारी के माध्यम से प्राप्त की गई है। दुनिया, एक विजय जो मिशनरियों को भेजने और हर प्राणी के लिए ईश्वर की संपूर्ण सलाह की निरंतर, सक्रिय, जोरदार, वफादार उद्घोषणा के माध्यम से की जाती है। तो यह सुसमाचार का प्रसार है, विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार है।

यंग आगे कहते हैं, “यहाँ भगवान के लोगों के लिए जो शानदार आशा है, वह रेगिस्तान के खानाबदोश अरबों को उजाड़ने में शामिल नहीं है। इसमें ईश्वर की बचाने वाली

शक्ति को उन लोगों तक भी पहुंचाने का धन्य कार्य शामिल है, जो प्रेरित पॉल की तरह, एक बार चर्च के उत्पीड़क थे... तस्वीर पूरी तरह से स्थिति का उलट है, फिलिस्तीन में नहीं, बल्कि दुनिया के महान क्षेत्र में, एक उलटफेर होगा जिसमें परमेश्वर के लोग सभी मनुष्यों को लाने और उन्हें मसीह के पास बंदी बनाने के लिए आगे बढ़ेंगे। तो यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। अब क्या यशायाह इसी बारे में बात कर रहा है? यह एक कठिन प्रश्न है।

डायने टैर, ग्रेस वुड, बैरी सॉसी, और राचेल थॉमस, टेड हिल्डेब्रांट द्वारा लिखित,
 अबीगैल एल्लिच (संपादक)
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
 टेड हिल्डेब्रांट
 द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव: व्याख्यान 13बी

भविष्यसूचक लेखों की व्याख्या के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत

5. ई. यशायाह 11:10-12 ओसवाल्त का दृष्टिकोण

आइए यशायाह पर जॉन ओसवाल्त की एनआईसीओटी टिप्पणी, पृष्ठ 286 और उसके बाद देखें। वे इस बड़े खंड के बारे में कहते हैं, “हालांकि इन छंदों का सामान्य अर्थ स्पष्ट है, लेकिन विशिष्टताएँ इतनी स्पष्ट नहीं हैं। क्या भविष्यवक्ता 539 ईसा पूर्व में बेबीलोन से वापसी की बात कर रहा है?” देखिये, यह शुरू होता है, “प्रभु अपने लोगों के बचे हुए अवशेषों को पुनः प्राप्त करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाएगा।” फिर वह पद 12 में इस्राएल के बंधुओं को इकट्ठा करने, उन्हें उनकी भूमि पर वापस लाने की बात करता है। ओसवाल्त कहते हैं, “क्या यह 539 में बेबीलोन से वापसी की बात कर रहा है? यदि ऐसा है, तो मसीहा अभी तक प्रकट नहीं हुआ था और शायद ही वह ध्वज हो सकता था जिसके चारों ओर लोग एकजुट हुए थे। हम पद 10 में देखते हैं, “उस दिन यिश्शै की जड़ देश देश के लोगों के लिये झण्डा ठहरेगी। राष्ट्र उसके पास जुटेंगे।” वनवास से वापसी के समय ऐसा होता नहीं दिख रहा था। क्या यशायाह वास्तव में नए इज़राइल, चर्च की बात कर रहा है, जैसा कि सुधारक कहते हैं? उदाहरण के लिए, केल्विन कहते हैं, “निश्चित रूप से, विश्वासियों को दुनिया के हर हिस्से से मसीहा के लिए इकट्ठा किया गया था [ईजे यंग की भी यही स्थिति है]।” और श्लोक 10, यशायाह 2:2-4 की याद दिलाते हुए, अलग-अलग राष्ट्रों का संदर्भ देता है। फिर भी, यहां ओसवाल्त की टिप्पणी दिखाई देती है, “परिच्छेद का प्राथमिक ध्यान इज़राइल के ऐतिहासिक राष्ट्र पर लगता है, जिससे किसी को विश्वास हो जाता है कि यह यहूदी लोगों के कुछ महान अंतिम एकीकरण की ओर इशारा करता है जैसे कि पॉल द्वारा संदर्भित रोमियों 11. यदि यह ज़ायोनी आंदोलन में शुरू हुआ है, जैसा कि कई लोग मानते हैं, तो हम यहूदी राष्ट्र द्वारा मसीह में ईश्वर की ओर मुड़ने में इसके अंतिम समापन की आशा कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि ओसवाल्त, जैसा कि वह आगे चर्चा करता है, वास्तव में उस तीसरी श्रेणी में फिट होगा जो आपके यहां है; निर्वासित इस्राएल की अपनी भूमि पर

वापसी और उसके मसीह के पास आने के संबंध में किसी प्रकार का वर्णन। वहां वह पंक्ति अस्पष्ट हो सकती है जिसे एक मिनट पहले लाया गया था।

एफ। जेए अलेक्जेंडर का दृष्टिकोण

यशायाह पर जेए अलेक्जेंडर की टिप्पणी में, पृष्ठ 257, वे कहते हैं, “भविष्यवाणी सन्हेरीब की असुविधा के बाद शरणार्थियों की वापसी में पूरी नहीं हुई, न ही बेबीलोन से वापसी में, और आंशिक रूप से यहूदियों को सुसमाचार के उपदेश में। पूर्ण पूर्ति की उम्मीद तब की जाएगी जब संपूर्ण इस्राएल को बचाया जाएगा। भविष्यवाणी को आलंकारिक रूप से समझा जाना चाहिए, क्योंकि इस श्लोक में वर्णित राष्ट्रों का अस्तित्व बहुत पहले ही समाप्त हो चुका है। वहां देखिए, आपको वह सांस्कृतिक रूप से आक्रमणकारी शब्दावली मिलती है। केइल के अनुसार, पूर्वकल्पित घटना फ़िलिस्तीन में यहूदियों की वापसी है; लेकिन केल्विन के अनुसार पश्चाताप और ईसाई धर्म को अपनाने पर मसीह के राज्य में उनका प्रवेश।”

तो आपको दृष्टिकोण का वह विचलन मिलता है। श्लोक 14, जहां फ़िलिस्तीन, एदोम, मोआब और मोआबियों का उल्लेख है, सिकंदर कहता है, “सभी नाम पड़ोसी देशों के हैं जिनके साथ इब्री युद्ध करने के आदी थे। एदोम, मोआब और अम्मोन का नाम विशेष रूप से एक अतिरिक्त कारण से लिया जा सकता है, अर्थात् वे लगभग इज़राइल से संबंधित थे, और फिर भी उसके सबसे कट्टर दुश्मनों में से एक थे। यहूदी इसे उन देशों के संबंध में एक शाब्दिक भविष्यवाणी के रूप में समझते हैं जो पहले यहां सूचीबद्ध जातियों के कब्जे में थे। अधिकांश ईसाई लेखक सच्चे धर्म द्वारा प्राप्त की जाने वाली विजय को आध्यात्मिक रूप से समझते हैं, और मानते हैं कि यहाँ जिन राष्ट्रों का नाम रखा गया है वे सामान्यतः दुश्मनों के लिए, या बुतपरस्त दुनिया के लिए रखे गए हैं। ध्यान दें कि यह यंग का भी दृष्टिकोण है। “वर्णन की इस पद्धति को उन ऐतिहासिक संघों द्वारा अधिक सशक्त बनाया जा रहा है जिन्हें नाम जागृत करते हैं।” बाद में, वह कहते हैं, “बाबुल से वापसी में, सुसमाचार की सामान्य प्रगति में, और यहूदियों की भविष्य की बहाली में, विभिन्न

व्याख्याकारों द्वारा पूर्ति की मांग की गई है।"

जी। वन्नॉय का दृष्टिकोण मुझे समझ नहीं आता कि आप बेबीलोन से वापसी के विवरण के साथ कैसे बहस कर सकते हैं, लेकिन आप इससे क्या करते हैं? क्या यह सुसमाचार की सामान्य प्रगति है? क्या आप इसका आध्यात्मिकरण करते हैं? या क्या आप कहते हैं कि इसका भविष्य में यहूदी लोगों की उनकी मातृभूमि में बहाली से कुछ लेना-देना है?

मैं अपने युगान्त विज्ञान में अधिक पूर्व-सहस्राब्दी हूँ। मैं उस बाद वाले दृष्टिकोण को अपनाने और इन नामों के साथ, स्थानों के लिए कुछ प्रकार के समकक्षों की तलाश करने के लिए अधिक इच्छुक हूँ। यदि वे असीरिया से - क्षेत्र में मेसोपोटामिया से लौटने वाले हैं, तो संबंधित समकक्षों की तलाश करें। मुझे नहीं लगता कि ऐसे बहुत से लोग हैं, लेकिन कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि अंत समय में इन सभी राष्ट्रों का पुनर्गठन होने जा रहा है, कि अंत समय में एक असीरिया बनने जा रहा है। मुझे लगता है कि यह इसे आगे बढ़ा रहा है, आप देखते हैं कि यह पहली श्रेणी होगी, जो शाब्दिक पूर्ति पर जोर देते हैं। मुझे लगता है कि आप दूसरी या तीसरी श्रेणी में आ गये हैं। सवाल यह है कि क्या आप आध्यात्मिकरण व्याख्या से सहज हैं? क्या इसे इसी तरह समझने का इरादा था?

जेए मोती द्वारा यशायाह पर एक अच्छी टिप्पणी है। आपमें से कुछ लोग इससे परिचित हो सकते हैं। इस परिच्छेद पर उनकी संक्षिप्त टिप्पणी है, "यह एक रूपक है: जिस शक्ति के आगे राष्ट्र गिरते हैं वह सुसमाचार है।" इसलिए, वह यंग से सहमत होंगे। मैं इसका उपयोग केवल उन प्रकार के व्याख्यात्मक प्रश्नों को दर्शाने के लिए करने का प्रयास कर रहा हूँ जो तब उत्पन्न होते हैं जब आप अधिक बारीकी से देखना शुरू करते हैं और इस पूर्वानुमानित भविष्यवाणी को देखते हैं।

6. भविष्यसूचक भविष्यवाणी सशर्त हो सकती है

। जेर. 18:5-10

आइए 6 पर चलते हैं, "भविष्यवाणी करने वाली भविष्यवाणी सशर्त हो सकती है।"

अब, कहने का मतलब यह है कि कुछ भविष्यवाणियाँ परिस्थितियों पर निर्भर हो सकती हैं। स्थिति व्यक्त की जा सकती है और फिर यह समस्याग्रस्त नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि ऐसे उदाहरण हैं जहां इसे व्यक्त नहीं किया गया है, फिर भी यह भविष्यवाणी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। जो पाठ मुझे लगता है कि इसे समझने में अत्यधिक महत्वपूर्ण है वह यिर्मयाह 18:5-10 है। यिर्मयाह 18 में, यिर्मयाह कुम्हार के घर जाता है, उसे कुछ बर्तन फेंकते हुए देखता है, और श्लोक पांच में, "यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा और कहा, 'हे इस्राएल के घराने, क्या मैं तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर सकता जैसे कुम्हार करता है? जैसे कुम्हार के हाथ में मिट्टी होती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तुम मेरे हाथ में हो। यदि...' और यहां महत्वपूर्ण कथन हैं, "यदि किसी भी समय मैं घोषणा करता हूं कि किसी राष्ट्र या राज्य को उखाड़ फेंकना है, तोड़ना है, नष्ट करना है, और यदि मैंने उस राष्ट्र को चेतावनी दी है कि वह अपनी बुराई पर पश्चाताप करता है, तो मैं नरम हो जाऊंगा और किसी को नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा इस पर मैंने जिस विपत्ति की योजना बनाई थी। यदि किसी अन्य समय, मैं घोषणा करता हूं कि एक राष्ट्र या राज्य का निर्माण और रोपण किया जाना है, और यदि वह मेरी दृष्टि में बुरा करता है और मेरी बात नहीं मानता है, तो मैं उसके लिए जो अच्छा करने का इरादा रखता था उस पर पुनर्विचार करूंगा। इसलिए, ईश्वर एक बयान दे सकता है, लेकिन अगर उस व्यक्ति या समूह के आचरण को संशोधित किया जाता है, जिसके लिए वह बयान निर्देशित है, तो इससे ईश्वर ने शुरू में कहा था कि वह क्या करेगा, इसके क्रियान्वयन पर असर पड़ सकता है।

बी। 1 राजा 11 - यारोबाम

जब आप भविष्यसूचक कथनों पर आते हैं, तो कभी-कभी आपको शर्तें जुड़ी हुई मिलती हैं। यारोबाम प्रथम के साथ 1 राजा 11 को देखें। श्लोक 38 को देखें। अहिय्याह भविष्यवक्ता, प्रभु की ओर से बोलते हुए, पद 38 में उससे कहता है, "यदि तू जो कुछ मैं तुझे आज्ञा देता हूं वह कर, और मेरे मार्गों पर चले, और जो ठीक है वही करे।" मैं अपने दास दाऊद की नाई मेरी विधियों और आज्ञाओं का पालन करता रहूंगा, और मैं तेरे संग रहूंगा। मैं

तुम्हारे लिये वैसा ही स्थायी राजवंश बनाऊंगा जैसा मैं ने दाऊद के लिये बनाया था, और इस्राएल तुम्हें सौंप दूंगा। मैं इसके कारण दाऊद के वंशजों को नीचा दिखाऊंगा, परन्तु हमेशा के लिए नहीं।”

परन्तु एक शर्त है: यदि तुम वह सब करोगे जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, तो मैं यारोबाम का एक पक्का घर बनाऊंगा जैसा मैंने दाऊद के लिए किया था। इसके साथ एक शर्त है और चूँकि यारोबाम ने शर्तें पूरी नहीं कीं, इसलिए वह भविष्यवाणी भी पूरी नहीं हुई। पक्का मकान देने के बजाय उसका मकान उजाड़ दिया गया।

आप 1 राजा 15:29 पर जाएँ और आप वहाँ पढ़ेंगे, “जैसे ही उसने [अर्थात् बाशा] शासन करना आरम्भ किया, उसने यारोबाम के पूरे परिवार को मार डाला। उसने यारोबाम के किसी भी प्राणी को नहीं छोड़ा, परन्तु यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने अपने दास शिलोवासी अहिय्याह को दिया था, सब को नष्ट कर दिया, क्योंकि यारोबाम ने पाप किए थे और इस्राएल से भी पाप कराए थे, क्योंकि उस ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाया था। ” इसलिए यारोबाम ने शर्त पूरी नहीं की और उसे एक निश्चित राजवंश की स्थापना के बजाय न्याय का अनुभव हुआ। लेकिन यह बिल्कुल सीधा है, यह एक बताई गई शर्त है।

सी। 1 राजा 21:19-27 अहाब

आइए एक अघोषित स्थिति पर नजर डालें लेकिन जो अभी भी भविष्यवाणी में शामिल प्रतीत होती है। 1 राजा 21:19 को देखें। यह अहाब द्वारा नाबोत के अंगूर के बगीचे पर कब्जा करने के संदर्भ में है। यहोवा ने एलिय्याह से कहा कि वह अहाब से कहे, “यहोवा यों कहता है, 'क्या तू ने किसी मनुष्य की हत्या करके उसकी सम्पत्ति नहीं छीन ली है?' तब उस से कह, यहोवा यों कहता है, जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लोहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तुम्हारा लोहू चाटेंगे। हां, आपका।” तो एक भविष्यवाणी है लेकिन अहाब ने कम से कम कुछ हद तक पश्चाताप किया।

पद 27 को देखें, “जब अहाब ने ये बातें सुनीं, तब उस ने अपने वस्त्र फाड़े, टाट ओढ़

लिया, और उपवास किया। वह टाट ओढ़कर लेटा और नम्रतापूर्वक घूमता रहा। तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा, क्या तू ने देखा, कि अहाब मेरे साम्हने कैसे दीन हो गया है? क्योंकि उस ने अपने आप को दीन किया है, मैं उसके दिन में यह विपत्ति न लाऊंगा। परन्तु मैं इसे उसके बेटे के दिनों में उसके घर ले आऊंगा।" इसलिए निर्णय संशोधित किया गया है। इसे पूरी तरह से हटाया नहीं गया है, लेकिन इसके अधिनियमन का समय तत्व उसके बेटे के समय में बदल दिया गया है।

आपने इसे 2 राजा 9:25 और 26 में पढ़ा, अहाब के पुत्र योराम के समय में। उसे येहू ने मार डाला। 2 राजा 9:25, "येहू ने अपने रथ सरदार बिदकर से कहा, '[जोराम] को उठाकर यिज़्बेली नाबोत के खेत में फेंक दो। याद करो जब यहोवा ने उसके बारे में यह भविष्यवाणी की थी तो तुम और मैं उसके पिता अहाब के पीछे एक साथ रथों पर कैसे सवार होते थे। 'कल मैंने नाबोत और उसके पुत्रों का खून देखा, यहोवा की यही वाणी है, और मैं निश्चय इसी भूमि में तुम से उसका बदला चुकाऊंगा, यहोवा की यही वाणी है।' अब, प्रभु के वचन के अनुसार, उसे उठाओ और उस भूखंड पर फेंक दो।" तो यहां अहाब पर आने वाले फैसले के बारे में एक भविष्यवाणी है जिसे अहाब के पश्चाताप के कारण संशोधित किया गया था लेकिन उसके समय में लागू किया गया था। बेटा यहोराम बिल्कुल वैसा ही जैसा कि इसकी भविष्यवाणी की गई थी। एक अघोषित स्थिति थी।

डी। जोनाह

योना में संभवतः आपकी भी ऐसी ही स्थिति होगी। योना नीनवे आता है, और अध्याय 3 पद 4 में वह बयान देता है, "40 दिनों में, नीनवे को उखाड़ फेंका जाएगा।" नीनवे ने पश्चाताप किया और उसके संदेश का उत्तर दिया। नीनवे को 40 दिनों में नहीं उखाड़ फेंका गया। अंततः, नीनवे को नष्ट कर दिया गया, लेकिन यह योना के समय के काफी समय बाद नष्ट हो गया।

इ। यशायाह 38 - हिजकिय्याह

यशायाह 38:1-5 को देखें। आपने वहाँ पढ़ा, “उन दिनों हिजकिय्याह बीमार हो गया और मरने पर था। आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा यों कहता है, आपके घर को व्यवस्थित कर, क्योंकि तू मरने पर है; तुम ठीक नहीं होओगे।” हिजकिय्याह ने दीवार की ओर मुंह करके यहोवा से प्रार्थना की, ‘हे प्रभु, स्मरण रख, कि मैं किस प्रकार तेरे साम्हने पूरे मन से भक्ति करके चलता आया हूँ, और जो तेरी दृष्टि में अच्छा है वही किया है।’ और हिजकिय्याह फूट फूट कर रोने लगा। तब यहोवा का यह वचन यशायाह के पास पहुंचा, कि जाकर हिजकिय्याह से कह, तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी, और तेरे आंसू देखे हैं; मैं तुम्हारे जीवन में पन्द्रह वर्ष जोड़ दूँगा। और मैं तुझे और इस नगर को अशशूर के राजा के हाथ से बचाऊँगा। मैं इस शहर की रक्षा करूँगा।” तो हिजकिय्याह को की गई घोषणा पर, “तुम मरने वाले हो, तुम ठीक नहीं हो पाओगे,” हिजकिय्याह प्रभु से प्रार्थना करता है और प्रभु जवाब देते हैं और उसे अतिरिक्त 15 वर्ष देते हैं . तो ऐसा प्रतीत होता है कि कई मामलों में पूर्वानुमानित भविष्यवाणी से यह सशर्त प्रकृति हो सकती है।

मुझे लगता है कि यही दो चीजें हैं जो सामने आती हैं। मैं पश्चाताप और प्रार्थना के अलावा दूसरों के बारे में नहीं सोच सकता , जो इसके पश्चाताप वाले हिस्से को फिर से पुष्ट करता है। यिर्मयाह 18:5-10 स्पष्ट रूप से प्रार्थना के बारे में बताता है, और आपके पास अन्य उदाहरण भी हैं जब मूसा ने इस्राएल के लिए मध्यस्थता की थी। जब प्रभु कहते हैं कि वह एक काम करने जा रहे हैं, तो मूसा प्रार्थना करते हैं और प्रभु नरम पड़ जाते हैं।

एफ। सशर्तता पर जे. बार्टन पायने जेबी पायने अपने *बाइबिल भविष्यवाणी के विश्वकोश में*, एक बड़े परिचयात्मक खंड में , भविष्यवाणी सामग्री की व्याख्या के कई मुद्दों पर चर्चा करते हैं। वह बाइबिल की भविष्यवाणी की सशर्तता के इस मुद्दे पर चर्चा करता है। उस चर्चा में, उन्होंने सुझाव दिया कि सशर्तता पर कुछ सीमाएँ लगाई जानी चाहिए, ऐसा न हो कि सभी भविष्यवाणियाँ पूरी होने में अनिश्चित हो जाएँ। हम देखते हैं कि इसके पीछे व्याख्यात्मक खतरा है। यदि सब कुछ सशर्त है, तो आप निश्चित नहीं हो सकते कि कुछ भी

होने वाला है, विशेष रूप से वे चीज़ें जो ईश्वर के मुक्ति कार्यक्रम के केंद्र में हैं। मुझे लगता है कि निश्चित रूप से इसमें एक अर्थ है, और पायने जो सुझाव दे रहा है, उसमें यह मेरा अतिरिक्त है, उत्पत्ति 12:3 में इब्राहीम से भगवान का वादा, "तेरे वंश में सभी राष्ट्र धन्य होंगे," किसी भी इंसान पर स्पष्ट रूप से सशर्त नहीं है इसकी पूर्ति सुनिश्चित करने के लिए किया जाएगा। यह निश्चित रूप से होने वाला है। इब्राहीम के वंश के माध्यम से पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद दिया जाएगा क्योंकि वह ईश्वर के मुक्ति उद्देश्य के केंद्र में है। मुझे लगता है कि ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे कोई भी इंसान इसे बदलने के लिए कर सके।

पायने का सुझाव है, और यह उनका स्वयं का सूत्रीकरण है, कि किसी भविष्यवाणी को सशर्त बने रहने के लिए उसे दो योग्यताओं को पूरा करना होगा। एक, यह निकट अनुप्रयोग का होना चाहिए। यदि आप उदाहरणों को देखें, तो यह फिट बैठता है। योना ने नीनवे को उपदेश दिया, यशायाह ने हिजकिय्याह को बताया कि वह कब मरने वाला है, एलिय्याह ने अहाब को बताया कि वह कैसे मरेगा। यह एक निकट अनुप्रयोग होना चाहिए। दूसरा, इसमें पैगंबर के समकालीन को संतुष्ट करने में सक्षम तत्व होने चाहिए। दूसरे शब्दों में, ये सशर्त लंबी दूरी की भविष्यवाणियाँ नहीं हैं जो उनकी योजना और उद्देश्य की पूर्ति के अनुसार ईश्वर के मुक्ति कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का हिस्सा हैं।

तो, मुझे लगता है कि यह संभवतः मददगार है। मुझे लगता है कि हमें यह पहचानना चाहिए कि किसी भी भविष्यवाणी के माध्यम से एक संभावित सशर्त पहलू होता है, लेकिन जैसा कि सुझाव दिया गया है कि वे स्थितियाँ प्रार्थना और पश्चाताप हैं। भविष्यवाणी की एक समकालीनता है जिसे पैगंबर के समकालीनों द्वारा पूरा किया जा सकता है। यह दीर्घकालिक भविष्यवाणी के बजाय एक निकट अनुप्रयोग है।

7. भविष्यसूचक भविष्यवाणी के प्रकार a. प्रत्यक्ष भविष्यवाणी

आइये 7 पर चलते हैं, "भविष्य कहनेवाला भविष्यवाणी के प्रकार।" उस शीर्षक के तहत मेरे मन में जो बात है वह यह है कि जिसे आप प्रत्यक्ष भविष्यवाणी और टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी कह सकते हैं, उसके बीच का अंतर है। प्रत्यक्ष भविष्यवाणी में

एक भविष्यवाणी कथन शामिल होता है जिसकी पूर्ति केवल भविष्य में होती है। दूसरे शब्दों में, यह भविष्य में होने वाली किसी बात का मौखिक दावा है। आप मीका 5:2 को देख सकते हैं, जो कहता है, "परन्तु हे बेथलेहेम एप्राता, यद्यपि तू यहूदा के कुलों में छोटा था, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक निकलेगा जो इस्राएल पर प्रभुता करेगा, जिसकी उत्पत्ति प्राचीन काल से है, प्राचीन काल से।" फिर इसे मत्ती 2:5-6 में उद्धृत किया गया है, जो मसीह के साथ पूरा हुआ है, जो बेथलेहेम से बाहर आता है और इज़राइल का शासक बन जाता है। यह एक बयान है, एक मौखिक दावा है।

बी। टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी

एक टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी को प्रत्यक्ष भविष्यवाणी से अलग किया जाता है। एक टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी एक संस्था, व्यक्ति या एक घटना है जो मोचन इतिहास में बाद की अवधि की किसी संस्था, व्यक्ति या घटना में अपने अर्थ का उच्चतम अनुप्रयोग पाती है। मैं उसे दोहराऊंगा. एक टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी एक संस्था, व्यक्ति या एक घटना है जो किसी संस्था, व्यक्ति या बाद के इतिहास में किसी घटना में अर्थ का उच्चतम अनुप्रयोग पाती है। उदाहरण के लिए, फसह का मेमना स्वयं मसीह में अपने अर्थ का उच्चतम अनुप्रयोग पाता है। या जंगल में खम्भे पर का साँप। दूसरे शब्दों में, टाइपोलॉजिकल भविष्यवाणी पूर्व-चित्रण या इमेजिंग द्वारा पूरी की जाती है।

1. टाइपोलॉजी पर जॉन स्टेक

के के अंतर्गत अपने उद्धरण पृष्ठ 24 को देखें। जॉन स्टेक की "बाइबिल टाइपोलॉजी कल और आज" के पहले पैराग्राफ में, वह कहते हैं, "दूसरे शब्दों में, एक प्रकार एक ऐतिहासिक वास्तविकता है जिसने अपने ऐतिहासिक क्षितिज के भीतर एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उद्देश्य पूरा किया (केवल एक प्रतीकात्मक नहीं), बल्कि यह प्रोविडेंस द्वारा इसे इस तरह से भी तैयार किया गया था कि ईश्वर के बड़े उद्देश्य में योगदान दिया जा सके, अर्थात्, क्रमिक चरणों और संचालन में उन्हीं सत्तों और सिद्धांतों को प्रकट किया जा सके

जिन्हें सुसमाचार की वास्तविकताओं में पूर्ण अभिव्यक्ति की ओर जाना था। तो उस अर्थ में, प्रकार भविष्यवाणी का कार्य करता है। यह प्रत्यक्ष भविष्यवाणी से भिन्न है, अर्थात्, एक मौखिक दावा, जिसमें यह छवि या पूर्व-आँकड़े देता है, जबकि प्रत्यक्ष भविष्यवाणी दावा करती है। यह मौखिक है।

लेकिन मुझे लगता है कि जब आप पुराने नियम की सामग्री पर विचार करेंगे तो आप पाएंगे कि पुराने नियम में काफी मात्रा में टाइपोलॉजिकल महत्व है। पुराने नियम में ऐसी चीज़ें हैं जो उस पुराने नियम की संस्था या घटना में सन्निहित सत्य की पूर्ण प्राप्ति की आशा करती हैं। व्याख्या का इतिहास हमें बताता है कि टाइपोलॉजिकल व्याख्या के उपयोग पर उचित परिप्रेक्ष्य रखना मुश्किल है क्योंकि इसकी बहुत सारी ज्यादतियाँ और दुरुपयोग हुए हैं। हम इसके साथ कितनी दूर तक जाते हैं? पुराने नियम की कुछ वास्तविकताओं को नए नियम के कथनों द्वारा स्पष्ट रूप से टाइपोलॉजिकल के रूप में पहचाना जाता है, और वहां आपके पास एक बहुत ही ठोस आधार है। लेकिन जब आप उससे आगे जाने लगते हैं, तो आप कितनी दूर तक जा सकते हैं?

बी। टाइपोलॉजी पर मिकेलसन यदि आप मिकेलसन के *इंटरप्रिटिंग द बाइबल* पैराग्राफ ए के तहत पृष्ठ 24 को देखते हैं, तो यह कहता है, “अक्सर टाइपोलॉजी व्याख्या में सनसनीखेजता का बहाना बन जाती है। प्रत्येक ईमानदार दुभाषिया को इस तरह की सनसनीखेजता का दृढ़ता से खंडन करना चाहिए। लेकिन यदि कोई दुभाषिया, ईश्वर के लोगों की एकता के बारे में पूरी तरह से जागरूक है, प्रकार और प्रतिरूप के बीच अंतर के बारे में जागरूक रहते हुए ऐतिहासिक सहसंबंध दिखा सकता है, तो वह निश्चित रूप से ऐसे ऐतिहासिक समानताएं देख सकता है। ऐसी गतिविधि में दुभाषिया को खुद को गंभीर रूप से अनुशासित करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि मिकेलसन और अन्य लोग सही ढंग से कह रहे हैं कि आपको अपने आप को केवल उन उदाहरणों तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है जिन्हें बाद के बाइबिल कथनों द्वारा स्पष्ट रूप से टाइपोलॉजिकल के रूप में पहचाना गया है। आप इससे भी आगे जा सकते हैं, लेकिन आपको सावधान रहना

होगा कि आप इस व्याख्यात्मक प्रक्रिया का दुरुपयोग न करें।

खतरा रूपक की ओर प्रवृत्ति में निहित है, और मुझे लगता है कि रूपक व्याख्या से बचने का तरीका, जहां आप लगभग कुछ भी ले सकते हैं और इसे आध्यात्मिक महत्व दे सकते हैं, यह सुनिश्चित करना है कि प्रकार और विरोधी प्रकार के बीच पत्राचार अर्थ की एकता को बरकरार रखता है। दूसरे शब्दों में, यह वही सत्य है जो मुक्ति के इतिहास के बाद के चरण में लेकिन उच्च स्तर पर फिर से प्रकट होता है। इसका पूर्ण रहस्योद्घाटन आगे बढ़ता है जहां आपके पास मुक्ति के पहले चरण में कुछ प्रतीकात्मक रूप में सन्निहित सत्य होता है, और यह बाद के इतिहास में फिर से प्रकट होता है। वैध रूप से वह रेखा कौन खींच सकता है?

सी। टाइपोलॉजी पर वोस इसके साथ ही मैं आपको पृष्ठ 25 की ओर इंगित करता हूँ क्योंकि जो मैंने अभी कहा है वह वास्तव में टाइपोलॉजिकल व्याख्या की वोस की अवधारणा है जहां वह प्रतीक और प्रकार के बीच संबंध स्थापित करता है और कहता है कि जो प्रतीक है, वह सत्य वही सत्य है जो टाइप किया गया है। लेकिन ध्यान दें वह कहते हैं, "औपचारिक कानून के कार्य को निर्धारित करने में, हमें इसके दो बड़े पहलुओं, प्रतीकात्मक और विशिष्ट और दोनों के बीच संबंध को ध्यान में रखना चाहिए। एक ही चीज़ को, एक नजरिए से देखा जाए तो, प्रतीकों के तौर पर, और दूसरे नजरिए से देखने पर, प्रकार। एक प्रतीक अपने धार्मिक महत्व में महत्वपूर्ण है जो किसी आध्यात्मिक प्रकृति के किसी निश्चित तथ्य, सिद्धांत या संबंध को दृश्य रूप में गहराई से चित्रित करता है। इसमें जिन चीज़ों को चित्रित किया गया है वे वर्तमान अस्तित्व और वर्तमान अनुप्रयोग की हैं। अगले पैराग्राफ में, "एक विशिष्ट चीज़ संभावित है।" और फिर निम्नलिखित पैराग्राफ, "प्रतीकित चीज़ें और टाइप की गई चीज़ें चीज़ों के अलग-अलग सेट नहीं हैं। वे वास्तव में एक ही चीज़ें हैं, केवल इस संबंध में भिन्न हैं कि वे मुक्ति में विकास के पहले निचले चरण पर आते हैं, और फिर बाद की अवधि में, उच्च चरण पर आते हैं। अगले पैराग्राफ के मध्य में, "केवल यह पता चलने के बाद कि कोई चीज़ क्या प्रतीक है, क्या हम वैध रूप से उस प्रश्न को रखने के लिए आगे बढ़ सकते हैं

जो वह दर्शाता है, क्योंकि बाद वाला कभी भी कुछ और नहीं हो सकता है या पूर्व को एक उच्च स्तर पर ले जाया जा सकता है। वह बंधन जो प्रकार और प्रतिरूप को एक साथ रखता है, मुक्ति की प्रगति में महत्वपूर्ण निरंतरता का बंधन होना चाहिए। तो मुझे लगता है कि यही मुद्दा है - प्रकार और प्रतिप्रकार के बीच का पत्राचार। आपके पास प्रतीक में वही सच्चाई हो सकती है जो बाद के प्रकार में फिर से प्रकट होती है।

पृष्ठ 23 पर वापस जाएँ। ध्यान दें कि स्टेक उस दूसरे पैराग्राफ में क्या कहता है। वह इस बात की ओर इशारा कर रहे हैं कि ईश्वर ने इतिहास को इतनी संप्रभुता से व्यवस्थित किया है कि प्रकार और प्रतिरूप के बीच यह सहसंबंध कुछ ऐसा है जो डिज़ाइन द्वारा होता है। वह कहते हैं, "चूंकि वास्तुकार के मॉडल और रेखाचित्र इमारत के बारे में उसकी स्पष्ट दृष्टि से नियंत्रित होते हैं जो किसी दिन उसके ग्राहक के उद्देश्य को पूरा करेगा, इसलिए मुक्ति इतिहास के भगवान पहले की व्यवस्था में कुछ मामलों को निर्धारित करते हैं जिनके बाद के युग में उनके आदर्श थे।" मुझे लगता है कि वास्तुकार का रूपक एक अच्छा रूपक है। आप शायद कह सकते हैं कि ईश्वर इतिहास का निर्माता है। वह पूरी इमारत को देखता है और इसलिए वह इतिहास में उन वास्तविकताओं का निर्माण कर सकता है जो मुक्तिबोध इतिहास के बाद के चरण में अन्य वास्तविकताओं में उसी सत्य के पुनः प्रकट होने की आशा कर रहे हैं। लेकिन आप देखें तो प्रकार भविष्यवाणी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है। इसे हर तरह से एक भविष्यसूचक कार्य के रूप में देखा जाना चाहिए, जितना कि प्रत्यक्ष भविष्यवाणी, या प्रत्यक्ष मौखिक दावे के रूप में।

डी। रूपक में गिरने का खतरा

अब मैंने कहा कि खतरा रूपक में पड़ने का है जो एक ही सत्य होने के कारण प्रकार और प्रति-प्रकार के बीच पत्राचार खो देता है। मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूँ। कुछ पुराने चर्च पिता रूपकों में माहिर थे। क्रिसोस्टॉम ने ईसा मसीह के जन्म के समय बेथलहम में हेरोदेस द्वारा शिशुओं के वध के बारे में कहा, "यह तथ्य कि केवल दो साल और उससे कम उम्र के बच्चों की हत्या की गई, जबकि तीन बच्चे संभवतः बच गए, इसका मतलब हमें

यह सिखाना है कि जो लोग इसे धारण करते हैं ट्रिनिटेरियन विश्वास को बचाया जाएगा जबकि बिनिटेरियन और यूनिटेरियन निस्संदेह नष्ट हो जाएंगे। अब आप देखते हैं कि वहां आपको, मेरी राय में, एक गाली मिलती है - आप रूपक में पड़ रहे हैं। आप एक ऐसे पाठ में अर्थ ला रहे हैं जिसका पाठ से कोई लेना-देना नहीं है। और यह वह रेखा है जिसे आप पार नहीं करना चाहते हैं, लेकिन यह वह रेखा है जिसे वोस उस प्रणाली से बचाता है जिसे वह टाइपोलॉजिकल व्याख्याओं के साथ दुरुपयोग के लिए सुझाता है।

छात्र प्रश्न:

प्रश्न: तो प्रकार के साथ हम उन स्थितियों के बारे में बात कर रहे हैं, उदाहरण के लिए, जब पुराने नियम में मेमने का वध किया गया रक्त प्रकार मसीह की ओर इशारा करता है क्योंकि उसका रक्त मारा गया था?

प्रतिक्रिया: हां, मुझे लगता है कि यह यहां पूरी तरह से मान्य है - यह बलिदान के खून में वही सच्चाई है, जो बिल्कुल मसीह के खून ने किया था। और जैसा कि इब्रानियों ने बताया है, बैलों और बकरों का खून अंततः प्रायश्चित नहीं कर सकता। यह मसीह के खून की ओर इशारा कर रहा था जिसने इसे प्रभावी बनाया।

जेसन नोटो-मोनिज़ (सं.), केटी टॉमलिंग्सन, क्रिस्टिन गॉर्डन, अम्रोनी मायर्स द्वारा लिखित
 मेलिसा स्टीवंस, एरिक हिल्कर
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
 केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 14

भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश

भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश

1. गद्यांश का सावधानीपूर्वक व्याकरणिक ऐतिहासिक प्रासंगिक विश्लेषण करें

हम "भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश" पर चर्चा कर रहे हैं। 1. उसके अंतर्गत है, "परिच्छेद का सावधानीपूर्वक व्याकरणिक ऐतिहासिक प्रासंगिक विश्लेषण करें।" यह ऐसा कुछ नहीं है जो भविष्यवाणी संबंधी प्रवचनों और न ही व्याख्यात्मक कार्य तक ही सीमित है। मुझे लगता है कि यह दुभाषिया का बुनियादी मौलिक कार्य है। आपको पहले शब्दों के अर्थ, प्रयुक्त भाषा, अन्यत्र शब्दों के उपयोग का अध्ययन करना और फिर शब्दों का एक-दूसरे के साथ संबंध को समझना होगा। उस समय आप व्याकरणिक निर्माण में लग जाते हैं। लेकिन इससे परे, आपको पैगंबर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उन लोगों को देखना चाहिए जिनसे पैगंबर ने बात की थी। हमें जो आगे बढ़ता है उसके संदर्भ के साथ-साथ जो आगे बढ़ता है उसके संदर्भ और उस पुस्तक में विचार के प्रवाह को भी देखना चाहिए जिसमें भविष्यवाणी एक हिस्सा है। मुझे लगता है कि यह तालाब में लहरों की तरह काम करता है। आप पवित्रशास्त्र के संपूर्ण कैनन को देखते हैं, जहां आप संकीर्ण निकट संदर्भ को देखते हैं और फिर आप बाइबल के संपूर्ण संदर्भ तक बड़े संदर्भ में अपना रास्ता बनाते हैं। यदि कोई समानांतर मार्ग हों तो उनसे परामर्श लिया जाना चाहिए। तो यह काफी बुनियादी चीज़ है जिससे आप सभी परिचित हैं। "परिच्छेद का सावधानीपूर्वक व्याकरणिक, ऐतिहासिक, प्रासंगिक विश्लेषण करें।"

2. स्पष्ट रूप से बताएं कि यह परिच्छेद किससे या क्या संदर्भित करता है।

2. " स्पष्ट रूप से बताएं कि अनुच्छेद किससे या क्या संदर्भित करता है।" हम इस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं, "क्या संदेश उस श्रोता या पाठक के बारे में है जिसे यह संबोधित है, या क्या यह उन्हें किसी और के बारे में बताता है?" उस प्रश्न को पूछकर हम यह निर्धारित

कर सकते हैं कि कोई अनुच्छेद मूलतः पूर्वानुमानित है या उपदेशात्मक। यदि यह उपदेशात्मक है और भविष्यवक्ता केवल उन लोगों को सिखा रहा है जिनसे वह बोलता है, तो कुछ महत्वपूर्ण सत्य जो उन्हें संबोधित हैं, जिनका हम पर अनुप्रयोग हो सकता है। क्या वह उनसे कुछ कह रहा है या यह किसी और के बारे में है? यदि ऐसा है तो यह पूर्वानुमानित हो सकता है या किसी तरह से पूर्वानुमानित तत्वों से युक्त हो सकता है। हमें इसे सुलझाना होगा। क्या परिच्छेद पूर्वानुमानित है? यदि यह पूर्वानुमानित है तो क्या इसमें कोई शर्तें जुड़ी हुई हैं? यह उस तरीके से महत्वपूर्ण हो सकता है जिसमें कोई इसकी पूर्ति की तलाश करता है। ऐसी कोई शर्त हो सकती है जो बताई न गई हो लेकिन आपको वह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए। यदि यह पूर्वानुमानित है, तो क्या यह पूरा हुआ या अधूरा? मुझे लगता है कि शुरुआत में आप उस प्रश्न का उत्तर पूर्ति के लिए पवित्रशास्त्र में कहीं और देखकर देंगे। आपके पास पुराने नियम में बहुत सी भविष्यवाणियाँ हैं जो पुराने नियम के काल में पहले से ही पूरी हो चुकी हैं। पुराने नियम में आपकी अन्य भविष्यवाणियाँ हैं जिन्हें आप नए नियम की अवधि में पूरा होता हुआ पाते हैं। बेशक, आपके पास ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं जो उस समय में पूरी होती हैं जिसमें हम रह रहे हैं, चर्च के समय में, या आपके पास ऐसी भविष्यवाणियाँ हो सकती हैं जो अभी तक पूरी नहीं हुई हैं लेकिन प्रभु के दिन के समय की प्रतीक्षा कर रही हैं। तो, आपको इसे सुलझाना होगा। यदि यह पूर्वानुमानित है, तो क्या यह पूरा हुआ या अधूरा?

3. पूर्ति उद्धरणों पर ध्यान दें

यह हमें 3 पर लाता है, "पूर्ति उद्धरणों पर ध्यान दें।" मेरे कहने का मतलब यह है कि नए नियम में कुछ ऐसे वाक्यांश हैं जो यह कहने के लिए संकेतक या सहायक हो सकते हैं कि यह एक भविष्यवाणी है जो विशेष रूप से अपनी पूर्ति पाती है। मेरे मन में कुछ ऐसे वाक्यांश हैं जैसे "ताकि यह पूरा हो सके।" निःसंदेह आपको वह पूर्ति उद्धरण मिल गया होगा। जब आप इसे देखते हैं, तो मुझे लगता है कि आम तौर पर यदि आप सभी उपयोगों को देखते हैं, तो यह पूर्ति को ध्यान में रखते हुए काफी विशिष्ट है। एक भविष्यवाणी है जो

यहाँ पूरी होती है। हालाँकि, एक योग्यता; कुछ मामलों में उस वाक्यांश को शब्दों या विचारों में चित्रण या समानता के संबंध को ध्यान में रखते हुए लिया जा सकता है, जहां पुराने नियम का कथन अपने आप में पूर्वानुमानित नहीं था।

एक। मैथ्यू 1:22 - ईसा. 7:14 मुझे लगता है कि यदि आप कुछ उदाहरण देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है। यदि आप मैथ्यू 1:22 को देखते हैं, तो आपको यह कथन मिलता है, "यह सब उस बात को पूरा करने के लिए हुआ जो प्रभु ने भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा था, 'कुंवारी गर्भवती होगी और एक बेटे को जन्म देगी और इममानुएल कहलाएगी,' जिसका अर्थ है ईश्वर हमारे साथ है।" यह यशायाह 7:14 का कथन है, जो यहां मैरी पर लागू होता है जिसने पवित्र आत्मा के माध्यम से गर्भधारण किया और वह कुंवारी है जिसने गर्भधारण किया और एक बेटे को जन्म दिया। यहां आपको यशायाह 7:14 की भविष्यवाणी की पूर्ति मिलती है। यह काफी विशिष्ट है।

बी। मत्ती 8:17 - ईसा। 53:4 मत्ती 8:17 में, आप पढ़ते हैं कि यीशु ने कुछ लोगों को चंगा किया, "इससे भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा कही गई बात पूरी हुई, 'उसने हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।'" यशायाह 53:4. प्रभु के सेवक पर अनुच्छेदों की उस श्रृंखला का चरमोत्कर्ष अंश होने के कारण, इसे पूर्णता मिलती है।

सी। मत्ती 12:17 - ईसा। 42:1-4 मत्ती 12:17 में लिखा है, "यह इसलिये हुआ कि जो यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि यह मेरा सेवक है जिसे मैं ने चुन लिया है, जिस से मैं प्रसन्न हूं। मैं उस पर अपना आत्मा डालूंगा, और वह जाति जाति को न्याय का प्रचार करेगा। वह न झगड़ा करेगा, न चिल्लाएगा, और न सड़कों पर कोई उसकी आवाज सुनेगा। कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा, और न सुलगती हुई बत्ती को वह तब तक बुझाएगा जब तक वह न्याय को विजय न पहुंचा दे, और जाति जातियां उसके नाम पर

आशा रखेंगी।” यह यशायाह 42:1-4 से पहले की तरह उन सेवक अंशों में से एक का उद्धरण है।

डी। मत्ती 21:4 - जकर 9:9 मत्ती 21:4 में, "यह भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई बात को पूरा करने के लिए हुआ" और उद्धरण जकर्याह 9:9 से है, "सिय्योन की बेटी से कहो, अपने को देखो राजा तेरे पास आता है, कोमल और गधे पर सवार होकर, बछेड़े पर, गधे के बच्चे पर।" तो आम तौर पर आप पाएंगे कि यह काफी विशिष्ट संकेतक है कि यह पहले दी गई भविष्यवाणी की पूर्ति है।

इ। याकूब 2:21-23 – उत्पत्ति 15:6

हालाँकि, कभी-कभी यह किसी पुराने नियम के कथन के समान शब्दों या विचारों के संबंध या चित्रण की तरह होता है जो एक पूर्वानुमानित कथन नहीं था। याकूब 2:21-23 को देखें जहां आपको यह वाक्यांश मिलता है, " क्या हमारे पूर्वज इब्राहीम को उस कार्य के लिए धर्मी नहीं माना गया था जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया था? आप देखते हैं कि उसका विश्वास और उसके कार्य एक साथ काम कर रहे थे और उसने जो किया उससे उसका विश्वास पूर्ण हो गया। और पवित्रशास्त्र का वह वचन पूरा हुआ जो कहता है," और यहां यह उत्पत्ति 15:6 को उद्धृत करता है; "अब्राहम ने ईश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता माना गया, और उसे ईश्वर का मित्र कहा गया।" यदि आप उत्पत्ति 15:6 पर जाते हैं, तो यह तब है जब प्रभु ने अब्राहम से कहा था कि एलीएजेर उसका उत्तराधिकारी नहीं होगा, बल्कि उसका उत्तराधिकारी होगा। उसका अपना पुत्र उसका उत्तराधिकारी होगा और उसने कहा, "तारों को गिनने के लिए आकाश की ओर देखो, यदि तुम सचमुच उन्हें गिन सकते हो।" और तब उस ने उस से कहा, तेरी सन्तान भी ऐसी ही होगी। फिर पद 6 कहता है, "इब्राहीम ने प्रभु पर विश्वास किया और उसने इसे धार्मिकता के रूप में श्रेय दिया।" उस कथन की भविष्यवाणी करना कठिन है, लेकिन यह केवल अब्राहम के विश्वास का दावा है और इसका महत्व क्या था।

आप जेम्स 2:23 में "पूरा करें" के उपयोग पर आते हैं, तो उत्पत्ति 15:6 में उस कविता का संदर्भ देते हुए, मुझे लगता है कि आपको यह कहना होगा कि यह इस बिंदु पर उद्धरण का एक सूत्र है, जितना कि यह संकेत दे रहा है। भविष्यवाणी और पूर्ति। आपकी ग्रंथ सूची में इस शीर्षक के अंतर्गत आर. लेयर्ड हैरिस का एक लेख है। यह लेख आपकी ग्रंथ सूची के पृष्ठ 11 पर है, जिसे *इतिहास की व्याख्या* में "भविष्यवाणी, चित्रण और टाइपोलॉजी" कहा जाता है, जो 1986 में प्रकाशित इस स्कूल के संस्थापक डॉ. एलन मैकरे के सम्मान में प्रकाशित एक खंड है। वह उस वाक्यांश का उपयोग करता है जिसका मैंने अभी उपयोग किया है, "उद्धरण का सूत्र," इस तरह के संदर्भों के लिए।

एफ। मत्ती 2:17-18 - यिर्मयाह 31:15 इसी के समान मत्ती 2:17-18 है, जहाँ आप पढ़ते हैं, "तब भविष्यवक्ता यिर्मयाह के द्वारा जो कहा गया था वह पूरा हुआ: 'रामा में एक रोने और बड़े रोने की आवाज़ सुनाई देती है विलाप करते हुए, राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है, सांत्वना पाने से इनकार कर रही है क्योंकि वे अब नहीं रहे" और वह यिर्मयाह 31:15 है। यदि आप यिर्मयाह 31:15 पर वापस जाते हैं, तो आप पढ़ते हैं, "रामा में विलाप और बड़े रोने का शब्द सुनाई देता है; राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही है; और सांत्वना पाने से इनकार कर रही है, क्योंकि उसके बच्चे अब नहीं रहे।" संदर्भ में, यह बेबीलोन की बन्धुवाई के निर्वासितों के विषय में रोने की बात कर रहा है।

जी। प्लेरोनो उद्धरण सूत्र यह एक पूर्वानुमानित कथन नहीं है, लेकिन जेम्स 2:21-23 और मैथ्यू 2:17-18 दोनों इन दो पुराने नियम के ग्रंथों का संदर्भ देते हैं जो "भविष्यवाणी" पाठ नहीं थे, उन्हें संदर्भित करने के लिए इस क्रिया प्लेरोनो का उपयोग करें / क्या इसका मतलब यह है कि उन्हें गलत तरीके से भविष्यवाणियों के रूप में उद्धृत किया गया था? या इसका मतलब यह है कि मैथ्यू की व्याख्या का तरीका नाजायज था? यह वही है जो हैरिस का सुझाव है, उनका सुझाव है कि समस्या *प्लेरो के अनुवाद के कारण* "पूर्ण" के रूप में होती है। निश्चित रूप से कई संदर्भों में इसका यही अर्थ है। लेकिन हैरिस का तर्क यह है कि

इसका हमेशा अर्थ होता है "पूरा करना" इतना निश्चित नहीं है और कभी-कभी ऐसा लगता है कि इसे पूर्ण भविष्यवाणी के फार्मूले के बजाय उद्धरण के फार्मूले के रूप में उपयोग किया जाता है। उस व्यापक उपयोग को ध्यान में रखा जाना चाहिए, लेकिन फिर आम तौर पर *हिना किसी न किसी रूप में आता है कृपया देखें* कि भविष्यवाणी कब होती है, लेकिन आपको सावधान रहना होगा।

एच। गेग्रैटि उद्धरण सूत्र दूसरा सूत्र *गेग्राटाई* है, "यह लिखा गया है।" फिर, यह भी अक्सर पूर्ति दर्शाता है। हालाँकि, कभी-कभी यह केवल संदर्भ होता है। मरकुस 1:2 में पूर्णता है, "यह यशायाह भविष्यद्वक्ता में लिखा है" और फिर यशायाह 40:3 से एक उद्धरण, "मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजूंगा, जो तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा; जंगल में किसी की आवाज़ सुनाई दी, 'प्रभु के लिए रास्ता तैयार करो, उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ।' तो जॉन आया, तो, उस कविता में एक पूर्णता है। मैथ्यू 4:4 में एक संदर्भ; "यीशु ने उत्तर दिया, ' *यह लिखा है* : "मनुष्य केवल रोटी से नहीं, परन्तु परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर एक वचन से जीवित रहता है।" यह व्यवस्थाविवरण 8:3 का एक उद्धरण है, जो कोई पूर्वानुमानित कथन नहीं है। लेकिन वह एक उद्धरण दे रहा है।

मैं। लेगो

आइए *लेगो के रूपों पर चलते हैं* (मैं कहता हूँ)। जब यह अपने आप में खड़ा होता है, तो यह आमतौर पर एक ऐतिहासिक संदर्भ का संकेत होता है, भविष्यवाणी और पूर्ति का नहीं। मत्ती 22:31 को देखें, "परन्तु मरे हुआओं के पुनरुत्थान के विषय में क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने तुम से क्या *कहा?*" और फिर निर्गमन 3:6 का उद्धरण है, "मैं इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ। वह मरे हुआओं का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर है।" यह बस पुराने नियम के एक पाठ का संदर्भ है। अधिनियम 7:48, "हालाँकि, परमप्रधान मनुष्यों द्वारा बनाए गए घरों में नहीं रहता है, जैसा कि भविष्यद्वक्ता *कहता है*।" फिर उद्धरण यशायाह 66:1 है, "स्वर्ग मेरा सिंहासन है, पृथ्वी मेरे चरणों की

चौकी है। वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिये बनाओगे?" प्रभु कहते हैं। 'मेरा विश्राम स्थान कहाँ होगा?" यह कोई पूर्वानुमानित कथन नहीं है। तो यह सब 3 के अंतर्गत है, "पूर्ति उद्धरण पर ध्यान दें।" वे निश्चित रूप से संकेतकों और पूर्वानुमानित अंशों की पहचान करने में मदद करेंगे, जो पूर्ति का एक बिंदु है लेकिन आपको इससे सावधान रहना होगा।

4. दोहरी पूर्ति या दोहरे संदर्भ के विचार से बचें

4, "दोहरी पूर्ति या दोहरे संदर्भ के विचार से बचें।" मुझे लगता है कि जब आप किसी भविष्यवाणी की पूर्ति की तलाश में हैं, तो अंतर्निहित व्याख्यात्मक सिद्धांत के रूप में दोहरे संदर्भ या दोहरे अर्थ के विचार को अपना अच्छा नहीं है। दूसरे शब्दों में, हमें दोहरे संदर्भ की तलाश में नहीं भटकना चाहिए। आपको यह नहीं मानना चाहिए कि दी गई भविष्यवाणी एक ही समय में दो या दो से अधिक अलग-अलग घटनाओं को समान शब्दों के साथ संदर्भित कर सकती है। यदि आप ऐसा करते हैं तो इसका मतलब है कि आप मान रहे हैं कि एक ही संदर्भ में एक ही शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं। मुझे लगता है कि यह व्याख्याशास्त्र की दृष्टि से एक खतरनाक बात है, यह कहना कि एक ही शब्द और एक ही संदर्भ के कई अर्थ होते हैं जब तक कि इसमें किसी प्रकार का दोहरा अर्थ न हो, लेकिन यह व्याख्याशास्त्र का सामान्य नियम नहीं है। हम उस तरह से भाषा का प्रयोग नहीं करते। आम तौर पर जब कोई बयान दिया जाता है तो उस बयान से एक विशिष्ट अर्थ निकलता है और सुनने वाले को वही अर्थ समझ में आता है। मुझे लगता है कि यह अवधारणा न केवल भविष्य कहनेवाला सभी बाइबिल कथनों पर लागू होती है, बल्कि यह निश्चित रूप से भविष्य कहनेवाला रूपों पर भी लागू होती है। आप किसी दिए गए कथन के एकल अर्थ या अर्थ की तलाश करते हैं, आप बाइबिल के कथनों के एकाधिक अर्थ या अर्थ की तलाश नहीं करते हैं।

एक। ड्वाइट पेंटेकोस्ट - दोहरा संदर्भ ड्वाइट पेंटेकोस्ट के तहत अपने उद्धरणों में पृष्ठ 28 को देखें, जिन्होंने *थिंग्स टू कम* नामक युगांतशास्त्र पर एक खंड लिखा था जिसमें वह "दोहरे

संदर्भ के नियम" की बात करते हैं। उनके दृष्टिकोण से, "भविष्यवाणी शास्त्र की व्याख्या में दोहरे संदर्भ के कानून की तुलना में कुछ कानूनों का पालन करना अधिक महत्वपूर्ण है। दो घटनाएँ, जो अपनी पूर्ति के समय से व्यापक रूप से भिन्न हैं, को एक भविष्यवाणी के दायरे में एक साथ लाया जा सकता है। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि भविष्यवक्ता के पास अपने दिन के साथ-साथ भविष्य के समय के लिए भी एक संदेश था। दो व्यापक रूप से अलग-अलग घटनाओं को भविष्यवाणी के दायरे में लाकर दोनों उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है। फिर वह यहां हॉर्न नाम के एक अन्य व्यक्ति को उद्धृत करता है, "एक ही भविष्यवाणियों का अक्सर दोहरा अर्थ होता है, और विभिन्न घटनाओं का उल्लेख होता है, एक निकट की, दूसरी दूर की; एक लौकिक, दूसरा आध्यात्मिक या शायद शाश्वत। इस प्रकार भविष्यवक्ताओं के सामने अनेक घटनाएँ होती हैं, उनकी अभिव्यक्तियाँ आंशिक रूप से एक पर और आंशिक रूप से दूसरे पर लागू हो सकती हैं। परिवर्तन करना हमेशा आसान नहीं होता है। जो पहले में पूरा नहीं हुआ है उसे हमें दूसरे पर लागू करना चाहिए और जो पहले ही पूरा हो चुका है उसे अक्सर पूरा किया जाना बाकी माना जा सकता है।"

अब आप इसे कैसे कार्यान्वित करते हैं, आपको विशिष्ट अंशों को देखने की आवश्यकता है, लेकिन यही अवधारणा है। यदि आप एरिक सॉयर के पास जाते हैं तो पी पर अगली प्रविष्टि। 29. सॉयर कहते हैं, "हर चीज़ ऐतिहासिक रूप से अनुकूलित है और फिर भी एक ही समय में अनंत काल से जुड़ी हुई है। सब कुछ एक साथ मानवीय और दिव्य, लौकिक और अति-लौकिक है।" और, भविष्यवक्ताओं के बारे में बोलते हुए, "वे बेबीलोन से वापसी की बात करते हैं और साथ ही भविष्य में शांति के राज्य का उद्घाटन करने के लिए इज़राइल की सभा का वादा करते हैं (यशायाह 11:11-16)।" हमने अभी यशायाह 11:11-16 के बारे में बात की। आप देखिए वह जो कह रहा है वह यह है कि भविष्यवाणी निर्वासन से वापसी के बारे में बात कर रही है। लेकिन साथ ही और उन्हीं शब्दों में यह भविष्य में शांति के राज्य की बात भी कर रहा है- युगांतशास्त्रीय। इसमें समान शब्दों के लिए दोहरा अर्थ, दोहरा संदर्भ है।

का परिचय नामक खंड में 1993 में वर्ड द्वारा प्रकाशित क्लेन, ब्लॉमबर्ग और हबर्ड

द्वारा *बाइबिल की व्याख्या*, वे कहते हैं, "हमें भविष्यवाणी की दूसरी विशेषता जोड़नी चाहिए: इसकी दो पूर्तियाँ हो सकती हैं, एक पैगंबर के जीवनकाल के करीब और एक उसके बहुत पहले।" जब आप किसी भविष्यवाणी को देखते हैं और उसकी पूर्ति के लिए पूछते हैं, तो एक निकट भविष्य में और एक दूर के भविष्य में होती है। उन सभी का संदर्भ एक ही कथन में दिया गया है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो तर्क देते हैं कि यह सिद्धांत, या जैसा कि पेंटेकोस्ट इसे कहता है, "दोहरे संदर्भ का कानून" एक सिद्धांत है जिसका उपयोग भविष्यवाणी कथनों की व्याख्या में किया जाना चाहिए - कई संदर्भों की तलाश में।

बी। वत्रॉय की प्रतिक्रिया मैं जो सुझाव दे रहा हूँ, मुझे नहीं लगता कि वह वैध है। यह इस बात पर वापस आता है कि भाषा कैसे काम करती है। क्या हम भाषा का उपयोग एक ही शब्द और एक ही संदर्भ के लिए करते हैं लेकिन दो अलग-अलग बातें कहते हैं? आप व्याख्या के इतिहास में पीछे जाएं, लूथर और केल्विन इसके खिलाफ जोरदार तर्क देते हैं, लेकिन निश्चित रूप से वे रूपक व्याख्या की पृष्ठभूमि के खिलाफ तर्क दे रहे हैं, क्या आपके पास कई अर्थ हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक दुभाषिया का पहला दायित्व उसके लेखक द्वारा इच्छित पाठ के अर्थ तक पहुंचना है। लूथर ने कहा, "केवल एकल, उचित, मूल अर्थ, जिस अर्थ में इसे लिखा गया है, वह अच्छे धर्मशास्त्री बनाता है। पवित्र आत्मा स्वर्ग और पृथ्वी पर सबसे सरल लेखक और वक्ता है। इसलिए उनके शब्दों में कोई एकवचन और सरल भाव नहीं हो सकता, जिसे हम लिखित या शाब्दिक रूप से उच्चारित भाव कहते हैं।"

वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ अध्याय 1 खंड 9 में पवित्रशास्त्र और उसकी व्याख्या के बारे में एक दिलचस्प बयान है और मैं आपको कुछ संक्षिप्त कथन पढ़ना चाहता हूँ, "पवित्रशास्त्र की व्याख्या का अचूक नियम स्वयं पवित्रशास्त्र है; और इसलिए, जब किसी धर्मग्रंथ के सही और गलत अर्थ के बारे में कोई प्रश्न होता है" और तब एक कोष्ठक कथन होता है जिसे मैं प्राप्त करना चाहता था, "(जो कई गुना नहीं है, बल्कि एक है), इसे खोजा जा सकता है और अन्य स्थानों द्वारा जाना जाता है जो अधिक स्पष्ट रूप से बोलते हैं। तो आप देख रहे हैं कि यहां जो बात कही जा रही है वह यह है कि कुछ अंशों की व्याख्याएं अधिक

स्पष्ट हैं। आप कम स्पष्ट की सहायता के लिए अधिक स्पष्ट का उपयोग करते हैं। लेकिन उस बयान को देने के संदर्भ में वह कोष्ठक कथन है, "जब किसी भी धर्मग्रंथ (जो कई गुना नहीं है, बल्कि एक है) के सही और गलत अर्थ का सवाल है, तो इसे अन्य स्थानों द्वारा खोजा और जाना जा सकता है जो बोलते हैं और स्पष्टता से।" मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक सिद्धांत है।

सी। जॉन ब्राइट के अर्थ के कई स्तर आपके उद्धरण पृष्ठ 25 को देखें। यह जॉन ब्राइट की पुस्तक, *द अथॉरिटी ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट से लिया गया है*। वह कहते हैं, "आम तौर पर यह माना जाता था कि पवित्रशास्त्र में अर्थ के विभिन्न स्तर होते हैं। ओरिजन के पास मनुष्य के स्वभाव की कथित ट्राइकोटोमी के अनुरूप तीन प्रकार की भावना थी: शरीर, आत्मा और आत्मा। एक शाब्दिक या भौतिक अर्थ था (अर्थात्, शब्द अपने स्पष्ट अर्थ में क्या कहते हैं), एक नैतिक या उष्णकटिबंधीय अर्थ, (अर्थात्, ईसाई आत्मा का एक अर्थ, जो इस प्रकार आचरण के लिए शिक्षा और मार्गदर्शन देता है), और एक आध्यात्मिक या रहस्यमय भावना। बाद में, फिर भी एक चौथी इंद्रिय जोड़ी गई।" सुधारक और वेस्टमिंस्टर कन्फ़ेशन इसी पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं, चौथा भाव, "एनागोगिक या एस्केटोलॉजिकल सेंस।" इस प्रकार, शास्त्रीय उदाहरण देने के लिए, 'जेरूसलम' शब्द को मध्य युग में चार अर्थों के रूप में समझा जाता था: वस्तुतः यह यहूदा में नाम के उस शहर को संदर्भित करता था, उष्णकटिबंधीय रूप से, वफादार ईसाई आत्मा को, रूपक रूप से (रहस्यमय रूप से), को मसीह का चर्च, और ईश्वर के स्वर्गीय शहर के अनुरूप, जो हमारा शाश्वत घर है। एक ही पाठ में इन सभी चार अर्थों में शब्द को समझना संभव था, हालाँकि आवश्यक नहीं था।

तो वहां आपके पास दोहरा संदर्भ नहीं है, आपके पास चार गुना संदर्भ है। "लेकिन आध्यात्मिक अर्थ की तुलना में शाब्दिक अर्थ की बहुत कम परवाह करने की प्रवृत्ति थी, क्योंकि पाठ का सही अर्थ आध्यात्मिक है। वास्तव में, कुछ धर्मग्रंथों की - ऐसा माना जाता था - शाब्दिक रूप से व्याख्या नहीं की जा सकती, क्योंकि यह उन चीजों के बारे में बताता है जो अनैतिक हैं और इस प्रकार भगवान के लिए अयोग्य हैं (व्यभिचार, अनाचार, हत्या,

आदि), और अधिकांश धर्मग्रंथ बहुत प्राचीन या बहुत तुच्छ हैं, यदि शाब्दिक रूप से लिया जाए, तो दैवीय रहस्योद्घाटन का एक उपयुक्त माध्यम (लंबी वंशावली, पशु बलि के नियम, तम्बू के आयाम, आदि) ऐसे मार्ग अपना सही अर्थ तभी प्राप्त करते हैं जब आध्यात्मिक रूप से व्याख्या की जाती है। जब आप रूपक लगाते हैं तो आप इस प्रकार के अंशों में आध्यात्मिक अर्थ डालते हैं। “परिणाम पवित्रशास्त्र, विशेष रूप से पुराने नियम का अनियंत्रित रूप से रूपकीकरण था...लेकिन काल्पनिक व्याख्याओं का सिलसिला मंच और व्याख्याता के डेस्क से समान रूप से अनियंत्रित रूप से प्रवाहित होता रहा। धर्मग्रंथ से जो अर्थ प्राप्त किए जा सकते थे वे सीमित थे, ऐसा कोई भी उचित रूप से महसूस कर सकता है, केवल दुभाषिया की सरलता से। यदि आपके पास बहुत चतुर व्यक्ति है तो आप किसी भी कथन में सभी प्रकार के अर्थ ढूंढ सकते हैं। “उनकी जो भी विसंगतियां रही हों (और वे कभी-कभी असंगत भी थीं), दोनों महान सुधारकों [लूथर और केल्विन] ने रूपक को सैद्धांतिक रूप से खारिज कर दिया - बार-बार और सबसे मजबूत भाषा में। पिछले अध्याय में लूथर और केल्विन दोनों को इस आग्रह में उद्धृत किया गया था कि यह दुभाषिया का कर्तव्य है कि वह अपने लेखक द्वारा इच्छित पाठ के स्पष्ट अर्थ पर पहुँचे।

डी। लेखकीय आशय और एकल अर्थ अब इसे "लेखकीय आशय" कहा जाने लगा है और यह एक विवादास्पद मुद्दा बन गया है। आप कितनी दूर जाते हैं? वाल्टर कैसर ने इसके बारे में बहुत कुछ लिखा है और उनका मानना है कि केवल वही व्याख्या वैध है जो लेखक का इरादा है। अब मैं उससे सहमत हूँ कि वह वहां क्या करने की कोशिश कर रहा है और निश्चित रूप से यह सही है। मुझे लगता है कि वह इस बात पर ध्यान नहीं देते कि पवित्रशास्त्र में एक से अधिक लेखक हैं। इस अर्थ में कि एक मानव लेखक है लेकिन मानव लेखक ने जो लिखा और कहा है उसका पर्यवेक्षण करने वाला पवित्र आत्मा भी है। मुझे लगता है कि यह संभव है कि मानव लेखक "जितना वह जानता था उससे बेहतर" बोल सके। दूसरे शब्दों में, वह ऐसी बातें कह सकता था जिस पर उसे स्वयं विश्वास या समझ नहीं था और इसलिए वह उसका इरादा नहीं था; फिर भी इसका पर्यवेक्षण पवित्र आत्मा द्वारा

किया गया था जो उन मुद्दों को संबोधित कर रहा था जो भविष्यवक्ता की संपूर्ण समझ से परे थे। इसलिए मैंने वहां एक योग्यता रखी है, लेकिन यह पवित्रशास्त्र के किसी भी कथन में एकाधिक अर्थों की तलाश के लिए थोक का दरवाजा नहीं खोलता है। ब्राइट कह रहे थे, “यह दुभाषिया का कर्तव्य है कि वह लेखक द्वारा इच्छित पाठ के स्पष्ट अर्थ तक पहुंचे। इसी तरह के उद्धरण, जिनमें उन्होंने रूपक के प्रति अपनी अवमानना व्यक्त की थी, लगभग इच्छानुसार प्रेरित किए जा सकते थे। लूथर, जिनकी शब्दावली किसी भी तरह से कमजोर नहीं थी, विशेष रूप से ज्वलंत है। उन्होंने घोषणा की कि ओरिजन के रूपक 'इतनी गंदगी के लायक नहीं हैं'; वह रूपक को विभिन्न प्रकार से 'पवित्रशास्त्र पर मैल', हमें लुभाने के लिए एक 'वेश्या', 'एक बंदर का खेल' कहता है, जो कुछ ऐसा है जो पवित्रशास्त्र को 'मोम की नाक' में बदल देता है (अर्थात् जिसे किसी भी वांछित आकार में मोड़ा जा सकता है), साधन जिससे शैतान अपनी चाल में आ जाता है। वह घोषणा करता है (भजन 22 की व्याख्या करते हुए) कि पवित्रशास्त्र मसीह का वस्त्र है और वह रूपक इसे 'चीथड़े-चिथड़े' कर देता है। 'कैसे,' वह चिल्लाता है, 'जब आप पवित्रशास्त्र के अर्थ को अनिश्चित बनाते हैं तो क्या आप निश्चितता के साथ विश्वास सिखाएंगे?' केल्विन भी उतना ही कठोर है। एक से अधिक बार, उन्होंने रूपक व्याख्याओं को पवित्रशास्त्र के अधिकार को कमजोर करने के लिए शैतान का आविष्कार कहा है। अन्यत्र, वह उन्हें 'बच्चे', 'दूर की कौड़ी' के रूप में वर्णित करता है, और वह घोषणा करता है कि ऐसे 'तुच्छ अनुमानों' में लिप्त होने की तुलना में अज्ञानता को स्वीकार करना बेहतर होगा। वह घोषणा करते हैं कि दुभाषिया को स्पष्ट अर्थ लेना चाहिए और यह अनिश्चित है कि उसे वह व्याख्या अपनानी चाहिए जो संदर्भ के लिए सबसे उपयुक्त हो।

1. सुधारक और एकल भावना इसलिए, धर्मग्रंथ के कथनों में एकाधिक इंद्रियों या अर्थों के इस प्रश्न पर सुधारक अपनी राय में बहुत मजबूत हैं जिन्हें वे अस्वीकार करते हैं। लेकिन मुद्दा गायब नहीं हुआ है। बर्नार्ड राम और व्याख्या पर उनकी पुस्तक कहती है, "सबसे लगातार व्याख्यात्मक पापों में से एक है पवित्रशास्त्र के एक अंश पर दो व्याख्याएँ

करना, शाब्दिक अर्थ की शक्ति को तोड़ना और भगवान के वचन को अस्पष्ट करना।" यदि हमें इसे समझना है, तो हम जे. बार्टन पायने के *बाइबिल भविष्यवाणी विश्वकोश के पृष्ठ 27 को फिर से देख रहे हैं*। अपने परिचयात्मक खंड में वे कहते हैं, "दो आधुनिक आंदोलनों को विशेष रूप से दोहरे अर्थ की व्याख्या की अपील की विशेषता दी गई है। एक ओर उदारवाद खड़ा है, एक प्रामाणिक भविष्यवाणी को समग्र रूप से नकारने के साथ... दूसरी ओर युगवादवाद खड़ा है, इसकी इस धारणा के साथ कि पुराने नियम के लेखन के साथ चर्च की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। तथाकथित दोहरी पूर्ति के विपरीत एक (नए नियम) अर्थ की अवधारणा को बनाए रखने के तीन बुनियादी कारण सामने आते हैं। पहला व्याख्याशास्त्र की प्रकृति से ही उत्पन्न होता है। 17^{वीं} सदी के प्यूरिटन जॉन ओवेन ने बहुत पहले यह कहावत रखी थी, 'यदि धर्मग्रंथ के एक से अधिक अर्थ हैं, तो इसका कोई अर्थ नहीं है;' और हाल के अधिकांश लेखक इस बात से सहमत हैं कि दोहरी पूर्ति वस्तुनिष्ठ व्याख्या के साथ असंगत है। दूसरे शब्दों में, ओवेन जो कह रहा है वह यह है कि यदि धर्मग्रंथों में एक से अधिक अर्थ हैं, तो उनका कोई अर्थ नहीं है। यह व्याख्याशास्त्र को अनिश्चित बना देता है। यदि आपके पास एकाधिक इंद्रियाँ हैं, तो पाठ का अर्थ अनिश्चित हो जाता है।

फेयरबैर्न का कहना है कि क्राइस्ट का वास्तव में क्या मतलब है वह एक चीज है और यदि कई चीजें हैं, तो हेर्मेनेयुटिक्स अनिश्चित होगा। "फेयरबैर्न स्वयं मानते हैं कि इस तरह का दृष्टिकोण आवेदन की अनिश्चितता का कारण बनता है और व्यावहारिक रोजगार के लिए अर्थ को बहुत सामान्य बना देता है।" यह तर्क देने का उनका पहला कारण है कि हमें एक इंद्रिय की तलाश करनी चाहिए, न कि एकाधिक इंद्रियों की।

2. एनटी और एकल अर्थ

दूसरा कारण न्यू टेस्टामेंट का साक्ष्य है। "जैसा कि लॉकहार्ट ने भजन 16 के प्रति अधिनियम 2:29-31 के निर्णायक रवैये का वर्णन किया है, 'प्रेरित पतरस का तर्क है कि डेविड खुद का उल्लेख नहीं कर सका, क्योंकि वह मर गया और उसने भ्रष्टाचार देखा, लेकिन वह एक भविष्यवक्ता था, और उसने यीशु को पहले ही देख लिया था भ्रष्टाचार के

बिना उठाया जाना चाहिए... प्रेरित के अर्थ में गलती करना आसान नहीं लगता।' टेरी इस प्रकार निष्कर्ष निकालते हैं, 'पवित्रशास्त्र के शब्दों का उद्देश्य एक निश्चित अर्थ होना था, और हमारा पहला उद्देश्य उस अर्थ की खोज करना और उसका कठोरता से पालन करना होना चाहिए... हम इस सिद्धांत को निराधार और भ्रामक मानते हुए खारिज करते हैं कि ऐसे मसीहाई भजन... का दोहरा अर्थ है, और पहले डेविड या किसी अन्य शासक का संदर्भ लें, और दूसरा ईसा मसीह का।' वास्तव में नए नियम को पढ़ने से यह कहना सुरक्षित है कि किसी को दोहरी पूर्ति की संभावना पर कभी संदेह नहीं होगा।

3. ओटी और एकल अर्थ

“एकल पूर्ति का तीसरा कारण पुराने नियम के संदर्भ से साक्ष्य है। उदाहरण के लिए, फेयरबैर्न मानते हैं कि उनका सिद्धांत एकाधिक अर्थ कभी-कभी उन ठोस मामलों में काम करने में विफल रहता है जहां इसकी उपस्थिति दिखाने का प्रयास किया जाता है। टेरी स्पष्ट रूप से कहते हैं, 'भजन 2 की भाषा दाऊद या सुलैमान, या किसी अन्य सांसारिक शासक पर लागू नहीं होती... यशायाह 7:14 यीशु मसीह के जन्म के साथ पूरा हुआ (मैथ्यू 1:22), और कोई भी व्याख्याता कभी भी ऐसा नहीं कर सका पिछली पूर्ति साबित करने के लिए।

एक। यशायाह 7:14 अब यशायाह 7:14 उन ग्रंथों में से एक है जहां लोग अक्सर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इसमें दोहरा संदर्भ है। आहाज और यशायाह के समय में पैदा हुए एक बच्चे का संदर्भ, और साथ ही मसीह का संदर्भ। लेकिन पायने यहां यह तर्क दे रहे हैं कि यशायाह 7:14 में एक ही संदर्भ है। केवल एक ही महिला है जिसका उल्लेख लेखक कर सकता है। वहाँ एक बच्चा पैदा हुआ है जो हमारे साथ भगवान था। अब, माना कि, यदि आप पूरे संदर्भ में वापस जाते हैं और यशायाह 7:14 में चर्चा करते हैं, तो इसमें कुछ समस्याएं हैं। यह अधिक कठिन मार्गों में से एक है। मैं आज इसे करने के लिए समय नहीं लेना चाहता, लेकिन हम कुछ अन्य अनुच्छेदों के कुछ उदाहरण देखेंगे।

बी। व्यवस्थाविवरण 18 मुझे लगता है कि वास्तव में एक कठिन मार्ग व्यवस्थाविवरण 18 है। हम पहले ही उस पर गौर कर चुके हैं। अब क्या यह भविष्यवाणी आंदोलन या ईसा मसीह, या किसी तरह दोनों का संदर्भ है? निःसंदेह, इसमें टाइपोलॉजिकल अप्रत्यक्ष संदर्भ है जो अर्थ की एकलता से संबंधित है लेकिन फिर भी इसमें मसीह शामिल है। लेकिन व्यवस्थाविवरण 18, यशायाह 7:14, और मलाकी के अंतिम छंद - वे कठिन हैं। मसीहाई भजनों के कुछ गीत डेविड या सोलोमन के संदर्भ में और ईसा मसीह के संदर्भ में हैं। लेकिन उनमें से बहुत सारे ऐसे नहीं हैं जो वास्तव में कठिन हों।

4. टेरी - सिंगल सेंस

अपने उद्धरणों में पृष्ठ 28 को देखें, पृष्ठ के नीचे और पृष्ठ 29 पर। फिर मैं पाठों के कुछ उदाहरण देखना चाहता हूँ। यह मिल्टन टेरी की *बाइबिल हेर्मेनेयुटिक्स से है*। यह काफी लंबा और कुछ हद तक जटिल है, लेकिन मुझे लगता है कि वह यहां मुद्दों को उजागर करता है। इसलिए मैं इसे सीधे पढ़ने के लिए समय लेना चाहता था। वह कहते हैं, " अब हमने जो व्याख्यात्मक सिद्धांत निर्धारित किए हैं, वे आवश्यक रूप से इस सिद्धांत को बाहर करते हैं कि पवित्रशास्त्र की भविष्यवाणियों में एक गुप्त या दोहरा अर्थ होता है। कुछ लोगों द्वारा यह आरोप लगाया गया है कि चूंकि ये दैवज्ञ स्वर्गीय और दिव्य हैं, इसलिए हमें उनमें कई गुना अर्थ खोजने की उम्मीद करनी चाहिए। उनकी आवश्यकताएँ अन्य पुस्तकों से भिन्न होनी चाहिए। इसलिए न केवल दोहरे अर्थ का सिद्धांत, बल्कि तीन गुना और चार गुना अर्थ का सिद्धांत उत्पन्न हुआ है, और रब्बी इस हद तक चले गए कि उन्होंने जोर देकर कहा कि "पवित्रशास्त्र के प्रत्येक शब्द में अर्थ के पहाड़ हैं।"

हम आसानी से स्वीकार कर सकते हैं कि धर्मग्रंथ कई गुना व्यावहारिक *अनुप्रयोगों में सक्षम हैं*; अन्यथा वे सिद्धांत, सुधार और धार्मिकता के निर्देश के लिए इतने उपयोगी नहीं होंगे। लेकिन जैसे ही हम इस सिद्धांत को स्वीकार करते हैं कि पवित्रशास्त्र के कुछ हिस्सों में एक गुप्त या दोहरा अर्थ होता है, हम पवित्र खंड में अनिश्चितता का एक तत्व पेश करते हैं, और सभी वैज्ञानिक व्याख्याओं को अस्थिर कर देते हैं। डॉ. ओवेन कहते हैं, 'यदि धर्मग्रंथ के

एक से अधिक अर्थ हैं, तो इसका कोई अर्थ नहीं है।' 'मैं मानता हूँ,' राइल कहते हैं, 'कि पवित्रशास्त्र के शब्दों का एक निश्चित अर्थ होना चाहिए था, और हमारा पहला उद्देश्य उस अर्थ की खोज करना और उसका कठोरता से पालन करना होना चाहिए... यह कहना कि शब्दों का कोई मतलब केवल इसलिए होता है उन्हें यह कहकर प्रताड़ित किया जा सकता है कि यह पवित्रशास्त्र को संभालने का सबसे अपमानजनक और खतरनाक तरीका है।'

स्टुअर्ट कहते हैं, 'व्याख्या की यह योजना भाषा के सामान्य नियमों को त्याग देती है और अलग रख देती है। बाइबल के अनुसार, किसी भी पुस्तक, ग्रंथ, पत्र, प्रवचन, या वार्तालाप में, कभी भी किसी एक व्यक्ति द्वारा अपने साथी प्राणियों को लिखा, प्रकाशित या संबोधित नहीं किया जा सकता है (जब तक कि खेल के तरीके से, या धोखा देने के इरादे से नहीं), दोहरा भाव पाया जाए। वास्तव में, सभी भाषाओं में, शायद, व्यंग्य, रहस्य, *दोहरे अर्थ वाले वाक्यांश* और इसी तरह के वाक्यांश मौजूद हैं; ऐसे बुतपरस्त दैवज्ञों की बहुतायत रही है जो दो व्याख्याओं के प्रति संवेदनशील थे लेकिन इन सबके बीच भी वास्तविकता में एक से अधिक अर्थ या अर्थ कभी नहीं रहे और न ही ऐसी कोई योजना बनी कि होनी चाहिए। भाषा की अस्पष्टता का सहारा पाठक या श्रोता को गुमराह करने के लिए, या भविष्यवक्ताओं की अज्ञानता को छिपाने के लिए, या भविष्य की अत्यावश्यकताओं के बीच अपने श्रेय को सुनिश्चित करने के लिए जानबूझकर लिया गया है और किया गया है; लेकिन यह शब्दों के गंभीर और *प्रामाणिक दोहरे अर्थ* वाले मामले से बिल्कुल अलग है। न ही हम एक पल के लिए, धर्मग्रंथों की गरिमा और पवित्रता का उल्लंघन किए बिना, यह मान सकते हैं कि प्रेरित लेखकों की तुलना पहेलियों, उलझनों, पहेलियों और अस्पष्ट बुतपरस्त भविष्यवाणियों के लेखकों से की जाए।'

5. प्रकार और प्रति-प्रकार दृष्टिकोण

कुछ लेखकों ने इस विषय को प्रकार और प्रतिरूप के सिद्धांत से जोड़कर भ्रमित कर दिया है।" अब ध्यान दें कि वह यहां क्या करता है। "चूंकि पुराने नियम के कई व्यक्ति और घटनाएं आने वाले महान लोगों की तरह थीं, इसलिए उनका सम्मान करने वाली भाषा

को दोहरे अर्थ में सक्षम माना जाता है।" दूसरे शब्दों में, प्रकार और प्रतिप्रकार के स्थान पर संस्थाएँ, व्यक्ति या घटनाएँ - प्रतीकों के रूप में ठोस इकाइयाँ या वास्तविकताएँ जो सत्य को चित्रित करती हैं जो उन संस्थाओं, घटनाओं या व्यक्तियों का प्रतीक होंगी - कुछ व्याख्याकार जो करते हैं वह वास्तव में एक टाइपोलॉजिकल भाषा की बात करता है। यह एक महत्वपूर्ण अंतर है। देखिए वह यहां क्या कह रहे हैं: "कुछ लेखकों ने इस विषय को प्रकार और प्रतिरूप के सिद्धांत से जोड़कर भ्रमित कर दिया है। जितने भी लोग हैं, पुराने नियम की घटनाएँ आने वाली महान घटनाओं की तरह थीं, इसलिए उनका सम्मान करने वाली भाषा को दोहरे अर्थ में सक्षम माना जाता है। तो दूसरे शब्दों में, भाषा टाइपोलॉजिकल भाषा है। "ऐसा माना जाता है कि दूसरा स्तोत्र डेविड और क्राइस्ट दोनों को संदर्भित करता है, और यशायाह 7:14-16 भविष्यवक्ता और मसीहा के समय में पैदा हुए एक बच्चे को संदर्भित करता है। भजन 45 और 72 में, सुलैमान और ईसा मसीह के लिए दोहरा संदर्भ और यशायाह 34:5-10 में एदोम के खिलाफ भविष्यवाणी को अंतिम दिन के सामान्य न्याय को समझने के लिए माना जाता है। परन्तु यह देखा जाना चाहिए कि प्रकार के मामले में धर्मग्रंथ की भाषा में कोई दोहरा अर्थ नहीं है। प्रकार स्वयं ऐसे हैं क्योंकि वे आने वाली चीजों को पूर्व निर्धारित करते हैं और इस तथ्य को किसी विशेष परिच्छेद में भाषा के उपयोग की भावना के प्रश्न से अलग रखा जाना चाहिए।

6. एक मॉडल के रूप में व्यवस्थाविवरण 18 क्या आपको बात समझ में आई? यदि आप उस व्यवस्थाविवरण 18 परिच्छेद पर वापस जाएं, तो वहां की भाषा किस बारे में बात कर रही है? आप जानते हैं कि मेरा निष्कर्ष क्या था। भाषा पुराने नियम के समय में भविष्यसूचक संस्था के बारे में बात कर रही है क्योंकि पहले और बाद के संदर्भ में यह बात की जा रही है कि आपको बुतपरस्त भविष्यवक्ताओं के पास नहीं जाना चाहिए। यह कह रहा है कि उन्हें सच्चे और झूठे भविष्यवक्ताओं में अंतर करने के लिए एक परीक्षा दी गई है। मूसा के चले जाने के बाद हम परमेश्वर के रहस्योद्घाटन को कैसे प्राप्त करेंगे? तो भाषा भविष्यवाणी क्रम के बारे में बात कर रही है। भविष्यवाणी का क्रम स्वयं प्रतीकात्मक हो सकता है क्योंकि ये

ईश्वर का वचन बोलने वाले मानवीय उपकरण हैं। मसीह ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं जो हमारे लिए ईश्वर का वचन लाते हैं। तो टाइपोलॉजिकल रूप से, भविष्यसूचक संस्था मसीह की ओर इशारा कर सकती है, लेकिन यह वह भाषा नहीं है जिसे आप देखते हैं, यह टाइपोलॉजिकल भाषा नहीं है। यह भविष्यवक्ता संस्था है।

7. भजन 2 पर टेरी और अन्य। यदि आप टाइपोलॉजिकल भाषा को स्वीकार करते हैं, तो आपने वास्तव में आध्यात्मिकता के इस सिद्धांत को स्वीकार कर लिया है, और फिर आप यशायाह 11 के साथ वही कर सकते हैं जो यंग करता है। यह निर्वासन के बारे में बात नहीं कर रहा है, यहूदी लोग अपनी मातृभूमि में वापस आ रहे हैं, यह भौतिक वास्तविकताओं के बारे में बात नहीं कर रहा है, उन्हें लगता है कि यह आध्यात्मिक वास्तविकताओं के बारे में बात कर रहा है। यह टाइपोलॉजिकल भाषा है। टेरी इसे स्वीकार नहीं करते, लेकिन टाइपोलॉजिकल भाषा जैसी कोई वैध चीज़ होती है। वह कहते हैं, “हमने दिखाया है कि भजन 2 की भाषा डेविड या सोलोमन या किसी अन्य शासक पर लागू नहीं होती है। भजन 45 और 72 के बारे में भी यही कहा जा सकता है। यशायाह 7:14 ईसा मसीह के जन्म के समय पूरा हुआ था, और कोई भी प्रतिपादक कभी भी पिछली पूर्ति को साबित करने में सक्षम नहीं हुआ है। एदोम के विरुद्ध दैवज्ञ, बेबीलोन के विरुद्ध दैवज्ञ, सर्वनाशकारी भविष्यवाणी के अत्यधिक गढ़े हुए आवरण में लिपटा हुआ है, और दोहरे अर्थ के सिद्धांत को कोई वारंट नहीं देता है। मैथ्यू का चौबीसवां भाग, जिस पर आमतौर पर इस सिद्धांत का समर्थन करने के लिए भरोसा किया जाता है, पहले से ही किसी गुप्त या दोहरे अर्थ का कोई वैध सबूत प्रस्तुत नहीं करता है... पहली भविष्यवाणी एक अच्छा उदाहरण है। स्त्री के वंश और सर्प के वंश के बीच की शत्रुता को हजारों रूपों में प्रदर्शित किया गया है। परमेश्वर के लोगों से किए गए वादे के अनमोल शब्द प्रत्येक व्यक्तिगत अनुभव में कमोबेश पूर्णता पाते हैं। लेकिन ये तथ्य दोहरे अर्थ के सिद्धांत को कायम नहीं रखते हैं। प्रत्येक मामले में भाव प्रत्यक्ष और सरल है; अनुप्रयोग और चित्र अनेक हैं।” यह उत्पत्ति 3:15 का वादा है, “स्त्री का वंश साँप को कुचल डालेगा। मैं तेरे वंश और उसके वंश के बीच शत्रुता उत्पन्न करता हूँ।”

“प्रत्येक मामले में भाव प्रत्यक्ष और सरल है; अनुप्रयोग और चित्र अनेक हैं। इस तरह के तथ्य हमें प्रत्येक विशिष्ट कथन में दो या दो से अधिक अर्थ खोजने की उम्मीद के साथ सर्वनाशकारी भविष्यवाणियों में जाने और फिर घोषणा करने का अधिकार नहीं देते हैं: यह कविता बहुत पहले की एक घटना को संदर्भित करती है... बेबीलोन के खंडहर में इसकी आंशिक पूर्ति हुई थी, या एदोम, लेकिन यह भविष्य में इससे भी अधिक भव्य पूर्ति की प्रतीक्षा कर रहा है। बेबीलोन, या नीनवे, या यरूशलेम का निर्णय वास्तव में एक प्रकार हो सकता है, जो पूरी तरह से वैध है, अन्य सभी समान निर्णय, और सभी राष्ट्रों और युगों के लिए एक चेतावनी है; लेकिन यह कहने से बहुत अलग है कि जिस भाषा में उस फैसले की भविष्यवाणी की गई थी वह केवल आंशिक रूप से पूरा हुआ था जब बेबीलोन, या नीनवे, या यरूशलेम गिर गया था, और अभी भी इसके पूर्ण होने का इंतजार है। एक भेद है. क्या आप वहां तर्क की पंक्ति का पालन करते हैं?

8. चित्रण: डैनियल 8 में आपको एक उदाहरण देता हूं। मैं आपको दो दृष्टांत देना चाहता था लेकिन आज हमारे पास वह सब करने का समय नहीं होगा, लेकिन डैनियल 8 से एक दृष्टांत है। क्या आप में से कोई पुरानी मूल स्कोफील्ड बाइबिल से परिचित है? यदि आप दानिय्येल अध्याय 8 पढ़ते हैं - जो मुझे लगता है कि यह प्रकारों के बारे में बात करने वाला अध्याय है - दानिय्येल 8:9 में लिखा है, "उनमें से एक से एक छोटा सा सींग निकला जो दक्षिण की ओर पूर्व की ओर और सुहावने देश की ओर बहुत बड़ा हो गया था।" उस छोटे सींग के बारे में स्कोफील्ड बाइबिल में नोट कहता है, "यहां 175 ईसा पूर्व में एक भविष्यवाणी पूरी हुई थी" तो यह श्लोक 9 में इस छोटे सींग का संदर्भ है। जब आप अध्याय में आगे बढ़ते हैं तो आप श्लोक 15 में देखते हैं कि यह कहता है " मैं, दानिय्येल, ने वह स्वप्न देखा था, और उसका अर्थ ढूंढा, तब क्या देखता हूं कि एक मनुष्य का रूप मेरे सामने खड़ा है।" फिर उन्होंने इसका मतलब समझाया. जब आप इस छोटे सींग का अर्थ समझेंगे, जो श्लोक 24 और 25 में है, तो यह कहता है, "वह शक्तिशाली बनेगा, परन्तु अपनी शक्ति से नहीं। वह आश्चर्यजनक तबाही मचाएगा। वह शूरवीरों और पवित्र लोगों को नष्ट कर देगा।

वह छल को पनपने देगा। जब वे सुरक्षित महसूस करेंगे तो वह स्वयं को बड़ा करेगा, परन्तु वह बहुतों को नष्ट कर देगा। वह हाकिमों के हाकिम के विरुद्ध भी खड़ा होगा परन्तु वह बिना सुधार के तोड़ दिया जाएगा।” और इन नोट्स में टिप्पणी यह है कि छंद 24 और 25 एंटीओकस एपिफेन्स से आगे जाते हैं और स्पष्ट रूप से डैनियल 7 के छोटे सींग का उल्लेख करते हैं। और फिर एंटीओकस और जानवर दोनों का कथन है, लेकिन जानवर मुख्य रूप से छंद 24 और 25 में दिखाई देता है। तो डैनियल अध्याय 8 के छोटे सींग की व्याख्या में, जो मुझे लगता है कि यदि आप सभी विवरणों को देखते हैं तो यह एंटीओकस का संदर्भ है, जब आप छोटे सींग की व्याख्या करते हैं, तो यहां नोट छंद 24 और 25 कह रहा है एक ही समय में और एक ही शब्द में एंटीओकस और एंटीक्रिस्ट दोनों से बात कर रहे हैं - एक दोहरा संदर्भ। छंद 10-14 में से, जहां अध्याय के पहले खंड में आपको उस छोटे सींग के बारे में अधिक जानकारी है, नोट्स 10-14 के बारे में कहते हैं, "ऐतिहासिक रूप से यह एंटीओकस में और उसके द्वारा पूरा किया गया था, लेकिन अधिक गहन और अंतिम अर्थ में एंटीओकस एडुम्ब्रेट्स दानिय्येल के छोटे सींग की भयानक निन्दा 7।” मुझे इससे कोई समस्या नहीं है क्योंकि मुझे लगता है कि एंटीओकस एक प्रकार का ईसा-विरोधी है, लेकिन यहां शब्द आपको एंटीओकस के बारे में बताते हैं। लेकिन नोट्स में अगला कथन है, "डैनियल 8:10-14 में दोनों छोटे सींगों के कार्य मिश्रित हैं।" तो आप 10-14 में छोटे सींग के विस्तृत विवरण में देख सकते हैं कि शब्द एंटीओकस पर लागू होते हैं और साथ ही और उन्हीं शब्दों में एंटीक्रिस्ट पर भी लागू होते हैं। "शब्दों का मिश्रण है, दोनों दृष्टि में हैं।"

श्लोक 19 के अंत में यह कहा गया है, "अंत के समय होगा" और नोट कहता है, "दो छोर दिखाई दे रहे हैं। एक, ऐतिहासिक रूप से, सिकंदर के यूनानी साम्राज्य के एक तिहाई हिस्से का अंत, जिसके विभाजन से पद 9 का छोटा सींग पैदा हुआ।" यह उस ग्रीसियन काल का अंत है। "लेकिन दो, भविष्यवाणी के अनुसार, अन्यजातियों के समय का अंत। दोनों छोर दृश्य में हैं। अंत का समय ग्रीसियन साम्राज्य और अन्यजातियों के समय का अंत है—एक दोहरा संदर्भ। तो यह उस तरीके का एक उदाहरण है जिसमें कुछ व्याख्याकार भविष्यसूचक कथनों से अर्थ खोजने के लिए दोहरे संदर्भ के इस सिद्धांत का उपयोग करते

हैं।

9. चित्रण: मलाकी 4:5-6 मैं मलाकी 4:5-6 को और अधिक विस्तार से देखना चाहता हूँ और हम अगली बार अपने सत्र की शुरुआत में ऐसा करेंगे। लेकिन मलाकी 4:5-6 आइए इसे एक मिनट के लिए देखें। यह कहता है, “देखो, मैं प्रभु के उस महान और भयानक दिन से पहले तुम्हारे पास नबी एलियाह को भेजूंगा। वह पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके पिता की ओर फेर देगा, नहीं तो मैं आकर पृथ्वी पर शाप डालूंगा। यहां दिलचस्प बात यह है कि आपके पास इस अनुच्छेद के नए नियम के संदर्भ हैं और नए नियम के कुछ संदर्भ इस भविष्यवाणी को जॉन द बैपटिस्ट पर लागू करते हैं। तो फिर सवाल यह उठता है कि आप इस भविष्यवाणी का क्या करते हैं? क्या यह पूरा हो गया है या अभी भी पूरा होना बाकी है? क्या यह जॉन द बैपटिस्ट की बात कर रहा है? क्या यह एलियाह की बात कर रहा है? क्या यह दोहरा भाव है? इसके साथ क्या किया जाएगा? मैं अगली बार इसे और अधिक विस्तार से देखना चाहता हूँ और आपको कुछ ऐसे तरीके बताना चाहता हूँ जिनसे दुभाषियों ने इसका निपटारा किया है। यह दोहरे अर्थ से संबंधित अधिक कठिन अनुच्छेदों में से एक है।

10. डबल सेंस पर वन्रॉय का निष्कर्ष अब एक स्पष्ट वक्तव्य और मैं समाप्त करूंगा। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि दोहरी समझ पाना असंभव है। मुझे नहीं लगता कि आपको व्याख्या के नियम बाहर से लाने चाहिए और उन्हें व्याख्या के किसी सूत्र में फिट करने के लिए धर्मग्रंथ पर थोपना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है, यदि ऐसे स्पष्ट मार्ग हैं जो आपको पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के इच्छित तरीके तक ले जाते हैं, तो ठीक है, ऐसा ही होगा। धर्मग्रंथ को हमारा मार्गदर्शक बनना होगा। मैं आश्चर्य नहीं हूँ कि ऐसे कुछ अंश हैं जो आपको ऐसा करने के लिए बाध्य करते हैं। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि आपको एकाधिक इंद्रियों की तलाश में पाठ पर नहीं आना चाहिए। यदि आपको पवित्रशास्त्र द्वारा ही ऐसा करने के लिए

मजबूर किया जाता है, तो ठीक है, लेकिन आपको पवित्रशास्त्र से यह प्रदर्शित करना होगा कि आपको कथन को इसी तरह समझना चाहिए, जिसमें प्रमाण का भारी बोझ होता है।

प्रतिलेखित: केटी व्होली, मैट गॉब्सन, विलियम महोनी, सारा ओविंस्की, ग्रेस
कनिंघम, बेक्का ब्रुले और स्टीफन डेवलोस (सं.)।
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा प्रारंभिक संपादन
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

**रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव,
व्याख्यान भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए 15 दिशानिर्देश**

नौवीं. भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश

4. दोहरी पूर्ति या दोहरे संदर्भ के विचार से बचें

पिछले सप्ताह हम रोमन अंक IX में थे, "भविष्यवाणी की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश।" हम चर्चा कर रहे थे, "दोहरी पूर्ति या दोहरे संदर्भ के विचार से बचें।" परिणामस्वरूप हमने निष्कर्ष निकाला कि एक व्याख्यात्मक नियम के रूप में हमें पूर्वानुमानित भविष्यवाणी की एकाधिक पूर्तियों की तलाश नहीं करनी चाहिए। यह कुछ ऐसा है जो भविष्यवाणी साहित्य में आप पाएंगे कि यह आमतौर पर किया जाता है, जहां कुछ भविष्यवाणी कथनों की व्याख्या निकट पूर्ति और दूर पूर्ति के रूप में की जाएगी। हमने पिछले सप्ताह डैनियल 8 का उदाहरण देखा, जहां कुछ लोग सुझाव देंगे कि अध्याय एंटीओकस एपिफेनीस को संदर्भित करता है, जो लगभग 164 ईसा पूर्व में उस ग्रीक काल के दौरान भगवान के लोगों का उत्पीड़न करने वाला था, लेकिन फिर उसी समय कहते हैं, यह एंटीक्रिस्ट के बारे में बात कर रहा है। इससे उन्हीं शब्दों को दोहरा संदर्भ मिलता है। वही शब्द और वही वाक्यांश दोनों एंटीओकस और एंटीक्रिस्ट के बारे में बात कर रहे हैं।

हमने वहां कुछ सैद्धांतिक मुद्दों पर बात की, यदि शब्दों के एक से अधिक अर्थ हों तो क्या उनका कोई अर्थ होता है? क्या इससे व्याख्याशास्त्र अनिश्चित हो जाता है? ऐसा लगता है कि हमें एकाधिक इंद्रियों की तलाश करने के बजाय एकल इंद्रिय की तलाश करनी चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि यह न केवल पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के साथ, बल्कि सामान्य रूप से पवित्रशास्त्र के कथनों के साथ भी एक महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक सिद्धांत है। हम रूपक पद्धति के साथ चर्च की प्रारंभिक शताब्दियों में वापस जा सकते हैं जहां आप नैतिक अर्थ, ऐतिहासिक अर्थ और आध्यात्मिक अर्थ के साथ किसी भी कथन के 3, 4, 5, या 6 अलग-अलग अर्थ खोजते थे। जब आपके पास पाठ के अर्थ की कई परतें होती हैं, तो आपको आश्चर्य होता है

कि पाठ वास्तव में क्या कह रहा है।

एक। मलाकी 4:5-6

अब मैंने पिछली बार हमारे सत्र के अंत में कहा था कि मैं एक अतिरिक्त परिच्छेद को देखना चाहता हूँ और वह मलाकी 4:5 और 6 था - जो पुराने नियम के अंतिम दो छंद हैं - क्योंकि यह भी एक भविष्यवाणी है जिसमें कईयों को कई संदर्भ मिले हैं। यह एक भविष्यवाणी कथन भी है जो व्याख्या के संदर्भ में कुछ कठिन समस्याएं प्रस्तुत करता है। तो चलिए इस पर नजर डालते हैं। मलाकी 4:5 और 6 कहता है, “देख, मैं प्रभु के उस महान और भयानक दिन के आने से पहले तेरे पास नबी एलियाह को भेजूंगा। वह पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके पिता की ओर फेर देगा; नहीं तो मैं आऊंगा और देश पर श्राप डालूंगा।” सवाल यह उठता है कि क्या वह पूरा हुआ या अभी भी पूरा होना बाकी है? याद रखें कि हमने पहले बात की थी कि जब आप पूर्ति की तलाश करते हैं, तो सबसे पहले पुराने नियम में देखना शुरू करें कि क्या कोई भविष्यवाणी पुराने नियम की अवधि के भीतर पूरी हुई है। यदि नहीं, तो नए नियम में देखें और देखें कि क्या यह नए नियम की अवधि में पूरा हुआ है। यदि यह नए नियम से परे है तो शायद चर्च युग के समय में या आने वाले युग में भी। ये पुराने नियम के अंतिम दो छंद हैं इसलिए आप पुराने नियम में पूर्ति की तलाश में बहुत कुछ नहीं कर सकते। तो आप उससे आगे बढ़ें - आप नए नियम में जाएं और पूर्ति की तलाश करें, और आप पाएंगे कि एलियाह के नए नियम में संदर्भ हैं। लेकिन तब आप अच्छी तरह से कह सकते हैं कि शायद यह एलिजा में पूरा हो गया है और भविष्य में भी इसकी पूर्ति होगी। तो क्या यहाँ एकाधिक भाव है?

बी। एनटी मल 4:5-6 का संदर्भ यदि आप एलियाह के नए नियम के संदर्भों को देखें, तो मैथ्यू 17:3 में परिवर्तन के पर्वत पर एलियाह की उपस्थिति का एक

संदर्भ है। हम इस अध्याय पर बाद में वापस आने वाले हैं, क्योंकि बाद में अध्याय में एलिय्याह फिर से प्रकट होता है। परन्तु आप पद 3 में पढ़ते हैं, " मूसा और एलिय्याह यीशु से बातें करते हुए उनके साम्हने प्रकट हुए।" ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यह मलाकी 4 :5 और 6

की पूर्ति है। यहां नए नियम के अन्य संदर्भ हैं जो इंगित करते प्रतीत होते हैं कि मलाकी 4:5 और 6 को जॉन द बैपटिस्ट के जीवन और मंत्रालय में पूर्ण माना जाना चाहिए। कई सन्दर्भ हैं. ल्यूक 1:13 को देखें जहां आप पढ़ते हैं, "स्वर्गदूत ने जकर्याह से कहा, 'उरो मत। आपकी प्रार्थना सुन ली गयी है. तेरी पत्नी इलीशिबा से तुझे एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।' पद 15 में, "वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा।" पद 16, "वह इस्राएल के बहुत से लोगों को उनके परमेश्वर यहोवा के पास लौटा लाएगा।" और श्लोक 17 में, "वह एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में प्रभु के आगे आगे चलेगा।" तब आप अगले वाक्यांश पर ध्यान देंगे जो मलाकी 4:6 का एक उद्धरण है, "वह एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में प्रभु के आगे आगे चलेगा, ताकि पिताओं के हृदयों को उनके बच्चों की ओर और अवज्ञाकारियों को बुद्धि की ओर मोड़ सके।" धर्मी लोग प्रभु के लिये तैयार लोगों को तैयार करें।" तो "पिताओं के हृदयों को अपने बच्चों की ओर मोड़ने" के उस वाक्यांश में मलाकी 4:6 का कम से कम एक आंशिक उद्धरण है। तो यह निश्चित रूप से मलाकी के 4:6 का भ्रम है, "वह पिता के हृदय को उनके बच्चों की ओर मोड़ देगा।"

मैथ्यू 11:2 को देखें और निम्नलिखित, "जब जॉन ने जेल में सुना कि मसीह क्या कर रहा है, तो उसने अपने शिष्यों को उससे पूछने के लिए भेजा, 'क्या आप वही हैं जिसके आने की हम उम्मीद कर रहे थे या हमें किसी और की उम्मीद करनी चाहिए?' और यीशु ने कहा, 'वापस जाओ और जो कुछ तुम सुनते और देखते हो उसका वर्णन यूहन्ना को करो। अंधे को दृष्टि प्राप्त हो रही है...' इत्यादि। पद 7 में यह कहा गया है, "जब यूहन्ना के चेले यीशु को छोड़कर जा रहे थे, यीशु भीड़ से यूहन्ना के विषय में कहने लगा, 'तुम जंगल में क्या देखने गए थे? हवा से लहराया हुआ नरकट?'

यदि नहीं, तो आप क्या देखने निकले थे? बढ़िया कपड़े पहने एक आदमी? नहीं, जो अच्छे कपड़े पहनते हैं वे राजाओं के महलों में होते हैं। तो फिर आप क्या देखने निकले थे? एक भविष्यवक्ता? हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ, और एक भविष्यवक्ता से भी बढ़कर। यह वही है जिसके विषय में लिखा है: “मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे भेजूंगा, जो तेरे आगे आगे मार्ग तैयार करेगा।” मैं तुम से सच कहता हूँ, स्त्रियों से जन्मे लोगों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बड़ा कोई नहीं हुआ।” यह श्लोक 10 है, जो मलाकी 4:5 और 6 का नहीं, बल्कि मलाकी 3:1 का उद्धरण है जहां आप पढ़ो, “देखो, मैं अपना दूत भेजूंगा जो मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा।” लेकिन जब आप उस अनुच्छेद में और नीचे जाते हैं, तो आप मत्ती 11:12 में पढ़ते हैं, “यूहन्ना के दिनों से लेकर अब तक स्वर्ग का राज्य बलपूर्वक आगे बढ़ता रहा है और बलशाली लोग उस पर कब्जा कर लेते हैं। क्योंकि यूहन्ना तक सब भविष्यद्वक्ताओं और व्यवस्था ने भविष्यद्वाणी की। फिर श्लोक 14 पर ध्यान दें, “और यदि आप इसे स्वीकार करने को तैयार हैं, तो वह एलिय्याह है जो आने वाला था। जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले।” ऐसा प्रतीत होता है कि यह मलाकी 4:5 और 6 का संदर्भ है, कि एलिय्याह को प्रभु के महान और भयानक दिन से पहले आना है। वह, जॉन, एलिय्याह है जो आने वाला है “यदि आप इसे स्वीकार करने को तैयार हैं।”

फिर मत्ती 17: 10-12 पर जाएँ। यह ट्रांसफ़िगरेशन पर्वत पर एलिय्याह के साथ की गई प्रार्थना के बाद है और आपने श्लोक 10 में पढ़ा, “शिष्यों ने उससे पूछा, ‘फिर कानून के शिक्षक क्यों कहते हैं कि एलिय्याह को पहले आना चाहिए?’ यीशु ने उत्तर दिया ‘निश्चित रूप से, एलिय्याह आ रहा है, और सभी चीजों को पुनर्स्थापित करेगा। परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि एलिय्याह आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना, परन्तु जो कुछ वे चाहते थे उसके साथ कर चुके हैं। उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।’ तब चेलों को समझ आया कि वह उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में बात कर रहा था।” एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और वह जॉन द बैपटिस्ट के बारे में बात कर रहा था।

तो आप उन पाठों को प्राप्त कर लें, और फिर मिश्रण में थोड़ा सा कर्वबॉल फेंकने के लिए, आप जॉन 1:19 को देखें और उसके बाद, “यह जॉन की गवाही थी जब यरूशलेम के यहूदियों ने याजकों और लेवियों को उससे पूछने के लिए भेजा था कि वह कौन है। वह कबूल करने से नहीं चूका, बल्कि खुलकर कबूल किया, ‘मैं मसीह नहीं हूँ।’ और उन्होंने उससे पूछा, ‘फिर तुम कौन हो? क्या आप एलिय्याह हैं?’ उन्होंने कहा ‘मैं नहीं हूँ’, ‘क्या आप भविष्यवक्ता हैं?’” वहां के भविष्यवक्ता ने संभवतः उस पाठ का संदर्भ दिया जिसे हमने पहले व्यवस्थाविवरण 18 में देखा था, “वह भविष्यवक्ता जो मूसा की तरह आने वाला था।” “क्या आप भविष्यवक्ता हैं?” “नहीं.”

सी. दृष्टिकोण की व्याख्या करना

इसलिए मुझे लगता है कि वे सबसे महत्वपूर्ण संदर्भ हैं जो मलाकी के अंत में इस भविष्यवाणी से संबंधित हैं। दुभाषिए इन ग्रंथों के साथ क्या करते हैं? सवाल यह है कि मलाकी 4:5 और 6 कैसे पूरे होते हैं? क्या यह जॉन में पूरा हो गया है? क्या यह अभी भी पूरा होना बाकी है? मैं आपको तीन अलग-अलग विचार देता हूँ।

1) दोहरा संदर्भ पहला है “दोहरा संदर्भ।” मलाकी की भविष्यवाणी के बारे में कुछ व्याख्याकारों का कहना है कि वह भविष्यवाणी हमें बताती है कि एलिय्याह प्रभु के दिन से पहले पृथ्वी पर लौट आएगा, और यह शाब्दिक अर्थ में होगा। यह रब्बियों का दृष्टिकोण था जो यूहन्ना 1:21 में पाया गया, “क्या आप एलिय्याह हैं?” वे एलिय्याह की वापसी की तलाश में थे। इसलिए दोहरे संदर्भ के समर्थक मलाकी की भविष्यवाणी को उन ग्रंथों, विशेषकर मैथ्यू के आधार पर जॉन द बैपटिस्ट में प्रारंभिक या आंशिक पूर्ति के रूप में देखते हैं। लेकिन उनका तर्क है कि इसकी पूर्ण और अंतिम पूर्ति ईसा मसीह के दूसरे आगमन और उस समय प्रभु के दिन के आने की प्रतीक्षा में है, जहां एलिय्याह, भविष्यवक्ता प्रकट होंगे।

पृष्ठ 26 पर अपने उद्धरण देखें; यह हेनरी अल्फोर्ड के *द ग्रीक न्यू टेस्टामेंट* का एक छोटा पैराग्राफ है। मुझे कहना चाहिए कि अल्फोर्ड यहां मैथ्यू 11:13 और 14 पर टिप्पणी कर रहा है। वह कहता है, “न तो यह और न ही मैथ्यू 17:12 में हमारे प्रभु की गवाही जॉन के स्वयं के इनकार के साथ असंगत है कि वह जॉन 1:21 में एलियाह था। क्योंकि, एक, वहाँ प्रश्न स्पष्ट रूप से पृथ्वी पर वास्तविक एलियाह के पुनः प्रकट होने को मानकर पूछा गया था; और, दो, हमारे प्रभु को इनमें से किसी भी अनुच्छेद में [मैथ्यू में] इस अर्थ में नहीं समझा जा सकता है कि मलाकी 4:5 की भविष्यवाणी को जॉन में अपनी पूर्णता प्राप्त हुई। क्योंकि अन्य भविष्यवाणियों की तरह, इस एक में भी, हमारे पास है, "और यहां का दृष्टिकोण है, "प्रभु और उनके अग्रदूत दोनों के आगमन में आंशिक पूर्ति, जबकि महान और पूर्ण पूर्ति अभी भी भविष्य में है - महान पर प्रभु का दिन।" तो यह कोई असामान्य दृष्टिकोण नहीं है कि मलाकी 4:5 और 6 में दोहरा संदर्भ है, जॉन द बैपटिस्ट का संदर्भ और शाब्दिक एलियाह के पुनः प्रकट होने का भविष्य का संदर्भ।

2) सामान्य या क्रमिक पूर्ति - वाल्टर कैसर दूसरा दृष्टिकोण, वाल्टर कैसर द्वारा उनकी अवधारणा के संबंध में वकालत की गई है जिसे वे भविष्यवाणी का सामान्य उपयोग कहते हैं। हम इसे "सामान्य दृष्टिकोण" कह सकते हैं। यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 27 को देखें तो वहां मलाकी पर कैसर की टिप्पणी से कुछ पैराग्राफ हैं जिन्हें *ईश्वर का अपरिवर्तनीय प्रेम कहा जाता है*, और ये पैराग्राफ मलाकी 4:5 और 6 पर चर्चा कर रहे हैं। कैसर इन छंदों के बारे में कहते हैं, "शायद इसका वर्णन करने का सबसे अच्छा तरीका है घटना को 'सामान्य भविष्यवाणी' कहा जाता है, जिसे विलिस जे. बीचर ने परिभाषित किया है।" यहाँ इस शब्द से उनका अभिप्राय यह है, "वह जो किसी घटना को अंतरालों से अलग किए गए भागों की एक श्रृंखला में घटित होने वाला मानता है, और खुद को उस भाषा में व्यक्त करता है जो निकटतम भाग, या दूरस्थ भागों, या पर उदासीनता से लागू हो सकती है। संपूर्ण—

दूसरे शब्दों में, एक भविष्यवाणी, जहां एक जटिल घटना को संपूर्ण पर लागू करने के साथ-साथ उसके कुछ हिस्सों पर भी लागू होती है।" अब यह एक जटिल अवधारणा है लेकिन आप इसे इस तरह चित्रित कर सकते हैं और लेबल कर सकते हैं कि यह पूरी तरह से "सामान्य भविष्यवाणी" है। आप कह सकते हैं कि भविष्यवाणी विशिष्टताओं के पूरे परिसर के बारे में बात करेगी। लेकिन भविष्यवाणी के कुछ हिस्से विवरण के परिसर में इस या उस एक के बारे में बात कर सकते हैं।

अब मुझे लगता है कि कैसर वास्तव में यहां जो करने की कोशिश कर रहा था वह दोनों तरीकों से करना है। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि वह दोहरे संदर्भ और दोहरी पूर्ति की अवधारणा से बचना चाहते हैं, और वास्तव में, यदि आप उनके लेखन को पढ़ते हैं - और उन्होंने कई पुस्तकों और लेखों में लिखा है - तो वह अक्सर इस बारे में बात करते हैं कि कैसे एकमात्र वैध अर्थ बाइबिल का कोई भी कथन लेखक द्वारा अभिप्रेत एकमात्र सत्य है। इसलिए आपको लेखकीय आशय तक पहुंचना होगा। जब लेखक लिखता है तो उसका असली इरादा क्या था? मुझे ऐसा लगता है कि यदि आप एकल सत्य इरादे के बारे में बात करने जा रहे हैं, तो यह कहना बहुत जटिल और सारगर्भित हो जाता है कि मलाकी 4:5 और 6 जैसी भविष्यवाणी एक "सामान्य भविष्यवाणी" है जिसमें कई विवरण हैं। संपूर्ण एक ही सत्य अभिप्राय है, लेकिन इसके कुछ भाग संपूर्ण के भीतर एक विशेष को संदर्भित कर सकते हैं और अन्य भाग किसी अन्य विशेष को संदर्भित कर सकते हैं। मैं एक मिनट में इस पर वापस आता हूं, लेकिन आइए कैसर के अपने शब्दों पर वापस जाएं क्योंकि मैं यहां उसे गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं करना चाहता। बीचर की "सामान्य भविष्यवाणी" की परिभाषा पूरी होने के बाद, कैसर का कहना है, "भविष्यवाणी की सामान्य, या क्रमिक पूर्ति की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, मलाकी एक वादे के साथ समाप्त होता है कि ईश्वर उस दूत को भेजेगा जिसे 3 में प्रस्तुत किया गया है: 1 मसीहा के अग्रदूत के रूप में। हालाँकि, वह यह नहीं कहता है कि वह टीशबाइट एलिय्याह होगा, बल्कि 'एलिय्याह भविष्यवक्ता' होगा और इस प्रकार वह मसीहा के

दूसरे आगमन तक उद्घोषकों के उत्तराधिकार के लिए द्वार खोलता है जब पहला और आखिरी एलिय्याह आगे आएगा। पैगम्बरों की शुरुआत और अंत के रूप में। एलिय्याह को तब से चुना गया है जब वह भविष्यसूचक आदेश का प्रमुख था।" तो आप सवाल कर सकते हैं कि क्या वह या शमूएल भविष्यवक्ता आदेश का प्रमुख था? परन्तु "अन्य सभी भविष्यवक्ताओं ने उसका अनुसरण किया। वह एक सुधारक भी था जिसे ईश्वर ने 'असाधारण रूप से भ्रष्ट युग' में खड़ा किया था, और जिसकी अस्वीकृति के बाद प्रभु का एक विशेष रूप से भयानक दिन आया, अर्थात्, पहले सीरियाई लोगों के उत्पीड़न और इज़राइल की कैद के साथ। लेकिन एलिय्याह की आत्मा और शक्ति उसके उत्तराधिकारी, एलीशा (2 राजा 2:15) को दे दी गई, जैसे मूसा की आत्मा 70 बुजुर्गों पर आ गई।

इस प्रकार," और यहां उनका निष्कर्ष है, "जॉन बैपटिस्ट सुधारकों, पैगम्बरों और मसीहा के अग्रदूतों की उसी पंक्ति में आया था, क्योंकि वह भी 'एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में' आया था।' और एलिय्याह के समय से लेकर हमारे समय तक, भविष्यवक्ताओं की एक लम्बी कतार, उत्तराधिकार में खड़ी रही है; ऑगस्टीन, केल्विन, मेनो सिमंस, लूथर, ज़िंगली, मूडी और ग्राहम जैसे पुरुष। तो मुझे ऐसा लगता है कि वह जो कह रहा है वह एक सामान्य भविष्यवाणी है। इसकी शुरुआत एलिजा से होने वाली है, जॉन बैपटिस्ट यहां उस क्रम में खड़ा है, और एलिजा के साथ समाप्त होता है और आपके बीच में ये सभी अन्य लोग हैं जो इसकी पूर्ति का हिस्सा हैं क्योंकि वे भी आत्मा में आते हैं और एलिय्याह की शक्ति . तो यह पूरी चीज़ मलाकी के शब्दों में इस सामान्य भविष्यवाणी के रूप में शामिल है।

अब मेरा प्रश्न यह है कि आप इस एकल सत्य इरादे को कैसे बनाए रखते हैं, और एकल सत्य इरादे के भीतर इन सभी विवरणों के माध्यम से आवेदन कैसे पाते हैं? सैद्धांतिक रूप से आप कह सकते हैं कि यह संभव है। क्या इससे एकाधिक पूर्तियों से बचा जा सकता है? मुझे पूरा यकीन नहीं है कि ऐसा होता है। मुझे लगता है कि कैसर यह तर्क देगा कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आपके पास यह सामान्य

भविष्यवाणी है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यह एक बहुत ही अमूर्त अवधारणा बन गई है, और मुझे आश्चर्य है कि क्या मलाकी के अंत में इस कथन का यही उद्देश्य था। सवाल यह है कि आप यह कैसे स्थापित करेंगे कि इस अमूर्त एकल सत्य का इरादा क्या रहा होगा? आपको इस तरह का मॉडल कहां मिलता है? मुझे लगता है कि आप केवल मलाकी 4:5 और 6 के शब्दों को ही देख सकते हैं। जहां तक अर्थ का सवाल है, क्या मलाकी 4:5 और 6 के शब्द इस तरह के इरादे को सामने लाते हैं? मुझे ऐसा लगता है कि यह एक ऐसी रचना है जिसे पाठ में लाया गया है और इसे एकाधिक पूर्ति से बचने के इरादे से लाया गया है। लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि यह पूरी तरह से संतोषजनक है, यह काफी सैद्धांतिक है। तो आपके पास अल्फ़ोर्ड की तरह अधिक सरल प्रकार की एकाधिक पूर्तियाँ हैं, और आपको यह सामान्य भविष्यवाणी मिलती है जो इससे बचने की कोशिश करती है लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि ऐसा होता है।

3) भविष्यवाणी जॉन द बैपटिस्ट में पूरी होती है तीसरी स्थिति यह है कि भविष्यवाणी जॉन द बैपटिस्ट में पूरी होती है। यह निष्कर्ष नए नियम के संदर्भों पर आधारित होगा जो भविष्यवाणी को स्पष्ट रूप से जॉन पर लागू करते हैं, और वे काफी मजबूत कथन हैं। मैथ्यू 11:14 में, "यदि आप इसे स्वीकार करने को तैयार हैं, तो वह एलिय्याह है जो आने वाला था।" यह काफी मजबूत बयान है। अध्याय 17 में यीशु कहते हैं, "एलिय्याह पहले ही आ चुका है, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना।" याद रखें जब हमने भविष्यवाणी के रहस्यमय चरित्र के बारे में बात की थी और यह कैसे पूरा हो सकता है और इसे कैसे मोड़ सकता है, और आपने इसकी उम्मीद नहीं की होगी। "वह पहले ही आ चुका है, परन्तु तुम ने उसे नहीं पहचाना," शिष्यों ने समझा कि वह जॉन के बारे में बात कर रहा था। इसलिए इस दृष्टिकोण के समर्थक कहेंगे कि यह जॉन द बैपटिस्ट में पूरा हुआ है, यह कहते हुए कि हमें अतिरिक्त पूर्ति की तलाश करने की आवश्यकता नहीं है। एकमात्र अभीष्ट भाव है।

पुराने नियम में यह एकमात्र जगह नहीं है जहां आपको ऐसा मोड़ मिलता है जिसकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं जो डेविड के भविष्य के शासनकाल की बात करती हैं, उदाहरण के लिए, जहाँ, यदि आप वास्तव में भविष्यवाणियों को करीब से देखते हैं, तो यह स्पष्ट रूप से मसीह के संदर्भ के रूप में अभिप्रेत है। यहां एलिय्याह के आने का संदर्भ है लेकिन यह जॉन में पूरा हुआ है। यिर्मयाह 30 पद 9 को देखें। यह पद उसका एक उदाहरण है। तुम पढ़ते हो, “वे अपने परमेश्वर यहोवा की, और अपने राजा दाऊद की, जिन्हें मैं उनके लिये खड़ा करूँगा, उपासना करेंगे।” तुम और नीचे जाओ, “मैं तुम्हें दूर देश से, तुम्हारे वंशजों को उनके निर्वासन के देश से बचाऊँगा। याकूब को फिर से शांति और सुरक्षा मिलेगी और कोई उसे भयभीत नहीं करेगा। हालाँकि मैं उन सभी राष्ट्रों को पूरी तरह से नष्ट कर दूँगा जिनके बीच मैं तुम्हें तितर-बितर करता हूँ, मैं तुम्हें पूरी तरह से नष्ट नहीं करूँगा। मैं तुम्हें अनुशासन दूँगा लेकिन केवल न्याय के साथ।” तो भविष्य में एक समय आने वाला है जब श्लोक 17 में “मैं तुम्हें स्वस्थ कर दूँगा, तुम्हारे घावों को ठीक कर दूँगा और वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे।” खैर, ऐसा लगता है कि यह मसीहा जैसा है और मसीह में पूरा हुआ है।

यहेजकेल 34:23 को देखें, “मैं उनके ऊपर एक चरवाहा, अपने दास दाऊद को नियुक्त करूँगा, और वह उनकी देखभाल करेगा।” और पद 25, “मैं उनके साथ शांति की वाचा बांधूँगा।” पद 27, “लोग अपने देश में सुरक्षित रहेंगे।” पद 28, “वे फिर अन्यजातियों द्वारा लूटे न जाएंगे, वे निडर रहेंगे, और कोई उन्हें न डराएगा।” यह काफी हद तक यशायाह 2 और 11 के यशायाह अंशों के समान है। लेकिन, “मैं उनके ऊपर एक चरवाहा, अपने सेवक दाऊद को रखूँगा,” फिर भी यहां मसीह का संदर्भ है। तो मुझे ऐसा लगता है कि भविष्यवक्ता के इरादे को समझने के लिए कुछ ठोस आधार हैं। मलाकी 4:5 और 6 में इसका संदर्भ है, जिस बात में मेरी रुचि है वह जॉन का संदर्भ है और एलिय्याह का आगमन जॉन में पूरा होता है। लेकिन यदि आप ऐसा करते हैं तो यूहन्ना 1:21—जहाँ आपको यूहन्ना का इन्कार मिलता है कि वह

एलिय्याह है, "यहूदियों, याजकों और लेवियों ने उस से पूछा, 'तू कौन है? क्या आप एलिय्याह हैं?' और उसने कहा, 'मैं नहीं हूँ।' - यह उन रब्बियों की अवधारणा का खंडन होगा जो शाब्दिक पूर्ति की तलाश में थे। वह वस्तुतः एलिय्याह नहीं है। वह इस बात से इनकार नहीं कर रहा है कि वह मलाकी 4 की भविष्यवाणी को पूरा कर रहा है। कम से कम, इसे समझने का यह एक संभावित तरीका है।

डी। डबल रेफरेंस पर वन्रॉय का विश्लेषण और निष्कर्ष

शायद यह इस पर निर्भर करता है कि वे मैथ्यू पाठ के साथ क्या करते हैं। फिर इससे आपका क्या लेना-देना "यदि आप इसे स्वीकार कर लेंगे।" मैथ्यू में यीशु के कथन कि जॉन "एलिय्याह है जो आने वाला था और यदि आप स्वीकार करते हैं कि एलिय्याह पहले ही आ चुका है।" आप उससे क्या करते हैं? वे काफी मजबूत बयान हैं; मुझे नहीं लगता कि आप बस उन पर कूद सकते हैं और कह सकते हैं कि उन बयानों में कोई पूर्ति नहीं है। इसलिए यदि आप प्रकाशितवाक्य 11:3 पर जाते हैं तो आप लगभग दोहरी पूर्ति के लिए मजबूर हो सकते हैं। प्रकाशितवाक्य 11:3 कहता है, "मैं अपने दो गवाहों को शक्ति दूँगा, वे टाट ओढ़कर सब लोगों के साम्हने भविष्यवाणी करेंगे। अगर कोई उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा तो आग उनका समर्थन करने के लिए आएगी।" इन दोनों गवाहों की पहचान नहीं हो पाई है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो कहते हैं कि वे दो गवाह मूसा और एलिय्याह हैं, लेकिन यह एक खुला प्रश्न है। वे दो गवाह कौन हैं, इसका कोई स्पष्ट संकेत नहीं है। तो मुझे ऐसा लगता है कि जहां तक बाइबिल के कथनों की बात है तो आप यह कहने के लिए अधिक मजबूत आधार पर हैं कि यह जॉन में पूरा हुआ है, बजाय यह कहने के कि उन दो गवाहों में कुछ मानवीय पूर्ति है।

इसे सामने लाने का मेरा उद्देश्य यह है कि हम इस चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं कि आप जायें और दोहरे संदर्भ की तलाश करें। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि दोहरा संदर्भ ढूंढना असंभव है, लेकिन मैं यह कह रहा हूँ कि कई इंद्रियों की तलाश

करना एक खतरनाक व्याख्यात्मक सिद्धांत है। मेरा अपना निष्कर्ष इन कठिन ग्रंथों के साथ है - और हमने उनमें से दो को कुछ विस्तार से देखा है - कि व्यवस्थाविवरण 18 भविष्यवाणी संस्था को संदर्भित करता है, या वह मसीह है। मुझे नहीं लगता कि आपको वहां दोहरे संदर्भ के लिए बाध्य किया गया है। संदर्भ स्पष्ट रूप से भविष्यसूचक संस्था है जो मुझे लगता है कि मनोवैज्ञानिक रूप से ईसा मसीह की ओर इशारा करता है। इसलिए यह कहना वैध है कि व्यवस्थाविवरण 18 ईसा मसीह के बारे में बात करता है लेकिन उन्हीं शब्दों के साथ नहीं। ये शब्द स्वयं भविष्यवाणी संस्था को संदर्भित करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि मलाकी 4:5 और 6 में आपको दोहरे संदर्भ के लिए मजबूर नहीं किया गया है क्योंकि जॉन की पूर्ति में भविष्यवाणी का एक अप्रत्याशित मोड़ है, लेकिन नए नियम के कथन काफी मजबूत हैं और जॉन में पूर्ति ढूंढना पर्याप्त है। आपको किसी अन्य पूर्ति की आवश्यकता नहीं है। डैनियल मार्ग जिसे हमने देखा, उसने हमें बताया कि आपको मसीह की पूर्णता के लिए किसी अन्य संदर्भ की तलाश करने की आवश्यकता नहीं है।

मैं कहूंगा कि दूसरा कठिन यशायाह 7:14 है, "कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी।" लेकिन जब आप संदर्भ में देखते हैं, तो यह यहूदा के खिलाफ युद्ध से मजबूती से जुड़ा हुआ है, और फिर भी यदि आप इसे एक ही अर्थ के रूप में देखते हैं, तो वह मैथ्यू की तरह मसीह का जिक्र कर रहा है। "कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी," क्या ईसा मसीह के समय में जन्म का कोई संदर्भ है? मुझे लगता है कि यह सिर्फ ईसा मसीह का संदर्भ है। मुझे नहीं लगता कि यशायाह के समय में कोई कुंवारी थी। इस संदर्भ में मुझे ऐसा लगता है कि आप पाठ में ही कुछ ला सकते हैं यदि बच्चा तत्काल भविष्य में पैदा हुआ हो, इससे पहले कि वह इतना बड़ा हो जाए कि वह अच्छे और बुरे के बीच अंतर कर सके और जान सके कि ये दोनों राजा नहीं रहे होंगे। तो यह एक तरह की काल्पनिक बात है। यदि बच्चा पैदा होगा तो आप इसका उपयोग कुछ समय तक कर सकते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि यह भविष्य में कन्या के माध्यम से आने वाले बच्चे की ओर इशारा

करता है। जहां तक मेरा सवाल है, केवल एक ही कुंवारी जन्म हुआ था।

5. व्याख्यात्मक विश्लेषण को किसी भी परिच्छेद में शाब्दिक और आलंकारिक के बीच सटीक संबंध पर निर्णय से पहले होना चाहिए एल और आगे 5., "व्याख्यात्मक विश्लेषण को किसी भी परिच्छेद में शाब्दिक और आलंकारिक के बीच सटीक संबंध पर निर्णय से पहले होना चाहिए।" शाब्दिक बनाम आलंकारिक व्याख्या का उनका प्रश्न अत्यंत जटिल और कठिन है। जब आप पूर्वानुमानित भविष्यवाणी के बारे में देखते और सुनते हैं - और निश्चित रूप से यह मुद्दा केवल पूर्वानुमानित भविष्यवाणी से कहीं अधिक व्यापक है - लेकिन यदि आप बाइबिल के कथन या किसी भी प्रकार के साहित्य को देख रहे हैं, यदि आप इसकी शाब्दिक समझ से आगे बढ़ने जा रहे हैं कि क्या था कहा, एक आलंकारिक समझ के लिए, संदर्भ के भीतर ऐसे कारण होने चाहिए जो उत्पन्न होते हैं और वे कारण जो आपको यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करते हैं कि इस कथन को शाब्दिक रूप से लेने का इरादा नहीं था।

पृष्ठ 30 पर अपने उद्धरण देखें; यह *बाइबिल की व्याख्या करते हुए* बर्कले मिकेलसन से है, "याद रखें कि व्याख्यात्मक विश्लेषण किसी भी अनुच्छेद में शाब्दिक और आलंकारिक के बीच सटीक संबंध पर निर्णय लेने से पहले होना चाहिए।" तो आप एक अनुच्छेद को देखते हैं और आप इस बात से जूझते हैं कि यह अनुच्छेद क्या कह रहा है। आप शाब्दिक और आलंकारिक के बीच संबंध पर कहां पहुंचते हैं? "क्या शाब्दिक है और क्या आलंकारिक है, इसका निर्णय व्याकरण, (शब्दों के अर्थ और शब्दों के संबंध), इतिहास, संस्कृति, संदर्भ और स्वयं मूल लेखक के दृढ़ विश्वास पर आधारित होना चाहिए। शाब्दिक अर्थ - प्रथागत और सामाजिक रूप से स्वीकृत अर्थ जो अपने साथ वास्तविक और सांसारिक विचारों को लेकर चलता है - को आलंकारिक अर्थों का आधार बनना चाहिए। इसी आधार पर वे निर्भर रहते हैं। यदि कोई दुभाषिया घोषित करता है कि एक निश्चित अभिव्यक्ति

आलंकारिक है, तो उसे आलंकारिक अर्थ निर्दिष्ट करने के लिए कारण बताना होगा। यह एक वैध बिंदु है। आप किसी पाठ पर आकर आलंकारिक रूप से तब तक नहीं सोचते हैं जब तक कि उस पाठ में ऐसा कुछ न हो जो सुझाव देता हो कि इसे पढ़ने का यही तरीका है। “ये कारण सभी कारकों के वस्तुनिष्ठ अध्ययन से उत्पन्न होने चाहिए और यह दिखाना चाहिए कि आलंकारिक अर्थ की आवश्यकता क्यों है। कभी-कभी व्याख्याकार इस बात पर जोर देते हैं कि तत्व आलंकारिक हैं क्योंकि युगांतशास्त्र की उनकी प्रणाली को इसकी आवश्यकता होती है, इसलिए नहीं कि शास्त्र और वस्तुनिष्ठ कारक इसकी मांग करते हैं। दूसरे शब्दों में, यहां आप इस मुद्दे पर आते हैं, जब हम बाइबिल के पाठ पर आते हैं तो उस पाठ को पढ़ने में प्राथमिकता क्या होती है? क्या आप पाठ को स्वयं पढ़ना शुरू करते हैं, या आप किसी पूर्वकल्पित प्रणाली से पाठ को पढ़ना शुरू करते हैं और उस प्रणाली के आलोक में पाठ को पढ़ते हैं? आप पाठ को सिस्टम से कैसे जोड़ते हैं? नियंत्रण सिद्धांत क्या है?

एक। सरलीकृत लेबल से बचें कभी -कभी व्याख्याकार इस बात पर जोर देते हैं कि तत्व आलंकारिक हैं क्योंकि युगांतशास्त्र की उनकी प्रणाली को इसकी आवश्यकता होती है, इसलिए नहीं कि शास्त्र और वस्तुनिष्ठ कारक इसकी मांग करते हैं। जहाँ लाक्षणिक अर्थों के लिए बाध्यकारी कारण हों, वहाँ उन्हें अपनाना चाहिए। एक सावधान दुभाषिया शाब्दिक और आलंकारिक दोनों तरह से व्याख्या करेगा क्योंकि वह जिस अनुच्छेद की व्याख्या कर रहा है वह इन प्रक्रियाओं की मांग करता है। मुझे लगता है कि ये लेबल "मैं शाब्दिक रूप से व्याख्या करता हूँ" या "मैं आलंकारिक रूप से व्याख्या करता हूँ" - ये चीजें बिल्कुल भी सहायक नहीं हैं। आपको इस मुद्दे पर खुले दिमाग से पाठ पर आने की जरूरत है, और इस बात के प्रति खुले रहना चाहिए कि पाठ आपको कहां ले जाता है। “किसी व्यक्ति को पूरी तरह से शाब्दिक दुभाषिया या पूरी तरह से आलंकारिक दुभाषिया बताने वाले लेबल मूर्खतापूर्ण हैं।

यदि वे सत्य थे, तो वे संकेत देंगे कि इस प्रकार नामित व्यक्ति अर्थों और विचारों से जूझने में पूरी तरह से असमर्थ होगा। ऐसे लोग आमतौर पर व्याख्या करने की कोशिश नहीं करते। इसलिए, लेबलों को लापरवाही से उछालने से हर कीमत पर बचना चाहिए। अच्छे संतुलित व्याख्याकार के पास शाब्दिक और आलंकारिक दोनों अर्थों के लिए वस्तुनिष्ठ कारण होते हैं।

बी। आलंकारिक रूप से कुछ नकारात्मक नहीं है आलंकारिक रूप से व्याख्या करने को कुछ नकारात्मक, गुमराह या गलत दिशा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यदि परिच्छेद का आशय लाक्षणिक अर्थ में पढ़ना है तो आप कह सकते हैं कि परिच्छेद का शाब्दिक अर्थ आलंकारिक अर्थ में पढ़ना है। यह परिच्छेद का अभीष्ट अर्थ है। लेकिन इससे यह सवाल उठता है कि धार्मिक प्रणालियाँ व्यक्तिगत अंशों से कैसे संबंधित हैं। क्या आप प्रणाली के आधार पर परिच्छेद की व्याख्या करते हैं या क्या आप व्यक्तिगत परिच्छेदों की व्याख्या के आधार पर प्रणाली का निर्माण करते हैं? आप कई अलग-अलग अंशों को देखें और देखें कि वे क्या कह रहे हैं। यदि आप उस पर अपने निष्कर्ष पर पहुंचते हैं तो आप अंशों को जोड़कर यह देखने का प्रयास करते हैं कि संबंध क्या हैं और आप धीरे-धीरे एक प्रणाली का निर्माण करते हैं। मुझे लगता है कि अलग-अलग अनुच्छेदों के साथ काम शुरू करने का यह सबसे अच्छा तरीका है। लेकिन ऐसा कहने के बाद, कुछ अंशों की व्याख्या अन्य अनुच्छेदों से बिल्कुल अलग करके करना बेहद कठिन है। आम तौर पर आप जो पाते हैं वह यह है कि दोनों दिशाओं में एक तरह का काम होता है, सिस्टम बनाने के लिए मार्ग से बाहर और व्यक्तिगत मार्ग की व्याख्या करने में मदद करने के लिए सिस्टम से वापस भी। मुझे ऐसा लगता है कि यहां या तो या तो वाली स्थिति नहीं है। लेकिन ऐसा कहने के बाद, मुझे लगता है कि खतरा सिस्टम को अर्थ निर्धारित करने दे रहा है। आपको व्यक्तिगत मार्ग पर काबू पाने वाली पूर्वकल्पित प्रणालियों से सावधान रहना होगा। मेरे ऐसा कहने का कारण यह है कि अर्थ को पाठ से बाहर

आना चाहिए और पाठ में नहीं लाया जाना चाहिए, कम से कम अनुचित तरीके से नहीं।

सी। बोएटनर: शाब्दिक जब तक कि बेतुका दृष्टिकोण नहीं, अपने उद्धरण पृष्ठ 30 को देखें। लोरेन बोएटनर के पास शाब्दिक बनाम आलंकारिक व्याख्या के इस मुद्दे के बारे में कुछ दिलचस्प कथन हैं। वह कहते हैं, "व्याख्या के सामान्य सिद्धांत को 'जहाँ भी संभव हो, शाब्दिक' या 'जब तक बेतुका न हो, शाब्दिक' के रूप में व्यक्त किया गया है। यह जानने के लिए किसी को बाइबल में बहुत दूर तक पढ़ने की ज़रूरत नहीं है कि हर चीज़ को शाब्दिक रूप से नहीं लिया जा सकता है। जेसी एफ. सिल्वर 'कुछ स्थानों' को संदर्भित करता है, जहां कुछ 'अन्य अर्थ' निर्दिष्ट हैं। लेकिन वह ऐसा कोई नियम नहीं देता जिसके द्वारा उन निश्चित स्थानों को पहचाना जाए।" और मैं कहूंगा कि मुझे इसके लिए कोई फॉर्मूला भी नहीं पता है; यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप तीन नियमों या उस जैसी किसी चीज़ के सेट तक सीमित कर सकते हैं। "हमें पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई लेबल नहीं मिला जो हमें बताता हो, 'इसे शाब्दिक रूप से लें,' या 'इसे आलंकारिक रूप से लें।' जाहिर तौर पर व्यक्तिगत पाठक को जितना हो सके उतने अनुभव और सामान्य ज्ञान के आधार पर अपने निर्णय का उपयोग करना चाहिए। और निःसंदेह, यह व्यक्ति दर व्यक्ति अलग-अलग रूप से भिन्न होगा। कई मामलों में यह निर्धारित करना निश्चित रूप से कठिन है कि पवित्रशास्त्र में दिए गए कथनों को शाब्दिक रूप से लिया जाना चाहिए या आलंकारिक रूप से। जहाँ तक भविष्यवाणी का सवाल है, अक्सर पूर्ति के बाद तक इसका निर्धारण नहीं किया जा सकता है।"

डी। मलाकी 4:5-6 एक बार फिर अब आप मलाकी 4:5 और 6 पर वापस जाएं और देखें कि यह शाब्दिक और आलंकारिक भाषा के साथ एक भविष्यवाणी का उदाहरण हो सकता है, तब यह है कि यदि शाब्दिक रूप से एलियाह की वापसी

नहीं है, तो यह पूरा हो गया है जॉन द बैपटिस्ट में। “हालाँकि, अधिकांश बाइबिल, विशेष रूप से ऐतिहासिक और अधिक उपदेशात्मक भागों को स्पष्ट रूप से शाब्दिक रूप से समझा जाना चाहिए, हालाँकि इनमें कुछ आलंकारिक अभिव्यक्तियाँ पाई जाती हैं। लेकिन यह भी स्पष्ट है कि कई अन्य भागों को आलंकारिक रूप से समझा जाना चाहिए। यहां तक कि पूर्व सहस्त्राब्दिवादियों को भी कई अभिव्यक्तियाँ आलंकारिक रूप से लेनी होंगी, अन्यथा वे बकवास बन जाएंगी।”

आम तौर पर प्रीमिलेनियलिस्ट अधिक शाब्दिक रूप से पढ़ते हैं जहां एमिलेनियलिस्ट अधिक प्रतीकात्मक होते हैं। "चूंकि बाइबल यह निर्धारित करने के लिए कोई सख्त नियम नहीं देती है कि क्या शाब्दिक है और क्या आलंकारिक है," यहीं पर हम झूठ बोलते हैं, वह कहते हैं, "हमें सामग्री की प्रकृति, ऐतिहासिक सेटिंग, शैली और उद्देश्य का अध्ययन करना चाहिए लेखक, और फिर उस पर वापस आ जाते हैं, जिसे बेहतर शब्द के अभाव में हम 'पवित्र सामान्य ज्ञान' कह सकते हैं। स्वाभाविक रूप से निष्कर्ष अलग-अलग व्यक्तियों में कुछ हद तक भिन्न होंगे क्योंकि हम सभी एक जैसा नहीं सोचते हैं या एक जैसा नहीं देखते हैं। आप विशेष रूप से पूर्वानुमानित भविष्यवाणी में शाब्दिक से आलंकारिक को छांटना चाहते हैं। आपको बस पाठ के साथ संघर्ष करना है और सबसे सामान्य वाक्यविन्यास, व्याकरण, भविष्यवाणी के उद्देश्य और यहां क्या संबोधित किया जा रहा है, इसे देखकर यह देखना है कि यह क्या है।

इ। चित्रण: ईसा 2:4 सहस्त्राब्दी और पूर्व सहस्त्राब्दी व्याख्याएँ मैं आपको केवल कुछ उदाहरण देता हूँ। यशायाह 2:4 को देखें जो कहता है, "आने वाले समय में जब पृथ्वी पर शांति होगी, वे अपनी तलवारों को पीटकर हल के फाल बना देंगे।" "एक जाति, दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार न उठाएगी, और न वे अब युद्ध का प्रशिक्षण लेंगे" यह पद 4 है। आइए यशायाह 2:1 पर वापस जाएँ, जो कहता है,

"आमोज़ के पुत्र यशायाह ने यहूदा और यरूशलेम के विषय में यही देखा।" पद 2, "अंतिम दिनों में।" हमें यह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए कि "अंतिम दिन क्या हैं?" परन्तु "अन्तिम दिनों में," कुछ घटित होने वाला है, "प्रभु के मन्दिर का पर्वत, सब पहाड़ों में प्रधान स्थापित किया जाएगा। वह पहाड़ियों से ऊपर उठाया जाएगा और सभी राष्ट्र उसकी ओर प्रवाहित होंगे। बहुत से लोग आएँगे और कहेंगे, 'आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के घराने के पास जाएँ। वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा ताकि हम उसके मार्गों पर चल सकें। सिथ्योन से व्यवस्था और यरूशलेम से यहोवा का वचन निकलेगा। वह राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा, और बहुत से लोगों के बहुत से झगड़ों का निपटारा करेगा। वे अपनी तलवारों को पीट-पीट कर हल के फाल बना देंगे।" तो यह भविष्यवाणी है, ऐसा लगता है जैसे यह मसीहाई राज्य के बारे में बात कर रहा है जिसमें मसीहा राष्ट्रों के बीच न्याय करेगा और पृथ्वी पर शांति स्थापित करेगा।

मैं इसके संबंध में पद 2 में कहता हूँ, "यहोवा के मन्दिर का पर्वत सब पहाड़ों में प्रधान होकर स्थापित किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा।" वह किस बारे में बात कर रहा है? सहस्रवर्षीयवादी इस परिच्छेद की व्याख्या अभी पूर्ण होने के रूप में करते हैं। और "प्रभु के मन्दिर का पर्वत" चर्च है। तो यह एक प्रतीकात्मक भविष्यवाणी है। तलवारों को हल के फालों में पीटना वह शांति है जो पुनर्जीवित व्यक्तियों के दिलों में सुसमाचार के कार्य के परिणामस्वरूप आई है। यह वर्तमान में चर्च में आध्यात्मिक अर्थ में पूरा हो रहा है।

प्रीमिलेनियलिस्ट आम तौर पर कहेंगे, "नहीं, यह आलंकारिक या प्रतीकात्मक नहीं है। यह पृथ्वी पर शांति के भविष्य के समय की बात कर रहा है जिसमें मसीहा शासन करेगा और अपना राज्य स्थापित करेगा, जैसा कि यशायाह 11 में और साथ ही अन्य अनुच्छेदों में भी वर्णन किया गया है। लेकिन तब आपको ग्रेडेशन मिलेंगे, मैं कहूँगा। "प्रभु के मन्दिर का पर्वत पर्वतों में प्रधान स्थापित किया जाना, और पहाड़ियों के बीच ऊँचा किया जाना" क्या है? वह किस बारे में बात कर

रहा है? मुझे लगता है कि आज अधिकांश पूर्वसहस्राब्दिवादी कहेंगे कि यह अंत समय में यरूशलेम की प्रमुखता के बारे में बात कर रहा है। यह केंद्र होगा, जैसा कि निम्नलिखित श्लोक में कहा गया है, "जहां लोग आएंगे और कहेंगे, 'आओ हम प्रभु के पर्वत पर चलें और वह अपने मार्ग सिखाएगा'....."

“शाब्दिक रूप में. लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो कहेंगे "नहीं, यह शाब्दिक है 'भगवान के मंदिर का पर्वत पहाड़ियों के बीच उठाया जाएगा' - यह पृथ्वी पर सबसे ऊंचे पर्वत होने के लिए यरूशलेम की भौगोलिक ऊंचाई के बारे में बता रहा है।" दूसरे शब्दों में, यरूशलेम, यदि आप वास्तव में इसे मजबूर करते हैं, तो सचमुच माउंट एवरेस्ट से भी ऊंचा होगा। यह उससे भी अधिक होने वाला है. इसे पहाड़ों से ऊपर, पहाड़ों में प्रमुख, ऊपर उठाया जाएगा। तो देखिए, आपके पास विचारों का एक प्रकार है जो पूरी तरह से शाब्दिक से लेकर कुछ हद तक आलंकारिक भाषा तक पूरी भविष्यवाणी को आलंकारिक या प्रतीकात्मक बनाता है। तुम्हें उससे जूझना होगा. फिर आप अपना युगांतशास्त्रीय तंत्र प्राप्त करते हैं और इसमें वापस फीडिंग करते हैं, जिससे आप इसे पढ़ने के तरीके को प्रभावित करते हैं। तो यह बहुत जटिल हो जाता है.

एफ। यशायाह 4:2 यशायाह 4:2 को देखो। यह एक और मार्ग है जिसे आम तौर पर मसीहाई के रूप में उपयोग किया जाता है, और मुझे लगता है कि 4:2-5 चर्च के वर्तमान समय के बारे में बात कर रहा है। मुझे लगता है कि यह अध्याय 2 से भिन्न है क्योंकि अध्याय 2 खतरे की अनुपस्थिति के बारे में यशायाह 11 की तरह बोलता प्रतीत होता है। यह बाहरी शांति और सुरक्षा का समय है। यहाँ यशायाह 4:2-5 में, आप छंद 5 और 6 पर गौर करते हैं, "यहोवा सारे सिथ्योन पर्वत पर और उन लोगों पर जो वहाँ इकट्ठे होते हैं, दिन को धूँ का बादल और रात को धधकती हुई आग की चमक उत्पन्न करेगा।" सारा वैभव छत्र हो जायेगा। वह दिन की गर्मी से आश्रय और छाया, तूफान और वर्षा से शरण और छिपने का स्थान होगा।" दूसरे शब्दों में, यह

उस समय की एक आलंकारिक तस्वीर की तरह लगता है जिसमें बाहरी खतरा है। प्रभु अपने लोगों को सुरक्षा प्रदान करने जा रहे हैं और वह इसका वर्णन करने के लिए तम्बू के पुराने नियम काल की भाषा का उपयोग कर रहे हैं।

लेकिन आप ध्यान दें कि श्लोक 2 में यह मार्ग कैसे शुरू होता है, "उस दिन प्रभु की शाखा सुंदर और गौरवशाली होगी, भूमि का फल इस्राएल में बचे लोगों का गौरव और गौरव होगा।" प्रभु की शाखा क्या है? अधिकतर सभी व्याख्याकार इसे मसीहाई के रूप में, मसीहा के संदर्भ के रूप में लेंगे। यह एक व्यक्ति है, आप पद 4 पर ध्यान दें, "प्रभु सिंघों के अवशेषों की गंदगी को धो देंगे। वह न्याय की आत्मा और आग की आत्मा के द्वारा यरूशलेम में खून के दागों को साफ करेगा।" इसलिए मुझे नहीं लगता कि इस बात पर ज्यादा बहस है कि श्लोक 2 आलंकारिक है और प्रभु की शाखा मसीहा का वर्णन करने वाली आलंकारिक भाषा है।

कुछ लोग आलंकारिकता को और आगे बढ़ाते हैं, और शायद वैध रूप से, यह कहकर कि श्लोक 2 में आपके पास न केवल मसीहा का संदर्भ है, बल्कि आपके पास मसीह के दिव्य/मानवीय स्वभाव का भी संदर्भ है। उसमें श्लोक के पहले भाग में "यहोवा की शाखा सुन्दर और महिमामय होगी" और श्लोक के दूसरे भाग में, "भूमि का फल इस्राएल में बचे लोगों का गौरव और गौरव होगा।" भगवान की शाखा, और भूमि का फल, भगवान के समानांतर दिव्य है, लेकिन भगवान भी मानव है। भूमि का फल मसीह के उस मानव स्वभाव के लिए आलंकारिक है। आप यहां इस शाब्दिक बनाम आलंकारिक भाषा को कितना आगे बढ़ाते हैं? यह स्पष्ट रूप से आलंकारिक भाषा है लेकिन आप इसे कितनी दूर तक आगे बढ़ा सकते हैं? यहीं आप देख सकते हैं कि बोएटनर क्या कह रहे थे। हमें निर्णय करना है, सामान्य ज्ञान से निर्णय लेना है और लोगों के बीच इस बात पर मतभेद होगा कि वे निष्कर्ष पर कैसे पहुंचते हैं और इसके लिए कोई नियम नहीं हैं। ये कोई यांत्रिक चरण नहीं हैं— 1, 2, 3, ऐसा करें और आपका उत्तर यहां है। यह इस तरह के अनुच्छेदों को बहुत दिलचस्प और आकर्षक बनाता है, लेकिन यह अनुच्छेद किस बारे में बात कर रहा

है, इसके बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए जिम्मेदार तरीके से काम करने की चुनौती भी देता है।

जी। टर्नर और गुंड्री एक अंतिम उद्धरण है जो पृष्ठ 31 पर है। मुझे लगता है कि टर्नर ने यहां जो बात कही है वह सही है। वह कहते हैं, "विभिन्न युगांतशास्त्रीय धारियों के लेखकों ने आम तौर पर यह विचार व्यक्त किया है कि युगांतशास्त्रीय प्रणालियों में अंतर 'मुख्य रूप से पवित्रशास्त्र की प्रत्येक व्याख्या द्वारा नियोजित विशिष्ट पद्धति से उत्पन्न होता है।' हालाँकि इस तरह के कथन में कुछ हद तक सच्चाई है लेकिन यह सरल है। बाइबिल की भाषा को शाब्दिक रूप से लेने में किसी की निरंतरता का उसके धर्मशास्त्र पर स्पष्ट प्रभाव पड़ेगा, लेकिन इसका विपरीत भी सच है - किसी के धर्मशास्त्र का स्पष्ट रूप से उसके व्याख्याशास्त्र पर प्रभाव पड़ेगा। पवित्रशास्त्र के प्रति विशुद्ध रूप से आगमनात्मक, समग्र दृष्टिकोण के रूप में 'शाब्दिक' या 'आध्यात्मिक' व्याख्याशास्त्र की बात करना गलत है। ऐसी सामान्यताओं में बात करना वास्तविक मुद्दे को अस्पष्ट कर देता है: विशिष्ट बाइबिल अंशों की व्याख्या। और यहीं उनका जोर बन जाता है। "पवित्रशास्त्र के किसी भी अध्ययन में कुछ हद तक व्याख्यात्मक, धार्मिक और व्याख्यात्मक पूर्व-समझ शामिल होती है।

यहां तक कि दुभाषिया की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियाँ भी पवित्रशास्त्र के बारे में उसकी समझ को प्रभावित करती हैं, जैसा कि गुंड्री ने उचित रूप से चेतावनी दी है: 'ईसाई व्याख्याता और धर्मशास्त्री के रूप में हम अपने समय की मनोदशाओं और स्थितियों से प्रभावित होने के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं, और विशेष रूप से हमारे युगांतशास्त्र में।' इन सबका मतलब यह नहीं है कि व्याख्याशास्त्र महत्वहीन है, या यह कि एक सुसंगत शाब्दिक व्याख्या अप्राप्य है। वास्तव में, कविता, भविष्यवाणी और आलंकारिक भाषा सहित संपूर्ण बाइबिल को संभालने के लिए ऐसी व्याख्या आवश्यक है।

ठीक से उपयोग करने पर, शाब्दिक व्याख्या का परिणाम 'काष्ठीय शाब्दिकवाद' नहीं है, बल्कि भाषण के आंकड़ों के प्रति संवेदनशीलता है। यह एक शाब्दिक व्याख्या है जो भाषण के अलंकारों के प्रति संवेदनशील है। "हालाँकि, विशिष्ट बाइबिल अंशों की व्याख्या में व्याख्याता को यह एहसास होना चाहिए कि शाब्दिक व्याख्या का उसका उपयोग उसके धार्मिक पूर्वधारणाओं द्वारा पूर्वनिर्धारित है। यही बात 'आध्यात्मिक' व्याख्याशास्त्र के अभ्यासकर्ता के लिए भी सच होगी। युगवादियों के लिए गैर-व्यवस्थावादियों पर बाइबिल, विशेष रूप से पुराने नियम को आध्यात्मिक बनाने या रूपक बनाने का आरोप लगाना आम बात है, और अनुबंधित धर्मशास्त्रियों के लिए व्यवस्थावादियों पर अतिसाहित्यवाद का आरोप लगाना आम बात है। जब तक इस तरह की अस्पष्ट सामान्यताओं पर बहस चलती रहेगी तब तक कोई प्रगति नहीं होगी। अब [ग्रेग] बानसेन की सलाह पर ध्यान देने का समय आ गया है:"

एच. बानसेन की सलाह: सिस्टम से बाहर निकलें और विशिष्ट पाठों को देखें यह उनका व्याख्यात्मक कार्य है लेकिन मैं सिद्धांतवाद पर उनके विचारों से सहमत नहीं हूँ। लेकिन वह यहां जो कहते हैं, मुझे लगता है कि वह सही है। वह कहते हैं, "तीन युगांतशास्त्रीय स्थितियों में से किसी के खिलाफ व्यक्तिपरक आध्यात्मिकता या अतिसाहित्यवाद का आरोप सामान्य रूप से तय नहीं किया जा सकता है; बल्कि, विरोधियों को विशेषपरिच्छेदों और वाक्यांशों पर आमने-सामने की व्याख्यात्मक लड़ाई में उतरना होगा।" दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहा है वह यह है कि सिस्टम से बाहर निकलें और विशिष्ट पाठों को देखना शुरू करें। यशायाह 2 किस बारे में बात करता है? यशायाह 4 किस बारे में बात करता है? यशायाह 11 किस बारे में बात करता है? इस पूरी चर्चा में ये कुछ प्रमुख अंश हैं। टर्नर कहते हैं, "ऐसा प्रतीत होता है कि सैद्धांतिक व्याख्याशास्त्र के बारे में अस्पष्ट सामान्यताएँ बहुत कम हासिल करती हैं। व्याख्यात्मक सिद्धांत के एकमात्र आधार

पर युगांतशास्त्रीय प्रणालियों को खारिज करना केवल अधिक प्रासंगिक मुद्दों को अस्पष्ट करने का काम करता है। 'दोहरी व्याख्या' के समर्थकों को 'रूपक' लगाने के आरोप से खारिज नहीं किया जा सकता और न ही व्यवस्थावादियों को 'अतिसाहित्यिक' होने की फटकार लगाकर खारिज किया जा सकता है।

हालाँकि, विशिष्ट मुद्दों पर व्याख्यात्मक *निष्कर्षों को किसी की घोषित व्याख्यात्मक पद्धति* के साथ असंगत माना जा सकता है। जब दोनों के बीच कोई विसंगति हो, तो व्यवस्थावादियों और अनुबंधित धर्मशास्त्रियों दोनों को ध्यान देना चाहिए। व्याख्यात्मक प्रश्न पर इन विचारों का मुख्य बोझ यह है कि किसी भी लाभदायक बहस को ठोस मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जैसे कि ओटी का एनटी उपयोग और प्रगतिशील रहस्योद्घाटन की प्रकृति। यहां विशिष्ट अंशों की व्याख्या की जा सकती है और लाभप्रद रूप से बहस की जा सकती है। मुझे ऐसा लगता है कि इस बड़े विषय में संभवतः जो सहायक है, वह है कि बाहर से अपने सिस्टम को उन अनुच्छेदों में से किसी एक पर लाने के बजाय व्यक्तिगत अनुच्छेदों के स्तर पर इन समस्याओं से जूझने की कोशिश की जाए।

यह रोमन अंक IX का हमारा अध्ययन समाप्त करता है। मैंने आपको पिछले सप्ताह एक हैंडआउट दिया था लेकिन मैं रोमन अंक एक्स, "बाइबिल की भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य" का कोई अतिरिक्त नहीं लाया। लेकिन हम अगली बार उस पर गौर करेंगे।

जेसिका स्किडमोर द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनर्नामित

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 16

भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य, ओबद्याह एक्स का परिचय।

भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य

पिछले सप्ताह मैंने आपको रोमन अंक X दिया था। मुझे आशा है कि आप उसे पढ़ने में सक्षम होंगे क्योंकि उसे सौंपने का मेरा इरादा उस पर गौर करने में समय बचाने का था। मुझे बस इसके बारे में बताने दीजिए और फिर यदि आपके कोई प्रश्न हों तो शायद हम इस पर आगे चर्चा कर सकते हैं। लेकिन मैं उस हैंडआउट को पूरा नहीं पढ़ूंगा बल्कि कुछ चीजों पर प्रकाश डालूंगा।

उ. क्या बाइबिल की भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य है?

ए. है, "क्या बाइबिल की भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य है? प्रारंभिक विचार।" ऐतिहासिक रूप से, ऐसे कई लोग हैं जो महसूस करते हैं कि पूर्वानुमानित भविष्यवाणी में क्षमाप्रार्थी मूल्य है, और इसलिए यह एक क्षमाप्रार्थी उपकरण है जिसका उपयोग बाइबिल की सत्यता और पवित्रशास्त्र के माध्यम से बोले गए ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रभावी ढंग से बहस करने के लिए किया जा सकता है। क्योंकि आप सदियों पहले दी गई भविष्यवाणियों को देख सकते हैं, और बहुत बाद के समय में पूर्ति देख सकते हैं, और यह पवित्रशास्त्र और भगवान के अस्तित्व की सत्यता के लिए बहस करने के लिए एक अच्छा क्षमाप्रार्थी उपकरण प्रदान करता है।

1. एल्डर्स: थोड़ा मूल्य

तो मेरा पहला कथन यह है कि उस प्रश्न का सकारात्मक उत्तर देने का अच्छा कारण है। क्या क्षमाप्रार्थना का कोई मूल्य है? मुझे लगता है वहाँ है। लेकिन हमारे बीच कुछ ईसाई धर्म प्रचारक भी हैं जो नकारात्मक उत्तर देंगे। अब, जब आप इंजील दुनिया से बाहर निकलते हैं तो बहुत सारे आलोचनात्मक विद्वान होते हैं जो कहते हैं कि इसका कोई मूल्य नहीं है। उदाहरण के लिए मैं एक डच विद्वान जीसी आल्डर्स का उपयोग करता हूँ, जो एमस्टर्डम

विश्वविद्यालय में पुराने नियम के प्रोफेसर थे, जहां मैंने अपना काम किया था। उन्होंने जो खंड लिखा, आप उसे उसके नीचे दूसरे पैराग्राफ में देख सकते हैं जिसे *इज़राइल में झूठा पैगंबर कहा जाता है*। उन्होंने उस पुस्तक में क्षमाप्रार्थी मूल्य के इस मुद्दे पर चर्चा की है। वह कुछ सकारात्मक कारकों को नोट करता है जैसे कि भविष्यवाणी की पूर्ति का सकारात्मक तरीके से उपयोग और उन सकारात्मक कारकों को आपकी रूपरेखा के पृष्ठ 1 पर 1-5 क्रमांकित किया गया है। मैं उन सभी की समीक्षा नहीं करूंगा, लेकिन आप पृष्ठ 2 पर जाएं, एल्डर्स को पवित्रशास्त्र की सच्चाई को प्रदर्शित करने के मानदंड के रूप में भविष्यवाणियों की पूर्ति की अपील करने पर कुछ गंभीर आपत्तियां हैं। उनके विचार में, जब आप उन आपत्तियों को देखते हैं, तो आपत्तियाँ दर्शाती हैं कि तर्क के लिए क्षमाप्रार्थी मूल्य उतना महान नहीं है जितना आप शुरू में सोचने के इच्छुक हो सकते हैं। फिर उनकी आपत्तियों की एक सूची इस प्रकार है। उनमें से तीन हैं।

एक। पूर्ति पर विवाद

पहला है "पूर्ति पर विवाद।" उदाहरण के लिए उन्होंने अपनी पुस्तक *द प्रोफेट्स एंड प्रोफेसी इन इज़राइल में अब्राहम क्यूनेन को उद्धृत किया है*, और यह अधूरी भविष्यवाणियों की एक सूची देता है। उनका कहना है कि क्यूनेन ने क्षमाप्रार्थी तर्क को पूरी न हुई भविष्यवाणियों के आधार पर बदल दिया है और पूरी हुई भविष्यवाणियों के विरुद्ध तर्क दिया है।

बी। डेटिंग और व्यक्तिपरक कारकों पर विवाद

दूसरे, "भविष्यवाणी और उसकी पूर्ति के बीच संबंधों का आकलन करने में डेटिंग और व्यक्तिपरक कारकों पर विवाद।" दूसरे शब्दों में, आप डैनियल और यशायाह के दूसरे भाग के साथ विवादों में पड़ जाते हैं। क्या डैनियल उस समय का है जब वह ऐसा होने का दावा करता है या वह कोई गुमनाम व्यक्ति है जो 165 ईसा पूर्व के आसपास लिख रहा है जब एंटिओकस एपिफेन्स पहले ही दृश्य में दिखाई दे चुका था?

वह डेविडसन नाम के एक व्यक्ति को उद्धृत करते हैं जो कहता है कि यदि पूर्ति के तर्क का वास्तव में साक्षात्क मूल्य होगा तो उसे निम्नलिखित शर्तों का पालन करना होगा, "सबसे पहले ज्ञात उद्घोषणा घटना से पहले होनी चाहिए। दूसरे, इसकी स्पष्ट एवं स्पष्ट पूर्ति होनी चाहिए। अंत में, घटना की प्रकृति, जब इसकी भविष्यवाणी की गई थी, तो यह मानवीय दृष्टिकोण से दूर थी, और ऐसी थी कि इसे तर्क के किसी भी अनुमानित प्रयास से नहीं देखा जा सकता था, या संभाव्यताया अनुभवसे प्राप्त गणनाके सिद्धांतों पर निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता था।" अब उस कथन में वे सभी इटैलिकाइज़्ड शब्द हैं जिन्हें आल्डर्स व्यक्तिपरक निर्णय कहेंगे। ज्ञात उद्घोषणा, घटना की प्रकृति जैसी चीजें तर्क के प्रयास से नहीं देखी जा सकतीं, कटौती द्वारा देखी या उत्पन्न नहीं की जा सकतीं। फिर आल्डर्स का कहना है कि उन व्यक्तिपरक मूल्य निर्णयों के संबंध में, यह स्पष्ट है कि लोग अपने निष्कर्षों में भिन्न होंगे ताकि वास्तविक ठोस सत्य कभी नहीं मिल सके। लेकिन फिर आप देखते हैं कि वह क्या करता है, वह उसे पलट देता है और कहता है कि उलटा भी सच है, ताकि भविष्यवाणी की दैवीय उत्पत्ति के खिलाफ कोई ठोस सबूत उसके गैर-पूर्ति द्वारा नहीं बनाया जा सके जैसा कि केयून प्रयास करता है। दूसरे शब्दों में, पूरा व्यवसाय गिर सकता है क्योंकि यह व्यक्तिपरक रूप से निर्धारित होता है। तो यह उनकी दूसरी आपत्ति है।

सी। प्रतीकात्मक भाषा क्षमाप्रार्थी मूल्य को खत्म कर देती है

तीसरा है "प्रतीकात्मक भाषा क्षमाप्रार्थना के मूल्य को खत्म कर देती है।" मैं शुरू से ही कह सकता हूँ कि एल्डर्स एक सहस्त्राब्दिवादी हैं। वह मसीह के लिए पुराने नियम की राज्य भविष्यवाणियों को आध्यात्मिक या आलंकारिक अर्थ में लेने और उन्हें चर्च पर लागू करने के लिए इच्छुक है। प्रतीकात्मक और क्षमाप्रार्थी मूल्य के तहत उस अनुच्छेद में कई पंक्तियों में वह कहते हैं कि यह क्षमाप्रार्थी उपकरण के रूप में भविष्यवाणी और पूर्ति की अपील करने के लिए एक विशेष कठिनाई पैदा करता है। एल्डर्स का तर्क है कि कीथ जैसे लोगों का शाब्दिक दृष्टिकोण कई भविष्यवाणियों की प्रतीकात्मक प्रकृति के साथ न्याय नहीं करता है। एल्डर्स का विचार है कि नई वाचा की आध्यात्मिक वास्तविकताओं को इंगित करने

के लिए भविष्यवाणियाँ अक्सर यरूशलेम, सियोन और मंदिर की बात करती हैं।

यशायाह 2 का अंश लें, "हर कोई प्रभु के पर्वत पर आएगा, यह ऊंचा और ऊंचा होगा।" यह चर्च का आगमन है! असीरिया और बेबीलोन पापपूर्ण और विनाशकारी दिशाओं के प्रतीक हैं। वह बाबुलों की शृंखला के बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि आध्यात्मिक अर्थ में, परमेश्वर के राज्य के दुश्मनों के बारे में बात कर रहा है। वह आगे कहते हैं कि वह यह नहीं देख सकते कि कैसे, इस पर ध्यान दें, "जो कीथ की तरह व्याख्या की अधिक शाब्दिक पद्धति अपनाता है, वह खुद को सबसे छोटी त्रुटि से मुक्त रख सकता है।"

क्या आप जानते हैं कि चिलीस्ट त्रुटि क्या है? चिलियास्ट एक हजार है! यह पूर्वसहस्राब्दी युगांतशास्त्र है, जहां आप इन भविष्यवाणियों को लेते हैं जो पृथ्वी पर ईसा मसीह के भविष्य के हजार साल के शासन के बारे में बात करते हैं जिसमें तलवारों को पीटकर हल के फाल बनाए जाएंगे। तो आप देखिए कि वह क्या कह रहा है, यदि आप इसे शाब्दिक रूप से लेते हुए व्याख्या कर रहे हैं, तो आप एक प्रीमिलेनियलिस्ट बनने जा रहे हैं। एल्डर्स जैसे किसी व्यक्ति के लिए यह अकल्पनीय है। उनका कहना है कि यदि बाबुल के संबंध में भविष्यवाणियाँ वस्तुतः विवरण तक पूरी होतीं, तो कोई भी यरूशलेम और इज़राइल के संबंध में भविष्यवाणियों की पूर्ति के लिए एक अलग तरीके का प्रस्ताव नहीं कर सकता। फिर किसी को इन भविष्यवाणियों की विस्तृत शाब्दिक पूर्ति की भी उम्मीद करनी चाहिए। एल्डर्स के अनुसार, इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भविष्यवाणियों की शाब्दिक पूर्ति की अपील क्षमाप्रार्थी को एक बड़ी कठिनाई में उलझा देती है।

लेकिन, और यहीं सभी अच्छे बिंदु हैं, यदि कोई आध्यात्मिक पूर्ति के पक्ष में व्याख्या की शाब्दिक पद्धति को छोड़ देता है तो वह अपना हथियार खो देता है। क्यों? ईसाई धर्म का विरोध करने वालों को आध्यात्मिक पूर्ति समझाना कठिन है। दूसरे शब्दों में, यदि आप भविष्यवाणी और पूर्ति को क्षमाप्रार्थी उपकरण के रूप में उपयोग करने जा रहे हैं और आप इसे प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करने जा रहे हैं, तो यह क्षमाप्रार्थी तर्क की शक्ति को कम कर देता है।

डी। अवलोकन: अमिलिनियलिस्ट्स-पूर्वानुमानात्मक क्षमाप्रार्थी, प्रीमिलिनियलिस्ट्स - साक्ष्यवादी

मुझे याद है कि मैंने कुछ साल पहले इसे पढ़ा था और मुझे कुछ सूझा था लेकिन मैंने इसे पहले कभी एक साथ नहीं रखा था। मुझे लगता है कि यह सच है, और वह यह है: यदि आप इंजील व्याख्याकारों को देखें, तो आप पाएंगे कि सहस्राब्दिवादी व्याख्याकार आम तौर पर क्षमाप्रार्थी में पूर्वकल्पनावादी होते हैं। सहस्राब्दिवादी अधिक प्रतीकात्मक और आलंकारिक रूप से व्याख्या करते हैं, और वे आम तौर पर बाइबिल की सत्यता के प्रमाण के रूप में भविष्यवाणी और पूर्ति का उपयोग नहीं करते हैं। जबकि प्रीमिलेनियलिस्ट, जो अधिक शाब्दिक व्याख्या करते हैं, आम तौर पर क्षमाप्रार्थी नहीं होते हैं। वे आम तौर पर साक्ष्यवादी होते हैं, और यह पवित्रशास्त्र की सत्यता के प्रमाणों में से एक है। इसलिए, आप शायद यह न सोचें कि क्षमाप्रार्थी प्रणालियों और युगांतशास्त्रीय प्रणालियों के बीच कोई संबंध है, लेकिन मुझे लगता है कि जब आप वास्तव में इसे प्रतिबिंबित करते हैं तो यह काफी सख्त होता है। सामान्य तौर पर, जो सहस्राब्दिवादी हैं, वे भी क्षमाप्रार्थी पूर्वकल्पनावादी होने जा रहे हैं और जो सामान्यतः पूर्वसहस्राब्दिवादी हैं, वे क्षमाप्रार्थी में साक्ष्यवादी होने जा रहे हैं। मुझे यकीन है कि अपवाद हैं, लेकिन सामान्य तौर पर यह निश्चित रूप से एल्डर्स के साथ फिट बैठता है, और वह इस पर ध्यान देता है।

इ। एल्डर्स निष्कर्ष

इस अगले कथन पर ध्यान दें. एल्डर्स ने तब निष्कर्ष निकाला कि यह भविष्यवाणी की पूर्ति नहीं है जो धर्मग्रंथ के दैवीय सत्य के प्रति दृढ़ विश्वास लाती है, बल्कि इसका उल्टा है - धर्मग्रंथ के दैवीय सत्य के प्रति विश्वास भविष्यवाणी की पूर्ति में विश्वास की ओर ले जाता है। और निःसंदेह वहाँ भी, युगांतशास्त्रीय दृष्टिकोण क्षमाप्रार्थी दृष्टिकोण के साथ काफी कड़ा है। उनका तर्क है कि ईश्वर के प्रकट सत्य की निश्चितता किसी बाहरी साक्ष्य में नहीं, बल्कि स्वयं में निहित है। ईश्वर मनुष्य को विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं करता। यह भी उनकी इच्छा है कि भविष्यवाणी की पूर्ति सभी संदेहों से परे कुछ निर्विवाद नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह

केवल इतनी निश्चितता प्रदान करनी चाहिए कि आस्तिक इसमें अपने विश्वास के लिए समर्थन पा सके। दूसरे शब्दों में, कोई व्यक्ति जो विश्वास में आ गया है और विश्वास करता है, और फिर भविष्यवाणियों को देखता है, वह अपने विश्वास के लिए समर्थन पा सकता है, लेकिन जो व्यक्ति विश्वास में नहीं आया है वह अब देख सकता है और उनमें बहुत कम या कोई मूल्य नहीं पा सकता है।

उनका कहना है कि जो व्यक्ति बाइबल को ईश्वर के वचन के रूप में पहचानता है, उसके लिए भविष्यवाणियों की पूर्ति दिन के समान स्पष्ट है और इसलिए यह उसके विश्वास की पुष्टि करने का काम कर सकता है। यह निश्चित रूप से वैध है। मेरा पसंदीदा प्रश्न यह है: क्या इसमें अविश्वासी के लिए भी कोई भूमिका है, उसे खुला होने का स्थान दिलाने, बाइबल सुनने के लिए? इसलिए उनका कहना है कि भविष्यवाणी की पूर्ति द्वितीयक अर्थ में मूल्य से रहित नहीं है, लेकिन जो व्यक्ति धर्मग्रंथ में विश्वास नहीं करता, उसके लिए यह इतनी स्पष्टता से नहीं बोलता कि वह धर्मग्रंथ की दिव्य उत्पत्ति को देखने के लिए मजबूर हो जाए।

एल्डर्स का कहना है कि यह उस पर निर्भर करता है जिसे वह आंतरिक सिद्धांत कहते हैं, जो उनकी स्थिति के केंद्र में है - कोई व्यक्ति पवित्रशास्त्र को भगवान का शब्द मानता है या कोई यह नहीं मानता है कि पवित्रशास्त्र भगवान का शब्द है। यह विश्वास पवित्र आत्मा के कार्य का फल है। ईसाई सत्य की निश्चितता का अंतिम आधार पवित्र आत्मा की गवाही में खोजा जाना है।

इसलिए उनका निष्कर्ष यह है कि क्षमाप्रार्थी के लिए बेहतर है कि वह स्वयं को पवित्रशास्त्र की सच्चाई के लिए वस्तुनिष्ठ साक्ष्य की तलाश में शामिल न करे, बल्कि उसे इस व्यक्तिपरक दृष्टिकोण की ओर पीछे हटना चाहिए और फिर गैर-ईसाई विश्व दृष्टिकोण को तर्कों के बावजूद प्रदर्शित करना चाहिए। इसके विपरीत, साक्ष्य के किसी भी आधार पर खुद को सही नहीं ठहराया जा सकता है, और ईसाई स्थिति के समान ही व्यक्तिपरक में इसका अपना शुरुआती बिंदु है। तो, "भविष्यवाणी के क्षमाप्रार्थी मूल्य" पर उनका विचार यही है। उनके विचार में, आप या तो बाइबिल और धर्मग्रंथ पर विश्वास करते हैं या नहीं! और चाहे आप विश्वास करें या न करें कि बाइबिल परमेश्वर का वचन है, यह पवित्र आत्मा का कार्य है!

यह व्यक्तिपरक है. लेकिन फिर आप इसे पलट देते हैं और जो लोग आस्तिक नहीं हैं उन्हें बताते हैं कि उनकी स्थिति भी व्यक्तिपरक है। अब मुझे लगता है कि इसमें आपको क्षमाप्रार्थना के पूर्वकल्पित और साक्षात्क दृष्टिकोण के बीच अंतर का सामना करना पड़ता है जो एक और बड़ा विषय है।

4. मैकेन की टिप्पणियाँ

मेरे पास "ईसाई धर्म और संस्कृति" प्रकाशन से जेजी मैकेन का एक पैराग्राफ है। विवरण आपकी ग्रंथ सूची में पाए जाते हैं। आप मैकेन के पृष्ठ के नीचे रेखांकित कथन पर ध्यान दें। वह कहते हैं, "यह मान लेना एक बड़ी गलती होगी कि सभी मनुष्य सुसमाचार प्राप्त करने के लिए समान रूप से तैयार हैं। यह सच है कि निर्णायक मुद्दा ईश्वर की पुनर्योजी शक्ति है। यह पवित्र आत्मा का कार्य है जो लोगों को मसीह के ज्ञान में लाता है। वह कहते हैं, "यह तैयारी की सभी कमी को दूर कर सकता है, और इसकी अनुपस्थिति, सबसे अच्छी तैयारी को भी बेकार बना देती है।" और यहाँ रेखांकित कथन है, "लेकिन, वास्तव में, ईश्वर आमतौर पर मानव मन की कुछ पूर्व स्थितियों के संबंध में उस शक्ति का प्रयोग करता है, और जहाँ तक हम कर सकते हैं, ईश्वर की मदद से इसे बनाना हमारा काम होना चाहिए।" सुसमाचार के स्वागत के लिए वे अनुकूल परिस्थितियाँ... मेरा मतलब यह नहीं है कि बौद्धिक आपत्तियों को दूर करने से कोई व्यक्ति ईसाई बन जाएगा। नहीं, केवल तर्क-वितर्क से रूपांतरण कभी नहीं होता। हृदय परिवर्तन भी जरूरी है. और यह केवल ईश्वर की शक्ति के तत्काल प्रयोग से ही संभव हो सकता है।

लेकिन अगले कथन पर ध्यान दें, "लेकिन चूंकि बौद्धिक श्रम अपर्याप्त है, इसलिए इसका पालन नहीं होता है, जैसा कि अक्सर माना जाता है, कि यह अनावश्यक है। यह सच है कि भगवान अपनी पुनर्योजी शक्ति के तत्काल प्रयोग से सभी बौद्धिक बाधाओं को दूर कर सकते हैं। कभी - कभी वह करता है। लेकिन वह ऐसा बहुत कम ही करता है. आमतौर पर वह मानव मन की कुछ स्थितियों के संबंध में अपनी शक्ति का प्रयोग करता है। बाइबल की सत्यता और सुसमाचार की सत्यता के लिए जो भी दावे किए जा रहे हैं, दिमाग उन्हें देखता है

और उनका आकलन करता है। "आम तौर पर वह पूरी तरह से बिना तैयारी के, उन लोगों को राज्य में नहीं लाता है जिनके दिमाग और कल्पना पर उन विचारों का पूरी तरह से प्रभुत्व है जो सुसमाचार की स्वीकृति को तार्किक रूप से असंभव बनाते हैं।"

फ्रांसिस शेफ़र अक्सर लोगों के बारे में पूर्व-प्रचारक के रूप में बात करते थे और उनका मतलब प्रश्नों से निपटना, धर्मग्रंथ सुनने या सुसमाचार के संदेश पर आपत्तियों का उत्तर देने का प्रयास करना था। मुझे लगता है कि मैकेन यहां इसी बारे में बात कर रहे हैं।

मैंने माचेन का एक और निबंध सूचीबद्ध किया है जो आपके उद्धरण पृष्ठ 32-33 में है। उस चर्चा में वह कुछ ऐसी ही बातें कहते हैं। आइए इनमें से कुछ अनुच्छेदों पर नजर डालें। मैकेन कहते हैं, "एक आदमी सुसमाचार के किसी सच्चे प्रचारक को सुनता है। उपदेशक एक पुस्तक के आधार पर बोलता है जो वहाँ मंच पर खुली हुई है। जैसे ही उस पुस्तक के शब्दों की व्याख्या की जाती है, जो सुनता है उसके हृदय के रहस्य खुल जाते हैं। यद्यपि एक लबादा खींच लिया गया था। मनुष्य अचानक स्वयं को वैसे ही देखता है जैसे ईश्वर उसे देखता है। उसे अचानक पता चलता है कि वह परमेश्वर के उचित क्रोध और अभिशाप के तहत एक पापी है। फिर उसी अजीब किताब से संप्रभु सत्ता का एक और हिस्सा सामने आता है। उपदेशक, जैसे ही वह पुस्तक की व्याख्या करता है, राजा का राजदूत, जीवित ईश्वर का दूत प्रतीत होता है। जो व्यक्ति सुनता है उसे किसी और विचार की, किसी और तर्क की आवश्यकता नहीं होती। पवित्र आत्मा ने उसके हृदय के द्वार खोल दिये हैं। वह कहते हैं, 'वह पुस्तक जीवित परमेश्वर का वचन है; 'भगवान ने मुझे दूँड लिया है, मैंने उनकी आवाज सुनी है, मैं हमेशा के लिए उनका हूँ।'

फिर मैकेन टिप्पणी करते हैं, "हाँ, कभी-कभी इसी तरह से, और विस्तृत तर्क से नहीं, कि एक व्यक्ति आश्चर्य हो जाता है कि बाइबल ईश्वर का वचन है।" लेकिन फिर आप ध्यान दें कि वह वही दोहराता है जो उसने दूसरे उद्धरण में कहा था, "फिर भी इसका मतलब यह है कि तर्क अनावश्यक है... मैं अपनी पूरी आत्मा से आश्चर्य हो सकता हूँ कि बाइबिल ईश्वर का वचन है; लेकिन अगर मेरा पड़ोसी यह दिखाने के लिए विचार प्रस्तुत करता है यह वास्तव में त्रुटि से भरा है, मैं उन विचारों के प्रति उदासीन नहीं हो सकता। मैं वास्तव में उससे कह

सकता हूँ 'आपके विचार गलत हैं, और क्योंकि वे गलत हैं, मैं अच्छे विवेक के साथ अपने दृढ़ विश्वास पर कायम रह सकता हूँ।' या मैं उससे कह सकता हूँ, 'आप जो कहते हैं वह अपने आप में काफी सच है लेकिन यह इस सवाल के लिए अप्रासंगिक है कि क्या बाइबल ईश्वर का वचन है।' लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि दुनिया में मैं उनसे कैसे कह सकूँ, 'आपके विचार मेरे इस विश्वास के विपरीत हो सकते हैं कि बाइबिल ईश्वर का वचन है, लेकिन मुझे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं है; यदि आप चाहते हैं तो उन्हें पकड़े रहें ऐसा करें, लेकिन कृपया मेरी इस बात से भी सहमत हों कि बाइबल ईश्वर का वचन है।" यह एक बहुत ही वास्तविक स्थिति है। वह कहते हैं, "नहीं, मैं संभवतः ऐसा नहीं कह सकता।" वह अंतिम रवैया निश्चित रूप से काफी बेतुका है। दो विरोधाभासी बातें दोनों सच नहीं हो सकती हैं। हम बाइबल को ईश्वर के वचन के रूप में नहीं मान सकते हैं और साथ ही उन विचारों की सच्चाई को स्वीकार नहीं कर सकते हैं जो हमारे उस दृढ़ विश्वास के विपरीत हैं।

मैं अपनी पूरी आत्मा से विश्वास करता हूँ, दूसरे शब्दों में, ईसाई क्षमायाचना की आवश्यकता, ईसाई विश्वास की तर्कसंगत रक्षा की आवश्यकता, और विशेष रूप से ईसाई दृढ़ विश्वास की तर्कसंगत रक्षा कि बाइबिल ईश्वर का वचन है।

और फिर वह कहते हैं, वह एक छात्र सम्मेलन में थे जहां प्रचार के तरीकों पर चर्चा हो रही थी। वह कहते हैं कि किसी ने उठकर कहा (उस अगले पैराग्राफ के बीच में), "जब तक आप उसके साथ बहस करना बंद नहीं कर देते, तब तक आप किसी व्यक्ति को मसीह के पास नहीं ला सकते।" आपने संभवतः यह पहले भी सुना होगा। वह कहते हैं, "वैसे आप मेरे दोस्तों को जानते हैं, जब उन्होंने कहा कि मैं थोड़ा भी प्रभावित नहीं हुआ। निःसंदेह कोई भी व्यक्ति कभी भी *केवल* तर्क से मसीह के पास नहीं पहुँच सकता। यह बिल्कुल स्पष्ट है. नए जन्म में परमेश्वर की आत्मा का रहस्यमय कार्य अवश्य होना चाहिए। इसके बिना, वे सभी तर्क बिल्कुल बेकार हैं। लेकिन चूंकि तर्क अपर्याप्त हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे अनावश्यक हैं। नए जन्म में पवित्र आत्मा जो करता है, वह किसी व्यक्ति को सबूतों की परवाह किए बिना ईसाई बनाना नहीं है, बल्कि इसके विपरीत उसकी आँखों से धुंध को दूर करना और उसे सबूतों पर ध्यान देने में सक्षम बनाना है।

इसलिए मैं बाइबल की प्रेरणा की तर्कसंगत रक्षा में विश्वास करता हूँ। कभी-कभी यह किसी व्यक्ति को मसीह के पास लाने में तुरंत उपयोगी होता है... लेकिन इसका मुख्य उपयोग कुछ अलग तरह का होता है। इसका मुख्य उपयोग ईसाई लोगों को वैध सवालों का जवाब देने में सक्षम बनाना है, न कि ईसाई धर्म के प्रबल विरोधियों द्वारा, बल्कि उन लोगों के लिए जो सत्य की तलाश कर रहे हैं और हर तरफ सुनाई देने वाली शत्रुतापूर्ण आवाज़ों से परेशान हैं। तो, मैकेन

की वे टिप्पणियाँ हैं। 5. विश्वास और कारण - 1 पीटर 3:15 - सेंट ऑगस्टीन उस हैंडआउट पर मेरी अगली टिप्पणी यह है कि हृदय को खोलना पवित्र आत्मा का कार्य है। सबूत पेश करना हमारी जिम्मेदारी है। मुझे ऐसा लगता है कि सुसमाचार के तर्क और बचाव के लिए एक जगह है। 1 पतरस 3:15 कहता है कि यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उस विश्वास के लिए कारण बताएं जो हमारे भीतर है।

अगले पैराग्राफ में दो अन्य लेख संदर्भित हैं। सबसे पहले, ए जे न्यूहौस, "व्हाई वी कैन गेट अलॉन्ग," *फ़र्स्ट थिंग्स में*। अपने उद्धरणों के पृष्ठ 33 पर जाएँ। वह इस लेख में आस्था और तर्क के बीच संबंध के बारे में बात कर रहे हैं। और वह कहते हैं, "विश्वास, कारण और प्रवचन के बीच संबंधों के बारे में सोचने में, सेंट ऑगस्टीन विशेष रूप से सहायक है। विशेष रूप से उनके भक्तिपूर्ण और उपदेशात्मक लेखों से कुछ अंश मिलना संभव है, जिनका उपयोग यह दिखाने के लिए किया जा सकता है कि ऑगस्टीन एक निष्ठावान व्यक्ति है, जो विश्वास के लिए तर्क का त्याग करता है। आप जानते हैं, मुझे ऐसा लगता है जैसे वह कोई ऐसा व्यक्ति है जो आल्डर्स का पद धारण करता है जब वह कहता है कि यह सब आंतरिक सिद्धांत है। हम या तो विश्वास करते हैं या हम विश्वास नहीं करते हैं। साक्ष्य का इससे कोई लेना-देना नहीं है। वह निष्ठावाद है। इसका उपयोग यह सुझाव देने के लिए किया जा सकता है कि ऑगस्टीन एक निष्ठावान व्यक्ति है, जो विश्वास के लिए तर्क का त्याग करता है। लेकिन यह एक गंभीर गलतफ़हमी होगी।" आप अक्सर ऐसा देखते हैं। उसने जानने के लिए विश्वास किया।

“ऑगस्टाइन ने बड़े परिष्कार से बताया कि ऐसा क्यों है कि विश्वास उचित है और ऐसा क्यों है कि विश्वास के बिना कारण अधूरा है। उदाहरण के लिए, बहुत ही आकर्षक निबंध है, *विश्वास की उपयोगिता*। शीर्षक ही ऑगस्टीन की धारणा को दर्शाता है कि ईसाई और गैर-ईसाई एक साथ विचार करने में सक्षम हैं कि सत्य को समझने के लिए क्या उपयोगी होगा। ऑगस्टीन का मानना है कि समझने के लिए विश्वास आवश्यक है। वह अपने अविश्वासी वार्ताकार को विश्वास करने का उचित मामला विस्तार से समझाता है। यह स्पष्ट है कि ऑगस्टाइन और उनके वार्ताकार ने एक समान *प्राथमिकता साझा की..* कि विश्वास को समझने के लिए आवश्यक है - रोजमर्रा की जिंदगी में, विज्ञान में, दोस्ती में और धार्मिक मामलों में और विश्वास क्यों आवश्यक है क्योंकि यह स्वयं तर्कसंगत रूप से व्याख्या योग्य है। ऑगस्टीन कहते हैं, 'विश्वास करने के लिए मेरे शब्दों को समझें, लेकिन समझने के लिए भगवान के शब्दों पर विश्वास करें।' जैसा कि इपथम गिलसन लिखते हैं... '[ऑगस्टीन में] विश्वास की संभावना तर्क पर निर्भर करती है... क्योंकि केवल तर्क ही विश्वास करने में सक्षम है।'

फिर, 'कारण और विश्वास के बीच संबंधों से संबंधित ऑगस्टिनियन सिद्धांत में तीन चरण शामिल हैं: तर्क द्वारा विश्वास की तैयारी, विश्वास का कार्य, विश्वास की सामग्री को समझना।' लेकिन ऑगस्टाइन ने स्वयं इसे सबसे अच्छा कहा, 'कोई भी किसी भी चीज़ पर तब तक विश्वास नहीं करता जब तक कि वह पहले यह न सोचे कि यह विश्वसनीय है।' जिस बात पर विश्वास किया जाए उस पर पहले विचार करने के बाद ही विश्वास किया जाना चाहिए। हर कोई जो सोचता है वह विश्वास नहीं करता, क्योंकि बहुत से लोग विश्वास न करने के लिए सोचते हैं; परन्तु जो कोई विश्वास करता है वह सोचता है।'

ऑगस्टीन उस चीज़ का कट्टर विरोधी था जिसे बाद में फ़ाइडिज्म कहा जाने लगा। यह दावा कि विश्वास पूरी तरह से मनमाना है - कि यह समर्थित नहीं है और जो उचित है उसके बारे में *प्राथमिकता से अपील* नहीं कर सकता - ऑगस्टीन में या उस मामले में ईसाई विचार की महान परंपरा की मुख्यधारा में कोई समर्थन नहीं मिलता है।

6. ऐतिहासिक रूप से आमेरस्टेडम - पूर्वकल्पित; प्रिंसटन - साक्ष्यवादी

तो, न्यूहौस के लेख का वह छोटा सा दूसरा पैराग्राफ है। और फिर आपकी रूपरेखा में उल्लिखित अगला लेख डोनाल्ड फुलर और रिचर्ड गार्डिनर का एक काफी लंबा लेख है, जिसका शीर्षक है, "उन्नीसवीं सदी के अंत में प्रिंसटन और एम्स्टर्डम में सुधारित धर्मशास्त्र: एक पुनर्मूल्यांकन।" इसे 1995 में कोवेनेंट थियोलॉजिकल सेमिनरी में प्रकाशित किया गया था। मुझे लगता है कि यह 1900 के दशक की शुरुआत में प्रिंसटन जैसी जगहों पर उत्पन्न विचारधारा के स्कूलों की स्थिति को समझने में बेहद मददगार है। एक समय था जब एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय में उत्पन्न विचारधारा पूर्वकल्पनावादी क्षमाप्रार्थी थी और प्रिंसटन विचारधारा साक्ष्यवादी थी, जहां तक क्षमाप्रार्थी का संबंध था।

यह काफी लम्बा लेख है. आप देखेंगे कि मेरे पास पृष्ठ 34 से शुरू होकर पृष्ठ 37 तक जाने वाले आपके उद्धरणों में इसके काफी अंश हैं। मैं इसे पढ़ने के लिए समय नहीं लेना चाहता, लेकिन मैं आपको इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता हूं। मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि यह काफी जटिल हो गया है, लेकिन मुझे लगता है कि आप इसे इन मुद्दों को सुलझाने में मददगार पाएंगे।

बस पृष्ठ 37 की ओर मुड़ें और हम अंतिम 2 पैराग्राफ देखेंगे जहां फुलर और गार्डिनर कहते हैं, "वॉरफील्ड और पुराने प्रिंसटन धर्मशास्त्रियों का मानना था कि ईश्वर का ज्ञान प्रदान करने के लिए तर्क और विश्वास ने सच्चे मानव ज्ञान के साथ समन्वय किया, यहां तक कि यदि ज्ञान अधूरा था। विश्वास और तर्क की यह समन्वित धारणा ऑगस्टिनिज्म में निहित है," जैसा कि न्यूहौस कह रहा था, "उन्नीसवीं शताब्दी के सकारात्मकता के साथ गहराई से विरोधाभास है," - आत्मज्ञान प्रकार की सोच - और "इसका मतलब है कि भगवान के बारे में संयुक्त राष्ट्र से बात करना -पुनर्जीवित वास्तव में मायने रखता है। धर्मनिरपेक्ष बौद्धिक दृष्टिकोण के साथ ईसाई जुड़ाव के लिए वारफील्ड का दृष्टिकोण, कुयपर के रिट्रीटिस्ट अभिविन्यास से काफी अलग है। यह उस व्यक्तिपरक स्थिति, आंतरिक सिद्धांत की ओर वापसी थी। "वॉरफील्ड लिखते हैं, 'आइए, हम दिन की जांच के खिलाफ साहस का रवैया अपनाएं। उनमें से किसी

को भी हमसे अधिक उत्साही नहीं होना चाहिए। किसी को भी नहीं होना चाहिए हर क्षेत्र में सत्य को समझने में अधिक तेज, इसे प्राप्त करने में अधिक मेहमाननवाज़, जहां भी यह ले जाए, इसका पालन करने में अधिक वफादार। उस समय की जांच और खोजों के संबंध में ईसाइयों को गुनगुना होना उचित नहीं है। लेकिन इसलिए यह हमारे लिए है। ईसाइयों को अधिकतम जांच करने, हर विज्ञान में अग्रणी बनने, आलोचना के स्वर में खड़े होने, हर क्षेत्र में हमारे उद्धारक में विश्वास की सच्चाई को पकड़ने वाले पहले व्यक्ति बनने की जरूरत है। चर्च का अभिशाप उसकी उदासीनता रही है सत्य...उसे सत्य से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है; लेकिन उसे डरने के लिए सब कुछ है, और वह पहले से ही अज्ञानता से लगभग सब कुछ झेल चुकी है। मसीह, सत्य के अनुयायियों के रूप में सभी सत्य हमारे लिए हैं; आइए हम अपनी विरासत में प्रवेश करें।" तो, ये इस बड़े प्रश्न पर कुछ टिप्पणियाँ हैं, "क्या भविष्यवाणी-पूर्ति के लिए क्षमाप्रार्थी मूल्य है?" ये कुछ पद हैं जिन्हें ले लिया गया है।

बी. बाइबिल का रहस्योद्घाटन दावा

बी . पृष्ठ 5 पर शीर्षक है, "बाइबल का रहस्योद्घाटन दावा।" बाइबल स्वयं को ईश्वर के वचन के रूप में प्रस्तुत करती है, न कि केवल मानवीय विचार या प्रतिबिंब के उत्पाद के रूप में। बाइबल का अधिकांश भाग मानव इतिहास से संबंधित है, और इसके भविष्यसूचक खंडों में बाइबल भविष्य के इतिहास की व्यापक रेखाओं को चित्रित करने का दावा करती है जो कि ईश्वर की संप्रभु इच्छा से निर्धारित होती है जो इसके माध्यम से बोलता है। इस अनूठे दावे के लिए सत्यापन और परीक्षण की आवश्यकता है और यह निश्चित रूप से खुला है। चाहे कोई बाइबल पर विश्वास करे या न करे, इसके ऐतिहासिक कथन (भविष्यवाणी और गैर-भविष्यवाणी दोनों) कुछ ऐसे हैं जिन्हें काफी हद तक सत्यापन के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है। बाइबल इंगित करती है कि इतिहास के लिए इसकी अधिकांश प्रकट योजना पहले ही इज़राइल के इतिहास और यीशु मसीह की उपस्थिति में साकार हो चुकी है। यह हमारा तर्क है कि भविष्यवाणी और पूर्ति के बीच संबंध में, विशेष रूप से पुराने नियम और

ईसा मसीह के बीच, एक वस्तुनिष्ठ भविष्यवाणी/पूर्ति संरचना पाई जानी चाहिए जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे या पहचानने योग्य हो। इस भविष्यवाणी/पूर्ति संरचना का अस्तित्व उस ईश्वर के अस्तित्व और सत्यता की ओर इशारा करता है जिसने बाइबिल रहस्योद्घाटन में बात की है।

इस भविष्यवाणी/पूर्ति संरचना की विशेषता यह नहीं है कि इसे धार्मिक या आध्यात्मिक गुणवत्ता कहा जा सकता है। यह कुछ व्यक्तिपरक या आंतरिक नहीं है। बल्कि, यह कुछ ऐसा है जो अपने स्वभाव से ही धार्मिक व्यक्तिपरकता को तोड़ता है, क्योंकि यह एक पहचानने योग्य इकाई के रूप में खड़ा है जो उस ईश्वर के प्रति धार्मिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता के अलावा बाइबिल रहस्योद्घाटन के ईश्वर की वास्तविकता और सत्यता की ओर इशारा करता है। दूसरे शब्दों में, आप किसी भविष्यवाणी को देख सकते हैं और इतिहास को देख कर देख सकते हैं कि क्या वह पूरी हुई, और यह ऐसी चीज़ है जिसे सत्यापन के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है; वह स्वयं से बाहर की चीज़ है।

पुराने नियम और नए नियम में हम देखते हैं कि ईश्वर के अस्तित्व का प्रदर्शन मुख्य रूप से स्पष्ट रूप से पहचानने जाने योग्य संकेतों और भविष्यवाणी और पूर्ति की सुसंगतता पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, यदि आप बाइबल को ही लें, तो परमेश्वर स्वयं को कैसे प्रकट करता है? निर्गमन की घटनाओं के बारे में सोचें और उन विपत्तियों से गुजरें जहां कथन स्पष्ट है। “ये बातें इसलिये की जाती हैं कि तुम जान लो कि मैं यहोवा हूँ।” आप उन्हें देख सकते हैं। आप देख सकते हैं कि मूसा पहले से बोलता है और फिर ऐसा होता है। यह जोशुआ में भी सच है जहां जॉर्डन नदी को पार करने और जेरिको पर कब्ज़ा करने के साथ भी यही होता है। इसलिए, ईश्वर के अस्तित्व का प्रदर्शन मुख्य रूप से पहचानने योग्य संकेतों और भविष्यवाणी और पूर्ति की सुसंगतता पर आधारित है। हालाँकि यह सच है कि ईश्वर के "अस्तित्व" की बौद्धिक मान्यता अस्तित्वगत अर्थ में विश्वास नहीं है, क्योंकि विश्वास मनुष्य और ईश्वर के बीच संबंध विकसित करने वाले पवित्र आत्मा के कार्य से संभव है। फिर भी, यह वास्तविक विश्वास का परिणाम और पूर्व शर्त है। सच्चा विश्वास ईश्वर ने इतिहास में, अपनी शक्ति और अस्तित्व में जो प्रदर्शित किया है, उसकी प्रतिक्रिया है। इस सब में यह याद रखना आवश्यक है कि एक वस्तुनिष्ठ रहस्योद्घाटन है। यह वस्तुनिष्ठ रहस्योद्घाटन उस विश्वास की प्रतिक्रिया के

अलावा मौजूद है जो पवित्र आत्मा द्वारा व्यक्ति में तब काम किया जाता है जब वह व्यक्ति खुद को बाइबिल रहस्योद्घाटन के भगवान के प्रति समर्पित करता है। इस भेद को आंतरिक रहस्योद्घाटन और बाह्य रहस्योद्घाटन कहा जा सकता है। गलतफहमी से बचने के लिए, हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि वस्तुनिष्ठ भविष्यवाणी मौजूद है और एक पहचाने जाने योग्य चरित्र, बाहरी रहस्योद्घाटन द्वारा पहचानी जाती है।

मुझे ऐसा लगता है कि आल्डर्स जैसे लोग इसी चीज़ को मिस करते हैं। वे उस आंतरिक सिद्धांत के बारे में बात करते हैं। एकदम बढ़िया। हां, वह आंतरिक सिद्धांत है लेकिन वह पवित्र आत्मा है जो हमारे अंदर पुनर्जीवित हो रहा है और मन को खोल रहा है। इसके बिना किसी को भी सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोई बाहरी सिद्धांत या बाहरी रहस्योद्घाटन नहीं है - कुछ ऐसा जो वास्तव में मौजूद है जो इस बात का प्रमाण देता है कि ईश्वर वही है जो वह होने का दावा करता है। इसी तरह से भगवान ने खुद को पवित्रशास्त्र, संकेतों और चमत्कारों और भविष्यवाणी/पूर्ति के माध्यम से जाना।

सी. भविष्यवाणी और पूर्ति

तो यह हमें सी ., "भविष्यवाणी और पूर्ति" पर लाता है। पुराने नियम में हमारा सामना ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के एक अनोखे और आश्चर्यजनक रूप से होता है। इस रहस्योद्घाटन में ऐसे घटक शामिल हैं जो इज़राइल के ईश्वर की वास्तविकता को उद्देश्यपूर्ण और पहचानने योग्य तरीके से प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त हैं। वे सम्मिलित करते हैं:

1. ईश्वर अपने अस्तित्व और शक्ति को कई तरीकों से कई गवाहों के बीच पहचानने योग्य बनाता है, जिसमें संकेत, चमत्कार और थियोफनी शामिल हैं। यह कुछ ऐसा है जो वहां मौजूद है। इसे कई गवाहों द्वारा देखा जा सकता है और देखा भी गया है।
2. परमेश्वर अपने प्रवक्ता भविष्यवक्ताओं के माध्यम से भविष्य के इतिहास की एक योजना बताता है।

3. भविष्य के इतिहास के लिए यह योजना फलीभूत हुई है जैसा कि भविष्यवक्ताओं द्वारा प्रतिपादित और भविष्यवाणी की गई थी।

ध्यान दें कि पहले घटक में - संकेत, चमत्कार और थियोफनी - किसी चीज़ की बोधगम्य प्रस्तुति है जिसमें यहोवा स्वयं को प्रकट करने का दावा करता है। दूसरे दो घटकों का उद्देश्य उस दावे के साक्ष्य की पुष्टि करना है, यानी भविष्यवाणी और पूर्ति, योजना और निष्पादन।

यहां यह कहा जा सकता है कि पुराना नियम अन्य सभी "धार्मिक रहस्योद्घाटन" से खुद को अलग करता है, क्योंकि वह केवल इस आधार पर विश्वास को बढ़ावा नहीं देता है कि कुछ लोग दिव्य रहस्योद्घाटन द्वारा प्राप्त होने का दावा करते हैं। कोई भी वहां जा सकता है और कह सकता है कि भगवान ने मुझसे बात की है। मुहम्मद ने यही किया। ऐसा कोई भी कर सकता है। लेकिन यह इस आधार पर विश्वास को बढ़ावा नहीं दे रहा है कि लोगों ने दावा किया है कि उन्हें ईश्वरीय रहस्योद्घाटन से प्राप्त हुआ है। बल्कि, विश्वास रहस्योद्घाटन में स्थापित होता है जो बाहरी संकेतों और पूर्व घोषित योजना के अनुसार इतिहास की प्रगति से जुड़ा होता है। रूपरेखा में मैंने इसके कुछ बाइबिल उदाहरण दिए हैं।

अब मैं यहाँ एक भेद करना चाहता हूँ। वे चिन्ह और चमत्कार उन लोगों के लिए ईश्वर के अस्तित्व और शक्ति के प्रमाणीकरण का कार्य करते हैं जिन्होंने उस समय उन्हें देखा था। हम अब वहां नहीं हैं। हम बस इतना कर सकते हैं कि उस समय भगवान ने क्या किया और कैसे उन्होंने खुद को अपने लोगों के सामने प्रकट किया, पलायन के समय से लेकर विजय के समय या ईसा मसीह के पहले आगमन के बारे में रिपोर्टें पढ़ीं।

अगले पैराग्राफ में, मैंने उल्लेख किया है कि पुराने नियम में ईश्वर के अस्तित्व के लिए कोई पौराणिक या आध्यात्मिक तर्क नहीं दिया गया है। यह वह तरीका नहीं है जिससे ईश्वर अपने अस्तित्व को प्रदर्शित करता है।

1. भविष्यवक्ता स्व-प्रमाणीकरण फिर अगला पैराग्राफ। भविष्यवक्ताओं के शब्दों को प्रमाणित करने और अपनी उपस्थिति को अपने लोगों के सामने प्रकट करने के लिए भगवान

ने जो संकेत दिए, उन्होंने रहस्योद्घाटन और मुक्ति की ऐतिहासिक प्रगति के संबंध में तत्काल और प्रत्यक्ष प्रमाणीकरण उद्देश्य पूरा किया। रहस्योद्घाटन के पूरा होने के साथ हमें ऐसे संकेतों की निरंतरता की तलाश नहीं करनी चाहिए। हमने रहस्योद्घाटन और मुक्ति की प्रगति के बारे में वोस की अवधारणा के संबंध में पहले भी बात की है। रहस्योद्घाटन में वस्तुनिष्ठ पक्ष के साथ-साथ व्यक्तिपरक व्यक्तिगत पक्ष भी होता है। रहस्योद्घाटन वास्तव में मुक्ति की व्याख्या है और रहस्योद्घाटन इसके साथ-साथ चलता है। लेकिन जब मुक्ति मसीह में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचती है, तो रहस्योद्घाटन का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। लेकिन वह दूसरा मुद्दा है। हम ऐसे संकेतों की निरंतरता की आशा नहीं करते। इसलिए, संकेत आज हमारे लिए *वही प्रत्यक्ष प्रमाणिक उद्देश्य* नहीं निभाते हैं जैसा कि उन्होंने उन लोगों के लिए किया था जिन्हें मूल रूप से संकेत दिए गए थे। हालाँकि, भविष्यवाणी और पूर्ति के बीच का संबंध इस तरह का है कि बाइबिल के रहस्योद्घाटन के भगवान के अस्तित्व और सत्यता के प्रमाण के रूप में *इसका मूल्य* आने वाली पीढ़ियों के बीच भी, *प्रत्यक्ष तरीके से कार्य करना जारी रखता है*। दूसरे शब्दों में, संकेत और चमत्कार उसी समय कार्य करते हैं जिस समय उन्हें दिया गया था। अब हम इसकी रिपोर्ट पढ़ते हैं। भविष्यवाणी और पूर्ति आने वाली पीढ़ियों के लिए भी कार्य करती रहती है क्योंकि ये पीढ़ियाँ उस भविष्यवाणी/पूर्ति संरचना को देख सकती हैं। यदि आप यह स्थापित कर सकते हैं कि भविष्यवाणी एक निश्चित बिंदु और समय पर दी गई थी और यह सदियों बाद तक पूरी नहीं हुई थी। इस प्रकार की भविष्यवाणियों के कई उदाहरण हैं - उनमें कुछ ऐसा है जो मुझे लगता है कि क्षमाप्रार्थी है।

2. ब्लूम, गॉघ और न्यूमैन: परीक्षण योग्य चमत्कार

जेए ब्लूम और एचजी गॉघ और आरसी न्यूमैन, जो कई वर्षों तक यहां नए नियम के प्रोफेसर थे, तर्क देते हैं कि पूरी की गई भविष्यवाणी एक सुलभ प्रकार का चमत्कार है, एक रिपोर्ट किए गए चमत्कार के बजाय एक परीक्षण योग्य चमत्कार है। तुम्हें वहाँ भेद दिखाई देता है? उनका तर्क है कि चूंकि पूरी की गई भविष्यवाणी एक सुलभ प्रकार का चमत्कार है, एक रिपोर्ट किए गए चमत्कार के बजाय एक परीक्षण योग्य चमत्कार है, भविष्यवाणी का यह

चरित्र रिपोर्ट किए गए चमत्कार की कठिनाई को दूर करने का काम करता है जैसे कि जो हुआ उसका अवलोकन या व्याख्या करना। भविष्यवाणी चमत्कार के निजी अनुभव से अलग है क्योंकि इसकी पूर्ति अक्सर किसी भी इच्छुक व्यक्ति द्वारा परीक्षण योग्य होती है, चाहे वह व्यक्ति बाइबिल के आस्तिक विश्वदृष्टि के प्रति सहानुभूति रखता हो या नहीं। तो फिर, इज़राइल का ईश्वर वह है जो उन चीज़ों के आधार पर विश्वास का दावा करता है जो लोगों ने उसके बारे में देखी और अनुभव की हैं। तार्किक रूप से या तार्किक रूप से बोलते हुए, यह कहा जा सकता है कि पुराना नियम दर्शाता है कि इज़राइल विश्वास करने के अलावा शायद ही कुछ कर सकता है क्योंकि वह वस्तुनिष्ठ तथ्यों से जान सकता है कि यहोवा है। यदि आप उन लोगों में से थे जिन्हें मिस्र से बाहर भेजा गया था तो आप उस निष्कर्ष पर कैसे नहीं पहुंच सकते थे? और उसका कोई भी शब्द उसके पास खाली या निरर्थक नहीं लौटता। इस्राएल जानबूझकर उन चीज़ों से मुंह मोड़ सकता था और किया भी जो स्पष्ट रूप से मूर्तिपूजा थीं। प्रभु ने अपने लोगों को कई अचूक चीज़ें दीं, एनआईवी के पास अधिनियम 1 के शब्दों का उपयोग करने के लिए "ठोस" सबूत हैं, जहां वह अपने अस्तित्व और शक्ति की सत्यता का दावा करता है। अपनी गवाही में हमें कुछ भी कम नहीं करना चाहिए, और बस उन तरीकों को अपनाना चाहिए जिन्हें भगवान ने स्वयं अपने लोगों को प्रदर्शित करने के लिए अपनाया था कि वह मौजूद हैं। इस तरह उसने अपने लोगों का उद्धार किया।

तो, उस संदर्भ में, निष्कर्ष में उल्लिखित कुछ योग्यताओं को देखते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि भविष्यवाणी और पूर्ति कुछ ऐसी है जो सत्यापन योग्य और परीक्षण योग्य है, और यह एक वस्तुनिष्ठ संरचना है जो व्यक्ति के बाहर खड़ी है। बाइबल और मानव जाति के मुक्तिदाता के रूप में ईसा मसीह के सत्य दावों की ओर इशारा करने का क्षमाप्रार्थी अर्थ में इसका एक वैध कार्य है। मैं निष्कर्ष नहीं पढ़ूंगा, आप स्वयं ऐसा कर सकते हैं। तो वह रोमन अंक X है।

XI. ओबद्याह

आपके कक्षा व्याख्यान की रूपरेखा के पृष्ठ 6 पर हम पाठ्यक्रम के नए खंड, "भविष्यवाणी पुस्तकों का सर्वेक्षण" पर आते हैं। जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, मैं अपने शेष पाठ्यक्रम के लिए होशे, ओबद्याह, जोएल और आमोस के छोटे भविष्यवक्ताओं के माध्यम से जाना चाहता हूँ।

1. परिचयात्मक टिप्पणियाँ बिंदु 1 है, "परिचयात्मक टिप्पणियाँ।" तो ओबद्याह जाने से पहले, मैं कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करना चाहूँगा। हमने पहले भविष्यवाणी पुस्तकों के वर्गीकरण के बारे में बात की थी और यहूदी परंपरा में पूर्व पैगंबरों और बाद के पैगंबरों का वर्गीकरण है। आज हमारी परंपरा में पूर्व पैगंबर ऐतिहासिक पुस्तकें हैं: जोशुआ, जज, सैमुअल्स और किंग्स।

बाद के भविष्यवक्ताओं को हम भविष्यसूचक पुस्तकें कहते हैं। वे दो समूहों में विभाजित हैं। मुझे यकीन है कि आप उस वर्गीकरण से परिचित हैं: प्रमुख पैगम्बर और छोटे पैगम्बर। बड़े और छोटे शब्दों का महत्व या महत्व से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि केवल लंबाई से है। प्रमुख भविष्यवक्ता बड़े हैं: यशायाह, यिर्मयाह, ईजेकील और डैनियल। छोटे भविष्यवक्ता 12 हैं। मुझे लगता है कि आपको उनके नाम पता होने चाहिए, मैं सूची पर ध्यान नहीं दूँगा।

लेकिन मैं छोटे पैगंबरों की सूची की व्यवस्था के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। आप बुलॉक में पढ़ रहे हैं, वास्तव में आप बुलॉक द्वारा बताए गए क्रम से भिन्न क्रम में पढ़ रहे हैं और इसका कारण बस इतना है कि बुलॉक द्वारा कुछ भविष्यवक्ताओं के साथ डेटिंग करना मेरे द्वारा उन्हें डेट करने के तरीके से भिन्न था। उदाहरण के लिए, पहला ओबद्याह है।

2. छोटे पैगम्बरों का क्रम लेकिन आप इस प्रश्न पर आते हैं कि आज हमारी बाइबिल में छोटे पैगम्बर उसी क्रम में क्यों हैं जिस क्रम में वे वर्तमान में आते हैं? जब आप हमारी अंग्रेजी बाइबिल में देखते हैं, और यह हिब्रू बाइबिल में भी सच है, छोटे पैगम्बरों में, आपके पास हैं: होशे, जोएल, अमोस और ओबद्याह पहले चार के रूप में, और फिर जोनाह और मीका।

लेकिन यदि आप सेप्टुआजेंट पर जाएं, तो पहले 6 इस क्रम में हैं: होशे, अमोस, मीका, जोएल, ओबद्याह और योना। यह बिल्कुल अलग क्रम है। जिस क्रम से हम परिचित हैं वह हिब्रू बाइबिल से लिया गया है और सेप्टुआजेंट में एक अलग क्रम है। यदि आप दोनों सूचियों को देखें, तो जहाँ तक पुस्तकों के क्रम की बात है, उनमें से किसी भी सूची के लिए बहुत कम स्पष्ट मानदंड प्रतीत होते हैं। मुझे लगता है कि ध्यान देने योग्य बात यह है कि हाग्वै, जकर्याह और मलाकी अंतिम स्थान पर हैं और वे सभी निर्वासन के बाद के हैं। तो ऐसा लगता है कि कम से कम उन अंतिम पुस्तकों में एक कालानुक्रमिक तत्व है। क्रम में अमोस को होशे के बाद रखा गया है। होशे, अमोस ओबद्याह। फिर भी अमोस होशे से पहले था। तो आपके पास यह प्रश्न है, और मुझे नहीं लगता कि कोई भी कभी भी सेप्टुआजेंट या हिब्रू बाइबिल में पुस्तकों के क्रम के लिए कोई ठोस स्पष्टीकरण लेकर आया है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें इसके प्रति सचेत रहना चाहिए।

3. छोटे पैगम्बरों के साथ डेटिंग

हम ओबद्याह और जोएल के साथ डेटिंग के मुद्दों पर चर्चा करने जा रहे हैं। उन दोनों को डेट करना बहुत मुश्किल है। लेकिन मुझे लगता है कि यदि आप उन राष्ट्रों का उपयोग करते हैं जो इज़राइल और यहूदा के इतिहास को प्रभावित करने वाली प्रमुख शक्ति थे, तो आप भविष्यवक्ताओं को तीन अवधियों में विभाजित कर सकते हैं: असीरियन काल, नव-बेबीलोनियन काल और फारसी काल। यह वह क्रम है जिसका आप बुलॉक में अपने पढ़ने में पालन कर रहे हैं। तो असीरियन काल में नौ पैगंबर हैं, बेबीलोनियन काल में - यिर्मयाह, ईजेकील, डैनियल, सफन्याह और हबक्कूक, और फारसी काल में - हाग्वै, जकर्याह और मलाकी। तो बस उन पुस्तकों में से पहली चार को देखते हुए सामान्य टिप्पणियाँ: होशे, जोएल, अमोस और ओबद्याह।

ए. ओबद्याह चलिए ओबद्याह चलते हैं। मैंने तुम्हें वह हैंडआउट दिया। आप देखेंगे कि ए. रोमन अंक II के अंतर्गत, "ओबद्याह की तिथि और लेखक" है। मुझे लगता है कि हमने

उल्लेख किया था कि ओबद्याह अब तक की सबसे कठिन तारीखों में से एक है। तिथि पर मतभेद उदारवादी या रूढ़िवादी दृष्टिकोण पर आधारित नहीं हैं और वे लगभग 840 ईसा पूर्व से लेकर हैं, जो इसे सबसे प्रारंभिक बनाता है, 586 ईसा पूर्व के आसपास यरूशलेम के विनाश के आसपास, और फिर कुछ 450 के आसपास तक। तो आप इसे वहां देख सकते हैं निष्कर्षों की एक विस्तृत श्रृंखला है।

डेटिंग प्रश्न के मूल में यरूशलेम की लूट की पहचान निहित है जिसका उल्लेख श्लोक 10 और 11 में किया गया है। यदि आप ओबद्याह की ओर मुड़ते हैं, जो एक अध्याय की पुस्तक है, तो आप देखेंगे, यह एदोमियों के खिलाफ एक दैवज्ञ है। एदोमियों पर न्याय सुनाया जा रहा है। श्लोक 10 और 11 में, ओबद्याह कहता है, "तुम्हारे भाई याकूब के खिलाफ हिंसा के कारण," (एदोमवासी एसाव के वंशज हैं), "तुम शर्म से डूब जाओगे, तुम उस दिन हमेशा के लिए नष्ट हो जाओगे जिस दिन तुम अलग खड़े थे जब अजनबी ले जा रहे थे " उसकी सम्पत्ति लूट ली, और परदेशियों ने उसके फाटकों से प्रवेश करके यरूशलेम के लिये चिट्ठी डाली। आप उनमें से एक थे।" इसलिए यहां एदोमियों का यरूशलेम को लूटने में किसी प्रकार का संबंध होने का संदर्भ है। परदेशी धन लूट ले गए, और यरूशलेम के लिये चिट्ठी डाली। आपने देखा होगा कि मैं वहां कहता हूं कि मूल मुद्दा 10 और 11 में एदोमियों द्वारा यरूशलेम की लूट पर है और संभवतः 14 तक। यह एक व्याख्यात्मक मुद्दा बन जाता है और इसका तारीख पर असर पड़ता है। क्या श्लोक 12-14 भविष्य में यरूशलेम की इसी प्रकार की लूट की बात करते हैं या वे श्लोक 10 और 11 की निरंतरता हैं? मैं उस पर वापस आऊंगा और हम बाद में इस पर अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। लेकिन सबसे पहले, श्लोक 10 और 11 में उल्लिखित यरूशलेम की लूट की पहचान के लिए किन पदों पर तर्क दिया गया है? मैंने उनमें से 3 को यहां सूचीबद्ध किया है।

1. यहूदा के यहोराम के शासनकाल में पलिशियों और अरबियों के गठबंधन द्वारा लूटपाट ए. है, "यहूदा के यहोराम के शासनकाल में पलिशियों और अरबियों के गठबंधन द्वारा लूट।" 2 इतिहास 21:8 में आपने पढ़ा कि यहोराम के समय में, "एदोम ने यहूदा से

विद्रोह किया, और अपना राजा स्थापित किया।" श्लोक 10, "आज तक एदोम ने यहूदा के विरुद्ध विद्रोह किया है।" श्लोक 16 पर जाएँ। यह वही समय है, यहोराम के शासनकाल के दौरान, "यहोवा ने यहोराम के विरुद्ध पलिशितियों और रहने वाले अरबों की शत्रुता जगाई कूशियों के निकट। उन्होंने यहूदा पर आक्रमण किया, और उस पर आक्रमण किया, और बेटों और पत्नियों समेत राजा के महल में जो कुछ मिला, सब लूट ले गए। एक भी पुत्र न बचा।" तो एदोमियों के विद्रोह से जुड़े यरूशलेम की लूट पर हमारे रिकॉर्ड हैं। 2 राजा 8:20 में आपके पास यहोराम के खिलाफ एदोमियों के विद्रोह का कोई संदर्भ नहीं है। इसलिए, यह संभव है कि एदोमियों ने उस आक्रमण में सहयोग किया और साझा किया लूट में। हो सकता है कि यही कारण ओबद्याह में एदोम पर फैसले के लिए उकसाया गया हो। यह प्रारंभिक दृष्टिकोण है।

2. 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम की बेबीलोनियाई लूट

दूसरा दृष्टिकोण यह है कि ओबद्याह के छंद 10 और 11 में आपके पास 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम की बेबीलोनियाई लूट का संदर्भ है, नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम का विनाश, कुछ लोग कहते हैं, ईजेकील 35:5 द्वारा समर्थित है लेकिन संदर्भ निर्णायक नहीं है। यहजेकेल 35:5 कहता है (यह एदोम के लिए निर्देशित एक भविष्यवाणी है, न्याय की एक भविष्यवाणी), "क्योंकि तू ने प्राचीन शत्रुता पाल रखी थी, और इस्राएलियों को उनकी विपत्ति के समय, तलवार से, और उनके दण्ड के समय पर पहुंचा दिया इसका चरमोत्कर्ष," (स्पष्ट रूप से बाबुल द्वारा यरूशलेम के विनाश का समय सामने है), "इसलिये मेरे जीवन की शपथ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है, मैं तुम्हें रक्तपात करने को देता हूँ, और वह तुम्हारा पीछा करेगा। चूँकि तुमने रक्तपात से घृणा नहीं की, इसलिए रक्तपात तुम्हारा पीछा करेगा।" तो, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि, हाँ, 586 में यरूशलेम की लूट में एदोमियों की कुछ भागीदारी थी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने पहले ऐसा नहीं किया था! चूँकि एदोम ने बाद में यरूशलेम के विनाश के समय भी ऐसा ही रुख अपनाया था, इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने पहले भी ऐसा कुछ नहीं किया था। 586 तारीख पर आपत्तियाँ यह हैं

कि इसमें पूरी आबादी के निर्वासन का कोई उल्लेख नहीं है, शहर और मंदिर के विनाश का कोई उल्लेख नहीं है, न ही कविता 10 से नबूकदनेस्सर का कोई उल्लेख है, "क्योंकि आप अपने भाई के खिलाफ हिंसा करेंगे।" अधर्म से ढका हुआ।"

फिर पृष्ठ 2 के शीर्ष पर, संदर्भ के दो बिंदुओं के रूप में 10-11 और 12-14 की व्याख्या पर विचार किया जाना चाहिए। यिर्मयाह 49:1 में समान पदावली है और इसका ओबद्याह 1-6 से संबंध है। कुछ लोग डेटिंग के लिए इसका उपयोग करने का प्रयास करते हैं। यिर्मयाह 49:1-7 और ओबद्याह 1-6 के बीच भाषा में संकेत हैं। प्रश्न यह है कि किस पैगम्बर को प्राथमिकता दी जाती है? चीजें इस बात पर विभाजित हैं कि कौन सा मूल है या क्या दोनों किसी अज्ञात भविष्यवाणी के पुराने स्रोत को दर्शाते हैं। आप भाषा में इन समानताओं को कैसे समझते हैं? क्या ओबद्याह यिर्मयाह की भाषा को प्रतिबिंबित कर रहा है? या क्या यह दूसरा तरीका है, क्या यिर्मयाह ओबद्याह की भाषा को प्रतिबिंबित कर रहा है? यह या तो हो सकता है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि डेटिंग के बारे में किसी नतीजे पर पहुंचने का यह कोई तरीका है।

3. ओबद्याह की जेबी पायने आयत 10-11 आहाज के समय में सीरिया द्वारा इज़राइल पर हमले के बारे में बात करती है

लेकिन फिर जे. बार्टन पायने की ओर से तीसरा सुझाव यह आता है कि ओबद्याह की आयत 10-11 में आहाज के समय सीरिया द्वारा इज़राइल पर हमले के बारे में बात की गई है और उसके साथ-साथ एदोमियों ने भी हमला किया था। वह 2 इतिहास 28:16-18 है, जहाँ आप पढ़ते हैं, "उस समय राजा आहाज सहायता के लिये अश्शूर के राजा के पास गया। एदोमियों ने फिर आकर यहूदा पर आक्रमण किया और बन्दियों को ले गए, जबकि पलिशियों ने तलहटी में आक्रमण किया और फिर उन्होंने यहूदा को दे दिया। उन्होंने [इसके स्थानों पर] कब्ज़ा कर लिया।" तो यह एक और संभावना है, हालाँकि यरूशलेम का कोई विशेष संदर्भ नहीं है।

अब जो आगे है वह तो बस कुछ नाम हैं। बेबीलोनियों, नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम

को लूटने के बाद, 586 ईसा पूर्व के बाद की तारीख के कुछ समर्थक हैं। आरके हैरिसन लगभग 450 ईसा पूर्व की बाद की तारीख मानते हैं

तो यह डेटिंग के बारे में सवाल है, और जैसा कि मैंने बताया यह सवाल तब और उठता है जब आप श्लोक 10-11 और 12-14 को करीब से देखते हैं और आप जो निष्कर्ष निकालते हैं वह उनके बीच का संबंध है। मैं उस चर्चा को अभी कुछ मिनटों के लिए रोकना चाहता हूँ। लेकिन हम इस पर वापस आएं। लेकिन 10-11 में आप जेरूसलम की जिस लूट का जिक्र देखते हैं, वह डेटिंग पर आपके निष्कर्ष को प्रभावित करने वाली है।

4. ओबद्याह के लेखक

लेखक ओबद्याह है, जिसका अर्थ है, "प्रभु का सेवक।" वह एक भविष्यवक्ता है जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते। हमारे पास केवल उसकी भविष्यवाणी है और ओबद्याह की किताब में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इस व्यक्ति के बारे में कुछ कहता हो। पुराने नियम में कई अन्य ओबद्याह का उल्लेख है लेकिन किसी अन्य का उल्लेख नहीं किया गया है जो अहाब के समय से जुड़ा हो।

बी. ओबद्याह की पुस्तक का विषय

बी . है, "पुस्तक का विषय।" हम पहले ही यहां इसका थोड़ा-सा वर्णन कर चुके हैं। यह एदोम पर न्याय की घोषणा है। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि एदोमी लोग एसाव के वंशज थे। उत्पत्ति में वापस जाएँ और एदोमियों का एसाव के साथ संबंध देखें। उत्पत्ति 36:8 हमें बताता है कि एसाव एदोम की सेईर पर्वत श्रृंखला में रहता था, जिसे अक्सर मातृभूमि के पर्याय के रूप में उपयोग किया जाता है, सीधे मृत सागर के दक्षिण में और पूर्व में एक पहाड़ी देश के साथ, रिफ्ट वैली डिप्रेसन के पूर्व में, जो जोड़ता है। मृत सागर और लाल सागर की अकाबा खाड़ी। प्रमुख शहर बोज़रा और शायद सेला थे, जिसका अर्थ है "निजी चट्टान", कुछ लोग सोचते हैं कि यह पेट्रा शहर का संदर्भ है जो एडोमाइट क्षेत्र में एक प्रसिद्ध पुरातत्व स्थल है। एज़ियोनगेबर से, जो अकाबा की खाड़ी के बिल्कुल सिरे पर है, एक सड़क है जिसे किंग्स

हाईवे कहा जाता है, जो एदोम के माध्यम से उत्तर की ओर जाती थी। यही वह मार्ग था जिस पर निर्गमन के समय मूसा इस्राएलियों का नेतृत्व करना चाहता था, लेकिन यदि आपको याद हो तो उस समय एदोमियों ने इस्राएलियों को जाने से मना कर दिया था और इसलिए उन्हें इधर-उधर जाना पड़ा। उस समय से, एदोमियों और इस्राएलियों के बीच संघर्ष होते रहे। मुझे लगता है कि यह उस विवाद का नतीजा है जिसे आप याकूब/एसाव विवाद कह सकते हैं यदि आपको वह पूरी स्थिति याद है जब इसहाक आदि से आशीर्वाद पाने के लिए दोनों भाइयों के बीच संघर्ष हुआ था।

अपने उद्धरणों के पृष्ठ 38 को देखें। केइल ने इस रिश्ते पर कुछ टिप्पणियाँ कीं और हम इसी के साथ अपनी बात समाप्त करेंगे। उन्होंने कहा, "गलत या हिंसा तब और भी अधिक निंदनीय है जब यह किसी भाई के खिलाफ किया जाए। जिस भाईचारे के रिश्ते में एदोम यहूदा के प्रति खड़ा था, उसे याकूब नाम से अभी भी अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है, क्योंकि एसाव और याकूब जुड़वां भाई थे। यह चेतना कि इस्राएली उनके भाई थे, एदोमियों को उत्पीड़ित यहूदियों को सहायक सहायता प्रदान करने के लिए प्रेरित करना चाहिए था। इसके बजाय, उन्होंने न केवल भाई राष्ट्र के दुर्भाग्य पर अपमानजनक और घातक खुशी मनाई, बल्कि दुश्मन को सक्रिय समर्थन प्रदान करके इसे और भी बढ़ाने का प्रयास किया। एदोम का यह शत्रुतापूर्ण व्यवहार इस्राएल के चुनाव में ईर्ष्या से उत्पन्न हुआ, जैसे याकूब के लिए एसाव की नफरत, जो उसके वंशजों में प्रेषित हुई, और मूसा के समय के आसपास खुले तौर पर सामने आई, इस्राएलियों को अंदर जाने देने से भाईचारे से इनकार करने के कारण भूमि के माध्यम से एक शांतिपूर्ण तरीके से। दूसरी ओर, कानून में इस्राएलियों को हमेशा एदोम के प्रति मैत्रीपूर्ण और भाईचारे का रवैया बनाए रखने का आदेश दिया गया है।" व्यवस्थाविवरण 2:4-5 और 23:7 में उन्हें आदेश दिया गया है कि वे एदोमियों से घृणा न करें, क्योंकि वह उनका भाई है। तो आप उस जैकब/एसाव विवाद के बारे में कह सकते हैं कि यह अभी भी चल रहा है, चाहे यह कोई भी तारीख हो...840...586 इत्यादि।

ठीक है, हम यहीं रुकेंगे और अगली बार सी से बात करेंगे, जो कि "सामग्री पर कुछ टिप्पणियाँ" है।

ईसी के लिए सैमुअल विसलो द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल की भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 17

ओबद्याह जारी, जोएल

सी. ओबद्याह की सामग्री

1. रूपरेखा

आज सुबह ओबद्याह में अपने समय के लिए हम सामग्री की कुछ विशेषताओं को देखेंगे, और फिर जोएल पर आगे बढ़ेंगे। जैसा कि आप जानते हैं, ओबद्याह केवल एक अध्याय है, और केवल 21 छंद हैं। तो यह एक छोटी किताब है। मेरे ख्याल से मेरे पास इसे खंडों में विभाजित करने का सबसे अच्छा तरीका है। पहले नौ छंदों में आपके पास "एदोम पर न्याय की घोषणा" है। श्लोक 10 और 11 "उस फैसले का कारण" बताते हैं। हमने ओबद्याह की तारीख की चर्चा के संबंध में पिछले सप्ताह 10 और 11 को देखा, और आपको याद होगा कि उन छंदों में यरूशलेम के विनाश या लूट के बारे में चर्चा केंद्र शामिल हैं, क्योंकि 10 और 11 कहते हैं, "हिंसा के कारण अपने भाई याकूब के विरुद्ध तू लज्जित हो जाएगा, तू सर्वदा के लिये नष्ट हो जाएगा। जिस दिन परदेशी उसका धन लूट ले गए, और परदेशी उसके फाटकों से घुसकर यरूशलेम के लिये चिट्ठी डाल रहे थे, उस दिन तू भी उन में से एक था। तो, इसी कारण से एदोम का न्याय किया जाएगा।

मैंने पिछले सप्ताह उल्लेख किया था कि इस बात पर बहस चल रही है कि क्या आपको 12 से 14 के साथ 10 और 11 का पालन करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, क्या 10 से 14 एक इकाई है, या, क्या श्लोक 12 से 14 भविष्य के लिए एक चेतावनी है? दूसरे शब्दों में, आपने यह कर लिया है, अब दोबारा ऐसा न करें। मैं बाद की बात सोचने को इच्छुक हूँ। हम उस पर वापस आएं और इसे और अधिक विस्तार से देखेंगे। श्लोक 12 कहता है, "तुम्हें अपने भाई के दुर्भाग्य के दिन उसे तुच्छ नहीं समझना चाहिए, या यहूदा के लोगों पर खुशी नहीं मनानी चाहिए," और यह 14 तक जाता है। हम वापस आएं और इसे और अधिक विस्तार से देखेंगे, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि श्लोक 12 से 14 भविष्य के लिए एक चेतावनी है।

श्लोक 15-16 एक और परिवर्तन है, ओबद्याह के संदेश के साथ, यह एदोम पर फैसले से लेकर "सभी राष्ट्रों" पर फैसले, सभी अधर्मियों पर फैसले की ओर बढ़ता है। वह 15 और 16 है। और फिर अंतिम खंड, श्लोक 17 से 21, "इज़राइल के लिए पुनर्स्थापना और आशीर्वाद।"

अब, आइए इनमें से प्रत्येक अनुभाग पर कुछ और विस्तार से जानें। आपने श्लोक एक में पढ़ा, "ओबद्याह का दर्शन। प्रभु यहोवा एदोम के विषय में यही कहता है।" याद रखें एदोम वह राष्ट्र है जिसकी वंशावली एसाव से मिलती है। तो यह इजराइल का भाई राष्ट्र है। "हमने यहोवा का सन्देश सुना है, अन्यजातियों के पास यह कहने के लिये एक दूत भेजा गया, कि उठो, और हम युद्ध में उसके विरुद्ध चलें। देख, मैं तुझे जाति जाति में छोटा कर दूंगा। आप पूरी तरह से तुच्छ समझे जायेंगे।" मैं एनआईवी अनुवाद ले रहा हूँ। आप उसका अनुवाद कैसे करते हैं? आपने देखा कि मौखिक रूप पूर्ण काल में है। क्या यह एक आदर्श भविष्यवाणी है? एनआईवी इसका अनुवाद इस प्रकार करता है, "मैं तुम्हें छोटा बना दूंगा। " राजा जेम्स कहते हैं, "मैंने तुम्हें छोटा कर दिया है।" अब यह एक व्याख्यात्मक बिंदु है। सवाल यह है: क्या यह आने वाले फैसले का संदर्भ है या अतीत की ऐतिहासिक वास्तविकता का, अर्थात् एदोम एक छोटा महत्वहीन लोग था और कभी भी एक महान साम्राज्य नहीं था। मुझे ऐसा लगता है कि इस संदर्भ में इसे एक भविष्यसूचक परिपूर्णता के रूप में, भविष्य में होने वाली किसी चीज़ के रूप में लिया जाना चाहिए। यह मार्ग का प्रवाह है क्योंकि यह एक निर्णय है जो एदोम पर आएगा। एनआईवी ने इसका सटीक अनुवाद एक भविष्यसूचक सिद्धता के रूप में किया है।

पेट्रा/सेला जब आप पद 3 पर पहुंचते हैं तो आप पढ़ते हैं, "तुम्हारे मन के घमंड ने तुम्हें धोखा दिया है, तुम जो चट्टानों की दरारों में रहते हो और ऊंचाइयों पर अपना घर बनाते हो, तुम जो अपने आप से कहते हो, 'मुझे कौन ला सकता है' जमीन के नीचे? यद्यपि तुम उकाब की तरह उड़ते हो और तारों के बीच अपना घोंसला बनाते हो, वहां से मैं तुम्हें नीचे ले आऊंगा," मैं फिर से एनआईवी से 3बी में पढ़ रहा हूँ, "तुम जो चट्टानों की दरारों में रहते

हो।" नोट्स में एक वैकल्पिक पाठ है, "चट्टानों की दरारें" या "सेला।" क्या यह, "आप जो चट्टान की दरारों में रहते हैं" या "सेला में" एक उचित नाम के रूप में लिया गया है? सेला का अर्थ है "चट्टान।" पेट्रा शहर का अर्थ है "चट्टान।" क्या यह प्राचीन शहर पेट्रा का संदर्भ है? मुझे नहीं पता कि आपमें से किसी ने उस साइट को देखा है या उसकी तस्वीरें देखी हैं। यह एक अद्भुत साइट है। कई साल पहले अपने हनीमून पर मैं और मेरी पत्नी पेट्रा गए थे। हमें वहां घोड़े पर सवार होकर जाना था। यह एक ऐसा शहर था जिसके बारे में तब तक भुला दिया गया था जब तक कि 1812 में स्विस खोजकर्ता बुर्कहार्ट ने इसे फिर से नहीं खोजा। प्रवेश द्वार एक घुमावदार घाटी या सिक के माध्यम से है जो कुछ स्थानों पर 12 फीट तक संकीर्ण है, ये दीवारें संभवतः 100 या 150 फीट तक ऊपर जाती हैं। ओर। तो आप इस घाटी से होकर अंदर जाएँ, जो निश्चित रूप से वहाँ से बहने वाली एक धारा द्वारा कट गई थी। शुष्क मौसम में आप बिना किसी समस्या के वहाँ जा सकते हैं। लेकिन जैसा कि मैंने यहां नोट किया है, अप्रत्याशित बारिश के तूफान और अचानक बाढ़ उस घाटी में 20 फीट गहराई तक जा सकती है। 1963 में ऐसी अचानक आई बाढ़ में बीस फ्रांसीसी पर्यटकों की मौत हो गई थी। यह शहर का एकमात्र प्रवेश द्वार है। एक बार जब आप उस सिक से गुजरते हैं और आप इस चौड़ी-खुली घाटी में आते हैं, जिसके चारों ओर पहाड़ हैं, और काफी ऊंचे चट्टानी बंजर क्षेत्र हैं। उन पहाड़ों के किनारों पर आपने बहुत रंगीन लाल बलुआ पत्थर, आवास, घर, विभिन्न प्रकार की इमारतें बनाई हैं, और फिर उस घाटी के केंद्र में कुछ स्वतंत्र इमारतें और एक पुरानी रोमन सड़क है। लेकिन वह स्थान मूल रूप से एदोमियों द्वारा बसाए जाने से बहुत पुराना है। आज आप वहाँ जो खंडहर देख रहे हैं, वे बहुत बाद के समय के हैं। लेकिन उस स्थल का प्रारंभिक चरण एदोमियों द्वारा बनाया गया था। तो यह एक बहस का मुद्दा है कि आप उस वाक्यांश को कैसे पढ़ते हैं, "आप जो चट्टानों की दरारों में रहते हैं।" क्या "सेला" "पेट्रा" का उचित नाम है या यह केवल "रॉक" का शब्द है।

नबातियों ने एदोम को बेदखल कर दिया , लेकिन किसी भी मामले में, श्लोक चार कहता है, "यद्यपि तुम उकाब की तरह उड़ते हो, और तारों के बीच अपना घोंसला बनाते हो,

मैं तुम्हें वहीं से नीचे ले आऊंगा।" मुझे लगता है कि इसे एदोम द्वारा अपने क्षेत्र के नुकसान की भविष्यवाणी के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है जो ऐतिहासिक रूप से नबातियन अरबों द्वारा उनकी हार से पूरी हुई थी। नबातियन उत्तरी अरब के एक क्षेत्र से आए थे। यदि आप मलाकी 1:3-5 को देखें, तो मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि 430 ईसा पूर्व, मलाकी के समय के दौरान, इन अरबों द्वारा एदोमियों को पहले ही भगा दिया गया था या उनके क्षेत्र से बाहर कर दिया गया था क्योंकि मलाकी 1:3-5 कहता है, "मैं ने एसाव से बैर किया है, और उसके पहाड़ोंको उजाड़ कर दिया है, और उसका भाग मरुभूमि के गीदड़ोंके हाथ छोड़ दिया है।" इस प्रकार मलाकी के समय तक, एदोमियों को उनके क्षेत्र से खदेड़ दिया गया था। मलाकी 1:4 आगे कहता है, एदोम ने कहा, "यद्यपि हम कुचले गए हैं, तौभी हम खंडहरों का पुनर्निर्माण करेंगे। परन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है, ' वे बना सकते हैं, परन्तु मैं ढा दूंगा। उन्हें दुष्ट भूमि कहा जाएगा, वे लोग जो सदैव प्रभु के क्रोध के अधीन रहेंगे। तुम अपनी आँखों से देखोगे, और कहोगे, "यहोवा इस्राएल की सीमाओं से परे भी महान है।" इसलिए, ओबद्याह ने एदोम पर आने वाले फैसले की घोषणा की, और मलाकी के समय तक वह फैसला पहले ही लागू हो चुका था।

नबातियों द्वारा अपने क्षेत्र से निकाले जाने के बाद बेदखल किए गए एदोमी लोग दक्षिणी यहूदा के एक क्षेत्र में बस गए, जो अंततः इडुमिया के नाम से जाना जाने लगा। वहां उन्होंने कुछ समय तक स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखा, इससे पहले कि जॉन हिरकेनस ने उन पर विजय प्राप्त की और उन्हें जबरन यहूदी धर्म में परिवर्तित कर दिया गया। आप अपने पढ़ने और टिप्पणियों में देख सकते हैं कि "इडुमिया" एदोम का ग्रीक रूप था। तो, "इडुमिया" वास्तव में एदोम के लिए ग्रीक है। एदोमवासी दक्षिणी यहूदा में बस गए, अंततः 135 से 105 ईसा पूर्व में जॉन हिरकेनस और मैकाबीज़ ने उन्हें जबरन यहूदी बना दिया। हेरोदेस महान का राजवंश इडुमियन वंश से आया और वह यहूदा साम्राज्य पर नियंत्रण करने आया। इसलिए, निस्संदेह, हेरोदेस ने यहूदी लोगों पर अत्याचार किया। आपके पास जैकब/एसाव विवाद वास्तव में हेरोदेस के समय तक फैला हुआ है, जो मूल रूप से इडुमियन था। रोमन काल में, एडोमाइट्स लोगों के रूप में गायब हो गए। कुछ इडुमीअन

रह गए और वे इतिहास में लुप्त हो गए। यहां इज़राइल के भाई राष्ट्रों में से एक है, जो इतिहास से गायब हो जाता है। उल्लेखनीय बात यह है कि यहूदी लोगों ने ऐसा नहीं किया है। उन्होंने अपनी पहचान बरकरार रखी है। तो, यह वह निर्णय है जिसे आप श्लोक 1-9 में देखते हैं, जो एदोम पर सुनाया गया है।

बी। ओबद्याह 10-14 न्याय का कारण और भविष्य के लिए चेतावनी? जैसा कि हमने पिछले सप्ताह चर्चा की थी, छंद 10 और 11 न्याय का कारण हैं, क्योंकि जब यरूशलेम को लूटा गया था, "आप अलग रहे, आप उनमें से एक की तरह थे।" यह 10 और 11 है। अब हम 12 से 14 पर पहुँचते हैं; क्या यह 10 से 11 की निरंतरता है, या यह एक अलग खंड है, जो भविष्य के लिए चेतावनी है? प्रश्न का कारण मौखिक रूप है। यह " *वाओ'अल*" है, और फिर जूसिव में एक मौखिक रूप है। वे आठ *वाह'अल* रूपों और रसात्मक क्रिया की एक श्रृंखला हैं। इसका आमतौर पर हिब्रू से अनुवाद "मत करो, मत करो" के रूप में किया जाता है। हमारे हैंडआउट के पेज पांच पर, एक सवाल है कि क्या इन क्रियाओं का अतीत का संदर्भ है, जैसा कि एनआईसीओटी टिप्पणी में एलन और कई अन्य टिप्पणीकारों ने समर्थन किया है जिन्होंने पुस्तक को यरूशलेम के विनाश के बाद दिनांकित किया था। सवाल यह है कि ओबद्याह के लिए यह अतीत है, वर्तमान है या भविष्य है, यानी भविष्य है। एलन, अपनी एनआईसीओटी टिप्पणी में, जैसा कि पृष्ठ 6 पर है, इन छंदों में मौखिक रूप के तनावपूर्ण मुद्दे से निपटने के लिए यह तर्क देते हैं कि, "अत्यधिक कल्पनाशील अंदाज में, भविष्यवक्ता अतीत की घटनाओं के बारे में बात करते हैं, जैसे कि वे अभी भी थे वर्तमान।"

अब, एन इहौस, *लघु भविष्यवक्ताओं पर व्याख्यात्मक और व्याख्यात्मक टिप्पणी* में, लघु भविष्यवक्ताओं पर एक तीन-खंड की टिप्पणी कहती है, "भविष्य की घटना के अलावा किसी अन्य चीज़ को ध्यान में रखते हुए इन निषेधों को समझना मुश्किल है। एनआरएसवी निषेधों का अनुवाद पूर्ण काल के रूप में करता है, 'नहीं होना चाहिए', लेकिन यह व्याकरणिक रूप से अस्थिर है।" अब, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, इन चेतावनियों को देने वाले आठ न्यायिक रूप हैं, जिन्हें अक्सर उन घटनाओं के संदर्भ में लिया जाता है जो

पहले ही घटित हो चुकी हैं, और इसलिए श्लोक 10 और 11 में वर्णित उन्हीं घटनाओं का संदर्भ है। देखिए, यही मुद्दा है। क्या 12 से 14, 10 और 11 जैसी ही बात कर रहे हैं? या फिर 10 और 11 फैसले का कारण और 12 और 14 भविष्य के लिए चेतावनी है? मेरे पास इसके विभिन्न अनुवाद हैं। राजा जेम्स इन कठोर चेतावनियों का अनुवाद करते हैं, "तुम्हें अपने भाई को तुच्छ नहीं समझना चाहिए था, तुम्हें यहूदा के लोगों पर खुशी नहीं मनानी चाहिए थी। उनके संकट के दिन तुम्हें इतना घमंड नहीं करना चाहिए था। तुम्हें मेरे लोगों की विपत्ति के दिन फिर से उनके द्वारों से मार्च नहीं करना चाहिए था।" वह "नहीं होना चाहिए" का मतलब है कि 12 से 14 केवल 10 और 11 की निरंतरता है। लेकिन, मुद्दा यह है कि क्या 'अलप्लस जूसिव' का अनुवाद "नहीं होना चाहिए" के रूप में करने की अनुमति है। दूसरे शब्दों में, यह वर्तमान या भविष्य में "नहीं करना" के बजाय एक पूर्ण कार्रवाई है। आपने देखा कि किंग जेम्स कहते हैं, "नहीं होना चाहिए।"

नया अमेरिकी मानक है "मत करो।" अब देखिए, जहां तक 'अलप्लस जूसिव' की बात है तो यह बेहतर है, जो या तो वर्तमान या भविष्य हो सकता है। "मत करो, मत करो, मत करो।" यहूदी प्रकाशन सोसाइटी ने कहा है, "आप ऐसा कैसे कर सकते थे?" यह अतीत है लेकिन एक फुटनोट कहता है, "वस्तुतः 'नहीं करें।'" एनआईवी में है, "आपको ऐसा नहीं करना चाहिए," जिसका अर्थ वर्तमान है। एनएलटी, "आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।" वह भूतकाल है। यह काफी हद तक किंग जेम्स जैसा है। इसलिए, उन आठ न्यायिक रूपों से निपटने के तरीके पर अनुवाद अलग-अलग हैं, जैसा कि टिप्पणीकार करते हैं। इस पर निर्भर करते हुए कि आप उन रूपों का अनुवाद कैसे करते हैं, आप निर्णय लेंगे कि या तो 10 और 11 को 12 से 14 के साथ जोड़ा जाएगा, और यह सब एदोम पर न्याय के कारण के लिए बोल रहा है, और यह अतीत की बात है; या आप कहने जा रहे हैं, जैसा कि मैंने रूपरेखा में सुझाव दिया है, कि 10 और 11 निर्णय का कारण हैं, और 12 से 14 भविष्य के लिए एक चेतावनी है।

अब, उन विभिन्न अनुवादों के बाद, आइए थोड़ा और आगे बढ़ें। केइल ने अपनी टिप्पणी में कहा है, और मुझे लगता है कि यह सही है, कि उस निर्णायक रूप को अतीत के

भविष्य के रूप में नहीं लिया जा सकता है, "नहीं होना चाहिए।" केइल का कहना है कि जूसिव फॉर्म उस तरह के अनुवाद की अनुमति नहीं देता है - यह या तो वर्तमान या भविष्य होना चाहिए। लेकिन फिर वह जो कहते हैं, वह यह है कि, "यह विशेष रूप से न तो अतीत है और न ही भविष्य है, लेकिन एक आदर्श अर्थ में, इसमें दोनों शामिल हैं।" मेरे लिए उस प्रकार का सुझाव बहुत सारगर्भित है; मैं ठीक-ठीक यह भी नहीं जानता कि इससे उसका क्या अभिप्राय है।

लघु भविष्यवक्ताओं के एक टिप्पणीकार, थियोडोर लाएत्स, वर्तमान के प्रत्यक्षदर्शी विवरण के रूप में 11 से 14 का उपयोग करते हैं, और इस प्रकार 12 से 14 की चेतावनी को उचित मानते हैं। वह इसे यहोराम के समय में ऐसी चीज़ के रूप में रखता है जो वर्तमान में चल रही है। मुझे लगता है यह संभव है। गैबेलियन ने एक अन्य विद्वान का उल्लेख किया है, जो कहता है कि 10 से 14 शुरू में यहोराम के समय पर लागू होता है, 2 इतिहास 21:16, लेकिन यरूशलेम की बेबीलोनियन कैद में इसकी आगे की पूर्ति हुई। वह जो कर रहा है उसे हम दोहरा संदर्भ कहते हैं, यरूशलेम की यह लूट यहोराम के समय की लूट पर लागू होती है, लेकिन साथ ही, उन्हीं शब्दों के साथ, यह लूट 586 में बेबीलोन की लूट को दूसरी बार संदर्भित करती है। मुझे ऐसा लगता है कि हालांकि लाएत्स का वर्तमान काल संभव है, भविष्य का संदर्भ 12 से 14 में है। जबकि 10 और 11 और 12 से 14 एदोमियों द्वारा समान कार्यों का उल्लेख करते हैं, छंद 10 और 11 पिछले कार्यों का उल्लेख करते हैं जो पहले ही हो चुके थे यहोराम। लेकिन 12 से 14 भविष्य के लिए चेतावनियाँ हैं जिन्हें एदोम ने 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश के समय नज़रअंदाज़ कर दिया था क्योंकि हम जानते हैं कि एदोमियों ने 586 में यरूशलेम के विनाश में भाग लिया था, या कम से कम आनन्द मनाया था। यदि आप ईजेकील को देखें 35:5, आप वहां पढ़ते हैं, "क्योंकि तू ने प्राचीन शत्रुता पाल रखी थी, और इस्राएलियों को उनकी विपत्ति के समय तलवार के वश में कर दिया था, जब उनका दण्ड अपने चरम पर पहुंच गया था, इसलिए मेरे जीवन की शपथ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है, मैं तुम्हें रक्तपात के लिए सौंप दूँगा।" इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि एदोमियों ने उस चेतावनी को नज़रअंदाज़ कर दिया है। एल्डर्स एलन के समान हैं, जो इन

रूपों को अलंकारिक के रूप में देखते हैं। उनका तर्क है कि 10 और 11 उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करते हैं जो 12-14 की हैं। जे. ईटन इसे विडंबना के साथ अतीत की ओर ले जाते हैं। हेंगस्टेनबर्ग इसे भविष्य के रूप में लेते हैं।

इनमें से कई टिप्पणीकारों ने 12 से 14 को भविष्य मानने से क्यों इंकार कर दिया है, जबकि यह रूप निर्णयात्मक है? मुझे ऐसा स्पष्ट लगता है कि इसका तात्पर्य भविष्य से है। कोई आपत्ति कर सकता है, जैसा कि आल्डर्स करता है, कि श्लोक 10 और 11 में एदोम पर निर्णय सुनाया जाना और फिर श्लोक 12 से 14 में भविष्य के बारे में चेतावनी देना अजीब है। यह प्राथमिक आपत्ति प्रतीत होती है। आपने एदोम पर ऐसा निर्णय क्यों सुनाया होगा जो एदोम ने पहले ही 10 और 11 में किया है, और फिर अगले छंदों में भविष्य के बारे में चेतावनी दी है? तर्क यह है: इसका कोई मतलब नहीं है। न्याय पहले ही सुनाया जा चुका है—एदोम ने पहले ही परमेश्वर के लोगों और प्रभु के विरुद्ध यह अपराध किया है, उसका न्याय होने वाला है—भविष्य के लिए चेतावनी का क्या मतलब है?

अन्यत्र भविष्य की चेतावनियाँ: जेर 18; आमोस 2 और 5 नोटिस यिर्मयाह 18:5-10। हमने इसके बारे में पहले बात की थी। यिर्मयाह 18 में, “प्रभु का वचन मेरे पास आया। उसने कहा, ‘हे इस्राएल के घराने, क्या मैं तुम्हारे साथ कुम्हार की नाई नहीं कर सकता?’ प्रभु की घोषणा है, ‘जैसे कुम्हार के हाथ में मिट्टी रहती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो। यदि किसी भी समय मैं घोषणा करता हूँ कि किसी राष्ट्र या राज्य को उखाड़ फेंकना, तोड़ना और नष्ट कर देना है, और यदि उस राष्ट्र को मैंने चेतावनी दी है कि वह अपनी बुराई के लिए पश्चाताप करता है, तो मैं नरम हो जाऊंगा और उस पर वह विपत्ति नहीं डालूंगा जिसकी मैंने योजना बनाई थी।’ दूसरे शब्दों में, मुझे ऐसा लगता है कि भविष्य के लिए चेतावनी देने की अभी भी जगह है, “ऐसा दोबारा न करें।” शायद, एदोम पश्चाताप करेगा और उस तरह के रवैये और कार्यों से दूर हो जाएगा जो अतीत में उनका था।

यदि आप आमोस जाते हैं - बेशक यह इजराइल के बारे में है न कि एदोम के बारे में, लेकिन मुझे लगता है कि वही सिद्धांत इसमें शामिल हैं - आपको शुरुआती अध्यायों में

आसन्न फैसले की चेतावनी के बाद चेतावनी मिलती है। आमोस 2:13-16 को देखें, “मैं तुम्हें ऐसे कुचल डालूँगा जैसे गाड़ी अनाज से लदी हुई कुचल जाती है। यहाँ तक कि तेज़ चलने वाला भी नहीं बचेगा, बलवान अपनी ताकत नहीं जुटा पाएगा।” श्लोक 15, “धनुर्धर अपनी जगह पर टिक नहीं पाएगा। बेड़े का सिपाही बच नहीं पाएगा।” श्लोक 16, “उस दिन सबसे वीर योद्धा नग्न होकर भाग जायेंगे।” अब यह फैसले की एक बहुत मजबूत घोषणा है। 3:2 में, “पृथ्वी के सब कुलों में से मैं ने केवल तुझे ही चुना है; इसलिये मैं तुम्हें तुम्हारे सारे पापों का दण्ड दूँगा।” 3:11-15, “एक शत्रु देश पर कब्ज़ा कर लेगा, वह तुम्हारे गढ़ों को ढा देगा, और तुम्हारे गढ़ों को लूट लेगा,” इत्यादि। आमोस 4:1-3, “हे सामरिया पर्वत पर रहनेवाली बाशान की गायों, तुम जो कंगालों पर अन्धेर करती और दरिद्रों को पीसती हो, तुम जो अपने पतियों से कहती हो, 'हमारे लिये पेय ले आओ, यह वचन सुनो!' इस प्रभु ने अपनी पवित्रता की शपथ खाई है, 'वह समय अवश्य आएगा, जब तुम को कांटों से, अर्थात् मछली की कांटों से, और तुम में से बचे हुए लोगों को भी कांटों से डाल कर बाहर निकाल दिया जाएगा।” आमोस 5:27, “मैं तुम्हें भेजूँगा दमिश्क से परे, निर्वासन में। आमोस 6:14, “हे इस्राएल के घराने, मैं तेरे विरुद्ध एक जाति को भड़काऊँगा, जो लेबो-हमात से अराबा की तराई तक सारे मार्ग पर अन्धेर करेगी।” तो आपको न्याय की ये सभी घोषणाएँ मिलती हैं।

अमोस 5:4 को देखो। उसी समय आपके पास न्याय है, 5:4 में आप पढ़ते हैं, “यहोवा इस्राएल से कहता है, “मुझे ढूँढ़ो और जीवित रहो।” पद 6, “प्रभु को खोजो और जीवित रहो।” अध्याय 5 के छंद 14 और 15 में, “अच्छाई खोजो, बुराई नहीं, ताकि तुम जीवित रह सको,” 15, “बुराई से घृणा करो, भलाई से प्रेम करो, न्यायालय में न्याय बनाए रखो।” फिर अगले बयान पर गौर करें. “शायद सर्वशक्तिमान प्रभु याकूब के बचे हुए लोगों पर दया करेगा।” इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि दरवाजा हमेशा खुला रहता है, कि प्रभु तब चले जाते हैं जब वह फैसले की ये घोषणाएं और आने वाले फैसले की चेतावनियां देते हैं। यदि यह जिस किसी को भी पश्चाताप करने के लिए निर्देशित किया गया है, तो शायद प्रभु नरम पड़ जाएंगे। इसलिए मुझे ऐसा नहीं लगता कि 10 और 11 में निर्णय का कारण बताने और फिर उसी समय यह कहने, कि दोबारा ऐसा मत करो, के बीच कोई असंगतता

है। निःसंदेह, एदोम ने उस चेतावनी को नजरअंदाज कर दिया, और ऐसा दोबारा किया, जब 586 में

बेबीलोनियों ने हमला किया। लेकिन यदि आप इसे मेरे सुझाव के अनुसार लेते हैं, तो इसका तारीख पर भी प्रभाव पड़ेगा। इससे पता चलता है कि 10 और 11 में लूटपाट 800 के दशक में यहोराम का समय था, और भविष्य के लिए चेतावनी 586 है, जिसे एदोमियों ने नजरअंदाज कर दिया। अब यदि आप कहते हैं कि 10 से 14 सभी समान हैं, तो एदोम पर न्याय आने के कारण का विवरण, जिसके परिणामस्वरूप आपको यह सोचना पड़ सकता है कि यह सब 586 के बारे में है। तो, यह मुद्दा कि आप छंद 10 और 11 के बीच के संबंध की व्याख्या कैसे करते हैं और 12 से 14 न केवल इस बात के लिए प्रासंगिक है कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं उसे कैसे समझते हैं, क्या आपके पास "भविष्य के लिए निर्णय और चेतावनी का कोई कारण है", इसका तारीखों पर भी प्रभाव पड़ता है।

4. ओबद्याह 15-16 अन्याय पर न्याय की घोषणा आइए 15 और 16 पर चलते हैं। 15 और 16 कहता है, "प्रभु का दिन सभी राष्ट्रों के लिए निकट है। जैसा तू ने किया है वैसा ही तेरे साथ भी किया जाएगा, तेरे काम तेरे ही सिर पर पलटे जाएंगे, जैसे तू ने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, जैसे ही सब जातियां निरन्तर पीती रहेंगी, वे ऐसा पीएंगे और पीएंगे मानो कभी पीया ही न हो। तो, आप 15 और 16 में एदोम पर निर्णय की घोषणा से सभी अन्यायियों पर निर्णय की घोषणा की ओर बढ़ते हैं। तो आपके पास आम तौर पर एदोम से अन्यजातियों में संक्रमण है, या, जैसा कि पाठ कहता है, "प्रभु का दिन सभी राष्ट्रों के लिए निकट है।"

प्रभु के दिन की चर्चा अब, यदि ओबद्याह की तिथि 840 ईसा पूर्व है, तो वह भविष्यवक्ताओं में से पहला है, और इसका मतलब है कि यह भविष्यवाणी की पुस्तकों में प्रभु के दिन का पहला संदर्भ है, जो एक प्रमुख विषय बन जाता है, उदाहरण के लिए, जोएल में. प्रभु का दिन क्या है? मेरी यहां उस पर कुछ टिप्पणियाँ हैं क्योंकि यह कहता है, "प्रभु का दिन सभी राष्ट्रों के लिए निकट है।" मुझे लगता है कि सामान्य शब्दों में आप कह सकते हैं कि प्रभु का दिन

एक ऐसा समय है जिसमें प्रभु अपने शत्रुओं पर न्याय करेंगे और अपने लोगों को आशीर्वाद देंगे। आप इस अभिव्यक्ति का उपयोग कई भविष्यवाणियों की पुस्तकों में पाते हैं, यहाँ तक कि सफन्याह 2:2 में "उसके क्रोध का दिन", और यहजकेल 7:19 से " प्रभु के क्रोध का दिन" जैसी विविधताओं के साथ भी। इसमें अन्य छोटे-मोटे संशोधन भी हैं लेकिन सभी प्रभु के दिन के संदर्भ में। ऐसा लगता है कि यह शब्द लोगों द्वारा जाना और समझा जाता है, यहाँ तक कि पहले के भविष्यवक्ताओं के साथ भी, अमोस और जोएल दोनों प्रभु के दिन के बारे में बात करते हैं।

आमोस 5 में, लोग प्रभु के आगमन के दिन की इच्छा रखते हैं क्योंकि उन्हें उम्मीद है कि यह इसराइल के लिए आशीर्वाद में से एक होगा, लेकिन आमोस उन्हें बताता है कि वे गलत हैं। तो, आइए उस पर नजर डालें। आमोस 5:18 में, वह कहता है, "हाय तुम पर जो प्रभु के दिन की अभिलाषा करते हो, तुम प्रभु के दिन की अभिलाषा क्यों करते हो? वह दिन अँधेरा होगा, उजियाला नहीं, यह ऐसा होगा जैसे कोई आदमी शेर से बचकर भालू से मिलने के लिए भागा हो, मानो वह अपने घर में घुस गया हो, दीवार पर हाथ रखा हो और साँप ने उसे डस लिया हो। क्या प्रभु का दिन अन्धकार, उजियाला, घोर अन्धकार, चमक की किरण के बिना नहीं होगा," क्यों? "क्योंकि इस्राएल यहोवा से फिर गया है, और परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देगा।"

तो, यदि प्रभु का दिन एक प्रसिद्ध अभिव्यक्ति थी, और ये भविष्यवक्ता इसका उपयोग करते प्रतीत होते हैं, तो इसका क्या अर्थ है? मुझे लगता है कि यह निर्धारित करना मुश्किल नहीं है कि यह ईश्वर के फैसले से जुड़ा है, लेकिन जैसा कि अमोस सुझाव देते हैं, लोकप्रिय धारणा यह है कि यह दिन केवल इज़राइल के दुश्मनों पर फैसले का दिन होगा। परिणामस्वरूप यह स्वयं इस्राएल के लिए आशीर्वाद का दिन होगा। जोएल और अमोस उस विचार के विरुद्ध चेतावनी देते हैं। फिर, प्रभु के दिन के आगमन के आधार पर, वे लोगों को पूरे दिल से पश्चाताप करने के लिए कहते हैं।

तो ये प्रभु के दिन के बारे में कुछ सामान्य टिप्पणियाँ हैं, जिन पर हम थोड़ा आगे चर्चा करेंगे। क्या प्रभु का दिन केवल एक विशिष्ट दिन को संदर्भित करता है, और यदि हां,

तो यह कब है? यदि आप उपयोग को देखें, तो मुझे लगता है कि आप यह निष्कर्ष निकालने के लिए मजबूर हो जाएंगे कि यह केवल एक विशिष्ट दिन का संदर्भ नहीं है। यशायाह 13:6 और 9 को देखें, जहाँ आप प्रभु के दिन के बारे में पढ़ते हैं, "हाय, क्योंकि प्रभु का दिन निकट है, वह सर्वशक्तिमान की ओर से विनाश के समान आएगा।" श्लोक 9, "देखो, यहोवा का दिन आ रहा है, क्रोध और भयंकर क्रोध के साथ क्रूर दिन, कि वह देश को उजाड़ दे, और उस में के पापियों को नाश कर दे। स्वर्ग के तारे और उनके नक्षत्र अपना प्रकाश नहीं दिखाएँगे।" श्लोक 11, "मैं संसार को उसकी बुराई का दण्ड दूँगा।" यशायाह 13 में उन कथनों का संदर्भ बेबीलोन के विरुद्ध एक भविष्यवाणी है। बेबीलोन पर न्याय आ रहा है, और बेबीलोन नष्ट हो जाएगा। यशायाह 13:17 पर जाएँ, "मैं उनके विरुद्ध मादियों को भड़काऊँगा।" श्लोक 19, "बाबुल, राज्यों का गहना, बाबुल का घमंड सदोम और अमोरा की तरह भगवान द्वारा उखाड़ फेंका जाएगा।" बेबीलोन को उखाड़ फेंकने को प्रभु के दिन के आगमन के रूप में जाना जाता है।

यदि आप यिर्मयाह 46:10 पर जाते हैं, तो आपके पास इसका एक और उपयोग है, एक अन्य संदर्भ में, आप पढ़ते हैं, "वह दिन प्रभु, सर्वशक्तिमान प्रभु का है - प्रतिशोध का दिन, अपने शत्रुओं से बदला लेने के लिए। तलवार तब तक निगलती रहेगी जब तक वह तृप्त न हो जाए, जब तक वह खून से अपनी प्यास न बुझा ले। सर्वशक्तिमान यहोवा उत्तर में परात नदी के किनारे के देश में यहोवा के लिये बलिदान चढ़ाएगा।" फिर आपके पास श्लोक 13 का संदेश है, "यह वह संदेश है जो प्रभु ने मिस्र पर हमला करने के लिए बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर के आने के बारे में यिर्मयाह भविष्यवक्ता से कहा था।" तो यिर्मयाह 46 में, सेनाओं के प्रभु का दिन, 605 ईसा पूर्व में कारकेमिश में मिस्र और बेबीलोन के बीच लड़ाई का दिन है, जिसमें बेबीलोन विजयी हुआ था और मिस्र को हार का सामना करना पड़ा था। यह परिच्छेद मिस्र पर निर्णय का परिच्छेद है।

इसलिए, मुझे नहीं लगता कि आप यह कह सकते हैं कि प्रभु का दिन, जैसा कि इन भविष्यवाणियों की पुस्तकों में विभिन्न संदर्भों में उपयोग किया गया है, हमेशा प्रभु का एक ही दिन होता है। और जैसा कि मैंने उस अगले पैराग्राफ में उल्लेख किया है, यह सिर्फ एक

विशेष दिन नहीं है, बल्कि इसका उपयोग भगवान की न्याय और दंड गतिविधि के विशेष समय को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। कुछ अंशों में युगांतशास्त्रीय संदर्भ है। युगांतशास्त्रीय संदर्भ कहता है कि प्रभु का एक भविष्य का दिन भी है जब अंततः ईश्वर सभी अधर्मियों पर न्याय करेगा, ओबद्याह 15 और 16 की तरह। लेकिन कोई यह नहीं कह सकता कि भविष्यवाणी में प्रभु का दिन हमेशा न्याय का दिन होता है दुनिया का अंत। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान के न्याय करने, दंडित करने की गतिविधि की अभिव्यक्तियाँ जो उस अंतिम निर्णय का पूर्वाभास देती हैं, उन्हें प्रभु का दिन भी कहा जाता है। इसलिए आपको सावधान रहना होगा। प्रभु का दिन स्वचालित रूप से युगान्तकारी अंत समय नहीं है। कुछ संदर्भों में यह है, लेकिन कुछ अन्य संदर्भों में, जैसे कि कुछ संदर्भों पर हमने गौर किया है, यह नहीं है।

आइए ओबद्याह की आयत 15 पर वापस जाएँ, "यहोवा का दिन सब जातियों के लिये निकट है; जैसा तू ने किया है वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा, तेरे कामों का फल तेरे ही सिर पर पड़ेगा।" एदोम के न्याय और सभी राष्ट्रों के न्याय के बीच क्या संबंध है? केइल की उस पर एक टिप्पणी है, यह आपके उद्धरणों के पृष्ठ 37 पर है, जहां वह कहते हैं, "कठिनाई केवल इस धारणा से दूर हो जाती है कि ओबद्याह एदोम को उन राष्ट्रों के एक प्रकार के रूप में मानता था जो प्रभु और उसके लोगों के प्रति शत्रुता में उठे थे, और परिणामस्वरूप प्रभु द्वारा उनका न्याय किया गया, इसलिए वह एदोम के बारे में जो कहता है वह उन सभी राष्ट्रों पर लागू होता है जो परमेश्वर के लोगों के प्रति समान या समान रवैया अपनाते हैं। इस दृष्टिकोण से वह बिना किसी हिचकिचाहट के सभी राष्ट्रों को वह प्रतिशोध दे सकता है जो एदोम को उसके पापों के लिए भुगतना पड़ेगा।" इसलिए, मुझे लगता है कि यह वहां विचार का तार्किक प्रवाह है, सभी राष्ट्र जो एदोम के समान दृष्टिकोण और कार्य प्रदर्शित करते हैं, उन्हें भी भगवान के फैसले का अनुभव होगा।

तो, आप श्लोक 16 पर जाएँ, और वहाँ एक और प्रश्न उठता है। यह कहता है, "जैसे तू ने मेरे पवित्र पर्वत पर पिया, वैसे ही सब जातियाँ निरन्तर पीती रहेंगी, और वे पीते-पीते ऐसे हो जाएँगे मानो कभी थे ही नहीं।" वहां "आप" कौन है? यह कहता है, "तुमने पी लिया।"

क्या ये एदोमी हैं, या ये यहूदी हैं? मैं इस संदर्भ में सोचता हूँ, यह एडोमाइट्स हैं। ओबद्याह के इस पूरे संदेश में एदोम को संबोधित किया गया है, यहूदा को नहीं। समानता है "जैसा तूने किया, एदोम," (श्लोक 15) "और जैसा तूने पिया," (श्लोक 16)। इसका मतलब यह है कि श्लोक 16 में, क्रिया "पीना" दो अलग-अलग अर्थों में लिया गया है। 16ए में, "जैसे तुमने मेरी पवित्र पहाड़ी पर शराब पी है," - पीना विजय में जश्न मनाने के अर्थ में है, जो आपके भाई इज़राइल के साथ हुआ था जब यरूशलेम को लूट लिया गया था - "इसलिए सभी राष्ट्र लगातार पीएंगे," पीओ, उस दूसरे वाक्यांश में, उत्सव के अर्थ में नहीं, बल्कि निर्णय का स्वाद चखने के अर्थ में पीना। दूसरे शब्दों में, "भगवान के क्रोध का प्याला पीना।" जैसे तुमने मेरी पवित्र पहाड़ी पर जश्न मनाते हुए शराब पी, वैसे ही सभी राष्ट्र लगातार पीएंगे, न्याय का स्वाद चखने के अर्थ में पीएंगे, भगवान के क्रोध का प्याला, जो भविष्यवक्ताओं में भी एक सामान्य अभिव्यक्ति बन जाता है।

मैंने वहाँ कुछ संदर्भ सूचीबद्ध किए हैं, आइए केवल एक पर नजर डालें, यिर्मयाह 25:15 और 16, जहाँ आप पढ़ते हैं, "इस्त्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझे से यों कहा, इस भरे हुए कटोरे को मेरे हाथ से ले ले मेरे क्रोध की मदिरा, और उन सब राष्ट्रों को, जिनके पास मैं तुम्हें भेजता हूँ, उन्हें पिलाओ। यहाँ पीना ईश्वर के न्याय का स्वाद चखने के अर्थ में है। "जब वे उसे पीएंगे, तब उस तलवार के कारण जो मैं उनके बीच भेजूंगा, लड़खड़ाकर पागल हो जाएंगे।" इसलिए उसने कटोरा लिया और उन सभी राष्ट्रों को, जिनके पास वह भेजा गया था, पिलाया।

डी। ओबद्याह 17-21 इसराइल के लिए पुनरुद्धार और भविष्य का आशीर्वाद हमें ओबद्याह में श्लोक 17 से 21 तक लाता है, अंतिम खंड, जिसे मैंने लेबल दिया है, "इज़राइल के लिए पुनर्स्थापना और भविष्य का आशीर्वाद।" मुझे 17 से 21 पढ़ने दें, और फिर देखें कि विभिन्न लोगों ने इन छंदों की कैसे व्याख्या की है। श्लोक 17 कहता है, "परन्तु सिथ्योन पर्वत पर उद्धार होगा, वह पवित्र होगा, और याकूब का घराना उसका निज भाग पाएगा।" दूसरे शब्दों में, एदोम और सभी राष्ट्रों पर न्याय आ रहा है, लेकिन इसके विपरीत, सिथ्योन पर्वत

पर मुक्ति होगी। ओबद्याह पद 18, "याकूब का घराना आग और यूसुफ का घराना ज्वाला होगा, एसाव का घराना खूँटी होगा, और वे उसमें आग लगाकर भस्म कर देंगे। एसाव के घराने से कोई भी जीवित न बचेगा।" प्रभु ने कहा है. नेगेव के लोग एसाव के पहाड़ोंपर अधिकार करेंगे, और तलहटी के लोग पलिशितियोंके देश पर अधिकार करेंगे। वे एप्रैम और सामरिया के खेतों पर अधिकार कर लेंगे, और बिन्यामीन गिलाद पर अधिकार कर लेंगे। कनान में रहने वाले इस्राएली बंधुओं का यह दल सारपत तक की भूमि का अधिकारी होगा; यरूशलेम से जो बन्धुए होकर सेफराड में हैं वे नेगेव के नगरों के अधिकारी होंगे। उद्धारकर्ता एसाव के पहाड़ों पर शासन करने के लिए सिथ्योन पर्वत पर चढ़ेंगे। और राज्य प्रभु का होगा।”

ओबद्याह 17-21 की व्याख्या करने के तरीके:

1. आध्यात्मिकीकरण दृष्टिकोण--चर्च

तो, ये दिलचस्प छंद हैं। यहां कुछ वास्तविक व्याख्यात्मक मुद्दे उठते हैं। इन श्लोकों को कैसे समझा जाए? वास्तव में उन्हें तीन बुनियादी तरीकों से समझा गया है। एक बात पर ध्यान दें, कुछ का सुझाव है कि 17 से 21 को आध्यात्मिक बनाया जाना चाहिए और सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से भगवान के राज्य के विस्तार के वर्णनात्मक के रूप में समझा जाना चाहिए। याद रखें कि हमने यशायाह 11 के उत्तरार्ध को देखा था जब हम इस सवाल के बारे में बात कर रहे थे कि "सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली" और उन श्रेणियों की व्याख्या कैसे करें, इसे शाब्दिक रूप से लें, इसे प्रतीकात्मक या आध्यात्मिक रूप से लें, या इसे किसी प्रकार के पत्राचार में लें या समतुल्यता देखिए, वह मुद्दा यहीं वापस आता है। कुछ लोग कहते हैं, इसे आध्यात्मिक बनाओ। थियोडोर लाएत्स एक उदाहरण है. वह कहते हैं, "संक्षेप में कहा गया है, हमारे पास यहां यहूदा और यरूशलेम का भविष्य का इतिहास है। यरूशलेम का क्या कारण है? यह चर्च के लिए, उसके शत्रुओं के लिए, चर्च के उन सदस्यों के लिए एक प्रतीक है जो उत्पीड़ित हैं, शत्रुओं द्वारा बंदी बनाए गए हैं।”

श्लोक 17 और 18 में, जहाँ आप पढ़ते हैं, "सिथ्योन पर्वत पर उद्धार होगा, याकूब का

घराना उसका निज भाग होगा, याकूब का घराना आग होगा, और यूसुफ का घराना ज्वाला होगा, एसाव का घराना होगा टूँठ।” वह किस बारे में बात कर रहा है? लातेश कहते हैं, "यरूशलेम, न्यू टेस्टामेंट चर्च का बिल्कुल उपयुक्त प्रतीक, माउंट सिथ्योन पर, चर्च ऑफ गॉड के भीतर मुक्ति होगी। वस्तुतः पुराने, दुष्ट शत्रु से बच निकलने का वादा पहले ही स्वर्ग में किया जा चुका है। इस मुक्ति के परिणामस्वरूप, पवित्रता आती है। हर विवरण में परिपूर्ण पवित्रता, मनुष्य द्वारा बनाई गई पवित्रता नहीं, बल्कि वादा किए गए मसीहा द्वारा प्राप्त की गई पवित्रता। इस मुक्ति का एक और परिणाम, और परिणामी पवित्रता यह है कि याकूब का घराना उनकी संपत्ति पर कब्ज़ा कर लेगा।

श्लोक 19 और 20 पर, जहां यह उस पर विस्तार से बताता है, और कहता है, "नेगेव के लोग एसाव के पहाड़ों पर कब्जा कर लेंगे, और तलहटी के लोग पलिशियों की भूमि पर कब्जा कर लेंगे। वे एप्रैम और सामरिया के खेतों पर अधिकार कर लेंगे, और बिन्यामीन गिलाद का अधिकारी हो जाएगा।” आपको यह सब भौगोलिक दृष्टि से, इज़राइल के लोगों के विभिन्न वर्गों द्वारा भूमि पर पुनः कब्जा करने के बारे में पता चलता है। 19 से 20 को लाएत्स उसके बारे में क्या कहता है? वह कहते हैं, “19 और 20 का मतलब यह नहीं है कि नामित प्रत्येक जिले के पास केवल विधेय में नामित क्षेत्र होगा। हम यहां, बल्कि, काफी सामान्य हिब्रू मुहावरे के साथ मिलते हैं। कई विषयों और सबसे पहले विधेय की संख्या सूचीबद्ध की गई है। प्रत्येक विधेय किसी एक विषय से जुड़ा हुआ है। वास्तव में, सभी विषय एक ही शरीर के अंग हैं, जो विधेय द्वारा वर्णित कार्य को अंजाम देते हैं। इज़राइल, ईश्वर के लोग, नामित विभिन्न जिलों और देशों पर फिर से कब्जा कर लेंगे या कब्जा कर लेंगे। इस प्रकार जो भूमि उस समय उनके अधिकार में थी वह ओबद्याह के दिन में उनके अधिकार में रही भूमि से कहीं अधिक हो जाएगी।” और फिर कहते हैं, "19 और 20 के वादे कब और कैसे पूरे हुए?” वह व्याख्यात्मक मुद्दा बन जाता है। उनकी प्रतिक्रिया है, “हमें अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं है, मैथ्यू और मार्क हमें बताते हैं कि यहूदिया, जेरूसलम, गैलील, जॉर्डन से परे, डेकापोलिस, इडुमिया, टायर और सिडोन के लोगों को मसीह के उपदेश द्वारा मसीह के राज्य के लिए प्राप्त किया गया था। अधिनियमों की पुस्तक ओबद्याह

17-20 की पूर्ति को दर्ज करती है। ओबद्याह 17-20 किस बारे में बात कर रहा है? लातेश चर्च के विस्तार का सुझाव देते हैं। "नए नियम के चर्च द्वारा ओबद्याह द्वारा नामित देशों और जिलों की विजय, सच्चा माउंट सिथ्योन।"

ओबद्याह की आयत 19 में "फिलिस्तिया", जहां कहा गया है, "तलहटी के लोग पलिशतियों की भूमि के अधिकारी होंगे।" वह कहां पूरी होती है? लेत्श अधिनियम 8:40 कहते हैं। अधिनियम 8:40 क्या है? फिलिप अज़ोटस में प्रकट हुआ, और सेसरिया पहुंचने तक सभी शहरों में सुसमाचार का प्रचार करता रहा। यह पलिशती क्षेत्र में सुसमाचार का प्रचार है। प्रेरितों के काम 9:32, "पतरस देश भर में घूमता हुआ लिद्दा में पवित्र लोगों से मिलने गया। और वहां उसे एनीस नाम एक मनुष्य मिला, और उस ने उस से कहा, यीशु मसीह तुझे चंगा करता है, उठ, और अपनी खाट की सुधि ले। लिद्दा और शेरोन के सभी निवासियों ने उसे देखा और प्रभु की ओर मुड़ गये।"

पद 19 में आपके पास सामरिया की रूपरेखा का संदर्भ है। जहां यह कहा गया है, "तलहटी के लोग पलिशतियों की भूमि पर अधिकार कर लेंगे, वे एप्रैम और सामरिया के खेतों पर अधिकार कर लेंगे।" वह कैसे पूरा हुआ? प्रेरितों के काम 8:5-17, जहाँ आप पढ़ते हैं, "फिलिप्पुस सामरिया के एक नगर में गया और उन्हें मसीह का प्रचार किया, जब भीड़ ने फिलिप्पुस को सुना, और उसके चमत्कारों को देखा जो वह करता था, तो वे सब उस पर ध्यान देते थे जो वह कहता था" और इसी तरह।

फोनीशिया में जेराफथ, ओबद्याह की कविता 20, अधिनियम 11:19 में पूरी होती है, "अब जो लोग स्टीवन के संबंध में उत्पीड़न से तितर-बितर हो गए हैं, वे फोनीशिया, साइप्रस और अन्ताकिया तक यात्रा करते हैं, और केवल यहूदियों को संदेश सुनाते हैं।" जेराफथ फोनीशिया में है। सेफ़राद एशिया माइनर में है, वह प्रकाशितवाक्य 3:1 से सरदीस का चर्च है। तो, लेत्श के विचार में, सुसमाचार का प्रसार ओबद्याह के इन छंदों में वर्णित है।

पद 21 पर, "उद्धारकर्ता एसाव के पहाड़ों पर शासन करने के लिए सिथ्योन पर्वत पर चढ़ेंगे, और राज्य प्रभु का होगा।" लातेश कहते हैं, "लेकिन एदोम के बारे में क्या? क्या वे निराशाजनक रूप से अनन्त दण्ड के लिए अभिशप्त हैं? नहीं, ओबद्याह ने परमेश्वर के लोगों

के अथक शत्रुओं के विरुद्ध कठोर शब्दों में निर्णय दिया, फिर भी वह अपनी भविष्यवाणी को एक शानदार वादे के साथ समाप्त करता है। “उद्धारकर्ताओं को एदोम भेजा जाएगा।” अपने स्वयं के उद्धार के लिए कृतज्ञता ईश्वर के वितरित बच्चों को सियोन पर्वत पर चढ़ने, उनके दुश्मन और उत्पीड़क एदोम के लिए मुक्ति की घोषणा करने के लिए प्रेरित करेगी। और इसका सार यह है, “एदोम एक 'प्रकार' है और ईश्वर की कृपा का प्रतीक है, जो सभी लोगों के लिए मुक्ति के सुसमाचार के प्रचार का प्रमाण है। इस प्रकार, वफादार सहयोग से, भगवान के चर्च के सदस्य, चाहे वे पादरी हों या आम लोग, राज्य प्रभु का होगा।

तो यह एक तरीका है जिससे श्लोक 17 से 21 को समझा गया है। यह इज़राइल के जातीय या राष्ट्रीय "राष्ट्र" और भौगोलिक, या क्षेत्रीय विजय के संदर्भ में कुछ भी बात नहीं कर रहा है, बल्कि यह चर्च की शुरुआत के संदर्भ में सुसमाचार के प्रसार की आध्यात्मिक वास्तविकताओं के बारे में बात कर रहा है, दर्ज किया गया अधिनियमों की पुस्तक में।

2. इस्राएल की उसके कब्जे में वापसी की भविष्यवाणी करते हुए दो, अन्य लोगों का सुझाव है कि इन छंदों को इस्राएल की उसके कब्जे में, यानी अपनी भूमि पर वापसी और एक राष्ट्र के रूप में एदोम के फैसले की भविष्यवाणी के रूप में समझा जाना चाहिए। यदि ऐसा है, तो प्रश्न यह है कि क्या यह पूरा हो गया है, या अभी भी पूरा होना बाकी है? उस पर राय बंटी हुई है। कुछ टिप्पणीकार, जे.बी. पायने और एडलर्स, भविष्यवाणी को अधिकांश भाग के लिए, अंतर-वसीयतनामा अवधि में पूरा होने के रूप में समझते हैं। 17बी पर एल्डर्स "इजरायल उस भूमि पर फिर से कब्जा कर लेगा जहां से उसे खदेड़ दिया गया था।" यह 17 पर अंतिम वाक्यांश है, "याकूब का घराना अपनी विरासत का अधिकारी होगा।" पद 18, "याकूब का घराना आग, यूसुफ का घराना ज्वाला, और एसाव का घराना खूंटी होगा," लौटे हुए इस्राएल द्वारा एदोम पर विनाश लाया जाएगा। पद 19, "उन विभिन्न क्षेत्रों पर कब्जा, नेगे वी के लोग एसाव के पहाड़ों पर कब्जा कर लेंगे," और इसी तरह, इज़राइल की भूमि पर वापसी है, और उन क्षेत्रों पर कब्जा करना है। श्लोक 20, वास्तव में 17बी की पुनरावृत्ति है, इज़राइल के पास इसकी विरासत है। 20 एक पुनरावृत्ति और विस्तार है जिसे आप अधिक

विवरण देते हुए कह सकते हैं, “सारपत तक भूमि रखने वाले इस्राएलियों के बारे में कुछ। यरूशलेम से निर्वासित लोग सेफ़ाराड में हैं, वे नेगेव के नगरों पर कब्ज़ा कर लेंगे,” इसलिए आपको श्लोक 20 में अधिक विवरण मिलता है।

जे. बार्टन पायने भी ऐसे ही हैं, जो कहते हैं कि पद 17 बेबीलोन की निर्वासन से वापसी में पूरा हुआ है, यहीं पर याकूब का घराना अपनी विरासत का अधिकारी होगा। श्लोक 18, याकूब का घराना, यूसुफ का घराना, निर्वासन से पूर्णता के साथ वापस आएगा। 18बी से 21ए, जहां आपके पास उन सभी अलग-अलग क्षेत्रों पर कब्ज़ा है, पायने की राय में, ये विजयें ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में पूरी की गईं, जब उत्तरी यहूदा और बेंजामिन केंद्र थे जहां से मैकाबीज़ के तहत यहूदियों ने संकेतित क्षेत्रों में दबाव डाला था पैगम्बर द्वारा। श्लोक 21 के उद्धारकर्ता, या मुक्तिदाता, मानव हैं, मसीहाई नहीं। यहूदा और उसका भतीजा जॉन हिरकेनस, उद्धारकर्ता हैं, जो एसाव के पहाड़ों पर शासन करने के लिए सिथ्योन पर्वत पर चढ़ेंगे। लेकिन, पायने का मानना था कि इनमें से अधिकांश अंतर-वसीयतनामा अवधि में पूरा हुआ था। पायने फिर 21ए और 21बी के बीच एक रेखा खींचता है। और 21बी में, वह कहता है कि "राज्य यहोवा का होगा" भविष्य के मसीहाई युग में पूरा होता है। तो, आप उस अंतर-वसीयत अवधि, 21ए में मैकाबीन समय से, 21बी में युगांतिक अंत समय की ओर बढ़ते हैं, "राज्य प्रभु का होगा।" मेरा प्रश्न यह है कि 21बी को कम निरपेक्ष अर्थ में क्यों न लिया जाए? अर्थात्, उद्धारकर्ताओं या उद्धारकर्ताओं के कार्यों में यदि आप उन्हें मैकाबीज़ के संदर्भ के रूप में समझते हैं, तो मैकाबीज़ की उपलब्धियों में प्रदर्शित होने वाली भगवान की संप्रभुता के रूप में 21बी "राज्य प्रभु का होगा" को क्यों नहीं समझते?

इसलिए, एल्डर्स और जे. बार्टन पायने दोनों 17-21 को कुछ ऐसी चीज़ के रूप में देखते हैं, कम से कम 21बी के अपवाद के साथ, जो पहले ही पूरी हो चुकी है। बल्कि, किसी प्रकार के आध्यात्मिक अर्थ के साथ कि ये शब्द जो वर्णित किया जा रहा है उसकी काफी शाब्दिक समझ लेते हैं। अब, दिलचस्प बात यह है कि आल्डर्स एक सहस्त्राब्दीवादी हैं। आप उम्मीद कर सकते हैं कि एल्डर्स इसे आध्यात्मिक अर्थ में, चर्च के वर्णनात्मक रूप में समझेंगे, जिस तरह से अधिकांश सहस्त्राब्दीवादी समझते हैं। लेकिन वह नहीं करता। पायने

एक प्रीमिलेनियलिस्ट हैं। तब आप उम्मीद कर सकते हैं कि पायने इसे इसी तरह से लेगा।

लेकिन ध्यान दें कि आल्डर्स इस बिंदु पर क्या करता है। वह एक सहस्त्राब्दिवादी है, लेकिन उसका मानना है कि यह अंतर-वसीयत अवधि में पूरा होता है। वह कहते हैं, "हमें टाइपोलॉजी के मामले को ध्यान में रखना चाहिए।" और फिर हम एदोम और इसराइल के रिश्ते में देखते हैं, दुनिया का मसीह की कलीसिया के साथ रिश्ता। जैसे यहां जैकब के प्रति शत्रुता के लिए एदोम पर एक कड़ा फैसला सुनाया गया है, वैसे ही दुनिया को चर्च के प्रति अपनी शत्रुता के लिए भगवान के फैसले से गुजरना होगा। और जैसे पुनर्स्थापित इसराइल एदोम पर विजय प्राप्त करेगा, वैसे ही चर्च उन सभी पर विजय प्राप्त करेगा जो उसके विरोधी थे। एसाव याकूब के समान ही था, जो इसहाक का पुत्र और इब्राहीम का पोता था। परन्तु एदोमी इस्राएल के कट्टर शत्रु थे। इसी प्रकार नई अर्थव्यवस्था में भी चर्च के परिवार में जन्मे लोग हैं जो बाद में उसके सबसे कट्टर दुश्मन बन जाते हैं। लेकिन ईश्वर चर्च को ऐसे शत्रुओं पर विजय दिलाएगा।" अब आप देखिए, आल्डर्स यहां क्या कर रहा है, वह कह रहा है कि एदोम और इज़राइल के बीच के रिश्ते में आप चर्च और दुनिया के बीच के रिश्ते को चित्रित करने वाला एक विशिष्ट महत्व देख सकते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि यह वैध है, आप उसी तरह के द्वंद्व या रिश्ते के बारे में बात कर रहे हैं। वह यह नहीं कह रहा है कि 17 से 21 सीधे चर्च के बारे में बात कर रहा है, बल्कि वह कह रहा है कि एदोम और इज़राइल के बीच संबंधों में, प्रतीकात्मक रूप से, हम चर्च और दुनिया के बीच संबंधों के बारे में कुछ देख सकते हैं। अब उन लोगों में से जो सुझाव देते हैं कि हमें 17 से 21 को इज़राइल की उसके अधिकार में वापसी के रूप में देखना चाहिए, एल्डर्स और पायने इसे अंतर-वसीयत अवधि में पहले से ही पूरी हो चुकी चीज़ के रूप में देखते हैं।

3. भविष्यवाणी का दूसरा पक्ष अभी पूरा होना बाकी है - भूमि का अंतिम पुनर्वितरण

बी., "भविष्यवाणी का दूसरा पक्ष अभी पूरा होना बाकी है।" उदाहरण गेबेलिन है। उनका कहना है कि 17वीं इसराइल की भूमि पर पुनर्स्थापना है, "याकूब का घराना उसकी विरासत का अधिकारी होगा," अभी तक पूरा नहीं हुआ है। दूसरे शब्दों में, वह अंतर-

वसीयतनामा अवधि में उस पूर्ति को नहीं देखता है। हालाँकि, और यहीं पर उसकी व्याख्या बहुत अच्छी तरह से काम नहीं करती है, फिर वह श्लोक 18 में कहता है, "याकूब का घर आग, यूसुफ का घर आग, और एसाव का घर खूँटी होगा," उनका कहना है कि 18 को जुडास मैकाबियस और जॉन हिरकेनस ने पूरा किया था। तो, 18 पहले ही पूरा हो चुका है और फिर जब आप 19 और 20 पर पहुंचते हैं, तो वह भी पूरा होना बाकी है। गैबेलिन की टिप्पणी 19 और 20 में कहा गया है कि आपके पास भूमि के विभिन्न हिस्सों पर कब्ज़ा है, वह कहते हैं, "कोई इन दो छंदों, इस शीर्षक पर बड़े अक्षरों में लिख सकता है। 'भूमि का अंतिम पुनर्विभाजन।'"

ओबद्याह 17-21 पर निष्कर्ष इन छंदों को कैसे लिया जाना चाहिए? क्या हमें उन लोगों से सहमत होना चाहिए जो अतीत में उनकी पूर्ति देखते हैं, या कई अन्य लोगों की तरह, क्या हमें उन्हें वही अर्थ देने का प्रयास छोड़ देना चाहिए जो वे कहते हैं, लेकिन केवल भौगोलिक विवरणों को चर्च के प्रभुत्व की अस्पष्ट भविष्यवाणी में आध्यात्मिक रूप देना है? या, अंततः, क्या हमारे पास सहस्राब्दी के दौरान फ़िलिस्तीनी समस्या के लिए ईश्वर के अंतिम समाधान की एक संक्षिप्त रूपरेखा है? निश्चित रूप से, यह अंतिम विकल्प सर्वोत्तम है। इस तरह से पढ़ने पर, छंद समग्र रूप से पुराने नियम की भविष्यवाणी के अनुरूप हैं। विवरणों की चर्चा में, गैबेलिन का मानना है कि हम कठिनाई से किसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे। "आप निश्चित हो सकते हैं कि ये सभी विवरण ईश्वर को ज्ञात हैं, वह अपने बिखरे हुए लोगों को नहीं भूले हैं, उनके साथ उनकी वाचा स्थायी है। एक दिन जब मसीहा दाऊद के सिंहासन पर कब्ज़ा करेगा, इन भविष्यवाणियों की पेचीदा योजना सुलझ जाएगी। इसलिए वह श्लोक 19 और 20 की भविष्य में पूर्ति की आशा करता है। वास्तव में कैसे, वह बहुत निश्चित नहीं है, लेकिन यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। 21 में से, "उद्धारकर्ता सियोन पर्वत पर चढ़ते हैं।" वह कहते हैं, "इस भविष्यवाणी के सीमित ऐतिहासिक अर्थ में, ओबद्याह जरुब्बाबेल या जुडास मैकाबीस जैसे मानवीय उद्धार की आशा कर रहा है, लेकिन ये उद्धारकर्ता, सबसे अच्छे रूप में, उद्धारकर्ता का एक पूर्वाभास हैं, जो ओबद्याह के दिनों में अभी आना बाकी है, और

अब हम किसकी दूसरी शानदार वापसी का इंतजार कर रहे हैं। थोड़ा नीचे जाएं, "यह पूछना शायद ही प्रासंगिक है कि उसका क्या मतलब था, लेकिन उसने जो देखा वह दुनिया का उद्धारकर्ता था, वह उद्धारकर्ता जो न्याय करेगा, वह उद्धारकर्ता जो बाइबिल की भविष्यवाणी के अनुसार कहा गया है, 'दुनिया का राज्य होगा प्रभु का, और उसके मसीह का राज्य बनो।'"

वैज्ञानिक व्याख्या इन शब्दों में ऐसा कुछ भी नहीं देखती है, लेकिन हम यह कहने का साहस कर सकते हैं कि यह वही है। और स्कोफील्ड बाइबिल के उस अंतिम नोट के संदर्भ में। आयत 18 पर एक नोट है, "याकूब का घर आग का घर होगा, यूसुफ का घर आग की लपटें होगा, एसाव का घर खूंटी का होगा," कह रहा है, "बाद के दिनों में एदोम पुनर्जीवित हो जाएगा।" याद रखें हमने सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली के साथ इसके बारे में बात की थी? यह सांस्कृतिक रूप से दिनांकित शब्दावली को उसकी सीमा तक धकेलता है और कहता है, जिन राष्ट्रों का उल्लेख किया गया है, वही राष्ट्र पूर्ति के समय शामिल होंगे।

तो आपको इस तरह के एक अंश के साथ कई व्याख्यात्मक मुद्दे मिलते हैं, भविष्यवाणी की किताबों में इस तरह के बहुत सारे अंश हैं, यह उस तरह का है जैसा आप 17 से 21 में किसी भी स्थान पर पाएंगे। आप उनके साथ क्या करते हैं? क्या यह आध्यात्मिक अर्थ में चर्च के बारे में बात कर रहा है, क्या यह अधिक शाब्दिक अर्थ के बारे में बात कर रहा है, और यदि ऐसा है तो क्या यह पहले ही पूरा हो चुका है, या क्या यह अभी भी पूरा होना बाकी है? मैं उस अधिक शाब्दिक अर्थ पर आने के लिए इच्छुक हूँ, लेकिन जिस तरह से आल्डर्स और पायने करते हैं, और कहता हूँ कि यह अंतर-वसीयत अवधि में पूरा हुआ था, खासकर मैकाबीज़ की गतिविधियों के साथ।

ओबद्याह पर समापन टिप्पणियाँ इसके अंतिम पृष्ठ पर जाएँ, बस कुछ समापन टिप्पणियाँ। ओबद्याह एक उल्लेखनीय भविष्यसूचक पुस्तक है। यह सामान्यतः जितना ध्यान दिया जाता है उससे कहीं अधिक ध्यान देने योग्य है। पॉल राबे ने ओबद्याह पर अपनी एंकर

बाइबिल कमेंट्री के पहले पैराग्राफ में इसके महत्व को दर्शाया है, मुझे लगता है कि यह पैराग्राफ सभी को एक साथ खींचता है। वह कहते हैं, "ओबद्याह की किताब हिब्रू बाइबिल या पुराने नियम की सबसे छोटी किताब है, जिसमें केवल एक अध्याय है।" वहां, जिसे आप ओल्ड टेस्टामेंट, हिब्रू बाइबिल कहते हैं, उसका उचित शब्द *तनक* है। "हिब्रू बाइबिल" आम तौर पर आज अकादमिक मंडलियों या ईसाई मंडलियों में उपयोग की जाने वाली चीज़ है, लेकिन आमतौर पर यहूदी लोग, वे इसे तानाके कहते हैं, जो कानून (तोरह), पैगंबर (नेबीम) और लेखन (केथुबिम) से आता है। "केवल एक अध्याय और 21 छंदों के साथ, इसे बाइबल के पाठकों द्वारा आसानी से अनदेखा किया जा सकता है।" यिर्मयाह के 1364 छंदों की तुलना करके 21 छंद क्या हैं? "फिर भी, ओबद्याह का करीबी अध्ययन प्रयास के लायक है। एक तो इसका छोटा आकार फायदेमंद साबित होता है। पाठक बिना अधिक कठिनाई के पूरी पुस्तक को मन में रख कर याद कर सकते हैं। यह उन्हें पेड़ों के बीच खोए बिना पूरे जंगल को देखने में सक्षम बनाता है, जो कि एक बड़ी किताब के साथ इतनी आसानी से नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा, ओबद्याह इजरायली भविष्यवाणी परंपरा की मुख्यधारा में बहता है, एक ऐसी विशेषता जिसे हमेशा मान्यता नहीं दी गई है। यह लघु पुस्तक कई महान भविष्यसूचक विषयों का सुंदर ढंग से सारांश प्रस्तुत करती है, जैसे कि इसराइल के दुश्मनों के खिलाफ दैवीय निर्णय, इस मामले में एदोम, यहोवा का दिन, प्रभु का दिन।" हमने इसके बारे में संक्षेप में बात की, "लेक्स टैलियोनिस निर्णय के मानक के रूप में, जैसा आपने किया है, वैसा ही आपने आपके साथ किया होगा, क्रोध का प्याला रूपक, सिय्योन धर्मशास्त्र, 'सिय्योन पर्वत पर मुक्ति होगी,' इज़राइल का कब्ज़ा भूमि, 'इस्त्राएल अपनी विरासत का अधिकारी होगा,' और यहोवा का राजा, पुस्तक के अंत में 'राज्य यहोवा का होगा'। यह विषयों का एक उल्लेखनीय संग्रह है जो अन्यत्र अधिक विस्तार से विकसित किया गया है लेकिन भविष्यवाणी पुस्तकों के माध्यम से प्रवाहित होता है। इस प्रकार, यह पुस्तक भविष्यवक्ताओं के अधिकांश संदेशों के संक्षिप्त प्रतीक के रूप में कार्य करती है। यह भविष्यसूचक प्रवचन की प्रकृति को भी दर्शाता है। यह काव्य और गद्य है, यह भाषण के प्रकार हैं, जैसे निर्णय, आरोप, चेतावनी और वादा, और यह अलंकारिक शैली है। यह विशेष

रूप से विदेशी राष्ट्रों के खिलाफ दैवज्ञों का उदाहरण देता है, एक ऐसी श्रेणी जो बाद के भविष्यवक्ताओं के अधिकांश संग्रह पर कब्जा करती है, आपके पास यशायाह में, यिर्मयाह में, बुतपरस्त राष्ट्रों के खिलाफ, अन्यायी इसराइल के खिलाफ कई भविष्यवाणियां हैं। इसलिए, ओबद्याह की छोटी किताब पर ध्यान देना बाइबल के गंभीर विद्यार्थियों के लिए एक पुरस्कृत अनुभव साबित होना चाहिए। इसलिए मुझे लगता है कि उन्होंने यहां इस पुस्तक के महत्व को काफी अच्छी तरह से संक्षेप में प्रस्तुत किया है, जिसे, मुझे लगता है, हम आम तौर पर नजरअंदाज कर देते हैं।

ओबद्याह में, मेरी अपनी टिप्पणी में, हमें 21 छंदों की छोटी सी अवधि में भविष्य के बारे में एक उल्लेखनीय दृष्टिकोण भी दिया गया है। महत्वपूर्ण भविष्यवाणियाँ, एदोम पर एक निर्णय। यरूशलेम के दो विनाश, जिनका नाम से उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि 12 से 14 में यही बातें सामने आती हैं, और भविष्य के लिए एक चेतावनी है। श्लोक 20 में इज़राइल और यहूदा के बिखराव, निर्वासन से इस्राएलियों की वापसी और मैकाबीन काल में एदोम पर विस्तारित प्रभुत्व और अंततः शायद 21 में यहोवा के भविष्य के मसीहा राज्य की स्थापना की सूचना दी गई है, हालाँकि मैं 21 को सरलता से चुनने के लिए इच्छुक हूँ उस खंड का एक भाग जो अंतर-वसीयतनामा अवधि में पूरा होता है।

योएल

ए. लेखक और दिनांक

अब ओबद्याह से जोएल की ओर चलते हैं। जोएल, ए. है, "लेखक और दिनांक," और बी. है, "सामग्री।" तो, हम लेखक और तारीख पर थोड़ा गौर करेंगे। किसी भी स्तर की निश्चितता के साथ यह शायद अब तक की सभी भविष्यवाणियों की किताबों में सबसे कठिन है, लेकिन, जैसा कि आप इस हैंडआउट पर ध्यान देंगे, इसका नाम पेतुएल के बेटे जोएल से लिया गया है, जिसे आप 1:1 में पाते हैं, "द यहोवा का सन्देश पतूएल के पुत्र योएल के पास पहुँचा।" लेकिन हम जोएल या पेतुएल के व्यक्तिगत इतिहास के बारे में किताब से या पुराने नियम में कहीं और से कुछ भी नहीं जानते हैं। इसलिए, जहां तक तारीख का सवाल है, आप

केवल पुस्तक के अप्रत्यक्ष संकेतों और उन अप्रत्यक्ष संकेतों के निष्कर्षों से ही इसके बारे में जान सकते हैं। इस कारण ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचना कठिन है जिस पर हर कोई विश्वास करता हो। दो बुनियादी पद हैं. सबसे पहले, निर्वासन के बाद की तारीख, नहेमायाह के तहत यरूशलेम की दीवारों के पुनर्निर्माण के बाद, 430 ईसा पूर्व या उससे भी बहुत बाद में। या, राजा जोश 835 ईसा पूर्व के समय की एक पूर्व-निर्वासन तिथि, मैंने उस पूर्व-निर्वासन तिथि को चुना है, लेकिन बहुत अधिक हठधर्मिता के साथ नहीं। आइए देखें कि मुद्दे क्या हैं.

1. निर्वासन के बाद की तारीख के लिए तर्क वह निर्वासन के बाद की तारीख के लिए तर्क, ए, ऐसा कहा जाता है कि 3:2बी, 3, 5, 6, और 17 जैसे छंद केवल विनाश के बाद लिखे जा सकते थे। 586 में यरूशलेम की, और इसलिए जोएल ने इस घटना के बाद भविष्यवाणी की। अब वे पद 3:2बी कहते हैं, "उन्होंने मेरे लोगों को राष्ट्रों के बीच तितर-बितर कर दिया, और मेरी भूमि को विभाजित कर दिया।" श्लोक 3, "उन्होंने मेरी प्रजा के लिये चिट्ठी डाली, लड़कों को वेश्याओं के बदले बेच डाला, और लड़कियों को शराब के बदले बेच डाला।" श्लोक 5, "तू ने मेरी चाँदी और मेरा सोना ले लिया, और मेरे सर्वोत्तम खज़ानों को अपने मन्दिरों में ले गया। " श्लोक 6, "तू ने यहूदा और यरूशलेम के लोगों को यूनानियों के हाथ बेच दिया, कि तू उन्हें उनके देश से दूर भेज दे," और 17, "तब तुम जान लोगे, कि मैं, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, अपने पवित्र पर्वत सिव्योन में रहता हूँ।" . यरूशलेम पवित्र होगा, विदेशी उस पर फिर कभी आक्रमण न करेंगे।" तर्क यह है कि ऐसे कथन 586 ईसा पूर्व के बेबीलोनियन निर्वासन के बाद ही लिखे जा सकते थे, लेकिन इसके संबंध में, क्योंकि पहले युगल अध्याय एक मंदिर और मंदिर सेवा के अस्तित्व का अनुमान लगाते हैं, यह हागै और जकर्याह के बाद का होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, न केवल 586 के बाद, बल्कि निर्वासन से लौटने और मंदिर सेवा की पुनः स्थापना के बाद भी।

मुझे नहीं लगता कि यह इतना निश्चित है कि अध्याय 3 586 की घटनाओं का अनुमान लगाता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मंदिर और शहर के विनाश के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है। यरूशलेम में एलियंस की उपस्थिति, चाँदी और सोने की लूट, कैदियों को

ले जाना ऐसी कई घटनाओं के संबंध में हो सकता है, शीशक के आक्रमण से लेकर पलिशियों और अरबों के आक्रमण तक, यहोराम के समय तक। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात, और मुझे लगता है कि यह वास्तव में मुद्दा है, 3:2 बी में संदर्भ को इज़राइल के वर्तमान प्रवासी के भविष्यसूचक संदर्भ के रूप में लेना भी संभव है, जो 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश के साथ शुरू हुआ था। मैं अपने निज भाग, अपनी प्रजा इस्राएल के विषय में उन पर न्याय करूंगा, क्योंकि उन्होंने मेरी प्रजा को तितर-बितर कर दिया है, वे कौन हैं? वह "राष्ट्र" है, यह 3:1 पर वापस जाता है, "उन दिनों में जब मैंने यहूदा और यरूशलेम की किस्मत को नष्ट कर दिया था, मैं सभी राष्ट्रों को इकट्ठा करूंगा, उन्हें यहोशापात की घाटी में ले जाऊंगा, और न्याय करूंगा मेरे निज भाग अर्थात् मेरी प्रजा इस्राएल के विषय में उन से विरुद्ध हुआ, क्योंकि उन्होंने मेरी प्रजा को जाति जाति में तितर-बितर कर दिया। यह भविष्यसूचक हो सकता है, कई लोग मानते हैं। लेकिन यह एक तर्क है, वे कथन केवल 586 के बाद ही लिखे जा सकते थे।

2, मौन से कुछ तर्क हैं फिर बी, मौन से कुछ तर्क हैं। मौन से दिए गए तर्क आम तौर पर बहुत ठोस नहीं होते। लेकिन 1., भविष्यवाणी यहूदा और यरूशलेम से संबंधित है," यह उदाहरण के लिए 3:20 में इस्तेमाल की गई भाषा है, जहां यह कहा गया है "यहूदा पीढ़ी-पीढ़ी यरूशलेम में सदैव निवास

करेगा।" एक। जोएल में उत्तरी साम्राज्य का कोई स्पष्ट संदर्भ नहीं है और यह तर्क दिया जाता है कि जोएल में उत्तरी साम्राज्य का कोई स्पष्ट संदर्भ नहीं है। यह तर्क दिया जाता है कि यदि उत्तरी साम्राज्य अभी भी अस्तित्व में होता, तो आप इसके कुछ संदर्भ की अपेक्षा करते। निष्कर्ष यह है कि उत्तरी साम्राज्य पहले ही नष्ट हो चुका था। जहाँ "इज़राइल" शब्द का प्रयोग किया गया है, जो कि यह है, इसे 2:27, 3:2 और 16 में यहूदा साम्राज्य के संदर्भ के रूप में समझा जाना चाहिए, लेकिन जैसा कि ईजे यंग ने अपने *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड* में बताया है *वसीयतनामा*, "भविष्यवाणी में उत्तरी साम्राज्य के नाम का उपयोग करने का कोई

विशेष अवसर नहीं था।" दूसरे शब्दों में, इज़राइल का नाम दक्षिणी के साथ-साथ उत्तरी साम्राज्य का भी था; उनके बीच कोई अंतर नहीं किया गया है जैसा कि आप कभी-कभी कहीं और पाते हैं, एप्रैम और यहूदा, उत्तरी साम्राज्य, आप जोएल में ऐसा नहीं पाते हैं। लेकिन आप उससे कितना कमा सकते हैं?

बी। राजा का कोई उल्लेख नहीं मौन से दूसरा तर्क यह है कि राजा का कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन बड़ों के कई संदर्भ हैं, 1:2, 1:14, और 2:16। योएल, 1:2 कहता है, "हे पुरनियों, इसे सुनो।" 1:14 में, "बुजुर्गों और देश में रहने वाले सभी लोगों को बुलाओ," और 2:16, "लोगों को इकट्ठा करो, सभा को पवित्र करो, बुजुर्गों को इकट्ठा करो, बच्चों को इकट्ठा करो।" अब, मुझे ऐसा लगता है कि इन दोनों तर्कों में, एप्रैम और यहूदा के बीच कोई अंतर नहीं किया गया है, राजा का कोई संदर्भ नहीं है, वे मौन से तर्क हैं, और ऐसे सभी तर्कों की कमजोरियों को साझा करते हैं। नहूम और हबक्कूक की निर्वासन-पूर्व भविष्यवाणियों में भी राजा का उल्लेख नहीं है। बुजुर्गों का उल्लेख आपको इज़राइल के इतिहास के सभी कालखंडों में मिलता है। इसके अलावा, यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि क्या ये संदर्भ कार्यालय के संदर्भ हैं, या केवल वृद्ध पुरुषों के संदर्भ हैं। यदि आप 2:16 को देखते हैं तो मुझे ऐसा लगता है, यह शायद सिर्फ वृद्ध पुरुष हैं, क्योंकि यह कहता है, "लोगों को इकट्ठा करो, सभा को पवित्र करो, बड़ों को एक साथ लाओ," और देखो क्या होता है, "बच्चों को इकट्ठा करो।" जो लोग स्तनपान करते हैं, वे दूल्हे को अपने कक्ष से बाहर जाने दें, याजकों और मंत्रियों को जाने दें।" यह सिर्फ लोगों की विभिन्न श्रेणियां हैं, जरूरी नहीं कि कार्यालय हो। इसलिए, मुझे यकीन नहीं है कि आप यह कह सकते हैं कि राजा का कोई उल्लेख नहीं है और बड़ों के युगल संदर्भों का मतलब है कि आपको इसे उस समय में रखना होगा जब कोई राजा नहीं था।

सी. एप्रैम और यहूदा के बीच कोई अंतर नहीं - तथाकथित सर्वनाशी खंड एक तीसरा तर्क, अध्याय 3 में उन संदर्भों के बाद जो अनुमान लगाया गया था कि 586 पहले ही हो चुका

था, एप्रेम और यहूदा के बीच कोई अंतर नहीं है, और राजा का कोई संदर्भ नहीं है सी।, की उपस्थिति तथाकथित सर्वनाशकारी धाराएँ। यह कुछ लोगों द्वारा इंगित किया गया है, हालाँकि, आमतौर पर, इंजीलवादियों द्वारा नहीं, लेकिन मुख्यधारा की टिप्पणियों में आपको इस पर दृढ़ता से जोर दिया जाएगा, एक देर की तारीख के सबूत के रूप में। अब सर्वनाशकारी विशेषताएं क्या हैं? "सर्वनाश" शब्द का अर्थ प्रकटीकरण या रहस्योद्घाटन है। इसका उपयोग प्रकाशितवाक्य 1:1, "यूहन्ना का सर्वनाश" में किया गया है। इसे यहूदी साहित्य की एक शैली में उधार लिया गया और लागू किया गया जो लगभग 200 ईसा पूर्व से 100 ईस्वी तक फली-फूली। इसमें सर्वनाशकारी साहित्य की एक शैली है - शैली वर्गीकरण के आधार पर, इस प्रकार के साहित्य वाली किसी भी पुस्तक को कुछ विद्वानों द्वारा आवश्यक रूप से देर से माना जाता है और इसमें उदाहरण के लिए, यशायाह 24-27, "यशायाह सर्वनाश" शामिल होगा, जो यशायाह का एक खंड है जिसमें सर्वनाश साहित्य के रूप में वर्णित समानताएं हैं। यदि सभी सर्वनाशकारी साहित्य देर से है, तो यशायाह 24-27 देर से है और यह यशायाह से नहीं है, और जोएल देर से है।

हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि यह इतना सरल है। मेरा मानना है कि जिसे आप बाइबिल आधारित और बाद में गैर-बाइबिल सर्वनाशी साहित्य कह सकते हैं, उसके बीच अंतर करना होगा। गैर-बाइबिल सर्वनाश साहित्य की एक श्रेणी है जो लगभग 200 ईसा पूर्व से 100 ईस्वी तक उस अंतिम काल में फली-फूली। अगला पैराग्राफ आरके हैरिसन के *पुराने नियम के परिचय से एक पैराग्राफ है*, जो बाद के गैर-बाइबिल सर्वनाश साहित्य की विशेषताओं का वर्णन करता है। ध्यान दें कि वह वहां क्या कहता है, "डैनियल की दूरदर्शी सामग्री को अक्सर 'सर्वनाशवाद' के संदर्भ में वर्णित किया गया है, जिसे लोकप्रिय रूप से प्राचीन फारस के धर्म, पारसी धर्म में उत्पन्न माना जाता है, और इसमें एक द्वैतवादी, ब्रह्मांडीय और युगांतिक विश्वास शामिल है। दो विरोधी ब्रह्मांडीय शक्तियों में, ईश्वर और दुष्ट, और दो अलग-अलग युगों में, वर्तमान युग, जिसे दुष्ट की शक्ति के अधीन माना जाता है, और भविष्य का शाश्वत युग जिसमें ईश्वर बुराई की शक्ति को उखाड़ फेंकेगा और शाश्वत धार्मिकता की शर्तों के तहत अपने चुने हुए लोगों के साथ सर्वोच्च शासन करें। हालाँकि इस

दृष्टिकोण में कुछ ओटी लेखकों के विचारों के साथ समान तत्व हैं, लेकिन बाइबिल और गैर-बाइबिल सर्वनाश के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है," मुझे लगता है कि यहाँ मुद्दा है, और हम चाहते हैं कि "इसमें पढ़ने से बचें" विहित धर्मग्रंथों का विचार था जो या तो बाद के काल के यहूदी अपोकलिफ़ल और छद्मलेखीय साहित्य में घटित हुआ या जो यहूदी धर्म के विचार के लिए पूरी तरह से विदेशी था। इस संबंध में यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इज़राइल के भविष्यवक्ताओं ने इस दुनिया में चुने हुए लोगों की अंतिम मुक्ति रखी। जबकि दैवीय साम्राज्य के आगमन से स्थापित होने वाली नई व्यवस्था वर्तमान विश्व अनुक्रमों के साथ निरंतर होगी, यह इस मायने में भिन्न होगी कि पीड़ा, हिंसा और बुराई, दृश्य से अनुपस्थित होगी।

सर्वनाश साहित्य और इसकी विशेषताओं पर प्रवचन यहां सर्वनाशी साहित्य पर प्रचुर मात्रा में साहित्य उपलब्ध है। यदि आप इस शीर्षक के अंतर्गत अपनी ग्रंथ सूची में देखें, तो इसमें कुछ संदर्भ हैं यदि आप उस पर और अधिक गौर करना चाहते हैं। सर्वनाशकारी साहित्य के बारे में लियोन मॉरिस द्वारा वर्णित एक खंड है। हैंडआउट पर मॉरिस के दूसरे पैराग्राफ में, वह बताते हैं कि सर्वनाशकारी साहित्य कथित तौर पर रहस्योद्घाटन करने वाला है। दूसरे शब्दों में, यह रहस्योद्घाटन देने का दावा करता है। यह छद्म नाम है, यानी, हम नहीं जानते कि वास्तविक लेखक कौन हैं, लेकिन वे हनोक, द टेस्टामेंट ऑफ मोसेस, 2 एस्ड्रास, द एपोकैलिप्स ऑफ अब्राहम, इस तरह के लेखन जैसे काल्पनिक नामों के अंतर्गत आते हैं। इसलिए यह कथित तौर पर रहस्योद्घाटन, छद्म नाम है, और इसमें बहुत अधिक प्रतीकात्मकता शामिल है।

उन्होंने यह भी नोट किया कि यह इन चार प्रमुख अवधारणाओं की विशेषता है: द्वैतवाद, निराशावाद, नियतिवाद और नैतिक निष्क्रियता। अब द्वैतवाद, निराशावाद, नियतिवाद और नैतिक निष्क्रियता से मॉरिस का क्या तात्पर्य है?

द्वैतवाद: दिवंगत गैर-बाइबिल सर्वनाशी साहित्य एक युगांतवादी द्वैतवाद को व्यक्त करता है जिसमें वर्तमान युग और आने वाले युग के बीच तीव्र अंतर शामिल है। वर्तमान और

भविष्य को बिल्कुल असंबद्ध के रूप में देखा जाता था। क्यों? समस्या यह है कि, इज़राइल ने भगवान के कानून को प्राप्त किया है और उसका पालन किया है। फिर, वे पीड़ित क्यों हैं? यह ईश्वर का कार्य नहीं हो सकता, इसका एकमात्र उत्तर यह है कि ईश्वर के तरीके गूढ़ हैं। वह अंततः स्थिति को सुधार देगा, लेकिन अंतिम मुक्ति अधिनियम का वर्तमान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वर्तमान युग दुष्ट की शक्ति के अधीन है। तो, वर्तमान युग, जो दुष्ट की शक्ति के अधीन है, और आने वाले युग के बीच वह विरोधाभास है।

निराशावाद: सर्वनाशकारी साहित्य चीजों के बारे में निराशावादी था। भगवान ने इस युग को पीड़ा और बुराई के लिए छोड़ दिया था। यहूदियों की वर्तमान दुर्दशा के लिए यह एकमात्र संभावित स्पष्टीकरण है।

नियतिवाद: एक संप्रभु ईश्वर पर बहुत कम जोर दिया गया है जो अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इतिहास में कार्य कर रहा है; बल्कि, परमेश्वर स्वयं उस समय के बीतने की प्रतीक्षा कर रहा है जिसे उसने निर्धारित किया है।

नैतिक निष्क्रियता: जैसा कि सर्वनाशकारी लेखकों ने देखा, उनके समय में समस्या राष्ट्रीय पश्चाताप की आवश्यकता नहीं थी। नैतिक उपदेश का अभाव है, क्योंकि पाप की भावना का हास हो रहा है। सर्वनाशवादियों की समस्या यह है कि इज़राइल कानून का पालन करता है, और इसलिए धर्मी है, और फिर भी उन्हें कष्ट सहने की अनुमति है। इसके विपरीत, भविष्यवक्ता लगातार इस्राएल से पश्चाताप करने, ईश्वर की ओर मुड़ने की अपील करते हैं। इसलिए, भविष्यसूचक युगांतशास्त्रीय साहित्य और इस स्वर्गीय सर्वनाशी साहित्य के बीच काफी अंतर है। इस दिवंगत सर्वनाशकारी साहित्य में द्वैतवाद, निराशावाद, नियतिवाद और नैतिक निष्क्रियता के ये विचार शामिल हैं।

इसे ध्यान में रखते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि जोएल को उस प्रकार के सर्वनाशी साहित्य के रूप में वर्गीकृत करने का कोई आधार नहीं है जो इस साहित्यिक प्रकार को देर की तारीख के आधार के रूप में उपयोग करने को उचित ठहरा सके। दूसरे शब्दों में, यह तर्क मुझे अमान्य लगता है। बस इतना ही कहा जा सकता है कि जोएल की पुस्तक में युगांतशास्त्रीय तत्व प्रमुख है। यह सच है, और जोएल की पुस्तक में कुछ कल्पनाएँ हैं, विशेष

रूप से अध्याय 2 में टिड्डियों की कल्पना। लेकिन यह अपने आप में इसे देर से दिनांकित करने का कोई कारण नहीं है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो यशायाह 24 में यशायाह के छोटे एपो कैलिप्स की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हैं -27, कि यह 8^{वीं} शताब्दी ईसा पूर्व में लिखा गया था, इसलिए, ये देर से तारीख के लिए तर्क हैं, पुस्तक के सर्वनाशकारी चरित्र के बारे में बाद वाला तर्क वास्तव में इंजील विद्वानों की तुलना में गैर-इंजील विद्वानों से अधिक आता है। तो फिर आपके पास अध्याय 3 में वे संदर्भ बचे हैं, एक राजा के संदर्भ की कमी, और एप्रैम और यहूदा के बीच अंतर की कमी। इसलिए वे मजबूत तर्क नहीं हैं।

सी. जोएल की निर्वासन पूर्व तिथि ए. जिन राष्ट्रों का उल्लेख किया गया है वे निर्वासन-पूर्व के समय के लिए उपयुक्त हैं आइए शीघ्रता से निर्वासन-पूर्व की तिथि पर नजर डालें। जो लोग पूर्व-निर्वासन तिथि का चयन करते हैं, वे आम तौर पर किताब को लगभग 835 ईसा पूर्व के जोश के समय में रखते हैं। पत्र ए, अध्याय 3 में शत्रु के रूप में वर्णित राष्ट्र निर्वासन के बाद के समय की तुलना में निर्वासन-पूर्व के समय में बेहतर फिट बैठते हैं। असीरिया और बेबीलोन का उल्लेख नहीं है। जिनका उल्लेख किया गया है वे फोनीशियन, पलिशती, मिस्रवासी और एदोमी हैं। श्लोक 4 में पलिशती, और श्लोक 19 में मिस्रवासी और श्लोक 19 में एदोमी। दूसरे शब्दों में, अध्याय 3 में उल्लिखित शत्रु राष्ट्र यहूदा के प्रारंभिक निर्वासन-पूर्व शत्रु हैं।

बी। राजा की अनुपस्थिति और पुजारियों की प्रमुखता बिंदु बी, राजा की अनुपस्थिति और पुजारियों की प्रमुखता। पुजारियों के बहुत से संदर्भ उस समय की ओर इशारा कर सकते हैं जब योआश एक युवा लड़के के रूप में, महायाजक के शासन के अधीन शासन करता था। याद रखें, उसने एक शिशु के रूप में सिंहासन ग्रहण किया था, और महायाजक वास्तव में शासक प्राधिकारी था। हालाँकि, फिर से, यह एक अनुमान है, जोएल की पुस्तक में किसी भी कथन का उस समय से कोई सीधा संबंध नहीं है।

सी। लघु भविष्यवक्ताओं के क्रम में पुस्तक की स्थिति बिंदु सी., पुस्तक की स्थिति और लघु भविष्यवक्ताओं के क्रम में। हालाँकि यह कोई निर्णायक तर्क नहीं है, याद रखें कि हमने पहले आदेश के बारे में बात की थी। जो स्पष्ट है, वह यह है कि हाग्वै, जकारिया और मलाकी, अंतिम तीन, निर्वासन के बाद हैं। यदि यह निर्वासन के बाद का मामला है तो इसे हाग्वै और जकर्याह के साथ क्यों नहीं रखा गया? लेकिन फिर, आदेश वैसा क्यों है? ऐसा प्रतीत होता है कि केवल अंतिम तीन में ही कालानुक्रमिक सिद्धांत है।

डेटिंग के लिए अन्य पैगम्बरों के समानांतर अंशों के तर्क का उपयोग किया जाता है। जो लोग इसका उपयोग करने का प्रयास करते हैं वे अमोस और कुछ अन्य भविष्यवक्ताओं में कुछ समानताएं ढूँढते हैं और फिर तर्क देते हैं कि जोएल प्राथमिक है, अन्य गौण हैं, लेकिन मुझे लगता है कि उस तर्क का उपयोग करना बेहद कठिन है। जैसा कि ड्राइवर कहते हैं, "कुछ भी अधिक कठिन नहीं है (विशेष रूप से अनुकूल परिस्थितियों को छोड़कर) कि केवल समानांतर मार्ग की तुलना से यह निर्धारित किया जा सके कि प्राथमिकता किस तरफ है।" इसलिए, मुझे नहीं लगता कि यह कोई मजबूत तर्क है।

निष्कर्ष: जोएल की तारीख तय करने का कोई निर्णायक आधार नहीं है जो हमें किसी निष्कर्ष पर पहुंचाता है; जोएल की तारीख तय करने का कोई निर्णायक आधार नहीं है। मुझे निर्वासन के बाद के समय में पुस्तक को रखने का कोई जरूरी कारण नहीं दिखता। ऐसा लगता है कि यह निर्वासन से पहले के समय में फिट बैठता है; मैं ऐसा सुझाव देता हूँ, लेकिन इसे निश्चित रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता। इसलिए मुझे लगता है कि हम इसे एक खुले प्रश्न के रूप में छोड़ देते हैं। लेकिन मैं पहले के समय का सुझाव देना चाहता हूँ, जो आश के शासनकाल के दौरान 835 ईसा पूर्व के आसपास था, न कि बाद में निर्वासन के बाद की अवधि के दौरान।

यह हमें बी, "पुस्तक की सामग्री" पर लाता है और हम अगली बार उसी से शुरुआत करेंगे।

कैरोलीन मेडिज़ द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल की भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 18

जोएल की संरचना और सामग्री

बी. जोएल की सामग्री

1. जोएल 1 का जोएल 2 से संबंध: फ्रीमैन

जब आप जोएल की सामग्री तक पहुंचते हैं तो एक महत्वपूर्ण प्रश्न जिसे आपको हल करना है वह अध्याय 1 और अध्याय 2 के बीच संबंध का प्रश्न है। होबार्ट फ्रीमैन के, *पुराने नियम के पैगंबरों का परिचय*, वह व्याख्या के आसपास केंद्रित पुस्तक के विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में बात करता है। पहले दो अध्यायों के संबंध के बारे में। वह यहां एब और सी के रूप में सूचीबद्ध तीन दृश्य देते हैं।

एक। सर्वनाशकारी व्याख्या ए. वह वही है जिसे वह अपनाता है और मुझे लगता है कि वह दृष्टिकोण अन्य विचारों की तुलना में पुस्तक में बेहतर फिट बैठता है। उन्होंने इसे "सर्वनाशकारी व्याख्या" का नाम दिया है। यदि आप इसे संक्षेप में समझें तो यह दृष्टिकोण अध्याय 1 को शाब्दिक और अध्याय 2 को आलंकारिक रूप में समझने की क्षमता देता है। जैसा कि मैंने यहां हैंडआउट में कहा है, इस तरह का दृष्टिकोण अध्याय 1 को वास्तविक टिड्डी प्लेग के शाब्दिक विवरण के रूप में लेता है जिसने हाल ही में भूमि को तबाह कर दिया था। फिर जोएल उस विवरण का उपयोग अध्याय 2 में सर्वनाशकारी कल्पना के लिए करता है जहां वह बाद के दिनों में यहूदा पर उसके दुश्मनों द्वारा भविष्य में होने वाले आक्रमण का वर्णन कर रहा है। इसलिए अध्याय 1 शाब्दिक होगा और अध्याय 2 एक आलंकारिक विस्तार होगा जिसमें एक युगांतकारी घटना का वर्णन करने के लिए टिड्डियों की कल्पना का उपयोग किया जाएगा।

बी। रूपक व्याख्या दूसरा दृश्य बी. दोनों अध्यायों को आलंकारिक रूप से लेता है। फ्रीमैन इसे "सर्वनाशकारी" दृष्टिकोण के विपरीत "एक रूपक" कहते हैं। यह दोनों अध्यायों को आलंकारिक रूप से लेता है और उनमें उनके भविष्य के इतिहास में दुश्मन के हमलों

की एक श्रृंखला का वर्णन देखता है। टिड्डियों के चार प्रकारों का उल्लेख 1:4 में किया गया है, जहाँ आप पढ़ते हैं, "टिड्डियों के झुंड ने जो कुछ छोड़ा है, उसे बड़ी टिड्डियों ने खा लिया है, बड़ी टिड्डियों ने जो कुछ छोड़ा है उसे युवा टिड्डियों ने खा लिया है, अन्य टिड्डियों ने खा लिया है।" इसे इज़राइल पर चार आक्रमणों के रूप में देखा जाता है। चार प्रकार की टिड्डियाँ असीरिया, बेबीलोन, ग्रीस और रोम का प्रतिनिधित्व करती हैं। अध्याय 2 अंत समय और सहस्राब्दी साम्राज्य की स्थापना का वर्णन है, लेकिन दोनों अध्याय आलंकारिक हैं।

सी। शाब्दिक दृश्य एक तीसरा दृश्य सी. दोनों अध्यायों को शाब्दिक रूप में लिया जाएगा और वह "शाब्दिक दृष्टिकोण" होगा। अध्याय 1 और अध्याय 2 दोनों ही गंभीर टिड्डियों की विपत्तियों का वर्णन करते हैं। अध्याय 2 में जो है वह अध्याय 1 से अधिक गंभीर है क्योंकि यह वह है जो भविष्य में प्रभु के दिन की शुरूआत करेगा।

इसलिए मुझे लगता है कि वे सहायक श्रेणियां हैं, दोनों आलंकारिक, दोनों शाब्दिक, या आलंकारिक और शाब्दिक का संयोजन। उत्तरार्द्ध फ्रीमैन के पदनाम "एपोकैलिप्टिक" में है, दोनों आलंकारिक "रूपक" है और दोनों शाब्दिक, वह कहते हैं, "शाब्दिक।" रिडरबोस दोनों को शाब्दिक रूप में देखता है। अध्याय 1 ग्रामीण इलाकों का विनाश, अध्याय 2 शहर में प्लेग का प्रवेश। लेकिन अध्याय 2 में उन्हें लगता है कि टिड्डियों की महामारी और प्रभु के दिन का मिश्रण है, इसलिए कुछ संदर्भ वर्तमान आपदा से परे एक महान भविष्य के फैसले की ओर इशारा करते हैं। दूसरे शब्दों में, रिडरबोस का दृष्टिकोण फ्रीमैन के सर्वनाशकारी और शाब्दिक दृष्टिकोण के बीच का मध्य होगा।

2. बैल का दृष्टिकोण अपने हैंडआउट में अगला पृष्ठ देखें। आप इस पर पहले ही बुलॉक पढ़ चुके हैं। मैंने वहां बताया कि बुलॉक जोएल की व्याख्या करने के तरीकों को अलग-अलग तरीके से वर्गीकृत करता है। वह इस प्रश्न के तीन उत्तर देता है कि क्या 1:1-2:17 में टिड्डियों को ऐतिहासिक माना जाना चाहिए। हम पुस्तक 1:1-2:17 को विभाजित करने के उस तरीके पर वापस आने जा रहे हैं। वह वास्तव में 1:1-2:17 को एक इकाई के रूप में

लेता है। वह अध्याय 1 और 2 के बीच कोई ब्रेक नहीं लेता है। वह ब्रेक को अध्याय 2 के बीच में रखता है। लेकिन वह इस सवाल के तीन जवाब देता है कि क्या टिड्डियों का इस्तेमाल शाब्दिक तरीके से किया जाना चाहिए या नहीं। 1. जोएल के जीवनकाल में हुई टिड्डियों की महामारी का वर्णन करने वाला ऐतिहासिक शाब्दिक शब्द है। 2. रूपक है- टिड्डियां बेबीलोन, फारस, ग्रीस और रोम पर फिर से आक्रमण करने वाली सेनाओं का एक रूपक हैं। तीसरा "सर्वनाशकारी" है। वह फ्रीमैन की तुलना में सर्वनाश का अलग ढंग से उपयोग करता है। बुलॉक के विचार में सर्वनाशकारी श्रेणियाँ, उनका कहना है कि यह युगांतशास्त्रीय है - स्थलीय आक्रमणकारी नहीं बल्कि अलौकिक आक्रमणकारी जो प्रभु के दिन की शुरुआत करते हैं। मुझे नहीं पता कि उसे वह दृश्य कहां से मिलता है। उनका कहना है कि इसे व्यापक रूप से मान्यता नहीं दी गई है और वह इस बात का दस्तावेजीकरण नहीं करते हैं कि कौन ऐसा विचार रखता है। मुझे यकीन नहीं है कि यह विचार किसका है। वह इसकी वकालत करने वाले किसी का भी हवाला नहीं देते। बस इसलिए ताकि आप बुलॉक और फ्रीमैन के इन लेबलों को भ्रमित न करें। मेरा मानना है कि फ्रीमैन की श्रेणियां बुलॉक की तुलना में अधिक उपयोगी हैं। तो वास्तव में पाठ को देखने से पहले यह एक प्रश्न है। आप अध्याय 1 और अध्याय 2 के बीच संबंध को कैसे देखते हैं?

3. जोएल की संरचना और प्रभु का दिन एक दूसरा प्रश्न है जो प्रारंभिक विचार के रूप में भी महत्वपूर्ण है और वह है पुस्तक के माध्यम से सामग्री के प्रवाह में कालानुक्रमिक क्रम। पुस्तक के विभिन्न खंडों में घटनाओं के अस्थायी संबंध क्या हैं ? इस बिंदु पर अस्पष्टता उन कारकों में से एक है जो पुस्तक की संरचना को समझना जटिल बनाती है और बदले में पुस्तक की व्याख्या को प्रभावित कर सकती है। बुलॉक सहित कई दुभाषियों ने पुस्तक को 2:17 पर विभाजित करके दो प्रमुख खंड बनाए हैं, 1:1-2:17 और 2:18 से अंत, 3:21। पुस्तक के पहले भाग को टिड्डियों की विपत्तियों और दैवीय न्याय पर विलाप के रूप में देखा जाता है। पुस्तक के दूसरे भाग को पश्चाताप के परिणामस्वरूप भाग्य में बदलाव से लेकर भविष्य के आशीर्वाद तक के वर्णन के रूप में देखा जाता है। बुलॉक और कुछ अन्य जो

पुस्तक की इस संरचना को समझते हैं, 2:17 और 2:18 के बीच एक प्रमुख विभाजन बिंदु देखते हैं। पुस्तक का दूसरा भाग 2:17 और 2:18 के बीच कल्पित पश्चाताप के परिणामस्वरूप भाग्य में बदलाव और भविष्य के आशीर्वाद का है। मेरे विचार में, इस तरह से पुस्तक की संरचना तैयार करने से पुस्तक की तीन अलग-अलग इकाइयों के बीच संबंध अस्पष्ट हो जाता है।

जहां तक संरचना का सवाल है तो मैं आपको एक वैकल्पिक सुझाव देता हूँ जो बुलॉक सुझा रहा है। मेरा विचार है कि पुस्तक की संरचना का विश्लेषण करते समय यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि 2:10 और 11 और 2:31 और 3:15 प्रभु के दिन के लिए एक समान संकेत देते हैं जिसे 2:1 में संदर्भित किया गया है। आ रहा। अब आइए उन तीन ग्रंथों पर नजर डालें। 2:10 और 11 कहता है, “उनके साम्हने पृथ्वी हिल जाती है, आकाश कांप उठता है, सूर्य और चन्द्रमा अन्धेरे हो जाते हैं, और तारे फिर चमकते नहीं। यहोवा अपनी सेना के प्रधान पर गरजता है; उसकी सेनाएँ संख्या से परे हैं, और जो लोग उसकी आज्ञा का पालन करते हैं वे शक्तिशाली हैं। यहोवा का दिन महान है; यह भयानक है। इसे कौन सहन कर सकता है?” आपके पास यहां प्रभु के दिन का संदर्भ है। प्रभु के दिन के आने के संबंध में, आपके पास ये ब्रह्मांडीय संकेत हैं: सूर्य और चंद्रमा अंधेरे हो गए हैं और तारे अब चमकते नहीं हैं, प्रभु का दिन महान है। वह 2:10 और 11 बजे हैं।

2:31 देखें, “प्रभु के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले सूर्य अंधकार और चंद्रमा रक्त हो जाएगा।” 2:31 में प्रभु का दिन लौकिक संकेतों के साथ आता है। योएल 3:14बी कहता है, “क्योंकि न्याय की तराई में यहोवा का दिन निकट है। सूर्य और चंद्रमा अंधकारमय हो जाएंगे, और तारे फिर चमकेंगे नहीं। यहोवा सिथ्योन से गरजेगा, और यरूशलेम से गरजेगा।” एक बार फिर यहोवा का दिन आता है, और सूर्य और चन्द्रमा अन्धकारमय हो जाते हैं। तो जोएल की पुस्तक में बिखरे हुए उन तीन संदर्भों में, ऐसा लगता है जैसे आपके पास प्रभु के उसी दिन का संदर्भ है। ये वही शब्द हैं।

अब मुझे ऐसा लगता है कि यह सुझाव देता है कि उन तीन स्थानों में उल्लिखित भगवान के दिन को ऐतिहासिक रूप से एक ही दिन समझा जाना चाहिए। यदि यह सत्य है

तो इसका मतलब है कि पुस्तक के तीन अलग-अलग खंडों में इस "दिन" के तीन समानांतर विवरण हैं। प्रभु के आने वाले दिन के इन तीन विवरणों को एक दूसरे के पूरक के रूप में देखा जा सकता है, जो एक ही विषय के तीन अलग-अलग पहलुओं पर जोर देते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि यह प्रश्न के मूल में है: पुस्तक की संरचना कैसी है?

3. वेन्नॉय की जोएल की संरचना

ए. योएल 1:1-20 टिड्डी प्लेग एल फिर 3 बजे आपकी रूपरेखा पर। पुस्तक दो खंडों में विभाजित है और वह विभाजन 2:17 और 18 पर नहीं है, बल्कि यह दो खंडों में विभाजित है रोमन अंक I, अध्याय 1:1-20ए है - एक समकालीन टिड्डी प्लेग का वर्णन। मैं इसे शाब्दिक टिड्डियों की महामारी के रूप में लेता हूँ जो जोएल के मंत्रालय के समय में हुई थी, और वह इसे प्रभु के फैसले के रूप में व्याख्या करता है और पश्चाताप का आह्वान करता है।

पुस्तक का दूसरा भाग 2:1 से शुरू होता है और अंत तक जाता है। पुस्तक के दूसरे खंड में आपको जो मिलता है वह प्रभु के आने वाले दिन के तीन विवरण हैं और ये तीन विवरण एक दूसरे के पूरक हैं। वे प्रभु के दिन के आगमन के विभिन्न पहलुओं को संबोधित करते हैं।

बी। योएल 2:1-27: लोकस इमेजरी का उपयोग करते हुए प्रभु का दिन , आपके पास प्रभु के दिन के तीन समानांतर विवरण हैं। 2:1-27 में प्रभु के दिन का वर्णन वर्तमान टिड्डियों और सूखे की कल्पना में किया गया है। दूसरे शब्दों में, जोएल ने अध्याय 1 की भाषा चुनी है जिसमें उसने शाब्दिक टिड्डियों की महामारी का वर्णन किया है और उसका उपयोग प्रभु के युगांतकारी दिन के बारे में बात करने के लिए किया है।

सी। योएल 2:28-31 पवित्र आत्मा और प्रभु का दिन 2:28-32 में यदि आप अपनी हिब्रू बाइबिल में देखेंगे तो पाएंगे कि यह एक अलग अध्याय है। मैसोरेटिक पाठ में यह अध्याय 3

है। दूसरे शब्दों में, हिब्रू में 2:28-32 को पिछले भाग 2:1-27 से स्पष्ट रूप से अलग रखा गया है। मैं 2:28-32 में आपके पास पवित्र आत्मा के आने का वादा है जो प्रभु के दिन से पहले आएगा। यह अधिनियम 2 की पुस्तक में उद्धृत वह प्रसिद्ध मार्ग है, "मैं अपनी आत्मा को सभी प्राणियों पर उंडेलूंगा" और यह कि सभी प्राणियों पर आत्मा का उंडेलना प्रभु के दिन से पहले होगा। तो यहाँ प्रभु के दिन के आगमन का दूसरा वर्णन है जो इसके एक अलग पहलू पर केंद्रित है।

डी। योएल 3:1-21 राष्ट्रों पर निर्णय और परमेश्वर के लोगों का उद्धार: प्रभु का दिन

फिर प्रभु के दिन के आने का तीसरा विवरण 3:1-21 है। मैसोरेटिक पाठ में यह एक अलग अध्याय भी है, यह अध्याय 4 है, जो प्रभु के दिन के आने के संबंध में राष्ट्रों पर फैसले और भगवान के लोगों के उद्धार की बात करता है।

इ। जोएल की संरचना का सारांश तो मुझे ऐसा लगता है कि जोएल की पुस्तक में संरचनात्मक रूप से, आपके पास अध्याय एक है: टिड्डी प्लेग का वर्णन। फिर अध्याय 2 के अंत तक प्रभु के दिन के आने के तीन समानांतर वर्णन हैं। आप 2:10 और 11, 2:31 और 3:15 की भाषा के कारण उस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं जो सभी एक ही भाषा में प्रभु के दिन के आने का वर्णन करते हैं। जब हम सामग्री में उतरेंगे तो हम संरचना पर वापस आएंगे और 2:17 और 18 को उन लोगों के साथ देखेंगे जो पुस्तक को 2:17 और 18 में दो खंडों में विभाजित करना चाहते हैं जो आने वाले दिन के तीन समानांतर विवरणों के इस विचार को अस्पष्ट करता है। भगवान।

4. सामग्री पर टिप्पणियाँ: a. जोएल 1:1-20 वर्तमान टिड्डी प्लेग फोर का विवरण सामग्री पर कुछ टिप्पणियाँ है। एक। 1:1-20 है। वह रूपरेखा में रोमन अंक I है, "वर्तमान टिड्डी प्लेग का विवरण।" अध्याय 1 में आप जो पाते हैं वह योएल के समय में टिड्डियों की महामारी का वर्णन है, लेकिन सिर्फ टिड्डियों की महामारी का नहीं। टिड्डी प्लेग को सूखे और

आग के साथ जोड़ दिया गया था। पद 12 को देखो, “बेल सूख गई है, और अंजीर का पेड़ सूख गया है; अनार, ताड़ और सेब के वृक्ष, मैदान के सब वृक्ष सूख गए हैं। निःसन्देह मानवजाति का आनन्द नष्ट हो गया है।” श्लोक 20 को देखें, “जंगली जानवर भी तेरे लिये हांफते हैं; जल की धाराएँ सूख गई हैं और खुली चरागाहें आग से भस्म हो गई हैं।” आयत 19 यह भी कहती है, “आग ने खुली चरागाह को भस्म कर दिया है, मैदान के सभी पेड़ आग की लपटों से जल गए हैं।” तो इस फैसले का वर्णन टिड्डी प्लेग का एक संयोजन है, हाँ, लेकिन सूखा और आग भी। सूखे के साथ अक्सर आग भी लग जाती है। इसका अनुभव करने के लिए आपको कैलिफ़ोर्निया में रहना होगा। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि 1:1-20 में जोएल एक वास्तविक टिड्डी प्लेग और सूखे का वर्णन कर रहा है, कुछ लोगों के विपरीत जो केवल प्रतीकवाद और रूपक देखते हैं। वह इसकी व्याख्या ईश्वर के फैसले के रूप में करते हैं और इस तरह यह पश्चाताप का आह्वान है और उस परिप्रेक्ष्य में यह प्रभु के दिन की अभिव्यक्ति है। श्लोक 15 में, “उस दिन के लिए अफ़सोस! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है।” एनआईवी का कहना है, “यह सर्वशक्तिमान की ओर से विनाश की तरह आएगा।” उसका अनुवाद भविष्य की बजाय वर्तमान में किया जा सकता है। “यह सर्वशक्तिमान से विनाश की तरह आता है।” यह टिड्डियों का प्रकोप दिन की अभिव्यक्ति है।

यह वह परिप्रेक्ष्य है कि यह निर्णय प्रभु के दिन की अभिव्यक्ति है जो जोएल को वर्तमान स्थिति से युगांत सिद्धांत की ओर बढ़ने में सक्षम बनाता है। परमेश्वर उन सब पर न्याय करेगा जो पश्चाताप नहीं करते और यहोवा का नाम नहीं लेते। तो मुझे ऐसा लगता है कि पहले अध्याय में यही चल रहा है।

टिड्डियों के लिए चार पद आइए कुछ छंदों पर नजर डालें। श्लोक 4 वह श्लोक है जिसमें चार अलग-अलग प्रकार की टिड्डियों का उल्लेख है, “टिड्डियों के झुंड ने जो कुछ छोड़ा, उसे बड़ी टिड्डियों ने खा लिया; बड़ी टिड्डियों ने जो कुछ बचा है उसे जवान टिड्डियों ने खा लिया है; युवा टिड्डियों ने जो कुछ छोड़ा, उसे अन्य टिड्डियों ने खा लिया।” टिड्डियों के लिए चार अलग-अलग हिब्रू शब्द। आप उससे क्या करते हैं? कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि संदर्भ टिड्डियों के जीवन के चरणों से है। इसके साथ समस्या यह है कि 2:25 में आपके पास

वही चार शब्द उपयोग किए गए हैं लेकिन उनका उपयोग एक अलग क्रम में किया गया है। 2:25 में, "मैं उन वर्षों का बदला तुम्हें चुकाऊंगा जिन्हें टिड्डियों ने खा लिया है - बड़ी टिड्डी और युवा टिड्डी, अन्य टिड्डियां और टिड्डी झुंड - मेरी बड़ी सेना जिसे मैंने तुम्हारे बीच भेजा था।" यदि यह विकास के चरण हैं तो आप सोचेंगे कि क्रम समान होगा। इसलिए मैं यह सोचने का इच्छुक नहीं हूँ कि यह विकास का चरण है।

दिलचस्प बात यह है कि हिब्रू में टिड्डियों के लिए नौ शब्द हैं। हिब्रू में टिड्डियों के लिए एक समृद्ध शब्दावली है। जहां तक मैं जानता हूँ अंग्रेजी में केवल एक शब्द है। इन हिब्रू शब्दों के इन भेदों के लिए अंग्रेजी में कोई समकक्ष नहीं है। और वास्तव में अंतर क्या है, मुझे यकीन नहीं है। लेकिन मुझे यहां के चार शब्दों में बेबीलोन, फारस, ग्रीस और रोम या असीरिया, बेबीलोन, ग्रीस और रोम को देखने के रूपक दृष्टिकोण का कोई आधार नहीं दिखता।

विनाश का वर्णन अब आइए श्लोक 5, 9 और 13 को देखें। श्लोक 5 कहता है, "हे शराबियों, उठो, और रोओ! हे सब दाखमधु पीनेवालों, हाय-हाय करो; नये दाखमधु के कारण विलाप करो, क्योंकि वह तुम्हारे होठों से छीन लिया गया है।" पद 9, "यहोवा के भवन में अन्नबलि और अर्घ देना बन्द कर दिया गया है।" पद 13, "हे याजकों, टाट बान्धो, और विलाप करो; तुम जो वेदी के साम्हने सेवा करते हो, विलाप करो। हे मेरे परमेश्वर के सेवा टहल करनेवालो, आओ, टाट ओढ़कर रात बिताओ; क्योंकि अन्नबलि और अर्घ तेरे परमेश्वर के भवन में रोक दिए गए हैं।" श्लोक 5, 9, और 13 हमें बताते हैं कि प्लेग इतना विनाशकारी था कि मंदिर के भोजन और पेय प्रसाद के लिए पर्याप्त वनस्पति नहीं बची थी। वहाँ कोई नया दाखमधु न था, भूमि उजाड़ थी।

नेशनल ज्योग्राफिक के दिसंबर 1915 अंक में फ़िलिस्तीन में आए इसी तरह के टिड्डियों के प्रकोप का वर्णन है। उस लेख के लेखक ने 1915 में टिड्डी प्लेग की तबाही में जो देखा उसका एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण है। मैं इसे पूरा नहीं पढ़ूंगा लेकिन समानताएं दिलचस्प हैं। टिड्डियों के उन झुंडों द्वारा वनस्पति को जितना नष्ट किया जा सकता है वह आश्चर्यजनक

है। तो मुझे लगता है कि जोएल उस तरह की प्लेग का वर्णन कर रहा है।

पश्चाताप का आह्वान श्लोक 13 और 14 में, उस फैसले के आलोक में, जोएल लोगों से पश्चाताप करने और ईश्वर को पुकारने का आह्वान करता है। पद 13, “हे याजकों, टाट बान्धो, और विलाप करो; तुम जो वेदी के साम्हने सेवा करते हो, विलाप करो। हे मेरे परमेश्वर के सेवा टहल करनेवालो, आओ, टाट ओढ़कर रात बिताओ; क्योंकि अन्नबलि और अर्घ तुम्हारे परमेश्वर के भवन में रोक दिए गए हैं। एक पवित्र व्रत घोषित करें; एक पवित्र सभा बुलाओ। पुरनियों को और उस देश के सब रहनेवालोंको अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में बुलाओ, और यहोवा की दोहाई दो। वह प्रभु के पास लौटने के लिए प्रार्थना और उपवास का आह्वान करता है। वह समझता है कि यह आपदा ईश्वर का कार्य है। ईश्वर इज़राइल के इतिहास में न केवल आशीर्वाद देने में बल्कि न्याय करने में भी कार्य करता है। यहां व्यवस्थाविवरण 28:38 और 42 में वाचा के श्रापों की प्राप्ति हुई थी। व्यवस्थाविवरण 28:38 पर वापस जाएं, “तुम खेत में बहुत बीज बोओगे, परन्तु उपज कम पाओगे, क्योंकि टिड्डियां उसे खा जाएंगी।” यह वाचा के अभिशापों में से एक है। जब आप प्रभु से दूर हो जाते हैं तो आप कुछ चीज़ों के घटित होने की उम्मीद कर सकते हैं। श्लोक 42, “टिड्डियाँ तुम्हारे सब वृक्षों और तुम्हारी भूमि की उपज पर अधिकार कर लेंगी।” तो जोएल उस वाचा अभिशाप का एहसास है।

जोएल में दिलचस्प बात - अध्याय 1 पद 3 पर वापस जाएँ, “इसे अपने बच्चों को बताएं, और अपने बच्चों को अपने बच्चों को, और उनके बच्चों को अगली पीढ़ी को बताएं।” दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के ये शक्तिशाली कार्य केवल मुक्ति और मोक्ष के कार्य नहीं हैं, जैसे कि निर्गमन फसह के समय जब इज़राइल को यह याद रखना था और पीढ़ी दर पीढ़ी बच्चों को बताना था। यहां आपको भगवान के फैसले को याद रखना है और इसे पीढ़ी दर पीढ़ी अपने बच्चों को बताना है।

श्लोक 15, जिस पर मैं पहले ही टिप्पणी कर चुका हूँ, कहता है, “हाय उस दिन के लिए! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है; यह सर्वशक्तिमान की ओर से विनाश के समान आएगा।” जोएल यहोवा के दिन को निकट देखता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह प्रभु के उस

दिन को देखता है जिसमें समसामयिक टिड्डियों का प्रकोप शामिल है या शायद उसके आने का संकेत है। इस तरह से देखा जाए तो यह एक अनंतिम ईश्वरीय निर्णय है जिसका उद्देश्य आने वाले महान दिन की ओर इशारा करना है। तो, मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय एक में यही चल रहा है।

योएल 2:1-3:21 3 यहोवा के दिन का वर्णन

हम पुस्तक के दूसरे खंड की ओर बढ़ते हैं, जो 2:1 से 3:21 तक है, जिसमें आपके पास प्रभु के दिन के आने के ये तीन समानांतर विवरण हैं - इस अनंतिम दिव्य के विपरीत प्रभु का युगांतकारी दिन अध्याय 1 में निर्णय।

योएल 2:1-27 टिड्डी कल्पना का उपयोग करते हुए प्रभु का दिन

और उन तीन विवरणों में से पहला 2:1-27 में है, जो छंद 28-32 के अपवाद के साथ अध्याय 2 का बड़ा हिस्सा है, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि यह हिब्रू बाइबिल में एक अलग अध्याय है। तो योएल 2:1-27 अध्याय 1 की वर्तमान टिड्डी विपत्ति की कल्पना में वर्णित प्रभु का दिन। यह अध्याय 1 और अध्याय 2 के संबंध का वह प्रश्न है जो सर्वनाशकारी व्याख्या के साथ फिट बैठता है जहां आप शाब्दिक से आलंकारिक की ओर बढ़ते हैं या अध्याय 2 में प्रतीकात्मक भाषा।

श्लोक 1-11. अध्याय 1 में टिड्डी प्लेग की कल्पना का वर्णन इस प्रकार किया गया है जो पहले ही घटित हो चुकी है। अध्याय 2 में किसी प्रक्रिया का वर्णन है। अध्याय 1 में क्रियाओं के पूर्ण काल को अधिकांश भाग में प्रतिस्थापित कर दिया गया है, विशेष रूप से 2:3-9 में अध्याय 2 में अपूर्ण क्रियाओं द्वारा। अध्याय 2 इस प्रकार किसी ऐसी चीज़ के बारे में बताता है जो या तो घटित होगी या घटित होने की प्रक्रिया में है। क्रिया के काल में परिवर्तन होता है। अध्याय 2 में टिड्डियाँ मानव आक्रमणकारियों का प्रतिनिधित्व करने वाले युगांतकारी प्रतीक बन गई हैं।

फ्रीमैन इस संबंध में श्लोक 20 में "उत्तर से आक्रमणकारी" अभिव्यक्ति की जांच

करता है। 2:20 में आपने पढ़ा, “मैं उत्तरी सेना को तुमसे बहुत दूर खदेड़ दूँगा, और उसे सूखी और बंजर भूमि में धकेल दूँगा, जिसके आगे के स्तम्भ पूर्वी समुद्र में और पीछे के स्तम्भ पश्चिमी समुद्र में चले जाएँगे। और उसकी दुर्गन्ध ऊपर उठेगी; इसकी गंध उठेगी।” फ्रीमैन की टिप्पणी, “‘उत्तर’ पुराने नियम में एक तकनीकी शब्द है जो अक्सर सर्वनाशकारी प्रकृति के अंशों में प्रकट होता है और ऐसे संदर्भों में हमेशा इज़राइल के दुश्मनों का प्रतीक होता है। इस संबंध में इसका उपयोग यह इंगित करने के लिए भी किया जाता है कि फिलिस्तीन पर विपत्ति और दुर्भाग्य किस दिशा से आते हैं। अश्शूर और बेबीलोन हिब्रू राष्ट्र के खिलाफ उत्तर से बाहर आए और पवित्रशास्त्र में न केवल इज़राइल के समकालीन शत्रु के रूप में दिखाई देते हैं, बल्कि उसके अंतिम समय के शत्रु के रूप में भी प्रकट होते हैं, जो उत्तर से बाहर आना था, यानी, युगांतकारी ‘उत्तरी’। ” और वहां कई संदर्भ हैं। उस युगान्तकारी उत्तरवासी का उल्लेख जकर्याह, यिर्मयाह, यहजेकेल, यशायाह और सपन्याह में किया गया है। मैं उन सभी सन्दर्भों को देखने में समय नहीं लगाऊंगा।

उत्तरी शत्रु

मैंने आपके उद्धरणों के पृष्ठ 37 पर एलन की एनआईसीओटी टिप्पणी से एक पैराग्राफ शामिल किया है क्योंकि मुझे लगता है कि वह इस भाषा और साहित्य के एक अन्य प्रसिद्ध टुकड़े के बीच एक दिलचस्प सादृश्य बनाता है। वह कहते हैं, “टिड्डियों को सामूहिक रूप से ‘नॉर्थरनर’ कहा जाता है। कीड़े आम तौर पर यहूदा पर दक्षिण या दक्षिण-पूर्व से हमला करते हैं, जो प्रचलित हवा से प्रभावित होते हैं, लेकिन उत्तर से आने के मामले ज्ञात हैं। 1915 में यरूशलेम में जो प्लेग आया था, “यह वही है जो नेशनल ज्योग्राफिक में था,” पूर्वोत्तर से आया था। संभवतः जोएल के समय में शुरुआत उत्तर से हुई; अन्य तीन दिशाओं में भौगोलिक विशेषताओं के आगामी संदर्भ इस अनुमान का समर्थन करते हैं। लेकिन जैसा कि 2:1-11 में टिड्डियों को मानसिक चश्मे से देखा गया था, इसलिए यहां वर्तमान शब्द का प्राकृतिक पर एक अलौकिक आयाम आरोपित है। पहले के भविष्यवक्ताओं ने ‘उत्तर के शत्रु’ का भयानक विवरण दिया था।” अब एलन, जोएल को देर से बताता है, इसलिए वह

उन अन्य भविष्यवक्ताओं के बारे में कह रहा है, जैसे कि यिर्मयाह, यहजेकेल और यशायाह, जिन्होंने पहले इस उत्तरी शत्रु के बारे में बात की थी। “पहले के भविष्यवक्ताओं ने ‘उत्तर के शत्रु’ का भयानक वर्णन किया था। इस वाक्यांश में टॉल्किन के मोर्डोर के गंभीर मेजबानों का स्वाद कुछ-कुछ है। यहजेकेल 38:15 में; 39:2 गोग की सर्वनाशकारी भीड़ सुदूर उत्तर से यहूदा को नष्ट करने के लिए आती है, लेकिन यहोवा के पलटवार से वह नष्ट हो जाती है। अब मुझे ऐसा लगता है कि जोएल ईजेकील 38-39 जैसी ही बात कर रहा है। “यहजेकेल के समय से पहले भी, यिर्मयाह ने इस विषय को अपना बना लिया था, और बार-बार इसका उपयोग बुराई की अलौकिक ताकतों का वर्णन करने के लिए किया था, जिन्हें यहोवा एक पापी यहूदा को दंडित करने के लिए अपने एजेंटों के रूप में नियुक्त करेगा।” मैं अगला पैराग्राफ नहीं पढ़ूंगा। लेकिन आपको इस उत्तरी सेना का संदर्भ श्लोक 20 में मिलता है जिसे प्रभु भगा देंगे।

टिड्डे की कल्पना में ईश्वर का न्याय मैंने अध्याय का पिछला भाग नहीं पढ़ा है। पाठ का स्वाद जानने के लिए मुझे इसके कुछ छंद पढ़ने दीजिए। आइए अध्याय 2 के पहले सात छंदों को देखें, “सिथ्योन में तुरही बजाओ; मेरी पवित्र पहाड़ी पर अलार्म बजाओ। देश के सब रहनेवाले कांप उठें, क्योंकि यहोवा का दिन आता है। यह बहुत करीब है—अंधेरे और उदासी का दिन, बादलों और अंधकार का दिन। जैसे भोर पहाड़ों पर फैलती है, एक बड़ी और शक्तिशाली सेना आती है, जैसी न तो पहले कभी थी और न ही आने वाले युग में कभी होगी। उनके पहिले आग भस्म करती है, उनके पीछे ज्वाला भड़कती है। उनके सामने भूमि अदन की बाटिका के समान है, उनके पीछे रेगिस्तान उजाड़ है—उनसे कुछ भी नहीं बचता।”

तो, यह टिड्डियों की कल्पना है। “वे घोड़ों के समान दिखते हैं, वे घुड़सवारों की तरह सरपट दौड़ते हैं। वे रथों के समान शोर के साथ पर्वतों की चोटियों पर उछलते हैं, जैसे खड़खड़ाती हुई आग खूंटी को भस्म कर देती है, जैसे युद्ध के लिए तैयार की गई एक शक्तिशाली सेना होती है। उनको देखते ही जाति जाति के लोग व्याकुल हो उठते हैं; हर

चेहरा पीला पड़ जाता है. वे योद्धाओं की तरह आक्रमण करते हैं; वे सैनिकों की तरह दीवारें लांघते हैं। वे सभी पंक्ति में आगे बढ़ते हैं, अपने मार्ग से नहीं हटते। वे एक-दूसरे से धक्का-मुक्की नहीं करते।" फिर पद 9, "वे नगर पर धावा बोलते हैं।" तो भूमि पर टिड्डियों के आने की कल्पना में इस विनाश की यह तस्वीर भगवान के फैसले की है।

योएल 2:12-17 पश्चाताप का आह्वान छंद 12-17 पश्चाताप का आह्वान है। श्लोक 12 कहता है, "प्रभु की यह वाणी है, 'अब भी,' उपवास, और रोते, और विलाप करते हुए, अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास लौट आओ।' अपना दिल फाड़ो, अपने कपड़े नहीं। अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ, क्योंकि वह दयालु और कृपालु है, क्रोध करने में धीमा और अति प्रेममय है, और विपत्ति डालने से प्रसन्न नहीं होता। कौन जानता है? वह फिरे, और दया करे, और तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये अन्नबलि और अर्घ, अर्थात् आशीष दे। सिय्योन में तुरही बजाओ, पवित्र उपवास की घोषणा करो, एक पवित्र सभा बुलाओ। लोगों को इकट्ठा करो, सभा को पवित्र करो, पुरनियों को इकट्ठा करो, बच्चों को, और दूध पिलानेवालों को इकट्ठा करो। दूल्हे को अपना कमरा और दुल्हन को अपना कमरा छोड़ देना चाहिए। जो याजक यहोवा के साम्हने सेवा टहल करते हैं वे मन्दिर के ओसारे और वेदी के बीच में रोएं। वे कहें, 'हे यहोवा, अपने लोगों को बचा ले। अपनी विरासत को अन्यजातियों के बीच अपमान और उपहास का कारण न बनाओ। उन्हें लोगों के बीच में क्यों कहना चाहिए, "उनका भगवान कहां है?"' इसलिए पश्चाताप के लिए बहुत कड़े शब्दों में आह्वान किया गया है, "अपने दिल फाड़ो, अपने कपड़े नहीं।"

योएल 2:18-27 प्रभु की प्रतिक्रिया श्लोक 18-27 प्रभु की प्रतिक्रिया का वर्णन करता है। श्लोक 18 में एक अनुवाद मुद्दा है। आपने देखा कि आपके हैंडआउट में मैंने पाँच अंग्रेजी भाषा संस्करणों के अनुवाद दिए हैं। राजा जेम्स कहते हैं, "प्रभु को ईर्ष्या होगी," यह भविष्य है। न्यू स्कोफ़्रील्ड, "तब प्रभु को ईर्ष्या हुई," अतीत। एनआईवी, "प्रभु को ईर्ष्या होगी," भविष्य। नया अमेरिकी मानक, "तब प्रभु को ईर्ष्या होगी।" नया संशोधित मानक संस्करण,

"तब प्रभु को ईर्ष्या हुई," वह अतीत है। अब यहाँ प्रश्न यह है कि क्या पद 18 आपको किसी ऐसी चीज़ के बारे में बता रहा है जो घटित होगी या जो पहले ही घटित हो चुकी है। मैं उन अनुवादों में कुछ जोड़ सकता हूँ। एनआरएसवी की तरह ही अंग्रेजी मानक संस्करण "यह आया"। नया जीवन भविष्य है "तब यहोवा अपनी प्रजा पर दया करेगा, और ईर्ष्या करके अपने देश की रक्षा करेगा।" तो 18 और "प्रभु की प्रतिक्रिया" का पालन करें।

मुझे लगता है कि यह कोई भविष्यवाणी नहीं है बल्कि जो कुछ हुआ उसका लेखा-जोखा है। यदि आप इसे इस तरह समझते हैं तो आप इसका अनुवाद अतीत के रूप में करते हैं। क्रियाओं का अनुवाद पूर्ण क्रिया के अर्थ में किया जाता है। ऐसे मामलों में श्लोक 17 और 18 के बीच एक विराम माना जाता है जिसमें कोई यह मानता है कि जोएल ने पश्चाताप का दिन बुलाया था। क्योंकि 17 पश्चाताप के लिए एक आह्वान था, धारणा यह है कि पश्चाताप की पेशकश कुछ ऐसी थी जिसे देखा गया था, और फिर 18 में और उसके बाद आपको प्रभु की प्रतिक्रिया मिलेगी। यह पहले से ही प्रकट पश्चाताप के परिणामस्वरूप अपने लोगों के साथ भगवान के रिश्ते में बदलाव का वर्णन है। यह तब पूरी पुस्तक में प्रमुख विभाजन बिंदु बन जाता है, जैसा कि बुलॉक और अन्य लोगों द्वारा व्याख्या की गई है।

मेरे विचार से, इसमें समस्या यह है कि संभवतः पश्चाताप के दिन का कोई उल्लेख नहीं है। इसकी मांग की गई है लेकिन इसके वास्तव में घटित होने का कोई विवरण नहीं है। और अनुच्छेद के शेष भाग में जो कुछ भी शामिल है, उसकी व्याख्या करना कठिन है क्योंकि यह पहले ही घटित हो चुका है, भले ही अध्याय केवल समकालीन टिड्डी प्लेग को संदर्भित करता हो। इससे मेरा तात्पर्य यह है कि, प्रभु की प्रतिक्रिया के बाद श्लोक 19 को देखें। पद 19 में यहोवा कहता है, मैं फिर तुझे जाति जाति के बीच में बदनाम न होने दूंगा। एनआईवी कहता है, "मैं तुम्हें फिर कभी राष्ट्रों के लिए तिरस्कार का पात्र नहीं बनाऊंगा।" श्लोक 20 कहता है, "मैं उत्तरी सेना को तुम्हारे पास से खदेड़ दूंगा, और उत्तर से आक्रमणकारी को हटा दूंगा।" श्लोक 25 कहता है, "मैं तुम्हें उन वर्षों का बदला दूंगा जो टिड्डियों ने खाये हैं।" लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात श्लोक 26बी और 27ए को देखें। 26बी कहता है, "मेरे लोग फिर कभी शर्मिंदा नहीं होंगे। और 27बी भी यही बात कहता है, "मेरे

लोग फिर कभी शर्मिदा नहीं होंगे।" यदि कोई यह समझता है कि जोएल टिड्डियों की महामारी और पश्चाताप के आह्वान का वर्णन कर रहा है जो छंद 17, और 18 और फिर 18 के बीच देखा गया था, तो यह प्रभु की प्रतिक्रिया है और आप इसे पिछले काल में अनुवादित करते हैं, "प्रभु को अपनी भूमि के लिए ईर्ष्या हुई थी" , उन्होंने अपने लोगों पर गहरी दया की," आप उस प्रतिक्रिया के शेष प्रवाह में यह बयान कैसे दे सकते हैं "मेरे लोग फिर कभी शर्मिदा नहीं होंगे"? जोएल के समय के बाद इजराइल को बार-बार शर्मसार होना पड़ा।

जोएल 2:18 और प्रोफेटिक परफेक्ट तो हमें पद 18 में अनुवाद के मुद्दे पर वापस लाता है। यदि आप हिब्रू पाठ को देखते हैं तो अपूर्ण के साथ लगातार एक *वाह है* / "और प्रभु" का आप सामान्य रूप से अनुवाद करेंगे कि "अपनी भूमि के लिए ईर्ष्यालु था।" वह *वाह* लगातार अपूर्ण काल को सामान्य रूप से पूर्ण क्रिया में फेंक देता है। और दूसरा वाक्यांश "और उसके लोगों पर दया करो" उसी रूप का उपयोग करता है, जो अपूर्ण के साथ लगातार होता है / हालाँकि, आप इस चर्चा में रिडरबोस को देखते हैं, उदाहरण के लिए, साथ ही साथ अन्य, यह तर्क देते हैं कि अपूर्ण के साथ लगातार *चलने वाला रूप क्रियाओं को भविष्य के रूप में अनुवाद करने की संभावना को बाहर नहीं करता है*। "परन्तु तब यहोवा को अपने देश के लिये जलन होगी।" एनआईवी इसका अनुवाद इसी प्रकार करता है। यदि आप व्याकरणों में देखें, तो *ए ग्रामर ऑफ बाइबिलिकल हिब्रू* में जौऑन, जिसे सर्वश्रेष्ठ हिब्रू व्याकरणों में से एक माना जाता है, पैराग्राफ 112एच में 'भविष्यवाणी पूर्ण' की चर्चा में कहा गया है, "भविष्यवाणी पूर्णता की यह धारणा इब्र एज्रा द्वारा विस्तारित है , " एक प्रारंभिक यहूदी विद्वान, "यहां तक कि योएल 2:18 के अनुसार यिकटोल के मामलों के लिए भी, उसकी टिप्पणी देखें। ' ' दूसरे शब्दों में, तर्क यह है कि आपके पास पूर्ण काल की पूर्ण कार्रवाई के लिए एक भविष्यसूचक परिपूर्ण है, जहां तक इसके विचार का संबंध है, इसे भविष्य माना जा सकता है। यह अपूर्ण के साथ लगातार समानता का सच है जो वास्तव में एक ही अवधारणा बनाता है / तो यहां आप एक व्याख्यात्मक मुद्दे पर आते हैं जो कड़ाई से या केवल हिब्रू क्रिया के रूप से निर्धारित नहीं होता है। जहां तक भविष्यसूचक परिपूर्णता

का सवाल है, आपको संदर्भ को देखना होगा और निर्णय लेना होगा। अब हम इसे ओबद्याह के साथ देखते हैं, "मैं तुम्हें राष्ट्रों के बीच छोटा बनाऊंगा," एदोम के बारे में बात करते हुए। क्या यह भविष्य के बारे में बात कर रहा है या "मैंने तुम्हें छोटा कर दिया है"? आपको उस संदर्भ में संघर्ष करना होगा। मौखिक रूप आपको किसी भी ओर जाने की अनुमति देगा। आप किसी *अपूर्ण* को भविष्यसूचक पूर्णता के रूप में ले सकते हैं। मुझे लगता है कि संभवतः ऐसा करना सबसे अच्छी बात है। यदि आप ऐसा करते हैं तो श्लोक 17 और 18 जोएल की पुस्तक में एक प्रमुख विभाजन बिंदु नहीं बनते हैं। फिर अध्याय 2 श्लोक 1 से श्लोक 27 तक चलता है।

हम यहां रुकेंगे और अगली बार इसे उठाएंगे और जोएल में थोड़ा और समय बिताएंगे, विशेष रूप से जोएल 2:28-32 पर, जहां आपको सभी प्राणियों पर आत्मा का उंडेला जाना और प्रेरितों के काम में उद्घरण मिलता है। फिर हम योना के बारे में अपनी चर्चा शुरू करेंगे।

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा लिखित और संपादित
केटी एल्स द्वारा संपादित
टेड हिल्डेबैट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 19

जोएल 2-3

1. जोएल 2:17-18

पिछली बार जोएल 2:18 और उसके बाद को कैसे समझा जाए इस पर चर्चा हुई थी। यदि आपको बुलॉक के बारे में पढ़ने से याद है तो वह श्लोक 17 और 18 के बीच पूरी पुस्तक का प्राथमिक संरचनात्मक विभाजन बिंदु बनाता है। श्लोक 18 में प्रश्न यह है कि इस कथन को कैसे समझा जाए, "तब प्रभु" या तो "ईर्ष्या कर रहे थे" या "ईर्ष्या करेंगे" अपने देश के लिये ईर्ष्या करो, और अपनी प्रजा पर दया करो। बुलॉक इसे "ईर्ष्या कर रहा था" के रूप में समझता है और यह एक कथित पश्चाताप की प्रतिक्रिया थी जो पिछले भाग में पश्चाताप के आह्वान के बाद हुई थी। तो 17 और 18 के बीच उस स्थान में वह कहेगा कि पश्चाताप हुआ और अब आपके पास उस पश्चाताप पर प्रभु की प्रतिक्रिया का रिकॉर्ड है।

यदि आप उस सुझाव को याद करते हैं जो मैंने पिछली बार हमारी चर्चा के अंत में दिया था, तो मुझे लगता है कि 18 भविष्य है और यह ऐतिहासिक रूप से पहले से ही किए गए कथित पश्चाताप की प्रतिक्रिया नहीं है। मुझे लगता है कि यह पूरा अध्याय युगांतशास्त्रीय है। आपके पास टिड्डियों की कल्पना है जिनका उपयोग उन घोटकों को चित्रित करने के लिए किया जा रहा है जो प्रभु के दिन से पहले इस्राएल के विरुद्ध आएंगे। यदि आप 18 को ऐसी चीज़ के रूप में लेते हैं जो अतीत है और पहले ही हो चुकी है, तो आप 26बी और 27बी के साथ क्या करेंगे जहां यह कहता है, "मेरे लोग फिर कभी शर्मिंदा नहीं होंगे"? निश्चित रूप से जोएल के समय से ही यहूदी लोगों को शर्मिंदा किया गया है। यह मानना कठिन है कि यह कुछ ऐसा है जो पहले ही घटित हो चुका है।

2. जोएल 2:23बी वर्षा या धार्मिकता का शिक्षक

अब मैं कहता हूँ कि जैसा कि प्रस्तावना में है जहां हम पद 23बी से लेते हैं, जो कहता है, "खुश रहो, हे सिष्योन् के लोगों, अपने परमेश्वर यहोवा में आनन्द मनाओ, क्योंकि उसने तुम्हें धार्मिकता से शरद ऋतु की बारिश दी है। उसने तुम्हारे लिये पहले की भाँति पतझड़

और बसन्त ऋतु दोनों में प्रचुर वर्षा भेजी।" एनआईवी में जो मैं पढ़ रहा हूं, जहां यह कहा गया है, "उसने आपको धार्मिकता में शरद ऋतु की बारिश दी है" एक टेक्स्ट नोट K है जो कहता है, "या धार्मिकता के लिए शिक्षक।" तो प्रश्न यह बनता है कि यह श्लोक किस बारे में बात कर रहा है ? प्रभु द्वारा "धार्मिकता में पतझड़ की बारिश" या "धार्मिकता के लिए शिक्षक" देने के बीच अनुवाद संबंधी मुद्दा क्या है? अर्थ में काफी महत्वपूर्ण अंतर है।

अपने हैंडआउट को देखें जहां मैंने "उसने तुम्हें दिया है" के लिए हिब्रू भाषा दी है, यही वह वाक्यांश है जो मुद्दा है। *मोरेह का मतलब* क्या है ? उसके अंतर्गत एनआईवीए और एनआईवीबी है। एनआईवीए कहता है, "क्योंकि उसने तुम्हें धार्मिकता के लिए एक शिक्षक दिया है।" एनआईवीबी कहता है, "उसने आपको धार्मिकता से शरद ऋतु की बारिश दी है।" जहां तक एनआईवीए और एनआईवीबी की बात है तो यह एनआईवी की अनुवाद प्रक्रिया और प्रकाशन के इतिहास का हिस्सा है। जब एनआईवी का शुरू में अनुवाद किया गया था तो इसे इस प्रकार पढ़ा गया था, "उसने आपको धार्मिकता के लिए एक शिक्षक दिया है।" कई वर्षों में एनआईवी पाठ में समय-समय पर संशोधन होते रहे।

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी किसी चर्च में किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बैठे हुए देखा है जो एनआईवी पढ़ रहा है और जिसे आप देख रहे हैं वह जो आप सुन रहे हैं उससे अलग है। इससे भ्रम पैदा हुआ क्योंकि अनुवाद समिति विशेष अनुवादों के बारे में उठाए गए मुद्दों को एकत्र करेगी और फिर एनआईवी की प्रत्येक अतिरिक्त छपाई के साथ पाठ को संशोधित करेगी। इसलिए उनके पास कई अलग-अलग एनआईवी प्रिंटिंग थीं जो एक-दूसरे से भिन्न थीं। एक निश्चित समय पर उन्होंने इसे रोक दिया। अभी हाल ही में उन्होंने अनुवादों के बारे में उठाए जा रहे कई सवालों को एकत्र किया और एनआईवी पाठ का गहन पुनरीक्षण किया, और वह लगभग एक साल पहले टीएनआईवी में प्रकाशित हुआ था जो आज का नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण है। लेकिन किसी भी मामले में वह एनआईवीए और बी है।

किंग जेम्स ने कहा है, "उसने आपको पहले वाली बारिश मध्यम रूप से दी है।" इसके लिए "बारिश" की समझ की आवश्यकता होती है। नये अमेरिकी मानक में "बारिश"

है। कील और डेलिज़ की टिप्पणी में कहा गया है, "धार्मिकता के लिए शिक्षक।" सेप्टुआजेंट में "दो गुना" है, और वह कहां से आता है, मुझे पूरा यकीन नहीं है। शायद *मोरेह* शब्द का गलत अर्थ निकाला गया था ? मैं आपको कुछ और अनुवाद देता हूँ। अंग्रेजी मानक संस्करण में "आपके समर्थन के लिए शुरुआती बारिश" है। न्यू लिविंग ट्रांसलेशन में "बारिश" भी है। इसलिए हाल के अधिकांश अनुवाद "धार्मिकता के लिए शिक्षक" के बजाय "वर्षा" हैं।

वाक्यांश में महत्वपूर्ण शब्द, *मोरेह*, कुछ प्रासंगिक समस्याओं के कारण कुछ लोगों द्वारा "शिक्षक" के रूप में और दूसरों द्वारा "पूर्व" या "शुरुआती बारिश" के रूप में लिया जाता है। यह थोड़ा जटिल हो जाता है लेकिन इसके साथ मेरा अनुसरण करें। अधिकांश रब्बी और प्रारंभिक टिप्पणीकार इसका अनुवाद "शिक्षक" के रूप में करेंगे। केल्विन और कई आधुनिक टिप्पणीकारों सहित अन्य लोग इसे "प्रारंभिक बारिश" के रूप में लेते हैं। *योरेह* का एक अर्थ जो आपको इस पाठ में मिलता है, *मोरेह* का अर्थ है "शिक्षक", जो विवाद में है। *मोरेह* का अर्थ है शिक्षक. *योरेह* निम्नलिखित शब्द का अर्थ है "जल्दी बारिश।" यह वह वर्षा है जो बीज के अंकुरण के लिए बुआई के समय अक्टूबर के आखिरी से दिसंबर के पहले तक फिलिस्तीन में होती है; लेकिन यह व्याख्या के लिए खुला है। फिर *गेशेम* है, जो उस हिब्रू पाठ की दूसरी पंक्ति में होता है। उसने आपके लिए उंडेल दिया है, *गेशेम* "बारिश", और फिर उस हिब्रू पाठ के अंतिम वाक्यांश में आपको *मोरेह मिलता* है "बाद की बारिश", उस अंतिम वाक्यांश में ऐसा लगता है कि *मोरेह* एक गलत उपयोग है, शायद डिटोग्राफी के कारण, एक प्रतिलिपि त्रुटि क्योंकि अंतिम वाक्यांश में पहले की तरह "शुरुआती और बाद वाली बारिश" लिखा है।

चौंकाने वाली बात यह है कि *मोरेह*, जो इस कविता में दो बार आता है, निर्विवाद रूप से कविता के अंतिम खंड में "जल्दी बारिश" के अर्थ में उपयोग किया जाता है। आप शायद ही इसके साथ कुछ और कर सकें. पुराने नियम में हर दूसरे उदाहरण में, शुरुआती बारिश योर नहीं है, अंग्रेजी में कुछ को छोड़कर जहां पाठ्य संबंधी समस्याएं हैं, लेकिन यह एक अलग मुद्दा है।

डिटोग्राफी: योरेह के स्थान पर मोरेह लिखा गया है तो, क्या हो रहा है? मुझे ऐसा लगता है कि कविता के अंतिम वाक्यांश में *मोरेह नकल करने वाली त्रुटि का एक उदाहरण है जिसे डिटोग्राफी कहा जाता है*। श्लोक में पहले *मोरेह* आने के कारण लेखक ने *योध* के स्थान पर *मेम* लिखा। आपकी आंखों के लिए भ्रमित करना बहुत आसान है, आप इसे देखें और देखें कि *मोरेह* और *योरेह* बहुत समान हैं। आपने वहां *योध* के स्थान पर *मेम* को नीचे रख दिया क्योंकि श्लोक में पहले

मोरे था।

मसीहाई भविष्यवाणी? सी एफ कुमरान

पाठ की पहली पंक्ति में *मोरेह* के बाद निम्नलिखित शब्द, *सदकाह*, का अर्थ है "उचित समय पर उचित माप में", यदि आप इसका अनुवाद शिक्षक के बजाय बारिश के रूप में करने जा रहे हैं। यह *सदकाह* है; क्योंकि इसका उपयोग धार्मिकता के नैतिक अर्थ में किया जाता है, भौतिक अर्थ में नहीं। *सदकाह* का तात्पर्य बारिश से कैसे हो सकता है? हालाँकि, यह एक शिक्षक को संदर्भित कर सकता है। "शिक्षक" की समझ एक पुरानी यहूदी व्याख्या है और यह वल्लोट और राशी में पाई जाती है। मुझे ऐसा लगता है कि इसे उसी तरह समझने का अच्छा मामला है जिस तरह इसे सदियों से समझा जाता रहा है; और वह "धार्मिकता का शिक्षक" है। यदि "धार्मिकता के लिए शिक्षक" को स्वीकार कर लिया जाता है तो हमारे यहां जो कुछ है उसे संभवतः एक मसीहाई भविष्यवाणी के रूप में लिया जाना सबसे अच्छा है। यदि यह अध्याय संपूर्ण भविष्य का है और यह अंत समय, प्रभु के दिन के बारे में बात करता है, तो वहां धार्मिकता का शिक्षक होगा। हालाँकि कुछ लोग इसे जोएल के संदर्भ के रूप में देखते हैं, लेकिन इस बात पर विवाद है कि जोएल अपने बारे में बात कर रहे हैं, और इस संदर्भ में यह बहुत अधिक संभावना नहीं है कि वह खुद को संदर्भित करने के लिए उस परिभाषा का उपयोग करेंगे। कील इसे सभी पैगम्बरों को मसीह में आदर्श मानकर देखता है; या जैसे कुमरान में, कोई विशेष नेता। आपको याद होगा कि कुमरान में मृत सागर स्कॉल समुदाय में धार्मिकता के एक शिक्षक थे। उन्होंने अपने नेता को "धार्मिकता का शिक्षक" कहा। उन्हें वह कहाँ से मिला? उन्होंने इसे इस पाठ से प्राप्त किया,

पुराने नियम में एकमात्र जगह जहां आपके पास यह वाक्यांश है।

पायने इसे स्वयं जोएल के संदर्भ के रूप में देखती है पायने इसे जोएल के संदर्भ के रूप में देखती है। उनका विचार यह मानता है कि जोएल यहां उस चीज़ के बारे में बात कर रहा है जो पहले ही आ चुकी है। सियोन के पुत्रों को आनन्दित होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें जोएल, शिक्षक दिया है जो उन्हें धार्मिकता की शिक्षा देता है जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर ने अब वर्षा भेजी है। लेकिन, जैसा कि मैंने कहा, मुझे इसकी बहुत अधिक संभावना नहीं लगती कि जोएल खुद को धार्मिकता का शिक्षक करार देगा और उसका आगमन खुशी का कारण होगा।

इसके अलावा, पायने के विचार को केवल तभी स्वीकार किया जा सकता है जब आप जोएल 2 की व्याख्या के लिए उसके व्यापक सामान्य दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं। वह समग्र रूप से जोएल 2 के साथ क्या करता है, वह कहता है कि 2:1-11 उस समय एक आसन्न समकालीन स्थानीय प्लेग है। जोएल का दूसरे शब्दों में, वह इसे सर्वनाशकारी या प्रतीकात्मक नहीं मानता। यह एक आसन्न समसामयिक टिड्डी प्लेग है। 2:19-26 को वह हमलावर टिड्डियों से एक समसामयिक मुक्ति के रूप में देखता है, और निस्संदेह, श्लोक 23 उसी के मध्य में है। इसलिए जब 23 कहता है, "वह धार्मिकता के लिए शिक्षक देता है" तो यह मसीहा या कुमरान में संप्रदाय का नेता नहीं है, बल्कि प्रतीत होता है कि भविष्यवक्ता जोएल स्वयं और अपने स्वयं के उपदेश का जिक्र कर रहा है।

खैर, यदि यह सब उनके समय में पूरा हो गया तो वह 26बी के साथ क्या करेंगे? 26बी कहता है, "मेरे लोग फिर कभी लज्जित नहीं होंगे।" पायने का कहना है कि 26बी और 27 भविष्य की मसीहाई शिक्षा हैं। दूसरे शब्दों में, 26ए और 26बी के बीच एक समय अंतराल था। वह जोएल के समय से अंत समय तक 26 आगे बढ़ गया। यही वह प्रश्न है जिसके बारे में हमने समय के परिप्रेक्ष्य से संबंधित बात की है, और ऐसे स्पष्ट उदाहरण हैं जहां आप यह कहने के लिए लगभग मजबूर हैं कि समय का अंतराल है। मुझे लगता है कि एक व्याख्यात्मक सिद्धांत के रूप में यह संभव है, लेकिन क्या यहां ऐसा करने का कोई

कारण है? मुझे ऐसा लगता है कि पाठ का प्रवाह काफी स्वाभाविक है। तो मुझे लगता है, पूरा अध्याय भविष्य की ओर देख रहा है। एक अतिरिक्त विचार यह है कि कुमरान के निवासियों ने स्पष्ट रूप से "शिक्षक" शब्द की व्याख्या की क्योंकि उनके नेता को धार्मिकता के शिक्षक के रूप में जाना जाता था। यदि जोएल की शिक्षा में नहीं तो यह उपाधि कहां से आई? इसलिए मैं 2:23 को "धार्मिकता के शिक्षक" के रूप में लेने के लिए इच्छुक हूं, न कि "शरद ऋतु की बारिश और धार्मिकता" के लिए; और अध्याय 2 देखें, जैसा कि मैंने कहा है, उन चीजों के वर्णन के रूप में जो प्रभु के दिन के आने से पहले या उसके संबंध में घटित होंगी।

वन्नॉय का विश्लेषण: अनुबंध मार्ग, शिक्षक और वर्षा कनेक्शन अब मैं उन टिप्पणियों में कुछ अन्य लोगों को जोड़ना चाहता हूं जो अनुबंध के मार्ग पर चलने और बारिश के आशीर्वाद के बीच संबंध के बारे में उस हैंडआउट पर नहीं हैं। मुझे लगता है कि इस श्लोक 2:23 में, इस *मोरेह/योरेह के साथ*, आपके पास शब्दों के खेल का कम से कम कुछ तत्व और अवधारणाओं का एक संबंध है जो पुराने नियम के पहले के अनुच्छेदों में निहित हैं। यदि आप निर्गमन 24:12 पर जाते हैं, तो आप वहां पढ़ते हैं, "यहोवा ने मूसा से कहा, 'पहाड़ पर मेरे पास आओ और यहां रहो और मैं तुम्हें पत्थर की तख्तियां अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञाओं के साथ दूंगा' " और वे अंतिम दो शब्द, "उनके निर्देश के लिए ।" वह होफल क्रिया रूप है। यह वही मूल है जिससे *मोरेह* और *योरेह* आते हैं। इसलिये, "मैं तुम्हें पत्थर की पटियाएं दूंगा, और जो व्यवस्था और आज्ञाएं मैं ने उनको सिखाने के लिये लिखी हैं।" *योरा का एक होफलरूप* ।

लैव्यव्यवस्था 26:3-5 की ओर मुड़ें। वहाँ तुम पढ़ते हो, " यदि तुम मेरी विधियों पर चलो, और मेरी आज्ञाओं के मानने में चौकसी करो, तो मैं तुम्हारे लिये समय समय पर मेंह बरसाऊंगा, और भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने फल देंगे; तुम्हारी दाँवनी अंगूर की कटाई तक जारी रहेगी और अंगूर की कटाई रोपण तक जारी रहेगी और तुम अपनी इच्छानुसार सारा भोजन खाओगे और अपनी भूमि में सुरक्षित रहोगे।" अतः इस

पाठ में वर्षा का वर्णन किया गया है। बारिश हिब्रू शब्द *गेशेम* है; यह वह दूसरा शब्द है जिसका प्रयोग परिच्छेद के अंत में किया गया है। जब इस्राएली टोरा, निर्देशों का पालन करते हैं तो बारिश होती है।

1 राजा 8:35-36 की ओर मुड़ें। यह मंदिर के समर्पण के अवसर पर सुलैमान की प्रार्थना है, और उस प्रार्थना में वह कहता है, "जब आकाश बन्द हो जाता है और वर्षा नहीं होती, क्योंकि तेरे लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप किया है, और जब वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करते हैं और अपने नाम का अंगीकार करो, और अपने पाप से फिरो, क्योंकि तू ने उनको दुःख दिया है, तब स्वर्ग में से सुन, अपने दासों अर्थात् अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा करो। फिर ध्यान दें कि आगे क्या है, "उन्हें जीने का सही तरीका सिखाएं और बारिश कराएं।" "सिखाओ" *योरैह* फिर से है, "उन्हें जीने का सही तरीका सिखाओ और बारिश भेजो।" शिक्षा देने, सही रास्ते पर चलने और बारिश देने के बीच इस संबंध को देखें। "उस भूमि पर वर्षा करो जिसे तुमने अपने लोगों को विरासत में दिया है।"

यशायाह 30:20 और उसके बाद पर जाएँ। यशायाह कहता है, "यद्यपि यहोवा तुम्हें विपत्ति की रोटी और क्लेश का जल देता है, परन्तु तुम्हारे शिक्षक, अर्थात्, "फिर कभी छिपे न रहेंगे। तुम उन्हें अपनी आँखों से देखोगे।" आप हिब्रू पाठ में देखें और "वे" आपके शिक्षक हैं, शिक्षक को दोहराया जाता है, *मोरैह*। "चाहे आप दाहिनी ओर मुड़ें या बाईं ओर, आपके कान आपके पीछे से एक आवाज़ सुनेंगे, यह रास्ता है, इसमें चलो," टोरा के रास्ते पर चलें। "तब तू चान्दी से मढ़ी हुई अपनी मूरतों को, और सोने से मढ़ी हुई अपनी मूरतों को अशुद्ध करेगा, तू उन्हें मासिक धर्म के कपड़े की नाई फेंक देगा, और उन से कहेगा, कि पद 23 में क्या लिखा है? "वह तुम्हारे लिए बारिश भी भेजेगा।"

तो, आपको कई अनुच्छेद मिलेंगे जहां अनुबंध, शिक्षकों और बारिश के रास्ते पर चलने के बीच संबंध है। ताकि जोएल 2:23 की भाषा कुछ ऐसी न हो जो पुराने नियम के पहले के अनुच्छेदों में अभूतपूर्व हो। मुझे ऐसा लगता है कि यह कम से कम उन सामान्य तर्कों के प्रति कुछ हद तक प्रतिक्रिया प्रदान करता है जिनके अनुसार 23बी के पहले भाग का अनुवाद करने का कोई मतलब नहीं है, "उसने आपको धार्मिकता के लिए एक शिक्षक

दिया है।" यह दावा किया जाता है कि *मोरेह को* वहां "शिक्षक" के रूप में अनुवाद करने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि बाकी कविता बारिश के बारे में बात कर रही है। देखिये अंतिम भाग है, "उसने तुम्हारे लिये पहले की भाँति प्रचुर वर्षा, शरद् और बसन्त ऋतु की वर्षा भेजी।" सिर्फ इसलिए कि वे अंतिम पंक्तियाँ बारिश के बारे में बात कर रही हैं, इससे पिछली पंक्ति में किसी शिक्षक के बारे में बात करना अनुचित नहीं हो जाता। पुराने नियम में प्रचुर मात्रा में पिछला संदर्भ है जो शिक्षक और बारिश तथा वाचा के मार्ग पर चलने को जोड़ता है।

तो, मुझे ऐसा लगता है कि एक अच्छा मामला बनाया जा सकता है कि भगवान एक भविष्यवक्ता या एक शिक्षक देगा जो आपको सही रास्ते पर चलना सिखाएगा और इससे बारिश का अस्थायी आशीर्वाद मिलेगा। तो यह कविता बिल्कुल सही अर्थ देती है और यह समान भाषा और शब्दों के संयोजन के पिछले उपयोगों के अनुरूप है।

3. जोएल 2:28-32 और अधिनियम 2:14एफएफ से इसका संबंध - विभिन्न दृष्टिकोण

आइए संख्या 2, जोएल 2:28-32 पर चलते हैं। जोएल की पुस्तक की रूपरेखा है जिसका हम अनुसरण कर रहे हैं। रोमन अंक I, जो अध्याय 1 है, "समकालीन टिड्डी प्लेग का विवरण।" फिर पुस्तक के खंड 2 2:1 से 3:21 तक, कम से कम मेरे विचार में, विभिन्न पहलुओं पर जोर देते हुए "प्रभु के आने वाले दिन के तीन विवरण" शामिल हैं। हमने बस एक को देखा। उसके अंतर्गत 2:1-27 है, जो प्रभु के दिन का पहला विवरण है।" बी। 2:28-32, "प्रभु के दिन के आने का दूसरा विवरण, और यहाँ पवित्र आत्मा के आने का वादा प्रभु के दिन से पहले होगा। तो चलिए उठाते हैं और वहां से आगे बढ़ते हैं।

होबार्ट फ्रीमैन के *पुराने नियम के पैगंबरों के परिचय* में, उन्होंने जोएल 2:28-31 की भविष्यवाणी की पूर्ति की 5 अलग-अलग व्याख्याओं को सूचीबद्ध किया है, जो हिब्रू पाठ में जोएल का अध्याय 3 है। सवाल यह है कि क्या प्रेरितों के काम 2:14-24 में जोएल की पवित्र आत्मा के उंडेले जाने की भविष्यवाणी पित्तेकुस्त के दिन पूरी हुई थी? यदि था तो किस दृष्टि से पूरा हुआ? अब हमें शायद प्रेरितों के काम 2 की ओर मुड़ना चाहिए। प्रेरितों के काम

2:14 में आप पढ़ते हैं, "पतरस उन ग्यारहों के साथ खड़ा हुआ और उसने ऊँची आवाज़ में भीड़ को संबोधित किया, 'हे यहूदी भाइयों और तुम सब जो यरूशलेम में रहते हो, मैं तुम्हें यह समझाता हूँ।" . मैं जो कहता हूँ उसे ध्यान से सुनो. ये लोग नशे में नहीं हैं जैसा आप सोचते हैं, अभी सुबह के नौ ही बजे हैं। नहीं, यह वही है जो भविष्यवक्ता योएल ने कहा था," फिर वह योएल 2:28 से उद्धृत करता है और कहता है, "अंत के दिनों में भगवान ने कहा, 'मैं लोगों पर अपनी आत्मा उण्डेलूंगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे," इत्यादि। मुझे लगता है कि 2:16 एक बहुत मजबूत कथन है जब पीटर कहता है, "यह वही है जो भविष्यवक्ता जोएल ने कहा था।"

लेकिन जब आप इन पांच दृष्टिकोणों को देखें तो इसे ध्यान में रखें। वहाँ एक "पेंटेकोस्ट पर समाप्ति" दृश्य है। रिडरबोस ने माना कि जोएल की भविष्यवाणी की पूर्ति को जोएल के समय की कुछ घटनाओं के साथ-साथ पेंटेकोस्ट पर भी लागू किया जाना चाहिए, जिस समय भविष्यवाणी समाप्त हुई थी। केइल के अनुसार, कई यहूदी व्याख्याकारों ने भविष्यवाणी में जोएल के समय की किसी घटना का संदर्भ देखा, जिसकी पूर्ति अंतिम समय में समाप्त हो रही थी।

बी। "पेंटेकोस्ट पर पूर्ति" मसीहा युग की एक भविष्यवाणी है जब परमेश्वर की आत्मा सभी प्राणियों पर उंडेली जाएगी, और सभी को सुसमाचार पेश किया जाएगा। भविष्यवाणी की पूर्ति प्रेरितों के काम 2:17 में पाई जाती है, जब पिन्तेकुस्त पर पवित्र आत्मा उंडेला गया था।

सी। "एक गैर-पूर्ति या युगांतशास्त्रीय दृष्टिकोण।" "जब पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा आया तो यह जोएल की भविष्यवाणी की पूर्ति में नहीं था। यह भविष्यवाणी कभी पूरी नहीं हुई है, न ही यह वर्तमान युग में पूरी होगी, जिसमें चर्च का गठन किया जा रहा है। यह गैबेलिन एक प्रकार का क्लासिक युगीन दृष्टिकोण व्यक्त कर रहा है। "यह पूरा होने के बाद प्रभु अपने सांसारिक लोगों [इज़राइल] के साथ अपना रिश्ता शुरू करेंगे; जब वह अपने दिन में प्रकट होगा तब वे इस महान भविष्यवाणी की पूर्ति का अनुभव करेंगे। तो वह वास्तव में कह रहा है कि आपके पास दो लोग हैं, इज़राइल और चर्च, और यह इज़राइल से संबंधित

है। वह पूरा नहीं हुआ। चर्च वह रहस्य या कोष्ठक है जिसके बारे में पुराना नियम कुछ भी नहीं जानता है।

डी। " विशिष्ट पूर्ति दृष्टिकोण" जोएल की भविष्यवाणी को पेंटेकोस्ट में "गंभीरता से" पूरा होने के रूप में देखता है, लेकिन सहस्राब्दी तक पूरी तरह से साकार नहीं हुआ। यह जैमीसन, फॉसेट और ब्राउन कमेंटरी में बताया गया है। यह दोहरा अर्थ है, पेंटेकोस्ट पर पूरा हुआ लेकिन युगान्तिक रूप से अंतिम पूर्ति के साथ पूरा किया जाना है। पेंटेकोस्ट कहते हैं, "पीटर उनके सामने के अनुभव को जोएल की भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में उद्धृत नहीं कर रहा है, बल्कि इसे सहस्राब्दी युग में इसकी पूर्ति के सादृश्य के रूप में उद्धृत कर रहा है।"

और फिर ई. "एक सतत पूर्ति का दृश्य," जोएल की भविष्यवाणी पेंटेकोस्ट से लेकर युगांतिक समय तक निरंतर पूर्ण होगी। तो ये हैं वो पांच विकल्प। इसे लेकर लोग अलग-अलग दिशाओं में चले गये हैं.

योएल 2:28 तो आइए भविष्यवाणी पर नजर डालें। यदि आप योएल में 2:28 पर जाते हैं तो आप पढ़ते हैं, "और उसके बाद मैं सभी लोगों पर अपनी आत्मा उण्डेलूँगा। तेरे बेटे-बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तेरे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, तेरे जवान दर्शन देखेंगे। उन दिनों में मैं अपने सेवकों, पुरुषों और स्त्रियों, दोनों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा। मैं आकाश और सारी पृथ्वी पर आश्चर्यकर्म, अर्थात् लोह, आग, और धूँ का गुबार दिखाऊँगा। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन से पहिले सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चन्द्रमा लोह हो जाएगा। और जो कोई यहोवा का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा; क्योंकि यहोवा के कहने के अनुसार सिथ्योन पर्वत पर और यरूशलेम में उन बचे हुएों को भी, जिन्हें यहोवा बुलाएगा, छुटकारा मिलेगा।"

"बाद में," और/या "अंतिम दिनों में" तो आइए इसे थोड़ा और करीब से देखें। इसकी शुरुआत उन शब्दों से होती है जिनका अनुवाद एनआईवी "और उसके बाद" करता है।

सेप्टुआजेंट का अनुवाद है कि "इन चीजों के बाद।" प्रेरितों 2:17 में पीटर के उद्धरण में, वह "बाद वाले" को दूसरे के साथ बदल देता है, मैं जो कहूंगा वह एक अधिक सटीक समय पदनाम है। उस सामान्य "बाद में" के बजाय वह कहते हैं, "अंतिम दिनों में।" यदि आप अधिनियम 2:17 को देखें, "'अंतिम दिनों में,' भगवान कहते हैं, 'मैं उन पर अपनी आत्मा उँडेलूँगा।" इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि पीटर ने व्याख्यात्मक रूप से "बाद में" को अधिक सटीक समय से बदल दिया है पदनाम "अंतिम दिनों में।" यह वह अर्थ है जिसमें वाक्यांश को समझा जाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि इसे जोएल 2 संदर्भ में इसके पहले की घटना के सीधे अनुक्रमिक संदर्भ के साथ नहीं लिया जाना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, जब आप 2:28 पर वापस जाते हैं और यह कहता है, "और उसके बाद" उसके आने के बाद, यह श्लोक 27 में वर्णित के बाद की बात नहीं कर रहा है। जोएल 2:27 कहता है, "तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं अंदर हूँ हे इस्राएल, मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, और कोई दूसरा नहीं, मेरी प्रजा फिर कभी लज्जित न होगी। फिर आप यहां श्लोक 28 में एक नया खंड शुरू कर रहे हैं। वह समय पदनाम अंतिम दिनों के बारे में बात कर रहा है, इसमें जोएल 2 संदर्भ में इससे पहले क्या हुआ इसका अनुक्रमिक संदर्भ नहीं है। याद रखें कि हिब्रू पाठ में जोएल 2:28 से शुरू होने वाला एक अलग अध्याय है। हालाँकि, निश्चित रूप से, वह मूल पाठ में नहीं था, लेकिन समझा जाता था कि वहाँ बहुत पीछे जाकर एक विराम हुआ था। नए नियम के उद्धरण से ऐसा प्रतीत होता है कि "बाद में" का उपयोग जोएल 2:28 में भगवान द्वारा अपने लोगों के साथ व्यवहार में एक नई अवधि का संकेत देने के अर्थ में किया गया है। "और उसके बाद" यह नया दौर है जिसमें मैं अपने लोगों के लिए कुछ करूँगा, यही दृष्टि में है। "अंतिम दिनों" को मसीह के पहले आगमन के साथ शुरू होने के रूप में समझा जाता है और फिर दूसरे आगमन और उससे संबंधित घटनाओं के साथ समाप्त होगा।

मुझे ऐसा लगता है कि अगर उसने मेरे द्वारा वहाँ सूचीबद्ध किए गए कुछ ग्रंथों को लिखा है, तो यह एक बहुत ही सामान्य तरीका है जिसमें नए नियम में "अंतिम दिनों" और आगमन के बीच के समय का उपयोग किया जाता है। यह परिचयात्मक समय पदनाम है

और "बाद में" को उस अर्थ में समझना सबसे अच्छा है जैसा कि पीटर ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा, "अंतिम दिनों में," भगवान के अपने लोगों के साथ व्यवहार करने की यह नई अवधि और आगमन के बीच का समय, "मैं डालूंगा" सभी लोगों पर अपना आत्मा प्रकट करो।"

आत्मा से बाहर निकलना

उस वाक्यांश "मैं अपनी आत्मा सभी लोगों पर उंडेलूंगा" को थोड़ा और करीब से देखने की जरूरत है। पुराने नियम में आत्मा तक पहुँचने की पूर्णतः कमी नहीं थी; पुराने नियम के काल में पवित्र आत्मा निश्चित रूप से सक्रिय था। लेकिन अब ईश्वरीय गतिविधि के इस नए दौर में आत्मा को सभी प्राणियों पर उंडेला जाना है। कुछ नया होने वाला है।

पुराने नियम की अवधि में पवित्र आत्मा का उल्लेख कुछ चुनिंदा व्यक्तियों के लिए धर्मतंत्र में विशेष कार्यों या कार्यों को सक्षम करने के संबंध में किया गया है। यदि आप पवित्र आत्मा के सन्दर्भों को देखें, तो आपको इसी प्रकार के सन्दर्भ मिलेंगे। उदाहरण के लिए, आत्मा उन कारीगरों पर आया जिन्होंने तम्बू का निर्माण किया, निर्गमन 31:3, और उन्हें अपना कलात्मक कार्य करने में सक्षम बनाया। पवित्र आत्मा अनेक न्यायाधीशों पर आता है, न्यायाधीश 6:34 और 11:29; उन्हें इसराइल को उनके उत्पीड़कों से बचाने में सक्षम बनाना। 1 शमूएल 16:13-14 में पवित्र आत्मा शाऊल और दाऊद पर तब आता है जब वे राजा बन रहे थे ताकि उन्हें धर्मतंत्र में उन कार्यों के लिए तैयार किया जा सके जो उन्हें दिए गए थे। पवित्र आत्मा भविष्यवक्ताओं पर आता है ताकि उन्हें परमेश्वर के वचन बोलने में सक्षम बनाया जा सके, 2 शमूएल 20:32-38। ऐसे मामलों में, आत्मा इन व्यक्तियों को योग्य बनाने और उन्हें धर्मतंत्र में उनके विशेष कार्य के लिए समर्पित करने के लिए आई।

नए काल में, जिसके बारे में जोएल बोलते हैं, आत्मा सभी प्राणियों पर आएगी, यह एक सामान्य शब्द है (*बसर*: मांस), लेकिन इसका तात्पर्य यह है कि आत्मा का कार्य लोगों के कुछ नेताओं तक ही सीमित नहीं होगा, और, यदि प्रत्यक्ष रूप से निश्चित रूप से निहितार्थ से नहीं, यह उपहार इस्राएल के लोगों से परे, सभी प्राणियों तक फैलता है; यह आवश्यक

रूप से इज़राइल तक ही सीमित नहीं है।

अब ऐसा कहने के बाद, इसे यह समझने की आवश्यकता नहीं है कि पुराने नियम के समय में पवित्र आत्मा ने परमेश्वर के लोगों के उत्थान और आध्यात्मिक विकास को प्रभावित करने के लिए कार्य नहीं किया था, भले ही पुराने नियम में आत्मा के उस प्रकार के कार्य का कोई स्पष्ट संदर्भ नहीं है।

पुराने नियम में पवित्र आत्मा

लियोन वुड, *द होली स्पिरिट इन द ओल्ड टेस्टामेंट* नामक कार्य में, पवित्र आत्मा और पवित्र आत्मा के कार्य के कई पुराने नियम के संदर्भों पर चर्चा करते हैं। पुराने नियम के काल में पवित्र आत्मा के कार्य पर बहुत अधिक साहित्य उपलब्ध नहीं है। मुझे लगता है कि लियोन वुड की वह छोटी सी किताब उस पर उतनी ही अच्छी चर्चा है जितनी आपको मिलेगी। दुर्भाग्य से यह प्रिंट से बाहर है—हो सकता है कि आपने इसे कहीं देखा हो, लेकिन यह पुराने नियम में पवित्र आत्मा की एक बहुत ही उपयोगी चर्चा है। उनका निष्कर्ष यह है कि सिर्फ इसलिए कि पुराने नियम में किसी व्यक्ति में आध्यात्मिक नवीनीकरण को प्रभावित करने में आत्मा के कार्य का कोई संदर्भ नहीं है, यह निष्कर्ष निकालने का पर्याप्त कारण नहीं है कि आत्मा इस बिंदु पर सक्रिय नहीं थी। इब्राहीम और डेविड और अन्य लोग विश्वास के पुरुषों के उदाहरण हैं। क्या उन्होंने परमेश्वर की आत्मा के अलावा अपने स्वयं के प्रयासों से ऐसा हासिल किया? क्या उनके पास कुछ संसाधन थे जो कुछ नए नियम के विश्वासियों के पास नहीं हैं? पुराने नियम के संतों के जीवन में आत्मा कार्य कर रही थी इसका प्रमाण उनके जीवन जीने के तरीके में देखा जा सकता है। यदि उनके जीवन ने आत्मा के फल दिखाए जो नए नियम में परिभाषित हैं, तो आत्मा उनमें कार्य कर रही होगी। कोई जीवन आत्मा के फल को कैसे प्रदर्शित कर सकता है यदि आत्मा इसे उत्पन्न करने के लिए व्यक्ति में कार्य नहीं कर रही है?

आत्मा के कार्य पर नए नियम की शिक्षा के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल

सकते हैं कि पुराने नियम के संतों को वैसे ही पुनर्जीवित किया गया था जैसे नए नियम के संत हैं। अब यह निश्चित रूप से एक कटौती है लेकिन मुझे यह एक वैध धार्मिक कटौती लगती है। पुराना नियम पुनर्जनन पर चर्चा क्यों नहीं करता? वुड कहते हैं, "इसका उत्तर केवल यही हो सकता है कि ईश्वर ने इस रहस्योद्घाटन के लिए नए नियम के समय तक प्रतीक्षा करना उचित समझा।" तो मूलतः ऐसा लगता है कि यह एक वैध निष्कर्ष है।

इब्राहीम कुयपर का हवाला देते हुए, जिन्होंने पवित्र आत्मा के कार्य पर एक खंड भी लिखा था, वुड कहते हैं, "विश्वास है कि इस्राएलियों को बचाया गया था। इसलिए उन्हें बचाने वाला अनुग्रह प्राप्त हुआ होगा, एक तार्किक निष्कर्ष, और चूँकि पवित्र आत्मा के आंतरिक कार्य के बिना बचाने वाले अनुग्रह का सवाल ही नहीं उठता, इससे पता चलता है कि वह इब्राहीम के साथ-साथ हम में भी विश्वास का कार्यकर्ता था। मुझे लगता है कि इस तरह से मुद्दे का सार निकलता है।

ओटी और एनटी में आत्मा के कार्य का अंतर [लकड़ी]

लेकिन यदि ऐसा है, तो पुराने नियम के समय में और अंतिम दिनों की नई अवधि में पवित्र आत्मा के कार्य के बीच क्या अंतर है? पवित्र आत्मा पुराने नियम के संतों के जीवन को पुनर्जीवित करने, पवित्र करने का कार्य कर रहा था—जोएल की यह भविष्यवाणी किस बारे में बात कर रही है? मसीह के आगमन के बीच के अंतिम दिनों में मैं सभी प्राणियों पर अपनी आत्मा उँडेलने जा रहा हूँ। क्या फर्क पड़ता है?

वुड बताते हैं कि नए नियम में आत्मा के कार्य के साथ कई शब्द आम तौर पर जुड़े हुए हैं, उनमें शामिल हैं: पुनर्जनन, वास, सीलिंग, भरना, सशक्त बनाना और बपतिस्मा। वुड का तर्क है, और मुझे लगता है कि उन्होंने अपनी पुस्तक में यह काफी अच्छी तरह से किया है, कि पुनर्जनन, निवास, सीलिंग, भरना और सशक्तिकरण सभी दोनों व्यवस्थाओं में पाए जाते हैं। यह केवल आत्मा का बपतिस्मा है जो नए नियम में नया है - यही उनकी थीसिस है। यह आत्मा के कार्य का यह पहलू है जो पित्तेकुस्त में शुरू हुआ। अब मैं वुड से उद्धृत करता हूँ, "इसका कारण यह है कि बपतिस्मा का संबंध चर्च से है, और पेंटेकोस्ट तक चर्च

एक अलग जीव के रूप में शुरू नहीं हुआ था। वास्तव में, यह पवित्र आत्मा द्वारा विश्वासियों का बपतिस्मा था जिसने चर्च का उद्घाटन किया...। इसकी शुरुआत तब हुई जब विश्वासियों को इसे बनाने के लिए बपतिस्मा दिया गया। यह तब हुआ जब पिनतेकुस्त अधिनियम 2:1-12 के दिन यरूशलेम में इकट्ठे हुए विश्वासियों पर आत्मा उतरा।

1 कुरिन्थियों 12:13-14 में आत्मा का बपतिस्मा आत्मा द्वारा बपतिस्मा का सत्य 1 कुरिन्थियों 12:13-14 में दिया गया है। यदि आप प्रश्न पूछते हैं, "आत्मा द्वारा बपतिस्मा क्या है?" 1 कुरिन्थियों 12:13 इसे परिभाषित करते हुए कहता है, "क्योंकि हम सब ने एक ही आत्मा के द्वारा एक शरीर होने के लिए बपतिस्मा लिया है, चाहे हम यहूदी हों, चाहे अन्यजाति, चाहे दास हों, चाहे स्वतंत्र; और सब को एक ही आत्मा पिलाया गया है।" तो, वुड टिप्पणी करते हैं, "आत्मा का बपतिस्मा वह कार्य है जो ईसाइयों को चर्च संबंधों के एक सामान्य बंधन में जोड़ता है।" यदि आप इसके सन्दर्भ में 1 कुरिन्थियों 12:13 पर जाएँ, तो सन्दर्भ में एक अंश है जहाँ पॉल मसीह के शरीर की एकता के बारे में बोल रहा है। हम एक शरीर हैं, और आत्मा द्वारा बपतिस्मा मसीह का शरीर होने की भावना और नस्लीय, जातीय और भाषाई बाधाओं के पार विश्वासियों के बीच मौजूद एकता की भावना लाता है। अभी यह एक शरीर है; मसीह में एकता का एक आध्यात्मिक शरीर। बपतिस्मा यही करता है। बपतिस्मा वह कार्य है जो ईसाइयों को चर्च संबंधों के सामान्य बंधन में एक साथ जोड़ता है। यह उन्हें एकजुट करता है, उन्हें जैविक एकता प्रदान करता है। यह उन्हें आपसी प्रेम की भावना प्रदान करता है, और उनके सामने एक सामान्य उद्देश्य रखता है। यह इस एकीकृत बपतिस्मा के कारण है कि ईसाई, जहां भी वे मिलते हैं, तत्काल निकटता और मित्रता महसूस करते हैं। वे एक समूह हैं, एक भव्य उद्यम का हिस्सा हैं..."

“ बपतिस्मा का क्षण पुनर्जनन के क्षण के समान है; वास्तव में, यह उस क्षण के समान है जब निवास और सीलिंग शुरू होती है... पेंटेकोस्ट में बपतिस्मा की स्थापना का कारण - जो कि चर्च के उद्घाटन का कारण बताने का एक और तरीका है - यह था कि इसके प्रसार की आवश्यकता थी सुसमाचार संदेश. ईसा मसीह अब जीवित और मर चुके थे

और मुक्ति की खुशखबरी एक खोई हुई दुनिया में ले जाने के लिए तैयार थी। पुराने नियम के दिनों में, परमेश्वर ने बड़े पैमाने पर इज़राइल में अपने वचन को अलग कर दिया था, जब तक कि मसीह के कार्य में मनुष्य के उद्धार का प्रावधान नहीं किया जा सका। अब जब यह हो गया, तो पृथक्करण की कोई आवश्यकता नहीं रही। पूरे विश्व को इस अद्भुत प्रावधान के बारे में सुनना चाहिए। अब एक राष्ट्र के संदर्भ में कोई विशेष लोग नहीं होने चाहिए, बल्कि एक सार्वभौमिक लोग होने चाहिए, जिनके बीच कोई बाधा या 'विभाजन की मध्य दीवार' न हो। इस कारण इज़राइल राष्ट्र से भिन्न आधार पर स्थापित एक नये संगठन की मांग की गई। यह जीव चर्च था। जीव को एकता, एकता की भावना की आवश्यकता थी, ताकि वह खुद को एक सामान्य समूह के रूप में पहचान और प्रस्तुत कर सके। इसकी आपूर्ति शुरू में पेंटेकोस्ट में विश्वासियों के सामूहिक बपतिस्मा द्वारा की गई थी, और उनके उत्थान के समय व्यक्तियों के निरंतर बपतिस्मा द्वारा प्रदान की जा रही है।

अब वुड कहते हैं, "ध्यान देने वाली आखिरी बात यह है कि बपतिस्मा में आस्तिक के लिए सशक्तिकरण का एक निश्चित पहलू शामिल होता है... सुसमाचार उद्घोषणा के लिए इस शक्ति का वादा मसीह ने ल्यूक 24:49 में पहले ही कर दिया था, 'जब तक तुम ऊपर से शक्ति प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक यहीं यरूशलेम शहर में रहो।' यीशु ने स्वर्ग में अपने आरोहण से ठीक पहले प्रेरितों के काम 1:8 में फिर से यह वादा किया, 'परन्तु पवित्र आत्मा तुम पर आने के बाद तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में मेरे गवाह होगे, और पृथ्वी के अंतिम भाग तक।' तो आप देख सकते हैं कि वुड जो सुझाव दे रहा है वह यह है कि सभी प्राणियों पर परमेश्वर की आत्मा का उंडेला जाना कुछ ऐसा है जो प्रभु के दिन से पहले, अंतिम दिनों में घटित होगा, और इसमें यह बपतिस्मा शामिल है सुसमाचार की घोषणा के लिए आत्मा और सशक्तिकरण द्वारा। यही नया है, यही पुराने नियम काल से भिन्न है। यह उस अंतर से जुड़ा है जो अब ईश्वर के लोगों के संगठन में एक राष्ट्रीय निकाय से आध्यात्मिक निकाय में संक्रमण में शुरू होता है, जो जातीय और राष्ट्रीय सीमाओं को पार करता है।

वुड की चर्चा निस्संदेह इज़राइल और चर्च का प्रश्न उठाती है। ऐसे लोग हैं जिन्होंने,

मुझे लगता है, चर्च और इज़राइल के बीच बहुत अधिक असंतोष व्यक्त किया है। यह विचार कि यह पेंटेकोस्ट पर पूरा नहीं हो रहा था, बल्कि इज़राइल में भविष्य के समय में पूरा होना है, यह महान कोष्ठक वह जगह है जहाँ चरम सीमाएँ तैयार होती हैं। यह एक व्यवस्थागत दृष्टिकोण है जो दो लोगों, दो नियति और मोक्ष के दो तरीकों की निरंतरता नहीं देखता है; संक्षेप में, पूर्ण असंततता। दूसरों ने इज़राइल और चर्च के बीच बहुत कम अंतर किया है। दूसरे शब्दों में, कुछ लोग कहेंगे कि चर्च पुराने नियम में है।

मुझे लगता है कि ईश्वर की प्रजा एक है लेकिन संगठन का सिद्धांत अलग है। पुराने टेस्टामेंट में यह राष्ट्रीय है, नए टेस्टामेंट में यह अति-राष्ट्रीय है, जहां इस राष्ट्रीय और जातीय संगठन की तुलना में इसके आध्यात्मिक गुण हैं। इसलिए दूसरों ने बहुत कम भेद किया है; उन्हें संगठन के विभिन्न सिद्धांतों और अपने लोगों के साथ ईश्वर के व्यवहार की नई अर्थव्यवस्था की पर्याप्त मान्यता के बिना समान किया जाता है, जिसका उद्घाटन पेंटेकोस्ट में ईश्वर द्वारा अपनी आत्मा को उंडेले जाने के साथ हुआ है। बाइबिल का परिप्रेक्ष्य ईश्वर के एक व्यक्ति का है, फिर भी संगठन के दो अलग-अलग रूप हैं। विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा मुक्ति के एक मार्ग में निरंतरता है। मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है। मैं नहीं सोचता कि पुराने नियम में लोगों को कार्यों के द्वारा बचाया गया था, बल्कि नये नियम में अनुग्रह के द्वारा बचाया गया था। यह बहुत अधिक असंततता है। साथ ही, एक राष्ट्रीय से एक अति-राष्ट्रीय आध्यात्मिक निकाय में परिवर्तन में कुछ हद तक निरंतरता भी है। तो यह निरंतरता और असंततता को उचित परिप्रेक्ष्य में रखने की बात है, और ऐसा अक्सर नहीं किया जाता है।

योएल 2:28ए और प्रेरितों के काम में आत्मा के कार्य पर लौटें

अब आइए अपने पाठ पर वापस जाएँ। योएल 2:28ए कहता है, "मैं अपना आत्मा सब लोगों पर उण्डेलूंगा" और फिर कहता है, "तेरे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वानी करेंगे, तेरे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, तेरे जवान दर्शन देखेंगे। उन दिनों में मैं अपने दासों, पुरुषों और स्त्रियों, दोनों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा। हम श्लोक 28 और 29 को कैसे समझते हैं? यहां अर्थ यह

प्रतीत होता है कि आत्मा को भगवान के लोगों को उनकी उम्र, लिंग, स्थिति या जीवन में स्थिति की परवाह किए बिना स्पष्ट तरीकों से दिया जाएगा, यहां तक कि दास भी आत्मा के फल के प्राप्तकर्ता होंगे। वह सभी मांस और सभी प्रकार के लोगों को आत्मा दिया जाएगा।

अभिव्यक्तियों के महत्व की व्याख्या करते समय, "भविष्यवाणी करें," "सपने देखें," "दर्शन देखें", केल्विन के सुझाव का पालन करना काफी उचित लगता है जब वह कहता है कि जोएल यहां आम तौर पर ज्ञात पुराने नियम की अवधारणाओं के संदर्भ में बोलता है। पवित्र आत्मा का कार्य. दूसरे शब्दों में, वह उस भाषा का उपयोग कर रहा है जिसे जोएल के समय में पवित्र आत्मा के कार्य करने के तरीके के बारे में समझा जाता था। उनकी पूर्ति के संबंध में केवल इन विशिष्ट कार्यों तक ही सीमित के रूप में उनकी कठोर व्याख्या नहीं की जानी चाहिए। यह भी नहीं माना जाना चाहिए कि भविष्यवाणी केवल बेटों और बेटियों तक ही सीमित है क्योंकि यह कहता है "तुम्हारे बेटे और बेटियां भविष्यवाणी करेंगे।" केवल बेटे-बेटियाँ ही भविष्यवाणी करेंगे? या कि "सपने देखना" बूढ़ों तक ही सीमित रहेगा। इस प्रयोग को, जैसा कि केइल सुझाव देते हैं, सर्वोत्तम रूप से "बयानबाजी वैयक्तिकरण" के रूप में लिया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, यहां जो कहा जा रहा है वह यह है कि पवित्र आत्मा का विविध कार्य नए युग में जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यक्तियों को स्पष्ट रूप से दिया जाएगा, जिसके बारे में जोएल बात करते हैं। पवित्र आत्मा के सभी विविध कार्य समाज के हर उम्र और हर कार्य के लोगों पर आएंगे। यीशु ने सुसमाचार के विभिन्न नए नियम ग्रंथों में वादा किया था कि आत्मा आएगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि शिष्य इस वादे के साकार होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रेरितों के काम 1:4-7 में पुनरुत्थान के बाद यीशु ने शिष्यों से कहा कि वे यरूशलेम न छोड़ें बल्कि "उस उपहार की प्रतीक्षा करें जिसका वादा मेरे पिता ने किया था, जिसके बारे में तुम मुझे बोलते हुए सुन चुके हो।" वहां अधिनियम 1 को देखें, कुछ दिलचस्प घटित हुआ। आप श्लोक 4 में पढ़ते हैं, वह कहता है, "यरूशलेम को मत छोड़ो, परन्तु उस उपहार की प्रतीक्षा करो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, जिसके विषय में तुम ने मुझे सुना है। क्योंकि यहून्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु थोड़े ही दिनों में तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जाएगा।" क्या प्रतिक्रिया है? श्लोक 6 को देखें, "तब

जब वे इकट्ठे हुए, तो उन्होंने पूछा, 'हे प्रभु, क्या आप इस समय इस्राएल को राज्य लौटा देंगे?' उसने उनसे कहा, 'पिता ने अपने अधिकार से जो समय या तारीखें ठहराई हैं, उन्हें जानना तुम्हारा काम नहीं है। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और तुम यरूशलेम में, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'

यीशु ने कहा, "यरूशलेम को मत छोड़ो, परन्तु उस उपहार की प्रतीक्षा करो जिसका वादा मेरे पिता ने किया है, जिसके विषय में तुम मुझे बोलते हुए सुन चुके हो।" शिष्यों की प्रतिक्रिया के बारे में दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने यीशु से पूछा, "क्या आप इस समय इसराइल को राज्य बहाल करने जा रहे हैं?" यह स्पष्ट है कि किसी कारण से शिष्यों ने आत्मा के आगमन को राज्य के आगमन के साथ जोड़ा। मुझे ऐसा लगता है कि उनकी प्रतिक्रिया को समझने का कोई अन्य तरीका नहीं है। यीशु कहते हैं, "आत्मा के उस वादे की प्रतीक्षा करो जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था।" आत्मा का राज्य के आगमन से क्या लेना-देना है? वे आत्मा के आगमन को राज्य के आगमन से क्यों जोड़ेंगे? सबसे संभावित स्पष्टीकरण यह है कि वे आत्मा के आने और प्रभु के दिन के आने के बीच जोएल ने जो संबंध बनाया था, उसे अच्छी तरह से जानते थे, क्योंकि आप इस मार्ग में 2:28 और उसके बाद देखते हैं, यह परमेश्वर की आत्मा का प्रवाह है। श्लोक 28 सीधे श्लोक 31 में प्रवाहित होता है जब "प्रभु के महान और भयानक दिन के आने से पहले सूर्य अंधकार में और चंद्रमा रक्त में बदल जाएगा।" आत्मा का उंडेला जाना प्रभु के दिन के आने से पहले होगा। उन्होंने दोनों को जोड़ा। दोनों अंतिम दिनों के एक ही युग के हैं।

हालाँकि, यीशु की प्रतिक्रिया एक विशिष्ट प्रतिबद्धता से बचती है कि इज़राइल राज्य की बहाली कब होगी। 28 और 29 की पूर्ति को पेंटेकोस्ट से शुरू होने और अंतिम दिनों की अवधि तक जारी रखने के रूप में समझना सबसे अच्छा लगता है। कम से कम मेरा तो यही विचार है। पतरस स्पष्ट रूप से कहता है कि पिनतेकुस्त के दिन यरूशलेम में जो घटनाएँ घटीं, वे वही थीं जो भविष्यवक्ता योएल ने कही थीं। निरंतर पूर्ति की धारणा को आंशिक पूर्ति या विशिष्ट पूर्ति के दृष्टिकोण से अलग किया जाना चाहिए। भविष्यवाणी पिनतेकुस्त पर पूरी

हुई और अंतिम दिनों की पूरी अवधि में पूरी होती रहेगी। अंतिम दिनों का समय अज्ञात है। समय का अंतराल कितना है? यह स्पष्ट है, पिनतेकुस्त से लेकर अब तक, कुछ हज़ार वर्ष। तो मुझे ऐसा लगता है कि जो दिख रहा है वह यही है।

4. योएल 2:30-32 पिनतेकुस्त पर चिन्ह और आत्मा

आइए जोएल अध्याय 2 श्लोक 30 से 32 तक आगे बढ़ें। भविष्यवाणी यह घोषणा करती है कि स्वर्ग और पृथ्वी पर ऐसे संकेत हैं जो प्रभु के अंधेरे और भयानक दिन से पहले के हैं। मेरे विचार से इन संकेतों को अभी भी पूरा होना बाकी मानना सबसे अच्छा लगता है। कोई पूछ सकता है कि पतरस ने लगभग पूरा अनुच्छेद क्यों उद्धृत किया, यदि इसका केवल एक भाग पिनतेकुस्त के दिन पूरा हुआ था? मुझे ऐसा लगता है कि हमारे पास यहां भविष्यसूचक समय परिप्रेक्ष्य का एक उदाहरण है जिसमें दो चीजें एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं, दोनों ही अंतिम दिन से संबंधित हैं लेकिन समय की एक अघोषित अवधि से अलग हो गई हैं। सभी प्राणियों को आत्मा देना और प्रभु का दिन दोनों ही परमेश्वर के अपने लोगों के साथ व्यवहार करने की अवधि से संबंधित हैं जो उस विशेष बिंदु पर शुरू हो रहा था। मसीह के दो आगमन को अलग करने वाली समयावधि को पवित्रशास्त्र में कभी भी इंगित नहीं किया गया है। बल्कि विचार आसन्न है, कि यह किसी भी समय, अंत समय के संबंध में घटित हो सकता है। इसलिए, तैयार रहें, यही कहता है।

मेरा विचार है कि कुछ अर्थों में इज़राइल का भविष्य है। मुझे ऐसा लगता है कि पुराने नियम में भूमि पर अगली वापसी में फैलाव और निर्वासन के बारे में कई भविष्यवाणियों में बहुत अधिक जोर दिया गया है। लेकिन मैं इसराइल के लिए एक शिक्षक की तलाश में हूँ और रोमियों 9-11 से मुझे ऐसा लगता है कि पॉल इसका समर्थन करता है। लेकिन उस बयान के पीछे यही है।

आत्मा पर बार्बिक (सुधारित हठधर्मिता)।

मैं आपका ध्यान हर्मन बाविक के *रिफॉर्म्ड डॉगमैटिक्स के एक पैराग्राफ की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ*। यह दिलचस्प है कि हरमन बाविक ने चार खंडों में धर्मशास्त्र लिखा, जो एक उत्कृष्ट कृति है। काफी समय तक इसका अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ। अभी इसका अनुवाद किया जा रहा है; चार में से पहले दो या तीन खंड पिछले कुछ वर्षों में प्रकाशित हुए हैं। मुझे नहीं लगता कि उन्हें चौथा खंड मिला है। लेकिन मैंने सोचा कि पवित्र आत्मा पर यह पैराग्राफ यहां डालने लायक था। ध्यान दें कि वह क्या कहता है, “मसीह ने अपनी महिमा के बाद जो पहली गतिविधि पूरी की, वह पवित्र आत्मा को भेजना है। क्योंकि वह परमेश्वर के दाहिने हाथ से ऊंचा उठाया गया था और उसे पवित्र आत्मा का वादा प्राप्त हुआ था, अर्थात् पवित्र आत्मा जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने पुराने नियम में की थी; अब वह इसे पृथ्वी पर अपने लोगों के पास भेज सकता है (प्रेरितों 2:33)... स्वर्गारोहण से पहले पवित्र आत्मा नहीं था, क्योंकि मसीह अभी तक महिमामंडित नहीं हुआ था। यह जॉन 7:39 में एक दिलचस्प कथन है और मुझे लगता है कि इसे आसानी से गलत समझा जा सकता है। बाविक कहते हैं, "इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि ईसा मसीह की महिमा से पहले पवित्र आत्मा का अस्तित्व नहीं था क्योंकि पुराने नियम में लगातार ईश्वर की आत्मा की बात होती है।" तो जब यूहन्ना 7:39 कहता है, स्वर्गारोहण से पहले पवित्र आत्मा नहीं था क्योंकि "यीशु अभी तक महिमामंडित नहीं हुआ था," इसका मतलब यह नहीं है कि पवित्र आत्मा अस्तित्व में नहीं था, यह नहीं हो सकता। "और गॉस्पेल हमें बताते हैं कि जॉन द बैपटिस्ट और एलिजाबेथ पवित्र आत्मा से भरे हुए थे।" पिनतेकुस्त से पहले भराई होती है। लूका 1:15 में कहा गया है कि "शिमोन मन्दिर में आत्मा के द्वारा था," लूका 2:26-27। कि यीशु को बिना माप के आत्मा द्वारा अभिषिक्त किया गया था, यूहन्ना 3:34। और इरादा यह भी नहीं हो सकता कि शिष्यों को यह नहीं पता था कि पिनतेकुस्त से पहले पवित्र आत्मा का अस्तित्व था। क्योंकि उन्हें पुराने नियम और स्वयं यीशु द्वारा सिखाया गया था। यहां तक कि इफिसुस में जॉन के शिष्यों ने भी पॉल से कहा था कि बपतिस्मा के समय उन्हें न केवल पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ था, बल्कि उन्होंने यह भी नहीं सुना था कि पवित्र आत्मा है या नहीं (प्रेरितों 19:2)। इससे यह संकेत नहीं मिलता है कि पवित्र आत्मा का अस्तित्व उनके लिए अज्ञात था,

बल्कि केवल यह कहता है कि पवित्र आत्मा का एक असाधारण कार्य, जो कि पेंटेकोस्ट में अद्भुत कार्य है, उन्होंने इसके बारे में नहीं सुना था। वे अच्छी तरह से जानते थे कि जॉन ईश्वर द्वारा भेजा गया एक भविष्यवक्ता था और उसकी आत्मा से संपन्न था, लेकिन वे जॉन के शिष्य बने रहे और यीशु के शिष्य नहीं बने। इस प्रकार वे उन विश्वासियों के समूह से बाहर रह गए जिन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा प्राप्त किया था।

इसलिए इस दिन जो घटना घटी, उसका इसके अलावा कोई अर्थ नहीं हो सकता कि पवित्र आत्मा, जो पहले से ही अस्तित्व में थी और जिसने कई उपहार दिए और कई शक्तियां काम कीं, वर्तमान में, अपने लोगों से ईसा मसीह के स्वर्गारोहण के बाद अब उनमें रहने के लिए आई हैं लोग उसके मंदिर की तरह हैं।" ध्यान दें यह अगला कथन बहुत अच्छा है क्योंकि यह इतना प्रभावशाली है, "पवित्र आत्मा का उंडेला जाना, सृष्टि और अवतार के बाद, ईश्वर का तीसरा महान कार्य है।" अब जैसा कि बाविक ने कहा, ईश्वर के तीन महान कार्य हैं: सृजन, अवतार और पवित्र आत्मा का प्रवाह। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है. पवित्र आत्मा के इस असाधारण उपहार का वादा पुराने नियम में बार-बार किया गया था और इसलिए आप पेंटेकोस्ट में जो हुआ उसके महत्व को कम नहीं करना चाहते। मुझे ऐसा लगता है कि पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर आज तक प्रत्येक आस्तिक के जीवन और अनुभव में क्या घटित होता रहता है। अंत के दिनों में उन सभी लोगों पर पवित्र आत्मा का लगातार प्रवाह हो रहा है जो इस एक शरीर में पुनर्जीवित हो गए हैं और फिर उन्हें सुसमाचार फैलाने के लिए सशक्त बना रहे हैं। यह सब इसी बारे में है।

योएल 2:31 और प्रेरितों के काम में आत्मा का कार्य

आइए थोड़ा और आगे बढ़ें, प्रभु के दिन का उल्लेख योएल अध्याय 2 श्लोक 31 में किया गया है, जैसा कि 2:11 में था। मेरे विचार में ये तीन श्लोक प्रभु के दिन के आने की बात कर रहे हैं। हालाँकि, यहाँ, यह आत्मा और आकाश में लौकिक संकेतों के उंडेलने के बाद आता है। इस प्रकार यह परिच्छेद मुक्ति के इतिहास की प्रगति को चित्रित करने में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस अनुच्छेद में हम सीखते हैं कि आत्मा का प्रेषण प्रभु के

आगमन के दिन से पहले होगा। इस अवधि में जिसमें आत्मा उंडेली जाती है, इससे कई बातों का अनुमान लगाया जा सकता है। परमेश्वर के राज्य की पूर्णता अभी तक प्रकट नहीं हुई है क्योंकि यह प्रभु के दिन से पहले आता है।

और दूसरा, इस अवधि को उचित रूप से अंतिम दिनों में आत्मा की अवधि, आगमन के बीच के समय के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इस हैंडआउट के शेष भाग में आत्मा के कार्य की चर्चा है, विशेष रूप से अधिनियमों की पुस्तक में चित्रित। आत्मा ने फिलिप को इथियोपियाई खोजे की ओर निर्देशित किया, आत्मा ने पतरस को कुरनेलियुस की ओर निर्देशित किया, आत्मा ने चर्च को अन्ताकिया की ओर निर्देशित किया, आत्मा ने मिशनरी कार्यों से उत्पन्न होने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्च का मार्गदर्शन किया, आत्मा ने पॉल को एशिया में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी, और इसी तरह पर वगैरह. तो आप जानते हैं कि कुछ लोगों ने लिखा और कहा, "प्रेरितों के कार्य" शीर्षक के बजाय इसका शीर्षक होना चाहिए, "पवित्र आत्मा के कार्य" क्योंकि पुस्तक के शेष भाग में यही प्रवाहित होता है।

5. जोएल 3 पर टिप्पणियाँ: राष्ट्रों पर निर्णय और परमेश्वर के लोगों की मुक्ति

मुझे तीसरे परिच्छेद पर शीघ्रता से कुछ टिप्पणियाँ करने दें, जो अंग्रेजी बाइबिल में जोएल अध्याय 3, हिब्रू बाइबिल में अध्याय 4 है। प्रभु के दिन के आगमन पर इस तीसरे अंश को मैंने शीर्षक दिया है, "राष्ट्रों का न्याय और परमेश्वर के लोगों का उद्धार।" मुझे बस कुछ टिप्पणियाँ करने दीजिए क्योंकि मैं इस पर बहुत विस्तार से बात नहीं करने वाला था। यह आपकी अंग्रेजी बाइबिल में जोएल 3:1-21 और हिब्रू बाइबिल में अध्याय 4 है।

योएल 3:1 उन दिनों में

आपको इस परिच्छेद को प्रस्तुत करने के लिए फिर से एक समय पदनाम मिलता है, योएल 3:1 पर ध्यान दें, "उन दिनों में और उस समय।" किस दिन और किस समय? मुझे नहीं लगता कि यह फिर से पूर्ववर्ती परिच्छेद की तरह है जो पहले जो हुआ उसका संदर्भ

देता है। मुझे लगता है कि "उन दिनों और उस समय" को वास्तव में पद्य एक में इस प्रकार परिभाषित किया गया है, "उन दिनों और उस समय, जब मैं यहूदा और यरूशलेम की किस्मत बहाल करूंगा, मैं सभी राष्ट्रों को इकट्ठा करूंगा और उन्हें नीचे लाऊंगा यहोशापात की घाटी तक।" तो यह है, "उन दिनों में जब मैं वो काम करता हूँ।" इसलिए समय पदनाम का संदर्भ निम्नलिखित वाक्यांश से है बजाय इसके कि जो तुरंत पहले आया हो; और यह वाक्यांश प्रभु के आने वाले दिन का वर्णन करने वाले तीसरे अंश का परिचय देता है।

यहोशापात की घाटी तो, योएल कहता है, "उन दिनों में जब मैं यहूदा और यरूशलेम की किस्मत को पुनर्स्थापित करूंगा, मैं राष्ट्रों को इकट्ठा करूंगा, और उन्हें यहोशापात की घाटी में ले आऊंगा। वहां मैं अपने निज भाग, अपनी प्रजा इस्राएल के विषय में उन पर न्याय करूंगा। यहोशापात की वह तराई कहाँ है जहाँ यहोवा सब जातियों को इकट्ठा करके उनका न्याय करेगा? 2 इतिहास 20:26 के आधार पर कुछ लोग सुझाव देते हैं कि यह बराका की घाटी है, जहां यहोशापात ने मोआबियों और अम्मोनियों को हराया था। इसके साथ समस्या यह है कि उस घाटी को यहोशापात की घाटी नहीं कहा जाता है, इसे बराका की घाटी कहा जाता है। यदि आप "यहोशापात की घाटी" नाम पर विचार करें, तो यहोशापात का अर्थ है "प्रभु ने न्याय किया है।" इसमें हिब्रू मूल *शापट* और उपसर्ग है कि "प्रभु ने न्याय किया था।" चूँकि घाटी भगवान के फैसले का स्थान है, इसलिए इस नाम को भौगोलिक स्थान के नाम के बजाय फैसले के प्रतीक के रूप में लेना संभव है। यदि आप पद 14 पर जाएं तो आपको एक समान संदर्भ मिलता है, "निर्णय की घाटी में भीड़, भीड़, क्योंकि निर्णय की घाटी में प्रभु का दिन निकट है।" इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि हमें इसे किसी सटीक भौगोलिक स्थान तक सीमित करने का प्रयास करना चाहिए। यह वह स्थान है जहाँ यहोवा उन राष्ट्रों के विरुद्ध न्याय करेगा जो इस्राएल के विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं।

योएल 3:2 - राष्ट्रों पर निर्णय श्लोक 2 उन सभी राष्ट्रों के बारे में बात करता है जिनके साथ प्रभु न्याय करेंगे। अब वह फैसला क्या है? वह कौन है जिसका न्याय किया जाना है? मुझे

ऐसा लगता है कि निर्णय केवल वह जीत है जो प्रभु द्वारा अपनी शक्ति और महिमा में प्रकट होने पर जीती जाएगी जब लौटे हुए इसराइल के दुश्मन सहस्राब्दी साम्राज्य की स्थापना से पहले लड़ाई के लिए तैयार होंगे। अब निःसंदेह यह मान लिया गया है कि सहस्राब्दि साम्राज्य जैसी कोई चीज़ होती है। मैं इसे जकर्याह 14:2 जैसे ग्रंथों से जोड़ूंगा जहां आप पढ़ते हैं, "मैं इसके खिलाफ लड़ने के लिए सभी राष्ट्रों को यरूशलेम में इकट्ठा करूंगा। शहर पर कब्ज़ा कर लिया जाएगा, घरों में तोड़फोड़ की जाएगी, महिलाओं के साथ बलात्कार किया जाएगा। शहर का आधा हिस्सा निर्वासन में चला जाएगा बाकी लोगों को शहर से नहीं निकाला जाएगा। तब यहोवा बाहर जाएगा और उन राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ेगा जैसे वह युद्ध के दिन लड़ता है। उस दिन उसके पैर जैतून के पहाड़ पर खड़े होंगे, जो दूसरा आगमन है। मुझे ऐसा लगता है कि इसका संदर्भ अध्याय 2 से है। आप इसे प्रकाशितवाक्य 19 से भी जोड़ सकते हैं।

जब आप छंद 9 में पढ़े गए अंश में थोड़ा और नीचे आते हैं, "राष्ट्रों के बीच इसका प्रचार करो, युद्ध के लिए तैयार हो जाओ, योद्धाओं को जगाओ, सभी लड़ने वाले पास आओ और हमला करो। अपने हल के बटों को पीटकर तलवारें बनाओ, अपनी कैंची को पीटकर भाले बनाओ।" यशायाह मार्ग के उलटाव पर ध्यान दें? अपने भालों को पीटकर हल के फाल बना डालो; यह उसका उलटा है. "निर्बल व्यक्ति कहे, 'मैं बलवान हूँ।' चारों ओर से सब राष्ट्रों के लोग वहां इकट्ठे हो आओ। अपने योद्धाओं को लाओ, राष्ट्रों को जगाओ, वे यहोशापात की तराई में आगे बढ़ें, क्योंकि मैं वहां चारों ओर के सब राष्ट्रों का न्याय करने को बैटूंगा।" वह न्याय केवल वह विजय है जो प्रभु ने उन राष्ट्रों पर प्राप्त की है जो इस्राएल के विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं। तो लड़ाई और मुक़दमा एक ही बात है. इसलिए मुझे लगता है कि मैं अपनी टिप्पणियाँ इसी के साथ छोड़ दूँगा, लेकिन यह तीसरा अंश है जो राष्ट्रों के इस फैसले के साथ प्रभु के दिन के आने का वर्णन करता है।

ऑर्डे डायस द्वारा लिखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन

टेड हिल्लेब्रॉन्ट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 20

जोनाह

चतुर्थ. जोनाह

ए. जोनाह का नाम और लेखक

आइए रोमन अंक IV और A, "जोना का नाम और लेखक" को देखें। पुस्तक का नाम अमितताई के पुत्र योना के नाम पर रखा गया है। यदि आप योना 1:1 को देखें तो आप वहां पढ़ते हैं, "प्रभु का संदेश अमित्तै के पुत्र योना के पास पहुंचा।" 2 राजा 14:25 में कहा गया है कि इसी नाम का एक भविष्यवक्ता उत्तरी साम्राज्य में नाज़रेथ के उत्तर में स्थित गथ हेफ़र नामक स्थान से आया था। मैं उस पाठ 2 राजा 14:25 को देखना चाहता हूं क्योंकि यह एक अन्य संबंध में महत्वपूर्ण है। यहां आप यारोबाम द्वितीय के बारे में पढ़ते हैं, "वही वह व्यक्ति था जिसने इस्राएल के यहोवा के वचन के अनुसार लेबो हमात से लेकर अराबा के सागर तक इस्राएल की सीमाओं को पुनर्स्थापित किया था, जो उसके सेवक अमितताई के पुत्र योना, जो गत के भविष्यवक्ता थे, के द्वारा कहा गया था। हेफ़र।" इसलिए, योना की भविष्यवाणी के अनुसार, यारोबाम द्वितीय ने इज़राइल की सीमाओं को उत्तर की ओर और अराबा सागर, मृत सागर तक बढ़ा दिया। यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि यारोबाम द्वितीय के समय अमित्तै का पुत्र योना वही है जो योना की पुस्तक का लेखक है। तो, 2 राजा 14:25 में इसी नाम के भविष्यवक्ता को गत हेपेर से आने वाला बताया गया है। इस संदर्भ के अनुसार वह यारोबाम द्वितीय के समय या उससे पहले आया होगा। यदि यह यारोबाम के समय का था, तो वह आमोस और होशे का समकालीन था। उसने भविष्यवाणी की कि यारोबाम उत्तर में हमात से लेकर दक्षिण में अराबा सागर तक की प्राचीन सीमाओं को पुनः प्राप्त करेगा। इसके अलावा हम किताब में बताई गई बातों के अलावा योना के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं।

अब हम नीनवे जाने के उसके मिशन और ऐसा करने की उसकी इच्छा की कमी, मछली द्वारा उसे निगलने और अंततः नीनवे जाने की कहानी पर आते हैं। पुस्तक का लेखक

निर्दिष्ट नहीं है, लेकिन यह मानने का कोई ठोस कारण नहीं है कि योना लेखक नहीं था। हालाँकि, यह जोड़ा जाना चाहिए, यदि पुस्तक योना के अलावा किसी अन्य द्वारा लिखी गई थी, तो यह किसी भी तरह से इसकी प्रामाणिकता को प्रभावित नहीं करता है क्योंकि लेखक निर्दिष्ट नहीं है।

बी. पुस्तक की प्रकृति: ऐतिहासिक या गैर-ऐतिहासिक - दृष्टिकोण का सर्वेक्षण

बी. इस पुस्तक को कैसे समझा जाए, इसकी चर्चा है, "पुस्तक की प्रकृति: ऐतिहासिक या गैर-ऐतिहासिक।" यह काफी चर्चित मुद्दा बन गया है. तो चलिए इस पर नजर डालते हैं. यह पुस्तक स्वयं को अन्य छोटे भविष्यवक्ताओं से बहुत अलग करती है। इसकी सामग्री सिर्फ योना की भविष्यवाणियों का रिकॉर्ड नहीं है, बल्कि यह एक कथा है जिसमें पैगंबर एक केंद्रीय व्यक्ति है। इस संबंध में यह एलिजा और एलीशा से जुड़ी कहानियों से अधिक समानता रखता है; यह राजाओं की कथा के एक अंश की तरह है। कथा के चरित्र के संबंध में दृष्टिकोण में व्यापक विविधता है। इसके धार्मिक मूल्य को लगभग सभी लोग पहचानते हैं , जबकि इसके ऐतिहासिक मूल्य को अक्सर कमतर माना जाता है। चूँकि यह पुस्तक उन लोगों द्वारा उद्धृत की जाने वाली पहली पुस्तक में से एक है, जिन्होंने बाइबिल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को चुनौती दी है, इसलिए हमें इस पर कुछ विस्तार से विचार करना चाहिए।

ऐसा कहा जाता है कि जब लेखक ने यह कहानी लिखी तो उसके मन में एक उपदेशात्मक उद्देश्य था, कि उसने यह कहानी कुछ बातें सिखाने के लिए कही थी। इस आधार से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस कहानी का उद्देश्य ऐतिहासिक जानकारी देना नहीं है, बल्कि कुछ पाठ पढ़ाना है और लेखक इस उपदेशात्मक उद्देश्य को पूरा करने के लिए कहानी के रूप का उपयोग करता है। यह आम तौर पर स्वीकार नहीं किया जाता है कि उपदेशात्मक इतिहास के साथ-साथ उपदेशात्मक कथा साहित्य जैसी भी कोई चीज़ हो सकती है।

टीडी अलेक्जेंडर "जोना और शैली" देखें, यह आपकी ग्रंथ सूची, पृष्ठ 17 में है। यदि

आप इस विषय में रुचि रखते हैं तो हम इस लेख को देख सकते हैं। यह काफी अच्छा लेख है। लेकिन इसमें अलेक्जेंडर सर्वेक्षण करते हुए कहते हैं कि जोनाह को किस तरह से वर्गीकृत किया गया है और उसके साथ कौन सा लेबल जोड़ा गया है। उनका कहना है कि आंशिक सर्वेक्षण से भी विभिन्न प्रकार के प्रस्तावों का पता चलता है, और वह इनमें से प्रत्येक लेबल को फुटनोट करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह इतिहास है, कुछ रूपक, कुछ मिद्राश, कुछ दृष्टान्त, कुछ भविष्यसूचक दृष्टान्त, कुछ किंवदंती, कुछ भविष्यसूचक कथा, कुछ उपन्यास, कुछ उपदेशात्मक कथा, कुछ व्यंग्य, कुछ लघु कथा, और सूची बढ़ती चली जाती है। दूसरे शब्दों में, यदि आप उन लोगों को देखें जो इस पुस्तक के साथ काम करते हैं और एक शैली वर्गीकरण बनाने का प्रयास करते हैं, तो आपको संभावनाओं की यह लंबी सूची मिलती है।

अलेक्जेंडर स्वयं इसे उपदेशात्मक इतिहास या ऐसे इतिहास के रूप में वर्गीकृत करते हैं जिसका उद्देश्य कुछ सिखाना है। गैर-ऐतिहासिक समूह के बीच इसकी प्रकृति के संबंध में दृष्टिकोण में मतभेद हैं। सबसे आम हैं कल्पना, किंवदंती, रूपक और दृष्टान्त। अलेक्जेंडर देखें, पृष्ठ 36 और 37।

गैर-ऐतिहासिक दृष्टिकोण

1. जोना कथा, किंवदंती, रूपक और दृष्टान्त के रूप में

तो आइए उनमें से प्रत्येक पर नजर डालें। एक, कल्पना. कुछ लोग सोचते हैं कि लेखक ने कहानी को गद्य कथा के रूप में चाहा था। दो, किंवदंती. अन्य लोग सोचते हैं कि लेखक ने एक भविष्यसूचक किंवदंती का उपयोग किया था जो इज़राइल के लोगों के बीच प्रचलन में थी। यह दृष्टिकोण स्वीकार करता है कि इस कहानी के पीछे एक वास्तविक ऐतिहासिक कर्नेल हो सकता है। शायद योना नाम का कोई व्यक्ति वास्तव में नीनवे गया था। शायद एक शाही संदेश या यहाँ तक कि एक धार्मिक संदेश भी, लेकिन ऐतिहासिक तथ्यों का यह मूल मूल सभी प्रकार के पौराणिक विस्तारों और अभिवृद्धियों से घिरा हुआ है, जिन्हें जोड़ा गया था, जैसे कि मछली की कहानी। मैं उन तीन चीजों को कह सकता हूँ:

मछली, लौकी और नीनवे के लोगों का धर्मांतरण आम तौर पर लोगों को सबसे अधिक परेशानी का कारण बनता है, क्योंकि ये ऐसी चीजें हैं जो अक्सर इसकी ऐतिहासिकता पर सवाल उठाती हैं। कुछ अभिव्यक्तियों में, विशेष रूप से मछली की कहानी के साथ, कुछ को समुद्री राक्षसों से मुक्ति की किंवदंतियों जैसे गैर-इजरायल के साथ सहमति का बिंदु मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि लेखक ने इस पौराणिक मूल भाव का उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए किया है, जिसमें अन्यजातियों के प्रति ईश्वर की दया, और योना के विद्रोह और ईश्वर की इच्छा को पूरा करने से इनकार करने जैसे चीजों की शिक्षा शामिल है। उस प्रकार की चीजें सिखाई जाती हैं, इससे उन लोगों द्वारा इनकार नहीं किया जाता है जो कहानी को वास्तव में ऐतिहासिक मानते हैं। सवाल यह है कि फिर हम किस आधार पर कह सकते हैं कि यह ऐतिहासिक नहीं है? ऐसे दृष्टिकोण के निहितार्थ क्या हैं?

पुस्तक की ऐतिहासिक घटनाओं को नकारने वालों में तीसरा दृष्टिकोण रूपक दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण का सबसे सामान्य रूप योना को इज़राइल के लोगों के रूप में देखता है, नीनवे बुतपरस्त दुनिया है जिसके लिए इज़राइल के पास पश्चाताप का संदेश घोषित करने का कार्य था। योना की बेवफाई इस्राएल की गैर-यहूदियों के लिए रोशनी बनने की बेवफाई है। मछली द्वारा निगल लिया गया योना इस्राएल की बन्धुवाई है, योना का भूमि पर फेंक दिया जाना इस्राएल की बन्धुवाई से वापसी है। इजराइल की वापसी का उद्देश्य अन्यजातियों को धार्मिक सच्चाई से अवगत कराना है और वे धर्म परिवर्तन के माध्यम से ईश्वर की कृपा के प्राप्तकर्ता बन जाते हैं। अन्यजातियों के प्रति प्रभु की दया पर असंतोष के कारण इस्राएल को अस्वीकार किया जाना है। ये रूपक दृष्टिकोण की सामान्य पंक्तियाँ हैं।

चौथी श्रेणी दृष्टान्त दृश्य है। अन्य लोग रूपक तत्वों को इतना प्रमुख नहीं बनाएंगे, बल्कि कहानी को कुछ सबक सिखाने के लिए आविष्कृत दृष्टान्त के रूप में देखेंगे। ऐसा दृष्टिकोण आवश्यक रूप से कहानी की दैवीय प्रेरणा को नकारेगा नहीं बल्कि इसकी ऐतिहासिकता को नकारने को तैयार होगा। अब इसका एक उदाहरण एनआईसीओटी कमेंटरी में लेस्ली एलन है। यदि आप अपने उद्धरण पृष्ठ 41 पैराग्राफ 2 में देखें, तो जोएल, जोनाह और मीका की पुस्तकों पर लेस्ली एलन की टिप्पणी का एक पैराग्राफ है, जहां एलन

कहते हैं, "लंबे समय तक जोनाह की पुस्तक की व्याख्या दृढ़ता से ऐतिहासिक तरीके से की गई थी . फिर भी हालांकि चर्च के फादर, जो ज्यादातर जोनाह को प्रतीकात्मक रूप से इस्तेमाल करते थे, ने इसकी ऐतिहासिकता को स्वीकार किया, ऐसे लोग भी थे जिन्होंने इस पर संदेह किया, जिनमें चौथी शताब्दी में नाज़ियानज़स के ग्रेगरी भी शामिल थे... लूथर ने कहानी को गैर-ऐतिहासिक माना। मुझे यकीन नहीं है कि उसे वह कहां से मिला क्योंकि वहां कोई फुटनोट नहीं हैं। " आज रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों मंडल हैं जो पुस्तक की ऐतिहासिकता को उत्साह के साथ बनाए रखते हैं जो मानते हैं कि इसकी प्रेरणा और अधिकार इस पर निर्भर करते हैं: यदि जोनाह की पुस्तक इतिहास है, तो यह सबसे महत्वपूर्ण सत्य के साक्ष्य का हिस्सा है कल्पना करने योग्य, अर्थात् सर्वशक्तिमान ईश्वर मनुष्यों को पश्चाताप की ओर ले जाना चाहता है और जो वास्तव में पश्चाताप करते हैं उन्हें क्षमा कर देगा।" कोई और है जो उस विचार को दबा रहा है। यहाँ एलन की टिप्पणी है, " लेकिन अगर किताब ऐतिहासिक नहीं है, तो यह केवल कुछ विलक्षण रूप से व्यापक सोच वाले यहूदियों की राय है कि भगवान को अन्यजातियों को भी क्षमा करना चाहिए यदि वे वास्तव में पश्चाताप करते हैं।" लेकिन क्या यह समझ से बाहर है कि "कुछ विलक्षण रूप से व्यापक विचारधारा वाले यहूदी" थे इस अति-आवश्यक पाठ को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया? इस तरह का दृष्टिकोण ईश्वर की आत्मा को प्रतिबंधित करने और वास्तविक शास्त्रीय माध्यम के रूप में दृष्टांत के मूल्य को कम करने के खतरे में है। मेरे लिए वह वास्तव में सवाल पूछता है: क्या यह एक दृष्टांत है? ऐसा क्यों होगा आप यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह एक दृष्टान्त है? और इसका क्या अर्थ है? निश्चित रूप से, भगवान किसी को दृष्टान्त बताने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। लेकिन क्या यह यही है?

गैर-ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर टिप्पणियाँ

अब जोनाह के अपने हैंडआउट पर वापस आएं, मैं पहले गैर-ऐतिहासिक विचारों पर कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। बाद में अगले पृष्ठ पर मैं गैर-ऐतिहासिक विचारों पर कुछ और विशिष्ट टिप्पणियाँ करूँगा। लेकिन सबसे पहले इसमें शामिल सामान्य

व्यापक मुद्दे शामिल हैं। मुझे ऐसा लगता है कि इन गैर-ऐतिहासिक विचारों के सत्यापन के लिए अपर्याप्त आधार है और उन्हें अस्वीकार करने के लिए कुछ मजबूत कारण हैं। मैंने यहां तीन कारण सूचीबद्ध किये हैं।

एक। पुस्तक स्वयं का दावा है कि यह ऐतिहासिक है

एक, किताब स्वयं बताती है कि इसे ऐतिहासिक के अलावा किसी अन्य चीज़ के रूप में लेने का कोई अच्छा कारण नहीं है, जब तक कि चमत्कारी की उपस्थिति को उसके खिलाफ सबूत के रूप में नहीं माना जाता है। निश्चित रूप से, इसमें चमत्कारी का एक मजबूत तत्व है। यदि चमत्कारों की संभावना कोई मुद्दा नहीं थी तो पुस्तक स्वयं ऐतिहासिक के अलावा कुछ भी मानने का कोई अच्छा कारण नहीं देती है। 2 राजा 14:25 में कथा में अग्रणी व्यक्तित्व का संदर्भ योना नामक भविष्यवक्ता के लिए ऐतिहासिकता का एक ठोस आधार प्रदान करता है। देखिए, यहीं पर 2 राजा 14:25 काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि हमारे पास केवल योना की पुस्तक होती तो हमें आश्चर्य होता कि क्या यह एक दृष्टांत है। हम जानते हैं कि योना एक भविष्यवक्ता था जिसने यारोबाम द्वितीय के समय या उससे पहले भविष्यवाणी की थी।

बी। यीशु ने इसे ऐतिहासिक समझा - मैथ्यू 12:38-41 दो, मैथ्यू 12:38-41 में योना की पुस्तक में घटनाओं के बारे में यीशु के संदर्भ इस बात के सूचक हैं कि उन्होंने इसे ऐतिहासिक समझा। आइए मत्ती 12:38-41 को देखें। "तब कुछ फरीसियों और शास्त्रियों ने उस से कहा, हे गुरु, हम तुझ से एक चमत्कारी चिन्ह देखना चाहते हैं। उसने उत्तर दिया, 'दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चमत्कार का चिन्ह मांगती है! परन्तु योना भविष्यवक्ता के चिन्ह को छोड़ किसी को यह न दिया जाएगा। क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात एक बड़ी मछली के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के भीतर रहेगा।" अब अधिकांश लोग जो यीशु के इस कथन को ध्यान में रखते हैं योना की पुस्तक से और इस ऐतिहासिक मुद्दे पर चर्चा करते हुए इसे श्लोक 40 से जोड़ें, "जैसे योना तीन दिन

तक पेट में रहा, वैसे ही मैं भी तीन दिन तक पृथ्वी के भीतर रहूंगा।" मुझे ऐसा लगता है कि तर्क यहीं खत्म नहीं होता। यह छंद 41 से 42 के साथ है, ध्यान दें कि यीशु आगे क्या कहते हैं, "नीनवे के लोग न्याय के समय इस पीढ़ी के साथ खड़े होंगे और इसकी निंदा करेंगे; क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश से पश्चात्ताप किया, और अब एक योना से भी महान यहाँ है। दक्षिण की रानी न्याय के समय इस पीढ़ी के साथ उठेगी और इसकी निंदा करेगी; क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी के छोर से आई थी, और अब सुलैमान से भी बड़ा एक यहाँ है।" अब ध्यान दें कि यीशु वहाँ छंद 41 और 42 के साथ क्या करते हैं। यीशु योना की ऐतिहासिकता को उसी स्तर पर रखते हैं जिस स्तर पर योना की ऐतिहासिकता है। शीबा की रानी। वह नीनवे के लोगों की प्रतिक्रिया को अपने समय के लोगों की प्रतिक्रिया के समान स्तर पर रखता है। दूसरे शब्दों में, जब योना उन्हें उपदेश देने आया तो नीनवे के लोगों ने पश्चात्ताप किया। तुम पश्चात्ताप नहीं कर रहे हो और मैं योना से भी बड़ा हूँ। वहाँ एक ऐतिहासिक सादृश्य है। यदि नीनवे के लोगों ने योना के उपदेश पर ऐतिहासिक रूप से पश्चात्ताप नहीं किया, तो सादृश्य विफल हो जाता है। यह मान लिया गया है कि ये चीजें हुईं। यीशु इसका उपयोग अपनी ही पीढ़ी के लोगों की निंदा करने के लिए कर रहे हैं।

अब देखें कि एलन इस बारे में क्या कहता है, एलन कहते हैं, " फिर भी मैथ्यू 12:39-41 में योना के बारे में यीशु का बयान हमारी किताब की ऐतिहासिकता का प्रमाण नहीं है? वॉन ओरेली, जिन्होंने खुद इस कहानी की व्याख्या की, ने स्वीकार किया: 'यह वास्तव में निर्णायक आवश्यकता के साथ साबित नहीं हुआ है कि, यदि यीशु का पुनरुत्थान एक भौतिक तथ्य था, तो मछली के पेट में योना का निवास भी उतना ही ऐतिहासिक होना चाहिए। "लेकिन देखिए, यह वास्तव में तर्क का सार नहीं है। " इस संबंध में एक विशेषता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है जो योना के संकेत पर बाद के खंड में दिखाया जाएगा, कि यह सख्त व्याख्या नहीं है जो योना और मछली की कथा के यीशु के उपयोग में परिलक्षित होती है, बल्कि लोकप्रिय है यहूदी समझ, जिसे प्रभु ने अपनाया और अपने संबंध में सत्य के साधन के रूप में नियोजित किया। यदि ऐसा है, तो यह बनाए रखना काफी संभव है कि उनका संदर्भ ओटी के छात्र के लिए आवश्यक रूप से समर्थन किए बिना केवल समकालीन

दृष्टिकोण को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, लोगों का मानना था कि योना ऐतिहासिक था और इसलिए यीशु उन शब्दों में बोलता है जैसे कि यह था लेकिन ऐसा नहीं था। “ इसके अलावा, यीशु की शिक्षा में एक आलंकारिक तत्व के लिए अनुमति दी जानी चाहिए, एक ऐसा तत्व जिसे पश्चिमी साहित्यकारों को समझने में कुख्यात कठिनाई हुई है। यदि एक आधुनिक उपदेशक ने लेडी मैकबेथ या ओलिवर ट्विस्ट के संदर्भ में अपनी मंडली को चुनौती दी तो वह दोषी नहीं होगा, क्या यीशु अपने विशिष्ट संदेश को सुदृढ़ करने के लिए एक प्रसिद्ध कहानी का उसी तरह उल्लेख नहीं कर सकते थे? “अब मुझे लगता है कि एलन वास्तव में मुद्दे को भूल गया है। ऐसा नहीं है कि यीशु कहते हैं कि योना तीन दिन तक मछली के पेट में था और मछली ने उसे निगल लिया। नीनवे के लोगों द्वारा योना के उपदेश पर पश्चाताप का एक ऐतिहासिक संदर्भ भी है और यह उसके अपने समय के लोगों के पश्चाताप की कमी के विपरीत है जब वे अपना उपदेश सुनते हैं।

जीसी आल्डर की छोटी किताब, *द प्रॉब्लम ऑफ़ द बुक ऑफ़ जोनाह* को देखें। वह कहते हैं, “ अंत में, और यह बहुत अधिक महत्वपूर्ण है, हमारे प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं निस्संदेह योना की पुस्तक में वर्णित घटनाओं को वास्तव में ऐतिहासिक माना है। यह न केवल इस तथ्य से प्रकट होता है कि वह योना के व्हेल के पेट में रहने का संकेत देता है, बल्कि नीनवे के पश्चाताप के संदर्भ में भी: 'नीनवे के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय करने के लिए उठेंगे, और निंदा करेंगे यह: क्योंकि उन्होंने योना का उपदेश सुनकर मन फिराया, और देखो, यहां योना से भी बड़ा कोई है।' हमारे प्रभु तब तक इतनी गंभीर घोषणा नहीं कर सकते थे जब तक कि उन्हें दृढ़ता से विश्वास न हो जाए कि नीनवे के लोगों ने वास्तव में योना के उपदेश पर पश्चाताप किया था। मसीह की इस जोरदार चेतावनी के प्रकाश में इस पश्चाताप की एक परवलयिक व्याख्या बिल्कुल असंभव है।

“अब यह कई टिप्पणीकारों के लिए बहुत मायने नहीं रखता है, लेकिन यह हमारे लिए सब कुछ है जो उसे हमारे अनमोल उद्धारकर्ता, पिता के पुत्र, उसकी मानवता में दोषरहित मानते हैं। और शायद इसका उन लोगों के लिए कुछ मतलब हो सकता है जो इस विश्वास को साझा करते हैं, लेकिन पुराने नियम को भगवान के अचूक, आधिकारिक शब्द के अभिन्न

अंग के रूप में स्वीकार करने में हमारे साथ पूरी तरह से सहमत नहीं हैं। मुझे लगता है कि एल्डर का बयान एलन जैसी स्थिति के खिलाफ प्रतिक्रिया को बढ़ाता है।

आप अपनी रूपरेखा में देखते हैं कि चार्ल्स हैरिस कहते हैं, " यह सच है कि एक उपदेशक काल्पनिक या रूपक व्यक्तियों के चित्रण का हवाला दे सकता है, लेकिन उसे उन्हें अनुरूप साक्ष्य के रूप में उद्धृत नहीं करना चाहिए। उसे अविश्वासियों के सामने यह प्रयास करने दीजिए और वह उन्हें बुदबुदाते हुए पाएगा, 'इससे कुछ भी साबित नहीं होता, यह बात कभी हुई ही नहीं।' "देखिए, मुझे ऐसा लगता है कि यही इसका सार है। यीशु इसे एक सादृश्य के रूप में उपयोग करते हैं और यदि पश्चाताप की कोई ऐतिहासिक वास्तविकता नहीं है तो यह सादृश्य विफल हो जाता है। डिलार्ड और लॉन्गमैन, *ओल्ड टेस्टामेंट* के अपने परिचय, पृष्ठ 392-393 में टिप्पणी करते हैं, "ऐतिहासिक पढ़ने के पक्ष में सबसे सम्मोहक तर्क यह है कि योना और नीनवे के लिए यीशु का संदर्भ इंगित करता है कि उनका मानना है कि पुस्तक ऐतिहासिक थी। हालाँकि, टिप्पणी यह है कि हालांकि यह संभव है, यह निश्चित नहीं है। आखिरकार, यदि यीशु उपदेश दे रहे होते तो वे उस घटना का उल्लेख कर सकते थे, भले ही वह दृष्टान्त ही क्यों न हो। इसी तरह से आज एक उपदेशक मण्डली को अच्छे सामरी की तरह बनने के लिए प्रोत्साहित करता है, भले ही कुछ लोग मानते हैं कि अच्छा सामरी एक ऐतिहासिक व्यक्ति था। अच्छे सामरी का नाम नहीं है, योना का नाम है। राजाओं में हम जानते हैं कि वह एक ऐतिहासिक व्यक्ति था जो यारोबाम द्वितीय के समय या उससे पहले रहता था। लेकिन मुझे नहीं लगता कि सादृश्य यह मानता है कि यह दृष्टान्त हो सकता है। मुझे ऐसा नहीं लगता कि यह उस ऐतिहासिक सादृश्य की माँगों के अनुरूप है जो यीशु अपने वक्तव्य में कह रहे थे। तो यह गैर-ऐतिहासिक विचारों पर दूसरी सामान्य टिप्पणी है।

सी। पवित्रशास्त्र के कैनन में योना का समावेश

तीसरा, योना को पवित्रशास्त्र के सिद्धांत में शामिल करना और यहूदी साहित्य में इसके सबसे प्राचीन संदर्भों से पता चलता है कि इसे हमेशा ऐतिहासिक समझा जाता था।

अपने उद्धरणों पर जाएँ, पृष्ठ 42—मेरे पास एचएल एलिसन का एक अधिक लंबा उद्धरण है, जो कहता है, " वास्तव में जो मायने रखता है वह पुस्तक की ऐतिहासिकता है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यहूदी परंपरा में इसके शाब्दिक सत्य पर कभी सवाल नहीं उठाया गया। वास्तव में, अलेक्जेंड्रिया के फिलो, रूपक के महान गुरु, जो निस्संदेह किसी प्रतीकात्मक या रूपक व्याख्या को उत्सुकता से पकड़ लेते, यदि उन्हें पता होता, 'मछली के चमत्कार को समझाने के लिए उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा।'

“समान रूप से पुस्तक की प्रामाणिकता पर कभी भी सवाल नहीं उठाया गया है। चाहे आधुनिक विद्वान पुस्तक को भविष्यसूचक कथा, प्रतीकात्मक कथा या उपदेशात्मक कथा के रूप में समझाए, उसे यह समझाने की असंभवता का सामना करना पड़ता है कि यहूदी लोग और विशेष रूप से हमारे प्रभु, इसे ऐतिहासिक रूप से सत्य कैसे मानते थे। कठिनाई तब और अधिक बढ़ जाती है जब हमें यह एहसास होता है कि ऐतिहासिक रूप से सच्चे विवरण के रूप में इसकी हमारी आध्यात्मिक व्याख्या, अधिक या कम हद तक, उससे काफी भिन्न होगी जो हमें देनी चाहिए, अगर हम इसे काल्पनिक मानते हैं। हमें यह विश्वास करने के लिए कहा जाता है कि यहूदी न केवल भूल गए कि यह कल्पना थी, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ भी भूल गए। यह याद रखना भी अनुचित नहीं है कि आधुनिक लोग इसके मूल उद्देश्य और अर्थ को लेकर एकमत हैं।

“तब जो लोग पुस्तक के तथ्यात्मक सत्य को नकारते हैं, उन्हें यह समझाने की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए कि अन्य भविष्यसूचक पुस्तकों से इतनी भिन्न पुस्तक को भविष्यसूचक सिद्धांत में कैसे शामिल किया गया, यह कैसे भुला दिया गया कि यह प्रतीकात्मक या उपदेशात्मक कल्पना थी, और इससे भी ऊपर हमारे भगवान इसके वास्तविक स्वरूप को समझने में कैसे असमर्थ थे।

“आइए हम एक साधारण तथ्य का सामना करें। आइचोर्न के बाद से पुस्तक की ऐतिहासिकता का खंडन सबसे पहले दुनिया के तत्कालीन प्रमुख तर्कसंगत दृष्टिकोण का परिणाम था, जिसमें चमत्कार के लिए या भौतिक चीजों में दैवीय हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं थी।

“हालाँकि, रूढ़िवादी को कुछ हद तक दोष वहन करना होगा। उनके लिए, अक्सर, किताब का पहला भाग ही मायने रखता है। उन्होंने इस बात को नज़रअंदाज कर दिया है कि योना के साथ भगवान के चमत्कारी व्यवहार दिव्य चरित्र के रहस्योद्घाटन की तैयारी के अलावा थे। यदि हम चाहते हैं कि पुस्तक के शाब्दिक सत्य को गंभीरता से लिया जाए तो हमें इसकी पर्याप्त आध्यात्मिक व्याख्या करनी होगी और इसमें असाधारण चमत्कारी तत्व को उचित ठहराना होगा। दूसरे शब्दों में, यदि आप केवल ऐतिहासिक विवरणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो आप पुस्तक के वास्तविक महत्व से चूक सकते हैं।

4. यहूदी की राय - उन्होंने इसे एक दृष्टान्त के रूप में नहीं माना, आपके हैंडआउट्स के पृष्ठ 4 के शीर्ष पर पृष्ठ 39 पर आपके उद्धरण का एक और संदर्भ है, इस बाद वाले बिंदु पर एल्डर्स की टिप्पणी से, एल्डर्स के पैराग्राफ 2 जब वह बात कर रहे हैं यहूदी लोगों ने पुस्तक को किस प्रकार समझा। उन्होंने कहा, " यहूदियों की भी यही राय थी. उन्होंने योना की पुस्तक को एक दृष्टान्त के रूप में नहीं माना , बल्कि इसे वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं का अभिलेख माना। यह टोबिट की अपोक्रीफल पुस्तक से स्पष्ट है। जैसे ही टोबीत मर रहा था, उसने अपने बेटे, टोबियास को बुलाया, और उसे मीडिया में जाने का आदेश दिया, 'क्योंकि (वह कहता है) मैं नीनवे पर भगवान के वचन पर विश्वास करता हूं, जो नहूम ने कहा था, कि वे सभी चीजें होंगी, और अशशूर पर आ पड़ेंगी और नीनवे।' यह पाठ शायद सही है, लेकिन सेप्टुआजेंट में नहूम के बजाय योना है। यह एक गलत संशोधन हो सकता है, लेकिन यह साबित करता है कि यहूदियों ने निश्चित रूप से योना की पुस्तक को एक दृष्टान्त के रूप में नहीं माना था। मैकाबीज़ की तीसरी किताब में पुजारी एलीआजर प्रार्थना करते समय योना के उद्धार का उल्लेख इस प्रकार करता है: 'और जब योना समुद्र में जन्मे राक्षस के पेट में निर्दयी होकर मर रहा था, तो हे पिता, तूने उसे उसके सभी प्राणियों के लिए बिना किसी चोट के बहाल कर दिया। परिवार।' यह संदर्भ फिरौन की ऐसी ही यादों से पहले आता है जो अपने अभिमानी मेजबान के साथ डूब गया था, सन्हेरीब की, जो पवित्र शहर की दृष्टि में हार गया था, आग की भट्टी से तीन दोस्तों की मुक्ति की, और डैनियल की शेरों से मुक्ति की '

मांद. इसी तरह यह इस बात का भी पुख्ता सबूत है कि यहूदी योना की किताब को वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं का रिकॉर्ड मानते हैं। और जोसेफस, जो बार-बार अपने काम के ऐतिहासिक चरित्र पर जोर देता है, पुस्तक की सामग्री को अपनी पुरावशेषों में शामिल करता है। यद्यपि हमारे पास उसकी ऐतिहासिक सटीकता के वास्तविक मूल्य पर सवाल उठाने का अच्छा कारण हो सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अपने लोगों के दृष्टिकोण को व्यक्त करता है, कि योना एक ऐतिहासिक कथा थी। तो ये गैर-ऐतिहासिक विचारों पर सामान्य टिप्पणियाँ हैं। मुझे लगता है कि गैर-ऐतिहासिक दृष्टिकोण को अस्वीकार करने के ये तीन मजबूत कारण हैं।

वानॉय का गैर-ऐतिहासिक दृष्टिकोण का विश्लेषण अब हम अधिक विशिष्ट टिप्पणियों पर आते हैं। मुझे सबसे पहले लगता है कि जो लोग गैर-ऐतिहासिक विचार रखते हैं वे आम तौर पर दो कारणों से ऐसा करते हैं। पहला, ए, यह है कि "वर्णित घटनाओं को या तो असंभव या असंभव के रूप में देखा जाता है।" दूसरे शब्दों में, पुस्तक की ऐतिहासिकता को उसमें निहित चमत्कारी तत्वों के आधार पर नकार दिया गया है। कुछ लोगों का मानना है कि चमत्कार नहीं होते, इसलिए उनकी रिपोर्टें ऐतिहासिक नहीं हो सकतीं। अन्य लोग सामान्यतः चमत्कारी को स्वीकार करने को तैयार हैं, लेकिन उन्हें लगता है कि योना में चमत्कारी तत्व का गुणन इतना अधिक है कि इसे ऐतिहासिक न मानना ही बेहतर है। एलन अपनी एनआईसीओटी टिप्पणी में मूलतः यही कहते हैं। एलन कहते हैं, " आश्चर्य का यह तत्व पूरी किताब में एक महत्वपूर्ण कारक है। एक भविष्यवक्ता का अपना संदेश देने के लिए नीनवे की यात्रा करना एक असाधारण घटना है। राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियां आम बात हैं, लेकिन वे आम तौर पर पैगंबर की मूल भूमि पर उनके साथी नागरिकों के लाभ के लिए बोली जाती थीं। एलिजा और एलीशा का दमिश्क का राजनीतिक मिशन निकटतम समानांतर है, लेकिन योना की यात्रा एक अलग प्रकृति की है। " इसलिए यह आश्चर्य की बात है कि भविष्यवक्ता दूसरे राष्ट्र में जा रहे हैं। " एक और आश्चर्य, चौंकाने वाला, योना द्वारा अपने भविष्यसूचक बोझ को उठाने से इनकार करना है। मूसा, एलिय्याह और यिर्मयाह

वास्तव में अपने कार्यों से पीछे हट गए, लेकिन योना का स्पष्ट इनकार उनकी हिचकिचाहट से कहीं अधिक है। वास्तव में यह छोटी सी किताब आश्चर्यों की एक श्रृंखला है; यह एक के बाद एक रोंगटे खड़े कर देने वाली और आंखें चौंधिया देने वाली घटनाओं से भरा हुआ है। हिंसक समुद्री तूफ़ान, पनडुब्बी जैसी मछली जिसमें योना बच जाता है क्योंकि वह एक गीत लिखता है, नीनवे का सामूहिक रूपांतरण, जादू का पौधा - ये ओटी भविष्यवाणी कथाओं की सामान्य विशेषताएं नहीं हैं। हालाँकि एक या दो रोमांचक घटनाओं से कोई सवाल नहीं उठता, लेकिन उत्तेजक तरीके से पाठक पर एक के बाद एक आश्चर्य की बमबारी से पता चलता है कि लेखक का इरादा केवल ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन करने के अलावा कुछ और है। ” तो यह अपने आप में चमत्कारी नहीं है, लेकिन “यह आंखों को चौंका देने वाली घटना का संचय है” जो आपको आश्चर्यचकित करता है कि क्या यह वास्तव में ऐतिहासिक रूप से पढ़ने का इरादा है। “ वह व्यक्ति साहसी होगा जिसने यह कहने का साहस किया कि घटनाओं की यह श्रृंखला असंभव थी, क्योंकि कौन ईश्वर की सर्वशक्तिमानता को सीमित कर सकता है और स्पष्ट रूप से कह सकता है कि कुछ भी नहीं हो सकता है? यह असंभव तो नहीं लेकिन असंभव है कि वे सामान्य पाठक पर किस तरह प्रभाव डालते हैं। क्या होगा यदि लेखक का इरादा हमारा ध्यान आकर्षित करने और उसे असंभवताओं की एक श्रृंखला के माध्यम से अपने संदेश पर केंद्रित करने का था? ” तो इस तरह एलन उस मुद्दे को संबोधित करता है।

जॉन स्टेक का दृष्टिकोण: इतिहास की सादृश्यता, एलन के उस प्रकार के दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया के लिए जॉन स्टेक के एक लेख के इस कथन को देखें। वह कई वर्षों तक पुराने नियम के प्रोफेसर थे, जो अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं, लेकिन उन्होंने *द मेसेज ऑफ़ द बुक ऑफ़ जोना* नामक पुस्तक लिखी, जो मुझे लगता है कि पुस्तक की ऐतिहासिकता के इस प्रश्न के लिए बहुत उपयोगी है, लेकिन साथ ही जोना की पुस्तक का संदेश भी है। लेकिन ध्यान दें कि स्टेक क्या कहता है, वह कहता है, “ लेखक वर्णित घटनाओं की ऐतिहासिकता को मानता है। यह एक धारणा है जिसे अधिकांश पाठक... दृढ़तापूर्वक अस्वीकार करने के

इच्छुक हैं। इस आख्यान को अपने अनूठे विहित और ऐतिहासिक संदर्भ से उठाकर, और सचेत रूप से या अनजाने में इसे सामान्य इतिहास के संदर्भ में पढ़ना, जहां यहां बताए गए चमत्कार, मिथकों, किंवदंतियों और परियों की कहानियों को छोड़कर, नहीं होते हैं, आधुनिक पाठक और विद्वान इतिहास की सादृश्यता से इस कथा के लिए कुछ स्पष्टीकरण खोजने के लिए बाध्य महसूस करते हैं, सिवाय इसके कि वर्णित घटनाएँ वास्तव में घटित हुई थीं। देखें कि "इतिहास की सादृश्यता" का संदर्भ वह सिद्धांत है जिसका उपयोग अक्सर ऐतिहासिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है: यदि आप अपने अनुभव में अनुरूप घटनाएं नहीं ढूंढ पाते हैं तो एक समस्या है। स्टेक जो कह रहा है उसका सिद्धांत यह है कि जो पाठक ऐसा करते हैं वे इसे अपने स्वयं के संदर्भ से बाहर ले जाते हैं, मुक्तिदायक इतिहास के संदर्भ में जिसमें भगवान काम कर रहे हैं, और इसे सामान्य इतिहास के दूसरे संदर्भ में रखते हैं और फिर निष्कर्ष निकालते हैं कि ऐसा नहीं हुआ ऐसा नहीं होता। वह कहते हैं, "इतिहास की सादृश्यता के सिद्धांत को लागू करते हुए, आम तौर पर सहारा लिया जाता है, जैसा कि ईसफेल्ट ने किया है, "एक पौराणिक, परी-कथा रूपांकन जो दुनिया भर में पाया जाता है, अर्थात् एक आदमी द्वारा निगलने और उल्टी करने का रूपांकन एक महान मछली, उदाहरण के लिए, पर्सियस गाथा के एक रूप में जानी जाती है।

“ यहाँ चित्रित विधि कपटपूर्ण है। इसका तात्पर्य है, यदि निरंतरता एक गुण है, तो एक अद्भुत घटना की प्रत्येक बाइबिल कथा के साथ भी ऐसा ही किया जाना चाहिए। घातक परिणाम यह है कि बाइबिल के सभी चमत्कारों की व्याख्या इतिहास की सादृश्यता के सिद्धांत पर की जाती है।

"वर्तमान लेखक ऐतिहासिक सादृश्य के सिद्धांत की वैधता को पहचानता है, लेकिन इस बात पर जोर देता है कि योना की पुस्तक में दर्ज अद्भुत घटनाओं के लिए एकमात्र उपयुक्त ऐतिहासिक एनालॉग मोक्ष के उस इतिहास से संबंधित समान रूप से अद्भुत घटनाएं हैं जिनके लिए बाइबिल के लेखक गवाह हैं, अर्थात्, भगवान के शक्तिशाली कार्यों का इतिहास। योना की पुस्तक को पढ़ने के लिए यही एकमात्र उचित संदर्भ है। इस संदर्भ में, ऐतिहासिक आख्यान ऐतिहासिकता को गंभीरता से लेता है, यहां तक कि सबसे

असामान्य घटनाओं का वर्णन करते समय भी - ठीक इसलिए क्योंकि वर्णन करने के लिए असामान्य घटनाएं होती हैं। और बाइबिल साहित्य के भीतर, योना की पुस्तक भविष्यसूचक ऐतिहासिक कथा में साहित्य के रूप में अपनी निकटतम सादृश्यता पाती है, जैसा कि अधिकांश विद्वान स्वीकार करेंगे। दूसरे शब्दों में, आप पुराने नियम के ऐतिहासिक साहित्य, निर्गमन की कहानी और राजाओं की पुस्तक की कहानियों में निकटतम सादृश्य पाते हैं।

नीनवे के पश्चाताप पर सवाल उठाया गया फिर अगला पैराग्राफ एक फुटनोट है, 35, जहां स्टेक कहते हैं, " नीनवे के पश्चाताप की रिपोर्ट को अक्सर इस भविष्यवाणी पुस्तक के पौराणिक चरित्र के प्रमाण के रूप में अपील की गई है। एचएच राउली इसे स्पष्ट रूप से कहते हैं: 'नीनवे को तुरंत परिवर्तित कर दिया गया था, यह एक थीसिस है जो उसके इतिहास के किसी भी छात्र को आश्चस्त नहीं करेगी, जब तक कि रूपांतरण उतना ही अल्पकालिक न हो जितना तेज था - जिस स्थिति में यह बेकार था, और शायद ही धोखा देने की संभावना थी भगवान .' यदि वर्तमान लेखक योना की पुस्तक के उद्देश्य की सही व्याख्या करता है, तो नीनवे के लोगों की ओर से एक 'क्षणिक' पश्चाताप भगवान के उद्देश्य के लिए पर्याप्त था। इस तरह के पश्चाताप के लिए भी, जो पहले से ही प्रकट होना शुरू हो गया था जब योना का नीनवे में उपदेश मुश्किल से शुरू हुआ था - 'और योना एक दिन की यात्रा के लिए शहर में प्रवेश करने लगा' (3: 4) - इज़राइल की निर्दयी बर्खास्तगी और चमत्कार के बिल्कुल विपरीत है एलिजा और एलीशा की भरी हुई सेवकाई। भविष्यवाणी की चेतावनी के प्रति अपनी प्रतिक्रिया से, भले ही वह क्षणिक रही हो, नीनवे के लोगों ने कठोर हृदय वाले इसराइल को शर्मसार कर दिया, " मुझे लगता है कि यह वही बात है जो यीशु कह रहे हैं। नीनवे के लोगों ने पश्चाताप किया, फिर भी योना से भी महान एक यहाँ है और आप पश्चाताप नहीं कर रहे हैं।

इस्राएलियों ने एलिय्याह और एलीशा की सेवकाई पर पश्चाताप नहीं किया और नीनवे के लोगों ने वैसी प्रतिक्रिया दी जैसी इस्राएल को मिलनी चाहिए थी। " इसके अलावा, यह कि ईश्वर एक क्षणिक पश्चाताप के प्रति भी दयालुता से प्रतिक्रिया करता है, इसका प्रमाण अहाब

को बख्शाने से मिलता है, जिसने एलिय्याह की आसन्न न्याय की धमकी के जवाब में उसी प्रकार प्रकट किया जो केवल एक अल्पकालिक पश्चाताप हो सकता था।" तुम्हें याद है जब अहाब ने पश्चाताप किया या अपने बेटे पर आने वाले फैसले को स्थगित कर दिया।

एकाधिक चमत्कार समस्या यदि आप एलन और अन्य लोगों की दिशा में जा रहे हैं, जो कहते हैं कि यह इस लघु कहानी के चमत्कारी तत्वों का गुणन है जो आपको इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि लेखक इतिहास का वर्णन करने का इरादा नहीं रखता है, तो आपको यह समझना होगा ये चीज़ें अन्यत्र भी घटित होती हैं। फिर आप 2 राजाओं अध्याय 4-7 के साथ क्या करते हैं? 2 किंग्स 4-7 में, आपके पास 4 अध्याय हैं। योना में आपके पास 4 अध्याय हैं। 2 राजा 4-7 में, 4:1-7 में, ऋण चुकाने के लिए भविष्यवक्ताओं की मंडली के एक सदस्य की पत्नी के उन घड़ों में तेल कई गुना बढ़ाया जाता है। 4:8-37 में एलीशा ने शुन्नामी स्त्री को एक पुत्र देने का वादा किया और बाद में उसे मृतकों में से जीवित कर दिया। 4:8-34 में एलीशा भविष्यवक्ताओं के पुत्रों के लिए भोजन को शुद्ध और बढ़ाता है। अध्याय 5 में एलीशा नामान को ठीक करता है। अध्याय 6 में एक कुल्हाड़ी तैराई गई है। अध्याय 6:8 में इस्राएल के कुछ लोग अंधेपन से पीड़ित थे। 6:24 से 7:20 में उसने घेराबंदी के दौरान सामरिया की मुक्ति की भविष्यवाणी की। तो मुझे लगता है कि आप जो कह सकते हैं वह यह है कि जब आप 2 राजाओं की कहानियों पर जाते हैं तो आपके पास 4 अध्याय होते हैं जिनमें समान रूप से "आँखें-चौका देने वाली" चमत्कारी घटनाएँ होती हैं, अगर यह आपको यह कहने के लिए प्रेरित करेगा, "जोना की किताब ऐतिहासिक नहीं है।" मुझे ऐसा लगता है, निरंतरता के कारण आपको यह कहना चाहिए कि 2 किंग्स 4-7 भी एक भविष्यसूचक कथा है। एक बार जब आप ऐसा कर लेते हैं तो फिर आप वहां से कहां जाते हैं? क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि जिस तरह का साहित्य आपको योना में मिलता है, उसी तरह का साहित्य आपको 2 किंग्स 4-7 में मिलता है। मैं यह नहीं समझता कि आप 2 किंग्स 4-7 को ऐतिहासिक कैसे मान सकते हैं, लेकिन फिर कह सकते हैं, लेकिन मैं जोना को स्वीकार नहीं कर सकता, या इसके विपरीत। तो मुझे ऐसा लगता है, सवाल यह नहीं है कि कोई क्या सोचता है कि यह संभव या

संभावित है। बल्कि बात यह है कि यहाँ लेखक वास्तविकता का वैसा वर्णन करने का इरादा रखता है या नहीं जैसा वह जानता है। ऐसा हुआ या नहीं, इसके बारे में लेखक की मंशा क्या है? चमत्कारी घटनाओं को शामिल करना, भले ही ये घटनाएँ त्वरित उत्तराधिकार में दर्ज की गई हों, इसकी ऐतिहासिकता के विरुद्ध एक वैध मानदंड नहीं है।

जैसा कि सी.एस. लुईस कहते हैं, हम अब पलायन की ओर वापस जाते हैं, “ अब निश्चित रूप से हमें ऐसा करना ही होगा ह्यूम से सहमत हूँ कि यदि चमत्कारों के विरुद्ध बिल्कुल 'समान अनुभव' है, यदि दूसरे शब्दों में वे कभी घटित नहीं हुए, तो फिर वे कभी क्यों नहीं हुए। दुर्भाग्य से, हम उनके खिलाफ अनुभव को एक समान तभी जानते हैं जब हम जानते हैं कि उनके बारे में सभी रिपोर्टें झूठी हैं। और हम सभी रिपोर्टों को तभी झूठा मानते हैं जब हम पहले से ही जानते हों कि चमत्कार कभी नहीं हुआ है। दरअसल, हम एक दायरे में बहस कर रहे हैं। मुझे लगता है कि आखिरकार हमें विश्वदृष्टि के इस प्रश्न पर वापस धकेल दिया जाता है और आप दैवीय हस्तक्षेप की संभावना को स्वीकार करने के इच्छुक हैं या नहीं। तो यह इस पर थोड़ा और विस्तृत नज़र है।

मछली की कहानी और प्राचीन समुद्री राक्षस

मैंने कहा है कि आम तौर पर दो कारणों से गैर-ऐतिहासिक विचार होते हैं। पहला चमत्कारी होगा। दूसरा कारण यह है कि मछली की कहानी को अन्य लोगों के मिथकों और किंवदंतियों से लिया गया माना जाता है। इसके बाद जब आप व्युत्पत्ति के साक्ष्यों की जांच करेंगे तो मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि योना की कहानी और अन्य कहानियों के बीच बहुत अधिक मेल नहीं है। अधिकांश समानताएँ किसी के समुद्री राक्षस के पेट से बचाए जाने के विचार में पाई जाती हैं। ग्रीक साहित्य में ट्रोजन राजा की बेटी हेसियोन को देवताओं को खुश करने के लिए एक समुद्री राक्षस को दे दिया गया था लेकिन हरक्यूलिस ने उसे बचा लिया था। लेकिन हरक्यूलिस को इनाम नहीं दिया गया। ग्रीक साहित्य में भी, पर्सियस ने एक युवती को समुद्री राक्षस से बचाया और उससे शादी की। हेरोडोटस एरियन के बारे में बताता

है, जिसे एक समुद्री राक्षस से बाहर निकाला गया था और डॉल्फिन ने बचाया था।

पृष्ठ 41 पर आल्डर्स की टिप्पणियों के लिए अपने उद्धरण पृष्ठ 41 पर जाएं। वह कहते हैं, “ एक तीसरा तर्क जिसे त्याग दिया जाना चाहिए वह है समानताओं पर आधारित, विशेष रूप से मछली की कहानी पर। कई विद्वान गैर-बाइबिल स्रोतों से समानताएँ एकत्र करने में लगे हुए हैं। बार-बार यह दावा किया गया है कि लेखक ने अपनी कहानी लिखने के लिए प्राचीन मिथकों और लोक कथाओं का उपयोग किया है। हालाँकि, यह साबित करना असंभव है कि वह ऐसी कहानियों से परिचित भी था। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि लेखक ने ऐसे स्रोतों से उधार लिया है। “ अनुरूपता के जो बिंदु दिखाए जा सकते हैं वे इतने कम और महत्वहीन हैं, कि इनसे यह साबित करना असंभव है कि योना के लेखक ने बुतपरस्त किंवदंतियों का इस्तेमाल किया था या जानते भी थे। और यदि ऐसी सामग्री से परिचित होना स्पष्ट रूप से साबित नहीं किया जा सकता है, तो ये समानताएं समस्या के समाधान में कैसे योगदान दे सकती हैं, चाहे लेखक का इरादा एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड देने का हो या एक उपदेशात्मक कथा लिखने का?

हैंडआउट पर पृष्ठ 5 के नीचे नोट करें, यहां तक कि अब्राहम कुएनन ने भी कहा कि मछली के चमत्कार की कहानी पूरी तरह से लेखक के धार्मिक दृष्टिकोण से मेल खाती है और इसलिए हमें कुछ विदेशी मूल, विशेष रूप से मिथकों से व्युत्पन्न बताने का कोई अधिकार नहीं है। किंवदंतियाँ जिनमें सहमति के केवल कुछ बिंदु ही दिखाए जा सकते हैं।

रूपक दृष्टिकोण के साथ समस्याएँ

अब कुछ और विशिष्ट टिप्पणियाँ। इनमें से एक थी गैर-ऐतिहासिक विचारों के कारणों की चर्चा: चमत्कारी। दो, रूपक दृष्टिकोण पर अधिक विशिष्ट टिप्पणियाँ। मुझे लगता है कि रूपक दृष्टिकोण के साथ कठिनाई यह है कि विवरण पर जोर देने पर इसमें कठिनाई आती है। उदाहरण के लिए, योना का खुद को समुद्र में फेंकने के लिए चालक दल से आग्रह करना शायद ही इज़राइल के कैद में जाने पर लागू होता है। कहानी में, मछली योना को मौत में डूबने से बचाने का दैवीय रूप से निर्धारित साधन है, जो कैद पर भी शायद ही लागू

होता है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि कुछ मामलों में योना को इसराइल का विशिष्ट या प्रतिनिधि माना जा सकता है। मुझे लगता है कि यह काफी संभव है। वास्तव में, मुझे लगता है कि इसे इस तरह से समझना संभवतः सबसे अच्छा होगा। लेकिन यह इस बात को बनाए रखने से बिल्कुल अलग है कि कथा को इज़राइल के रूपक के रूप में डिजाइन किया गया था। योना का एक प्रतिनिधि या विशिष्ट महत्व योना और इज़राइल के बीच कुछ समानताएँ मान लेगा। एक रूपक व्याख्या में एक विस्तृत पत्राचार की अपेक्षा की जा सकती है।

यह तब स्पष्ट हो जाता है जब हम योना की पुस्तक की तुलना पुराने नियम के रूपकों के अन्य उदाहरणों से करते हैं। पुराने नियम में कुछ रूपक हैं। मैं तुम्हें उनमें से दो दूंगा। यहजेकेल 17:2-10 में, यहजेकेल कहता है, “हे मनुष्य के सन्तान, एक रूपक स्थापित कर, और इस्राएल के घराने को एक दृष्टान्त सुना। उनसे कहो, ' परमेश्वर यहोवा यों कहता है: शक्तिशाली पंखों, लंबे पंखों और विविध रंगों से भरे पंखों वाला एक बड़ा उकाब लबानोन में आया। उसने एक देवदार की चोटी को पकड़कर उसकी सबसे ऊपरी डाली को तोड़ डाला, और उसे व्यापारियों के देश में ले गया, और वहां से उसने उसे व्यापारियों के नगर में रोप दिया। उसने तुम्हारी भूमि का कुछ बीज लिया और उसे उपजाऊ भूमि में डाला। उस ने उसे विलो की नाई प्रचुर जल के पास बोया, और वह उगकर छोटी, फैलनेवाली लता बन गई। उसकी शाखाएँ तो उसकी ओर मुड़ गईं, परन्तु उसकी जड़ें उसके नीचे ही रह गईं। इस प्रकार वह लता बन गई, और शाखाएं निकलीं, और पत्तेदार शाखाएं निकलीं। लेकिन शक्तिशाली पंखों और पूरे पंखों वाला एक और बड़ा उकाब था। अब बेल ने उस स्थान से जहां वह रोपा गया था, अपनी जड़ें उसकी ओर फैला दीं, और पानी के लिये अपनी शाखाएं उसकी ओर फैला दीं। उसे प्रचुर जल के पास अच्छी भूमि में लगाया गया था, ताकि उस पर शाखाएं निकले, फल लगे और वह एक शानदार लता बन जाए।' उन से कहो, प्रभु यहोवा यों कहता है, क्या वह फलेगा? क्या वह उखाड़कर उसका फल छीन न लिया जाएगा, कि वह सूख जाए? उसकी सारी नई वृद्धि सूख जायेगी। इसे जड़ से उखाड़ने के लिए किसी मजबूत हाथ या बहुत से लोगों की आवश्यकता नहीं होगी। यदि इसे प्रत्यारोपित भी कर दिया जाए

तो क्या यह पनपेगा? क्या पूर्वी हवा के झोंके में यह पूरी तरह सूख नहीं जाएगा—जिस भूखंड में यह उगा था, वहीं सूख नहीं जाएगा?”

अब, पद 3 में शक्तिशाली पंखों वाला उकाब नबूकदनेस्सर है, और वह लेबनान से यहूदा के छोटे से देश में आया था। उसने देवदार की चोटी को पकड़कर उसकी सबसे ऊपरी शाखा को तोड़ दिया और उसे अपने साथ ले गया।” वह यहोयाकीन है, जिसे “व्यापारियों के देश में ले जाया गया, जहां उसने इसे व्यापारियों के एक शहर में बसाया,” वह बाबुल है। “उसने तुम्हारी भूमि का कुछ बीज लिया और उसे उपजाऊ भूमि में डाला,” वह सिदकिय्याह है। “उसने इसे विलो की तरह लगाया... और यह कम फैलने वाली लता बन गई। परन्तु एक और उकाब था, वह मिस्र का फिरौन होफरा था। आगे कहते हुए, “और हे मनुष्य के सन्तान, तू उन से या उनकी बातों से मत डर। यद्यपि तेरे चारों ओर झाड़ियाँ और काँटे हैं, और तू बिच्छुओं के बीच में रहता है, तौभी मत डर। वे जो कुछ कहते हैं, उस से मत डरना, और न उन से घबराना; यद्यपि वे बलवा करनेवाले घराने के हैं। चाहे वे सुनें या न सुनें, तौभी तुम्हें मेरी बातें उन से कहनी ही पड़ेंगी, क्योंकि वे बलवा करते हैं।”

अब यह इस समय के इतिहास के काफी करीब बैठता है, और जब आप श्लोक 12 में जाते हैं तो आपको पाठ में ही एक व्याख्या मिलती है। पद 15, “परन्तु राजा ने मिस्र में अपने दूत भेजकर उसके विरूद्ध बलवा किया।” तो व्याख्या वहीं है। इसका परिचय इस कथन से दिया जाता है कि यह एक दृष्टांत है, बताया जाता है, फिर व्याख्या होती है।

यहेजकेल 19 में आपके पास एक और रूपक है। यहेजकेल 19:1, “इस्त्राएल के हाकिमों के विषय में विलाप का गीत बनाकर कहो: 'तेरी माता सिंहों में कैसी सिंहनी थी! वह जवान सिंहों के बीच में लेटती और अपने बच्चों को पाला। उसने अपने एक बच्चे को पाला और वह एक ताकतवर शेर बन गया।' शेर इसराइल जैसा प्रतीत होता है। उसका एक शावक यहोआहाज़ है। “वह एक ताकतवर शेर बन गया। उसने शिकार को फाड़ना सीख लिया और वह मनुष्यों को निगल गया। राष्ट्रों ने उसके विषय में सुना, और वह उनके गड़हे में फँस गया। वे उसे काँटों से पकड़कर मिस्र देश तक ले गए। वह एक प्रार्थना द्वारा लिया गया था। जब उसने अपनी आशा अधूरी देखी, उसकी उम्मीदें खत्म हो गईं, तो उसने अपने

एक और शावक को ले लिया और उसे एक मजबूत शेर बना दिया। वह शेरों के बीच घूमता रहा।” वह यहोयाकीन ही प्रतीत होता है। तो हम इसे फिर से 2 किंग्स की किताब में खोज सकते हैं, और फिर उस समय के इतिहास का एक रूपक वर्णन पढ़ सकते हैं।

यदि आप इस तरह के उदाहरणों की तुलना योना की पुस्तक से करते हैं, तो आप जो पाते हैं वह बहुत छोटा है। उनके पास उनके रूपक चरित्र का अचूक संकेत है। आप यहजेकेल 17:19 को पढ़कर यह निष्कर्ष नहीं निकालेंगे कि उकाबों और देवदारों के बारे में जो कहा गया था, उसके शब्दों के अर्थ में यह ऐतिहासिक है। अतः रूपक लक्षण का संकेत मिलता है। योना की पुस्तक में ऐसे संकेत नहीं मिलते हैं, और ऐसा लगता है कि हमारा यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि इसे रूपक अर्थ में नहीं समझा जाना चाहिए।

दृष्टान्त दृष्टिकोण के साथ समस्याएँ

यह हमें "दृष्टान्त" पर लाता है, और आप योना की तुलना पुराने नियम के दृष्टान्तों के उदाहरणों से कर सकते हैं। मुझे लगता है कि आप फिर से पाएंगे कि योना में जो दृष्टान्त हैं, वे उससे काफी भिन्न हैं। मैंने तीन को सूचीबद्ध किया है जो दृष्टान्त हैं। आप न्यायाधीश 9, 2 शमूएल 12:1-4 में नाथन का दृष्टान्त, और 2 शमूएल 14:6-7 में तकोआ की बुद्धिमान स्त्री का दृष्टान्त देख सकते हैं। यदि आप उन्हें देखते हैं, तो मैं समय नहीं लगाऊंगा, लेकिन जब आप उन्हें देखते हैं और पढ़ते हैं, तो मुझे लगता है कि दो चीजें सामने आती हैं। ए., वे बहुत छोटे, सरल और नुकीले हैं। मतलब साफ़ है। प्रत्येक मामले में एक बुनियादी बात कही जा रही है। न्यायाधीश 9 अबीमेलेक को राजा बनाने की मूर्खता की ओर इशारा करते हैं। 2 शमूएल 12:1-4, कि दाऊद बतशेबा का दोषी है। 2 शमूएल 14:12-14, दाऊद को अबशालोम को यरूशलेम लौटने की अनुमति देनी चाहिए। और बी., वहां संदर्भ में एक सीधा संकेत है जो इसे बिल्कुल स्पष्ट करता है। डेविड को बताया गया कि यह एक कहानी थी। यदि आप इसकी तुलना योना की पुस्तक से करते हैं, तो योना की पुस्तक की विशेषता न तो एक एकल बिंदु बनाकर और न ही अनुप्रयोग के किसी संकेत द्वारा की गई है। और इसके अलावा, इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं है कि कहानी में एक वास्तविक व्यक्ति

प्राथमिक व्यक्तित्व क्यों है। मुझे ऐसा लगता है कि ये चीज़ें संयुक्त रूप से एक परवलयिक व्याख्या के विरुद्ध तर्क देती हैं।

अपने उद्धरणों के पृष्ठ 43 को देखें जहां डीजे वाइसमैन ने एक लेख में एक बयान दिया था जो *टिंडेल बुलेटिन* में है। वह कहते हैं, “ यदि यह एक दृष्टांत है तो यह पुराने नियम के अन्य लोगों की तुलना में अपनी लंबाई और स्पष्टीकरण की कमी में अद्वितीय है और अन्य सभी प्राचीन निकट पूर्वी समानताओं से अनुपस्थित 'चमत्कारी तत्वों' को शामिल करने में अद्वितीय है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है यदि 'दृष्टांत की सार्थकता मानवीय स्थिति को चित्रित करने के रूप में इसकी सत्यता पर निर्भर करती है।' ” दूसरे शब्दों में, आप किसी दृष्टांत में चमत्कारी तत्वों को खोजने की उम्मीद नहीं करेंगे। यह दृष्टान्त शैली की विशेषता नहीं है।

पृष्ठ 43 पैराग्राफ 3 एलन की प्रतिक्रिया देता है। वह कहते हैं, " निश्चित रूप से कहानी एक कथात्मक रूप में प्रस्तुत की गई है, लेकिन "सभी दृष्टांत ऐतिहासिक घटनाओं के रिकॉर्ड से मिलते जुलते हैं... योना की पुस्तक के रूप से यह तर्क देना असंभव है कि इसका मतलब ऐतिहासिक घटनाओं का रिकॉर्ड होना चाहिए घटनाएँ ।" दूसरे शब्दों में, दृष्टांत रूप ऐतिहासिक रूप के इतने करीब हैं कि आप वास्तव में अंतर नहीं कर सकते।

" एक और कारक जिसे ध्यान में रखा जाना चाहिए वह है 2 किंग्स 14:25 के भविष्यवक्ता के साथ नायक या विरोधी नायक की स्पष्ट रूप से इच्छित पहचान," इसलिए वह योना की किताब के बाहर भी 2 किंग्स में उल्लिखित योना के इस मुद्दे को संबोधित करते हैं । "यहाँ कम से कम एक ऐतिहासिक आधार है, जो बताता है कि हमारी पुस्तक में संबंधित घटनाएँ ऐतिहासिक हैं।" और फिर वह कहते हैं, " कहानी के पीछे एक ऐतिहासिक केंद्र हो सकता है , लेकिन यह इसके वर्तमान स्वरूप में इसकी समझ के लिए प्रासंगिक नहीं है। अच्छे सामरी (लूका 10:25-37) के दृष्टांत के पीछे 2 इतिहास 28:15 है... डाइव्स और लाजर के दृष्टांत के पीछे रब्बी की कहानी छिपी हो सकती है कि इब्राहीम का प्रबंधक एलीएजेर, जिसका लाजर ग्रीक रूप है, कैसे था अपने नागरिकों के आतिथ्य का परीक्षण करने के लिए सदोम भेजा गया। लेकिन कोई भी इन दृष्टांतों को घटनाओं के सीधे-सीधे

वर्णन से अलग करने में असफल नहीं होगा। प्रत्येक मामले में किसी नई और समसामयिक चीज़ के निर्माण के लिए पुराने विषय को कच्चे माल के रूप में उपयोग किया गया है। अब वह कई संघ बनाता है जो कुछ दृष्टान्तों के पीछे हैं। इसमें शामिल हों और इस पर चर्चा करें और मुझे लगता है कि आप उनमें से कुछ संघों पर सवाल उठा सकते हैं, लेकिन इसके अलावा वह जो भी उदाहरण देते हैं उनमें से कोई भी दृष्टान्त में किसी ज्ञात ऐतिहासिक व्यक्ति के नाम का वर्णन नहीं करता है। जोना की किताब ऐसा करती है, इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि वहां की सादृश्यता, हालांकि दिलचस्प है, वास्तव में वह वजन नहीं रखती है जिसे वह उठाने की कोशिश कर रहा है।

मैं देख रहा हूं कि मेरा समय समाप्त हो गया है, हमें "सामग्री" नहीं मिल पाई है। तो चलिए यहीं रुकते हैं। अगली बार हमें जोना की सामग्री के बारे में थोड़ी चर्चा करनी होगी और अमोस पर जाना होगा।

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, फ़ाउंडेशन बाइबिल भविष्यवाणी, व्याख्यान 21ए

चतुर्थ. जोनाह

सी. जोनाह की सामग्री

हम योना की किताब में थे, जो रोमन अंक IV है। दूसरे खंड में हमने पुस्तक के चरित्र की अभिव्यक्ति पर गौर किया। यह ऐतिहासिक लेखन है या नहीं? तो हम सी., "पुस्तक की सामग्री" पर आते हैं और मेरे पास दो उप-बिंदु हैं। मैं सभी चार अध्यायों पर काम नहीं करूंगा। लेकिन मैं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में बात करना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि इसका किताब के संदेश से संबंध है। फिर दूसरी बात मैं पुस्तक के उद्देश्य को देखना चाहता हूँ।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ए. असीरिया का बाहरी आरोहण तो पहले "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।" पहला, ए., "बाहरी", योना के समय इज़राइल के बाहर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्या स्थिति थी। मैं इस पर आगे बढ़ना चाहता हूँ इसलिए मैं इसे पूरा नहीं पढ़ूंगा बल्कि इसका सारांश दूंगा। आप ओम्री के समय के बारे में ध्यान दें, अशूर फिर से ताकत हासिल करना शुरू कर देता है। अशूर-नासिर-पाल (883-859 ईसा पूर्व) असीरियन शक्तिशालियों में से एक है जो असीरियन शक्ति को फिर से स्थापित करता है। सैन्य दृष्टि से असीरियन क्रूर लड़ाके थे; मेरे पास आपके हैंडआउट्स में अशूरियों द्वारा उपयोग की जाने वाली क्रूर प्रकार की रणनीतियों और युक्तियों का विवरण है। लेकिन मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि असीरिया ने इसराइल को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। आपने देखा होगा कि इसराइल की असीरिया के साथ सिलसिलेवार मुठभेड़ें हुई थीं। अहाब (853 ईसा पूर्व) के समय में, अहाब ओरोन्टेस नदी पर करकार की लड़ाई में अशूरियों से लड़ने के लिए सेना में शामिल हो गया। बाइबिल में इसका उल्लेख नहीं है। दूसरे, ओरोन्टेस नदी पर उस गतिरोध के बाद 841 तक शल्मनेसर III के तहत, असीरिया वापस आ गया, और उत्तर के राजा, विशेष रूप से जेहू, असीरियन राजा को श्रद्धांजलि देने के लिए मजबूर हो गए। वहाँ एक प्रसिद्ध ब्लैक ओबिलिस्क है जिसमें जाहू को 841 ईसा पूर्व में अशूरियों को श्रद्धांजलि देते

हुए घुटने टेकते हुए चित्रित किया गया था, इसलिए असीरिया ने उत्तरी साम्राज्य की निरंतर स्वतंत्रता के लिए वास्तविक खतरों का दावा करना शुरू कर दिया। 833 ईसा पूर्व में यहोआहाज ने एक उत्तराधिकारी असीरियन राजा को श्रद्धांजलि अर्पित की। इसलिए 800 के दशक में असीरिया ने इज़राइल पर दबाव बनाना शुरू कर दिया।

योना और उरारतु-अश्शूर का कमजोर होना

इसका योना पर क्या प्रभाव पड़ता है? योना थोड़ा बाद में, लगभग 782-780 ईसा पूर्व मैंने उल्लेख किया था कि असीरिया उत्तर में उरारतु के साथ संघर्ष में शामिल था। वे मेसोपोटामिया के उत्तरी भाग से पहाड़ों से आये लोग थे। वे नीनवे के सौ मील भीतर घुस गये। कुछ लोगों का मानना है कि इन पर्वतीय योद्धाओं से असीरिया का अस्तित्व खतरे में पड़ गया था। यह असीरियन कमजोरी का समय है जिसमें हमारे पास बहुत अधिक जानकारी नहीं है, इसलिए पर्याप्त मात्रा में विवाद है। लेकिन कुछ लोग सोचते हैं कि यह वह समय है जब योना नीनवे में था, और यदि ऐसा है, तो अश्शूर को स्वयं उत्तर से इन लोगों द्वारा धमकी दी जा रही है। यह योना के संदेश को सुनने के लिए अश्शूरियों की तत्परता को समझा सकता है जब उसने कहा, "40 दिनों में, नीनवे को नष्ट कर दिया जाएगा।" शायद वह महज़ एक घटिया धमकी नहीं थी; शायद यह असीरिया के लिए एक वास्तविक खतरा था।

आपकी ग्रंथ सूची में डीजे वाइसमैन के एक लेख में, उन्होंने सुझाव दिया है कि 763 ईसा पूर्व में एक सूर्य ग्रहण था, 765 में एक अकाल था, और एक भूकंप था जो सभी उस सामान्य समय सीमा में थे, और इसलिए उन प्रकार के संकेतों ने भी इसमें योगदान दिया हो सकता है योना का संदेश सुनने के लिए अश्शूर की इच्छा। यदि आप इज़राइल वापस आते हैं, तो अश्शूर की हार से बेहतर इज़राइल के लिए कुछ भी नहीं होगा। योना के समय से पहले, उन्हें न केवल सीरिया से, बल्कि असीरिया से भी खतरा था। सीरिया एक खतरा नहीं रह गया था और असीरिया और भी खतरा बन गया था।

उस संदर्भ में योना को इस राष्ट्र में भेजा गया है जो इज़राइल के लिए एक गंभीर खतरा है। मुझे लगता है कि इससे हमें उस शहर में जाने के लिए योना की अनिच्छा को

समझने में मदद मिलती है, साथ ही योना के संदेश को सुनने के लिए अशूरियों के खुलेपन को भी समझने में मदद मिलती है। तो यह बाहरी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि संदर्भ का एक संक्षिप्त सारांश है।

बी। आंतरिक:

यारोबाम द्वितीय के अधीन समृद्धि

अब "आंतरिक।" आंतरिक स्थिति पर यहां कई विचार जॉन स्टेक के लेख, "जोना की पुस्तक का संदेश " से लिए गए हैं जिसमें उन्होंने बताया है कि इज़राइल और असीरिया दोनों आर्थिक पुनरुत्थान के दौर में थे। यारोबाम द्वितीय का समय काफी हद तक दाऊद और सुलैमान के समय जैसा था; इज़राइल की सीमाएँ विस्तृत थीं और वहाँ आर्थिक समृद्धि थी। और आप आश्चर्य करते हैं कि क्या गलत हो रहा है, क्योंकि इज़राइल भगवान के प्रति वफादार नहीं है। भविष्यवक्ता इस्राएल में व्यभिचार और अनैतिकता के कारण आने वाले न्याय की बात कर रहे हैं। इसलिए आप यह नहीं कह सकते कि समृद्धि पश्चाताप करने वाले और अब वफादार लोगों के लिए ईश्वर का पुरस्कार है। बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह ईश्वर की ओर से उस राष्ट्र को राहत देने का अनुग्रह है जिसे उसने हाल ही में उनके पापों के कारण बड़ी गंभीरता से दंडित किया था।

2 राजा 14:26 को देखें। आपने वहाँ पढ़ा, "प्रभु ने देखा था कि इस्राएल में हर कोई, चाहे दास हो या स्वतंत्र, कितनी बुरी तरह से पीड़ित था; उनकी मदद करने वाला कोई नहीं था। और चूँकि यहोवा ने नहीं कहा था कि वह इस्राएल का नाम स्वर्ग से मिटा देगा, उसने यहोआश के पुत्र यारोबाम के हाथ से उनका उद्धार किया।" अब, वह पद जिस बात का उल्लेख कर रहा है वह यारोबाम की अपनी सीमाओं का विस्तार करके इज़राइल के माध्यम से समृद्धि प्राप्त करने में सफलता है, इसके विपरीत जो पहले सीरियाई लोगों द्वारा उत्पीड़न का मामला था - असीरियन नहीं बल्कि सीरियाई - जिन्होंने इज़राइल पर दबाव डाला था। इसलिए मैंने आपकी रूपरेखा पर जो नोट किया है वह यह है कि लोगों को अभी भी याद है कि एलिय्याह और एलीशा के समय में, अहाब और यहोआहाज के समय में, भगवान ने

इज़राइल के साथ कैसे व्यवहार किया था, जिसमें इज़राइल पर न केवल विदेशी राष्ट्र की सरकार थी, भविष्यवक्ताओं द्वारा फटकार के शब्द, लेकिन पड़ोसी अन्यजातियों पर भगवान के आशीर्वाद के संकेत भी।

एलिय्याह और एलीशा का सीरिया को लाभ

उदाहरण के लिए, एलिय्याह के समय में इस्राएल में बहुत सी विधवाएँ थीं, परन्तु जेरापत की विधवा के माध्यम से ही यहोवा ने अकाल के समय एलिय्याह को उसका भरण-पोषण करने के लिए भेजा। अब यीशु उसका उल्लेख करते हैं। एलीशा के समय में बहुत से कोढ़ी थे, परन्तु केवल सीरियाई अधिकारी नामान ही ठीक हुआ था। वह दया उन पर तब भी दिखाई गई, जब उस समय उनका राष्ट्र, सीरिया, इज़राइल पर हावी था। वास्तव में, इस सामान्य समय में, अहाब से यहोआहाज तक, आप पाते हैं कि सीरिया पर समृद्धि के माध्यम से ईश्वर द्वारा विशेष अनुग्रह दिखाया गया था। एलिजा को सीरिया में हजाएल का अभिषेक करने के लिए नियुक्त किया गया था, एलीशा ने भविष्यवाणी की थी कि वह इसराइल के लिए बुरा होगा। एलीशा ने चमत्कारिक ढंग से सीरियाई सेना को बचाया जो इज़राइल पर हमला कर रही थी। तो आपको आश्चर्य होगा, यहाँ क्या हो रहा है?

Deut. 32:21 भगवान ने विदेशी राष्ट्रों को आशीर्वाद देकर इसराइल को ईर्ष्या के लिए उकसाया है, स्टेक जिस सिद्धांत की ओर इशारा करते हैं वह वही प्रतीत होता है जो मूसा ने व्यवस्थाविवरण 32:21 में मोआब के मैदानों पर इज़राइल को समझाया था। इसमें लिखा है, “उन्होंने मुझमें उस चीज़ के कारण ईर्ष्या पैदा की जो कोई ईश्वर नहीं है और अपनी बेकार मूर्तियों से मुझे क्रोधित किया। मैं उन लोगों के कारण उन से ईर्ष्या करूंगा जो लोग नहीं हैं; मैं उनको ऐसी जाति के द्वारा क्रोधित करूंगा जो समझ नहीं रखती।” मेरेडिथ क्लाइन ने ड्यूटेरोनॉमी, *एक महान राजा की संधि* पर अपने काम में इस पर टिप्पणी की है, और कहते हैं, “अगर उसने कनान के गैर-देवताओं के साथ वेश्या की भूमिका निभाई तो वाचा के श्रापों ने इज़राइल को विलुप्त होने की धमकी दी। *लेक्स टैलियोनिस सिद्धांत* को

लागू करते हुए , यानी, प्रतिशोध का नियम, भगवान गैर-लोगों के माध्यम से इज़राइल में ईर्ष्या भड़काएगा। उन्होंने मुझ में उन लोगों के द्वारा ईर्ष्या उत्पन्न की जो परमेश्वर नहीं हैं, मैं उन लोगों के द्वारा उन में ईर्ष्या उत्पन्न करूंगा जो मनुष्य नहीं हैं। "वह उन चुने हुए लोगों को अस्वीकार कर देगा जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था, उनसे अपनी वाचा संबंधी सुरक्षा हटा देगा और ऐसे लोगों को अनुदान देगा जो अपने बच्चों पर विजय पाने के लिए उसकी वाचा के पक्ष को नहीं जानते थे।" तो ऐसा लगता है कि प्रतिशोध का सिद्धांत, या प्रतिस्थापन का सिद्धांत, आप इसे कह सकते हैं, योना के समय से ठीक पहले, इज़राइल और सीरिया के साथ भगवान के व्यवहार में इज़राइल में काम कर रहा था। वह एक तरह से सीरिया को आशीर्वाद दे रहा है और इजराइल पर अत्याचार कर रहा है। तो यह योना के समय से ठीक पहले की बात है। अब, असीरिया से अपनी हार के कारण सीरिया का पतन हो रहा है। और यहोवा का जो वचन योना ने यारोबाम के विषय में कहा था, वह पूरा होने पर था। तुम्हें याद होगा कि यह भविष्यवाणी की गई थी कि यारोबाम की सीमाएँ फ़रात तक फैलेंगी। यह सीरिया की कीमत पर हो रहा है। इस्राएल उत्तर की ओर हमात तक फैला हुआ था।

अमोस और होशे ने इज़राइल के पाप की निंदा की

फिर भी, जबकि ऐसा हो रहा है इजराइल में सब कुछ ठीक नहीं है। आमोस इस्राएल के पाप की निंदा कर रहा था या निंदा करने वाला था। जब हम अमोस में पहुँचेंगे तो हम उनमें से कुछ पाठों को देखेंगे। वह भविष्यवाणी कर रहा था कि इस्राएल दमिश्क अर्थात् अश्शूर से आगे बन्धुवाई में जानेवाला है। इजराइल को नीचा दिखाना है। इस निर्णय का साधन मेसोपोटामिया क्षेत्र का एक राष्ट्र होगा। होशे 4:1, 10:6, और 11:5 में वही संदेश प्रचारित कर रहा था। होशे ने अश्शूर का उल्लेख किया है। इसलिए, इज़राइल की विशेषता गर्व और शालीनता की भावना, धार्मिक धर्मत्याग में दृढ़ता और नैतिक भ्रष्टाचार है। उसने वास्तव में अपना विशेष पद खो दिया जो परमेश्वर के चुने हुए लोग होने के कारण उसका था, लेकिन वास्तव में क्या हो रहा है कि इज़राइल ने उसके चुनाव को विशेषाधिकार के चुनाव के रूप में देखा, लेकिन यह एक गलत धारणा थी, और वह इस तथ्य से अनभिज्ञ थी कि यह

सेवा के लिए चुनाव था.

प्रतिस्थापन: भगवान के पास लौटें या वह कहीं और काम करेगा

तो यही स्थिति है. परमेश्वर ने योना को अश्वरू जानने के लिए कहा। उसे एक बुतपरस्त राष्ट्र को उस वाचा के दायित्वों और विशेषाधिकारों के साथ प्रस्तुत करना है जिसे इज़राइल अस्वीकार कर रहा है। और ऐसा लगता है कि प्रतिस्थापन के इस विचार का उल्लेख यीशु ने ल्यूक 4:25-26 में जरापत और नामान की विधवा के संबंध में किया है; वह सिद्धांत जो सीरियाई लोगों के संबंध में इस समय तक पहले ही प्रदर्शित हो चुका था। यदि परमेश्वर के लोग इस संदेश को अस्वीकार कर देते हैं, तो अन्यजातियों को वाचा के दायित्वों और विशेषाधिकारों के लिए बुलाया जाएगा। अब यह स्टेक का सुझाव है कि आंतरिक रूप से क्या चल रहा है और जोनाह के नीनवे जाने वाले इस मिशन का धार्मिक महत्व क्या है। यह प्रतिस्थापन है; यदि आप भगवान की ओर नहीं मुड़ते हैं, तो भगवान कहीं और काम करेंगे। परमेश्वर के लोगों को हमेशा इस सच्चाई के प्रति सचेत रहना चाहिए। "जो सोचता है कि वह खड़ा है, वह सावधान रहे, कहीं वह गिर न जाए।" हमारे पास परमेश्वर का वचन नहीं है। यदि हम वफ़ादार और आज्ञाकारी नहीं हैं, तो भगवान अपना काम कहीं और ले जा सकते हैं और हमें अपने अभिशाप और न्याय के अधीन रख सकते हैं।

यह देखना दिलचस्प होना चाहिए कि पश्चिम में ईसाई धर्म के संबंध में अगले 25 से 50 वर्षों में क्या होगा। और ईसाई धर्म का क्या होता है, मान लीजिए चीन में, जो एक बंद देश रहा है, लेकिन जो मैं पढ़ रहा हूं, वहां ईसाई धर्म उल्लेखनीय रूप से फल-फूल रहा है। क्या यह प्रतिस्थापन के इस सिद्धांत का एक और उदाहरण है? क्या ईश्वर उन लोगों से मुंह मोड़ रहा है जिनके पास सभी विशेषाधिकार हैं, और काम कर रहा है और कहीं और चला जा रहा है?

योना के पास वापस जाने के लिए, नीनवे के लिए उसके मिशन का महत्व केवल नीनवे के लोगों तक ही सीमित नहीं है, इसमें इज़राइल और भगवान के साथ उनका अपना रिश्ता भी शामिल है। क्या एलिय्याह और एलीशा के समान पैटर्न के बाद भगवान अश्वरूयों

को इस भविष्यवाणी संदेश के माध्यम से अपने स्वयं के पथभ्रष्ट लोगों पर अपने दावे नहीं दबा रहे थे? तो ये ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर मेरी टिप्पणियाँ हैं।

2. पुस्तक के मुख्य उद्देश्य a. पाप लादेन इसराइल को योना की फटकार

उसके बाद है, "पुस्तक के मुख्य उद्देश्य।" "उद्देश्य" के अंतर्गत, मैंने चार बिंदु सूचीबद्ध किए हैं। सबसे पहले, मुझे लगता है कि योना के मंत्रालय ने, विरोधाभास के माध्यम से, इस्राएलियों के विद्रोही चरित्र को उजागर करने का काम किया। बहुत से भविष्यवक्ता हुए परन्तु उन्होंने पश्चाताप नहीं किया। परन्तु जब नीनवे वचन सुनता है, तो पछताता है!

अपने उद्धरणों में पृष्ठ 44 देखें, स्टेक इस पर टिप्पणी करते हैं, "जोना के नीनवे के भविष्यसूचक मिशन की घटनाएँ पाप से भरे और जिद्दी इज़राइल के लिए फटकार के रूप में भी काम करती हैं। यहां तक कि मूर्तिपूजक नाविक भी आश्चर्यचकित हैं कि योना, जो 'स्वर्ग के भगवान, जिसने समुद्र और सूखी भूमि बनाई,' की सेवा करता है, ऐसे भगवान से भागने का प्रयास करेगा, और आश्चर्य के उनके शब्द एक ही समय में एक फटकार दर्ज करते हैं (द) प्रश्न *आपने क्या किया है?* [1:10]) हमेशा आश्चर्य और आरोप दोनों का संकेत देता है। इसके अलावा, योना के कल्याण के लिए नाविक की चिंता नीनवे के लोगों के प्रति योना के संवेदनहीन रवैये के विपरीत है। यह भी स्पष्ट है कि योना के एक-चिह्न मंत्रालय में नीनवे के लोगों का पश्चाताप इस्राएल के पाप के लिए एक स्थायी फटकार के रूप में कार्य करता है, जिन्होंने हठपूर्वक भविष्यवक्ताओं की चेतावनियों को सुनने से इनकार कर दिया, तब भी जब ये चेतावनियाँ शक्तिशाली संकेतों के साथ थीं जैसा एलिय्याह और एलीशा के मंत्रालयों में था। एक बार फिर, यहोवा 'उन्हें उन लोगों के साथ ईर्ष्या करने के लिए प्रेरित करना चाहता है जो लोग नहीं हैं।' तो इसके विपरीत, योना का संदेश इस्राएल की विद्रोहशीलता के लिए एक चेतावनी भी प्रदान करता है।

बी। इसराइल के पास प्रभु के उद्धार के लिए विशेष अधिकार नहीं थे दूसरा, मुझे लगता है कि योना का मिशन इसराइल पर यह प्रभाव डालने का काम करता है कि उसके पास प्रभु

के उद्धार के लिए विशेष अधिकार नहीं थे। यह आपको नीनवे के लोगों के पश्चाताप के कारण पुस्तक के अंत में मिलता है। राष्ट्रीय गौरव पर आधारित धार्मिक विशिष्टतावाद और चुनाव की गलत अवधारणा के किसी भी विचार को यहां खारिज कर दिया गया है। इज़राइल का चुनाव ईश्वर की कृपा और दया पर था, और इसे ईश्वर जहां भी बढ़ाना चाहे, बढ़ाया जा सकता है; यह विशेष रूप से उनके लिए नहीं था। और जब परमेश्वर ने इसे इस्राएल की सीमा से आगे बढ़ा दिया, तब योना भी क्रोधित हुआ।

सी। जोना का इरादा एक प्रतिनिधि भूमिका निभाने का था तीसरा, यह संभावना है कि जोना का इरादा किसी प्रकार की प्रतिनिधि भूमिका निभाने का था और जो लोग इसे पढ़ते हैं उन्हें यह पुस्तक इसी तरह लगेगी। मुझे लगता है कि यदि आप टिप्पणियों और दुभाषियों को देखें, तो कई लोग इस पर टिप्पणी करेंगे, लेकिन प्रतिनिधि भूमिका वास्तव में क्या है, इसके लिए कोई बड़ा सबूत नहीं है। उसके लिए यहां तीन सुझाव दिए गए हैं। पहला, सामान्यतः मानव जाति का प्रतिनिधि। कथा मनुष्य और मनुष्यों के साथ भगवान के तरीकों और भगवान के साथ उनके संबंधों के बारे में कुछ कहती है। दूसरे, उन लोगों का प्रतिनिधि जिन्हें ईश्वर ने भविष्यसूचक मंत्रालय सौंपा है। योना उन लोगों के लिए एक वस्तुगत सबक है जो अपने बुलावे से मुंह मोड़ लेते हैं। वहां फोकस विशेष रूप से जोना और उसकी कॉल पर है। तीसरी, और शायद सबसे मान्य परिकल्पना, यह है कि योना इसराइल, ईश्वर के लोगों का प्रतिनिधि है। स्टेक टिप्पणी करते हैं, "इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि अश्शूरियों के प्रति योना के रवैये में सभी इज़राइल खुद को उसके साथ पहचानेंगे और खुद को उसके द्वारा धिक्कारा जाना जानेंगे। और इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि लेखक का इरादा बिल्कुल यही था।" इसके अलावा योना इज़राइल के भविष्य के इतिहास के बारे में भी कुछ बता सकता है। योना, एक इस्राएली, को समुद्र में फेंक दिया गया और फिर उसे सौंप दिया गया ताकि वह अपना मिशन पूरा कर सके। इसलिए, इस्राएल राष्ट्र अपनी अवज्ञा के कारण निर्वासन की पीड़ा से तब तक गुज़रेगा जब तक कि उसका कोई अवशेष दुनिया में अपना मिशन पूरा करने के लिए वापस नहीं आ जाता। इस सीमा तक

प्रतीकात्मक विद्यालय सही हो सकता है। योना इस्राएल का अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व कर सकता है। लेकिन साथ ही जोनाह एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति हैं।

डी। इसराइल की बेवफ़ाई परमेश्वर के उद्देश्यों को विफल नहीं करेगी इसराइल के लिए संदेश यह है कि चाहे इसराइल कितना भी विद्रोह करे और विफल हो जाए—परमेश्वर इसराइल में और उसके माध्यम से अपने उद्देश्यों तक पहुंचेगा। जैसा कि स्टेक कहते हैं, "...इज़राइल की वर्तमान बेवफ़ाई यहोवा के इन ऐतिहासिक उद्देश्यों को विफल नहीं करेगी। हालाँकि यह इज़राइल के इतिहास में विभिन्न महत्वपूर्ण अवधियों में पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है, यहाँ इसे अत्यधिक नाटकीय ढंग से प्रदर्शित किया गया है। योना, एक व्यक्ति में पैगम्बर का पद - इसराइल के लिए ईश्वर के प्राथमिक करिश्माई उपहारों में से एक - और 'चुने हुए' लोगों की भावना की विकृत संकीर्णता को मूर्त रूप देते हुए, ईश्वर द्वारा, उसकी इच्छा के विपरीत, एक मिशन को पूरा करने के लिए बाध्य किया जाता है। नीनवे पर दया. इस्राएली भविष्यवक्ता का पाप अशशूर शहर के लिए परमेश्वर के दयालु उद्देश्य को विफल नहीं कर सकता। परमेश्वर अपनी इच्छा को आगे बढ़ाने के लिए उस पाप का उपयोग करने में भी सक्षम है। जब योना अंततः नीनवे जाता है, तो वह न केवल इसराइल के एक भविष्यवक्ता के रूप में जाता है, बल्कि वह हमारे प्रभु (लूका 11:30) के अनुसार, नीनवे के लोगों के लिए एक अद्भुत, ईश्वर-निर्मित संकेत के रूप में भी जाता है, जिसका उन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। उन्हें। उनके प्रति लोगों की प्रतिक्रिया की अपूर्णता, कमजोरी और टूटन इतिहास के संप्रभु भगवान को उनके बचाने के उद्देश्यों को पूरा करने में बाधा नहीं डालती है। 'उद्धार यहोवा की ओर से है।' यहोवा उसके बावजूद इस्राएल में अपना उद्धार कार्य करेगा, न कि उसके कारण।”

इ। डोमिनेट थीम: ईश्वर की संप्रभुता जो मानव विद्रोह के बावजूद अपने उद्देश्यों को पूरा करती है

मुझे लगता है कि वह परिप्रेक्ष्य पुस्तक में सबसे प्रमुख विषय का प्रतीक है: ईश्वर की

संप्रभुता जो मानवीय विद्रोह के बावजूद अपने उद्देश्यों को पूरा करती है। यह परमेश्वर ही है जिसके पास पहला शब्द और अंतिम शब्द है। उन्होंने किताब लिखी। ध्यान दें कि यह 1:1 से शुरू होता है, और समाप्त होता है "क्या मुझे उस महान शहर के बारे में चिंतित नहीं होना चाहिए?" योना 4:10 और 11 देखें, "परन्तु यहोवा ने कहा, 'तू ने इस बेल की चिन्ता की है, यद्यपि तू ने इसकी देखभाल नहीं की और न ही इसे बड़ा किया... परन्तु नीनवे में एक लाख बीस हजार से अधिक लोग हैं... क्या मुझे नहीं होना चाहिए उस महान शहर के बारे में चिंतित हैं?'" तो यह भगवान ही हैं जिनके पास पहला और आखिरी शब्द है। कथा के मुख्य भाग में वह हमेशा मुद्दे को थोपता रहता है। तो स्टेक कहता है, "उसके फैसले से नीनवे को खतरा है; वह भविष्यवक्ता को नियुक्त करता है; वह समुद्र में तूफान भेजता है; वह मछली को 'नियुक्त' करता है; वह पश्चाताप करने वाले नगर को बचा लेता है; वह लौकी प्रदान करता है; वह विनाशकारी कृमि को 'नियुक्त' करता है; वह दमनकारी पूर्वी हवा को 'नियुक्त' करता है; वह भविष्यवक्ता को डाँटता है।" यहां तक कि योना की प्रार्थना भी गवाही देती है, "उद्धार प्रभु की ओर से है," जो कि योना 2:9 में है। तो कथा वास्तव में यहोवा के कार्यों की कथा है। स्टेक कहते हैं, "इसलिए, कोई भी व्याख्या, जो स्पष्ट पुष्टि, या अंतर्निहित सुझाव द्वारा, जोना को केंद्र में रखती है, को केवल इस भविष्यवाणी लेखन की गलत व्याख्या के रूप में आंका जा सकता है।" योना परमेश्वर के हाथ में एक उपकरण है। ईश्वर की संप्रभुता इस पुस्तक के केंद्र में है।

डी। योना मसीहा की मृत्यु और पुनरुत्थान बिंदु के चित्रण के रूप में डी। अक्सर यह कहा जाता है कि मैथ्यू संदर्भ के कारण पुस्तक का उद्देश्य उस व्यक्ति की ओर इशारा करना है जो योना से महान है। ईजे यंग वास्तव में कहते हैं, "जोना की पुस्तक का मूल उद्देश्य उसके मिशनरी या सार्वभौमिक शिक्षण में नहीं पाया जाता है। बल्कि यह दिखाने के लिए है कि योना को अधोलोक की गहराइयों में डाला जाना और फिर भी जीवित उठाया जाना मसीहा की अपने पापों के लिए मृत्यु और मसीहा के पुनरुत्थान का एक उदाहरण है। मुझे ऐसा लगता है कि यंग जब कहते हैं कि यह पुस्तक का मूल उद्देश्य है तो वे अपनी बात

को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं।

यंग की टिप्पणी की तुलना जे. बार्टन पायने की टिप्पणी से करें, जो कहते हैं, “ प्रभु यीशु ने बाद में मछली में योना के प्रवास की अवधि का उपयोग कब्र में अपने तीन दिनों का वर्णन करने के लिए किया; लेकिन इस तरह वह न तो भविष्यवक्ता को स्वयं का एक प्रकार मानता है और न ही यह सुझाव देता है कि योना के चमत्कारी अनुभव को तय करने में यह भगवान का मूल इरादा था।

स्टेक टिप्पणी करते हैं, "कुछ लोगों ने योना की पूरी किताब को इस तरह से संभाला है जैसे कि इसका प्राथमिक उद्देश्य केवल मसीह का एक भविष्यसूचक प्रकार प्रदान करना था। लेकिन अगर इतना ही कहा जा सकता है, तो यह स्वीकार करना होगा कि विरोधी प्रकार के प्रकट होने तक यह प्रकार पूरी तरह से एक पहली बना रहेगा, और जिस इज़राइल को पुस्तक शुरू में संबोधित की गई थी, उसने इसे गलत समझा होगा। इसका वास्तविक अर्थ अवश्य ही उनके लिए एक बंद रहस्य बना रहेगा।" मुझे लगता है कि स्टेक इसमें सही है। मुझे लगता है कि यह गलत ज़ोर है; मैं कुछ कहना पसंद करूंगा जहां वह कहते हैं कि यीशु ने इस कहानी का उपयोग कब्र में अपने तीन दिनों का वर्णन करने के लिए किया था बजाय इसके कि पुस्तक का पूरा उद्देश्य मछली में यीशु और योना की इस उपमा पर आधारित हो।

वी. अमोस ए. लेखक और पृष्ठभूमि

आइए अमोस की ओर चलें। मैं नोट्स में जो कुछ उजागर करता हूं उसमें चयनात्मक रहना चाहता हूं। मैं अमोस 9 मार्ग के लिए कुछ समय बचाना चाहता था। ए के अंतर्गत, "लेखक और पृष्ठभूमि।" एक, "उसका नाम है।" वह 1:1 से तेकोआ का चरवाहा अमोस है। वह पुराने नियम में एकमात्र अमोस है। वह यहूदा से आता है और चरवाहा था।

2. "उसकी भविष्यवाणी गतिविधि का स्थान।" वह, होशे के विपरीत, दक्षिणी साम्राज्य से था, लेकिन उसकी भविष्यवाणी गतिविधि मुख्य रूप से इज़राइल, यानी उत्तरी साम्राज्य की ओर निर्देशित थी। यह न केवल 1:1 के परिचयात्मक वाक्य में प्रकट होता है, बल्कि

अध्याय 7 में भी दिखाई देता है जहां अमोस बेथेल में प्रकट होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसके पास यहूदा के बारे में कहने के लिए कुछ नहीं है, और उस पर विशेष रूप से एक खंड है। वह यहूदा के उस परमेश्वर के जन की याद दिलाता है जिसका उल्लेख 1 राजा 13 में यारोबाम प्रथम के समय में किया गया था जब वे बेतेल में सोने के बछड़े स्थापित कर रहे थे।

3. "उसकी भविष्यवाणी गतिविधि का समय।" आमोस 1:1 में कहा गया है कि उसने यहूदा में उज्जियाह के समय में भविष्यवाणी की थी, आप पढ़ते हैं, " तकोआ के चरवाहों में से एक आमोस के शब्द - उसने भूकंप से दो साल पहले इज़राइल के बारे में क्या देखा, जब उज्जियाह यहूदा और यारोबाम का राजा था यहोआश का पुत्र इस्राएल का राजा था।" इस प्रकार उस ने यहूदा के उज्जियाह और इस्राएल के यहोआश के पुत्र यारोबाम के समय में, भूकंप से दो वर्ष पहिले, भविष्यवाणी की। वह होशे का समकालीन था, हालाँकि होशे ने बाद के राजाओं के माध्यम से भविष्यवाणी की थी। यदि आप होशे 1:1 को देखें, तो होशे उज्जियाह में जोड़ता है - जोथम, आहाज और हिजकियाह। इसलिए आम तौर पर यह सोचा जाता है कि होशे कुछ ओवरलैप के साथ, अमोस का युवा समकालीन और उत्तराधिकारी था।

आमोस 1:1 में भी इस भूकंप का उल्लेख है, उसने "उस भूकंप से दो वर्ष पहले" भविष्यवाणी की थी। जकर्याह 14:5 में उस भूकंप का संदर्भ है, जहां यह कहा गया है, "तुम वैसे ही भागोगे जैसे तुम यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में भूकंप से भागे थे।" और याद रखें जकर्याह निर्वासन के बाद था, इसलिए यह काफी बाद में हुआ, उजियाह के समय से निर्वासन के बाद तक इस भूकंप की स्मृति अभी भी है। समस्या यह है कि हम उस भूकंप की सटीक तारीख नहीं जानते हैं। इसलिए भूकंप की तारीख निर्दिष्ट करने के मामले में यह बहुत मददगार नहीं है। फ्रीमैन ने अमोस के मंत्रालय के समय के लिए 760 से 753 ईसा पूर्व का सुझाव दिया है, और यह 753 ईसा पूर्व में यारोबाम की मृत्यु की चुप्पी पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, धारणा यह है कि यदि यारोबाम की मृत्यु हो गई होती, तो यह आपके लिए इतनी महत्वपूर्ण घटना होती इसके उल्लेख की अपेक्षा करेंगे। तो यह उनकी मृत्यु से पहले,

लगभग 760 से 753 ईसा पूर्व है इसलिए अंत बिंदु हैं।

लिनेट वॉकर, एशले पेंगेली, मैलोरी मोएंच, ब्रैडी द्वारा लिखित
चैम्पलिन, निकोल रूक, टेड हिल्लेब्रांट, स्टेफ़नी फिट्ज़गेराल्ड (सं.)
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल की भविष्यवाणी की नींव , व्याख्यान 21बी अमोस

अमोस

5. उस समय की राजनीतिक और सामाजिक स्थितियाँ

आइए अमोस पर अपनी चर्चा पर वापस आते हैं। संख्या 5 है, "उस समय की राजनीतिक और सामाजिक स्थितियाँ।" इस्राएल और यहूदा दोनों समृद्ध हो रहे थे। इज़राइल को सीरिया और असीरिया दोनों के दबाव से राहत मिली। अमोस कहीं भी सीरिया के बारे में स्पष्ट रूप से बात नहीं करता है, और इसके लिए उसके मुसीबत में होने का कोई संकेत नहीं है। 5:27 को देखें, "इस कारण मैं तुझे दमिश्क के पार बंधुआई में भेजूंगा," प्रभु जिसका नाम सर्वशक्तिमान है, उसका यही वचन है। 6:7 में, "इसलिये तुम हम में से बन्धुआई में जाने वाले पहले व्यक्ति होगे, और तुम्हारी जेवनार और मौजमस्ती समाप्त हो जाएगी।" 6:14 में, यहाँ दिलचस्प शब्द हैं, "सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर यह घोषणा करता है, 'हे इस्राएल के घराने, मैं तुम्हारे विरुद्ध राष्ट्रों को भड़काऊँगा, जो लेबो हमात से लेकर अराबा की घाटी तक तुम पर अन्धेर करेंगे।" क्या इससे कोई घंटी बजेगी? विशेषकर, "लेबो हमात से अराबा की घाटी तक।" 2 राजा 14:25 में योना के संबंध में संदर्भ देखें। इसमें कहा गया है कि यारोबाम "वही था जिसने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के उस वचन के अनुसार, जो अमितै के पुत्र, भविष्यद्वक्ता, उसके सेवक योना के द्वारा कहा गया था, इस्राएल की सीमाओं को लेबो हमात से अराबा के सागर तक पुनर्स्थापित किया था।" गैथ हेफ़र का निर्माण करें।" तो आप देख सकते हैं कि योना ने भविष्यवाणी की थी कि इज़राइल अपनी सीमाओं को लेबो हमात से अराबा के सागर तक बढ़ाएगा। यहाँ अमोस आता है और कहता है, "मैं लेबो हमात से लेकर अराबा की तराई तक तुम पर अन्धेर करूँगा।" इसलिए अमोस उत्पीड़क राष्ट्र की पहचान सीरिया के रूप में करने के करीब पहुंच गया है, हालांकि वह स्पष्ट रूप से इस शब्द का उपयोग नहीं करता है।

आंतरिक-समृद्धि आंतरिक रूप से समृद्धि थी। आपके पास 3:15 में अमीरों के असाधारण घरों का संदर्भ है, “मैं सर्दियों के घर को गर्मियों के घर के साथ-साथ नष्ट कर दूंगा ; हाथीदांत से सजा हुआ घर नष्ट कर दिया जाएगा और हवेली ध्वस्त कर दी जाएंगी।” अब सामरिया में खुदाई चल रही है जहाँ सैकड़ों जड़े हुए हाथीदांत पाए गए हैं। विलासिता की दावतों का वर्णन 6:4-6 में किया गया है, “तू हाथी दांत से जड़े हुए बिस्तरों पर लेटता है और अपने सोफों पर आराम करता है। तुम अच्छे-अच्छे मेमनों और पाले हुए बछड़ों का भोजन करते हो। आप दाऊद की तरह अपनी वीणा बजाते हैं और संगीत वाद्ययंत्रों को सुधारते हैं। तुम कटोरा भर कर दाखमधु पीते हो, और उत्तम से उत्तम लोशन लगाते हो, परन्तु यूसुफ की बरबादी पर शोक नहीं करते। इसलिए , आप निर्वासन में जाने वाले पहले लोगों में से होंगे, आपकी दावत और आराम खत्म हो जाएगा। तो, वहाँ बहुत विलासिता और धन है। लेकिन जैसा कि एलिसन बताते हैं, यह तस्वीर का एक पहलू है। हम अमीरों को देखते हैं लेकिन हमें गरीबों के घरों की ओर भी देखना चाहिए कि वे कैसे रहते हैं। यदि आप 2:6 को देखते हैं जहाँ आप पढ़ते हैं तो तस्वीर का वह पक्ष सामने आता है। “इस्राएल के तीन पापों के कारण, चाहे चार के कारण भी, मैं अपना क्रोध न रोकूंगा। वे धर्मियों को चाँदी के लिये, और दरिद्रों को एक जोड़ी जूतों के लिये बेच देते हैं। वे कंगालों के सिर को भूमि की धूल के समान रौंदते हैं, और उत्पीड़ितों को न्याय से वंचित करते हैं।” तो बहुत अन्याय हुआ. आमोस 8:4-6 इस विषय को आगे बढ़ाता है, “हे तुम जो दरिद्रों को रौंदते हो, और देश के कंगालों का नाश करते हो, यह सुनो, 'नया चाँद कब होगा कि हम अन्न बेचें, और सब्त का दिन कब पूरा होगा' क्या हम गेहूँ का विपणन कर सकते हैं?’ माप में कंजूसी करना और कीमतें बढ़ाना और बेईमान तराजू से धोखा देना, गरीबों को चाँदी से और जरूरतमंदों को एक जोड़ी सैंडल के लिए खरीदना, यहां तक कि गेहूँ के साथ झाड़ू भी बेचना। इसलिए जैसा कि एलिसन बताते हैं, लेखक समृद्धि का वर्णन करने के शौकीन हैं लेकिन अधिकांश भाग में वे न्याय पर ध्यान केंद्रित करने में विफल रहते हैं। तो ये लेखक और पुस्तक की पृष्ठभूमि के बारे में टिप्पणियाँ हैं।

बी. अमोस की पुस्तक और इसकी सामग्री 1. सामान्य रूपरेखा बी। है, "अमोस की पुस्तक और उसकी सामग्री।" एक है "सामान्य रूपरेखा।" मुझे लगता है कि पुस्तक चार खंडों में विभाजित है। पहला, "आसपास के राष्ट्रों पर सुनाया गया निर्णय" और हम उस पर संक्षेप में विचार करेंगे। अमोस आसपास के देशों, अंततः यहूदा को चेतावनी देता है, और इज़राइल पर ध्यान केंद्रित करता है। ये पहले दो अध्याय हैं। फिर दूसरे खंड में वह इज़राइल पर अधिक विशिष्ट निर्णय और उसके कारणों को देना है। वह अध्याय 3 से 6 है। और फिर तीसरा, अध्याय 7, 8 और 9 में पांच दर्शनों का एक खंड। अंतिम खंड भविष्य के आशीर्वाद का वादा है, अमोस 9:11-15। तो इस तरह सामग्री गिरती है। मुख्य विषय "सामाजिक अन्याय के लिए इज़राइल पर निर्णय" है। इसमें सामाजिक न्याय के साथ-साथ धार्मिक औपचारिकता पर भी जोर दिया गया है। इसलिए अमोस ने कानून के तहत भविष्य की बहाली के वादे की बड़ी आशा के साथ पुस्तक के अंत में भगवान के न्याय के साथ खंड को समाप्त किया।

2. अमोस 1-2 अध्याय 1 और 2 वह पहला खंड है, "आसपास के राष्ट्रों पर न्याय।" वहां आसपास के छह राष्ट्रों पर फैसले सुनाए जाते हैं और उसके बाद अंतिम फैसला सुनाया जाता है। अमोस प्रत्येक अनुभाग को "तीन पापों के लिए" वाक्यांश के साथ शुरू करने के नियमित पैटर्न का पालन करता है और फिर वह एक निश्चित शहर या राष्ट्र का नाम लेता है, "और चार के लिए मैं अपना क्रोध वापस नहीं लूंगा।" तो आप पद 3 में ध्यान दें, "दमिश्क के तीन पापों के कारण, क्या चार के कारण भी, मैं अपना क्रोध नहीं रोकूंगा।" फिर पद 6, "गाजा के तीन पापों के कारण, चाहे चार के कारण भी, मैं अपना क्रोध नहीं रोकूंगा," और पद 9, "सोर के तीन पापों के कारण, चाहे चार के कारण भी, मैं अपना क्रोध नहीं रोकूंगा।" और यह अध्याय से होते हुए दूसरे अध्याय तक चलता है, "तीन पापों के लिए," और फिर एक निश्चित शहर या राष्ट्र, "और चार के लिए मैं अपना क्रोध नहीं लौटाऊंगा।" इस अभिव्यक्ति को सबसे अच्छी तरह से उनकी पापपूर्णता की पूर्णता को इंगित करने के रूप में समझा जाता है - तीन पापों के लिए और चार के लिए।

अमोस भी उन राष्ट्रों के क्रम में एक पैटर्न का अनुसरण करता है जिनके बारे में वह बोलता है। वह विदेशी लोगों के बारे में उनकी राजधानी के नाम से बात करता है। वह सीरिया की बात करता है और उसका संदर्भ राजधानी दमिश्क से देता है। वह अमोस 1:6 में गाजा की राजधानी का उपयोग करके फ़िलिस्तिया की बात करता है। और वह श्लोक 9 में फेनिशिया की राजधानी सोर का उपयोग करने की बात करता है।

इसलिए वह पहले विदेशी राष्ट्रों को संबोधित करता है, फिर वह श्लोक 11 में चचेरे भाई राष्ट्रों, एदोम की ओर बढ़ता है। एदोम एसाव से आता है। पद 13 में अम्मोन; अम्मोन इसराइल से संबंधित है और अम्मोनी लूत की बड़ी बेटी से आते हैं। अध्याय 2 श्लोक 1 में मोआब ; मोआब लूत की छोटी बेटी का वंशज था। इसलिए वह पहले तीन विदेशी देशों को देखता है और फिर तीन चचेरे देशों की ओर बढ़ता है।

फिर वह घर के करीब आ जाता है. 2:6 में इज़राइल, उत्तरी साम्राज्य पर ध्यान केंद्रित करने से पहले, वह 2:4 में भाई राष्ट्र, आप कह सकते हैं, यहूदा की बात करते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि प्रगति सुनने का एक प्रभावी तरीका है, खासकर उन लोगों से जो इज़राइल की बुराई देख सकते हैं। यह अमोस के संदेश को मजबूत करता है और इस मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करता है, यहां तक कि यहूदा के बारे में भी - यहीं पर वह टिप्पणियां करता है। उनमें पाप केवल उन दुर्व्यवहारों तक ही सीमित नहीं हैं जो इज़राइल में मौजूद हैं। आम तौर पर, वह सभी देशों द्वारा अपने अंदर की बुराई को पहचानता है और इन देशों को क्षतिपूर्ति का सामना करना पड़ेगा, लेकिन नैतिक जिम्मेदारी के बिना नहीं। पहचाने गए पापों के लिए निर्णय सुनाया जाता है। निर्णय के साधन निर्दिष्ट नहीं हैं, लेकिन यदि आप इन लोगों और राष्ट्रों के इतिहास को देखें, तो ऐसा लगता है कि निर्णय किया गया था।

अमोस का ध्यान यहूदा पर केंद्रित अमोस ने आंतरिक रूप से अपना ध्यान यहूदा पर केंद्रित करना शुरू कर दिया। आप 2:4 और 5 में ध्यान दें, वह कहता है, “यहूदा के तीन पापों के कारण, क्या चार के कारण भी, मैं अपना क्रोध नहीं रोकूंगा। क्योंकि उन्होंने यहोवा की व्यवस्था को तुच्छ जाना है, और उसके नियमों का पालन नहीं किया है, और उन झूठे

देवताओं के द्वारा जिन्हें उनके पुरखा मानते थे, भटका दिया है, मैं यहूदा में आग भेजूंगा जो यरूशलेम के गढ़ों को भस्म कर देगी।" वह यहूदा पहुँचता है और वहाँ एक महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। याद रखें कि वह उत्तरी साम्राज्य से बात कर रहा है, हालाँकि वह स्वयं दक्षिण से है। अगर उन्होंने सीधे इजराइल का रुख किया होता तो उन पर पक्षपात का आरोप लग सकता था. उत्तर आर्थिक और राजनीतिक रूप से मजबूत था लेकिन दक्षिण में मंदिर की उपस्थिति थी। अमोस भगवान के कानून और उसकी विधियों का पालन न करने और अन्य देवताओं का पालन करने का वर्णन करता है। यह 2 राजा 24-25 में 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश पर पूरा हुआ, इसलिए यहूदा पर निर्णय आ रहा है।

इस्राएल पर अमोस अमोस 2:6-16 में, "इस्राएल के तीन पापों के कारण, क्या चार के कारण भी, मैं अपना क्रोध न रोकूंगा। वे धर्मियों को चाँदी के बदले और दरिद्रों को एक जोड़ी जूतियों के बदले बेच देते हैं।" मैं यह सब नहीं पढूंगा. परन्तु नीचे कूदें, "मैं ने तेरे पुत्रों में से भविष्यद्वक्ताओं को, और तेरे जवानों में से नाज़ीरों को खड़ा किया है।" फिर श्लोक 13 और निम्नलिखित, "अब मैं तुम्हें ऐसे कुचल डालूँगा जैसे गाड़ी अनाज से लदी हुई कुचल जाती है। तेज़ भागने वाला बच नहीं पाएगा, बलवान अपनी ताकत नहीं जुटा पाएगा, और योद्धा अपनी जान नहीं बचा पाएगा। धनुर्धर अपनी जमीन पर खड़ा नहीं रहेगा..." श्लोक 16, "उस दिन सबसे बहादुर योद्धा भी नग्न होकर भाग जायेंगे।" यह इन पहले दो अध्यायों का चरमोत्कर्ष है। उन्होंने एक के बाद एक इजराइल के दुश्मनों पर फैसला सुनाया है और अब बात इजराइल पर आती है. अब वह अपना संदेश इस्राएल पर निर्देशित करता है जिसे मुख्य न्याय प्राप्त होगा। उन्होंने आसपास के राष्ट्रों द्वारा लोगों को पहले ही चेतावनी दे दी थी। प्रकाश के बजाय अंधकार का दिन, न्याय का दिन।

अनुबंध मुकदमा ए. आरोप और अभियोग इस संदेश को लाने के लिए, अमोस उस चीज़ का उपयोग करता है जिसे कुछ लोगों ने "वाचा मुकदमा" कहा है। इस कानूनी रूप की विशेषताएं यहां देखी जा सकती हैं। ध्यान दें कि यह कैसे काम करता है। सबसे पहले

आपके पास एक आरोप या अभियोग है, जो श्लोक 6-8 में है। मैंने उसका एक भाग पढ़ा, “वे धर्मियों को चाँदी के बदले बेचते हैं ...।” वे गरीबों के सिर रौंदते हैं।” श्लोक 7, “पिता और पुत्र एक ही लड़की का उपयोग करते हैं और इस प्रकार मेरे पवित्र नाम को अपवित्र करते हैं। वे प्रत्येक वेदी के पास बन्धक में लिये हुए वस्त्रों पर लेटते हैं। वे अपने देवता के भवन में जुर्मने के रूप में ली गई दाखमधु पीते हैं।” उस अभियोग में सामाजिक, नैतिक और धार्मिक उल्लंघन शामिल हैं - श्लोक 6 और 7 में गरीबों का उत्पीड़न और श्लोक 8 में नैतिक और धार्मिक धर्मत्याग। इनमें पवित्र वेश्यावृत्ति शामिल है, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह जादुई रूप से भूमि की उर्वरता पैदा करता है। इजराइल को इसमें शामिल न होने की चेतावनी दी गई थी। यहां भगवान की पूजा सामान्य बाल की तरह की जाती है। यह प्रथा वाचा का घोर उल्लंघन थी। इसे और भी बदतर बनाने वाली बात यह थी कि यह गरीबों के उत्पीड़न से प्राप्त चीजों के साथ किया गया था। “वे बन्धक में लिये हुए वस्त्रों पर हर वेदी के पास लेटते हैं।” वे गरीबों की कीमत पर धर्म कर रहे थे। तो यह अनुबंध मुकदमे का अभियोग है।

बी। बनाम में संप्रभु के दयालु कार्य। 9-11

दूसरा छंद 9-11 में संप्रभु के दयालु कृत्यों का पाठ है। छंद 9-11 कहता है, “यहोवा कहता है, ‘मैंने एमोरी को उनके सामने नष्ट कर दिया, यद्यपि वह देवदार के समान लंबा और बांज के वृक्ष के समान मजबूत था। मैंने ऊपर से उसका फल और नीचे से उसकी जड़ें नष्ट कर दीं। मैं तुम को मिस्र से निकाल लाया, और एमोरियों का देश तुम्हें देने के लिये जंगल में चालीस वर्ष तक तुम को ले आया। मैं ने तेरे पुत्रों में से भविष्यद्वक्ता भी खड़े किए।” क्या यह सच नहीं है? मैंने ये सभी चीजें की हैं। मैं वफादार रहा हूँ। मैं दयालु रहा हूँ। तो भगवान के दयालु कृत्यों का एक पाठ। परमेश्वर ने लगातार वाचा का पालन किया था।

सी। भविष्यवाणी वाचा चेतावनी की अस्वीकृति वाचा मुकदमे का तीसरा तत्व भविष्यवाणी वाचा चेतावनी की अस्वीकृति है। यह पद 12 में पाया जाता है। “परन्तु तू ने नाजीरों को

दाखमधु पिलाया, और भविष्यद्वक्ताओं को भविष्यवाणी न करने की आज्ञा दी।"

भविष्यवक्ता लोगों को वाचा की निष्ठा और पश्चाताप की ओर लौटने के लिए कहते हैं, लेकिन दोनों को अस्वीकार कर दिया गया।

यह संख्या चार की ओर ले जाता है, श्लोक 13-16 में वाक्य। मैं वह पहले ही पढ़ चुका हूँ। यह सामान्य शब्दों में दिया गया है। कोई विशिष्ट भविष्यवाणी नहीं है लेकिन निर्णय सूचीबद्ध है। तो यह पुस्तक के पहले खंड का चरमोत्कर्ष है जहां अमोस विदेशी राष्ट्रों से चचेरे भाई राष्ट्रों, भाई राष्ट्र यहूदा और अंततः इज़राइल में बदल जाता है।

3. आमोस 3-6 न्याय की घोषणाएँ आइए दूसरे खंड अध्याय 3-6 पर जाएँ जहाँ न्याय की अधिक विशिष्ट घोषणाएँ हैं। इस खंड में तीन प्रवचन हैं जिनमें से प्रत्येक की शुरुआत इस वाक्यांश से होती है, "प्रभु ने जो वचन कहा है उसे सुनो।" आपने देखा कि 3:1 में, "हे इस्राएल के लोगो, यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध कहा है।" 4:1 में, "हे शोमरोन पर्वत पर रहनेवाली बाशान की गायों, तुम दीनों पर अन्धे कर देनेवाली और दरिद्रों को कुचलनेवाली स्त्रियों, यह वचन सुनो।" और 5:1, "हे इस्राएल के घराने, यह वचन सुनो, यह विलाप मैं तुम्हारे विषय में सुन रहा हूँ।" ये इन अनुभागों के तीन सूत्रबद्ध परिचय हैं।

एक। आमोस 3 मैं विशेष रूप से अध्याय 3 को देखना चाहता हूँ। अध्याय 3:1-2 कहता है, "हे इस्राएल के लोगो, यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध कहा है, अर्थात् उस सारे परिवार के विरुद्ध जिसे मैं मिस्र से निकाल लाया हूँ: 'केवल तुम्हारे पास है मैं ने पृथ्वी के सब कुलोंमें से चुन लिया; इसलिए मैं तुम्हें तुम्हारे सभी पापों के लिए दंडित करूंगा।" मुझे लगता है कि यह कविता संदेश के सार को संक्षेप में प्रस्तुत करती है। यहां अनुबंध का विचार केंद्रीय है, भले ही बेरिट [संविदा] शब्द नहीं पाया गया है। अध्याय 6 में, "इसलिए मैं तुम्हें दंडित करूंगा," जो वाचा के विचारों के एक लंबे समय के पारंपरिक दृष्टिकोण से लिया गया है, जहां आप उन सभी भविष्यवक्ताओं का पता लगाते हैं जिन्होंने बेरिट [वाचा] शब्द का इस्तेमाल किया था, और आप उस आधार पर परिणाम का आकलन करते हैं। क्योंकि शब्द

बेरिट [संविदा] का उपयोग भविष्यवक्ताओं द्वारा बड़े पैमाने पर नहीं किया गया है। डी. हिलर्स ने अनुचित तरीके से निष्कर्ष निकाला है कि वाचा ने भविष्यवक्ताओं की वैचारिक दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखा है। लेकिन हिलर्स क्या सुझाव देते हैं, और वह इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित करते हैं कि हाल के दिनों में, वाचा और भविष्यवक्ताओं के संबंध में कार्य के तीन क्षेत्रों में बहुत सारे प्रयास हुए हैं। एक, वाचा शब्दावली. दूसरे शब्दों में, हाँ, भविष्यवक्ता हमेशा बेरिट, वाचा शब्द का उपयोग नहीं कर सकते हैं, लेकिन वे वाचा भाषा का उपयोग करते हैं। तो आपको अनुबंध संबंधी शब्दावली का उपयोग करके अनुबंध के कामकाज के बारे में अधिक अप्रत्यक्ष दृष्टिकोण मिलता है। दूसरे, हमने वाचा का साहित्यिक पैटर्न वाचा के मुकदमे के साथ अध्याय 3 के अंत में देखा। और फिर तीसरा, वाचा शाप का उपयोग होता है।

वाचा शब्दावली वाचा शब्दावली विश्लेषण पर पहला, मेरे पास यहां आपके नोट्स में अध्याय 3:2 में *यदा* [जानने के लिए] का उपयोग करते हुए एक उद्धरण है। एनआईवी कहता है, "केवल मैंने ही तुम्हें चुना है।" हिब्रू पाठ को देखो. यह ऐसा नहीं कहता. यह कहता है, "केवल तू ही मुझे जानता है।" यह *यदा* है [जानें]। "मैं पृथ्वी के सब कुलोंके विषय में केवल तुम ही को जानता हूँ ; इसलिये मैं तुम्हें दण्ड दूँगा।" इसका क्या मतलब है? संभवतः इसका क्या मतलब हो सकता है? "तुम्हें ही मैंने जाना है।" क्या यहोवा नहीं जानता था कि पृथ्वी पर इस्राएल के सिवा और भी कोई जाति है? और यह निष्कर्ष क्यों कि "तू ही मैं जानता हूँ, इसलिये मैं तुझे दण्ड दूँगा"? जानने का दंड देने से क्या संबंध है? तो *'यादा'* पर कुछ टिप्पणियाँ। इस शब्द का अर्थ "समझने" से लेकर "यौन संभोग" तक व्यापक है। परमेश्वर की मांगों के संबंध में या जब यहोवा कहता है, "वह इस्राएल को जानता है" तो इसका क्या अर्थ है? जानना दोनों दिशाओं में जा सकता है। परन्तु आमोस 3:2 में यही कहा गया है, "मैं ने ही तुझे जाना है... इसलिये मैं तुझे दण्ड दूँगा।" यह किस अर्थ में सत्य है कि यहोवा केवल इस्राएल को जानता है और ऐसा आमोस 3:2 में क्यों होता है? इस प्रकार इज़राइल के बारे में परमेश्वर के ज्ञान और उनके विनाश के बीच एक तार्किक संबंध है। यह स्पष्ट हो गया है कि

हमारे यहां "जानना" का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय संबंधों की शब्दावली से उधार लिया गया है। हफमन का *यदा* पर एक लेख है। उनका कहना है कि निकट पूर्वी राजा एक वैध जागीरदार को पहचानने के लिए, हिती और अक्कादियन दोनों ग्रंथों में, जानने के लिए ' *यादा* ' का उपयोग करते हैं। हर्बर्ट हफमन के अंतर्गत अपने उद्धरणों के पृष्ठ 49 को देखें। वह कहते हैं, " "जानना" का सबसे स्पष्ट तकनीकी उपयोग सुजरेन और जागीरदार की ओर से पारस्परिक कानूनी मान्यता के संदर्भ में है।" एशिया में छोटे जागीरदार केवल महान राजा को जानने का वादा करते थे। इसके अलावा, "एक और भगवान जिसे आप नहीं जानते होंगे।" और संधियों में हिती सुजैन ने जागीरदारों को आश्वासन दिया कि जागीरदार के खिलाफ विद्रोह के मामले में, "सूरज केवल तुम्हें ही जानेगा।" तो "जानना" किसी को वैध अधिपति या जागीरदार के रूप में पहचानता है। संदर्भ एक संधि या वाचा है।

लेकिन हफमन आगे कहते हैं, " 'जानें' का प्रयोग संधि शर्तों को बाध्यकारी मानने के लिए एक तकनीकी शब्द के रूप में भी किया जाता है।" वे नियमों की सूची बनाते और कहते, "आप इन्हें जानते हैं।" अब उस पृष्ठभूमि में अमोस के शब्द रहस्यमय नहीं रह गये हैं। शब्दावली अंतरराष्ट्रीय संबंधों से परिचित है। यहोवा ने केवल इस्राएल को अपना वैध सेवक, अपना जागीरदार माना था। चूँकि इस प्रकार की वाचा में दायित्व शामिल थे और जागीरदार ने उन्हें पूरा नहीं किया था, "इसलिये मैं तुम्हें तुम्हारे सभी अधर्मों के लिए दण्ड दूँगा।" आपमें से कुछ लोगों ने अपने पत्रों में देखा है कि प्रभु और इस्राएल के बीच यह "जानना" शब्द कई स्थानों पर आता है। होशे 13:4-6 को देखें। आप इसे दूसरी दिशा से प्राप्त करते हैं। "परन्तु मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया। आप करेंगे," एनआईवी कहता है, "स्वीकार करें", लेकिन वह *यदा* है, "मेरे अलावा कोई भगवान नहीं, मेरे अलावा कोई उद्धारकर्ता नहीं। मुझे परवाह थी," यह भी ' *यादा* ' है, "रेगिस्तान में, तपती गर्मी की भूमि में, तुम्हारे लिए। जब मैं ने उन्हें भोजन कराया, तो वे तृप्त हो गए; जब वे तृप्त हो गये, तो घमण्ड करने लगे; फिर वे मुझे भूल गये। इसलिये मैं सिंह के समान उन पर टूट पड़ूँगा।"

यिर्मयाह 24:7 में यिर्मयाह इसी तरह बोलता है, "मैं उन्हें ऐसा हृदय दूँगा कि वे मुझे

जान लें, कि मैं यहोवा हूं। वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, क्योंकि वे सम्पूर्ण मन से मेरी ओर फिरेंगे।” इस प्रकार का ज्ञान लोगों के आचरण से निकटता से संबंधित है, यह एक अन्य अंश में स्पष्ट है, यिर्मयाह 22:15 में, जहां आप पढ़ते हैं, और यह योशियाह के पुत्र शल्लूम का है, "वह कहता है, 'मैं अपने लिए एक बड़ा महल बनाऊंगा विशाल ऊपरी कमरों के साथ।' ...क्या अधिक से अधिक देवदार रखना आपको राजा बनाता है? क्या तुम्हारे पिता के पास खाना-पीना नहीं था? उसने वही किया जो सही और उचित था, इसलिए उसके साथ सब कुछ अच्छा हुआ। उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों के हितों की रक्षा की और इस तरह सब कुछ ठीक हो गया। क्या मुझे जानने का यही मतलब नहीं है? प्रभु की यही वाणी है।” हम संधि संबंधों से जुड़ी भविष्यसूचक शब्दावली के बीच एक संबंध भी देखते हैं। भले ही *बेरिट का* उपयोग अक्सर नहीं किया जाता है, फिर भी अनुबंध से जुड़े विचारों की जटिलता मौजूद है। जेए थॉम्पसन के एक लंबे अंश से, वाचा की शब्दावली कुछ ऐसी भाषा को बाहर निकाल रही है जो वाचा की भाषा है जिसे आप शब्दों को देखकर महसूस नहीं कर सकते हैं। वह कहते हैं, “ सामान्य तौर पर, पुराने नियम और निकट पूर्वी संधियों दोनों में पार्टियों को एक ओर 'राजा' या 'स्वामी' और दूसरी ओर 'सेवक' के रूप में वर्णित किया गया था। अनुबंध की शर्तों को 'शब्द' या 'आदेश' के रूप में जाना जाता था। सभी संधियों और अनुबंधों में ली गई 'शपथ' के 'गवाह' थे। क्रियाएँ 'शासन करना,' 'प्यार करना,' 'सेवा करना,' 'आशीर्वाद देना,' 'शाप देना,' 'पालन करना,' 'शपथ लेना,' 'शपथ दिलवाना,' 'साक्षी के रूप में बुलाना,' और इसके अलावा अन्य सभी क्रियाएँ इसी से संबंधित हैं। वही जनरल सिट्ज़ इम लेबेन, अर्थात् सुजरेन-जागीरदार समाज जिसने निकट पूर्वी संधियों को जन्म दिया, और जिसने वाचा की अभिव्यक्ति के लिए एक गर्भवती रूपक प्रदान किया ,” और *यदा* वहां शामिल है।

साहित्यिक पैटर्न: वाचा शाप दूसरा वाचा का साहित्यिक पैटर्न है जिसे हम पहले ही देख चुके हैं। तीसरी श्रेणी वाचा शाप का उपयोग है। हिलर्स बताते हैं, " क्योंकि हम बार-बार पाते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने संधियों से जुड़े शापों को प्रतिध्वनित करने के संदर्भ में अपने दुख

की भविष्यवाणी की है," लैव्यिकस 26 और व्यवस्थाविवरण 28 के समान, जिसे जाना जाता है " क्योंकि यह एक से जुड़े शापों की एक लंबी सूची है यहोवा के साथ वाचा - यह बताती है कि क्या होगा, 'यदि तुम मेरी विधियों को अस्वीकार करते हो, और मेरे नियमों से घृणा करते हो, ताकि तुम मेरी सभी आज्ञाओं का पालन न करो और इस प्रकार मेरी वाचा को तोड़ दो।" यह संधि शाप है। यह आमोस 3:10 में महत्वपूर्ण हो जाता है जहां यह भविष्यवक्ताओं के मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। भविष्यवक्ताओं की अधिकांश आधुनिक विद्वता उनकी मनःस्थिति को पकड़ने के प्रयास में भविष्यसूचक मनोविज्ञान के प्रति समर्पित रही है। वे एकेश्वरवाद और धार्मिक जीवन के बारे में चिंतित थे। लेकिन जिस परिप्रेक्ष्य पर हम विचार कर रहे हैं उसमें भविष्यवक्ता ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अपनी चेतना के बजाय इज़राइल के इतिहास और वाचा के प्रमुख वाक्यांशों का उपयोग किया है। उनके वचन केवल वाचा के श्राप हैं। वे बस व्यवस्थाविवरण 28 और लैव्यव्यवस्था 26 में अपनी नींव पर वापस जा रहे हैं।

बी। अमोस 4

अब अध्याय 4 की ओर बढ़ते हैं। यह उसी चीज़ का एक उदाहरण है। आप 4:6-12 में देखते हैं, आमोस कहता है, "मैं ने तुम्हें नगर नगर में खाली पेट और नगर नगर में रोटी की घटी दी, तौभी तुम मेरे पास नहीं लौटे।" वह कथन "अभी तक तुम मेरे पास नहीं लौटे" पाँच बार दोहराया जाता है। यह 6बी, 8बी में है, "लोग पानी के लिए एक शहर से दूसरे शहर भटकते रहे, लेकिन पीने के लिए पर्याप्त नहीं मिला, फिर भी आप मेरे पास नहीं लौटे।" 9बी और 10बी, "मैंने मिस्र की तरह तुम्हारे बीच विपत्तियाँ भेजीं, मैंने तुम्हारे जवानों को तलवार से मार डाला...फिर भी तुम मेरे पास नहीं लौटे।" यह 11बी में है, "अभी तक तुम मेरे पास नहीं लौटे।" और फिर 12 में, "इसलिए मैं तुम्हारे साथ यही करूँगा।" परमेश्वर ने वाचा के श्राप के रूप में कई चेतावनियाँ भेजी थीं, लेकिन उन पर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

व्यवस्थाविवरण 28 और लैव्यव्यवस्था 26 पर जाएँ और अपनी रूपरेखा में छंदों की सूची नोट करें। आप पाएंगे कि आमोस 4 की आयत 6 में अकाल है। व्यवस्थाविवरण 28:17

और 18 पर वापस जाँ जहाँ हम पढ़ते हैं, “तेरी टोकरी और तेरा आटा गूंधने का बर्तन शापित होगा। तेरे गर्भ का फल, और तेरी भूमि की उपज, और तेरे गाय-बैल के बच्चे, और तेरी भेड़-बकरी के बच्चे शापित होंगे। अमोस 4:7, 8 पर वापस जाँ—तुम्हारे पास सूखा है। “मैं ने एक नगर पर तो वर्षा बरसाई, परन्तु दूसरे में रोक रखी। एक खेत में वर्षा हुई; दूसरे के पास कुछ भी नहीं था और वह सूख गया।” व्यवस्थाविवरण 28:23, “तेरे सिर के ऊपर आकाश पीतल का, और तेरे नीचे की भूमि लोहे की होगी। यहोवा तुम्हारे देश की वर्षा को धूल में बदल देगा।” अमोस 4:9ए, फफूंदी, “मैंने तुम्हारे बागों और अंगूर के बागों को झुलसा और फफूंदी से मारा है।” व्यवस्थाविवरण 28:22, “यहोवा तुम्हें नाश करने वाली बीमारी से, बुखार और सूजन से, भीषण गर्मी और सूखे से, झुलसा और फफूंदी से पीड़ित करेगा।” अमोस 4:9बी, टिड्डियां, टिड्डियों ने तुम्हारे अंजीर और जैतून के पेड़ चट कर दिए। व्यवस्थाविवरण 28:38 और 42, “तुम खेत में बहुत बीज बोओगे, परन्तु उपज कम पाओगे, क्योंकि टिड्डियाँ उसे चट कर जाएँगी।” मैंने इन्हें भेजा है लेकिन इससे आपको पश्चाताप नहीं करना पड़ा। उसके अंत में श्लोक 11 में, “अभी तक तुम मेरे पास नहीं लौटे।”

फिर पद 12, “इसलिये हे इस्राएल, मैं तुझ से यही करूँगा।” वह क्या करने जा रहा है? यह नहीं कहता . “और क्योंकि मैं तुम्हारे साथ ऐसा करूँगा, हे इस्राएल, अपने परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार हो जाओ।” यह एक अधूरी अभिव्यक्ति है. कुछ लोगों का सुझाव है कि क्रियाएँ खो गई हैं और यह 3:14बी में पाया जाता है, “मैं बेतेल की वेदियों को नष्ट कर दूँगा, वेदी के सींग काट दिए जाएँगे।” तो आपके पास होगा, “इसलिए हे इस्राएल, मैं तुम्हारे साथ यही करूँगा,” और फिर डालें, “मैं वेदियों को नष्ट कर दूँगा...।” लेकिन यह पूरी तरह से मनमाना है—इसे कहीं से भी खींचा जा सकता था। यह समझा जाता है। आप इन सभी पापों से गुज़र रहे हैं और “फिर भी आप मेरे पास नहीं लौटे।” तात्पर्य यह है कि जो पहले हो चुका था, यह उससे भी बदतर होगा। मुझे ऐसा लगता है कि इज़राइल इस चरमोत्कर्ष में वाचा शाप की अपेक्षा कर सकता है। मैं सोचता हूँ कि यहां वही निहित है और जो बिना कहे समझा जाता है। लैव्यव्यवस्था 26:27 पर वापस जाँ और इस प्रकार कहें, “यदि इसके बावजूद,” यानी, आपकी अवज्ञा के कारण ये वाचा के श्राप आप पर आते हैं, “आप मेरी बात

नहीं सुनेंगे, तो मैं आपको आपके पापों के लिए सात गुना अधिक दण्ड दूँगा। "।" श्लोक 31, "मैं तुम्हारे नगरों को खण्डहर कर दूँगा।" पद 32, "मैं भूमि को उजाड़ दूँगा।" पद 33, "मैं तुम्हें जाति जाति में तितर-बितर करूँगा, और अपनी तलवार खींचकर तुम्हारा पीछा करूँगा। तुम्हारी भूमि उजाड़ दी जाएगी, और तुम्हारे नगर खंडहर हो जाएंगे।" यदि आप अभी भी ईश्वर के पास नहीं लौटते हैं तो भविष्यवाणी संदेश के अंत में यही आता है। तो मुझे ऐसा लगता है कि यह बात समझ में आ जायेगी। यह वही है जो मैं उन लोगों पर वाचा के श्रापों को क्रियान्वित करूँगा जो पश्चाताप करने से इनकार करते हैं और जो "मेरे पास वापस नहीं लौटेंगे।"

अगली बार हम आमोस 9:11-15 के निष्कर्ष और अधिनियम 15 में इसके उद्धरण पर विस्तार से नज़र डालेंगे।

टेड हिल्लेब्रांट द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्लेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
 टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 22

आमोस 9:11-15

आमोस 9:11-15 भविष्य की आशीष का वादा

हम आमोस 9:11-15 को देखेंगे जो पुस्तक के चौथे खंड के बारे में है: "भविष्य की आशीष का वादा।" यहाँ आमोस निर्णय की कई पूर्ववर्ती घोषणाओं की पृष्ठभूमि में आशा का एक नोट प्रस्तुत करता है। पुस्तक के इस अंतिम खंड से संबंधित दो प्रश्नों पर काफी चर्चा हुई है।

1. प्रामाणिकता एक, इसकी प्रामाणिकता का प्रश्न, यानी, क्या इस खंड का श्रेय स्वयं आमोस को दिया जाना चाहिए या यह कुछ ऐसा है जो बाद में पुस्तक से जुड़ा हुआ था? जो लोग प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हैं, वे तर्क की उस पंक्ति का उपयोग करते हैं जो कहती है कि निहित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आमोस के समय की नहीं है। समापन छंदों में संकेतित स्थिति यह है कि यहूदा को अब बेबीलोनियों ने बंदी बना लिया है।

इसके अलावा, यह विश्वास करना मुश्किल है कि, ऐसे समय में जब डेविड का राजवंश खड़ा था, लोगों को उसकी "गिरी हुई झोपड़ी" की मरम्मत, "उसके उल्लंघनों" को बंद करने, "उसके खंडहरों को खड़ा करने" की तलाश करने के लिए कहा गया था। " और इसका पुनर्निर्माण "पुराने दिनों की तरह" (व.11)। दूसरे शब्दों में, उपसंहार में, दृष्टिकोण बदल जाता है; और समस्या यशायाह के लेखकत्व के समान हो जाती है।

याद रखें जब हमने यशायाह के संबंध में उस मुद्दे पर चर्चा की थी जब वह इज़राइल की वापसी के बारे में बोलता है? तो, तर्क की उसी पंक्ति का उपयोग यहां किया गया है। जवाब में, मैं बस बहुत संक्षेप में कहूंगा, मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से पूछा जा सकता है कि एक भविष्यवक्ता ने जो भविष्यवाणी की थी उसके घटित होने की पूर्वकल्पना क्यों नहीं कर सकता? आमोस का कहना है कि तुम दमिश्क से आगे बन्धुवाई में जाने वाले हो। वह कहता है कि तुम्हारी इमारतें नष्ट होने वाली हैं। आपके योद्धा बच नहीं पाएंगे। आमोस, जिसने 2:4-5 में यरूशलेम के पतन की भविष्यवाणी की थी, यह क्यों नहीं मान सका कि

ऐसा हुआ है और फिर इससे परे क्यों नहीं देख सका। दूसरे शब्दों में, मुझे ऐसा नहीं लगता कि यह तर्क की कोई ठोस पंक्ति है, और इसलिए पुस्तक के इस अंतिम खंड की प्रामाणिकता के बारे में कोई प्रश्न नहीं होना चाहिए।

2. आमोस 9:11-15 की व्याख्या पर प्रश्न लेकिन, मुझे नहीं लगता कि यह मुद्दा दूसरे अंक जितना महत्वपूर्ण है। दूसरा मुद्दा व्याख्यात्मक प्रश्न है कि आप आमोस 9:11-15 को कैसे समझते हैं। हमें अध्याय 9 में श्लोक 11 से 15 की व्याख्या कैसे करनी चाहिए, जिसमें अधिनियम 15 में यरूशलेम की परिषद में जेम्स द्वारा श्लोक 11 और 12 का उपयोग भी शामिल है? मेरे लिए यहां दोतरफा प्रश्न है। हम कैसे समझते हैं कि उन्होंने यहां क्या कहा और जेरूसलम परिषद में जेम्स द्वारा इसका उपयोग कैसे किया गया? लेकिन आमोस 9:11-15 से भी अधिक आंतरिक रूप से: इस परिच्छेद के श्लोक 11 और 12 की व्याख्या का श्लोक 13 और 15 की व्याख्या से क्या संबंध है? दूसरे शब्दों में, क्या यह परिच्छेद एक इकाई है जिसमें यह मूल रूप से एक ही चीज़ के बारे में बात कर रहा है, या क्या 11 और 12 और 13 और 15 के बीच किसी प्रकार का विच्छेदन है? आप 11 और 12 को 13-15 से कैसे जोड़ते हैं?

आमोस 9:11-15 और अधिनियम 15:12-19 जेए मोटयेर आमोस 9:11-15 के बारे में कहते हैं, " डेविडिक मसीहा का विश्वव्यापी शासन एक नियमित भविष्यवाणी विशेषता है और शाही भजनों में प्रमुखता से दर्शाया गया है। इनमें से कई परिच्छेदों में युद्ध जैसे रूपक को निश्चित रूप से " प्रभु यीशु मसीह के शासन और चर्च के मिशनरी विस्तार" के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। यह अधिनियम 15:12-19 में एनटी द्वारा अधिकृत व्याख्या है। दूसरे शब्दों में, जब जेम्स जेरूसलम काउंसिल में चर्चा में अमोस 9 को उद्धृत करता है, तो वह अमोस 9 की व्याख्या इस प्रकार कर रहा है कि वह डेविड की गिरी हुई झोपड़ी के पुनर्निर्माण और चर्च के मिशनरी विस्तार में प्रभु यीशु मसीह के शासन की बात कर रहा है। यह एक सामान्य व्याख्या है जो आपके स्वयं के कई दस्तावेज़ों में सामने आती है।

प्रोफेसी एंड द चर्च में ओटी एलिस, अमोस 9 के बारे में कहते हैं, "शायद पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने की व्यवस्थागत पद्धति की शुद्धता का परीक्षण करने के लिए नए नियम में यह सबसे अच्छा मार्ग है।" इसलिए एलीस एक सहस्त्राब्दिवादी है और उसने व्यवस्थागत व्याख्यात्मक पद्धति का कड़ा विरोध किया।

अधिनियम 15 में पुराने स्कोफ़्रील्ड नोट्स में, अधिनियम 15 में अमोस 9 के उपयोग के बारे में दिए गए बयान पर ध्यान दें, "व्यवस्था के अनुसार, यह नए नियम में सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है।" इसलिए इस बहस के व्यवस्थागत पक्ष के साथ-साथ इस बहस के सहस्त्राब्दिवादी पक्ष की ओर से यह मेरे लिए दिलचस्प है कि इस परिच्छेद से संबंधित असहमति बहुत महत्वपूर्ण है।

इस परिच्छेद का उपयोग जेए मोटयेर और ओटी एलिस के तरीके से और सहस्राब्दी व्याख्या स्कूल में कई लोगों द्वारा किया गया है। इस अनुच्छेद से निकाले गए निष्कर्ष, जैसा कि यहां नए नियम में उपयोग किया गया है, चर्च के संदर्भ के रूप में अन्य पुराने नियम के राज्य की भविष्यवाणियों की समान व्याख्याओं का समर्थन करने के लिए उपयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यदि, जैसा कि वह अमोस 9 श्लोक 12 में कहता है कि "वे एदोम के बचे हुए लोगों पर कब्ज़ा कर सकते हैं," और अधिनियम 15 में कि "एदोम के अवशेषों पर कब्ज़ा" को यह कहने के लिए संशोधित किया गया है, "ताकि पुरुषों के अवशेष उनके पास आ सकें" पद 17 में प्रभु की तलाश करें। यदि यह अमोस कथन की व्याख्या है तो आपके पास एदोम के बारे में उस कथन की एक आलंकारिक व्याख्या है जिसे यरूशलेम परिषद द्वारा अपनाया गया है।

सहस्रवर्षीय दृष्टिकोण अब, इस दृष्टिकोण के लोगों द्वारा विकसित तर्क की पंक्ति इस प्रकार है। सबसे पहले, अमोस 9 के श्लोक 11 में, गिरे हुए डेविड के तम्बू को ऊपर उठाना, सुसमाचार के प्रचार के वर्तमान समय में डेविड के पुत्र के रूप में मसीह की शक्ति के संदर्भ के रूप में लिया गया है। दूसरे शब्दों में, आयत 11 कहती है, "उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए तम्बू को फिर खड़ा करूँगा, उसके खंडहरों की मरम्मत करूँगा और उसे खड़ा

करूँगा।" वह मसीह की बात कर रहा है और यह सुसमाचार के प्रचार के वर्तमान समय में पूरा हुआ है। थियोडोर लातेश टिप्पणी करते हैं, " वह गिरी हुई झोपड़ी को ऊपर उठाएगा, और इसे इसके उच्चतम पूर्व वैभव से कहीं अधिक गौरवान्वित करेगा... यह मसीहा के दिनों में पूरा हुआ था। यीशु और प्रेरितों ने इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को पश्चाताप के लिए बुलाकर अपना काम शुरू किया। इन धर्मातरित यहूदियों में निस्संदेह दस जनजातियों के कई सदस्य थे। नए नियम के चर्च में इसराइल के उत्तरी और दक्षिणी साम्राज्य को अलग करने वाली दरार ठीक हो जाएगी।" इसलिए इसकी पूर्ति आरंभिक सुसमाचारों में प्रथम आगमन और चर्च की स्थापना के लिए है।

भविष्यवाणी और चर्च में ओटी एलिस कहते हैं, " शब्द 'मैं डेविड के गिरे हुए तम्बू को ऊपर उठाऊंगा' भविष्य के डेविडिक साम्राज्य को संदर्भित नहीं करता है," न ही डेविड के गिरे हुए कबीले को ऊपर उठाने से कोई संबंध है दूसरे आगमन पर ईसा मसीह के संबंध में। यह पहला आगमन है और भविष्य के डेविडिक साम्राज्य का उल्लेख नहीं करता है। "दाऊद का घराना, दाऊद और सुलैमान का शक्तिशाली राज्य, एक नीच 'बूथ' के स्तर तक डूब गया था। जब इमैनुएल, यीशु, दाऊद का पुत्र, बेथलहम में पैदा हुआ, तो स्वर्गदूतों द्वारा उसकी घोषणा की गई और उसकी प्रशंसा की गई; और डेविड के बेटे के रूप में ट्रिनिटी के दूसरे व्यक्ति का अवतार डेविड के गिरे हुए बूथ को ऊपर उठाने की शुरुआत थी। और जब दाऊद के पुत्र ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की और अपने शिष्यों को यह वचन दिया: 'स्वर्ग और पृथ्वी पर सारी शक्ति मुझे दी गई है,' तो उसने ऐसी संप्रभुता का दावा किया जो दाऊद से कहीं अधिक महान थी, या जिसे प्राप्त करने का उसने कभी सपना देखा था।

इसलिए, जब पतरस और अन्य प्रेरितों ने घोषणा की कि भगवान ने यीशु को उठाया था और 'उसे एक राजकुमार और उद्धारकर्ता बनने के लिए अपने दाहिने हाथ पर चढ़ाया था,' तो वे इस बात पर जोर दे रहे थे कि जो शक्तिशाली कार्य करने के लिए उन्हें सक्षम किया गया था, वे प्रत्यक्ष अभ्यास थे। उन्हें उसकी संप्रभु शक्ति का। तो, श्लोक 11 की व्याख्या ईसा मसीह के पहले आगमन के बारे में बात करने के रूप में की गई, यीशु ने डेविड के गिरे हुए घर को ऊपर उठाया।

श्लोक 12 में लिखा है, "ताकि वे एदोम के बचे हुए लोगों और उन सभी राष्ट्रों पर अधिकार कर सकें जो मेरा नाम लेते हैं, प्रभु की यही वाणी है।" एदोम के अवशेष पर कब्ज़ा करना "अन्यजातियों के रूपांतरण" के बराबर बना दिया गया है। यह अधिनियम 15:17 में अमोस मार्ग के उद्धरण में शब्दों के परिवर्तन पर आधारित है जहां यह पढ़ता है, "एदोम पर कब्ज़ा करने" के बजाय, "ताकि बचे हुए मनुष्य प्रभु की खोज कर सकें, और सभी राष्ट्रों को जिसे मेरा नाम कहा जाता है।" शब्दों में इस महत्वपूर्ण परिवर्तन को अमोस मार्ग की एक जानबूझकर और प्रेरित व्याख्या के रूप में माना जाता है जिसके माध्यम से ओटी कथन को उच्च स्तर के अर्थ तक उठाया जाता है। आप एदोम के अवशेष को अपने कब्जे में लेने से आगे बढ़ रहे हैं प्रभु की खोज करने वाले बचे हुए लोगों के लिए। हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जेम्स सेप्टुआजेंट

के शब्दों को उद्धृत करता है। हम 13 से 15 तक आगे बढ़ेंगे। श्लोक 13 से 15 में लिखा है, "प्रभु की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं, जब हल जोतनेवाला काटनेवाले को और अंगूर लताड़नेवाला बोनेवाले को जा पकड़ेगा। नयी दाखमधु पहाड़ों से टपकेगी और सब पहाड़ियों से बह निकलेगी। मैं अपनी निर्वासित प्रजा इस्राएल को लौटा ले आऊंगा; वे उजड़े हुए नगरोंको फिर बसाएंगे, और उन में बसेंगे। वे दाख की बारियां लगाएंगे, और उनका दाखमधु पीएंगे; वे बगीचे बनाएंगे और उनका फल खाएंगे। मैं इस्राएल को उन्हीं के देश में बसाऊंगा, और जो देश मैं ने उन्हें दिया है उस में से वे फिर कभी उखाड़े न जाएंगे, यहोवा का यही वचन है। इस व्याख्यात्मक संभावना से, अन्यजातियों का पहला आगमन और रूपांतरण श्लोक 12 में हैं। श्लोक 13 से 15 को आमतौर पर आलंकारिक भाषा के माध्यम से ईसाई चर्च के वर्णनात्मक के रूप में लिया जाता है।

मुझे यहां लाएत्सा पृष्ठ 192 से पढ़ने दीजिए जहां वह पद 13 के बारे में कहता है, "हल चलाने वाला काटने वाले को और अंगूर रौंदने वाला बोने वाले को पकड़ लेगा।" वह कहता है, "जो हल चलानेवाला नये बीज बोने के लिये मिट्टी तैयार कर रहा है, वह काटनेवाले से आगे निकल जाएगा। हल चलाने वाले द्वारा तैयार की गई मिट्टी में बोने वाले द्वारा बोए गए बीज से फसल इकट्ठा करने में व्यस्त रहना। दूसरी ओर, अंगूर की खेती करने वाला उस

आदमी से आगे निकल जाएगा जो भविष्य की फसल के लिए लगन से बीज बो रहा है। दूसरे शब्दों में, यह किस बारे में बात कर रहा है? चर्च ऑफ क्राइस्ट में लगातार तैयारी की जाएगी और विधर्म की खोज की जाएगी, चर्च ऑफ क्राइस्ट में कटाई और कटाई की जाएगी, मिशनरियों को भेजने का काम तैयार किया जाएगा जो वचन का प्रचार कर रहे हैं, जो हमेशा चलता रहेगा। और धर्मान्तरित लोगों को चर्च में लाकर पूलियाँ एकत्रित करने का आनंद भी निरंतर जारी रहेगा।" और यह आमोस परिच्छेद के साथ लगातार किया जाता है, लेकिन श्लोक 15 कहता है, "मैं इस्राएल को उन्हीं की भूमि में बसाऊंगा, और फिर कभी उजाड़ न सकूंगा।" वह किस बारे में बात कर रहा है? जैसा कि कहा गया है, श्लोक 15 "यूहन्ना 10:27 जैसी नए नियम की भविष्यवाणियों के लिए पुराने नियम की भाषा है, जो कहता है, 'कोई भी उन्हें मेरे हाथ से कभी नहीं छीनेगा,' आस्तिक की सुरक्षा।" इसलिए अनुच्छेद की इस तरह से व्याख्या करने में श्लोक 13 से 15 को आम तौर पर चर्च के वर्णनात्मक रूप में लिया जाता है। एंथोनी होकेमा उन्हें चर्च के बजाय शाश्वत राज्य के वर्णनात्मक के रूप में लेते हैं लेकिन फिर कोई पूछ सकता है कि इज़राइल पर जोर क्यों? "मैं इस्राएल को उन्हीं के देश में बसाऊंगा, मैं अपनी निर्वासित प्रजा इस्राएल को वापस ले आऊंगा; वे उजड़े हुए नगरों का पुनर्निर्माण करेंगे।"

मैंने आपके हैंडआउट्स पर मोटे अक्षरों में लिखा है, एक उदाहरण के लिए एंथोनी होकेमा *द बाइबल एंड द फ़्यूचर देखें कि वास्तव में एक व्याख्याशास्त्र का उपयोग कैसे किया जाए जिसे अन्य अनुच्छेदों पर भी लागू किया जा सकता है।* यह इस विशेष परिच्छेद के महत्व और नए नियम में इसके उपयोग का मुद्दा है क्योंकि इस विचारधारा के व्याख्याकार अपनी व्याख्या के सिद्धांत इसी से प्राप्त करते हैं। यहाँ होकेमा का कहना है, "हालाँकि, इस प्रकार की भविष्यवाणियाँ *आलंकारिक रूप से भी पूरी हो सकती हैं।*" बाइबल इस प्रकार की पूर्ति का स्पष्ट उदाहरण देती है। मैं प्रेरितों के काम 15:14-18 में आमोस 9:11-12 के उद्धरण का उल्लेख करता हूँ। जेरूसलम की परिषद में, जैसा कि अधिनियम 15 में बताया गया है, पहले पीटर और फिर पॉल और बरनबास बताते हैं कि कैसे भगवान ने अपने मंत्रालयों के माध्यम से कई अन्यजातियों को विश्वास में लाया है। जेम्स, जो स्पष्ट रूप

से परिषद की अध्यक्षता कर रहा था, अब कहता है, 'भाइयों, मेरी बात सुनो। शमौन [पीटर] ने बताया है कि किस प्रकार परमेश्वर ने सबसे पहले अन्यजातियों के पास जाकर उनसे अपने नाम के लिये एक जाति बनाई। और इस से भविष्यद्वक्ताओं के वचन मेल खाते हैं, जैसा लिखा है, कि इसके बाद मैं फिर लौटूंगा, और दाऊद का जो गिर गया हुआ भवन फिर बनाऊंगा; मैं उसके खण्डहरों को फिर से बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा, कि बाकी मनुष्य, और सब अन्यजाति जो मेरे कहलाते हैं, यहोवा को ढूँढ़ सकें, यहोवा का यही वचन है, जिस ने ये बातें प्राचीनकाल से प्रगट की हैं" (अधिनियम 15:14-18). जेम्स यहाँ आमोस 9:11-12 के शब्दों को उद्धृत कर रहा है। उसका ऐसा करना इंगित करता है कि, उसके फैसले में, डेविड के गिरे हुए बूथ या तम्बू को उठाने के बारे में अमोस की भविष्यवाणी ('उस दिन मैं डेविड के गिरे हुए बूथ को उठाऊंगा...') अभी पूरा हो रहा है, जैसे अन्यजातियों को परमेश्वर के लोगों के समुदाय में इकट्ठा किया जा रहा है। इसलिए, यहां हमारे पास बाइबिल में ही इज़राइल की बहाली से संबंधित पुराने नियम के एक आलंकारिक, गैर-शाब्दिक व्याख्या का एक स्पष्ट उदाहरण है... फिर, यहां, हम पाते हैं कि नया टेस्टामेंट स्वयं इज़राइल की बहाली के बारे में पुराने नियम की भविष्यवाणी की व्याख्या कर रहा है। अशाब्दिक तरीके से. और फिर उसकी अगली टिप्पणी पर ध्यान दें। “ यह भी हो सकता है कि ऐसी अन्य भविष्यवाणियों की भी आलंकारिक व्याख्या की जानी चाहिए । दूसरे शब्दों में , यहाँ उस तरह की व्याख्या का एक बाइबिल उदाहरण है तो फिर वे उस व्याख्यात्मक पद्धति का उपयोग अन्य भविष्यवाणियों के साथ क्यों नहीं कर सकते जो इज़राइल के भविष्य का संदर्भ देती हैं? कम से कम हम इस बात पर ज़ोर नहीं दे सकते कि इज़राइल की बहाली के बारे में सभी भविष्यवाणियों की शाब्दिक व्याख्या की जानी चाहिए।

आमोस 9:11-15 की व्याख्या करना

1. आमोस 9:12

अब, आइए इन व्याख्यात्मक प्रश्नों को थोड़ा और आगे देखें। मैं जो करना चाहता हूँ वह आमोस 9 में बिंदु दो, पद 12 से शुरू करना है। मैंने बिंदु एक पद 11, बिंदु दो पद 12,

बिंदु तीन पद 13-15 बनाया है। आप अमोस परिच्छेद को श्लोक 11, श्लोक 12, और श्लोक 13-15 और बिंदु एक, दो और तीन में विभाजित कर सकते हैं। मैं पहले बिंदु दो को देखना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि बिंदु दो, जो कि अमोस 9 परिच्छेद का श्लोक 12 है, इस मुद्दे का केंद्र है। तो सबसे पहले इसे देखें, और मुझे लगता है कि श्लोक 12 विशेष महत्व का बिंदु है क्योंकि सबसे पहले, नए नियम का उद्घरण जो इससे आता है, और दूसरे मुझे लगता है कि अमोस के श्लोक 12 में व्याख्यात्मक मुद्दों के संबंध में आप जो निष्कर्ष निकालते हैं, उसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। आप श्लोक 11 के साथ-साथ श्लोक 13-15 की व्याख्या कैसे करेंगे। दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि इसका मर्म श्लोक 12 में पाया जाता है और यह निर्धारित करेगा कि आप श्लोक 11 और श्लोक 13-15 में क्या करते हैं।

दाराश (तलाश) एलएक्सएक्स और डीएसएस या याराश (अधिकारी) एमटी

तो सबसे पहले श्लोक 12 को देखने पर, एक पाठ्य संबंधी समस्या है। आपमें से कुछ लोग इस पर आए। 1953 में एलन मैकरे द्वारा लिखित "साइंटिफिक अप्रोच टू द ओल्ड टेस्टामेंट" में एक लेख इस अमोस 9 परिच्छेद को संदर्भित करता है। और उन्होंने जो नोट किया वह कुछ ऐसा है जिसे दूसरों ने भी नोट किया है, वह यह है कि अधिनियमों में शब्दांकन सेप्टुआजेंट का एक उद्घरण है। दूसरे शब्दों में, जब जेम्स अमोस से उद्घरण देता है तो वह जिस भाषा का उपयोग करता है वह सेप्टुआजेंट से सहमत होती है। यह अमोस 9 में मैसोरेटिक पाठ से सहमत नहीं है। एलिस भी इससे सहमत है। हालाँकि, मैकरे आगे लिखते हैं कि यदि ओटी भविष्यवाणी को अर्थ के उच्च स्तर तक उठाना है, जैसा कि सहस्राब्दिवादी व्याख्याकारों का सुझाव है, तो यह सेप्टुआजेंट है जिसने शुरू में ऐसा किया था, जेम्स ने नहीं। निश्चित रूप से सेप्टुआजेंट के अज्ञात लेखकों को प्रेरित नहीं माना जाना चाहिए।

तो हम सेप्टुआजेंट और मैसोरेटिक पाठ के बीच अंतर को कैसे समझाएंगे? मैकरे का सुझाव है कि सबसे तार्किक उत्तर यह है कि जेरूसलम काउंसिल के समय सेप्टुआजेंट और हिब्रू पाठ में सहमति थी, और दोनों में एक ही शब्द पाए गए थे। यदि जेम्स ने एक ऐसे उद्घरण का उपयोग किया था जो परिषद के लोगों द्वारा हिब्रू मूल के रूप में बताए गए

उद्धरण से भिन्न था, तो किसी ने यह क्यों नहीं कहा कि "एक मिनट रुकें, ओटी का एक गलत उद्धरण इस मुद्दे को तय करने का आधार नहीं होगा हमारे लिए इस परिषद का!" इस सुझाव को विशेष रूप से व्यवहार्य बनाने वाली बात यह है कि केवल एक हिब्रू अक्षर, *योध* का परिवर्तन *डेलथ* के लिए, जो वैसे भी आसानी से भ्रमित हो जाता है, सेप्टुआजेंट के लिए स्वीकार्य एक हिब्रू मूल देता है, साथ ही दो स्वर अक्षरों को भी जोड़ता है जो सेप्टुआजेंट के अनुवाद के समय के बाद हिब्रू पाठ में पेश किए गए हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, यहाँ मुख्य शब्द यह *यारश* (कब्जा) है या यह *दरश* (तलाश) है, "ताकि वे मुझे 'तलाश' कर सकें? यदि उस *योध* को *दलेथ* में बदल दिया गया था, तो "तलाश" में *यारश* (कब्जा) के बजाय *दरश* का अनुमान लगाया गया है। आप देखिए जिसे *वोरलेज* कहा जाता है वह हिब्रू पाठ था जो सेप्टुआजेंट के अनुवादकों के सामने रखा गया था। यह ऐसा हो सकता था जो न्यू टेस्टामेंट में अमोस को उद्धृत करने के तरीके के अनुरूप हो।

यह सुझाव, और यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में मैकरे को जानकारी नहीं थी क्योंकि लेख में इसका उल्लेख नहीं किया गया था, जे. डे वार्ड के अवलोकन से यह मजबूत हुआ है कि मृत सागर स्कॉल 4QFlor 1.12 में से एक, बाइबिल ग्रंथों में से एक नहीं है मृत सागर स्कॉल की। यह एक ऐसा पाठ है जिसमें उन ग्रंथों का संकलन है जो 2 शमूएल 7 के डेविडिक वादे के आसपास केंद्रित है, और इसमें अमोस 9:11-12 का संकेत है। हिब्रू शब्दांकन वास्तव में अधिनियमों में उद्धरण के शब्दों से मेल खाता है। दूसरे शब्दों में, मृत सागर स्कॉल के भीतर 4QFlor 1.12 के साथ एक हिब्रू पाठ है जो अमोस मैसोरेटिक पाठ प्रतिपादन के बजाय इस कविता के अधिनियम प्रतिपादन से मेल खाता है। डी वार्ड टिप्पणी करते हैं, " यह प्रश्न उठाना आवश्यक नहीं होगा यदि 4QFlor 1.12 और अधिनियम 15,16 में Am 9,11 की सावधानीपूर्वक जांच हमें ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं करती। अधिनियमों में अमोस उद्धरण का पाठ रूप मैसोरेटिक पाठ और सेप्टुआजेंट से भिन्न है, लेकिन यह 4QFlor के बिल्कुल समान है। सेप्टुआजेंट अधिनियमों में श्लोक 16 में है, श्लोक 17 में नहीं। मृत सागर स्कॉल में, हमारे पास *यारश* (कब्जा) के बजाय *दरश* (तलाश) है। ऐसा लगता है कि यह सुझाव अतिरिक्त महत्व रखता है क्योंकि अब हमारे पास मृत सागर स्कॉल

में इसके सबूत हैं।

लेकिन दूसरी बात, यरूशलेम की परिषद में चर्चा का मुद्दा क्या था और अमोस की भविष्यवाणी इस मुद्दे को कैसे संबोधित करती है? दूसरे शब्दों में, जेम्स अपने तर्क को कैसे आगे बढ़ाते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वे आमोस मार्ग के इस उद्धरण के आधार पर यरूशलेम की परिषद में आए थे? जेरूसलम काउंसिल में चर्चा के तहत मुद्दे को स्पष्ट रूप से समझने की जरूरत है। मुद्दा यह नहीं था कि क्या अन्यजाति ईसाई बन सकते हैं। वह प्रश्न पहले ही सुलझा लिया गया था, अधिनियम 1:1-18 पर वापस जाएँ, "पवित्र आत्मा उन पर वैसे ही आया जैसे हम पर।" मुद्दा यह था कि क्या उन अन्यजातियों का भी खतना करने की आवश्यकता होगी जिनका धर्म परिवर्तन हो चुका है। अर्थात्, क्या उन्हें चर्च द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए पहले यहूदी धर्मांतरणकर्ता बनने की आवश्यकता होगी। प्रेरितों के काम 15:5-6 में, "तब फरीसियों के दल के कुछ विश्वासी खड़े हुए और कहने लगे, 'अन्यजातियों का खतना किया जाना चाहिए और मूसा की व्यवस्था का पालन करना आवश्यक है।'" प्रेरित और बुजुर्ग मिले। इस प्रश्न पर विचार करने के लिए, क्या हमें इन अन्यजातियों को चर्च का सदस्य बनने के योग्य बनाने के लिए उनका खतना करना होगा। जेम्स उस प्रश्न का समाधान करने के लिए अमोस परिच्छेद को उद्धृत करता है। किसका खतना होना चाहिए? उनका तर्क इस प्रकार है।

सबसे पहले, वह श्लोक 14 में कुरनेलियुस और उसके परिवार के परिवर्तन के बारे में पतरस के संदर्भ को संक्षेप में प्रस्तुत करता है। प्रेरितों के काम 15 श्लोक 13 की ओर मुड़ें, "जब उन्होंने समाप्त किया, तो जेम्स ने कहा: 'भाइयों, मेरी बात सुनो। शमौन ने वर्णन किया है कि किस प्रकार परमेश्वर ने सबसे पहले अन्यजातियों से अपने लिए एक जाति लेकर अपनी चिंता प्रकट की।' और आप देखते हैं, पतरस उठ खड़ा हुआ, पद 7 पर वापस जा। उसने उठकर उन्हें संबोधित किया, 'भाइयो, आप जानते हैं कि कुछ कुछ समय पहले, परमेश्वर ने तुम में से एक को चुन लिया, कि अन्यजाति मेरे होठों से सुसमाचार का सन्देश सुनें और विश्वास करें। परमेश्वर ने, जो हृदयों को जानता है, उन्हें पवित्र आत्मा देकर दिखाया कि उसने उन्हें स्वीकार किया है, जैसे उसने हमारे साथ किया। उसने हमारे और उनके बीच

कोई भेद नहीं किया, क्योंकि उसने विश्वास के द्वारा उनके हृदयों को शुद्ध किया। तो फिर, तुम चेलों की गर्दनों पर ऐसा जूआ डालकर परमेश्वर की परीक्षा लेने की कोशिश क्यों करते हो, जिसे न तो हम और न ही हमारे पिता सहन कर पाए? नहीं! हमारा मानना है कि यह हमारे प्रभु यीशु की कृपा से है कि हम बच गए हैं, जैसे वे हैं।" तभी याकूब उठता है और कहता है, "शमौन ने वर्णन किया है कि किस प्रकार परमेश्वर ने सबसे पहले अन्यजातियों से अपने लिये एक लोग लेकर अपनी चिन्ता प्रकट की।"

अमोस 9:12 अधिनियम 15 में उद्धरण - सरल उद्धरण जरूरी नहीं कि एक पूर्ति उद्धरण हो। आपके हैंडआउट्स पर वापस जाएं, बिंदु बी। फिर वह कहते हैं कि अमोस की बातें इससे सहमत हैं। दरअसल, वह कहता है कि भविष्यवक्ताओं के शब्द इसके अनुरूप हैं और फिर वह अमोस से उद्धरण देता है। वह यह नहीं कहता है कि अमोस परिच्छेद ने उस विशिष्ट मामले की भविष्यवाणी की थी जिसका पतरस ने वर्णन किया था, अर्थात्, अन्यजातियों का रूपांतरण और चर्च की शुरुआत। हमें याद रखना चाहिए कि जेरूसलम परिषद में मुद्दा यह नहीं था कि क्या अन्यजातियों को परिवर्तित किया जा सकता है; बल्कि, क्या अन्यजातियों को खतना करने और मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता होगी। यह मानना तर्कसंगत नहीं है कि जेम्स ने एक ओटी भविष्यवाणी को उद्धृत करते हुए कहा कि गैर-यहूदी मसीह के पास आएं, और फिर इससे यह निष्कर्ष निकला कि चूंकि ओटी कहता है कि अन्यजातियों को मसीह का ज्ञान हो जाएगा, इसलिए उन्हें खतना करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा निष्कर्ष उस प्रश्न को जन्म देगा जो पूछा जा रहा था। वह व्याख्या जो यह कहती है कि जेम्स यह स्थापित करने के लिए एक श्लोक उद्धृत कर रहा था कि अन्यजातियों को परिवर्तित किया जाएगा, सीधे तौर पर खतना मुद्दे को संबोधित नहीं करता है। चूंकि परिषद जेम्स की सलाह को अपनाने के लिए सहमत हो गई, इसलिए हमें यह मान लेना चाहिए कि उसने जो अंश उद्धृत किया वह किसी तरह से खतना के प्रश्न को संबोधित करता है। आम तौर पर सहस्राब्दी व्याख्या इस बिंदु को पर्याप्त मान्यता नहीं देती है। निश्चितता का मुद्दा यह नहीं है कि क्या अन्यजातियों को परिवर्तित किया जा सकता है -

हाँ, उन्हें परिवर्तित किया जा सकता है - लेकिन जब वे ऐसा करते हैं, तो क्या हमें उनका खतना करने की आवश्यकता है या नहीं? यदि कोई मानता है कि अमोस मार्ग युगांतिक साम्राज्य के बारे में बात कर रहा है, और जेरूसलम काउंसिल के बाद की पूर्ति के बारे में बात कर रहा है, तो जेम्स ने मार्ग का जो उपयोग किया है वह एक अलग अर्थ लेता है।

आमोस 9:11 अधिनियम 15 में

ध्यान दें कि जेम्स पीटर की उपस्थिति पर बोलते हुए कहते हैं, "साइमन ने बताया है कि कैसे भगवान ने **सबसे पहले** गैर-यहूदियों से अपने लिए एक लोगों को लेकर अपनी चिंता दिखाई थी।" यह काफी अजीब बयान है. और आप ध्यान दें, जैसा कि मैंने यहां बोल्ड में लिखा है, 'सबसे पहले।' वह इसे 'सबसे पहले' क्यों रखता है? फिर उसने जो कुछ पतरस ने उनसे कहा था उसका सारांश बताता है। जब जेम्स अमोस के उद्धरण को अन्यजातियों के रूपांतरण के साथ जोड़ता है तो वह कहता है (श्लोक 16ए) " **इसके बाद** मैं वापस आऊंगा और ..." जेम्स का " **इसके बाद** " **क्रम 14 के** " **पहले** " के साथ है और यह एक स्पष्ट संशोधन है आमोस 9:11 के इब्रानी शब्दों में। दूसरे शब्दों में, जैसा कि आप एक्ट्स में पढ़ते हैं, जेम्स कहते हैं, "भगवान ने सबसे पहले ऐसा किया...इसके बाद मैं वापस आऊंगा।" तो अधिनियमों में वह क्रम है, "पहले," फिर "इसके बाद।" यह आमोस 9:11 के हिब्रू शब्दों का एक स्पष्ट संशोधन है। आमोस 9:11 के इब्रानी शब्दों में, यह "इसके बाद" नहीं कहा गया है। आमोस 9:11 शुरू होता है, "उस दिन मैं उठ खड़ा होऊंगा।" जब जेम्स उद्धृत करता है "उस दिन मैं उठ खड़ा होऊंगा," तो वह वहां प्रतिस्थापित करता है "इसके बाद मैं लौटूंगा और डेविड के गिरे हुए तम्बू को उठाऊंगा।" शब्द "इसके बाद मैं लौटूंगा" आमोस की हिब्रू किताब में नहीं हैं, न ही वे सेप्टुआजिंट में हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जेम्स ने जानबूझकर उस सामान्य समय की अभिव्यक्ति के लिए "इसके बाद मैं वापस आऊंगा और डेविड के गिरे हुए तम्बू को ऊपर उठाऊंगा" प्रतिस्थापित किया, जिसके साथ आमोस मार्ग शुरू होता है। जेम्स इस उद्धरण को अधिक विशिष्ट समय-सीमा में रखकर प्रस्तुत करता है।

इसलिए, यदि परमेश्वर ने पहले अन्यजातियों को उठाया और उसके बाद वापस आएगा, तो यह पहला भाग नहीं है, यह दूसरा भाग है। इसके अलावा, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया था, जेम्स यह नहीं कहता है कि अमोस ने भविष्यवाणी की थी कि भगवान अन्यजातियों का दौरा करेंगे और उनसे अपने नाम के लिए एक लोग लेंगे, अधिनियम 15:14 बी। क्योंकि वह कहता है, “भविष्यद्वक्ताओं की बातें इसी से सहमत हैं।” जेम्स यह सुझाव नहीं दे रहा है कि अमोस ने विशेष रूप से उन घटनाओं की भविष्यवाणी की थी जिनका पीटर ने वर्णन किया था, बल्कि यह सुझाव दे रहा है कि अमोस, और यही इसका मूल है, एक ऐसे समय की कल्पना करता है जब ऐसे लोग पहले से ही अस्तित्व में होंगे।

इसलिए जेम्स के अनुसार, अमोस जो कहता है वह पीटर और पॉल द्वारा दर्ज किए गए तथ्य से मेल खाता है कि भगवान ने "अन्यजातियों के पास जाकर उनसे अपने नाम के लिए एक लोग निकालने" शुरू कर दिया है। यदि पूरे परिच्छेद को इन विचारों को ध्यान में रखते हुए पढ़ा जाए, तो परिच्छेद का खतना के प्रश्न से संबंध देखना मुश्किल नहीं है। परिषद के सदस्यों के लिए तर्क बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है। याद रखें, परिषद में मुद्दा यह नहीं था कि क्या अन्यजाति ईसाई बन सकते हैं, बल्कि यह था कि क्या वे ईसाई बन सकते हैं और अन्यजाति बने रह सकते हैं। इस प्रकार अमोस का उद्धरण, किसी तरह से, एक स्पष्ट और तार्किक कारण देना चाहिए कि परिषद को यह निर्णय क्यों लेना चाहिए कि नए गैर-यहूदी धर्मान्तरित लोगों के लिए खतना कराना आवश्यक नहीं है। यह ऐसा तभी करता है, जब इसे उस स्थिति का वर्णन समझा जाए जो उस समय मौजूद होगी जब मसीह अपना राज्य स्थापित करने के लिए वापस आएगा। यदि अमोस इस भविष्य के समय के बारे में बात नहीं कर रहा है, जब ऐसे अन्यजाति होंगे जिन पर मसीह का नाम पुकारा जाएगा, लेकिन केवल यह भविष्यवाणी कर रहा है कि अन्यजातियों को बचाया जाएगा, तो भविष्यवाणी का खतना के मुद्दे पर कोई स्पष्ट संबंध नहीं है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष: जो लोग चर्च की स्थापना के विवरण के रूप में अमोस के उद्धरण की व्याख्या करते हैं, वे एक हैं, जो जेम्स को "अमोस की आलंकारिक व्याख्या" का श्रेय देते हैं, जबकि वास्तव में वह पुराने नियम के सही ग्रंथों को उद्धृत कर रहा था जैसा कि मृत सागर द्वारा प्रमाणित है। स्कॉल पांडुलिपियाँ, जो बाद में भ्रष्ट हो गईं। दो, वे उद्धरण को इस तरह से ले रहे हैं जिसका केंद्रीय प्रश्न से कोई लेना-देना नहीं है, कि क्या गैर-यहूदी धर्मान्तरित लोगों का खतना करने की आवश्यकता है। और तीन, वे उस भाषा की उपेक्षा कर रहे हैं जिसमें जेम्स ने अमोस के वाक्यांश "उस दिन" को हटाकर और "इसके बाद मैं वापस आऊंगा" को हटाकर और एक विशेष समय को इंगित करने के लिए उद्धरण प्रस्तुत किया है कि अमोस की भविष्यवाणी पूरी होगी। दूसरे शब्दों में, ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ अनुक्रम है जहाँ जेम्स कहते हैं, "भगवान ने सबसे पहले अन्यजातियों को अपने लिए एक व्यक्ति के रूप में लेकर चिंता दिखाई" अन्यजातियों के रूपांतरण के बारे में पीटर की चर्चा को सारांशित करते हुए। और फिर वह कहता है कि परमेश्वर का वचन इससे सहमत है। फिर "उस दिन" के बजाय वह कहता है "इसके बाद," "इसके बाद मैं वापस आऊंगा।" अन्यजातियों के परिवर्तन के बाद, मैं वापस आऊंगा। और जब मैं लौटूंगा, तो पद 17 में आप देखिए, अन्यजाति होंगे जो मेरा नाम धारण करेंगे। उस दिन अस्तित्व में अन्यजाति होंगे जिन पर प्रभु का नाम पुकारा जाएगा। यदि मसीह के दूसरे आगमन के समय अन्यजातियाँ वहाँ हैं जिन पर प्रभु का नाम पुकारा जाता है, तो स्पष्ट रूप से अन्यजातियों को खतना करने की आवश्यकता नहीं है। मुझे ऐसा लगता है, यही तर्क की पंक्ति है।

आमोस 9:11 और 9:13-15 के लिए निहितार्थ अब चलो वापस चलते हैं। यदि आप श्लोक 12 के बारे में उस दृष्टिकोण को अपनाते हैं, तो यह श्लोक 11 की व्याख्या को दृढ़ता से बदल सकता है, जो कि मसीह के पहले आगमन पर चर्च के बजाय दूसरे आगमन में ईसा के युगांतिक साम्राज्य के संदर्भ में है। और ऐसा लगता है कि श्लोक 13-15 के संबंध में, यह सुझाव देगा कि हमें 13-15 को उस समय मौजूद स्थितियों के वर्णन के रूप में पढ़ना चाहिए, न कि चर्च के आलंकारिक विवरण के रूप में। ध्यान दें जे. बार्टन पायने मध्यस्थता की स्थिति

लेते हैं। वह श्लोक 11 को मसीह के पहले आगमन में डेविड की वंशावली के पुनरुद्धार के रूप में देखता है। फिर वह अमोस 9:12 की पूर्ति को अन्यजातियों को इज़राइल, यानी चर्च में शामिल करने के रूप में देखता है। वह प्रेरितों 15:16 में वाक्यांश "इसके बाद और मैं वापस आऊंगा" को निर्वासन के बाद और आमोस 9:9-10 के संरक्षण के अर्थ के रूप में लेता है। साथ ही, यह अधिनियमों के संदर्भ के बजाय अमोस के संदर्भ में, "उस दिन" अमोस की अभिव्यक्ति के समतुल्य है। अब मेरे लिए इसका कोई खास मतलब नहीं है। मुझे ऐसा लगता है कि यह अधिनियम का संदर्भ है जिसे हम देखते हैं कि जेम्स ने शब्दों को संशोधित किया है। "पहले" और यह "बाद में मैं लौटूंगा" एक्ट्स संदर्भ है, यह अमोस संदर्भ नहीं है। लेकिन लोग इस पर बहस करते हैं। लेकिन 13-15 से उसका क्या लेना-देना? उनका कहना है कि 13-15 सहस्राब्दी समृद्धि का वर्णन करते हैं। इस प्रकार पेने मसीह के पहले आगमन से लेकर अन्यजातियों के विलय के संबंध में सहस्राब्दी समृद्धि के अंत तक आगे बढ़ता है। क्या यह आवश्यक है? क्या यह परिच्छेद एकता है?

आमोस 9:13-15 एल्डर्स, जो सहस्राब्दी वर्ष का है, इसलिए आम तौर पर आप अधिनियम 15:13-15 में चर्च के आलंकारिक विवरण के रूप में अन्यजातियों के रूपांतरण की उम्मीद कर रहे हैं, कहते हैं, " इसलिए मेरा निष्कर्ष यह है कि हमारे पास दो अलग-अलग भविष्यवाणियां हैं आमोस 9:11-15 में जो दो अलग-अलग विषयों से संबंधित हैं और जो दो पूरी तरह से अलग-अलग अवधियों में पूर्णता पाते हैं। पहला (श्लोक 11-12) डेविड राजवंश के मसीहाई शासन की घोषणा है। यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन के साथ पूरा हुआ है और इसकी पूर्ति सुसमाचार के प्रचार द्वारा अन्यजातियों के रूपांतरण में जारी है। दूसरा (श्लोक 13-15) निर्वासन से वापसी का वादा है, और फ़ारसी राजा साइरस द्वारा आदेशित वापसी में पूरा किया गया है। दूसरे शब्दों में, यह पुराने नियम काल में पूरा हुआ है। कालानुक्रमिक रूप से छंद 13-15 11 और 12 से पहले होंगे। और वह कहते हैं, " इस दृष्टिकोण के साथ मैं एक ओर उन चिलियास्टों का विरोध करता हूं जो छंद 13-15 को मसीहा के समय में फिलिस्तीन में यहूदियों की वापसी के संदर्भ के रूप में समझते हैं, "मैंने

इसका विरोध किया," लेकिन दूसरी ओर विभिन्न गैर-चिलियास्टिक व्याख्याता भी हैं जो श्लोक 13-15 का आध्यात्मिकरण करते हैं, और पूरी तरह से शब्दों के स्पष्ट अर्थ के विपरीत यहां उन आध्यात्मिक लाभों को देखते हैं जो मसीह अपने चर्च को प्रदान करते हैं। दूसरे शब्दों में, उसे उस व्याख्या को स्वीकार करने में परेशानी होती है जो श्लोक 13-15 में चर्च को खोजने में सक्षम होगी। हमें वहां एक शाब्दिक प्रकार की भाषा मिलती है: काटने वाला, हल चलाने वाला, मेरे निर्वासित लोगों इसराइल को वापस लाओ, इसराइल को उनकी अपनी भूमि पर रोपित करो, फिर कभी उखाड़ा न जाए। वह कहते हैं, "न तो एक और न ही दूसरा विचार सही है।" दूसरे शब्दों में, सहस्राब्दी या आध्यात्मिक। हम शब्दों के साथ तभी न्याय कर सकते हैं जब वे अब खड़े हैं यदि हम दोनों भविष्यवाणियों को अलग रखें (भविष्यवाणियों में जो अक्सर देखा जाता है उससे सहमत होकर) और पहले को मसीहा के संदर्भ के रूप में समझें, लेकिन दूसरे को बेबीलोन की कैद से इज़राइल की वापसी के रूप में समझें। . क्या आप देख सकते हैं कि वह किससे कुशती लड़ रहा है? वह श्लोक 13-15 को आलंकारिक रूप में लेने और उसे चर्च में लागू करने की वैधता के साथ संघर्ष कर रहा है। क्या यह 13-15 की भाषा के साथ न्याय करता है? उसने मना किया।"

अच्छा तो फिर उसके पास विकल्प क्या है? देखिए, उनके दृष्टिकोण से, कोई सहस्राब्दी अवधि नहीं है, इसलिए यदि आप इसे किसी भी तरह से शाब्दिक रूप से पढ़ने जा रहे हैं, तो यह बेबीलोन के निर्वासन से वापसी होगी। लेकिन यह जितनी समस्याएँ हल करता है उतनी ही समस्याएँ भी पैदा करता है क्योंकि, एक, मार्ग का प्रवाह उससे पहले की किसी चीज़ पर वापस आ जाता है। और दूसरा, ये शब्द, "मैं उन्हें उस भूमि पर रोपूंगा जहां वे फिर कभी नहीं उखड़ेंगे," लेकिन निर्वासन से लौटने के बाद उन्हें फिर से उखाड़ दिया जाएगा। तो, आप देख सकते हैं कि वह कहाँ संघर्ष कर रहा है, लेकिन उसे कोई अच्छी प्रतिक्रिया नहीं मिलती है।

वर्नाय का सुझाव मुझे लगता है कि जो दृष्टिकोण मैं सुझा रहा हूँ वह हमें दूसरे आगमन की ओर ले जाता है और श्लोक 12 में अन्यजातियों के रूपांतरण के किसी प्रकार के संदर्भ

के रूप में नहीं, बल्कि उस समय के कथन के रूप में मसीह की दूसरी वापसी के संदर्भ के रूप में। "ऐसे अन्यजाति होंगे जिनसे मेरा नाम पुकारा जाता है" का अर्थ है कि हमें अन्यजातियों का खतना करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जब मसीह लौटेगा तो हम सभी अन्यजाति होंगे जिन पर मसीह का नाम पुकारा जाएगा। और यदि ऐसा है, तो अब हम इन लोगों का खतना क्यों करने जा रहे हैं? यह एक जटिल मार्ग है, और इसमें कई व्याख्यात्मक मुद्दे हैं। मुझे नहीं लगता कि यहां जो कुछ है वह उतना महत्वपूर्ण है, यह बस कुछ अलग-अलग दृष्टिकोणों पर कुछ अतिरिक्त चर्चा है।

जेरेड कुइपर्स द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया